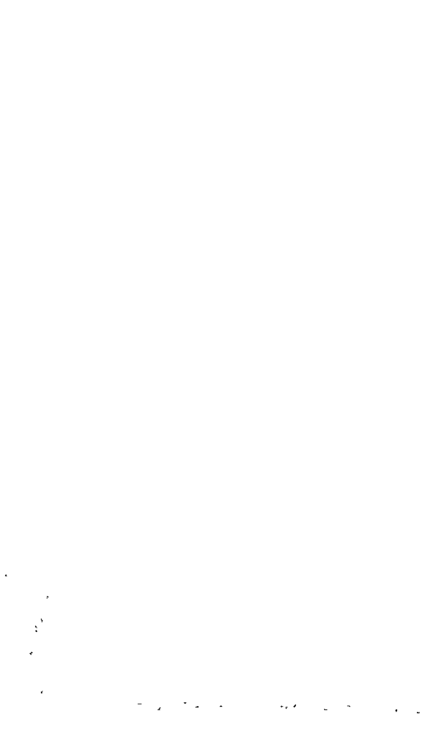


आ पुस्तक श्रीमारवाडदेशमां आवेला गामश्री सीयाणां तथा गामश्री वागराना रहेनारी श्रावक नाइजीना संघ तरफथी, श्रावक रतनाजी वाघाजी गाम श्रीआहोरना रेवासीयें श्रीमुंबापुरी मध्यें श्रावक भीमसिंह माणकनी पासेथी यथा योग्य शुद्ध करावीने तथा केटलिएक वावतो वधारीने तेमनीज मारफत निर्णयसागरनामक मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं छे.

आ पुस्तकने छापवा संबंधि सर्व प्रकारनो हक्क सरकारना कायदा प्रमाणे छपावनारे पोताने स्वाधीन राख्यो छे माटे छपावनारनी रजा लीधा विना कोइयें छापवुं नही.

संवत् १९४४, सने १८८८, शालिवाहन शक १८०९.

मिति फाल्गुन शुक्ल अष्टमी चंद्रवार.

आ पुस्तक खरीदवा माटे प्रथमथी नाम नोंधावनार साहेबोने विनंति करीयें छेयें के आ ग्रंथनी जेटली प्रतो छपावेली छे लगभग तेटलीज प्रतोना आगलथी ग्राहको थइ गयेला छे माटे बाकी थोडीज प्रतो शिलकमां रहेली छे, तेथी जे साहेबोए प्रथमथी खरीद करेली छे ते साहेबोयें जेम बने तेम मुंबइमां कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा. लखमाजी नाथाजीनी दुकाने अथवा पिंजरवाडीमां शेठ. मेगाजी मोतीजीनी पहेडीयें रोकडा नाणा मोकलीने तरत मगावी लेवी. अमे घणामा घणा छ महीना पर्यंत नाम नोंधावनारनी वाट जोइशुं नहींतो पछी आपवाने बंधाता नथी.

आ पुस्तक जे साहेबोने लेवानी इछा होय ते साहेबोए नीचे लखेला जुदा जुदा गामोना अमारा आडतीया पासेथी रोकडा रुपैया मोकली मगावी लेवा, वेसावरथी मगावना

...नोरें टपाल खरच सुधां नाणा मोकलवा; नहीकां वेल्युपेय्येबल करी टपालनी मारफत मगाववा तसदी लेवी.

१ गामश्री मुंबइमां कामाटीपुरानी तेरमी गलीने नाके शा. लखमाजी नावाजीनी दुकानेथी. तथा विठ्ठलवाडीमां शेठ. मेगाजी मोतीजीनी पहेडी उपरथी मगावी लेवा.

२ गामश्री अमदावादमां पांजरापोलनी अंदर शेठ. पुनमचंद ताराचंदनी दुकानेथी मलशे.

३ गामश्री सुरतमां नानपरा मध्यें शेठ. चेनाजी वांताजीनी दुकानेथी मलशे.

४ श्रीआवुना पाहाडनी नीचे गामश्री खराडीमां, नार शीतारामजी जवानमल्लजीनी दुकानेथी वेचाती मलशे.

५ गामश्री शिवगंजमां शेठ. मेगाजी मोतीजी श्री जाणावालानी दुकानेथी.

६ गामश्री आहोरमां शेठ. गोडीदासजी त्रीकमजीनी दुकानेथी मलशे.

७ गामश्री जालोरमां मुंता. धनराजजी लालचंदजी माफां वालानी दुकानेथी मलशे.

८ गामश्री अलीराजपुरमां शा. जेगाजी जवेरचंदनी दुकानेथी मलशे.

९ गामश्री पुनामध्यें वेतालपेठमां शेठ जीवाजी आणंदाजीने त्यांथी मलशे.

१० गामश्री सीयाणामां शा. केशरीमल्ल कस्तूरजीनी दुकानेथी मलशे.

११ गामश्री जिन्नमालमां शा. जुहारमल्ल शिरदारमल्लजीने त्यांथी मलशे.

१२ गामश्री थरादमां पारेख आंबा मोतीजीनी दुकानेथी मलशे.

॥ प्रस्तावना. आ असार संसारने विषे प्राणिमात्रनुं जीवितव्य जे छे ते वायरे करी चंचल थयेला जलतरंगना जेवुं चंचल छे, वली विचित्र प्रकारनी संपत्तिर्ज जे छे ते पण सर्व वि पत्तियें करी युक्त छे, तथा रूप रसादिक जे इंडीयोना विषयो छे ते सर्व संध्याना वाद लाना रंगनी पेरे तरत विनाशने पामी जाय तेवा छे; तथा मित्र, स्त्री, सज्जनादिकोना समागमथी थयेलुं जे सुख ते पण सर्व स्वप्नोपम अथवा इंद्रजालसमान छे, वली जे अ त्यंत आनंदने उत्पन्न करनारा एवा सुंदर पदार्थो हमणा जोवामां आव्या होय, तेज पदा र्थो कालपरिपाक थइ रहाथी फरी अल्पकाल पछी शोभाहीन थयेला दीठामां आवे छे, एवी रीते प्रत्यक्षपणे आ संसारनी व्यवस्थाने सर्व कोइ जाणे छे, देखे छे, तथापि प्रा णीना मननी टेव एवी कोइ विलक्षण छे के, हुं अजर अने अमर छुं, कोइ काले महारो नाश थवानो नथी. तेमज आ, महारां घर छे; आ, महारी लक्ष्मी छे; आ, महारां क्षेत्र, वाडी, बाग, बगीचा प्रमुख संपत्तिर्ज छे; आ, अमुक महोटा महोटा महारा सज्जन छे; आ, महारा मित्र छे; आ, महारी स्त्री छे; आ, महारो पुत्र छे; आ, महारुं ऐश्वर्य छे; आ, महारी सत्ता छे; इत्यादि सर्व कांई महारुंज छे; एवो जे तेना मननो संकल्प छे ते पणु करीने कोइ रीते दूर थइ शकतो नथी.

कारण के आशारूपी मोहनीयें मनुष्यनुं मन एटलुं तो वश करी लीधेलुं छे के मरतां सुधी पण तेनी तृष्णा मंद थती नथी, परंतु दिवसेदिवसे वधती जाय छे. अहंममतानिमा नपणाने लीधे तेनो डुराग्रह, दंभ, लोभ, आदिक जे छे ते पूर्वकृत कर्मोदयनी प्रबलताने लीधे एक लवमात्र पण कमी थता नथी, ए महोटी खेदनी वात छे.

पुद्गलिकना संयोग संबंधि जे क्षणिक सुख छे ते सर्वे पूर्वे अनंतिवार जीव पामी आव्यो छे, तथापि तेनाथी तृप्ति थाय छे तेवारे मन, पुन [illegible] नवीन जाणे मळ्यो होयनी ! एवु मारजीने तेमां नवीन थइ आय छे. [illegible] ना गुण [illegible] रहीने नव पद जाणी, अथवा पुण्य पणु प्रथम हशे तो मळवा [illegible] पूर्वे पण सुखी रहेशे, परंतु पछी तो अवश्य ए सुखथी मारे वियोग थवानो छे एवो उत्तम विचार निरंतर जेना अंतःकरणमां थतो होय ते क्षणिक सुखोमां लुब्ध न थाय, एवा कोइ विरला जीवोमां आवे छे.

ज्ञानदृष्टियें विचारतां जे विषयसुख छे तेपण अज्ञानथी मानी लीधेला छे, परंतु पारमार्थिक रीतें जोतां तो ते दुःखरूपज छे, संसार वधारवाना हेतु छे; नरक तिर्यंचादि गति मां भ्रमण करावनारा छे, आत्मधर्मने आच्छादन करनारा छे, एवा कल्पित सुखोनी इच्छा करनारा जीवोने संसाररूप समुद्रमां अनेक प्रकारना दुःसह दुःख सहन करतां पुद्गलीउ स्रातां अनंता कालचक्र व्यतीत थइ गया तो पण तृप्ति पाम्या नहीं. ए सर्व अव ल मोहनीयनुं माहात्म्य जाणवुं. ए मोहनीय कर्म जे छे ते ज्ञानावरणादिक आठे कर्मों मां प्रधान छे माटे एनी उत्तर प्रकृति अठावीश भेद मांहेली अनंतानुबंधि क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकृति जे छे तेनो जेवारें क्षय थाय तेवारें जीवने क्षायक सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय अथवा ए चार प्रकृतिनुं जेवारें क्षायोपशम थाय तेवारें क्षायोपशमिक सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय, अथवा ए चार प्रकृतिनो जेवारें उपशम थाय तेवारे जीवने उपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय एवी रीतें ए त्रण प्रकारना सम्यक्त्व मांहेलुं कोइ पण सम्यक्त्व प्राप्त थाय तेवारें ते जीव निरागी श्रीतीर्थंकर देवनो प्रकाशेलो जे शुद्धधर्म तेने पाम्यो एम

कहेवाय. ते पाम्याथी तेने स्वयमेव सद्विचारो उत्पन्न थाय छे, ते आवीरीतें केः—

आ, म्हारो देह जे ते क्षणभंगुर छे, विनाश शील छे, एनो विनाश करवा माटे घणा रोगादिक शत्रुउ तत्पर थइ रहेला छे, माटे एने वधारे टकी रहेवानो नरोसो न राखतां जे कांइ माराथी आज शुभकृत्य थवुं होय ते काल उपर न राखुं, परंतु आजज करुं; चार दिवस आगल किंवा पाछल पण अवश्य मने ए मुकी जशे तो एना योगेकरी हुं जेटलो परोपकार करी शकुं तेटलो तो एमांथी लान लइ लेउं! छेवटतो ए कांइ म्हारुं थवानुं नथी, माटे म्हारे एमांथी जे सार काहाडी लेवानुं छे ते नहीं काढी लेतां तेने शावास्ते व्यर्थ गमावुं? एवुं तत्त्व ग्रहण करी मनरूप मंदिरने विषे विवेक रूप दीपकने प्रकाश करतो सद्वर्त्तन, उदारवृत्ति, सद्गुरुनो समागम, सत्संगति, सदयता, सद्धर्मनिष्ठा, परोपकारबुद्धि, इत्यादि उत्तम प्रकारना विचार तेना मनमां प्रवेश करे तेना योगे तप, जप, पडिक्कमण, पोसह, व्रत, नियम, पूजा, प्रभावना, तीर्थयात्रा, साधर्मी वात्सल्यादि अनेक शुभकृत्यो सेवन करी छेवट धनधान्यादिक नवविध बाह्य परिग्रह तथा क्रोधादिक चौद प्रकारनो अभ्यंतर परिग्रह छे तेनो त्याग करी पंचमहाव्रत आदरी, चारित्र ग्रहण करी कृतकृत्य थाउं. ए म्हारुं मुख्य कर्तव्य छे. एवा विचार तेना मनमां निवास करी रहेला होय छे, ते प्राणी शुभ इच्छानुरूप पोतानुं वर्त्तन राखी, अंतकाल पर्यंत यथाशक्ति सत्कर्मो करी, सर्व मुखे मंगल बोलावी, आ सृष्टिमां पोतानी कीर्त्तिने अमर करनारो थाय छे. पछी ते धनवान हो किंवा निर्धन हो!

एवा पूर्वोक्त नियमपूर्वक आ हुंडाअवसर्पिणी रूप पंचम कालने विषे चालनारां मनुष्य रूप रत्नोनी संख्या घणीज स्वल्प जाणवी.

यद्यपि पूर्वोक्त उदारवृत्ति, सदयता, परोपकारबुद्धि इत्यादि शुभकृत्यो तो अन्यदर्शनीओमां पण अनेक जीवो करे छे खरा, परंतु सम्यक् ज्ञान न होवाथी ते मात्र तेमने सांसारिक सुख नुं कारण रूप थाय छे, पण आत्मधर्मनी ओलखाण विना परंपरायें मोक्ष प्राप्तिना हेतु रूप थता नथी, केम के? तेमना धर्म प्ररूपकपण सर्व राग द्वेषनी वृत्तिवाळा छे; तेथी ते सत्य कहेवाय नहीं, सत्यधर्म तो जेने राग द्वेषनो अभाव थइ गयेलो छे, एवा श्रीतीर्थंकरदेवनो प्ररूपेलो छे तेज जाणवो. ए वात अनुभवसिद्ध छे, ते विषे आशंकाओ तथा समाधान करवाने आ न्हानी सरखी प्रस्तावनामां स्थळ आपवुं व्याजबी कहेवाय नहीं.

ते सत्यधर्म पामवानी अभिलाषा करनारा विवेकी जनोयें प्रथम तो गुरुआदिकना मुख थकी अनेक प्रकारनां शास्त्र श्रवण करवामां हरहमेश तत्पर रहेवुं जोइये. शास्त्रो सांभळवा, तथा जे शास्त्र पोताने वांचवा भणवां योग्य होय ते पोते पण वांचवां तथा भणवां. कदापि सांसारिक धंधा रोजगारनां प्रपंचथी जो वधारे अवकाश न मळी शकतो होय तो नित्य बे घडी, चार घडी पर्यंत जेटलो अवकाश मळी शके, तेटलो वखत शास्त्र श्रवण करवुं, त्यारपछी ते श्रवण करेला श्रुतनुं मनन करवुं, त्यारपछी तेनुं निदिध्यासन करवुं. ए शास्त्र श्रवण, मनन, निदिध्यासन जे छे तेज पूर्वोक्त सम्यक् दर्शननी प्राप्ति कराववानां शुभ हेतु छे; माटे ते संपादन करवा सारुं ज्ञानप्रद अने जीवितने सफळ करनारां शास्त्रो सांभळवानो उद्यम करवो.

तेमां कोइ अल्पपुण्यवानने कदापि आजीविकादिकना भयथी सांसारिक प्रपंचना योगें अवकाश न मळी शकवाथी जो प्रतिदिवस शास्त्र भणवुं वांचवुं, अने श्रवण करवुं न बनी शके तो अष्टमी आदिक चार पर्वोने विषे सांभळवानो अभ्यास राखवो जोइये. तेम पण न

बने तो बे पाक्षिक दिवसोमां श्रवण करवुं. कदापि तेम पण न बने अने कोइरीतें नवनवा प्रकारना विचित्रोपदेश आपनारा अनेक स्तुतिपात्र ग्रंथोनुं श्रवण न थइ शके. तेवारें पोताना पूर्वकृत अशुभकर्मोना उदयने धिःकारी पश्चात्ताप करीने पण परमेश्वरे बतावेला श्रीपर्युषण पर्वना दिवसोमां आ कल्पसूत्रतो अवश्य सांभलवुं. एम सांभलवाथी तथा पूर्वोक्त पश्चात्ताप करवाथी पण अनेक प्रकारना पूर्व संचित ज्ञानावरणीय कर्मनो बंध छूटे छे, ते जेम जेम बंध छूटतो जाय तेम तेम क्रमे क्रमे क्षयोपशमनी तारतम्यता थती जाय, तेना योगे शास्त्र श्रवणादि साधन पण सुलभ थतां जाय, तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो अवश्य संभव थाय, ए अनुक्रम अनुमानथी निर्विवाद सिद्ध छे. आ कालमां प्रथमतो धर्म शास्त्रना संभलावनारा सत्यप्ररूपक निर्ग्रंथी साधुओनी जोगवाइ पण कोइ स्थले कोइ कोइ अवसरेज मले छे, तेम छतां जो संभलावनार मली आवे तो सांभलनारा मलवा मुश्केल छे!!

वली हालना समयमां घणे स्थले तो यतीओनो निवास दीठामां आवे छे, ते यतिओ पण जेटला श्रावकोने रहेवाना स्थानको छे ते सर्व स्थानकोमां मली आवे तेम नथी; परंतु तेटला गामो मांहेला पण जे महोटां महोटां शहेरो ज्यां घणा श्रावकोनी वस्ति होय तेवा गामोमां मली आवे छे. एटले लगभग जेटला श्रावकोने रहेवाना गामो अने शेहेरो आदिक छे ते मांहेला आशरे शोमां भागना गामोमां यतियोनो निवास दीठामां आवे छे; हवे ते यतीयो जे छे तेमां पण व्याकरणन्यायादि शास्त्रोमां निपुण थयेला एवातो भाग्येज सेकडे मात्र बे यतियो निकलवा कठण थइ पडे; बाकीना अठाणुं रहे ते मांहेला थर्डा भागना यतियोतो श्रावकने पडिक्कमणां करवानी क्रिया सुधां पण समजी शके तेवा न होय, अने

अहीं पडिक्कमणादि क्रिया कराववानी तथा टवा प्रमुखना ग्रंथो व्याख्यानमां वांचवा प्रमुखनी कलामां निपुण निकले तेटला यतियो श्रावकादिकोने धर्मोपदेश करे. ते पण थोडाज गामोमां समजवुं. परंतु जे गामोमां यतिउनी पण योगवाइ न मले तेवा गामडांउमां नित्य व्याख्यान सांजलवुं तो दूर रह्युं परंतु मात्र आखा वर्षमां महामांगल्यकारी महोटुं पर्युषण पर्व आवे ठे, तेमां पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र अवश्य सांजलवुं जोइये. त्यां संविज्ञ गीतार्थ महामुनिराजो के जेने सूत्र वांचवानो अधिकार ठे, तेवा पुरुषोना मुखथी कल्पसूत्र श्रवण करवुं, ते तो रह्युं, परंतु साधारण यतियोना मुखथी सांजलवानुं पण बनी शके नही एवीरीते श्रीमालवादि देशोना गामोमां घणे स्थले अमारा दीगमां तथा सांजलवामां पण आव्युं ठे.

जे जे गामोमां वांचनारा यतियो अथवा गीतार्थ ज्ञानियोनो संयोग मले ठे, ते ते गामोमां सांजलनारा श्रावको पण बधा सरखा न होय केटलाएकने सिद्धांत श्रवण करवानी अनिलाषा होय ठे. ते तो अवश्य सांजलवा जाय, वली केटलाएक महोटा दिवसो ठे माटे हमणा अवश्य सांजलवुं एम विचारी जाय, केटलाएक आपणा गाममां आपणे चार जण महोटा ठैये ते सांजलवा नही जइशुं तो बीजा पण कोइ सांजलवा जशे नही एवा हेतुथी जाय, तथा केटला एक दाक्षिण्यता देखाडवा महान् प्रतिष्ठित बनवासारु जाय, केटलाएक देखादेखीथी जाय, केटलाएक समजण नही, परंतु मात्र धर्मना दिवस ठे, एवा हेतुथी पण सांजलवा जाय. इत्यादिक सांजलवा जवाना अनेक हेतु ठतां पण सांजलनारानी संख्या मात्र दशमो हिसो निकली शके, अने बाकीना नवमा हिसा जेटला प्राणीतो एवा अज्ञ होय के सांजलवामां कांइ समजेज नही. तेमने तो बधा दिवसो उद्यम करवामां अने सां

सारिक सुखनी मोज मजाहमांज आनंद मानी घरमां बेठी रहेवानुं गमे एवा घणा निकली आवे छे. वर्तमान काळनुं माहात्म्यज एवुं छे के, धर्म श्रवण प्राणीमात्रने दोहिलुं थाय !

तथापि जे गामोमां संविज्ञ गीतार्थनी योगवाइ तो मळेज क्यांथी? परंतु श्रीपर्वना दिवसोमां कल्पसूत्र वांची शके एवो कोइ यति पण मळे नहीं, अने ते गाममां थोडा घणा पण पंजोसणना दिवसोमां कल्पसूत्र श्रवण करनारा तो जरुर निकळी आवे,कदापि कोइ गाममां तेवी संख्या न निकळी आवे तोपण धर्माध्यक्ष धर्माधिकारी पुरुषोनुं साधारण धर्म छे के, तेवा गामोमां पण ते प्रकारनी प्रेरणा करीने अवश्यधर्मनी प्रवृत्ति कराववी जोइयेज. हवे तेवा प्रवृत्ति करावनारा धर्मानिरुची जीवो पण आजना समयमां विरला दीठामां आवे छे, तेथी घणा स्थळोमां तो पर्युषण जेवा महोटा दिवसोमां पण कल्पसूत्र बिलकुल वंचातुंज नथी,अने जे जे गामोमां तेवा सांभळनार ज्ञानरुची जीवो होय छे, तो तेमने ज्यारे कोइ संभळावनारो मळतो नथी, त्यारे ते श्रवण रुचिकर पुरुषो कोइ यतिने तेडीने कल्पसूत्र श्रवण करवानो व राव करे छे, परंतु यतियो पण एवा होय छे के, जे गाममां पर्युषणना दिवसोमां रहे ते गाम मांथी पांच पचास रूपैया पेदा करवानी इछा राखे एवा होय छे, तेथी ते श्रवण करनारा जे निकळी आवे ते वळी बीजा पोताना मित्र, हेतु किंवा सगा संबंधि अथवा साधर्मि भाइ ओने तेमज तेवा कोइ अन्यजनोथी मिलाप करीने पांच दश जणने एकठा करी महाजनना शेठीआने समजावी तेमनी मारफत श्रावकोनी पासेथी टीप करावी यतिने आपवा सारु पैसा एकठा करे छे, ते एकठा थया पछी यतीने बहार गामथी बोलाववामां आवे छे, जे आवी पर्युषणना आठ दिवस ते गाममां रहे छे, अने तेमां कल्पसूत्र वांचवाना दिवसोमां

कल्पसूत्र पण पोतानी पासे जेवी प्रत होय तेवी प्रत उपरथी सर्व सनाने यथामति वांची संनळावे त्यारें सांनळनारा सांनळी शके.

तिहां कोइ कोइ पोथीमां तो संक्षेपथीज वात लखेली होय छे, अने कोइमां अतिसंक्षेपथी कोइमां मध्यमथी, कोइमां तेथी विशेष तेमज कोइमां उत्कृष्ट रीतें सविस्तर वात पण लखेली होय छे, हवे तेज गाममां एक वर्षें एक यती आवे, अने बीजा वर्षे बीजो यती आवे, तो ते बीजी पोथी लइ आवी वांचे, तेमां वळी कोइ कथानाग उंगो अधिको लखेलो होय, ते सांनळीने अथवा तेज यती होयने बीजे वर्षे बीजी पोथी लइ आवीने वांचे तो पण सांनळनारा घणाए प्रवीणतो होय नही,के जेथी ते समजी जाय जे कल्पसूत्रनो मूळपाठतो १२१६ श्लोकनो छे, तेनो अर्थतो मात्र अर्थ करनाराउनी वाक्यरचनामां फेर पडे ते नले, बाकी नावार्थ सघळो सरखो होय छे. परंतु पाछळथी केटलाएक आचार्योये जे कथानाग वधार्यो छे, ते कोइये थोडो तो कोइ आचार्यें घणो नाग वधार्यो छे; एवी वातना समजनारा थोडा होय; परंतु गया वर्षें तो आ अमुक कथा सांनळी हती तेमां आटली वात न हती, अने आ वर्षे आटली वात केम वधारे आवी? किंवा उंगी आवी,अथवा गया वर्षें आ अमुक कथा वांचवामां आवी हती, अने आ वर्षें ते कथाज केम न वंचाणी? एवी आशंकाउ करनारा घणा होय माटे तेमना मनमां तेवी अशंकाउ मुंजवण करी नाखे छे तेथी तेमने महोटुं विचार थइ पडे छे. माटे तेवा गामडीयामां जो एकज प्रकारनुं लखेलुं पुस्तक वर्षोवर्ष वंचातुं होय तो तेमने कोई संशय उत्पन्न न थाय तेमने माटे. तथा कोइ वृद्ध श्रावक जरावस्थाने लीधे अथवा कोइ रोगादिना प्रसंगथी चालीने उपासरा सुधी पण कल्पसूत्र सांनळवा माटे जइ शकतो न

होय तो ते पोताने घेरज बेठा थकां पण कल्पसूत्र वांची शके तेनाने माटे, अथवा कोइ काने बहेरो होय तेथी बीजानो करेलो उपदेश श्रवण न करी शके परंतु पोतें वांची जाणतो होय तो तेने पण अंतराय न पडे तेमाटे, तथा घणा न्हाना न्हाना गामोमां मात्र पांच दश घेर श्रावकोना होय छे तो तिहां कोइ यतिपण वांची संजलावनारो नाग्येज मले! तेवा गामोना रहेवासीयोने पण कल्पसूत्र सांजलवानो अंतराय न पडे तेवाओने माटे, तथा घणा स्थले श्राविकाओ परिचि एटले पडदा आडा राखीने बेसे छे ते बाहिर सांजलवाने अर्थे जो उपासरादिकमां जाय तो ते आडो पडदो बांधीने अन्यस्थानके क्यां जइ बेशी शके? माटे पोथी होय तो तेपण घरमां वांची शके तेवी श्राविकाओने अर्थे. तथा तरतनी दीक्षित केटलिएक साध्वीओ पण एवी होय छे, के तेमने जो सुगम बालावबोध करेलो होय तोज वांचवाने अनुकूल थाय. नहीं तो ते वांची शकवाने अशक्य थाय छे तेमने माटे. इत्यादि बीजा पण श्रोताओने विघ्न करनारा अनेक कारणो छे. ते सर्व अडचण मटाडवाने माटे घणा मुनिराजोने, तथा संविज्ञ पक्षीओने, तथा श्रीपूज्य नहारक अचार्यादिकोने, तेमज घणा यतीयोने, घणा देशोना श्रावको आज केटला एक वर्ष थया हरहमेस कहेतां आवे छे के, सहेला घणा देशोना श्रावको आज केटला एक वर्ष थया हरहमेस कहेतां आवे छे के, सहेलाइथी वंचाय एवी रीते जो कल्पसूत्रनो बालावबोध करीने छपावी प्रसिद्ध कस्यो होय तो तेथी श्रोता जनोनी उपर महोटो उपकार थाय, अने पूर्वोक्त हरकतो मटी जाय. तेम छतां कोइ पण आचार्यादिकें तेम कर्युं नहीं. छेवट संवत् १९३५ नी शालमां श्रीविजयराजेंद्रसूरि मालवादेश मांहेला श्री जांबुवा नगरने विषे मास कल्प रह्या हता, ज्यां मालवा, मारवाड तथा गुजरात अने पारकर मली चार देशना श्रावको तरफथी चार माणसोए

आवीने महाराज साहेबने कल्पसूत्रनो सुगम बालावबोध बनाववानी विनंति करी ते सांभली महाराजें कह्युं के आगल ए कल्पसूत्रनी आव ढालो पंमित श्रीज्ञानविमलसूरियें भाषा रूपे रचेली छे, एवुं सांभलीये छैयें माटे हवे विशेष सुगम करवानी जरूर नथी, तोपण श्रीसंघनी तरफथी विनंति करवा आवनारा माणसोयें कह्युं, के ते ग्रंथमां थविरावली तथा साधुसमाचारी नथी माटे एक व्याख्यान ओछुं छे, अने वली वात पण संक्षेपथी कहेली छे. तेथी ते ग्रंथ अधूरो कहेवाय. कह्युं छे के, "अधुरुं ग्यानसो ग्यान नहीं, अधूरो भण्योसो भण्यो नही, ॥ अधूरी रसोइ सो रसोइमां नही, अधूरो वृक्ष सो फले नही ॥ अधूरो फल पाको सो बराबर स्वाद नही, तिणसुं संपूर्ण चाहीजे" ते आप महान्पुरुष छो, परमोपकारी छो माटे श्रीसंघनी उपर कृपादृष्टि पूर्वक अमोये करेली अरजी कबुल राखो.

एवुं सांभली महाराजे श्रावकोनी हस्तक चार पांच भंमाराउमांथी घणी जीर्ण पुरातन लखेली चूर्णि, निर्युक्ति, टीकादिक पंचांगीनी, बे चार शुद्ध प्रतो एकठी करावीने कल्पसूत्रनो बालावबोध करवा मांड्यो; ते तयार थया पछी केटलाएक श्रावकोयें तो ते प्रत उपरथी उतारा करवा मांम्या ते सुमारे पांच पचाश उतारा पण थया वली पण उतारा करी प्रतो लखाववानी इछा घणा जनोना मनमां हती. पण लहिया तरत वखत उपर मली शके नही. तेमज प्रत लखी तयार करवाने पण वरसोना वर्ष निकली जाय, एक प्रत पच्चाश शाठ रूपैया खरच करवाथी बनी शके, ते काम बधाने अनुकूल पडे नहीं. मात्र तवगर शेठ साहुकारोथी बनी शके, परंतु गरिब वांचनाराथी एटला पैसा खरचाय नहीं तथा वली ते प्रत लखावीने पछी शोधन करी आपनार पण कोइ मली शके नही. इत्यादिक अनेक प्रकारना विघ्नो

सज्ञावनाराउने माथे पडवाथी सर्वे सज्जनोना मनोरथ पूर्ण थइ शक्या नहीं.

त्यार पछी संवत् १९४२ नी सालमां महामुनि श्रीकीर्त्तिचंद्रजी महाराज तथा महामुनि केशरविजयजी ए बे मुनिराजो ते साक्षात् जाणे चोथा आरामांहेला साधुउना नमुनानी मूर्त्तिउज होयनी? एवा शुद्ध चारित्रिया, पंचमहाव्रतना यथार्थ पालनारा साधुउयें श्रीसीयाणानगरमां आवी चोमासुं कर्युं. अकस्मात् बनाव एवो बन्यो के गामथी बागराना रहेवासी श्रावकोंने ते गामना सिरदार साथें कोइ प्रकारनो वांधो पड्यो तेने लीधे तेमने पण पोताना घर मूकीने गामथी सीयाणा नगरमां आवी रहेवुं पडशुं. एम ते गाममां बे गामोना श्रावकोनो जमाव थयो, अने साधु मुनिराजोनी जोगवाइ पण मली आव्याथी त्यां घणा श्रावक श्राविकाउयें सम्यक्त्वादि अनेक प्रकारना व्रतपच्चख्खाण कर्या. तेमां वली ते वखतमां विशेष आश्चर्य उत्पन्न करनारी आ वात बनी के, ते गामना रेहवासी क्षत्री, चोधरी, घांची, कुंभारादि अनेक प्रकारना अन्यदर्शनीउ तेमां वली यवन लोको अने ते गामना ठाकोर सहित पण साथे मली सम्यक्त्वादि व्रत धारण करवा मंडी गया. एवी रीतें अनेक जीवो त्यां समकेत पाम्या. छेवट जेनाथी कांइ विशेष व्रत लेवुं न बनी शक्युं, तो तेणे मात्र महारे आ जन्मपर्यंत सूड न वालवानो, कोइयें पंजोसणना आठ दिवस पर्यंत धान न कापवानो, केटला एकें रात्रिभोजन त्याग करवानो, कोइयें आठम चौदशें जीवहिंसा न करवानो, तथा गामना ठाकोरना भाइयें तो जावजीव हिंसा नहीं करवानो एवा घणाजनोये नियम लीधा. तथा ठाकोरे पोते पोताना घरमां जे बकरा तथा पाडा प्रमुख अनेक जातिना जीवो हिंसा करवा माटे राखेला हता, तेमने पण अभयदान आपी छूटा

करी श्रावकोना पंच खातानो जीवरक्षित पांजरापोल ठे तेमां मोकली आप्या. इत्यादि रीते ते चोमासामां घणाज जीवो समकेत प्रमुख अनेक प्रकारना व्रतधारीउ थया, तेथी मह्योटो उपकार थयो, अने जैनधर्म अत्यंत देदीप्यमान सूर्य सरखो दीसवा लाग्यो.

तेमज बीजा पण सीयाणा गामना परगणाने आसपास चारे बाजुये फरता वीश वीश पच्चीश पच्चीश कोशमां आवेला गामोना रहेवासी श्रावको मांहेला घणा श्रावको पण स्थावर तीर्थ करतां जंगम तीर्थ वांदवामां असंख्यात गुणु लाभ वधारे ठे,एवुं समजीने त्यांहां बिराजेला बे साधु मुनिराजोनी साथे सांवत्सरी खमाववाने माटे वंदन करवा निमित्तें आव्या.

एवी रीते घणा गामोना श्रावको एकठा थया, तेवा अवसरे प्रसंगानुसारे मुनिराजोए पण धर्मोपदेशमां ज्ञानदान आपवानी तुलना करनार अन्य कोइ दान नथी एवुं व्याख्यान कर्युं तेवारें सभा मांहेला श्रावको बोल्याके, ए ज्ञानदानतो मुनिमहाराजथी थइ शके ठे, परंतु श्रावकोथी कांइ बनी शकतुं नथी. ते सांभली मुनिमहाराज बोल्या के, पुस्तको लखावीने जे जे ज्ञान भणवानी तथा वांचवानी रुचीवाला होय तेमने आपवाथी तथा ज्ञानना उपकरण आपवाथी, तेमज ज्ञान भणनाराउने अन्नवस्त्रादिकनुं साहाय्य आपवाथी, बीजाने भणाववा आदिकथी श्रावको पण परिपूर्ण ज्ञानदान करी शके ठे.

ए वात मुनिउना मुखथी सांभलवा पठी तेज दिवसें रात्रिना वखते श्रावको सर्व एकठा थया. तेमणे एवो ठेराव कर्योके पंजोसण पर्वमां कल्पसूत्र सांभलवाने तथा बीजा पर्वोमां जे जे पर्व ज्यारे आवे ठे तेवारे ते ते पर्वनी कथाउ सांभलवाने घणा श्रावकोने अंतराय पडे ठे, माटे आपणने प्रथम भागमां तो पूज्य भट्टारक श्रीविजयराजेंद्रसूरिये बनावेला कल्पसूत्र

नो बालावबोध छे ते छपाववो अने बीजा भागमां दीवालिआदिक सर्व पर्वनी कथाउनो बा
लावबोध छपाववो, तथा त्रीजा भागमां वली कोइ सर्व संघने उपयोगी ग्रंथ हशे ते विचार क
रीने छपावीशुं. एवीरीतें गामश्री सीयाणा तथा गामश्री बागराना श्रावक पंचो मलीने कबुलात
आपीके जे पूर्वोक्त ग्रंथो छपवानो खरच लागशे ते अमो आपीशुं. तेनो व्याज लइशुं न
ही. अने छपायला प्रत्येक पुस्तकनी शो शो नकलो तो निर्ग्रंथ साधुउ तथा असमर्थ श्रावको
जे वांचवानी रुचीवाला होशे तेमने मफत आपशुं. एवो ठेराव करीने छपाववा संबंधी का
मकाजनी तथा शो शो नकल कोने मफत आपवी तेनी तपास करवा माटे शा. रतनाजी
वाघाजी गामश्री आहोरना रेवासी श्रावक छे ते घणुंज प्रामाणिक, नीतिमान्, विवेकी, डाह्यो,
दयालु, भरोसादार, विश्वासु अने शास्त्रज्ञ छे माटे तेने अधिकारी ठेरवीने प्रथम श्रीकल्पसूत्रनो
बालावबोध छपवाना कामने मदत आपवा माटे टीप भरवा मांडी तेमां मदतकरनारा आ
नकोनी संख्या घणीज महोटी थवाथी श्रावक केसरीमल्ल कस्तुरजी गामश्री सीयाणा वाला
यें कह्युं के जो बीजा ग्राहक ए पुस्तकोने लेनारा थशे, तो तमोयें मंगावेला पुस्तकोनी संख्या
मां फाला प्रमाणे प्रत्येक पुस्तक राखनार धणीने पुस्तको कमती आपीशुं ते वात सर्व टीपमां
नाम दाखल करनाराउये मंजुर राखीने सभा विसर्जन थइ. ते दिवसें श्रीसंघे करेला ठेराव
ने अनुसरीने में आ पुस्तक श्रीमुंबईमां श्रावक भीमसिंह माणकनी मारफत छपाव्युं छे.

हवे आ ग्रंथ श्रीपर्युषणाना दिवसोमां वांचवानो छे माटे हालमां महारा दीठामां आवेली
प्रवृत्ति मुजब केटलाएक श्रावक अने साधुउनी जे उलटी आचरणा पंजोसणना दिवसो
मां पण सुधरती नथी ते हवे सुधारी लेशो एवी आशा राखीने प्रथम तेमनी आचारणा

कही देखाडुं छुं. जे दिवसोमां प्रत्येक सम्यक्दृष्टी जीवोने अरस्परसमां उत्पन्न थयेलो वैरविरोध ते,सर्व मन,वचन कायायेंकरी टाली नाखवो जोइये,जे दिवसोमां प्रतिक्रमण धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करवी जोइयें, जे दिवसोमां हर हमेश संवरजावमां रहेवुं जोइयें, जे दिवसोमां उत्तम प्रकारना वैराग्य दशाने स्फुरण करनारा, एवा महान्पुरुषोना रचेला शास्त्र श्रवण करवा जोइयें, जे दिवसोमां राग द्वेष टाली शत्रु मित्रने समजावे गणवा जोइयें, जे दिवसोमां षट्काय जीवोनी जयणा राखवी जोइयें. कारणके स्वाजाविक पण श्रावकनो आचार ए छे जे कोइ पण कार्य करवुं ते जयणायुक्त उपशमजावसहित करवुं, तेवारे पंजोसण जेवा सर्वोत्तम पर्वमां तो वली उपशम जाव अत्यंत विशेष राखवानी आवश्यकता छे. तेम छतां पंजोसण जेवा महोटा दिवसोमां पण आपस आपसमां एक कहे के महारो गछ महोटो तो बीजो कहेशे अमारो गछ महोटो. एम गछने माटे ज लडाइ करी विरुद्ध वचन बोली क्लेश उत्पन्न करी नाखे, वली एक कहेशे के तमे चोथनी संवत्सरी करो छो माटे जैनमतथी विरुद्ध चालो छो, वली बीजो कहेशे के तमे पांचमनी संवत्सरी करो छो ते जैनमतथी विरुद्ध करो छो, एक कहेशे तमे उगमती तिथी ल्योछो, तो बीजो कहेशे तमे आथमती तिथी ल्योछो, तेमज एक कहेशे के देरासरनो आ अमुक पूजारो राखवो तो बीजो कहेशे अमुकने राखवो, वली सामिवात्सल्य जीव दयानां उत्तम प्रकारनां कार्योने माटे तेमज गोरजीनी पछेडीने माटे, वासक्षेप नाखवाने माटे पण टीपणीउ फरती करे ते वखत पण एक बीजानी पासेथी कमती जास्ती रकम जरावधाने माटें में एटलुं आप्युं तो तमे एटलुं आपो. नहीं तो हुं अमुक रकम नही आपीश, हुं पण अमुकज रकम आपीश. एवीरीतें एक बीजानी साथे क्लेशकारी वचन बोले

छे. घणुं शुं कहीयें, परंतु आवा वरसनां जे वरवांधा होय ते पंजोसण जेवा महोटा पर्वना दिव
सोमां आवी उना करीने कजीयो उत्पन्न करवानुं कारण नीपजावे. वास्तविक रीतें जोतां
श्रावकोने तो गच्छ छेज नही. जो गच्छ छे तोपण साधु आश्रयी सिद्धांतोमां गच्छ कह्या छे. परं
तु श्रावक आश्रयी कोइ स्थानके सिद्धांतोमां गच्छ कह्या नथी. माटे गच्छोने वास्ते लडाइ क
रीने पंजोसणना दिवसोमां शुभक्रिया करवी पडी मूकी तेने बदले कलहकरण रूप क्रिया तो
अवश्य नज करवी जोइयें. तेमज वली जेनी मरजीमां जे आवे ते धणी पोतानी श्रद्धापूर्वक
तेटला नाणा टीपणी प्रमुखमां भरी आपे किंवा न पण भरी आपे तो तेथी शुं गेरफायदो
थयो? पोते पोतानी उदारतासहित जेम बने तेम शुभक्रियामां वधारे द्रव्य खरचवुं ते पण
पोतानी लघुता दर्शावता छतां खरचवुं, कारण के बनता सुधी जो गुप्त रीते परोपकारमां खरचा
तुं होय तो वली घणुंज रूडुं समजवुं. समजु श्रावकें तो पोतानुं नाम राखवानी पण अभिला
षा न राखवी; परंतु छेवट कोइ रीतें छूटी शकातुं न होय, तेवारें पोतानुं नाम आपवुं पडे तो
भले; नहिं तो मात्र नामनाने माटे द्रव्य खरचीने अल्प फल प्राप्त करी लेवुं नही.

वली आ कल्पसूत्रने सभासमक्ष वांचनारें केवी रीतें वांचवुं ते संबंधि केटलो एक खोला
सो यद्यपि प्रथम आ ग्रंथना प्रारंभमां लखायलो छे खरो, तथापि वली कांइक वांचनारने
विशेष भलामण करवानी रजा लइयें छैये के, प्रथम तो वांचनार जे होय ते श्रीवीतरागना
वचन उपर पूर्ण श्रद्धालु होय, बीजुं देशकालने अनुमाने यथाशक्तियें कोइपण प्रकारनुं व्रत
करेलुं होय, त्रीजुं सभासमक्ष जे दिवसथी वांचे ते दिवसथी मांमीने ज्यांसुधी पूर्ण करे त्यां
सुधी सचित्त वस्तुनो त्यागी होय, चोथुं वांचे तेटला दिवस ब्रह्मचर्यनो पालनारो होय, एवो

पुरुष पोसह अथवा सामायिक लइने, आगल शुद्ध बाजोट राखी तेनी उपर कवली स्थापी ते उपरे बहु यत्न सहित, विनयपूर्वक पुस्तक राखीने पछी सांजलनाराउनी सजा एकठी थाय तेवारें बीजो एक बाजोट मूकेलो होय तेनी आगल पांच पच्चीश बाइयो गीत गाती थकी आवी ने प्रथम कंकुनुं स्वस्तिक गुंहली करी तेनी उपर चोखा शालिनुं स्वस्तिक गुंहली करे ते गुंहली करीने बाइयो तथा माणस सर्व ज्यारे पोतपोताना योग्य स्थानके बेसी जाय त्यार पछी वांचनार जे होय ते त्रण वार पुस्तकने नमस्कार करे, पछी सजासहित पोते उजो थइने एक नवकारनो पाठ कहीने " पुरिमचरिमाणकप्पो० " ए मंगलाचरणनी गाथा संपूर्ण कहीने पछी नीचे बेसी मुख आगल मुखवस्त्रिका राखीने सजासमक्ष वांचना करे, परंतु उघाडे मुखे वांचे नही ते पण काल वेलाये वांचे ते आवी रीतें के सवारना सात वागाथी ते अगीआर वागा पर्यंत वांचे, अने फरी मध्यान्हे बार उपर एक वाग्याथी मांमीनें सांजना चार वागा पर्यंत वांचे एवा प्रकारनो विधि जेटला दिवस वंचाय तेटला दिवस दररोज करवो एम करी बराबर मुदतसर आठ वांचना तो अवश्य पूर्ण करवी अने थविरावली पट्टावली जो तेटला दिवसमां संपूर्ण न वंचाइ शकाय तो ते पंजोसणना बीजा दिवसें वंचाय तो पण कांइ हरकत नथी. एवी रीतें वांचतां कदापि एक वांचनारनो वांचतां वांचतां घांटो बेसी जाय, अथवा बीजुं कोइ निमित्त बनी आवे, तो ते स्थाने बीजो जे श्रद्धालु वांचनार आवी बेशे ते पण पूर्वोक्त विधिसहित वांचे. आ सजा समक्ष वांचनारनो विधि कह्यो.

हवे जे पोतानी मेले मनमां वांचीने धारी राखतो होय, अथवा पोतें वांचीने पोताने ज सांजलवुं होय, तो तेणें पण मुखवस्त्रिका आडी आपी पवित्र थइने अकाल वेला टाली

कपली उपर पोथी राखी वांचवुं. ए शुभफलनी देनारी उत्तम प्रकारनी वांचवानी रीत छे.

आ ग्रंथमां जे जे स्थानके जे जे विषयो उपर कथाउ आवेली छे, त्यां त्यां ते ते कथाउना संबंध मां जे जे बनाव बनेला छे तेना चित्रो पण स्थानके स्थानके दाखल करेला छे. एवा सर्व मली चोराशी चित्रोनो समावेश करेलो छे, तेमां अमारा तरफथी केटला एक चित्रोमां जूलो थये ली छे. एक तो श्रीमहावीर भगवानने देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षीमांथी हरणी गमेषी देवतायें जे वखत संहृया छे, ते वखत जन्मेला बालकना जेवुं तथा हारादिक आभूषणोयें करी युक्त भगवाननुं रूप दर्शावेलुं छे ते ठेकाणे एवी आकृति करवी जोइती न हती, परंतु ब्यासी दिवस गर्भमां रहेला बालकनो जेवो आकार थाय छे तेवी आकृति आभूषणोरहित करवानी हती, तथा वली एज गर्भ त्रिशला राणीनी कूखमां संक्रमाववाने वखते पण तेवी ज आकृति करवी जोइती हती, बीजुं जे वखत भगवान् श्रीवीरस्वामीने इंद्र महाराज मेरुप र्वतनी उपर पांडुकवनमां जन्मसंबंधि महोत्सव करवाने लइ गयेला छे ते वखत इंद्रना खो लामां बेसाडीने भगवानना पगनो अंगुठो मेरुपर्वतनी उपर राखी जाणे ते अंगुठो मेरुपर्वत ने दाबतो होय ? एवा आकारमां ज्ञान कराववानुं चित्र करवुं जोइतुं हतुं, तेने बदले इंद्रना खो लामां आडो सुवारी मूकवा जेवी आकृति बनीगयेली छे. ए पण चित्रमां जूल थयेली छे. तथा वली केटलेक ठेकाणे जे वखत जेवा अंतःकरणना विचारमां जीव होय ते वखत तेनी मुखमुद्रा तथा शरीरना अवयवो पण तेवाज करवा जोइयें तेने बदले तेवी मुखाकृति अने शरीरना बीजा भागोना अवयवो न बनेला जेवा चित्र पण थइ गयेला दीठामां आवे छे. ते संबंधि अमाराथी अजाणपणे जे जे जूलो विवेकी सज्जनोने चित्रोमां दीठामां आवे ते

वलकुल हतीज नही तेमज बीजी पण टबामां लखेली प्रतो साथे मेलवतां केटलिक वातो न्यूनाधिक दीठामां आवी माटे बीजी बे त्रण कल्पसूत्रोना टबानी प्रतोनो आधार लइने तेमां छापनार श्रावक भीमसिंह माणेकें वधारो कर्यो तेथी आ ग्रंथ लगभग अगीआर हजार श्लोक संख्या जेटलो थइ गयो. हजी पण थविरावली पटावली वगैरेमां घणी वात वधारे लखवानी हती पण थोडा दिवसना व्याख्यानमां पूर्ण थइ शके नही तेना भयथी पडती मूकी देवी पडी छे; तथा वली श्रीपार्श्वनाथस्वामीना चरित्रमां तेमज बीजे केटलेक स्थानके अन्य प्रतोमां लखेली वातोथी तदन जुदीज रीतें अने अति संक्षेपमां महाराज साहेबे वातो लखी काहाडी हती ते मांहेली घणा स्थले तो फेरवी नाखेली छे, परंतु केटलाएक स्थानके संशय होवाथी तथा महाराजने कागल लखी जुवाब मगाववाथी घणा दिवस छापवानुं काम बंध राखवुं पडे तेम न बनी शकवाथी एमज रेहेवा दीधी छे. तेमज छापवाने घणी उतावल हती माटे वधारे शोधन पण थयुं नथी, तथापि जेटलुं बनी शक्युं तेटलुं यत्किंचित शोधन पण कर्युं छे. वली मारवाड, गुर्जर तथा हिंदुस्थानी मली त्रण भाषायें मिश्रित आ ग्रंथ महाराज साहेबे बनावेलो हतो, परंतु तेमां घणा वांचनार साहेबोने वांचतां कंटालो उपजे कदाचित् कोइने यथार्थ अर्थ न बेसे, तेथी ते भाषा सुधारीने श्रावक शा. भीमसिंह माणकें घणु करी एकज गुर्जर भाषामां लखीने छाप्युं छे. तोपण हजी कोइ कोइ स्थले मारवाडादि देशोनी भाषायें मिश्रित थयेली भाषा रहेली हशे तथा कोइ कोइ वातो पण अपूर्ण रहेली हशे. ते मज पुनरुक्ति पण घणा स्थानकें दीठामां आवशे ते सर्व वांचनार सज्जनोयें सुधारी वांचवुं.

आ ग्रंथमां शोधनार श्रावक भीमसिंहमाणकनी नजर चूकथी तथा बुद्धिनी मंदताथी तथा

लखावी मोकलेली प्रतमां लेखकना दोषथी जे जे चूको दीगमां आवी ते सर्वेनुं शुद्धिपत्र पण गाम श्रीथरादथी पारेख अंबा मोतीचंदें करी मोकलेलुं ले, ते प्रमाणे अहीं गपी मुक्युं ले; तथापि ते शुद्धिपत्र फरी पाछुं प्रत साथे मेलववाने फुरसद न मलवाथी तपासवामां आव्युं नथी, तेथी तेमां पण वधी पूरेपूरी चुको दाखल थइ गयेली होय एम जणातुं नथी, माटे एवी चूको संबंधि जे कांइ खामीयो रहेली आ ग्रंथने विषे वांचक जनोने दृष्टिगोचर थाय तो ते साहेबोये अमारा उपर कृपादृष्टी राखीने सुधारी वांचवी. अमे आ ग्रंथमां रही गयेली चूकोसंबंधि थयेलो अमारो अपराध तथा बीजोपण जेकांइ श्रीजिनवचनविरुद्ध आ ग्रंथमां लखाण कर्युं होय ते सर्वेनुं मिछाडुक्कडं सर्व श्रीसंघनी साथे करीये लैये.

तथा ए ग्रंथमां जे वक्रजडादि उपर दृष्टांतोनी कथाउ आवेली ले, तेमज बीजा पण घणा स्थले कथाउ आवेली ले, तेमां जुदी जुदी प्रतोनी लखावट उपरथी फेरफार दीगमां आवशे माटे प्रथम कल्पसूत्र सांजलनारा साहेबोये कोइ जगायें कथा विस्तारपूर्वक सांजलेली होय अने ए ग्रंथमां संक्षेपथी लखेली होय, अथवा प्रथम कोइ जगायें संक्षेपथी कथा सांजलेली होय अने आ जगायें विस्तारपूर्वक लखेली होय अथवा ते कथाना संबंधमां पण कोइ वात्तो कोइक प्रतमां एक रीतें लखेली होय अने तेज वात्तो वली बीजी प्रतमां बीजी रीतें लखेली होय तो, ते सर्वे जुदी जुदी प्रतो जुदा जुदा साधुउना हाथथी बनावेली होवाथी तेमज जुदा जुदा माणसोना हाथे लखायाथी परंपराये एवा प्रकारनो फेरफार चाल्योज आवे ले, माटे तेवा तेवा फेरफार जोइने कोइ वांचनारे अथवा सांजलनारें एमां चूक थयेली ले एम समजीने मनमां संशय आणवो नही. निःसंदेह थइने एकाग्रचित्तें सांजलवुं.

वली अमो सर्व श्रावक नाइउने महोटा उत्साहपूर्वक प्रार्थना करीयें ठैयें के, आ कल्प सूत्रनी जो नथारे प्रतो न राखी शकाय तोपण प्रत्येक श्रावके एकेकी प्रत तो पोतानी पासें अवश्य राखवी. केमके? आ पुस्तकमां महा मांगलिकनां करनारा एवा चौद सुपन जे श्रीतीर्थ कर जगवाननी माताने जे वखते नगवान् कूखमां आवी उपजे ठे, ते वखते दीठामां आवे ठे, ते चौदे सुपनानां चित्रो पणांज सुशोनित बनावी दाखल करेला ठे, तेमज वली प्रत्येक वर्षमां पंजोसणपर्वना आठ दिवस लगण प्रत्येक श्रावक धंधो रोजगार सर्व मूकी देइने धर्मसंबंधि जे जे शुनक्रियाउ नगवाने कहेली ठे ते करवामां तत्पर रहे ठे, तो तेमने तेवा महोटा दिवसोमां यद्यपि गुरु पासेथी सांजलवानी जोगवाइ मलती होय तो पण फरी पोताने घेर आवी अवगाही लेवाने माटे प्रत राखवानी अवश्यकता ठे, तेमज जेमने गुर्वा दिक पासे सांजलवानी जोगवाइ न मले ते साहेबोने तो जरूर वांचवा माटे राखवीज जोइ यें. अमो तो जैन बंधुउने एवी नलामण करीयें ठैये, के प्रत्येक श्रावके बधाय पुस्तको लखा वी तेनो संग्रह करी राखवो जोइयें. जो कदापि तेटलुं इव्य खरचवाने सामर्थ्य नही होय तो मात्र आजना समयमां ठापाखानानी कलाथी लखेला पुस्तकोना किमतना पच्चाशमा हिस्सा जेटली किमते सारा शोधेला अने लखेली प्रतो करतां हजार दरजे चडतां एवा पु स्तको मली आवे ठे तेटला तो जरूर पोताना घरमां राखवाज जोइयें, पण आपणने वांच तां तो आवडतुं नथी माटे फोकट पुस्तक राखीने शुं करीयें? नकामा पडी रहशे, आपणथी सचवाय पण नही, उलटी ज्ञाननी आशातना थाय, वली कागलो उपर नकामा पैशा को ण खरचे? कागलोतो काले शडी जाशे एवा एवा अनंत संसारने वधारनारा कुविकल्प क

रीने पोते पण ज्ञाननो संग्रह न करवो, अने बीजा वळी पांच पचासने उपर लख्या मुजब जुठा उपदेश आपीने तेमने पण ज्ञाननो संग्रह करवा न देवो. एवी रीतना उपदेशकर्ता श्रावक मंडळमां आज वर्तमान काळनेविषे हजारो माणसो दीठामां आवे छे. एवा अगमं जस नाडउथी हास्य विनोदमां पुस्तकोनो संग्रह न करवा माटे लोकोने उपदेश करवाथी धर्मरूप प्रासादनो पायो त्रोडी नंखाय छे, तेथी तेमने अनंतकाळ पर्यंत नरक निगोदादिना दुःख स हन करवा पडशे, ते जोइ मने तेमनी उपर करुणा आवे छे, जे आ विचारा मोहरूपी मदि रानुं पान करी मदोन्मत्त थइ मायाजाळमां फसी पडेला मदिरानी वाफमां आवीने पोताने जावे तेम वरत्यां करे छे, पण ते धर्मरूप धन सारवी राखवाने माटे मंजूषासमान जे धर्मपु स्तको छे तेनो नाश करवानो मजबुत उपाय बतावे छे, तेथी आगळ एना कटुक विपाक नो गवया पडशे माटे तेम न थाय तो सारुं ए माटे तेमने सावधान करवा सारु कहुं छुं के एवा अभव्य अने परजवे महाकष्टकारी दुःखोने उत्पन्न करनारा उपदेशो करवामां हीं तमारे सावचेत रहेवुं जोइये. एवो उपदेश तमारे मात्र वचनथी करवानोज बंध राखवुं एटलुंज नही परंतु तमे तमारा मनमां एवो उपदेश करवानी इच्छा पण कदापि काळे राख शो नही. एथी धर्मरूप वृक्षनुं उन्मूलन थइ जाय छे. कारण के पुस्तको जणवा वांचवाथीज धर्मनुं अथवा अधर्मनुं जाणपणुं थाय छे, तेनी तमे निर्भत्सना करो छो तो पछी बीजो एवो कयो पदार्थ छे के जेना आधारे तमारायी धर्मनुं स्वरूप जाणुं जशे?

तेमां वळी आटलो विशेष छे जे केटला एक साधारण गतिथ अवस्थाने प्राप्त थयेला स त्पइव्यवान् जे होय छे ते तो पोतानी यथाशक्तिये ज्ञान पुस्तको उपर प्रतिवर्षे पांच रुपैया

खरच करता दीठामां आवे ठे, परंतु जे द्रव्यवान् ठे तेमने तो जाणे घोर निद्रा आवी गये ली होय एवी स्थितिमां रह्या थकां ज्ञान ते वली शुं? अने पुस्तक ते शुं? एटलुं पण जाणता नथी तो पठी पुस्तको खरीद करी पोते लइ वांचवा, बीजा जे निर्धन जनो होय तेमने वांचवाने माटे मफत आपवा, ज्ञान भंमाराउ करी राखवा, एवी वात तो जाणेज क्यांथी!

माटे जे प्रमाणे नवा नवा श्री जिनमंदिरो करावavaमां द्रव्य खरचवुं तेमां महोटो लाभ ठे, ते वातो पण सर्व शास्त्रना आधारथी जाणी जाय ठे तो तेवा शास्त्रोनो संग्रह करी तेना महोटा महोटा भंमारा कराववा तेमां तो वली देरासरो कराववा करतां पण अनंतगुणो लाभ ठे, तेम ठतां ते वातमां आशातनादिक दूषण काढाडी देखाडवा अने कोइनुं मन भगाववुं एना सरखुं महोटामां महोटुं पाप वली बीजुं कोइ नथी. जो ज्ञाननो संग्रह करवामां आशातना लागशे एवो बोलतां तमारी जीभ अटकती नथी तो वली देरासर कराववामां पण कोइ अन्यदर्शनी आवी थुंक प्रमुख नाखशे तो तेनी पण आशातना थाशे माटे ते पण न करवा जोइयें एम कहेवामां पण कोइ वखत तमे भर राखशो नही? ते विचारी जोजो. माटे कोइना आगल कुतर्क करी कल्पित वातो बनावीने कहेवाना कामथी दूर रहेजो. परमेश्वरेंतो श्रीजिनचैत्य नवीन कराववा, पोषध शालाउ नवीन करावबी, अने पुस्तकोना नवा नवा भंमारो करावबा ए त्रण पुण्यक्षेत्र थया, तथा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चतुर्विध श्रीसंघनुं वैयावच्च करवुं, ए प्रमाणे ए सातक्षेत्र पुण्यना ठे, ते शुभक्षेत्रोमां श्रावके पोतानुं न्यायोपार्जित द्रव्य खरचवुं एवी रीतें आगमोमां कहेलुं ठे, तो ए सात क्षेत्रमांहेज ज्ञानना भंमारा करावबा. ज्ञान पुस्तकोनो संग्रह पोते करवो बीजाने करावबानो उपदेश देवो

जे करतो होय तेने अनुमोदन आपवुं, जे ज्ञानपुस्तकोनी वृद्धि करतो होय, जे ज्ञान जणवा मां वांचवामां, जणाववामां पोतानो काळ निर्गमन करतो होय, तथा अन्यजनोने पण एज उपदेश करतो होय ते पुरुष सर्वमांहे शिरोमणी समजवो, तथा ज्ञानने पोते जणवुं, बीजा जे जणता होय तेमने पोताथी बनतुं यथाशक्तियें आश्रय आपवुं, जणनार वाचनारने पुस्तको ल इ आपवा तेने अन्न वस्त्रादिक आपवानुं सहाय देवुं, इत्यादिक ज्ञानवृद्धि थवामां जे श्रावकें इ व्य खरचवुं ते पूर्वे कहेला सात पुण्यक्षेत्रो मांहेलुं मुख्य क्षेत्र छे, तो तेवा शुभस्थानकमां कोइ अजाणना कहेवाथी अथवा देश काळने अनुमाने घणा पुरुषोमां मान नही मळे,एवा हेतुथी अथवा लोभदशाथी पोताने इव्य खरचवानो संकल्प न थाय ते तो चूको, परंतु पोते सारासार विचारमां निपुण न होय तो पण माह्यो बनी पूछवा आवनारने, अथवा सभावे चार गपा मारनार बेठा होय तेमनी पासे वातो करतां जो पुस्तकसंग्रह करवानी वात निकळेतो कहेके जाइ आ काममां आशातना बहु लागे छे, आ तो महापापनुं काम छे, एमांतो प्रा णी डुबी जाय, एथीतो सातमे नरके जवुं पडे,अथवा ए पुस्तकोना संग्रह करनारा, छपा वी प्रसिद्ध करनारा, एने अनुमोदन देनारा, एनी प्रशंसा करनारा ए सर्व नरकना अधि कारी थाय छे, ए महोटी आशातनाउं करे छे, ए अनंत संसार भटकशे, एनो क्यारे पण छूटको थवानो नथी, एवी एवी जे चार वातो पोताने बोलतां आवडती होय, ते बोलीने बीजा प्राणीउंने पण पुण्यक्षेत्रमां इव्य खरचवाने नाकारो करे, तेथी तेमनुं पण मन उतरी जाय, वळी ते पण बीजा दशजणनी पासे जइ एवी वातो करे, तेथी पुस्तकनी वृद्धि करवा उपर कोइनुं पण चित्त लागे नही. तो एवा असत्योपदेश करवाथी शुं तेने फायदो थाय

छे? एथी तो उलटुं धर्मना नास्तिपणानो संभव थइ जाय. कारण के कोइपण धर्मनी प्रवृत्ति करवी अने ते धर्मने महोटा पाया उपर लाववो, तथा ते धर्मनुं महत्त्व वधारवुं तथा ते धर्मने सर्वदर्शननी वचमां दीवो करीने प्रकाशित करी राखवुं तथा सर्व दर्शन मां मुख्य अनें श्रेयस्कारी शिरोमणी करवो, तथा घणा जनो आपणा धर्मने मान्य करे, घणा जनो आपणा धर्ममां आवी भळे, घणा जनो आपणा धर्मने अंगीकार करे, घणा जनो आप णा धर्मनी प्रशंसा करें, इत्यादि धर्मनी वृद्धि करवानुं मुख्य कारणतो ते धर्मसंबंधि धर्मपु स्तकोज छे, अने बीजुं ते धर्ममां महोटा विद्वानोनी संख्या महोटी होवी जोइयें ते विद्वानो थवानो मुख्यआधार पण धर्मपुस्तकोज छे,तो तेवा धर्मपुस्तकोनी अवगणना करी,तेने पडतो मूकी,ते नीजे वृद्धि करतो होय ते पुरुषने सर्व पुरुषोमां शिरोमणी गणवो जोइयें. ते तो दूर रह्युं प ण उलटुं तेने पतित करवा माटे तेना उपर आशातना लागवाना दूषणोनो आरोप करी तेनी निंदा करवी. ए शुं थोडी सरमनी वात छे? एथी जो पोताना धर्मनुं निर्मूळपणुं न थाय तो वळी धर्म गमाववाना बीजा एथी वधारे साधनो कोण छे वारु?

वास्तविक जोतां तो उक्त पुरुषो जे छे तेज पोतें पोताना धर्मने दूषित करी पोताना धर्म रूप प्रासादना थंभभूत एवा जे धर्मपुस्तको तेनो जडा मूळथी नाश करवानो जाणे धंधोज लइ बेठेला छे. एवा प्राणीउनी गणनामां तेमने गणवा माटे कांइ पण हरकत देखा ती नथी, ते पुरुषो, खरेखरा स्वधर्मनिंदक, स्वधर्मभ्रष्ट, स्वधर्मनाश करनारा, अविवेकी, अनं तो काळपर्यंत अपारावार संसारमां परिभ्रमण करनारा, स्वधर्मद्वेषी, ज्ञानद्वेषी, ज्ञाननी

थी पण ज्ञाननो विनय न कर्यो ते देव गुरुनो विनय पण क्यांथी करे ?
केमके जेणे ज्ञानने विनय न कर्यो तेवा ज्ञानीनां निंदक जनोने आटलो पण विवेक नथी के जमणवार करी न्यातो
प्रस्तुत ज्ञान ज्ञानीनां निंदक जनोने आटलो पण विवेक नथी के जमणवार करी न्यातो
जमाडी, सातमो पापस्थानकजे अहंकार ने तेने धारण करी, जाणे कोइ नाचतो कूदतो
होय तेवा गांमा जेवा आकारमां थनी जइ छकाय जीवोनो आरंभ करीने वली तेने पुष्ठ क
रवा सारु अनुमोदन करे. जे जुओ आ अमुक माणसे नातवरो कर्यो तेनां करतां मारुं जम
ण केवुं थनी आव्युं के तेवुं आज दिवस पर्यंत कोईये करेलुं नथी. एम घरोघर बाईयोना टोळे
टोळा मळीने वातो करता हता माटे आपणने तो सहुये वखाण्या, आपणे हवे खरचे व
धी गया, आपणे महोटा थइ गया, एवीरीते विकारवंत थइने जाणे हुं धर्मिष्ठ महोटो ज्ञा
नी थइ गयो, अने हवे आवी कीर्त्ति थइ, तेथी माठी गतिये जावानी बीक मटी गइ. परंतु
ते एम समजतो नथी, के बुढायोना मरणादि पाछळ जे नातवराकरी जमण करवां, अने खा
वा खवराववाथी राजी थवुं, नाराजी थवुं, ए सर्व चाल भिखारी ब्राह्मणोना घरथी चालेली छे,
पण श्रावकोना घरथी चालेली नथी. एथी मात्र छकायनो आरंभ थाय ने अभिमान वधे
ए बे कर्म शिवाय जो दान बुद्धिथी अनुकंपा लावीने गरीब दुःखी भूखे मरताने जमाडे तो
तेथी शाता वेदनीय कर्म बांधी पुण्य उपार्जन करे. नही कां आ नवे मान मल्युं एटलुंज
फल समजवुं, अने पुस्तकोनुं दान देवाथी तो लाखो माणसोनां मनना परिणाम सुधरे, जे
थी तेमनामांथी दुर्गुणो दूर थइ जाय, सद्गुणनी प्राप्ति थाय, धर्म पामीने धर्म मार्गमां
प्रवृत्ति करे, तेथी देवादिकनी शुभगतियोनां सुख भोगवी परंपरायें मोक्ष पामे. वली दान
आपनारने पण वधारे अहंकार न आवे अने सरलस्वभावी थको ते पण तरतज धर्म पामी

परंपराये मोक्ष पामे. ए ज्ञानदानसमान बीजुं कोई पण उत्तम दान नथी. सर्वदानोमां श्रेष्ठ दान ते ज्ञाननुंज छे, पारमार्थिकपणे मोक्षनुं साधन छे माटे नावथी अजयदान जे छे ते ज्ञाननुंज दान छे एम समजवुं तो दूर रह्युं परंतु आ संसारमां रह्या थका मात्र साधारण नीति शास्त्रनुं ज्ञानसंपादन करवाथी पण केटला अगणित फायेदाउ थाय छे, ते सर्व कोइ प्रत्यक्ष देखे छे, धर्म, विवेक, नीति, मर्यादा, मह्लापण, चतुराइ, सन्यता, इत्यादि लक्षावधि सद्गुणोनुं साधन ते ज्ञानज छे, आ नव, परनव बेहु नवे सुखदाइ छे, तो तेनुं आराधन करवामां शुं खोटुं छे, आटलुं पण ते समजता नथी!!!

वली केटला एक श्रावक नाइउ तो कोइने विवाहादि कार्योमां जमणवार आदिक करवा पडे छे, तेमने वासणोनो खप पडे माटे पोतानी मह्लोटाइने वास्ते कोइ मागवा आवे तो तेने आपवा जोइयें एवा हेतुथी केटलीएक जातना त्रांबा पितल वगेरे धातुना वासणोनो संग्रह करी राखे छे के जे बीजाने मागवा आपवाथी ते वासणो लइ जइ तेना उपर रसोइ करे तेमां छकायनो आरंन थाय छे, ते सर्व कोइ जाणे छे, वली ते लाडवा प्रमुख जमनारा मनुष्योने पण पारकी रसोइ खावाथी कोइ प्रकारनो गुण प्राप्त थतो नथी, मात्र खाइपी मदोन्मत्त थइने विषय सेवनमां तत्पर थवा शिवाय बीजो कोइ विशेष फायदो थत्तो देखात्तो नथी अने पुस्तको लइ पोताने तथा बीजाउने वांचवा नणवाने माटे संग्रहरूपे राखेला होय तेनाथी वाचनार अथवा राखनार बेहुने कोइ प्रकारनो आरंन थतो देखातो नथी तथा विषयसेवनमां मदोन्मत्त थवाने बदले उलटो तेनाथी निवृत्त थवानो उपदेश मले, तेथी ते अकार्य करवाने बीहीतो रहे, एवा एवा अनेक प्रकारना फायदा थाय छे.

एमज केटलाएक विवाहादिकमां वरराजाने पहेरवा माटे कोइ मागवा आवशे तो जरूर आपवा पडशे. एवो संकल्प करीने नवनवा प्रकारना सोना रूपा हीरा मोती आदिकना आनू षणो घडावी राखे ने, तथा वस्त्रोना वागा सिवरावी राखे ने, तेम कोइने नणवा गांचवाने मा टे ज्ञानना नंमारा करी राखवामां शुं हरकत आवी नडे ने? पण एवी बुद्धि तो नाग्येज आवे.

वली केटलाएक घरंटी, कोशी, कोदाल, पावडा प्रमुख उकाय जीवोनी हिंसाना अधिक रणनो संग्रह करी राखे ने के कोइ मागवा आवशे तेने आपवा पडशे तो तेने बदले कोइ वाचवा सारु मागवा आवशे तेने आपवुं पडशे ए हेतु माटे ज्ञाननो संग्रह करी राख वामां कांइ हरकत जणाती नथी, हरकत मात्र एटलीज ने के ज्ञानना संग्रहथी सद्गति प्राप्त थवानी परंपरा चालु थाय ने, अने घरंटी आदिकना संग्रहथी उकायनो आरंन थवाने लीधे डुर्गतिनी परंपरा चालुज रहे ए विना बीजी कशी हरकत जोवामां आवती नथी.

प्रस्तावनामां यद्यपि नियमतो एवोज ने के, जे ग्रंथनी प्रस्तावना होय ते ग्रंथनो सारांश देखाडवो जोइये, तेने पडतो मूकीने बीजी अन्य वातो लखेली ने, तथा प्रस्तावना पण एक न्हाना सरखा ग्रंथ जेटली लखाइ गयेली ने, तेमज वतावलथी लखवाने लीधे पुनरुक्ति पण घणा स्थले थयेली ने तेनुं कारण ए के आवातो जाहेर करवा माटे म्हारा अं तःकरणमां हर हमेस इच्छा रहेती हती, परंतु कोइ योग्य प्रसंग न मलवाथी एमांज लखी मूकीने माहारी इच्छा पूरण करी ने माटे जेमने सामान्य पणे विषय जोवानी अभिलाषा होय तेमने आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वांचवाथी जाणवामां आवी जाशे, अने विशेष लाभ लेनाराये आ ग्रंथने आद्यथी अंत पर्यंत वांची जावुं ए म्हारी प्रार्थना ने. अस्तु ॥

परंपराये मोक्ष पामे. ए ज्ञानदानसमान बीजुं कोई पण उत्तम दान नथी. सर्वदानोमां श्रेष्ठ दान ते ज्ञाननुंज छे, पारमार्थिकपणे मोक्षनुं साधन छे माटे जावथी अनयदान जे छे ते ज्ञाननुंज दान छे एम समजवुं तो दूर रह्युं परंतु आ संसारमां रह्या थका मात्र साधारण नीतिशास्त्रनुं ज्ञानसंपादन करवाथी पण केटला अगणित फायेदाउ थाय छे, ते सर्व कोइ प्रत्यक्ष देखे छे, धर्म, विवेक, नीति, मर्यादा, मह्हापण, चतुराइ, सन्यता, इत्यादि लक्षावधि सद्गुणोनुं साधन ते ज्ञानज छे, आ जव, परजव बेहु जवे सुखदाइ छे, तो तेनुं आराधन करवामां शुं खोटुं छे, आटलुं पण ते समजता नथी!!!

वली केटला एक श्रावक जाइउ तो कोइने विवाहादि कार्योमां जमणवार आदिक करवा पडे छे, तेमने वासणोनो खप पडे माटे पोतानी मह्होटाइने वास्ते कोइ मागवा आवे तो तेने आपवा जोइयें एवा हेतुथी केटलीएक जातना त्रांबा पितल वगेरे धातुना वासणोनो संग्रह करी राखे छे के जे बीजाने मागवा आपवाथी ते वासणो लइ जइ तेना उपर रसोइ करे तेमां छकायनो आरंज थाय छे, ते सर्व कोइ जाणे छे, वली ते लाडवा प्रमुख जमनारा मनुष्योने पण पारकी रसोइ खावाथी कोइ प्रकारनो गुण प्राप्त थतो नथी, मात्र खाइपी मदोन्मत्त थइने विषय सेवनमां तत्पर थवा शिवाय बीजो कोइ विशेष फायदो थतो देखातो नथी अने पुस्तको लइ पोताने तथा बीजाउने वांचवा जणवाने माटे संग्रहरूपे राखेला होय तेनाथी वाचनार अथवा राखनार बेहुने कोइ प्रकारनो आरंज थतो देखातो नथी तथा विषयसेवनमां मदोन्मत्त थवाने बदले उलटो तेनाथी निवृत्त थवानो उपदेश मले, तेथी ते अकार्य करवाने बीहीतो रहे, एवा एवा अनेक प्रकारना फायदा थाय छे.

एमज केटलाएक विवाहादिकमां वरराजाने पहेरवा माटे कोइ मागवा आवशे तो जरुर आपवा पडशे. एवो संकल्प करीने नवनवा प्रकारना सोना रूपा हीरा मोती आदिकना आचू पणो घडावी राखे छे, तथा वस्त्रोना वागा सिवरावी राखे छे, तेम कोइने नणवा वांचवाने माटे ज्ञानना नंमारा करी राखवामां शुं हरकत आवी नडे छे? पण एवी बुद्धि तो नाग्येज आवे.

वली केटलाएक घरंटी, कोशी, कोमाल, पावडा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसाना अधिकरणनो संग्रह करी राखे छे के कोइ मागवा आवशे तेने आपवा पडशे तो तेने बदले कोइ वाचवा सारु मागवा आवशे तेने आपवुं पडशे ए हेतु माटे ज्ञाननो संग्रह करी राखवामां कांइ हरकत जणाती नथी, हरकत मात्र एटलीज छे के ज्ञानना संग्रहथी सद्गति प्राप्त थवानी परंपरा चालु थाय छे, अने घरंटी आदिकना संग्रहथी छकायनो आरंभ थवाने लीधे दुर्गतिनी परंपरा चालुज रहे ए विना बीजी कसी हरकत जोवामां आवती नथी.

प्रस्तावनामां यद्यपि नियमतो एवोज छे के, जे ग्रंथनी प्रस्तावना होय ते ग्रंथनो सारांश देखाडवो जोइये, तेने पडतो मूकीने बीजी अन्य वातो लखेली छे, तथा प्रस्तावना पण एक न्हाना सरखा ग्रंथ जेटली लखाइ गयेली छे, तेमज उतावलथी लखवाने लीधे पुनरुक्ति पण घणा स्थले थयेली छे तेनुं कारण ए के आवातो जाहेर करवा माटे म्हारा अंतःकरणमां दर हमेस इच्छा रहेती हती, परंतु कोइ योग्य प्रसंग न मलवाथी एमांज लखी मूकीने माहारी इच्छा पूरण करी छे माटे जेमने सामान्य पणे विषय जोवानी अभिलाषा होय तेमने आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वांचवाथी जाणवामां आवी जाशे, अने विशेष लक्ष करनाराये आ ग्रंथने आद्यथी अंत पर्यंत वांची जावुं ए म्हारी प्रार्थना छे. अस्तु ॥

परंपराये मोक्ष पामे. ए ज्ञानदानसमान बीजुं कोई पण उत्तम दान नथी. सर्वदानोमां श्रेष्ठ दान ते ज्ञाननुंज छे, पारमार्थिकपणे मोक्षनुं साधन छे माटे नावथी अन्नयदान जे छे ते ज्ञाननुंज दान छे एम समजवुं तो दूर रह्युं परंतु आ संसारमां रह्या थका मात्र साधारण नीतिशास्त्रनुं ज्ञानसंपादन करवाथी पण केटला अगणित फायेदाउ थाय छे, ते सर्व कोइ प्रत्यक्ष देखे छे, धर्म, विवेक, नीति, मर्यादा, महापण, चतुराइ, सभ्यता, इत्यादि लक्षावधि सद्गुणोनुं साधन ते ज्ञानज छे, आ भव, परभव बेहु भवे सुखदाइ छे, तो तेनुं आराधन करवामां शुं खोटुं छे, आटलुं पण ते समजता नथी!!!

वली केटला एक श्रावक भाइउ तो कोइने विवाहादि कार्योमां जमणवार आदिक करवा पडे छे, तेमने वासणोनो खप पडे माटे पोतानी महोटाइने वास्ते कोइ मागवा आवे तो तेने आपवा जोइयें एवा हेतुथी केटलीएक जातना त्रांबा पितल वगेरे धातुना वासणोनो संग्रह करी राखे छे के जे बीजाने मागवा आपवाथी ते वासणो लइ लइ तेना उपर रसोइ करे तेमां छकायनो आरंभ थाय छे, ते सर्व कोइ जाणे छे, वली ते लाडवा प्रमुख जमनारा मनुष्योने पण पारकी रसोइ खावाथी कोइ प्रकारनो गुण प्राप्त थतो नथी, मात्र खाइ पी मदोन्मत्त थइने विषय सेवनमां तत्पर थवा शिवाय बीजो कोइ विशेष फायदो थतो देखातो नथी अने पुस्तको लइ पोताने तथा बीजाउने वांचवा भणवाने माटे संग्रहरूपे राखेला होय तेनाथी वाचनार अथवा राखनार बेहुने कोइ प्रकारनो आरंभ थतो देखातो नथी तथा विषयसेवनमां मदोन्मत्त थवाने बदले उलटो तेनाथी निवृत्त थवानो उपदेश मले, तेथी ते अकार्य करवाने बीहीतो रहे, एवा एवा अनेक प्रकारना फायदा थाय छे.

एमज केटलाएक विवाहादिकमां वरराजाने पहेरवा माटे कोइ मागवा आवशे तो जरूर आपवा पडशे. एवो संकल्प करीने नवनवा प्रकारना सोना रूपा हीरा मोती आदिकना आनू पणो घडावी राखे छे, तथा वस्त्रोना वागा सिवरावी राखे छे, तेम कोइने जणवा वांचवाने मा टे ज्ञानना जंमारा करी राखवामां शुं हरकत आवी नडे छे? पण एवी बुद्धि तो जाग्येज आवे.

वली केटलाएक घरंटी, कोशी, कोमाल, पावडा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसाना अधिक रणनो संग्रह करी राखे छे के कोइ मागवा आवशे तेने आपवा पडशे तो तेने बदले कोइ वाचवा सारु मागवा आवशे तेने आपवुं पडशे ए हेतु माटे ज्ञाननो संग्रह करी राख वामां कांइ हरकत जणाती नथी, हरकत मात्र एटलीज छे के ज्ञानना संग्रहथी सजति प्राप्त थवानी परंपरा चालु थाय छे, अने घरंटी आदिकना संग्रहथी छकायनो आरंभ थवाने लीधे डुर्गतिनी परंपरा चालुज रहे ए विना बीजी कसी हरकत जोवामां आवती नथी.

प्रस्तावनामां यद्यपि नियमतो एवोज छे के, जे ग्रंथनी प्रस्तावना होय ते ग्रंथनो सारांश देखाडवो जोइये, तेने पडतो मूकीने बीजी अन्य वातो लखेली छे, तथा प्रस्तावना पण एक न्हाना सरखा ग्रंथ जेटली लखाइ गयेली छे, तेमज उतावलथी लखवाने लीधे पुनरुक्ति पण घणा स्थले थयेली छे तेनुं कारण ए के आवातो जाहेर करवा माटे म्हारा अं तःकरणमां हर हमेस इछा रहेती हती, परंतु कोइ योग्य प्रसंग न मलवाथी एमांज लखी मूकीने माहारी इछा पूरण करी छे माटे जेमने सामान्य पणे विषय जोवानी अभिलाषा होय तेमने आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका वांचवाथी जाणवामां आवी जाशे, अने विशेष खप करनाराये आ ग्रंथने आदयथी अंत पर्यंत वांची जावुं ए म्हारी प्रार्थना छे. अस्तु ॥

॥ अथ कल्पसूत्रबालावबोधस्य शुद्धीपत्रं प्रारभ्यते ॥

पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति०	अशुद्ध	शुद्ध	पत्रांक	पृष्ठांक	पंक्ति०	अशुद्ध	शुद्ध
२२	२	१	मह्ममशु	मह्मशुक	११९	१	१६	वांगी	वींगी
२७	१	५	मीपो	धींगो.	१३२	२	५	एयाण	एंधांण
२७	२	१७	घगी	घडी.	१३३	२	१६	लोसंमना	लोहसंमना
३२	२	२	स्वामी	स्वामी	१३४	१	७	लोसंम	लोहसंम
४२	१	९	ग्रंथिज्ञ	ग्रथिज्ञ	१४२	२	६	कीधि	कीधो
५१	१	८	श्रृंगार	शृंगार	१५२	१	१०	मेघलीने	मेघमालीने
५८	१	१	गांव्याथ्यादिक	गाटवादिक	१६०	१	१	नाख्यो	नाख्या
५८	१	९	जासूसना	जासूलना	१७०	२	१४	जमि	जूमि
६२	२	१८	कूंपापडो	पापडोकूं	१७१	१	६	कुमी	वडी
६३	२	१२	वांसुं	वांचा	१७३	१	१४	अगंथफूलना	अगंथनकुल०
७४	१	२	कूर्मः	कुर्मः	१८६	२	१५	घणोफेरवो	घडोफेरवो
७४	१	२	रीद्दसी	रीद्दशी	२१८	२	१२	गेवरीनी	वेवरनी
८२	१	३	केव्लीएक	केटलीएक		२	१०	गेवरीया	वेवरीया
८६	१	१२	वरफरी	फरफरी	२४८	२	१	तेनेयं	तैरियं
९१	१	६	फूकरा	फूकारा	२४८	२	२	योगोयद्दनं	योगोवद्दनं
१०४	२	१८	कोलो	कोली	२४८	२	२	युंक्ता	मुंक्ता

॥१६॥

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

अनुक्रमांक	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक
१	ग्रंथनी रचना करवानो हेतु	१
२	श्रीपर्युषणपर्वने विषे ग्रंथ वांचवानो विधि	१
३	श्रीपर्युषणपर्व तथा कल्पसूत्र अने श्रमणसंघनुं महत्त्व.....	१
४	दश प्रकारे साधुनो आचार छे, तेनुं वर्णन.	२
५	दश प्रकारना आचार मांहेला कया कया तीर्थंकरनी वारें कया कया आचार लोप तेमनुं आशंका तथा समाधानपूर्वक वर्णन.	६
६	ऋजुजड, वक्रजड अने ऋजुप्राज्ञ एवा त्रण प्रकारना साधुओ आश्रयी जुदा जुदा दृष्टांतो कह्या छे.	७
७	दश प्रकारनो साधुने आचार ते धर्म उपर वैद्यनो दृष्टांत.	१०
८	चोमासुं पुरुं थया पछी पण तेज गाममां साधुने रहेवुं पडे तेना कारणो तथा चोमासुं पुरुं थयानी अगाउ साधुने त्यांथी विहार करी जवुंपडे तेनां कारणो.	११
९	जे गामे साधु चोमासुं रहे तिहां उत्कृष्ट तेर गुण अने जघन्य चारगुण जोवा जोइयें तेनां नाम.	११
१०	पंजोसणपर्वनी उत्कृष्टता देखाडवामाटे एकताळीश पदार्थनी उपमा आपीते नाम.	१२
११	अन्यदर्शनमां पण ऋषिपंचमी माननीय छे तेनी कथा.	१२
१२	अठ्ठम तप करी कल्पसूत्र सांभळवुं ते उपर नागकेतुनी कथा.	१३

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
१३	चौद पूर्वनां नाम तथा तेटलुं शास्त्र लखवा उपर मसी केटली जोइयें तेनु प्रमाण.	१५
१४	कल्पसूत्र वांचवानी चाल पूर्वे अने पाछल केवा प्रकारनी हती तथा तेना संबंधे आवेली वडनगरना ध्रुवसेनराजानी कथा.	१६
१५	ए सूत्र वांचवाथी पाप जाय ते उपर दोसीना पुत्रनी कथा.	१६
१६	पंजोसणमां साधुयें तथा श्रावकें केटला धर्म कार्य करवा ते कह्या छे.	१७
१७	मंगल रूप नवकार मंत्र अर्थसहित.	१८
१८	श्रीमहावीर स्वामीना पांच कल्याणक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थया.	१८
१९	अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल आश्रयी छ आरानुं संक्षेप व्याख्यान.	१८
२०	श्रीऋषभदेवजीयें कहेला श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश भव संक्षेपथी.	२०
२१	देवानंदायें चौद सुपन दीठा तेने ऋषभदत्तें सामान्यथी फल कह्युं.	२५
२२	बत्रीश लक्षणनां नाम तथा बीजा पण सामुद्रिक शास्त्रने अनुसारे हाथ पग प्रमुखनी रेखाउ आश्रयी फलाफल कहेलां छे.....	२६
२३	शक्रेंद्रनां पूर्वभव आश्रयी कार्तिक शेठनी कथा तथा इंद्रनुं महत्त्व.	२८
२४	शक्रेंद्रे भगवाननी स्तवना करी तेमां नमुत्थुणंनो अर्थ तथा तेनी अंतर्गत मेघ कुमारनी कथा, इहां प्रथम व्याख्यान पण समाप्त थयेलुं छे.	३०
२५	दश अछेरानी दश कथाउ वीरभगवान ब्राह्मणना कुलमां उपना ते आश्रयी.	३३
२६	इंद्र महाराजे पोतानो आचार विचारी देवानंदानी कुखथी गर्भ अपहरीने त्रि	

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
	अज्ञानी कुखे संक्रमाववानो आदेश हरणीगमेषी देवने आप्यो. तेमां त्रिशला देवी अने देवानंदाना पूर्वभव कह्या छे. एमां अन्यदर्शनीउंमां भागवतना दश मस्कंधमध्यें देवदेवना हरण थवानी कथा पण प्रसंगे आवी छे.	४५
२७	हरणीगमेषी गर्भ पालटन करवा गया तिहां चंद्रादि चारगतिनुं प्रमाण.	४७
२८	अपहरती वखत भगवान शुं जाणे ने शुं न जाणे ते आश्रयी.	४९
२९	त्रिशलाराणीयें जे घरमां सुपन दीठा ते घरनुं वर्णन.	४९
३०	त्रिशला राणीयें चौद सुपन दीठा तेनो विस्तार सहित नाम तेमनी अंतरगत चार सुपनना वर्णन सुधी त्रीजुं व्याख्यान पूर्ण थयुं छे.	५०
३१	सिद्धार्थ राजायें त्रिशला राणीने स्वप्नानुं फल सामान्यथी कह्युं.	५५
३२	प्रजातें राजायें कचेरी शणगारी पोतें मल्लयुद्ध करी, तैलमर्दन कराव्युं, स्नान कर्युं, आभूषण पहेर्या, मांडवीया प्रमुख अढार प्रकारना पदवी धरावनाराउनो परिकर छे जेमने माटे तेनां नाम कह्या ते अढारमांथी सीमसेढाना घांधाने पतावनार जे सिंधी पालक थाय छे, तेनुं स्वरूप बतावदा माटे कहेली कथा.	५७
३३	आठ प्रकारना सुपन पाठकोनुं वर्णन.	६१
३४	सुपनपाठकोयें सर्वजणे अग्रेसरन थवामाटे कहेली पांचसो सुभटोनी कथा.	६२
३५	सुपनपाठको सिद्धार्थ राजा पासें आव्या. इहां त्रीजुं व्याख्यान पुरुं थयुं.	६३
३६	सुपन पाठकोयें कहेला नव प्रकारना स्वप्ननुं वर्णन तथा फल.	६४

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
३७	त्रिशला राणीयें चौद सुपन दीठां तेनां फल.	६५
३८	अरिहंत, चक्रवर्त्यादिकनी माता केटला केटला सुपन देखे इत्यादि तथा त्रीश सारा अने बेंतालीश माठा मली बहोतेर सुपनानां नाम.	६५
३९	सुपन दीठा पछी कोनी आगल कहेवुं अथवा नही कहेवुं ते संबंधि कथा.	६६
४०	बीजा पण केटलाक सुपनोनां फल तथा चौद सुपननुं समुच्चय फल.	६८
४१	सिद्धार्थ राजायें सुसिद्धिना वचन कह्या ते उपर गांगातेलीनी कथा कही छे.	६९
४२	इंद्रना हुकुमथी देवोयें सिद्धार्थराजाने घेर करेली धनादिकनी वृद्धि.	७१
४३	जगवान मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या नही, तेथी थयेलुं माताने दुःख, पश्चात्ताप तथा फरी जगवाने अवधिज्ञाने मावित्रोनुं दुःख जाणुं ते उपर गुणने बदले अवगुण करवा आश्रयी कहेली कथा,तथा फरी गर्भ हाल्यो तेथी माताने उत्पन्न थयेला आनंदनुं वर्णन....	७२
४४	गर्भप्रतिपालन करवा माटे त्रिशला माताजी केवा आहारादि करे छे ते.	७५
४५	दोला पूरण करवा आश्रयी इंद्र महाराज साथे थयेलुं युद्ध.	७६
४६	वीर जगवाननुं जन्म, चोवीश तीर्थंकरनो गर्भकाल,जन्मकुंमली,चोथुं व्याख्यान.	७६
४७	जगवान जन्म्या ते वखते देवोनुं आगमन, उपन्नदिक्कुमारीये करेलो महोत्सव.	७७
४८	सौधर्मादि चोशठ इंद्रें करेलो महोत्सव.	७९
४९	जगवाने इंद्रनी शंका निवारवा माटे अंगुठे करी मेरु चांप्यो इत्यादि.	८१

विषयोनां नाम.

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
५०	जगवानना जन्मनी रात्रे सिद्धार्थराजाने घेर सोना रूपादिनी वृष्टि थइ.	८२
५१	सिद्धार्थराजाये तोल मापादि वधारीने महोत्सवादि कर्यो.	८३
५२	जगवाननुं नाम स्थापवामाटे जोजन कराव्या तेनां विस्तारपूर्वक नाम.	८५
५३	जगवानना गुण रूप बलादिनुं वर्णन तथा आमलि क्रीडा अने नीशाल गरणुं.	९०
५४	इंद्र महाराजना पूछवाथी जगवानें कहेला जनेना अर्थ.....	९३
५५	जगवाननो विवाह,जगवानना मातपितादिनां जुदां जुदां नाम.	९६
५६	जगवानना मातपिता देवलोक गया पछी जगवाने गर्जमां करेला अनियहने याद कर्यो, लोकांतिक देवो आव्या, फरी नंदीवर्द्धनना अनुरोधे बे वर्ष पर्यंत गृहस्था वासें रह्या, वरषीदान आप्युं.	९७
	महोत्सव पांचमुं व्याख्यान समाप्त.	९९
५७	जगवाने दीक्षा लेती वखते नंदीवर्द्धने करेलो महोत्सव	
५८	दीक्षा लीधा पछी कुमारगामनी बाहेर ग्वालीयें करेलो उपसर्ग.	१०२
५९	कोल्लाग सन्निवेसें बहुलनामा ब्राह्मणने घरे पहेलुं पारणुं कर्युं.	१०३
६०	जगवानना शरीरे सुगंधी लेप हतुं तेथी मंखी जीवोये करेलो उपद्रव.	१०३
६१	जगवान दुइज्जंत नामा तापसने आश्रमें आव्या.	१०४
६२	जगवान चोमासुं रह्या तिहां यक्षे करेलो उपद्रव, यक्षनी कथा.	१०४
६३	जगवाने निद्रामां पाछली रात्रे तालपिशाचादि दश सुपन दीठा.	१०५
६४	अच्छंदक नामा नैमित्तिकें जगवाननी इर्ष्या करी ते आश्चर्य कथा.....	१०६

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
६५	जगवान एक वर्ष उपरांत वस्त्रसहित रह्या पठी वस्त्ररहित थया तेना कारण आश्चर्यी सोमदेव ब्राह्मणनी कथा, एमां दारिद्रनुं स्वरूपवर्णन करेलुं ठे.	१०६
६६	जगवाने चंमकोशीया सर्पने प्रतिबोध्यो तेनी कथा.	१११
६७	जगवानने नावमां वेग उपद्रव थयो,ते कंबल अने संबल देवताये निवार्यो,तेनीकथा	११२
६८	पुष्प नामा सामुद्रिक शास्त्रना जाणकारनी कथा.	११३
६९	जगवाने नालंदी पाडामां बीजुं चोमासुं कर्युं तिहां गोशालो मल्यो तेणे घणा स्थान के अनेक प्रकारना चाला कर्या ठे,तेनी कथाउ जगवानने थयेला उपद्रवोनी कथाउ.	११३
७०	वेश्यायन नामा तापस जेणे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी तेनी कथा.	११७
७१	गोशालो जगवानथी जुदो विचर्यो,तथा संगम देवे करेला मह्होटा वीश उपसर्ग.	११८
७२	जीरणशेठे जगवानने पारणुं करवा कह्युं ठतां पूर्णशेठना घेरथी वोहोर्युं.	१२०
७३	चंदन बालायें अडदना बाकुला जगवानने वहोराव्या तेनी कथा.	१२१
७४	जगवानना कानमां गोवालीयें खीला ठोक्या ते कथा, तथा उपसर्गोनुं प्रमाण.	१२२
७५	जगवान केवा थका विचर्या तथा बारवर्ष ने साडा ठमहीनामां करेला तपनुं प्रमाण.	१२३
७६	जगवानने केवलज्ञान उपन्या पठी अगीआर गणधरना संशयछेदक, गणधर वाद, तथा चतुर्विध श्रीसंघ स्थापन.	१२६
७७	गौतमस्वामि अष्टापद पर्वते गया, पन्नरसें त्रण तापसोने दीक्षा दीधी जगवानना चोमासानी संख्या गौतम विलाप, गौतम केवलज्ञान इत्यादि.	१४०

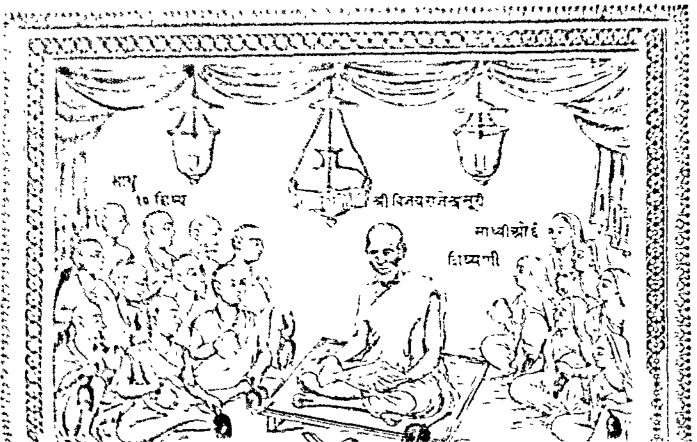
अनुक्रमांक. विषयोनां नाम. पृष्ठांक.

७८ भस्मग्रहाधिकार, भगवानना परिवारनी संख्या, तथा भगवाननुं निर्वाण. अहीं सुधी छठुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं, अने महावीरचरित्र पण संपूर्ण थयुं. १४३
.... १४६
७९ श्रीपार्श्वनाथस्वामीना दश भवनो अधिकार. १४९
८० श्रीपार्श्वनाथनुं जन्म, तथा विवाह तथा कमठ तापसनो अधिकार इत्यादि १४९
८१ पार्श्वनाथ भगवाने दीक्षा लीधी,पछी कलिकुंड तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा कूकडेसर तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा भगवानने कमठे उपसर्ग कर्या तिहां अहिछत्रा नगरी थइ तेनी कथा, तथा केवलज्ञान उपज्युं तथा परिवारनी संख्या निर्वाण. १५०
८२ श्रीनेमीश्वर भगवाननां पांच कल्याणिक यादवो अने पांडवोनी कथा. १५२
८३ चोवीश तीर्थंकरनां आंतरा कहीने सातमुं व्याख्यान समाप्त कर्युं छे. १७४
८४ श्रीऋषभदेव भगवान्‌ना तेर भव तथा सात कुलगर थया, तेनी कथाओ. १७६
८५ श्रीऋषभदेवनुं जन्म,नामस्थापन,बाल्यावस्थानुं वर्णन,तीर्थंकरोने स्तनपान करवा नी अने आहार करवानी रीति,भगवाननो विवाह तथा पुत्र पुत्रीनो परिवार. १८२
८६ राज्याभिषेक, अयोध्यानी रचना, दीक्षा, युगलीयाने आहारनी कला सीखवी. १८४
८७ अढारलिपि, स्त्रीनी चोशठ कला, पुरुषनी बहोतेर कला तथा भगवाने चोटली नी शिखा इंद्रमहाराजना कहेवा उपरथी राखी इत्यादि..... .... १८६
८८ नमि विनमिनी कथा,श्रेयांसे पारणुं कराव्युं तिहां वेढु हाथनो थयेलो विसंवाद. १८८
८९ भगवानने केवलज्ञान उपनुं, मरुदेवीजी पण केवल पाम्या तेनुं वर्णन. १९४

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
६५	जगवान एक वर्ष उपरांत वस्त्रसहित रह्या पठी वस्त्ररहित थया तेना कारण आश्रयी सोमदेव ब्राह्मणनी कथा, एमां दारिद्र्यनुं स्वरूपवर्णन करेलुं ठे.	१०६
६६	जगवाने चंमकोशीया सर्प्पने प्रतिबोध्यो तेनी कथा.	१११
६७	जगवानने नावमां वेग उपद्रव थयो,ते कंबल अने संबल देवताये निवार्यो,तेनीकथा	११२
६७	पुष्प नामा सामुद्रिक शास्त्रना जाणकारनी कथा.	११३
६ए	जगवाने नालंदी पाडामां बीजुं चोमासुं कर्युं तिहां गोशालो मल्यो तेणे घणा स्थान के अनेक प्रकारना चाला कर्या ठे,तेनी कथाउ जगवानने थयेला उपद्रवोनी कथाउ.	११३
७०	वेश्यायन नामा तापस जेणे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी तेनी कथा.	११७
७१	गोशालो जगवानथी जुदो विचर्यो,तथा संगम देवे करेला महोटा वीश उपसर्ग.	११७
७२	जीरणशेठे जगवानने पारणुं करवा कह्युं ठतां पूर्णशेठना घेरथी वोहोर्युं.	१२०
७३	चंदन बालायें अडदना बाकुला जगवानने वहोराव्या तेनी कथा.	१२१
७४	जगवानना कानमां गोवालीयें खीला ठोक्या ते कथा, तथा उपसर्गोनुं प्रमाण.	१२२
७५	जगवान केवा थका विचर्या तथा बारवर्ष ने साडा ठमहीनामां करेला तपनुं प्रमाण.	१२३
७६	जगवानने केवलज्ञान उपन्या पठी अगीआर गणधरना संशयछेदक, गणधर वाद, तथा चतुर्विध श्रीसंघ स्थापन.	१२६
७७	गौतमस्वामि अष्टापद पर्वते गया, पन्नरसें त्रण तापसोने दीक्षा दीधी जगवान ना चोमासानी संख्या गौतम विलाप, गौतम केवलज्ञान इत्यादि.	१४०

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
७८	नस्मग्रहाधिकार, नगवानना परिवारनी संख्या, तथा नगवाननुं निर्वाण. अहीं सुधी नहुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं, अने महावीरचरित्र पण संपूर्ण थयुं.	१४३
७९	श्रीपार्श्वनाथस्वामीना दश नवनो अधिकार.	१४६
८०	श्रीपार्श्वनाथनुं जन्म, तथा विवाह तथा कमठ तापसनो अधिकार इत्यादि	१४९
८१	पार्श्वनाथ नगवाने दीक्षा लीधी,पछी कलिकुंम तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा कूकडेसर तीर्थ थयुं तेनी कथा, तथा नगवानने कमठे उपसर्ग कर्या तिहां अहिछत्रा नगरी थइ तेनी कथा, तथा केवलज्ञान उपज्युं तथा परिवारनी संख्या निर्वाण.	१५०
८२	श्रीनेमीश्वर नगवाननां पांच कल्याणिक यादवो अने पांमवोनी कथा.	१५२
८३	चोवीश तीर्थंकरनां आंतरा कहीने सातमुं व्याख्यान समाप्त कर्युं छे.	१७४
८४	श्रीऋषनदेव नगवान्ना तेर नव तथा सात कुलघर थया, तेनी कथाउ.	१७६
८५	श्रीऋषनदेवनुं जन्म,नामस्थापन,बाल्यावस्थानुं वर्णन,तीर्थंकरोने स्तनपान करवानी अने आहार करवानी रीति,नगवाननो विवाह तथा पुत्र पुत्रीनो परिवार.	१८३
८६	राज्यानिषेक, अयोध्यानी रचना, दीक्षा, युगलीयाने आहारनी कला सीखवी.	१८४
८७	अढारलिपि, स्त्रीनी चोशठ कला, पुरुषनी बहोतेर कला तथा नगवाने चोटलीनी शिखा इंद्रमहाराजना कहेवा उपरथी राखी इत्यादि.....	१८६
८८	नमि विनमिनी कथा,श्रेयांसे पारणुं कराव्युं तिहां बेहु हाथनो थयेलो विसंवाद.	१८८
८९	नगवानने केवलज्ञान उपनुं, मरुदेवीजी पण केवल पाम्या तेनुं वर्णन.	१९४

अनुक्रमांक.	विषयोनां नाम.	पृष्ठांक.
९०	जरतबाहुबलनुं युद्ध, बाहुबलें दीक्षा लीधी, जरतराजा अष्टापदें गया.	१९७
९१	श्रीऋषजदेवजीनुं परिवार, निर्वाणमहोत्सव, आठमुं व्याख्यान समाप्त थयुं.	२०१
९२	स्थविरावली, श्रीवीरना अगीआर गणधर संबंधि नवगच्छनी वात.	२०३
९३	सुधर्मस्वामी,जंबुस्वामी,प्रजवस्वामी,सयंजवसूरि तथा यशोजद्रसूरि एमना चरित्रो.	२०४
९४	संजूतिविजयजी अने जद्रबाहु स्वामिनां चरित्रो, वराहमिहिरनी कथा सहित.	२०९
९५	श्रीथूलिजद्रजीनुं चरित्र, श्रीआर्यमहागिरिजी तथा आर्यसुहस्ति तदंतर्गत संप्रतिराजा तथा आर्यवज्रसूरि अने आर्य वज्रसेन सूरिनी कथा.	२११
९६	आर्यसिंहगिरिनी कथा तथा श्रीवज्रस्वामीनी कथा.	२१७
९७	रोहगुप्ताचार्यना गुप्तनामा शिष्य जेनाथी त्रैराशिक मत निकल्युं तेनी कथा.	२२१
९८	प्रियग्रंथसूरि तथा पांचशें तापसना प्रतिबोधक आर्यसमितसूरिनी कथा.	२२३
९९	श्रीआर्यरक्षित सूरिनी कथा एमां कांइक वज्रस्वामीनी कथा पण छे.	२२५
१००	वृद्धवादी तथा तेमना शिष्य सिद्धसेनदिवाकरनो संक्षेपथी संबंध.	२२८
१०१	त्रण कालिकाचार्य तथा त्रण हरिजद्रसूरिनी कथा.	२२८
१०२	अठावीश प्रकारें साधुओनी समाचारी,चोराठ आलावे करी कथा सहित कही छे.	२३०
१०३	इति नवम व्याख्यानं समाप्तम्.	२४८


साधु
१० शिष्य
श्री विजयराजेन्द्रसूरी
साध्वीयों ६
शिष्यणी





॥ॐश्रीशांतिनाथाय नमः॥अथ कल्प सूत्रस्य बालावबोधःप्रारंभः॥प्रथम ग्रंथकर्त्ता आ ग्रंथनी रचना करवानो हेतु कहे छे. श्रीजिनशासननें विषे सर्व पर्वमांहे शिरोमणि श्रीपर्यूषण पर्व छे. ते पर्वना दिवसोमां नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वंचायछे पण योग वहन करनारा साधु मुनि राजनेज सूत्र वांचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर भगवाने दीधो छे बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नही माटे तेवा मुनिराजोनुं आगमन सर्वस्थलें होतुं नथी तेथी जे गाममां साधुमहाराज विराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोनें कल्पसूत्र श्रवण करवानो अंतराय पडे छे ते अंतराय दूर करवानें वास्ते जेम पूर्वाचार्योयें लोकोपकारनें अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली छे तथा वर्त्तमान कालमां पण करे छे ते प्रकरण पण सूत्रोना अर्थ रूपज छे अने तेनुं पठन पाठन चतुर्विध श्रीसंघ करे छे तेम हुं पण श्रीकल्पसूत्रना बालावबोधने प्रकरण रूपें बनावुं छुं के जे ग्रंथ साधु, साधवी श्रावक अने श्राविका मली चारे प्रकारना श्रीसंघने वांचवाना उपयोगमां आवे केमके ए ग्रंथ पण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रकरण सदृश समजवो ॥ १ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्वने विषे ए ग्रंथ वांचवानो विधि कहेछे जेम जे शहेरमां श्रीमुनिमहाराज चोमासुं रह्या होय अने ते गामना श्रावको एकठा थइ साधुजी पासेंथी सूत्रनी पोथी मागी लइ आवीनें एक श्रावकना घरमां राखे तिहां रात्रि जागरण करे पछी बीजे दिवसें श्रावक श्राविका एकठां थइने एक कुंआरा छोकरानें अबोट वस्त्र पहेरावी हाथी उपर बेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख कोइ उत्तम वाहन उपर बेसाडी ते पोथी एक थालमां राखी ते थाल ते पहेला छोकराना हाथमां आपी सर्वने बदाम, साकर पतासा आदिकनी प्रभावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपाशरे आ

नीनें ते पुस्तक गुरुना हाथमां आपे गुरु वांचना करे ते सर्व श्रीसंघ सांजले अने गुरु आ
गल फलादिक राखे ने ॥ तेम आ पुस्तक पण जे श्रावकादिकनी पासें होय तेनी पासेंथी
मागी लावीने पंचे ठेरावेला बीजा कोइ श्रावकने घेर लइ जइ तिहां रात्रि जागरण करी पठी बीजे
दिवसें सर्व संघ मली पूर्वोक्त रीतें महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशालामां किंवा उपाश्रयमां
अथवा कोइ श्रावकने घेर जिहां सामायिकादिक करवानी कोइ स्वछ निर्मल जगा होय ते
स्थानके अथवा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय के जिहां सर्वसंघें मली वांच
वानो विचार कस्यो होय तेवी जगाने यथाशक्तियें शोजावी राखी होय तिहां आवीनें ज्ञान
जक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी अशातना टाली पोथी कोइ विवेकी सुज्ञ श्रावकना
हाथमां आपीने वंचाववी अने बीजा सर्वजनोयें प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी
विनय पूर्वक त्यां बेसीनें एकाग्रचित्तें सांजलवी ॥ २ ॥ ॥ हवे श्रीपर्यूषण पर्व तथा कल्प
सूत्र अने श्रमणसंघ एमनुं महत्व कहे ठे ॥ श्लोक॥नैतत्पर्वसमं पर्व,नचकल्पसमं श्रुतं॥ नधा
र्मिकसमःसंघ, स्त्रिरत्नानि जगत्त्रये॥१॥ अर्थः॥आ जगतने विषे दीपालिकादिक अनेक प्रका
रना लौकिक पर्व ठे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकरदेवना पांच कल्याणिक, अष्टमी, पख्खिका
अने तीर्थ यात्रादिक अनेक पुण्य पर्व ठे ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व ठे ए सहु पर्वने विषे शिरो
मणि चिंतामणि रत्न सदृश ज्येष्ठ एवुं सांवत्सरिक पर्व ठे ए जेम सांवत्सरिक पर्व समान बीजुं कोइ
पर्व नथी तेम कल्प सूत्र समान बीजुं कोइ सूत्र पण नथी तथा चतुर्विध श्रीसंघ मांहे श्रीसाधुमु
निराजना संघ समुदायसमान बीजो संघ पण कोइ नथी एटले सर्व पर्वमांहे सर्वोत्तम पंजोसण प
र्वने तेने विषे कल्पसूत्र वंचाय ते पण एकादशांगादि सर्व सूत्रमां उत्तम ठे तेम कल्पसूत्रना वांचना

र साधुमुनिराज तेपण चारे प्रकारना संयमांहे उत्तम ते एम ए त्रणे साक्षात् रत्न समान जाणवा ॥२॥ हवे व्याख्यान करनार पोतानी लघुता पूर्वक श्रीगुरुमहाराज अने श्रीसंघनी महत्वता देखा डे छे. व्याख्यान करनार कहे छे के हुं मंदमति, मूर्ख, अज्ञानी,महाजड छतां पण श्रीसंघनी समक्ष हद थइने आ कल्पसूत्रनी व्याख्या करवानुं साहस करुं छुं. व्याख्यान करवाने रज मात्र थयो छुं. ते सर्व श्रीसद्गुरुनो प्रसाद अने चतुर्विध श्रीसंघनुं सांनिध्यपणुं जाणवुं जेम अन्य शास्त्रमां कहेलुं छे के श्रीरामचंद्रजीनी सेनाना वांदरायें महोटा महोटा पाषाण लइने समुद्रमां नाख्या ते पथरा पोतें पण तर्या अने लोकोने पण तार्या ते कांइ पाषाणनो तथा स मुद्रनो अने वांदराउनो प्रताप जाणवो नही परंतु ते प्रताप श्रीरामचंद्रजीनो जाणवो केमके पथरनो तो एवो स्वभाव छे जे पोतें पण बुडे अने आश्रय लेनारनें पण बुडाडे तेम हुं पण पथर सदृश छतां श्रीकल्पसूत्रनी व्याख्या करुं छुं तेमां माहारो कांइ पण गुण जाणवो नही तेमज पोथीवालाना अथवा पुस्तकना पानांनो पण कांइ गुंण जाणवो नही ए गुंण मात्र श्री सद्गुरु अने श्रीसंघनोज जाणवो तथा जेम कोइ नरहत्तावनी जाणवा वाली गीतकला अने नृत्यकलामां विशारद उपलकोडी ताल नरद शास्त्रनी पारग एवी नर्तकी होय ते गीतगान क रतो मृदंगध्वनि वाजते नृत्य करे अनेक चकगोला फेरवे अने हाव भावथी लोकोना मन रंजन करे तेमज कोइ गामडीयानी गामडियात एक घेली स्त्री होय तेपण ताली टाना छंद प डतो थके नृत्य करे तथा जेम कोइ महागंभीर समुद्र होय ते पण लहेरो आपे अने कोइक गामनुं न्हानुं तलाव होय ते पण वर्षाऋतुमां पाणीथी पूरण भराणुं थकुं लहेरो आपे तेने पण कोइ निवारे नही तथा जेम शुद्ध दूधमांहे अत्यंत चोखा नाखीनें खीर रांधीयें ते

पण [illegible]) अने कूपमां रहेली देडकी [illegible] जेवा [illegible] तेमां पण कोइ आश्चर्य नथी [illegible] एकज स्थानके एकठा थयेला अनेक [illegible], [illegible], [illegible], नगरनागरीक, महा व्याख्यानना करनारा आगमन करे अने हुं पण व्याख्यान करुं तेमां अत्यारत प्रकारनो फेर जाणवो एटले जाइलेइने जाणनारी नर्तकी तथा ममुद्र अनेगु०वीरने सहज ते गण पत्ताविक जाणवा अने गामडियात तथा गामनुं तलाव अने कुवामांनी गावडी समान मने जाणवो ते हुं श्रीसद्गुरु अने श्रीसंघना प्रसादथी माननीय थयो छुं जेम कोइ पाषाण जडरुतां तथा ज्ञान विवर्जित छतां पण तेनी ज्यारें प्रतिमाजी नीपजावीयें त्यारे ते सर्व जनोनें माननीय पूजनीय थाय तेनी पेरें श्रीगुरु तथा श्रीसंघना प्रसादथी हुं पण माननीय थयोछुं ॥ ४ ॥ ॥ हवे बालावबोध करनार प्रारंभमां श्रीदेवगुरुने नमस्कार लक्षण मंगलाचरणने अर्थे श्लोक कहेछे, ॥ श्लोक ॥ नत्वा श्रीमन्महावीरं, गौतमादिगणाधिपान् ॥ कुर्वेहं कल्पसूत्रस्य, व्याख्यां बालोपकारिणीम् ॥ १ ॥ ५ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीगुरु महाराजनो आदेश लइनें जे क्षेत्रमां साधु चोमासुं रहे तिहां चोमासामां भाद्रपद मासने विषे पर्यूषण पर्व आवे थके मांगलिक निमित्तें पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र वांचे ते कल्प एवुं नाम आचारनुं छे ते साधुनो आचार दश प्रकारनो छे,यडुक्तं ॥ आचेलुक्कुदेशिय, सद्यायर रायपिंम किइकम्मे ॥ वय जिट्ठ पडिकमणे, मासं पज्जोसवण कप्पे ॥ १ ॥ ॥ अस्यार्थः॥प्रथम अचेलक,बीजो उद्देशिक,त्रीजो सय्यातर,चोथो रायपिंम,पांचमो रुतिकर्म,छठो व्रत,सातमो ज्येष्ट, आठमो प्रतिक्रमण,नवमो मासकल्प अने दसमो पंजोसण कल्प ए दश प्रकारना कल्प एटले आचार तेना सामान्यथी नाम कह्यां हवे विस्तारार्थें कहेछे ॥ प्रथम जे वस्त्र नही राखवा तेने अचेलक कल्प कहीयें तिहां श्रीऋषभदेव

जगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु तो श्वेतमानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे तेमां मुंटीथी चार आंगुल नीचो अने गुदाथी चार आंगुल उंचो एवो साडा त्रण हाथनो चलोटो राखे तथा साडाचार हाथनो कपडो राखे तथा पोताना आंगुल प्रमाण एक वेंतने चार आ गुलनी मुहपत्ति राखे एम अर्द्ध शरीर उघाडुं अने अर्द्ध शरीर ढांक्युं राखे एवीरीतें पहेरेला वस्त्र ते अण पहिर्यां जेवां समजवां माटे तेने अचेलक कहीयें ते उपर दृष्टांत कहे ले जेम कोइ एक पुरुषें धोतीया वणावनारनें कह्युं जे महारा धोतीयां ताकीदथी आप केमके हुं नागो फरुं हुं एवुं वचन व्यवहारथी कह्युं हवे ते पुरुषें जूना वस्त्रनुं धोतीयुं पहेर्युं ले तोपण नागो फरुं हुं एम कह्युं वली बीजुं दृष्टांत कहे ले जेम कोइएक पुरुष धोतीयुं पहेरीने नदी उतरतो तेने कोइ एकें पुछ्युं के जाइ तुं नदी शीरीतें उतरयो तेवारे तेणे जवाब आप्यो के हुं नागो थइने नदी उतरयो वली बीजुं दृष्टांत कहे ले जेम कोइएक मोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरनी पासें जइ कहेवा लागी के अरे जाइ महारां वस्त्र तैयार थयां होयतो मने आप हुं नागी फरुं हुं एवी रीतें साधुने पण जीर्णप्राय जूना श्वेतमानोपेत वस्त्र धारण करते छते पण वस्त्र रहित अचे लक कहीयें तेम आ चोवीसीमां श्रीऋषभ देव अने श्रीमहावीरनें जाजेरा एक वर्ष पछी ...नवने अपगमें जावजीव पर्यंत अचेलक पणुं हतुं अने चोवीसें तीर्थंकर आश्रयितो दी क्षा लेती वखतें इंद्र महाराज तेमना खंधा उपर देवदुष्य वस्त्र मूके ते जिहां सुधी खंधाउपर र हे तिहां सुधी सचेलक कहीयें अने पडीगया पछी अचेलक कहीयें तथा आ चोवीसीमां बीजा श्रीअजितनाथ जगवानथी मांडीने श्रीपार्श्वनाथ जगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना क हेवाय तेने देवदुष्य वस्त्र शेष ले घडी आयुष्य थाकतो रहे तिहां सुधी रहे ले माटे ते वस्त्रसहि

तने सचेलक कहीयें तथा ए वावीश तीर्थंकरना साधु पण ऋजु एटले शुंनमन वाला सरल अने प्रज्ञ एटले पंमित पणा माहा चतुर होय माटे महोटा मूलनां पांच रंग वालां मानोपेत रहित एवां वस्त्र राखे तेथी एने सचेलक कहीयें केमके एने ए अचेलक कल्पनी कांइ मर्यादा नथी माटे एमने ए कल्प अनियत ढे अने पहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना साधुने ए कल्प नियत ढे एटले निश्चय ढे ए प्रथम अचेलक कल्प कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो उद्देशिक कल्प कहेढे. जे साधु अथवा साधवीने उद्देशि कर्यो एवो जे अहारादिक तेने उद्देशिक आहारादिक कहीयें तिहां मध्यना बावीश तीर्थंकरना वखतमां जे साधु अथवा साधवीने निमित्तें कोइ गृहस्थें जात, पाणी, औषध भैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्यां होय ते तेहज साधुनें लेवा न कल्पे पण शेष बीजा साधुनें ते आहारादिक लेवा कल्पे केमके तेने आधाकर्मादिक दोष न लागे अने पहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साध्वीनें अर्थें जे आधाकर्मिक आहारादिक निपजाव्यां होय ते सर्वथा प्रकारें कोइ पण साधुनें अथवा साध्वीनें लेवा कल्पें नही ए बीजो उद्देशिक कल्प कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो सय्यातरि पिंमनो कल्प कहेढे जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातरि कहीयें अथवा जे साधुने रहेवानी उतरवानी जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लेइने साधु जगामां रह्या होय ते घरना स्वामीनें सय्या तरि कहीयें तेना घरनो पिंम जे आहारादिक चार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुउने वोहोरवी कल्पे नही ते चार वस्तुना नाम कहेढे १ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८ उंधो, ९ सूई, १० पिप्पलक, ११ नखकतारवानीनेरणी, १२ कानमांथी मेल काहाडवानी चाहुइ. ए चार चीज तथा बीजा पण ढरी कातरणी अने सरपला प्रमुख ते कोइ

पण साधुनें लेवां कल्पे नही ए सय्यातर पिंम लेवामां अनेषणीय अशुद्ध दोषनो संचय था य प्रसंगादि महोटा दोष उपजे केमके साधुना रागें करी पारणाने उत्तरवारणानें अर्थे वारं वार जातां आवतां अशुद्धमान आहारादिकें करीनें ते महस्य दहिं दूध प्रमुख स्निग्ध वस्तु पण आपे तेथी रसगृद्धि थाय अनें मिष्टान्नना लोनें तेहुं घर न मूके कदापि. वेगलो बीजे गामें गयो होय तो पण त्यांथी मिष्टान्ननें लोनें फरी आवे वली वस्त्रादिक मा ग्यां थकां तेगृहस्थ तरतज आपे तेणे करी उपधिनी वृद्धि थाय वली ते सय्यातरनो पिंम लेतां थकां गाममां फरवाथी तूटे तेथी ते साधुनुं शरीर जाडुं थाय वली ते सय्यातरिनो पिंम लेवाथी कदाच गृहस्थनें एवो पण नय उपजे के जे उपाश्रय करावे तेने आहारादिक पण आपवा पडे तेने लीधे कोइ उपाश्रय पण न करावें अने रहेवाने कोई जगा पण आपे नही तेथी आहार शिष्यादिकनो मलवो डुर्लन थइ पडे इत्यादिक दोषना प्रसंगथी सय्यातरिना घर नो आहार लेवो सर्व तीर्थंकरें निषेध्यो ले कदाचित् कोइ कारणे सय्यातरिना पिंम लेवो पडे तो रात्रिना चार पहोर क्रिया सनाय करतो जागरण करे पण निद्रा न करे अने प्रजातनुं पडि क्रमणुं बीजे स्थानकें जइ करे तो उपाश्रयना धणीनो सय्यातर न थाय अने जो रात्रें निद्रा करे अने प्रजातनो पडिक्रमणुं बीजे स्थानकें करे तो बेहु सय्यातर थाय एटले बेहु स्थानकें आहारादि लेवा न कल्पे तथा १ तृण, २ माटीनो ढेंफुं, ३ जस्म, राख, ४ मात्रानुं गमडुं, तेने मात्रा कहीयें, ५ बाजोट, ६ पाटी पाटला, ७ सय्या, ८ संथारो, ९ लेप प्रमुख वस्तु, १० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो ए दश वस्तु सय्यातरना घरनी लेवी कल्पे ए त्रीजो सय्यातरिपिंम कल्प कह्यो.ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे

एने नियत कल्प कहीयें ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो राजपिंड कल्प कहे छे जे महोटो छत्रपति चक्रवर्त्यादिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, श्रेष्टि, प्रधान अने सार्थवाह ए पांच वानां होय ए पांचनी साथे राज्य करे तेने राजा कहीयें तेना घरनो आहारादिक पिंड पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने अने छेहला श्रीवीरभगवानना साधु साध्वीनें लेवो कल्पे नही केमके राजद्वारमां घणा लोक मले तिहां घणो वखत लागे तथा कोइक अपमांगलिक कहे तथा तिहां हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखनें जोतां थकां राग उपजे वली कोइक चोर कहे कोइक हेरू पण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे वली लोक निंदा करे जे आ यति यइनें राज्यपिंड लीये छे अन्यदर्शनीयोना शास्त्रमां पण राज्यपिंड निवार्यो छे माटे पहेला अने छेहला तीर्थंकरना यतियें राज्यपिंड न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुतो ऋजु अने पंडित छे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी ए चोथो राज्यपिंड कल्प कह्यो ॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो कृतिकर्म कल्प कहेछे जे वांदवुं तेने कृतिकर्म कहियें ते बे प्रकारे छे.एकतो ऊनु थावुं बीजुं द्वादशावर्त्तवांदणें वांदवुं तिहां श्रीजिनशासनने विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुउनी एवी मर्यादा छे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय ते साधुने पाछलथी दीक्षा लेनारो साधुवांदे पण बाप दीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक न्हानो महोटो जुवे नही परंतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पितायें पाछलथी लीधी होय तो पिता पुत्रनें पण वंदन करे एम राजा पोताना प्रधानने पण वंदन करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्व साधुनें वांदे परंतु न्हानो महोटो जुवे नही जो सो वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिन

सनो दीक्षित साधु होय तोपण ते साध्वी साधुने सामी जइनें हे पूज्य ! तमारो एनीरीतें विनयपूर्वक खमासमणा देइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधान पणुं ते पुरुषनेंज कह्युं छे, माटे पुरुष अधिक छे तेथी पुरुषें स्त्रीनें वांदवुं नही, जो साधु थईनें साध्वीनें वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय केमके स्त्रीजाति तुछ छे माटे अहंकार करे तो तेथी नीच गोत्रने बांधे, वली लोक निंदा करे माटे पुरुषें स्त्रीनें वांदवुं नही ए कल्प सर्व चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो ए पांचमो कृतिकर्म कल्प कह्यो ॥ ५ ॥ ॥ हवे छठो व्रतकल्प कहेछे तिहां प्राणातिपातादिक पांच महाव्रत छे एटले प्राणातिपात, मृषा वाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांचथी विरमवुं ते पांच महाव्रत कहीयें तिहां श्री ऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साधवीने तो तादृश जाणपणाना अनावथी पांचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीश जिनना वाराना साधु तो परिग्रह व्रतमांहे परिग्र हित स्त्री जोगनुं पच्चखाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रतमांहे अपरिग्रहित स्त्रीजोगनुं पच्च खाण जाणे छे एटले स्त्रीनें परिग्रह रूप गणीने पांचमा परिग्रह व्रत साथेंज लीये छे, केमके जिहां स्त्री तिहां परिग्रह अने जिहां परिग्रह तिहां स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुनें चोथुं मैथुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवां अथवा श्रीऋषभदेव अ ने महावीरना तीर्थें रात्रि जोजन व्रत मूल गुणमांहे गण्यो छे तेथी रात्रिजोजन विरमण व्रत साथे गणीयें तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीशजिनना तीर्थें तो रात्रिजोजन व्रत उत्तर गुण मां गण्यो छे माटे चारज व्रत जाणवां ए छठो व्रत कल्प कह्यो॥६॥ ॥ हवे सातमो ज्येष्ठ कल्प कहे छे. ज्येष्ठ एवुं महोटानुं नाम छे तिहां श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुउनें तो महोटी दीक्षा

दीधा पछी लघु गडाइ गणाय ळे माटे जेणे महोटी दीक्षा पहेली लीधी होय ते महोटो गणाय अने जेणे न्हानी दीक्षा तो पहेली लीधी होय पण महोटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अ पेक्षायें लघु गणाय जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमें दीक्षा लीये पछी उगामणा आवे महोटी दीक्षा लीये तेवारें मुख्य प्रकारें तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार महोटां ळे ते जणवामां जो अधिक थाय तो तेहज महोटां कहेवाय नहींका पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चारे न्हानां ळे परंतु ते जणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने महोटी दीक्षा आपी महोटां करे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्याद नथी, केमके ते तो बधाये प्रवीण माह्या होय ळे तेथी तरत ज जणी लीये ळे माटे ते दीक्षाना दिवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय ळे तेथी तेमनामां प्रथ म जे दीक्षा लीये तेहज महोटो गणाय, जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोतर तथा माता अने दीकरी ए सहु साथें दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीयें महोटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान, वाणोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तथा महोटी दीक्षानें योग्य प्रधान अने पुत्र होय तो राजानें तथा पिताने पूछीनें महोटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न ऊपजें एरीतें ए अनियत कल्प ळे ए सातमो ज्येष्ठ कल्प कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे ळे. प्रतिक्रमण ते जे आव श्यकनुं करवुं ते जाणवुं. तिहां प्रथम अने चरम जिनना वारामां तो साधुने अतिचार दोष लागे किंवा न लागे तोपण निश्चयथी दैवसिकादिक पांचे प्रकारनां पडिक्कमणांकरे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने जो पाप लाग्युं ळे एवुं जाणे तोज दैवसिक अथवा राइ पडिक्क

मणुं सांजे अथवा सवारे करे अने पाप लाग्युं न जाणे तो ते पण न करे बाकी पाक्षिक,चोमा
सी अने सांवत्सरिक ए त्रण पडिक्कमणां तो बावीश जिननां वारामां नहीज करे एम ए
पण अनियत कल्प छे ए आठमो प्रतिक्रमण कल्प कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमो मासकल्प
कहे छे. पहेला अने छेला तीर्थंकरना साधु एक गाममां एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे
नही मात्र चोमासाना चार महीना पर्यंत एक गाममां रहे परंतु अन्य दिवसोमां एक मही
नाथी उपरांत रहे तो घणा दोषोनो संभव थाय. एकतो गृहस्थ साथें प्रतिबंध थाय,हलवा
पणु पामे, लोकनो उपकार करी शके नही, देश विदेशनुं ज्ञान न थाय, ज्ञाननुं आराधन न
थाय माटे एक मास उपरांत रहेवानी साधुने आज्ञा नथी. कदाचित् दुर्भिक्षादिक कारणे
रहेवुं पडे अथवा विहार करवाने असमर्थ होय तो पण वस्ति पालटण करे, पाडो पलटावे,
घर पलटावे अने छेवट संथारानी भूमि पालटण करीनें नावथी पण मास कल्प करे. जे माटे लो
कमां पण केवत छे के॥स्त्री पीयर नर सासरे, संजमियां थिरवास॥ एतां होये अलखामणां,
जो मांडे थिरवास॥१॥इति॥अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउं तो विहार करवानें जो सामर्थ्य
वान होय तोपण तेऋजु अने पंडित छे माटे तेमने मासकल्पनो कांइ नियम नथी जो दोष नही ला
गतो होय अने लाभ जाणे तो देशूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पण एकज क्षेत्रमां एकज स्थानकें रही
जाय माटे ए अनियत कल्प छे ए नवमो मास कल्प कह्यो॥ ९ ॥ ॥ हवे दशमो पर्यू
षणा कल्प कहे छे. जे एक जगाये रहेवुं तेने पर्यूषणा कहे छे ते पंजोसण बे प्रकारनां छे
एक तो गृहस्थ जाणे अने बीजो गृहस्थ न जाणे ज्यांहां पर्यूषण पर्वने पडिक्कमतां थकां
साधुलोक पूछे तेवारें रहेवानें विषे वर्त्तमान योग्य कहे पण पर्यूषणा पर्व पडिक्कम्या पछी तो

कार्त्तिकी पुनम पर्यंत रहेवानुं निश्चयथीज कहे. तिहां गृहस्थनी आज्ञा थकी पांच दिवस यावत् रहेवुं एम पांच पांच दिवस रहेतां पचास दिवसें पंजोसण पर्व करे तिहां कल्पसूत्र गृहस्थ आगल वांचे पछी सीत्तेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो नादरवा शुदि पांचमथी मांमीनें कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी मांमीने नादरवा शुदि पंचमी सुधी जाणवुं, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुनें पूछे के आप चोमासुं रह्या तेवारे साधु कहेके जेवी खेत्र फरसना अथवा पांचदिन छेयें एवो जवाब आपे तेथी आगलना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्यूषण कह्या पछी तो अवश्य तिहांज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीत्तेर दिवस पंजोसण अने उत्कृष्ट छ महीनानां पंजोसण जाणवां ए कल्प श्रीऋषनदेव अनें श्रीमहावीरना साधुउंने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुउंने निश्चय नही ए दशमो पंजोसण कल्प कह्यो ॥ १० ॥ ॥ एरीतें ए दश कल्प कह्या ते दशे कल्प श्रीऋषनदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुउंने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउंने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म एटले वांदणा ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्रमण, चोथो राज्यपिंम, पांचमो मासकल्प अने छठो पंजोसण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नही. ए जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुउंनी कही तेवीज मर्यादा श्रीमहाविदेह खेत्रना तीर्थंकरोना साधुउंनी पण जाणवी ॥ २ ॥ ॥ इहां कोइ कहेके साधुतो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमां नेद केम पड्यो तेने उत्तर कहीयें छेयें जे श्रीऋषनदेवजीनी

वारें माणस ऋजु अने जड होय ने,तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय ने तथा श्रीमहा वीर जगवाननी वारें माणस वक्र अने जड होय ने,तेमने धर्म पालवो घणो कठीन थइ पडे ने अने मध्यना बावीश तीर्थंकरनी वारें माणस वधा ऋजु अने प्राज्ञ होय ने माटे तेमनें धर्म समजाववो पण सुलज होय ने अने पालवुं पण सोहेलुं होय ने एवीरीतें मनुष्योना परिणाममां नेद होवाथी कल्पमां पण नेद थया ने एम जाणवुं, परंतु परमार्थेथी नेद कांइ पण नथी मात्र पुरुषोना परिणामना नेद ने ॥ ३ ॥ ॥ हवे प्रथम तीर्थंकरना साधु जे ऋजु अने जड होय ते दृष्टांतें करी समजावीयें नेयें श्रीऋषनदेवना तीर्थमां कोइएक आचार्यनो शिष्य वंमेल नूमिकायें गयो ते घणो वखत लगाडीनें पाठो आव्यो तेने गुरुयें पुढ्युं अरे शिष्य तने आटलो वखत केम लागो त्यारे ते ऋजु पणाथी बोल्यो के स्वामी नाटकीया लोक रमत करता हता ते जोवाने उनो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लागो ते सांजली गुरु बोल्या हे वत्स ! आपणे साधु पुरुषने नाटक जोवा उना रहेवुं नही एथी पाप लागे ने माटे आपणने ए अकल्पनीय ने तेवारे शिष्यें तहत्ति कही एटले जेम तमे कहो बो ते प्रमाण ने आज पढी जोइश नही. फरी कोइक दिवसें तेहज शिष्य बाहिर नूमि गयो हतो ते घणो वखत लगाडीनें पाठो आव्यो जेथी गुरुयें पुढ्युं जे आटलो वखत केम लागो तेवारें ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामी रस्तामां नाटकणी नाचती हती ते जोवानें उनो रह्यो हतो तेने लीधे असुर थइ तेवारे गुरु बोल्या जे तमने पूर्वे मनाइ करी हती तेम ढतां केम जोवाने उना रह्या तेवारें ते शिष्य जड पणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो के महाराज तमेतो नाटकीया जोवानें मनाइ करी हती पण नाटकणी जोवानें तो मनाइ करी हती नही तेवारे गुरु बोल्या हे महानाग्य ! नाटकणी

कार्त्तिकी पुनम पर्यंत रहेवानुं निश्चयथीज कहे. तिहां गृहस्थनी आज्ञा यकी पांच दिवस यावत् रहेवुं एम पांच पांच दिवस रहेतां पचास दिवसें पंजोसण पर्व करे तिहां कल्पसूत्र गृहस्थ आगल वांचे पछी सीतेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो भादरवा शुदि पांचमथी मांडीनें कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी मांडीने भादरवा शुदि पंचमी सुधी जाणवुं, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुनें पूछे के आप चोमासुं रह्या तेवारे साधु कहेके जेवी क्षेत्र फरसना अथवा पांचदिन छेयें एवो जवाब आपे तेथी आगलना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्यूषण कर्या पछी तो अवश्य तिहांज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीतेर दिवस पंजोसण अने उत्कृष्ट छ महीनानां पंजोसण जाणवां ए कल्प श्रीऋषभदेव अनें श्रीमहावीरना साधुउने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुउने निश्चय नही ए दशमो पंजोसण कल्प कह्यो ॥ १० ॥ ॥ एरीतें ए दश कल्प कह्या ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुउने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुउने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म एटले वांदणा ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्रमण, चोथो राज्यपिंड, पांचमो मासकल्प अने छठो पंजोसण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नही. ए जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुउनी कही तेवीज मर्यादा श्रीमहाविदेह क्षेत्रना तीर्थंकरोना साधुउनी पण जाणवी ॥ २ ॥ ॥ इहां कोइ कहेके साधुतो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमां भेद केम पड्यो तेने उत्तर कहीयें छेयें जे श्रीऋषभदेवजीनी

दीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्युं. ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे ने. सोरठ देशनें विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारें पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीनें सासरे पोहोतो त्यां सासु ससरायें पुछ्युं जे हे जट्टजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी,फरी सासु ससरें पुछ्युं के घेर कुशल खेम ने? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुछ्युं के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारें कह्युं हाजी, फरी पुछ्युं तेमनी पछवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारें कह्युं नाजी, ते सांजली सासु ससरे कह्युं के तमेतो महोटा मूर्ख गो, तेवारें तेणे कह्युं हाजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीनें मोकाणे गया त्यां जइनें जुए ने तो जमाइनो पिता जीवतो बेगे ने तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मल्या,पछी जमाइना पितायें पुछ्युं के तमो सर्वेनुं शा कामें अहींआं आववुं थयुं ने? ते सांजली सर्वे बोल्याके तमारे गेकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींआं आव्या नेयें, तेवारे ते गेकराना पितायें कह्युंके ए गेकरो मूर्ख ने. एवा जीवनें पण रुजु एटले जोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋष भदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुउं आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां॥ ॥ हवे चरम एटले गेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना उपर दृष्टांत कहे ने. जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंमिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुयें वखत घणो लागवानुं कारण पुछ्युं तेवारें वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वख ततो लागेज एमां तमें मने शुं पूछो गो!! पछी जेवारें गुरुयें घणुं पूछ्युं तेवारें कह्युं जे नाट

तो वली नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभली शिष्य बोल्यो हे स्वामी! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हुं क्यारें पण जोइश नही इहां रुजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्यां तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वली बीजुं कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयायें वृद्ध पणामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइनें स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिक्कम्यो तेने काउसग्ग पारतां घणो वखत लागो तेवारें गुरुयें पुछ्युं जो कोकणिक साधु! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लागो ते सांभली साधु रुजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी! में आज जीवदया चिंतवी, गुरुयें पुछ्युं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारें वर्षाकालें खेत्रमां वृक्षोनें कापी नाखी सूड करीनें जमीननें अग्नियें बाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं तेथी महारुं सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतुं अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चित पणे घरमां बेगा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखें मरशे एवा प्रकारनी में जीवदया चिंतवी एम रुजुपणाथी साचुं बोल्यो ते सांभली गुरु बोल्या हे भद्र! तमे मातुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिछामि दुक्कड देइनें शुद्ध थाउ ते सांभली साधुयें मिछामि दुक्कड

दीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्युं. ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे ने. सोरठ देशनें विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारें पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीनें सासरे पोहोतो त्यां सासु ससरायें पुरुयुं जे हे भट्टजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी,फरी सासु ससरें पुरुयुं के घेर कुशल खेम ने? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुरुयुं के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारें कह्युं हाजी, फरी पुरुयुं तेमनी पत्रवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारें कह्युं नाजी, ते सांजली सासु ससरे कह्युं के तमेतो महोटा मूर्ख गो, तेवारें तेणे कह्युं हाजी, एटली वात थया पनी ते सर्व ब्राह्मण मलीनें मोकाणे गया त्यां जइनें जुए ने तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो ने तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मल्या,पनी जमाइना पितायें पुरुयुं के तमो सर्वेनुं शा कामें अहींयां आववुं थयुं ने? ते सांजली सर्वे बोल्याके तमारे गोकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींआं आव्या ठैयें, तेवारे ते गोकराना पितायें कह्युंके ए गोकरो मूर्ख ने. एवा जीवनें पण ऋजु एटले नोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीरूषभदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुउं आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां॥ ॥ हवे चरम एटले गेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना उपर दृष्टांत कहे ने. जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंमिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुयें वखत घणो लागवानुं कारण पुरुयुं तेवारें वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वख तलो लागेज एमां तमें मने शुं पूछो गो!! पनी जेवारें गुरुयें घणुं पूरुयुं तेवारें कह्युं जे नाट

तो वळी नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभळी शिष्य बोल्यो हे स्वामी! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हुं क्यारें पण जोइश नही इहां ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्या तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वळी वीजुं कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयायें वृद्ध पणामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइनें स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिक्कम्यो तेने काउसग्ग पारतां घणो वखत लाग्यो तेवारें गुरुयें पुछ्युं जो कोकणिक साधु! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लाग्यो ते सांभळी साधु ऋजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी! में आज जीवदया चिंतवी, गुरुयें पुछ्युं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारें वर्षाकालें खेत्रमां वृक्षोनें कापी नाखी सूड करीनें जमीननें अग्नियें बाळी शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं तेथी महारुं सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतुं अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महारा छोकरा आळसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चिंत पणे घरमां वेठा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखें मरशे एवा प्रकारनी में जीवदया चिंतवी एम ऋजुपणाथी साचुं बोल्यो ते सांभळी गुरु बोल्या हे भद्र! तमे मातुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिछामि दुक्कड देइनें शुद्ध थाउ ते सांभळी साधुयें मिछामि दुक्कड

दीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्युं. ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छे. सोरठ देशनें विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारें पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीनें सासरे पोहोतो त्यां सासु ससरायें पुछ्युं जे हे जटजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी,फरी सासु ससरें पुछ्युं के घेर कुशल खेम छे? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुछ्युं के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारें कह्युं हाजी, फरी पुछ्युं तेमनी पछवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारें कह्युं नाजी, ते सांजली सासु ससरे कह्युं के तमेतो महोटा मूर्ख छो, तेवारें तेणे कह्युं हाजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीनें मोकाणे गया त्यां जइनें जुए छे तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो छे तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मल्या,पछी जमाइना पितायें पुछ्युं के तमो सर्वेनुं शा कामें अहींयां आववुं थयुं छे? ते सांजली सर्वे बोल्याके तमारे छोकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींयां आव्या छैयें, तेवारे ते छोकराना पितायें कह्युंके ए छोकरो मूर्ख छे. एवा जीवनें पण ऋजु एटले जोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुउं आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां॥ ॥ हवे चरम एटले छेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना उपर दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंमिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुयें वखत घणो लागवानुं कारण पुछ्युं तेवारें वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वख ततो लागेज एमां तमें मने शुं पुछो छो!! पछी जेवारें गुरुयें घणुं पुछ्युं तेवारें कह्युं जे नाट

तो वली नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभली शिष्य बोल्यो हे स्वामी ! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हुं क्यारें पण जोइश नही इहां ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्यां तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वली बीजुं कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयायें वृद्ध प णामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइनें स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंमिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिकम्यो तेने काउसग्ग पारतां घणो वखत लागो तेवारें गुरुयें पुछयुं जो कोकणिक साधु ! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लागो ते सांभली साधु ऋजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी ! में आज जीवदया चिंतवी, गुरुयें पुछयुं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारें वर्षाकालें खेत्रमां वृक्षोनें कापी नाखी सूड करीनें जमीननें अग्नियें बाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं तेथी महारुं सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतुं अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महा रा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चिंत पणे घरमां बेठा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखें मरशे एवा प्रकारनी में जीवदया चिंतवी एम ऋजुपणाथी साचुं बोल्यो ते सांभली गुरु बोल्या हे भद्र ! तमे माठुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिछामि डुक्कड देइनें शुद्ध थाउ ते सांभली साधुयें मिछामि डुक्कड

दीधो, ए बीजुं दृष्टांत कह्युं. ॥ २ ॥ ॥ हवे वली त्रीजुं दृष्टांत कहे ने. सोरठ देशनें विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारें पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी एवी पितानी शिखामण धारण करीनें सासरे पोहोतो त्यां सासु ससरायें पुठ्युं जे हे नटजी! तमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी, फरी सासु ससरें पुठ्युं के घेर कुशल खेम ने? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पुठ्युं के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारें कह्युं हाजी, फरी पुठ्युं तेमनी पठवाडे कांइ खरच खराजात करी तेवारें कह्युं नाजी, ते सांजली सासु ससरे कह्युं के तमेतो महोटा मूर्ख ठो, तेवारें तेणे कह्युं हाजी, एटली वात थया पढी ते सर्व ब्राह्मण मलीनें मोकाणे गया त्यां जइनें जुए ने तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो ने तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मल्या, पढी जमाइना पितायें पुठ्युं के तमो सर्वेनुं शा कामें अहींआं आववुं थयुं ने? ते सांजली सर्वे बोल्याके तमारे ठोकरे तमे परलोक सधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींआं आव्या ठेयें, तेवारे ते ठोकराना पितायें कह्युंके ए ठोकरो मूर्ख ने. एवा जीवनें पण रुजु एटले जोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ३ ॥ ॥ एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीरुषजदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुने आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्यां॥ ॥ हवे चरम एटले ठेला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना ऊपर दृष्टांत कहे ने. जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंमिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुयें वखत घणो लागवानुं कारण पुठ्युं तेवारें वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वख ततो लागेज एमां तमें मने शुं पूठो ठो!! पढी जेवारें गुरुयें घणुं पूठ्युं तेवारें कह्युं जे नाट

तो वली नाटकीया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे तेतो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभली शिष्य बोल्यो हे स्वामी ! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हवे हुं क्यारें पण जोइश नही इहां ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्यां तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलुं समज्यो नही इति प्रथम दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥

हवे वली बीजुं कोकण देशीय दृष्टांत कहे छे. जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयायें वृद्ध पणामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्य वान थइनें स्थविर पासें दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका किरिया पडिक्कम्यो तेने काउसग्ग पारतां घणो वखत लागो तेवारें गुरुयें पुछ्युं जो कोकणिक साधु ! तमोने एटलो वखत काउस्सगमां केम लागो ते सांभली साधु ऋजु पणे बोल्यो के हे स्वामीजी ! में आज जीवदया चिंतवी, गुरुयें पुछ्युं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारें वर्षाकालें खेत्रमां वृक्षोनें कापी नाखी सूड करीनें जमीननें अग्नियें बाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणेकरी महारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं तेथी महारुं सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतुं अने हवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चित पणे घरमां वेठा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखें मरशे एवा प्रकारनी में जीवदया चिंतवी एम ऋजुपणाथी साचुं बोल्यो ते सांभली गुरु बोल्या हे भद्र ! तमे मातुं ध्यान कर्युं छे केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिछामि दुक्कड देइनें शुद्ध थाउ ते सांभली साधुयें मिछामि दुक्कड

तेने बापें मार आपीने पुछ्युं के तनें आटला साद कर्या तोपण केम जवाब आप्यो नही वली क
माढ शावास्ते बोल्यो नही तेवारें पुत्रें कह्युं जे तमेज मने शीखाव्यो हतो के महोटानें सामुं
न बोलवुं तो महारो एमां शो वांक छे ? तेवारें पितायें कह्युं के अरे मूर्ख काम होय त्यारे तो
बोलवुं जोइयें ते सांभली छोकरो बोल्यो के हवे हुं काम हशे तेवारें बोलीश, फरी एक दिवसें
शेठ घणालोकोमां बेठा हता एटलामां घेर शेठाणीयें रावडी बनावीनें छोकरानें कह्युंके तारा
बापनें बोलावी लाव तो रावडी शीरावीनें पछी सुखेथी काम उपर जाय, त्यारें ते छोकरो
ज्यांहां तेनो बाप घणा माणसोनी वचमां बेठो छे तिहां जइ महोटे सादें हेला पाडीनें कहेवा
लागोके हे पिताजी ! आज आपणे घेर रावडी थइ छे ते महारी मातायें कह्युं छे के एकवार
शीरावी जाउ पछी सुखेंथी काम काज करो ते सांभली शेठ लज्जा पामीनें त्यांथी उठवो आ
गल जइ पुत्रनें एकांतमां कह्युंके हे कुपुत्र ! आ घणा लोकोमां लाज जाय तेवीरीतें तुं शा वा
स्ते बोल्यो तेवारें पुत्र बोल्यो तमेज मने शीखाव्यो हतो तो हुं शुं करुं ? तेवारें पिता बोल्यो
के आज पछी जो एवुं काम होय तो धीरे धीरे बोलवुं, छोकरायें कह्युंके हवे धीरे धीरे बो
लीश, एटलामां वली एक दिवस ते शेठनें घेर लाय लागी तेवारें शेठाणीयें शेठने तेडवा सारुं
छोकरानें मोकल्यो ते छोकरो तिहां आवीनें जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमां बेठो छे ते
वारें पोते दूर ऊभो रहीनें धीरे धीरे बोल्यो घणीवार थया पछी शेठें तेने जोयो तेवारें शेठें
पुछ्युं के अरे तुं शावास्ते अहींआं आव्यो छो तेवारें ते छोकरो शेठनी पासें जइनें हलवे हलवे
धीरजथी शेठना कानमां कहेवा लागोके आपणे घेर लाय लागी छे ते सांभली शेठ बोल्यो
के अरे मूर्ख घरतो बली गयुं हशे तुं इहां आवतांज केम बोल्यो नही तेवारें छोकरो

फीश्रा नाटक करता हता ते जोवा ऊनो रह्यो हतो तेने गुरुयें कह्युं जे यतियें नाटक जोवुं नही तें तमे जोयुं तेथी पाप लाग्युं माटे मिछामिडुक्कड लीयो एम कही मिछामिडुक्कड दीधुं, फरी कालांतरें एक दिवस नटडीनुं नाटक देखवा ऊनो रह्यो तेथी घणो वखत लागो माटे गुरुयें तेनुं कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वांका उत्तर आपवा मांड्या पण साचुं कहे नही तोपण गुरुयें ज्यारे घणुं पूछ्युं त्यारे बोल्यो जे नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊनो रह्यो हतो,ते सांजली गुरु बोल्या में ना कही हती तो पण तुं नाटक जोवा केम ऊनो रह्यो?तेवारें शिष्य वक्रपणाथी बोल्यो जे तमेतो नाटकीआनुं नाटक जोवाने वार्यो हतो परंतु ते वखत नटडीनुं नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नही? तो एमां माहारो शो वांक छे एतो तमारोज वांक छे एम वक्रपणाथी उलटो गुरुनें उलंजो दीधो ए वक्रपणा आश्रयि प्रथम दृष्टांत कह्युं ॥१॥ ॥ हवे वली बीजुं लोकोक्त दृष्टांत वक्र जडनुं कहे छे. कोइएक शेठनो छोकरो घणो डुर्विनीत हतो ते पोताना मा बाप साथें वढवाड कर्यां करे तेने मा बाप घणां समजावे तो पण कोइनुं कह्युं माने नहीं पछी कुटुंबना माणसोयें तेने शीखामण आपी कह्युं के मा बापनी सामुं तारे बोलवुं नही तेवारें तेणे कह्युं हवे हुं बोलीश नही एम करतां कोइएक दिवसें मा बाप प्रमुख सर्व कुटुंब मली पुत्रने घर सोंपी कांइक कामसर बाहेर गयां तेवारे ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरनां कमाड जडीनें खाटला ऊपर जइ सूतो,थोडीक वार पछी ते पितादिक आव्या तेणे छोकरानें घणा साद कर्या तो पण ते छोकरो खाट ऊपर बेठो बेठो सांजले परंतु बोले नही अने कमाड पण ऊघाडे नही एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप नींत ऊपरथी चडी घरमां आव्यो अने जुए छे तो पुत्र खाटला ऊपर बेठो बेठो हसे छे

तेने बापे मार आपीने पुछ्युं के तनें आटला साद कर्या तोपण केम जवाब आप्यो नही वली क
माड शावास्ते बगाड्यां नही तेवारें पुत्रें कह्युं जे तमेज मने शीखाव्यो हतो के महोटानें सामुं
न बोलवुं तो म्हारो एमां शो वांक छे? तेवारें पितायें कह्युं के अरें मूर्ख काम होय त्यारे तो
बोलवुं जोइयें ते सांभली छोकरो बोल्यो के हवे हुं काम हशे तेवारें बोलीश, फरी एक दिवसें
शेठ घणालोकोमां बेठा हता एटलामां घेर शेठाणीयें रावडी बनावीनें छोकरानें कह्युंके तारा
बापनें बोलावी लाव तो रावडी शीरावीनें पछी सुखेथी काम उपर जाय, त्यारें ते छोकरो
ज्यांहां तेनो बाप घणा माणसोनी वचमां बेठो छे तिहां जइ महोटे सादें हेला पाडीनें कहेवा
लागोके हे पिताजी! आज आपणे घेर रावडी थइ छे ते म्हारी मातायें कह्युं छे के एकवार
शीरावी जाओ पछी सुखेंथी काम काज करो ते सांभली शेठ लज्जा पामीनें त्यांथी उठयो आ
गल जइ पुत्रनें एकांतमां कह्युंके हे कुपुत्र! आ घणा लोकोमां लाज जाय तेवीरीतें तुं शा वा
स्ते बोल्यो तेवारें पुत्र बोल्यो तमेज मने शीखाव्यो हतो तो हुं शुं करुं? तेवारें पिता बोल्यो
के आज पछी जो एवुं काम होय तो धीरे धीरे बोलवुं, छोकरायें कह्युंके हवे धीरे धीरे बो
लीश, एटलामां वली एक दिवस ते शेठनें घेर लाय लागी तेवारें शेठाणीयें शेठने तेडवा सारुं
छोकरानें मोकल्यो ते छोकरो तिहां आवीनें जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमां बेठो छे ते
वारें पोते दूर ऊभो रहीनें धीरे धीरे बोल्यो घणीवार थया पछी शेठें तेने जोयो तेवारें शेठें
पुछ्युं के अरे तुं शावास्ते अहींयां आव्यो छो तेवारें ते छोकरो शेठनी पासें जइनें हलवे हलवे
धीरजथी शेठना कानमां कहेवा लागोके आपणे घेर लाय लागी छे ते सांभली शेठ बोल्यो
के अरे मूर्ख घरतो बली गयुं हशे तुं अहीं आवतांज केम बोल्यो नही तेवारें छोकरो

घोडो के तमे शीखाव्यो हतो जे धीरे धीरे बोलजे तो एमां म्हारो वांक कांइ नथी ए त मारी पोतानीज चूक छे, पितायें कह्युं अरे एटलो म्होटो थयो तोपण हजी अकल आवी नही ज्यारे धूम्राडा नीकळ्या त्यारे तरतज धूळ नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवुं शेठनुं केहेवुं ते छोकरायें धारी राख्युं. एम करतां शीत ऋतु आवी तेवारें प्रभात समयें एनो पिता दातण करवा बेठो छे तेना मुखमांथी धूवाडा नीकळ्या ते देखी धूळनो खोबो भरीनें छोकरायें पिताना म्होडामां नाख्यो तेवारे पितायें जाण्युं जे ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे वळी एक दिवस पितायें छोकरानें कह्युं के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे, छोकरायें कह्युं ये काम तो नही करुं पितायें कह्युं नवरावी आवजे पछी ते छोकरो घोडा ऊपर चडी तळाव पासें जइ घोडानुं म्होडुं बांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरश्यो हतो माटे आकुळ व्याकुळ थतो देखी शेठें पुत्रने मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अनें कह्युंके वाटे जातां कोइ मळेतो तेने म्होटे सादें जुहार करजे पछी वाटें जतां कोइएक पाराधी पास मांडी मृगळा एकठा करी ऊभो छे तेने छोकरायें म्होटें सादें जुहार कर्यो तेनो साद सांभळीने सर्व मृग नासी गया पाराधीये तेने मार आप्यो अने मूर्ख जाणीनें कह्युंके हे भूंडा मार्गे जतां छपतो चाल्यो जाजे वळी आगळ जातां कोइक कोटवाळ चोरनी शोध करवा नीकळ्यो छे तेणे छोकरानें छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो मार मार्यो पछी मूर्ख जाणी कह्युंके घणा माणस दीठामां आवे तेवारें एम कहेजे के तमारे एवुं कोइ थयते थाशोमां वळी आगळ जातां कोइएक गाममां विवाह छे ते देखी पहेला मूर्खायें कह्युं के तमारे घेर एवुं कार्य कोइ वारे म था जो ए वचन सांभळीने विवाह [illegible] कूट्यो मार आप्यो पछी छोकरायें कोटवाळना शीखा

जना संबंधि वात कहे छे ते लोकोये मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युंके हे लोका ! जेवा
रे घणा माणस मळे तेवारें एवुं कहेवुं के तमारे सदा सर्वदा एमज थाजो तेवात याद राखीने
लोकने आगळ चाल्यो मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो ने तेनी मैयतने लइ जा
य छे तेने लोकराये कह्युं के तमारे सदा सर्वदा एवुंज होजो तिहां पण तेणे मार आप्यो मूर्ख
जाणीने मूकी दीधो एम रखडतो रझळतो केटलाएक दिवसें पाछो घेर आव्यो ए श्रीवीरना
साधु उपर वक्रजडनुं बीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ॥ हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्व ऋजु
अने प्राज्ञ छे तेना उपर दृष्टांत कहेछे. जेम कोइएक अजितनाथ जगवानको साधु ते स्थंडि
लथी घणो असुरो आव्यो माटें गुरुयें तेनुं कारण पुछ्युं तेवारें ऋजु पणाथी कह्युंके नाटकी
आनुं नाटक जोवा ऊनो रह्यो हतो, गुरु बोल्या जे साधुयें नाटक जोवुं नहीं तेवारे तेणे
मिछामिच्छादुक्कड देइने कह्युंके हवे कोइवारे जोवा ऊनो रहीश नहीं वळी कोइएक दिवसें बाहेर
गयो तिहां रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोइ पंमित पणाथी विचार कर्यो के गुरुयें मुजने
नाटकीआनुं नाटक जोवा वर्ज्युंछे तो नाटकणीतो वळी विशेष रागनुं कारण छे माटे ए
मुजने सर्वथा जोवीज नहीं एवुं विचारीनें पाछो आव्यो ए ऋजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्युं ॥१॥
एम ए दृष्टांत जे कह्यां ते कांइ सर्व साधुउं आश्रयी समजवां नहीं, परंतु कोइएक सा
धुनां आश्रयी जाणवां ॥ ॥ हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड छे ते प्रमाणे आज
कालना आगमां चारित्रीया साधु नथी एम पण न कहेवुं कदापि अनाभोग पणे अतिचार दोष
घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमां छे केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्यव
हार नाष्यमां कह्युं छे के श्रीनगवंतनां नांखेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने साधु

बोल्यो के तमे सीखाव्यो हतो जे धीरे धीरे बोलजे तो एमां म्हारो वांक कांइ नथी ए त मारी पोतानीज चूक छे, पितायें कह्युं अरे एटलो म्होटो थयो तोपण हजी अकल आवी नही ज्यारे धूआडा नीकल्या त्यारे तरतज धूल नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवुं शेठनुं केहेवुं ते छोकरायें धारी राख्युं. एम करतां शीत ऋतु आवी तेवारें प्रभात समयें एनो पिता दातण करवा बेठो छे तेना मुखमांथी धूवाडा नीकल्या ते देखी धूलनो धोबो भरीनें छोकरायें पिताना म्होडामां नाख्यो तेवारे पितायें जाण्युं जे ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे वली एक दिवस पितायें छोकरानें कह्युं के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे, छोकरायें कह्युं ये काम तो नही करुं पितायें कह्युं नवरावी आवजे पछी ते छोकरो घोडा ऊपर चडी तलाव पासें जइ घोडानुं म्होडुं बांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरश्यो हतो माटें आकुल व्याकुल थतो देखी शेठें पुत्रनें मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अनें कह्युंके वाटे जातां कोइ मलेतो तेने म्होटे सादें जुहार करजे पछी वाटें जतां कोइएक पाराधी पास मांडी मृगला एकठा करी ऊभो छे तेने छोकरायें म्होटे सादें जुहार कर्यो तेनो साद सांभलीने सर्व मृग नासी गया पाराधीये तेने मार आप्यो अने मूर्ख जाणीनें कह्युंके हे भूंडा मार्गे जतां छपतो चाल्यो जाजे वली आगल जातां कोइक कोटवाल चोरनी शोध करवा नीकल्यो छे तेणे छोकरानें छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो मार मार्यो पछी मूर्ख जाणी कह्युंके घणा माणस दीठामां आवे तेवारें एम कहेजे के तमारे एवुं कोइ वखते थाशोमां वली आगल जातां कोइएक गाममां विवाह ने ते देखी पहेला मूर्खायें कह्युं के तमारे घेर एवुं कार्य कोइ वारे म था जो ए वचन सांभलीने विवाहवालायें कूट्यो मार आप्यो पछी छोकरायें कोटवालना शीखा

बवा संबंधि वात कहे बले ते लोकोये मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युंके हे लोला! जेवा
रें घणा माणस मळे तेवारें एवुं कहेवुं के तमारे सदा सर्वदा एमज थाजो तेवात याद राखीने
लोकरो आगल चाल्यो मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो ने तेनी मैयतने लइ जा
य ने तेने लोकरायें कह्युं के तमारे सदा सर्वदा एवुंज होजो तिहां पण तेणे मार आप्यो मूर्ख
जाणीने मूकी दीधो एम रखडतो रझलतो केटलाएक दिवसें पाछो घेर आव्यो ए श्रीवीरना
साधु उपर वक्रजडनुं बीजुं दृष्टांत कह्युं ॥ ॥ हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्व रुजु
अने प्राज्ञ छे तेना उपर दृष्टांत कहेछे. जेम कोइएक अजितनाथ जगवानना साधु ते स्थंमि
लथी घणो असुरो आव्यो माटें गुरुयें तेनुं कारण पुछ्युं तेवारें रुजु पणाथी कह्युंके नाटकी
आनुं नाटक जोवा उनो रह्यो हतो, गुरु बोल्या जे साधुयें नाटक जोवुं नही तेवारे तेणे
मिछामिछुकड देइने कह्युंके हवे कोइवारे जोवा उनो रहीश नही वली कोइएक दिवसें बाहेर
गयो तिहां रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोइ पंमित पणाथी विचार कर्यो के गुरुयें मुजनें
नाटकीआनुं नाटक जोवा वर्ज्युंछे तो नाटकणीतो वली विशेष रागनुं कारण छे माटे ए
मुजने सर्वथा जोवीज नही एवुं विचारीनें पाछो आव्यो ए रुजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्युं ॥१॥
एम ए दृष्टांत जे कह्यां ते कांइ सर्व साधुउ आश्रयी समजवां नही, परंतु कोइएक सा
धुनां आश्रयी जाणवां ॥ ॥ हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड छे ते प्रमाणे आज
पांचमा आरामां चारित्रीया साधु नथी एम पण न कहेवुं कदापि अनाजोग पणे अतिचार दोष
घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमां छे केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्यव
हार जाष्यमां कह्युं छे के श्रीजगवंतनां जांखेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने साधु

कहीयें ॥ तथा ॥ जो नणई नत्थि धम्मो, नय सामाईय न चेवय वयाइं ॥ सो समणसंघवुज्झो, कायवो समण संघेण ॥ १ ॥ माटे जो पूर्व साधुनी अपेक्षायें हीन कहो तो नले कहो पण ज पमकालमां साधु नथीज एम न कहीयें जे माटे साधु तो आजे पण छे ॥ ॥ हवे ए दश प्रकारनो कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे ते त्रीजा वैद्यना औषध सरखो छे एटले जेम त्रीजो वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पण उपकारी जाणवो ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे छे. कोइएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत वल्लन हतो माटे राजायें विचार कर्यो जे आ पुत्रनें रोग आव्या पहेलांज एनुं हुं औषध करावुं तो पछी कोइ वारें एनें रोगज थाय नही एम चिंतवी वैद्यनें बोलावी कह्युं के आ छोकरानुं एवुं औषध करो के जेणेकरी एने कोइ वखत रोग न थाय ते वारें वैद्य बोल्यो के हे राजन्! म्हारी पासें जे औषध छे ते एवुं छे के जे खाधा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय ते सांजली राजायें कह्युं के सूता सिंहनें जगाडवा सरखुं ताहारुं औषध अमारे करवुं नथी, एम कही तेने शीख आपी, पछी बीजा वैद्यनें पुछ्युं तेवारें ते बोल्यो के हे राजन्! माहारुं औषध खवराव्याथी जो रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो गुण दोष कांइ नथाय ते सांजली राजा बोल्यो जे राखमां घृत ढोलवा जेवुं ताहारुं औषध अमारा कामनुं नथी एम कही तेने पण विदाय कर्यो, पछी त्रीजा वैद्यनें बोलावी पुछ्युं तेवारें ते बोल्यो हे राजन्! म्हारुं औषध एवुं छे के जे खवराव्याथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न होय तो वली अपर रोग आवे नही तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांजली राजायें प्रसन्न थइनें ते वैद्यनुं औषध छोकरानें अपाव्युं अने वैद्यनें शिरपाव आपी विदाय कर्यो एवीरीतें

ए कल्प सिद्धांत पण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी छे केमके एना श्रवणथकी जे पूर्व कर्म
बांध्या होय तद्रूप व्याधि दूर थइ जाय अने नवा कर्मनो बंध पडे नही सर्व आपदा निवारे,
सुख संपत्ति करे, चारित्रना गुणनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तरत आपे ए कल्प
सूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर चरित्र छे ते बीज समान छे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र छे ते अंकुरो छे,
श्रीनेमीश्वर नगवाननुं चरित्र छे ते थड छे,श्रीआदिनाथ चरित्र छे ते शाखा छे, थविरावली
ते फूल छे, कथा छे ते सुगंध छे, फल ते मोक्ष छे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर सांजले ते जीव
आठ नवमां मोक्ष जाय॥ ॥हवे साधु जे गाममां चोमासुं रहे ते गाममां ए कल्पसूत्रनी वा
चना करे अने चोमासुं पूरण थया पछी एटले कार्तिकशुदि पूर्णिमा थया पछी पण कदापि
वर्षाद वरसवाथी मार्गमां कादव प्रमुख थया होय तो वधारे दिवस पण रहे तथा वली क
दाच जे गाममां साधु चोमासुं रह्या होय अने हजी चोमासुं पूरुं न थयुं होय तेनी वचमां
ते गाममां १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ भिक्षा दुर्लभ मलती होय, ३ राजा
दुष्ट होय तेणे कोप कर्यो होय, ४ कुंथुआदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प
अग्नि आदिकनो भय उत्पन्न थयो होय,रोग अने वर्षाद विरमता न होय,दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक
कारणे चोमासामां पण विहार करवानी आज्ञा प्रभुयें दीधी छे माटे विहार करवामां दोष
नथी. हवे संयम निर्वाह करवानें अर्थे साधुनें ज्यां चोमासुं रहेवुं पडे तिहां प्रथम ते खेत्रमां
उत्कृष्टपणे तो तेर गुण जोवा जोइयें तेना नाम कहेछे. १ जे गाममां चिखल कादव घणो न
होय, २ जे गाममां बेइंद्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थंडिल जवानी भूमि निरवद्य हो
य, ४ स्त्री पशु पंडकादिक दोष रहित उपाशरो रहेवानो होय, ५ जे क्षेत्रमां दहिं दूध घणा

मलतां होय, ६ जे गाममां नद्रक अने श्रद्धावान एवा श्रावकना घणां घर होय, ७ जे गाममां वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ जिहां औषध घणां सुलन्न मलतां होय, ए जिहां श्रावकोना घरमां धन धान्य प्रमुखनो घणुं संग्रह होय पण कोइ वातनी चिंता न होय, १० जे गामनो राजा अति नद्रक होय यतिउंनी नक्ति घणी करतो होय, ११ जिहां ब्राह्मण, तापस, जुआ, नरडा प्रमुख पाखंमी लोक जे ले ते साधुनें अपमान करी शकता न होय, १२ जिहां निक्षा सुलन्न मलती होय, १३ जिहां सद्याय पठन पाठनादिक सुखें थतां होय ए तेर गुणवाला गाममां साधुयें चोमासुं करवुं, कदापि एटला योग न बनें तो पण जघन्यथी चार गुण तो अवश्य जोवा. तेना नाम कहेले. १ थंमिल नूमि घणीज सारी शुद्ध फाशु होय, २ जेमां सद्याय ध्यान सुखें थाय एवी रहेवानें जगा होय, ३ जिहां श्रीजिनमंदिर होय, ४ जिहां गोचरी रूडी रीतें मलती होय ए चार गुण खेत्रना जोइनें चोमासुं करवुं एम ए तेर गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पांचथी मांमीनें बार गुण सुधी सर्व मध्यम गुण जाणवा, एवुं खेत्र जोइनें त्यां साधुयें चोमासुं करवुं कारण के साधुजन पृथ्वी पीठनें विषे नवकल्पि विहार करे तिहां अनेक तीर्थयात्राउ करतां, गामेगामे विचरता मिथ्यात्वें पडता अनेक नव्यजीवोना उद्धार करतां थकां विचरे ते जेवारे चोमासुं आवे तेवारे धरामंमलें सजलधारायें वर्षाद पडे तेथी पगले पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमलकिसलय फूटे, थानकें थानकें अनेक प्रकारना जंतुउ उत्पन्न थाय ते माटे जीवयत्न करनारा चारित्रियायें वर्षाकालमां विहार न करवो, एकत्र स्थानकें रहेवुं, अनेक प्रकारना घोर अनिग्रह करवा, जेमाटे साधुने तो वीशवशा दया ले परंतु श्रीकृष्णमाहाराज जेवा सवावशानी दयाना पालनारा

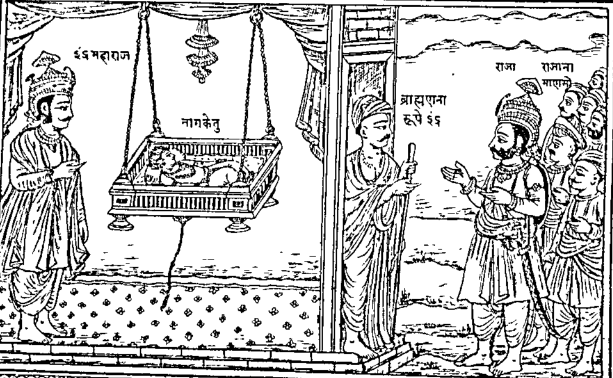
श्रावकोयें पण चोमासामां शोल हजार राजाउने सजामां पधारवानी ना कही. अन पात
पण सजा मांहे नाव्या केमके वर्षाद मांहे घणा कीडी कुंथुआदिक जीव हणाय एवुं जाणी
ठाकोर पोढयाने एवो जवाब श्रीकृष्णे कर्यो त्यांथी देव पोढणी अगीआरस लोकमां प्रसिद्ध
थइ एरीतें शुद्ध श्रावक पण वर्षाकालें पाप जाणीनें देशांतरनो व्यापार न करे माटे साधुनें
पण चोमासामां एक ठेकाणे रहेवुं ते चोमासाने विषे पंजोसण पर्व आवे थके मांगलिकनें अर्थें
कल्पसूत्र अवश्य वांचवुं ॥ ॥ हवे पंजोसण पर्व सर्व पर्वो मांहे उत्कृष्ट ने माटे एनो म
हिमा कहेने १ जेम मंत्रमांहे पांच परमेष्ठि मंत्र, २ जेम तीर्थमांहे शत्रुंजय तीर्थ. ३ जेम दानमांहे
अनय दान, ४ जेम गुणमांहे विनय गुण, ५ जेम व्रतमांहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ जेम संतोषमांहे निय
म, ७ जेम तपस्या मांहे इंद्रिय दमन, ८ जेम दर्शनमांहे जैनदर्शन, ९ जेम क्षीरमांहे गोक्षीर, १०
जेम जलमध्ये गंगानीर, ११ जेम पटमांहे हीर, १२ जेम वस्त्रमांहे चीर, १३ जेम अलंकारमांहे
चूडामणि, १४ जेम ज्योत्स्नामांहे निशामणि, १५ जेम तुरंगमांहे पंचवल्लकिशोर, १६ जेम
नृत्यकलावंतमांहे मोर, १७ जेम गजमांहे ऐरावत, १८ जेम दैत्यमांहे ऐरावण, १९ जेम
वनमांहे नंदनवन, २० जेम काष्टमांहे चंदन, २१ जेम तेजवंतमांहे आदित्य, २२ जेम
साहसिक मांहे विक्रमादित्य, २३ जेम न्यायवंतमांहे श्रीराम, २४ जेम रूपवंतमांहे काम,
२५ जेम सतीमांहे सीता, २६ जेम शास्त्रमांहे गीता, २७ जेम वाजित्रमांहे नंजा, २८ जेम
स्त्रीमांहे रंजा, २९ जेम सुगंधमांहे कस्तूरी, ३० जेम वस्तुमांहे तेज, ३१ जेम पुण्यश्लोकमांहे
राजा नल, ३२ जेम फूलमांहे सहस्रदल कमल, ३३ जेम धनुर्धरमांहे अर्जुन, ३४ जेम
इंद्रियमांहे नयन, ३५ जेम धातुमांहे सुवर्ण, ३६ जेम दातारमांहे कर्ण, ३७ जेम गायमांहे

गाय, ३८ जेम स्नेहमांहे घृत, ३९ जेम जलमांहे अमृत, ४० जेम ज्ञानमांहे
न, ४१ जेम सुखमांहे मोक्षनुं सुख, तेम सर्व पर्वमांहे पंजोसण पर्व महोटुं जाणवुं
ए नाइवा शुदि पंचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज परशासनने विषे पण ए
ऋषीपंचमीनो दिवस माननीय छे ते ऋषीपंचमीनो संबंध कहे छे ॥ ॥ पुष्पवती नगरीने विषे
नीलकंठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे नार्या हती तथा इंद्रदेव नामे पुत्र हतो ते
जन्मथीदारिद्री हतो केटलेक कालें तेना माता पिता मरण पामीनें एनाज घरमां पिता बलदीयो
थयो अने माता कुतरी थइ एवामां श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमां द्रव्य नही तेथी विचार
करवा लागो जे माता पिताना श्राद्धनो दिवस महारे केवीरीतें साचववो पछी बलदीयो ते
लीने घेर खेडवा आप्यो तेनुं नाडुं लइ दुध, चोखा, खांम, घृत अने गोधुम लइ आवीनें खीर
रांधी घणा ब्राह्मणोने नोतरुं दीधुं एवामां पूर्वला नवनुं पोतानुं घर देखीनें कुतरीनें जाति
स्मरण ज्ञान उपनुं छे तेणे ते दूधमांहे उपरथी सर्प्पें गरल नाखी ते दीठी तेवारें कुतरीयें
विचार्युं जे अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जमशे तो मरण पामशे तेथी महा अनर्थ थइ प
डशे ब्रह्म हत्यानुं पाप लागशे ने महारो पुत्र तथा वहु बे मरण पामशे एम विचारे छे एट
लामां वहु आवी तेवारे तेने देखतां ते कुतरीयें दुधमांहे पोतानुं मोहोडुं घाली दुध बोट्युं
ते जोइ वहुने रीश चडी तेथी तेने मुसलनां प्रहारे मार मारी केड नांगीने ज्यां गायनी
शाला छे त्यां जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तडफडवा लागी अने ब्राह्मणे बीजो दुध लावी
खीर रांधी सर्व ब्राह्मणोने जमाडी श्राद्धनो दिवस साचव्यो पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर
गौशालामां खाटली पाथरी सूतो एवामां संध्या समय थयो तेवारें आखा दिवसनुं चुल्यो,

तरस्यो थाकी गयेलो बलद ते पण पेला बांधीयें जानीने नेनो स्थानक बांध्यो एटलामां कुत
रीनो आवीनें बलदीया तथा कुतरीना शरीरमां संक्रमी. तेवारें कुतरी बलदीयाने कहेवा लागी
के आज श्राद्धनो आपणुं हतुं अने खावानुं ब्राह्मणोने मळ्युं एटलुंज नही पण आ पापिष्ट
वहुयें मारारी केड नांगी नांखी तेथी महादुःख पामुं छुं तेवारें बलदीयो बोल्यो जे आ पापिष्ट
आपणो दीकरो पण कांइ समजतो नथी मने पण आजें बांधीनें घेर मोकल्यो हतो तेणे
आखो दिवस घाणीमां फेरव्यो अने चारो पाणी आप्या विना एमज भूखें मरतो
आंही आवी बांधी गयो छे, ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे सांभळी तेथी तेना म
नमां दिलगिरी पेदा थइ अने विचार्युं जे आतो महारा माता पिता देखाय छे एवो निर
धार करी त्यांथी उठीने कुतरीने खीरनुं भोजन कराव्युं अने बलदने सारीरीतें चारो प्रमुख
आप्युं पछी पोतें पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थें परदेश जइ अनेक तीर्थ करी
कोइ महोटा ऋषीश्वरने पुछवा लागो के महाराज महारो बाप बलदीउ थयो छे अने माता
कुतरी थइ छे तेनी रुडी गति केवीरीतें थाय ते प्रकार कहो तेवारें ऋषी बोल्यो जे ए बेहु
जीवें ऋषि पंचमीना दिवसें अप्रमत्तपणे काम क्रीडा करेली छे मैथुन सेवन कर्युं छे तेनुं पाप
लाग्युं तेना योगें ए अवतार पाम्यां छे माटे हवे तुं जेवारें ऋषि पंचमी एटले भादरवा शुदि
पंचमीनो दिवस आवे ते दिवसें बलदनुं खेडेलुं धान्य खाइश नही चोखो चउविहारो उप
वास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नही तो दश मुठी अडदना बाकळा खाजे एटले एम
नी सद्गति थशे पछी ते ब्राह्मणे तेमज कीधुं ते दिवसथी लोकोने विषे ऋषि पंचमीनुं नाम
प्रसिद्ध थयुं छे ए ऋषिपंचमीना पर्व आश्रयी कथा कही॥ ॥हवे श्रीपर्यूषण पर्व आवे तेवारें

गहोदो गहोत्सव करी जे पुरुष तेजानी तपस्यामां एटले अठम तप करी श्रीकल्पसूत्रने सांजले ते पुरुष नागकेतुनी पेरें केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे ते नागकेतुनी कथा कहे छे. चंद्रकांता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो, ते नगरीमां श्रीकांत नामा शेठ रहेतो हतो तेनी श्रीसखि नामे जार्या हती तेने घणा उपाय करतां देवदेवीओनी मानताओ करतां एक पुत्र आव्यो अनुक्रमे ते पुत्रनुं पालण पोषण करतां केटलोएक काल वीत्यो एटलामां पर्यूषण पर्वना दिवसो आव्या ते समयमां ते बालकनी आसपास वेठेलां माणसो मांहोमांहे वातो करवा लागां के आपणे सांवत्सरीनो तेलो करीशुं एटले अठम तप करीशुं ए वात सांजलीने पहेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेना योगें पोतानो पाछलो जव दीठो तेथी बाल्यावस्थामां पण तेणे पोताना मनमां अठमनुं तप करवुं एवो निश्चय करीने स्तनपान करवुं मूकी दीधुं तेथी तेनुं शरीर कुमलाइ गयुं मरणतुल्य अवस्था दी ठामां आवी एवी पुत्रनी व्यवस्था जोइ तेनां माता पिता घणुंज दुःख धरवा लागा तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार कस्या तो पण ते बालकें स्तनपान कर्युं नही एम करतां चूखनां योगें ते बालकने मूर्छा आवी गइ छोकराने मूवेला जेवो देखीनें तेना बापनुं हैयुं फाटी गयुं तेथी मरण पाम्यो, तेमज माता पण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना जातिया लायें धरतीमां चंमाड्यो,पछी आपणा गाममां अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी खबर पडतां राजायें ते शेठनुं धन लेवा सारुं माणस मोकल्यां, एवा समयमां अठम तपना प्रजावें करी धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकने अमृत संचारे [illegible] कस्यो अने पोतें ब्राह्मणनुं रूप धारण करी ते शेठना घरना धा





चित्र २

रणा आगल अनो स्त्रीनें राजाना माणसोने धन लेतां अटकाव्यां, राजपुरुषोयें जइ राजानें कह्युं के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी तेवारें राजा पोतें उतावलो आवीने ब्राह्मणने कहेवा लागो के अमारा राज्यमां जे अपुत्रीयो मरण पामे तेनुं धन राजा लइ जाय एवी परंपरायें रीत छे माटे तमे शा वास्ते अटकाव करो छो त्यारे ब्राह्मण बोल्यो हे राजन्! ए शेठनो पुत्र जीवतो छे. राजायें कह्युं क्यां छे, तेवारें धरणेंद्र ते बालक जमीनमांथी जीवतो काढीनें राजानें देखाड्यो ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या राजायें ब्राह्मणनें पूछ्युं के आप कोण छो अने आ बालक कोण छे तथा ए वात तमे केम जाणी? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र नागराजा छुं तेहाना अठमनथी एनो सहाय करवाने आव्यो छुं राजा बोल्यो ए बालकें जनमतांज अठम तप केम कर्युं, धरणेंद्र बोल्या हे राजन्! ए बालक पूर्व भवमां एक वाणीयानो छोकरो हतो त्यां बाल्यावस्थामांज एनी माता मरण पामी तेवारें एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो पछी ते उरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय तोपण अवगणना करे घणु घणु खीजे तथा मारवा कूटवा वगेरे घणुंज दुःख देवा लागी, एम ते छोकरो नित्य प्रत्यें दुःख पामतो थको तेनो एक श्रावक मित्र हतो तेनी पासें जइ तेणे पोताना दुःखनी वात कही तेवारें मित्र बोलोके हे भाइ! तें पूर्व भवमां धर्म कर्यो नथी तेना योगथी दुःखी थयो छो एवो उपदेश सांभली तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्रारंभ कर्यो पछी ते आठमे चौदशें उपवास करतो अने बीजा दिवसोमां नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करतो अनुक्रमें पंजोसण पर्व आव्युं तेवारें तेणे अठम तप करवानो निश्चय विचार करीनें रात्रें तृणनी झुंपडीमां जइ सूतो, एटलामां तेनी नजीक लाय लागी तेवारें अवसर जोइनें उरमान मातायें घासनी झुंपडी उपर

आदि नाख्यो तेथी कुंपडी बली गइ अने छोकरो पण शुभध्याने मरण पाम्यो तेणे अष्टम तप ध्यानना प्रजावथी इहां श्रपुत्रीया श्रीकांत शेठने घेर जन्म लीधो अने जातिस्मरण ज्ञान पामीनें एणे अट्ठम तप कर्यु, तेथी जूखनें योगें मूर्छागत थयो हतो परंतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाण पणे तेनें मूवेलो जाणी जमीनमां जंडार्यो ते में आवी अमृत संचार करी मूर्छा उतारी सज्ज कर्यो. हे राजन! ए महापुरुष छे, एहज नवमां मोक्ष जाशे एने घणाज यत्नथी राखजो, तमोनें पण महोटो उपकारनो करवा वालो थाशे एम कही पोताना गलानो हार बालकना गलामां नाखी धरणेंइ पोतानें स्थानकें गयो, राजायें ते बालकनें हाथी उपर च डावी महोटा आडंबर सहित घेर आण्यो पछी कुटुंबना लोकोयें शेठनुं मृतकार्य करी छोकरानुं नाम नागकेतु पाड्युं. ते बालपणाथीज जितेंडिय परम श्रावक थयो, अष्टमी, चतुर्दशीनो उप वास करे, चोमासें छठ करे अने पंजोसणनो अठम करे, जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसे नगरना विजयसेन राजायें कोइ पुरुषनी उपर चोरीनुं जुठुं कलंक आपी निरपराधी छतां तेने मार्यो ते मरीनें व्यंतर देवता थयो तेणे आवी आखा नगरनो विनाश करवा सारुं नगर प्रमाणे एक सिला आकाशें विकूर्वी लोकोनें बीवराववा लाग्यो अने राजानें पाटुयें मारी मोढोडे लोही वमतों करी जमीन उपर नाख्यो, ते कृत्य जोइनें नागकेतुयें जाण्युं जे हुं जीवतां छतां श्रीसंघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकुं!! एवुं विचारी मनमां जीवदया आणी जगवानना प्रासाद उपर चडीनें शिलानें हाथ आडो आपी पडती शिला हाथें धरी राखी व्यंतरो पण नागकेतुना तपनी शक्ति न सहन करतो थको ते पोतानी वि कूर्वेली शिलानें संहरण करीनें नागकेतुनें आवी पगे लागो अने नागकेतुना कहेवा उपरथी

राजानें पण शाता करीनें व्यंतर पोतानें थानकें गयो, पठी नागकेतुनी घणी मानता थई राजायें तेने सन्मान आप्युं नागकेतु पण पूर्वनी पेरें घणा तप जप करतो थको विचरे ने एकदा नागकेतुनें जगवंतनी पूजा करतां फूलमांहे रहेला तंबोली नागें मश्यो तेथी शरीरमां जेर व्यापी गयुं पण शुज ध्यान धरवा लागो तेना योगथी केवलज्ञानकपज्युं तिहां दीक्षा लीधी, शासन देवीयें उंधो, मुहपति प्रमुख साधुनो वेश आप्यो, घणाकाल पर्यंत विहार करी घणा जव्यजीवोनें प्रतिबोध आपी मोक्ष पोहोतो, एवो नागकेतुनो अधिकार सांजलीनें जे जव्य प्राणी ठठ अठम तप करीनें एटले वेला तेलानी तपस्या करीनें श्रीपर्यूषण पर्वमां कल्पसूत्र सांजलशे ते जीव शाश्वत सुखने पामशे इतिश्री नागकेतु कथा समाप्त ॥ ॥ आ कल्पसूत्र पापनुं निवारक ने, मनोवांछित पूरनार ने, निकाचित जे चार घातिकर्म ने तेनुं जीपनार ने माटे जव्यजीवें प्रमाद, निद्रा, विकथा ठांमी वेला अथवा तेलानुं तप करीनें कल्पसूत्र सांजलवुं तथा श्रीजीवाजिगम मध्ये कह्युं ने के पंजोसण पर्व आवे त्यारे देवताना इंड पण जेला थ इनें श्रीनंदीश्वर द्वीपने विषे जइ अठाइ महोत्सव करे ने तेम इहां रूडा श्रावक, श्राविकायें पण कल्पसूत्रनो अठाइ महोत्सव करवो एवा विधियें करी जो कल्पसूत्र सांजले तो बहु लाजकारी थाय ॥ ॥ ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीनें ठठे पाटें चौद पूर्वधारी श्रीजडबाहु स्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व मांहेला नवमा प्रत्याख्यान प्रवाद नामा पूर्वनी मांहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेनुं आठमुं अध्ययन रूप रच्युं ने ते जेम दधिनो सार घृत ने तेम सर्व शास्त्रनो सार जूत ए सूत्र रच्युं ने इहां चौद पूर्वनुं मान कहे ने तिहां प्रथम उत्पाद पूर्व ने ते अंबाडी सहित एक हाथी जलो करीयें तेनो जेटलो ढगलो देखाय तेटली साइनो एक

ढगलो करीयें एटली शाइथी लखीयें तेवारें ए पहेलो पूर्व लखाय, बीजो अग्रायणी पूर्व बे हाथी जेटली शाइथी लखाय, त्रीजो वीर्यप्रवाद पूर्व चार हाथी जेटली शाइथी लखाय, चोथो अस्तिप्रवाद पूर्व आठ हाथी जेटली शाइयें लखाय, पांचमो ज्ञानप्रवाद पूर्व शोल हाथी जेटली शाइयें लखाय, छठो सत्यप्रवाद पूर्व बत्रीश हाथी जेटली शाइयें लखाय, सातमो आत्मप्रवाद पूर्व चोसठ हाथी जेटली शाइयें लखाय, आठमो कर्मप्रवाद पूर्व एकसोनें अठावीश हाथी जेटली शाइयें लखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व बसो छपन्न हाथी जेटली शाइयें लखाय, दशमो विद्याप्रवाद पूर्व पांचसेंने बार हाथी जेटली शाइथी लखाय, अगीआरमो कल्याणप्रवाद पूर्व एक हजारनें चोवीश हाथी जेटली शाइयें लखाय, बारमो प्राणावायप्रवाद पूर्व बे हजारनें अडतालीश हाथी जेटली शाइथी लखाय, तेरमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजारनें छन्नुं हाथी जेटली शाइयें लखाय अने चौदमो लोकबिंदुसार पूर्व आठ हजार एकसोनें बाणु हाथीउनां प्रमाण जेटली शाइथी लखाय एम चौदे पूर्वनें लखवा मांमीयें तो सरवाले १६३८३ हाथीउना ढगला जेटली शाइ जोइयें परंतु अद्यापि पर्यंत कोइयें लख्या नथी अने हवे कोइ लखशे पण नही मात्र प्रमाण आपीने श्रीकेवली जगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कह्युं ॥ हवे ए चौदपूर्वनुं अर्थ थकी मान कहे छे. समस्त जेटली नदीउ छे ते सर्व नदीउनी वेलुना कणीया जेटला थाय तथा असंख्याता समुद्र छे ते सर्व समुद्रनां पाणीना बिंदुउ जेटला थाय तेथी पण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो एरीतें चौद पूर्वनां नाम कह्यां ॥ ॥

ए कल्पसूत्र प्रथम तो जादरवाशुदि पंचमीना दिवसें रात्रिनुं सांवत्सरिक पडिक्कमणुं कस्या पछी अर्द्धरात्रि कालग्रहण करी श्रीगुरु उजा थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा

साधुर्ड सर्वे काउस्सग्ग करी सांजलता हता तेमज दिवसना साधवीर्डने पण संजलावता हता ए विधि हतो ॥ ॥ तेवार पछी श्रीमहावीर जगवानना निर्वाणथी नवशेंने ऐंशीमें वर्षे पुस्तका रूढ थयो अने श्रीवीर निर्वाणथी नवशें त्र्याणुमें वर्षे आनंदपुर नगर जेने हमणा वडनगर कहे ने तेने विषे ध्रुवसेन राजा राज्य करतो हतो तेने अत्यंत वह्लन सेनागज नामे एक पुत्र हतो ते दैवयोगें मरण पाम्यो एटलामां पर्यूषण पर्व पण आव्यां तेवारें राजा घणो शोकाकां त थयो हतो तेथी धर्मशालाने विषें पण आवे नही वली जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी बीजा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हता ते पण धर्मशालाने विषे आवे नही एवो राजाने शोकातुर थयो जाणी, धर्मनी हाणी थती देखीने गुरु ध्रुवसेन राजानी पासें वंदावया गया त्यां राजाने कहेवा लाग्या के हे राजन्! तमो शोकाक्रांत थया जाणीनें नगरना लोक पण सर्वे शोकाक्रांत थया ने तेमाटे शरीर धनादिक सर्वे अनित्य ने, आयुष्य चंचल ने, संसार असार ने ए प्रकारना संसार स्वरूपनें तमें जाणोज नो माटे जैनधर्म मांहे घणो शोक करवो अयुक्त कह्यो ने तेथी तमे शोक निवारीने पंचमीना दिवसें पंजोसण ने माटे धर्मशाला मांहे पधारो तो श्रीजद्रबाहु स्वामीयें नवमा पूर्व मांहेथी उद्धरेलुं श्रीकल्पनामे सूत्र महामंग लिक प्राचीन कर्मना क्षयनुं करनार ने ते वांचीयें तेवारें राजानें पांचमने दिवसें पुत्र मरणनो शोक निवर्त्तवानो हतो अने इंद्रमहोत्सव पण हतो तेथी राजायें कह्युं के बहनो दिवस अथवा चोथनो दिवस ठेरावो तो महाराथी आवी शकाय पण पंचमीने दिवसें महाराथी आवी श काशे नही तेवारें " अंतरावासेकप्पति " एवो पाठ देखीने कारण विशेषें गुरुयें चोथनी स्थाप ना करी चोथनुं कल्पसूत्र वांचवा कबुल कर्युं कालिकाचार्यथी उहरुं बलमित्र अने जानुमित्र

ए बे जाणेज साथें वडनगरनो ध्रुवसेनराजा सभा सहित धर्मशाला मध्ये आव्यो तेवारें नव वांचनायें करी प्रभावनायें सहित महोत्सव पूर्वक सर्वलोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुयें वांच्युं ते दिवसथी चोथने दिवसें पंजोसण थवानी परंपरा चाली छे अने केटलाएक गछमां अद्यापि सुधी पांचमनां पण पंजोसण करे छे तेमज ते दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रभावना सहित सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वांचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परंपरायें आज पर्यंत चाली आवे छे अने ते प्रमाणे सर्वस्थले कल्पसूत्र वंचाय छे एना वांचवाना अधिकारी योग वहन करनारा साधुउ छे अने सांभलवानो अधिकार चतुर्विध श्रीसंघने छे ॥ ॥ एक प्रतमां वली आम कहेलुं छे के वडनगरमां गुरुजी चोमासुं रह्या हता एवामां पर्यूषण नजीक आवतांमां ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरें पीडा पामवा लाग्यो तेना योगे राजा चिंतातुर थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नही अने पर्यूषण पर्वमां धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करनारा घणा जनो दीठामां न आव्या तेथी गुरुयें तेनुं कारण पुछ्युं तेवारे राजाने शोकमां पड्यो जाणी गुरु पोतें राज सभामां पधास्या त्यां राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा लाभनु कारण जाणी मांगलिक निमित्तें कल्पसूत्रनी प्रथम वांचना करी ते सांभलतां राजाना पुत्रने शाता थई एम करतां नव वाचनायें तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजायें घणो हर्षवंत थइने महोटो महोत्सव कस्रो, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजायें गुरुने विनंति करी के श्रीसंघना मांगलिक निमित्तें ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसंघनें वांची संभलाववुं ते दिवसथी कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसंघनी आगल वांची संभलाववानी प्रवृत्ति चाली छे ते रीते हमणा पण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधुमुनिराज करे छे ॥ ॥ हवे ए सूत्रना

वांचवा थकी एना अक्षरना महात्म्यनें योगें साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकानां कल्याण थाय ए वात निःसंदेह ने तेनी उपर कथा कहे ने. कोइएक मोशीनो पुत्र वनमांहे गायो चारवा जाय एक समये तेने सर्पे मस्यो तेथी मूर्छागत थयो ते वात लोकोना मुख थकी सांजलीने मोसी वनमां गइ त्यां पुत्रनें मूर्छित थयो देखी, मोहना वश थकी पुत्रनुं नाम वारंवार स्मरण करवा मांमधुं के रे हंस! रे परमहंस! एवीरीते चार पोहोरसुधी पोकार कस्यो, तेथी मोसीना ठोकरानें फेर उतसुं, साजो थयो, प्रजातें माता अने ठोकरो बेहु जण गाममां आव्यां, नगरनां लोक सर्वे विस्मय थया, त्यां मोशीनें गारुडीउयें पुठयुं जे तमोये शो उपाय कस्यो, के जे थकी तमारो पुत्र निर्विष थयो? त्यारे मोशी बोलीजे हुं कांइ मंत्र जाणती नथी. औषध जाणती नथी, पण आखी रात्रि, रे हंस! हंस! अने रे परमहंस! परमहंस!! एवुं रुदन कसुं तेथी निर्विष थयो. में पोकार कस्यो ते देवतायें सांजल्यो देवना प्रयोगथी ठोकरो निर्विष थयो ते सांजली गारुडी बोल्या के ए मंत्र सत्य ने अक्षरना प्रयोगथी मंत्र निपजे ने, तेम आ कल्प सिद्धांत वांचतां थकां, सांजलतां थकां, जन्म जन्मनां पातक जाय ने एवुं महोटुं महात्म्य कल्पसूत्रना अक्षरनुं जाणवुं ए कल्पसूत्रने सांजलवा थकी घणा गुण थाय ने, घणा मांगलिकनी वृद्धि थाय ने॥ ॥ हवे परिसामस्त्येन उषणा सेवना ते पर्यूषणा कहीयें ते पंजोसण पर्व आव्यां थकां साधुयें एटलां धर्म कार्य करवां ते कहे ने.

१ चैत्य परिवाडी करवी एटले सर्व चैत्यने विषे श्रीअरिहंतनी प्रतिमानां दर्शन जक्तिजावे करवां, २ लोच करवो, ३ सांवत्सरि पडिक्कमणु करवुं, ४ सर्व श्रीसंघनी मांहोमांहे खमणां करवां, ५ तेलो करवो एटले अठमनुं तप करवुं तथा पांच दिवस सुधी श्रीकल्पसूत्र वांचवुं

ए पांच वातो करवां,एम श्रीतीर्थंकर गणधरें कह्युं ने वली पर्युंषण आव्यां थकां श्रावकें आट लां धर्म कार्य करवां ते कहे ने. १ आठ दिवस सुधी अमारि पलाववी, २ यथाशक्ति वेला तेलानुं एटले अठ्ठ अठ्ठमादिकनुं तप जपादिक करवुं, ३ आठ दिवस पर्यंत सुपात्रनें अविछिन्न दान देवुं, ४ सोपारी नालीयेर प्रमुखनी प्रनावना करवी, ५ श्रीवीतराग देवनी प्रतिमानी पूजा करवी, चैत्य परिवाडी करवी, ६ सर्व साधुउने वंदन करवुं, ७ श्रीसंघनी जक्ति करवी, ८ सचित्त वस्तुनो परिहार करवो, ९ ब्रह्मचर्य पालवुं, १० सर्व प्रकारना आरंज संबंधि कर्मो नो त्याग करवो, ११ पोतानी शक्ति प्रमाणे सन्मार्गे द्रव्य खरचवुं, १२ श्रुतज्ञाननी जक्ति करवी, १३ अजयदान देवुं, १४ कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग करवा, १५ प्रतिदिवस उनय टंक पडिक्कमणां करवां, १६ मोटो महोत्सव करवो, १७ जे कल्पसूत्र वांचे तेने जक्त पानादिक सहाय आपवो तेनी सुख समाधिनी खबर लेवी अने १८ श्रीसंघे मांहोमांहे खमाववुं, १९ जावना जाववी, २० कल्पसूत्र सर्व अक्षरे अक्षर सांजलवुं कल्प समान जे जव्य जीव होय ते कल्पसूत्र सांजले अने ते विधिपूर्वक सांजलनारो पुरुष बारमें देवलोकें जइ देवतानां सुख जोगवे परंपरायें आठमें जवे मोक्षना सुख पामे एटलां धर्मकार्य करवां ॥ ॥

हवे ईहां व्याख्यान करती वेलायें प्रथम मंगल रूप गाथा कहेवी ते लखीयें ठैयें ॥ पुरिम चरिमाण कप्पो, मंगलं वद्धमाण जिण तिछं ॥ ईह परिकहिया जिणहरा, थेरावली चरित्तंमी ॥ १ ॥ पहेला श्रीरूषजदेव तीर्थंकर अने ठेला श्रीमहावीर स्वामी तीर्थंकर थया तेमां श्रीवर्द्धमान जिनेश्वरना तीर्थने विषे मंगलिक निमित्तें ए कल्प सूत्र ने तेमां त्रण अधिकार कह्या ने त्यां प्रथमतो जिनावली एटले श्रीमहावीर जगवानथी मांडीने पश्चानुपूर्वीयें श्रीजिने

श्वरोनां चरित्र कहेवाशे, बीजो स्थविरावली एटले स्थविरोनां चरित्र कहेवाशे, त्रीजो चोमास आश्रीनें करी अनेक प्रकारनी साधु समाचारि कहेवाशे तेमां प्रथम श्रीजिनेश्वरोनां चरित्रो मांहे जेवा श्रीमहावीर स्वामी शासनना अधिकारी छे माटे तेमनुं चरित्र पहेलुं कहेवाशे एरीतें पीठिका करी ॥ ॥ हवे ए कल्पसूत्रनो अर्थ अत्यंत गंभीर छे एकेका अक्षरनो अनंतो अर्थ छे ते सर्व अर्थ कहेवानें हुं समर्थ नथी तथापि जेम पूर्वाचार्योयें कह्युं छे तेम हुं पण ते महापुरुषोना ग्रंथोने अनुसरी गुरुकृपाथी सरल अर्थ करु छुं ॥ ॥ हवे जो पण ए कल्पसूत्र पोतेंज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामांगलिक रूप छे तो पण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे जेम लौकिक कार्यना आरंभमां पण प्रथम श्रीदेव गुरुनुं स्मरण करीनें पछी ते कार्यनो आरंभ करीयें छैयें तेम आ कल्पसूत्र रचवा रूप कार्यनी आद्यमां पण सर्व मंगल मांहे महामांगल्यकारी, चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्टि मंत्रनो उच्चार कराय छे ते जणीयें छैयें ॥ ॥ नमो अरिहंताणं के० ॥ नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्यें, नमोसिद्धाणं के० ॥ नमस्कारहो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्यें, नमो आयरियाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीआचार्य भगवान प्रत्यें, नमोउवझायाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीउपाध्याय प्रत्यें,नमो लोए सव्वसाहूणं के० ॥ नमस्कारहो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकनें विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्यें, एसो पंच नमुक्कारो के०॥ ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार छे एटले ए नमस्कार पंचक जे छे ते कहेवो छे तोके सव्वपावप्पणासणो के० ॥ सर्व पापनो प्रकर्षे करी नाश करनार छे, मंगलाणंच सव्वेसिं के० ॥ सर्व मंगलमांहे पढमंहवइमंगलं के०॥ प्रथम एटले मुख्य मंगल छे, एरीतें मंगल कहीनें हवे मूलपाठनो अर्थ लखीयें छैयें, ते

कालने विषे एटले चोथा आरानां अंतने विषे, ते समय ने विषे एटले ते अवसरनें विषें श्र
मणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीना पांच स्थान उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां होतां हवां ते कहे
छे एक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने देवानंदाजीनी कूखें गर्भमां आवी उपन्या
बीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवानंदाजीनी कूखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूखमां संक्र
माव्या, त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गृहस्थ पणुं
त्यागीनें साधु पणुं अंगीकार कर्युं, पांचमो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत अनुपम जेनें बी
जी कोई उपमा लागे नही तथा जेनो क्यांय पण व्याघात न थाय एवुं, आवरण रहित स
मस्त वस्तु प्रकाशक संपूर्णपूर्णिमाना चंद्र समान एवुं श्रेष्ठ केवलज्ञान तथा केवलदर्शन जग
वाननें उत्पन्न थयुं ए पांच स्थान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयां तथा स्वाति नक्षत्रमां जगवंत
निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पांच कल्याणक सामान्य पणे जगवंतना कह्यां हवे
विस्तारथी वर्णन करीयें छैयें. ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर
स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आठमुं पखवाडियुं अर्थात् आषाढ शुदि छठनी रात्रें महावि
जय पुष्पोत्तर प्रधान पुंडरीक नामे दशमा देवलोकनुं विमान छे ते विमानमां वीश
सागरोपमना आउखानो क्षय करीनें, देवजव त्यागीनें, देव संबंधि शरीर छांमीनें, अंतर
रहित चवे, चवन करीनें एहज जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमांहेला दक्षिणजरतमां ए अवसर्प्पिणी
कालना इहां अवसर्प्पिणी कोने कहे छे ते देखाडे छे जे कालमां समय समय वस्तुनी हानि
थती होय ते अवसर्प्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमां समय समय वस्तुनि वृद्धि थती
होय ते उत्सर्प्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक एकेका कालना छ छ आरा होय छे तेनुं स्वरूप

संक्षेपथी लखीयें ठेयें तिहां पहेलो सुखमसुखमा नाम आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनो त्रण पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनुं देहमान होय, बशोनें लप न पांसली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तुवरनी दाल जेटलो आहार त्रण दिवसें करे, उगणपचाश दिवस सुधि जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोकें जाय ए अवसर्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्पिणीनो छठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ १ ॥ ॥ बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां मनुष्य तिर्यंचनुं बे पल्योपमनुं आयु, बे कोशनुं शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसें आहार करे, एकसो अठावीश पांसली होय अने चोशठ दिवस पर्यंत अपत्य पालना करी देवलोकमां जाय ए अवसर्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्पिणीनो पांचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो सुखम दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहां युगलीया मनुष्य तिर्यंचनुं एक पल्योपमनुं आयु, एक कोशनुं शरीर, एकांतरें आमला प्रमाणे आहार करे, चोशठ पांसली होय अने उगण्याएंशी दिवस सुधि संतान पालना करी मरण पामी देवलोकें जाय ए अवसर्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ३ ॥ ॥ चोथो दुखम सुखमा नामे आरो बेतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनुं अने पांचसें धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगलीया न होय माटे जेवखत जेटलुं जोइयें तेवखत तेटलुं जोजन करे,मरण पामीनें चारेगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय,कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष पण जाय ए अवसर्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥४॥ ॥ पांचमो दुखमा नामा आरो

एकवीश हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीशवर्षनुं आयु होय, मरण पामीनें चारगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीनें कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्पिणीनो पांचमो आरो अनें उत्सर्पिणीनो वीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ॥ ढ्हो डुखम डुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो ठे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनुं शरीर होय, विलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, डुर्गतिमां जावा वाला जीव जेमां होय एवो अवसर्पिणीनो ढ्हो आरो अने उत्सर्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥ एरीते ए ढ अवसर्पिणीना अने ढ उत्सर्पिणीना मली ढ ड बार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय ॥ ॥ हवे एमां अवसर्पिणीनो सुषम सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुखमा नामा वीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम डुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने डुसम सुसमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण बेतालीश हजारने पचोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना उपर एटला वरसें न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमां थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतुं तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ जगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमां थया तेमनुं गौतम गोत्र हतुं एरीतें सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारें ए अवसर्पिणी संबंधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष उपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारें प्रथम श्रीजरत महाराजायें श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने पूछ्युं हतुं त्यारे श्रीआदिनाथ जगवानें कह्यं हतुं ते [illegible]

प्रमाणे श्रमण जगवान् श्रीमहावीर नेला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंमगाम नगरमां रूपनदन नामा ब्राह्मण जेनुं कोडाल गोत्र ले तेनी देवानंदानामे ब्राह्मणी नार्या ले तेनुं जालंधर गोत्र ले तेनी कूखनेविषे मध्यरात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते बते देव संबंधि आहार तथा देवनो जव अने देवनुं शरीर त्यागीनें देवानंदानी कूखमां अवत र्या ॥ ॥ हवे श्रीरुषजदेव जगवाने कह्युं हतुं के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कया जवनी ने ते जाणवानें अर्थे श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश जव लखीयें ठैयें. आ श्रीजंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पट्टनना राजाना गामनी चिंता करवा वालो नयसार नामे चाकर कणवाय्यो हतो ते एक दिवसें राजाना हुकमथी घणां गाडां अने चाकर सार्थें लइने काष्ठ लेवानें अर्थे वनमां गयो तिहां पोते एक वृक्षनी नीचें जइ बेठो ने अने बीजा चाकर माणस लाकडां कापवानो उद्यम करवा लागा ने एटलामां सार्थथकी चूका पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीठा तेवारें हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीनें पोतानें स्थानकें तेडी लावीनें आहार वोहोराव्यो पढी साधुयें तेने धर्मोपदेश आ प्यो. ते सांजलीने त्यां समकेत पाम्यो तेवार पढी ते साधु मुनिराजोनें पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो जव जाणवो ॥१॥ ॥ जिहांथी समकेत पाम्या तिहांथी जवनी गणती थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवें अनंत जव कया ते कांइ लेखामां गणाय नही पढी त्यांथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोकें देव पणे उपन्यो ए बीजो जव जाणवो ॥२॥ पढी देवजवमां एक पल्योपमनुं आयुष्य जोगवी तिहांथी चवीत्रीजे जवें श्रीरुषजदेव स्वामीनो पुत्र जरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो

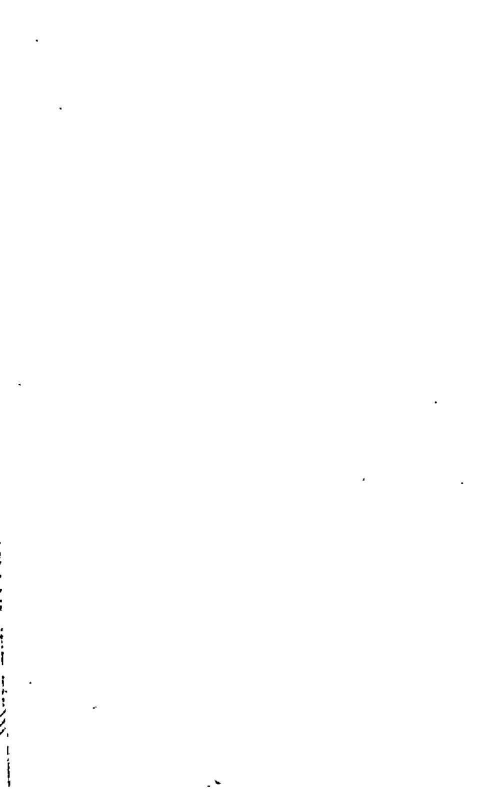
एकवीश हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीशवर्षनुं आयु होय, मरण पामीनें चारगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीनें कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अनें उत्सर्प्पिणीनो बीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ॥ छठो दुखम दुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनुं शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, दुर्गतिमां जावा वाला जीव जेमां होय एवो अवसर्प्पिणीनो छठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥ एरीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्प्पिणीना मली छ दु वार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय ॥ ॥ हवें एमां अवसर्प्पिणीनो सुषम सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुखमा नामा बीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम दुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने दुसम सुसमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण बेतालीश हजारने पचोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वरसें न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमां थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतुं तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ भगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमां थया तेमनुं गौतम गोत्र हतुं एरीतें सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारें ए अवसर्प्पिणी संबंधी चोथा आराना पंचोतेर वर्ष ऊपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारें प्रथम श्रीभरत महाराजायें श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने प्रश्नं हतुं त्यारे श्रीआदिनाथ [illegible]

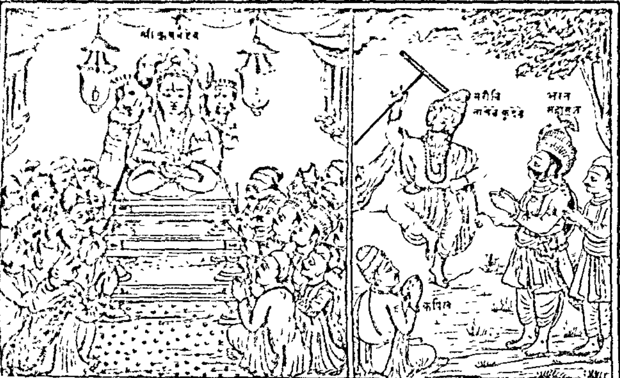
प्रमाणे श्रमण नगवान् श्रीमहावीर जेवा तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंमगाम नगरमां रुषजदत्त नामा ब्राह्मण जेनुं कोडाल गोत्र ने तेनी देवानंदानामे ब्राह्मणी नार्या ने तेनुं जालंधर गोत्र ने तेनी कूखनेविषे मध्यरात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते बते देव संबंधि आहार तथा देवनो नव अने देवनुं शरीर त्यागीनें देवानंदानी कूखमां अवतर्या ॥ ॥ हवे श्रीरुषजदेव नगवाने कयुं हतुं के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कया नवनी ने ते जाणवानें अर्थे श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश नव लखीयें डैयें. आ श्रीजंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवा वालो नयसार नामे चाकर कणवाम्यो हतो ते एक दिवसें राजाना हुकमथी घणां गाडां अने चाकर सार्थें लइने काष्ठ लेवाने अर्थें वनमां गयो तिहां पोते एक वृक्षनी नीचें जइ बेठो ने अने बीजा चाकर माणस लाकडां कापवानो उद्यम करवा लागा ने एटलामां सार्थथकी बूटा पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीठा तेवारें हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीनें पोतानें स्थानकें तेडी लावीनें आहार वोहोराव्यो पठी साधुयें तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांजलीनें त्यां समकेत पाम्यो तेवार पठी ते साधु मुनिराजोनें पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो नव जाणवो ॥१॥ ॥ जिहांथी समकेत पाम्या तिहांथी नवनी गणती थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवें अनंत नव कस्या ते कांइ लेखामां गणाय नही पठी त्यांथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोकें देव पणे उपन्यों ए बीजो नव जाणवो ॥२॥ पठी देवनवमां एक पल्योपमनुं आयुष्य नोगवी तिहांथी चवीत्रीजे नवें श्रीरुषजदेव स्वामीनो पुत्र नरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो

एकवीश हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीशवर्षनुं आयु होय, मरण पामीनें चारगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीनें कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अनें उत्सर्प्पिणीनो बीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥ ॥ छठो दुखम दुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनुं शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, दुर्गतिमां जावा वाला जीव जेमां होय एवो अवसर्प्पिणीनो छठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥ एरीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्पिणीना मली छ छ बार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय ॥ ॥ हवे एमां अवसर्प्पिणीनो सुषम सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुखमा नामा बीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम दुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने दुखम सुखमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण बेतालीश हजारने पच्चोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वर्सें न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमां थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतुं तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ जगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमां थया तेमनुं गौतम गोत्र हतुं एरीतें सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारें ए अवसर्प्पिणी संबंधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष ऊपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारें प्रथम श्रीजरत महाराजायें श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने पूछयुं हतुं त्यारे श्रीआदिनाथ जगवानें कह्युं हतुं जे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान परमेश्वर थाशे ते

प्रमाणे श्रमण नगवान् श्रीमहावीर जेहा तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंमगाम नगरमां रूपनदत्त नामा ब्राह्मण जेनुं कोडाल गोत्र ने तेनी देवानंदानामे ब्राह्मणी नार्या ने तेनुं जालंधर गोत्र ने तेनी कूखनेविषे मध्यरात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते वते देव संबंधि आहार तथा देवनो नव अने देवनुं शरीर त्यागीनें देवानंदानी कूखमां अवत र्या ॥ ॥ हवे श्रीरूषनदेव नगवाने कह्युं हतुं के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कया नवनी ने ते जाणवानें अर्थे श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश नव लखीयें नेयें. आ श्रीजंबुद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करना गमो नयसार नामे चाकर कणवाणो हतो ते एक दिवसें राजाना हुकमथी घणां गाडां अने

तेणे एक दिवस श्रीऋषभदेव भगवाननी देशना सांभळीने दीक्षा लीधी ने वखत बीजा पण भरत राजाना पांचसे पुत्र अने सातसें पोतरा मळी बारसें पुरुषोए दीक्षा लीधी,एक दिवस उष्ण कालें शरीरमां ताप घणो लागो तेथी ते मरीचिनें मनमां नाहावानी इच्छा थई तेवारें संय मनो निर्वाह थोडेलो तेथी दीक्षा पालवाने असमर्थ अने घरें पण जवाय नही एवुं विचारी सा धुनो वेष छांडीनें मनःकल्पनायें नवो त्रिदंडीनो वेश धारण कर्यो लोक पुछे तेवारें एवुं कहेजे साधु त्रणदंडथी रहित छे अने हुं त्रणदंड सहित छुं माटे म्हारे त्रणदंडनुं चिन्ह हो तथा साधु महाराज द्रव्य अने भावथी लोच करे छे हुं लोचकरवाने असमर्थ होवाथी म्हारे मस्तकें शिखा अने मुंडन एटले क्षुर मुंड हो तथा साधु सर्व प्राणातिपातादिकथी विरम्या छे म्हाराथी तेम पळी शकतुं नथी माटे म्हारे स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगंधित छे अने हुं तेम नथी माटे माहारे बावना चंदननुं विलेपन हो तथा साधु मोह रहित छे अने हुं मोहें करी ढांक्यो छुं माटे माहारे एक छत्र ढांकवा सारुं हो तथा साधु पाडुकायें करी रहि त छे हुं तेम नथी माटे म्हारे पगें पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हुं कषायें सहित छुं माटे म्हारे कषाईयां एटले गेरुना रंग्यां वस्त्र हो तथा साधु स्नानें करी रहित छे अने हुं तेम नथी माटे म्हारे स्वल्प पाणीयें स्नान हो एरीतें वेख लई हाथमां जलक मंडल धारण करी प्रभुना समोसरणनी बाहेर बेसे परंतु एवो विरूप वेश छतां पण जे को ई पुछे तेनी आगल खरे खरी हकीगत कहे अने एनी पासें आवनारनें शुद्ध साधुमार्गनो उ पदेश आपी श्रीऋषभदेव भगवान पासें दीक्षा देवरावे एवो थको भगवान साथें विचरे एकदि वस श्रीऋषभदेव स्वामी अयोध्यायें पधाऱ्या तेवारें भरतचक्रवर्तियें प्रभुने एवं वंदना करी प्र




चित्र ३
श्री ऋषभदेव
मरीचि
नाचंत कूदंत
भरत
महाराज
कपिल

ग्रुं जे हे जगवंत! आ समोसरणमां कोई तीर्थंकरनो जीव छे? तेवारे जगवान बोल्या के समोसरणमां तो नथी परंतु समोसरणनी बाहेर ताहारो मरीचि नामें पुत्र जेणें त्रिदंमीनो वेष धारण कर्यो छे ते चोवीशमो श्रीमहावीर नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव ते आ जरत क्षेत्रमां पोतनपुर नगरें त्रिपृष्ट नामे पहेलो वासुदेव थाशे तथा श्रीमहाविदेह क्षेत्रमां मूका नगरीयें प्रियमित्र नामा चक्रवर्त्ती थाशे एवी वात सांजलीनें जरत महाराज हर्षवंत थइ श्रीजगवान पासेंथी मरीचिनें वांदवानी आज्ञा लेइ समोसरणमांथी उठीनें समोसरणनी बाहेर ज्यां मरीचि बेठो छे त्यां आव्या अने त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने कह्युं के हे मरीचि! हुं तने तथा ताहारा त्रिदंमीना जेखने तथा तुं वासुदेव थाइश ते ताहारा वासुदेव पणांने तथा चक्रवर्त्ती पणांनें नमतो नथी परंतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामें तीर्थंकर थाइश माटे तेने वांदुं एम कही जरत महाराज स्वस्थानकें गया पछी ए वात सांजलीने मरीचि घणा आनंदथी बोल्यो के एकतो म्हारो दादो तीर्थंकर तथा म्हारो पिता चक्रवर्त्ती अने हुं पोते पण पहेलो वासुदेव थाइश तथा चक्रवर्त्ती पण थाइश वली छेलो चोवीशमो तीर्थंकर थाइश माटे मने वासुदेवादिक अधिक पदवीउ मलशे तेथी अहो म्हारुं उत्तम कुल एम कहीने पोतानी जुजायें ताली ठोकी महा हर्षवंत थयो थको हाथें ताजोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवीरीतें पोताना कुलनो मद कर्यो तेथी नीचगोत्र कर्म बांध्युं जेमाटे १ जातिमद, २ कुलमद, ३ लाजमद, ४ ऐश्वर्यमद, ५ बलमद, ६ रूपमद, ७ तपमद, अनें ८ श्रुतमद ए आठ मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामें हवे कोइएक दिवस मरीचिना शरीरमां रोग उपन्यो तेवारें तेनो जिनवेष देखीने असंयति पणाने लीधे कोइ पण साधु तेनो वेयावच्च करे

नही ते जोइ मरीचियें मनमां चिंतव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शि
ष्य करुं के जे मने रोगादिक उपने वैयावच्च करवा काम आवे एम निर्धारी राख्युं पछी केट
लाएक दिवसें तेने रोग मट्यो अने शरीरे शाता थइ, एक दिवसें कोइ कपिल नामा राजपुत्र
मरीचि पासें आवी धर्मोपदेश सांभली प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिनें कहेवा लागो के मने
दीक्षा आपो ते सांभली मरीचि बोल्यो के श्रीऋषभदेव स्वामी पासेथी दीक्षा ल्यो तेवारे क
पिल राजपुत्र श्रीऋषभदेवजीना समोवसरणमां गयो तिहां प्रभुनें समोसरणमां बेठा जोइ
फरी मरीचि पासें आवीनें बोल्यो के श्रीऋषभदेवजीतो राज्य लीला जोगवे छे माटे तेमनी
पासें तो धर्म कांइ पण नथी पण ताहारा पासें कांइ धर्म छे के नथी? एवुं वचन सांभली
मरीचियें तेनें यथार्थ कह्युं तो पण बहुल कर्मी पणा माटे तेणे मान्युं नही तेवारें मरीचियें
आदि कषाय, सहित मतिभ्रंशथी, मिथ्यात्वोदयना योगें, शिष्यना लोभथी, स्वधर्म थापवा
विचार्युं जे ए म्हारे योग्य छे एम चिंतवीनें बोल्यो के हे कपिल! कांइक जैनधर्म म्हारा पासें
पण छे माटे तुं सुखें दीक्षा ले, हुं तुजनें दीक्षा आपीश एवा प्रकारें पोताना अर्थे सारुं कपिलने
दीक्षा दीधी ए उत्सूत्र जाषण कर्युं पछी ते कर्मनें आलोयुं पडिकम्युं नही तेना योगथी एक
कोडाकोडी सागरोपम संसारमां परिभ्रमण करवा संबंधि कर्म उपार्जन कर्युं पछी ते मरीचि
अनुक्रमें पोतानुं चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य जोगवी समाधि मरण करीने ॥ ३ ॥ ॥ चोथे
जवें पांचमे ब्रह्म देवलोकें दश सागरोपमनें आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ ४ ॥ ॥ त्यांनु आ
युष्य पूरण करी चवीनें पांचमे जवें कोल्लागसन्निवेशने विषे एंशी लाख पूर्वनें आउखे कौशिक ना
मा विप्र थयो त्यां पण लेठी तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पुरुं करी मरण पामीने ध

णाकाल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी ॥ ५ ॥ छठे भवें थूणापुरीमां पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो तिहां त्रिदंमी तापस थई बहोतेरलाखपूर्व आयु जोगवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमे भवें पहेले सौधर्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ ७॥ ॥ त्यांथी चवीने आठमे भवें चैत्य सन्निवेशें साठ लाख पूर्वनें आउखे अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंमी तापस थई काल करीने ॥ ८ ॥ नवमे भवें बीजे ईशान देवलोकें मध्यम आउखे देवता थयो ॥ ९ ॥ त्यांथी चवी दशमे भवें मंदिराख्य सन्निवेशें छप्पन लाख पूर्वनें आउखे अग्निभूति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंमी पणुं ग्रहण करी मरण पामीनें ॥ १० ॥ अगीयारमे भवें त्रीजे सनत्कुमार नामा देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ ११ ॥ त्यांथी चवी बारमां भवमां श्वेतांबिका नगरीनें विषे चुम्मालीश लाख पूर्वने आवखे भारद्वाज नामा ब्राह्मण थयो अंते त्रिदंमी पणुं ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १२ ॥ तेरमें भवें चोथा माहेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देवता पणें उपन्यो ॥ १३ ॥ त्यांथी चवी घणुं संसार भ्रमण करी वली चौदमां भवें राजगृही नगरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वनें आउखे थावर नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदंमी तापस पणुं अंगीकार करी मरण पामीनें ॥ १४ ॥ पन्नरमें भवें पांचमें ब्रह्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १५॥ त्यांथी चवीने वली पण घणुं संसार भ्रमण करी शोलमां भवने विषे राजगृही नगरीनो चित्रनंदी नामेराजा तेनी प्रियंगु नामा राणी तेनो पुत्र विशाखानंदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानोभाईविशाखाभूति नामे युवराजा हतो तेनी धारणी नामे राणीनी कूखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्र पणे उपन्यो, तेनुं विश्वभूति नाम मावित्रे दीधुं, ते अनुक्रमें यौवन वय पाम्यो त्यारे तेना पितायें

परणाव्यो पछी ते प्रतिदिन पोतानी स्त्रीने सार्थे लई वाडीमां रमवा जाय एक दिवसें चित्रनंदी राजा ना कुंवर विशाखानंदीयें, विश्वभूतिने क्रीडा करतो देखीने मनमां विचार कर्योके जुओ तो खरा जे हुं तो राजानो पुत्र हुं अने आ तो युवराजानो पुत्र छे तो हुं आ माहारा बापनी वाडीमां कोइ दिवसें पण क्रीडा करतो नथी अने आ युवराजानो पुत्र वाडी रोकीनें बेठो छे ए अयुक्त छे माटे हवे हुं पण माहारी स्त्रीयो सहित इहां आवीनें वाडीमां रमण करुं तोज म हारो जमवारो सफल जाणुं नहींकां महारो जन्म व्यर्थ जाणवो एवो निश्चय करी ते कुमारें पोताना पितानें कह्युं के विश्वभूतीनें वाडीमांथी काहाडी मूको तो हुं जइ ते वाडीमां क्रीडा करुं तेवारें पितायें कह्युं के हे पुत्र! हुं कोइ प्रपंच करीनें विश्वभूतीनें काहाडी तने वाडी आ पीश ए प्रमाणे पोताना पुत्रनें संतोष पमाडी पछी विश्वभूतीने वाडीमांथी काहाडवा निमित्ते राजायें कपट करी एक पडहो वजडाव्यो के सिंहनामा राजाने पकडवा सारुं राजा चडे छे, आवो ढंढेरो सांभलीनें विश्वभूती आवी राजानें कहेवा लाग्यो जे हे स्वामी! तमे पोतेज ते विचारा गरीबडा सिंहराजानी उपर शुं प्रयाण करो छो ? तेनें तो हुंज बांधी लावीश एम कही लशकर लइने विश्वभूति, सिंहराजा उपर चडाइ करी गयो, पाछलथी राजायें विश्वभूतीना अं तःपुरनें राजवाडीमांथी काहाडीनें विशाखानंदीनें वाडी सोंपी दीधी, एम करतां केटलाएक दिवसें विश्वभूती पण सिंहराजानें पकडी लावीनें राजाने आवी सोंप्यो तेवारें तेनो लोको घणो यशवाद बोलवा लाग्या, हवे फरी विश्वभूती पूर्वनी पेठें पोतानी स्त्रीयोनें सार्थे लइ रम वासारुं राजवाडीयें गयो तिहां दरवाजा उपर विशाखानंदीना सुभट बेठा हता ते

आववानो हुकम नथी, राजायें वाडी एनें दीधी ले. ते सांजली विश्वनूतियें जाएयुं जे राजायें मल्हारी साथें कपट कीधुंले माटे धिक्कार पडो आ संसारनें एम विचारी विरक्त थयो पली मात्र पोतानुं बल देखाडवा सारुं ते वाडीना दरवाजा पासें एक कोंठनुं काड हतुं तेने एक मूठी मारी तेथी ते वृक्षना बधांये कोंठ जमीन उपर पडीगयां पली विश्वनूती बोल्यो के जेटलो वखत आ कोंठनें जमीन उपर पाडतां लागो तेटलोज वखत शत्रुउनें मारतां लागे परंतु लोको अपवाद बोले तेनी बीकथी ए काम हुं करतो नथी एवुं कहीनें संनूतिविजय मुनिनी पासे दीक्षा लइ मासक्षपणादि घणुंज तप कर्युं, एक दिवसें ते विश्वनूति मुनि विहार करतो करतो मथुरा नगरीमां आव्यो तिहां मासखमणनुं पारणुं करवा सारुं गोचरीनें अर्थें गलीयें फरतां थकां कोइएक नवी प्रसूता गाय हती तेणे ढींक मारी तेथी साधु नूमिकायें पडी गयो ए अवसरमां एना काकानो दीकरो विशाखानंदी तेपण पोतानें सासरें एज गाममां आवेलो ले तेणे गोखमां बेठां थकां विश्वनूतिने जमीन उपर पडतो जोयो तेवारें हास्य पूर्वक बोल्यो के हे विश्वनूति! जे बल पराक्रमथी तें एक मुष्टीयें करी सर्व कोंठ पाडी नाख्यां हतां ते तारुं बल सर्व क्यां जतुं रह्युं? एवुं वचन सांजलीनें मुनियें उंची दृष्टी करी तेने जोयो त्यारें मनमां अहंकार आणीनें बोल्यो के अरे हजी पण हास्य करे ले, तो जो हवे हमणां पण मल्हारुं बल केटलुं ले एम कही पहेली गायने शींगडे पकडी आकाशें जमाडीनें नूमि उपर मूकी दीधीनें विशाखानंदीने कहेवा लागो के अरे तुंतो जाणे ले जे एनुं बल जतुं रह्युं हशे पण मल्हारुं बल क्यांयें गयुं नथी वली कहेवा लागो के जो मल्हारी तपस्यानुं फल होय तो हुं परजवमां घणो बलवंत थयो थको तुजनें मारवा वालो थाउं एवो नीयाणो करी कोडी वर्ष पर्यंत चारित्रपाली

अंते अनशन करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १६ ॥ सत्तरमे जवें महाशुक्र नामा सातमा देवलोकने विषे सत्तर सागरोपमना पूरण आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १७ ॥ ॥ तिहांथी चवीनें अढारमे जवें पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां चार सुपने सुचित्त एक पुत्र थयो तेनुं नाम अचल दीधुं तथा वली एज प्रजापति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसें विवाहनी चिंताने लीधें ते कुमारी नी मातायें तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीनें राजा पासें मोकली अने विचार्युं जे ए म्होटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान राजकुमारनें परणावी देशे, परंतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीनें कामेकरी पीडीत थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीनें परणवानी इछा करतो थको लोको अपवाद न करे एटला माटे सजामां बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे लाइओ! जे लोकनें विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय? तेवारें सजाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो जे तमारा मुखथी जे वचन निकल्युं ते निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जें कन्यारत्न छे ते हुं बीजानें आपीश नही. एनें हुं पोतेंज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीनें पोतेंज परण्यो अने तेनी सायें संसार संबंधि सुख जोगववा लाग्यो एम करतां एक दिवस ते विश्वभूतिनो जीव देवलोकथी चवीनें मृगावतीनी कूखें आवी उपज्यो तेवारें मृगावतीयें सात स्वपनां दीठां पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो तेवारें राजायें म्होटो महोत्सव करीनें ते बालकनुं नाम त्रिपृष्ठ एवुं दीधुं अनुक्रमें ते बालक म्होटो थयो एवा अवसरमां शंखपुर नगरनी पासें तुंगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामां विशाखानंदीनो जीव सिंह पणे आवी [illegible]

हे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनुं शालिनुं खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतुं ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो तेवारें ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाउनी उपर वर्षेवर्षे वारा प्रमाणे हुकम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करतां एक वर्षे वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकम आव्यो ते वारें ते खेत्रनी रखवाल करवा सारुं राजायें पोतें जावा मांड्युं तेने त्रिपृष्ठे वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे भाइ जे गौतमस्वामीना जीव हे अने आ नवमां बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, तिहां बख्तर टोप पहेरी रथमां बेशी अचलनें सारथी करी शस्त्र लइनें जे गुफामां सिंह रहे हे त्यां गयो एटलामां तो रथनो अवाज सांजलीनें सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेनें देखीने त्रिपृष्ठे विचार्युं जे ए सिंहने बेसवा रथ नथी तो महारे पण रथमां बेसी लडवुं नही वली एनी पासें शस्त्र तथा कवच नथी तो महारे पण शस्त्र तथा कवच नही राखवां पढी शस्त्र तथा कवचनें रथमां मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो के अरे ढांढीना खावा वाला वही उनो थइने महारी सामो आवीजा एटलुं कयुं के तरत ते सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी सामो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्ठे ते सिंहना होठ पकडी बे कटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नही, तेवारें त्रिपृष्ठनो सारथी सिंहनें कहेवा ला गयो के हे सिंह! जेम तुं मृगराज हो तेम आ ताहारो मारनार पण नरराज हे माटे तनें कोइ साधारण माणसें मार्यो नथी एवी वात सांजली सिंह मरण पामीनें नरकें गयो पढी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमां कलेवर नाखीनें त्रिपृष्ठ बोलवा

अंते अनशन करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १६ ॥ सत्तरमे नवें महाशुक्र नामा सातमा देवलोकने विषे सत्तर सागरोपमना पूरण आउखे देवता पणे उपन्यो ॥ १७ ॥ ॥ तिहांथी चवीनें अढारमे नवें पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां चार सुपने सुचित एक पुत्र थयो तेनुं नाम अचल दीधुं तथा वली एज प्रजापति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसें विवाहनी चिंताने लीधें ते कुमारी नी मातायें तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीनें राजा पासें मोकली अने विचार्युं जे ए महोटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान राजकुमारनें परणावी देशे, परंतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीनें कामेकरी पीडीत थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीनें परणवानी इछा करतो थको लोको अपवाद न करे एटला माटे सभामां बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे भाइउ! जे लोकनें विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय ? तेवारे सभाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो जे तमारा मुखथी जे वचन निकल्युं ते निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जें कन्यारत्न छे ते हुं बीजानें आपीश नही. एनें हुं पोतेंज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीनें पोतेंज परण्यो अने तेनी साथें संसार संबंधि सुख भोगववा लाग्यो एम करतां एक दिवस ते विश्वभूतिनो जीव देवलोकथी चवीनें मृगावतीनी कूखें आवी उपज्यो तेवारें मृगावतीयें सात सपनां दीठां पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो तेवारें राजायें महोटो महोत्सव करीनें ते बालकनुं नाम त्रिपृष्ट एवुं दीधुं अनुक्रमें ते बालक महोटो थयो एवा अवसरमां शंखपुर नगरनी पासें तुंगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामां विशाखानंदीनो जीव सिंह पणे आवी उपन्यो

हवे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनुं शालिनुं खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतुं ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो तेवारें ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाउंनी उपर वर्षोवर्ष वारा प्रमाणे हुकम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करतां एक वर्षे वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकम आव्यो ते वारें ते खेत्रनी रखवाल करवा सारुं राजायें पोतें जावा मांड्युं तेनें त्रिपृष्ठें वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे भाइ जे गौतमस्वामीना जीव हे अने आ नवमां बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, तिहां बख्तर टोप पहेरी रथमां बेशी अचलनें सारथी करी शस्त्र लइनें जे गुफामां सिंह रहे हे त्यां गयो एटलामां तो रथनो अवाज सांभलीनें सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेनें देखीने त्रिपृष्ठें विचार्युं जे ए सिंहने बेसवा रथ नथी तो महारे पण रथमां बेसी लडवुं नहीं वली एनी पासें शस्त्र तथा कवच नथी तो महारे पण शस्त्र तथा कवच नहीं राखवां पछी शस्त्र तथा कवचनें रथमां मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो के अरे डाढीना खावा वाला हवे उभो थइने महारी सामो आवीजा एटलुं कह्युं के तरत ते सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी साहमो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्ठें ते सिंहना होठ पकडी बे फटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नहीं, तेवारें त्रिपृष्ठनो सारथी सिंहनें कहेवा लाग्यो के हे सिंह ! जेम तुं मृगराज हो तेम आ ताहारो मारनार पण नरराज हे माटे तनें कोइ साधारण माणसें मार्यो नथी एवी वात सांभली सिंह मरण पामीनें नरकें गयो पछी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमां कलेवर नाखीनें त्रिपृष्ठ बोलवा

जागो के आ उपद्रव करनार सिंहने हुं मारी आव्यो छुं माटे हवे महारा प्रतापथी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव सुख समाधिथी चावल खाउ ए वात लोकोना मुखथी सांजलीनें अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने लडवा आव्यो ते त्रिपृष्ठ सायें युद्ध करतां कोइ पण रीतें पोहोची शक्यो नही तेवारें चक्र फेरवीने तेना उपर नाख्युं ते चक्र पण त्रिपृष्ठना हाथमां आवी रेहुं पठी तेज चक्र त्रिपृष्ठें अश्वग्रीव उपर चलाव्युं तेणे जइ अश्वग्रीवनुं मस्तक छेदी लावीनें त्रिपृष्ठ आगल हाजर कर्युं ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द कही बोल्या के आ जरतखेत्रमां ए त्रिपृष्ठ पहेलो वासुदेव थयो पठी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमें त्रण खंड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख जोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातुं हतुं तेवामां राजाने निद्रा आववा लागी तेवारें शय्यापालकनें कयुं के मने निद्रा आवी जाय तेवारें ए नाटक करनाराउने शीख आपी वारी राखजो तो पण ते शय्यापालकें श्रोत्रेंड्रियना रसें करी तेमनें गीत गान करतां वारी राख्या नही एटलामां त्रिपृष्ठ जागृत थइनें बोल्यो के अरे आ नाटकीआनें शा वास्तें रजा आपी नही तेवारें शय्यापालकें कयुं के हे प्रजु ! श्रोत्रेंड्रियना रसें करी हुं रजा आपतां चूकी गयो ते सांजली त्रिपृष्ठनें क्रोध चड्यों पठी सीशुं गरम करी तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमां रेडाव्यो तेथी ते मरण पामीनें नरकें गयो एरीते ते वासुदेवना जवमां घणा महोटां पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य जोगवीनें एंशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीनें ॥ १८ ॥ ॥ उंगणीशमे जवें सातमा नरकने विषे नारकी पणे जइ उपन्यो ॥ १९ ॥ ॥ त्यांथी मरण पामीने वीशमे जवें सिंह थयो ॥२०॥ [illegible] एकवीशमे जवें चोथा नरकने विषे नारकी पणे


ચિત્ર ૪
ત્રિપૃષ્ઠ વાસુદેવ
રાણી
શય્યાપાલક

लागो के आ उपद्रव करनार सिंहने हुं मारी आव्यो छुं माटे हवे महारा प्रतापथी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव सुख समाधिथी चावल खाओ ए वात लोकोना मुखथी सांजलीनें अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने लडवा आव्यो ते त्रिपृष्ट सार्थे युद्ध करतां कोइ पण रीतें पोहोची शक्यो नही तेवारें चक्र फेरवीने तेना उपर नाख्युं ते चक्र पण त्रिपृष्टना हाथमां आवी वेठुं पछी तेज चक्र त्रिपृष्टें अश्वग्रीव उपर चलाव्युं तेणे जइ अश्वग्रीवनुं मस्तक छेदी लावीनें त्रिपृष्ट आगल हाजर कर्युं ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द कही बोल्या के आ जरतखेत्रमां ए त्रिपृष्ट पहेलो वासुदेव थयो पछी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमें त्रण खंड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख जोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातुं हतुं तेवामां राजाने निद्रा आववा लागी तेवारें शय्यापालकनें कह्युं के मने निद्रा आवी जाय तेवारें ए नाटक करनाराओने शीख आपी वारी राखजो तो पण ते शय्यापालकें श्रोत्रेंद्रियना रसें करी तेमनें गीत गान करतां वारी राख्या नही एटलामां त्रिपृष्ट जागृत थइनें बोल्यो के अरे आ नाटकीआनें शा वास्तें रजा आपी नही तेवारें शय्यापालकें कह्युं के हे प्रनु ! श्रोत्रेंद्रियना रसें करी हुं रजा आपतां चूकी गयो ते सांजली त्रिपृष्टनें क्रोध चढ्यों पछी सीशुं गरम करी तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमां रेडाव्यो तेथी ते मरण पामीनें नरकें गयो एरीतें ते वासुदेवना जवमां घणा महोटां पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य जोगवीनें एंशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीनें ॥ १८ ॥ ॥ ओगणीशमे जवें सातमा नरकने विषे नारकी पणे जइ उपन्यो ॥ १९ ॥ ॥ त्यांथी मरण पामीने वीशमे [illegible]

जइ उपन्यो ॥ २१ ॥ त्यांथी मरण पामी घणुं संसार भ्रमण करी बावीशमे भवें रथपुर नगरें प्रियमित्र नामें राजानी विमला नामे राणी तेनी कूखने विषे पुत्र पणे उपन्यो मा वित्रें विमल एवुं नाम दीधुं अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी थयो पितायें तेने राज्य सोप्युं एक दिवस वनमां क्रीडा करवा गयो त्यां पाश मांहेथी हरण छोडाव्यां तिहां दयाना प्रनावे नइक परिणामें करी मनुष्यायु बांध्युं, छेवटे दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्त्तीनी पदवी उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी चवीनें ॥ २२ ॥ त्रेवीशमे नवें पश्चिम महाविदेहमां मूका नगरीनो धनंजय नामे राजा तेनी धारणी नामें राणीनी कूखे आवी उपन्यो मातायें चौद सपनां दीठां पठी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारें मातपितायें महोटा महोत्सव पूर्वक तेनुं प्रियमित्र एवुं नाम दीधुं ते अनुक्रमें ठ खंम साधी चक्रवर्त्तीनी पदवी जोगवी अंते श्रीपोटिलाचार्य पासेथी दीक्षा लइ क्रोड वर्ष पर्यंत चारित्र पालि सर्व चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पूरण करी त्यांथी मरण पामी ॥ २३ ॥ चोवीशमे नवें शुक्र नामा सातमें देवलोकें सत्तर सागरोपमने आयुखे देवता पणे उपन्यो ॥ २४ ॥ त्यांथी चवी पच्चीशमे नवें एहज जरतखेत्रमां छत्रिका नामे नगरीनो जितशत्रु नामे राजा तेनी नद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पच्चीश लाख वर्षने आयुखे नंदन नामे राजपुत्र थयो त्यां चोवीश लाख वर्ष सुधी गृहस्थावासें रहीने पठी पोटिलाचार्य पासेंथी दीक्षा लइ एक लाख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावज्जीव सुधी मास खमणे करी वीशस्थानकनुं तप आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी काल करीनें ॥ २५ ॥ छवीशमे नवें दशमा प्राणात देवलोकने विषे पुष्पोत्तरावतंसक नामना विमानमां वीश सागरोपमनें आ

थले देवता पणे उपन्या ॥ २६ ॥ पछी त्यांथी चवीने मरीचिना जवमां जे कुलनो मद कस्यो हतो ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमा जवने विषे रूषजदत्त ब्राह्मणनी देवानंदा नामे स्त्रीनी कूखे थावी उपन्या छे एरीतें प्रथम तीर्थंकर श्रीरूषजदेव जगवानें जरत चक्रवर्त्तीनी आगल कयुं हतुं जे मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो ॥ २७ ॥ ॥ हवे जग वान् श्रीमहावीर देवानंदानी कूखें अवतस्या ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्नपणे आ व्या त्यां हुं देवलोकथी चवीश एवुं जाणे पण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्म काल छे माटे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पछी हुं देवलोकथी चवीनें देवानंदानी कूखे उ पन्यो हुं एवुं जाणे हवे जे रात्रिमां श्रमणजगवान् श्रीमहावीर स्वामी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखे उपन्या ते रात्रिमां देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्यामां कांइक सूती कांइक जागती अर्थात् थोडीक निद्रामां रही थकी, उदार कल्याणकारी, उपद्रव रहित, धनकारी, मंगलकारि शोजा सहित एवां चौद महोटां स्वपनां देखीनें जागी ॥ ते चौद स्वपनानां नाम कहे छे पहेले स्वपने हाथी दीठो, बीजे वृषन, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पांचमें फूलनी माला, छठे चंद्र, सातमें सूर्य, आठमें ध्वजा, नवमें कुंज कलश, दशमें पद्म सरोवर, अगीआरमें क्षीर समुद्र, बारमें देवविमान, तेरमें रत्नो नो ढगलो राशि, चौदमें निर्धूम अग्नि ए चौद स्वपनां एवा रूपनां कल्याणकारी महामंगलनां करनारां देखीनें जागी थकी हर्ष संतोष पामी, चित्तमां आनंद पामी, महोटा प्रेम सहित मन थयुं, परमहर्ष उपन्यो, हर्षने विषे पसरतुं छे मन जेनुं, उत्कृष्ट सौम्य मन छे जेनुं, जेनां मनमां हर्ष उल्लास थयो छे, मेघनी धारायें करी हणाएं एवुं कंदव पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेनां रोमे रोम [illegible] थइ थकी पूर्वे दीठेला स्वपनांने याद करे




चित्र ५
दासी
देवानंदा
ब्राह्मणी
ऋषभदत्त ब्राह्मण
देवानंदा
दासी

याद करीनें सूवाना पलंग उपरथी उठे उठीनें पादपीठ थकी पण उतर उतरीने नही उता वली, नही धीरी, एवी वे गतिनी वचमां वहेरती थकी ॥५॥ राजहंसीनी गति सरखी चाल ती थकी जिहां रूपजदत्त ब्राह्मण ने त्यां आवती हवी, आवीनें रूपजदत्त ब्राह्मण प्रत्यें जय विजय शब्द करीनें वधावे वधावीनें जद्रासन एटले बाजोट उपर बेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावीने, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तकें अंजली करीनें कहेवा लागी के हे स्वामि! में आज रात्रें शय्यामां कांइक सूतां हस्ति आदिक चौद सुपनां दीठां ॥ ६ ॥ तेनुं शुं फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारां थशे तेवारें रूपज दत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवुं सांजलीनें पोताना हृदयामां घणो खुशी थयो,जेवी पाणी नी धाराथी कदंब पुष्प खुले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई ते सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीनें देवानंदा ब्राह्मणीने कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया! तमे जे सुपनां दीठां ते मं गलकारी छे, तमे जे सुपनां दीठां तेनुं फल एवुं छे के हे देवाणुप्रिया! धननो लाज थाशे, पुत्रनो लाज थाशे, सुखनो लाज थाशे, निश्चे तमारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण, व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण नखुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे. हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारें तेना अंगमां पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीयें ॥ सहजं लक्षणं इति वचनात्॥ तिहां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होय अने बलदेव तथा वासुदेवनें एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामा न्य जाग्यवंत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय तेनां नाम कहेछे १ छत्र, २ वींजणो, ३ धनुष,

चित्र ५





याद करीनें सूवाना पलंग उपरथी उठे उठीनें पादपीठ थकी पण उतरे उतरीने नही उता वली, नही धीरी, एवी ये गतिनी वचमां वहेरती थकी ॥५॥ राजहंसीनी गति सरखी चाल ती थकी जिहां रूषभदत्त ब्राह्मण ने त्यां आवती हवी, आवीनें रूषभदत्त ब्राह्मण प्रत्यें जय विजय शब्द करीनें वधावे वधावीनें भद्रासन एटले बाजोट उपर बेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावाने, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तकें अंजली करीनें कहेवा लागी के हे स्वामि! में आज रात्रें शय्यामां कांइक सूतां हस्ति आदिक चौद सुपनां दीठां ॥ ६ ॥ तेनुं शुं फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारां थशे तेवारें रूषभ दत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवुं सांभलीनें पोताना हृदयमां घणो खुशी थयो, जेवां पाणी नी धाराथी कदंब पुष्प खुले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई ते सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीनें देवानंदा ब्राह्मणीने कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया! तमे जे सुपनां दीठां ते मं गलकारी छे, तमे जे सुपनां दीठां तेनुं फल एवुं छे के हे देवाणुप्रिया! धननो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, निश्चे तमारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण, व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण भलुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे. हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारें तेना अंगमां पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीयें ॥ सहजं लक्षणं इति वचनात्॥ तिहां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होय अने बलदेव तथा वासुदेवनें एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामा न्य भाग्यवंत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय तेनां नाम कहेछे १ छत्र, २ वींजणो, ३ धनुष,

४ रथ, ५ वज्र ६ काचबो, ७ अंकुश, ८ वावडी. ९ स्वस्तिक १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रासाद, २० मत्स्य, २१ यव, २२ यूप यज्ञनुंअंग, २३ थांजलो, २४ कमंडल, २५ पर्वत, २६ चामर २७ काच, २८ बलद, २९ पताका ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर ए बत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यनां योगवाला पुरुषना हाथ पगना तलीयानें विषे होय ए आदि देइनें एक हजारने आठ लक्षण पण एवाज उत्तम प्रकारनां जाणी लेवां तथा वली प्रकारांतरें बत्रीश लक्षण कहे छे. जेना नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालु अने आंख्योना खूणा ए सात वानां रक्त होय रातां होय ते पुरुष भाग्यवान् जाणवो ते सप्तांग लक्ष्मी भोगवे तथा जेनी काख, गती, कोट एटले गलानी हडवटी तथा गलानो मण्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वानां उंचां होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारें उन्नति पामे. तथा दांत, चामडी, केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेनां पातलां होय सूक्ष्म होय तो ते पुरुष घणो धनवान् थाय तथा नेत्र, स्तननां अंतर, नाक, गलानो मण्यो अने भुजाउ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनुं आयुष्य महोटुं होय घणुं धन पामे अने पराक्रमी होय तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेनां महोटां होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा वली ग्रीवा, जंघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेनां लघु होय टुंका होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा बोलवानो स्वर, मूटी एटले नाभी अने सत्व ए त्रण जेना गंभीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो धणी थाय अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमां जेवां लक्षणहोय ते पुरुषमां तेवो आचार पण होय, जेवुं रूप होय तेवुं धन पण होय, जेवो स्वभाव होय तेवो गुण पण होय ए प्रकारांतरें बत्रीश लक्षण कह्यां वेयाडयां तथा बीजां पण केटलाएक लक्षण कहे छे. पद्म, वज्र अंकुश, छत्र, शंख

अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमां देखाय ते पुरुष लक्ष्मीपति थाय तथा जेना चीकणा ओपेला वण
जेवा नख होय ते पुरुष सुखी होय तथा जेना चलकता उज्वल अनारवत् स्नेह निबिड एवा बत्रीश
दांत पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकत्रीश दांत होय ते जोगी थाय तथा त्रीश दांत
वालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पण उंगा दांत जेना होय ते सामान्य पुरुष गणाय
जे पुरुष अत्यंत ठींगणो तथा अत्यंत मीथो तथा अत्यंत जाडो होय तेमज जे अत्यंत दुर्बल,
अत्यंत कालो अथवा अत्यंत गोर वर्ण वालो होय ए व ने विषे सत्व पणुं होय, जेना मस्त
कने जमणे नागे सवलो नमरो होय तो शुन जाणवो अने अवलो नमरो होय तो अशुन जाणवो
॥ ॥ तथा जेना हाथने विषे एक पण रेखा न होय अथवा घणी रेखाउ होय ते पुरुषनुं
आयुष्य अल्प होय तथा जेने देवपूजानी आंगुलीनां छेहला वेढाथी अधिक कांइक उंची टचली
आंगुली होय ते पुरुष धनवान् होय तथा तेनी मातानो पक्ष घणो होय तथा जेना मणीबंधथी
बापनी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुखानी रेखा जेनी संपूर्ण होय ते पुरुषनुं
गोत्र, धन तथा आयुखुं संपूर्ण होय अथवा आयुषनी रेखा जेटली आंगुली अतिक्रमे तेटली
पचवीशी आयुखाना वरसनी जाणवी तथा जेना अंगुठाने मध्यनागें यव होय ते पुरुष विद्या
वंत यशस्वी होय अने अजवाला पक्षमां तेनो जन्म होय तथा जेनां नेत्र रक्त होय तेनुं पासुं
स्त्री मूके नही तथा जेना नेत्र पीलां होय तेने धन मूके नही तथा जेनी भुजा दीर्घ होय
तेने इश्वर पणुं होय तथा जेनुं दृढ शरीर होय तेने सुख घणुं होय तथा जेना हाथ पगने विषे
कमल, छत्र, अंकुश, शंख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुष महोटा लक्षणवालो होय तथा जेना
नख राता होय तेने धननुं सुख घणुं होय तथा जेना नख उजला होय ते निक्षुक होय तथा

जेनां नख लुखा होय ते अनाचारी होय ॥ ॥ वली शरीर मांहे मुख प्रधान छे ते मुखमां वली नासिका छे ते प्रधान छे वली नासिकामां नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेना जेवां नेत्र होय तेनो तेवो शील एटले आचार पण होय तथा जेवी नासिका तेहवुं आर्य पणुं होय, जेवुं रूप होय तेवुं वित्त होय, जेवुं शीयल होय तेवा गुण होय उक्तंच ॥ यथानेत्रं तथा शीलं, यथानासा त थार्जवं ॥ यथारूपं तथा वित्तं, यथाशीलं तथा गुणाः ॥ पाठांतरें ॥ सर्वसत्त्वे प्रतिष्ठितं ॥ १ ॥ इत्यादिक लक्षण जाणी लेवां ए लक्षण कह्यां ॥ ॥ हवे व्यंजननुं स्वरूप कहे छे. जे जन्म्या पछी अंगमां प्रगट थाय तेने व्यंजन कहीयें जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यंजन जाणवां ते पुरुषनें जमणी बाजुयें होय तो सारां जाणवां अने स्त्रीनें माबी बाजुयें होय तो सारां जाणवां ॥ ॥ हवे गुणनुं स्वरूप कहे छे. जेमां सौभाग्य पणुं, उदार पणुं अने धैर्यपणुं इत्यादिक होय ते सर्व गुण जाणवा ॥ ॥ हवे मानोन्माननुं स्वरूप कहे छे. पुरुष प्रमाणे पाणीथी भरेली कुंभीमां पच्चीश वर्षनां पुरुषनें बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण भार पाणी कुंभीमांथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो त्राजवामां तोलतां ते पुरुषनो अर्द्ध भार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो ॥ ॥ इहां तोलनी वार्तांना प्रसंगमां भारनुं प्रमाण कही देखाडे छे प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय, त्रण यवे एक चिणोठी थाय, त्रण चिणोठीये एक वाल थाय तेवा शोल वाले एक गदीयाणुं थाय तेवा दश गदीयाणे एक पल थाय तेवा दोढसो पलनो एक मण थाय तेवा दशमणनी एक घडी थाय तेवी दश घडीयें एक भार प्रमाण थाय एवा अर्द्धभारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत मान सहित जाणवो एरीते पोणा भार मण उन्मानना थाय ते

॥ वली जे पुरुषनुं पोताने आंगले नगतां पोतानुं शरीर एकसोनें आठ आंगलनुं होय ते उ त्तम पुरुष जाणवो तेमां चार आंगलनुं मुख होय तेने नवे गुणीये तेवारे १०८ थाय ते मानो पेत पुरुष जाणवो तथा जेनुं नवुं अंगुलनुं शरीर होय ते मध्यम सम पुरुष जाणवो, जेनुं चो राशी आंगुलनुं शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थंकरनुं तो एकसो वीश आंगुल नुं शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे चार आंगुलनी उष्णीष शिखाने गमे होय तेमाटे एवो सर्व अंगे सुंदर, चंद्रमा समान सौम्य आकार वालो, जेनुं मनोहर प्रीतिकारी दर्शन छे एवा सुरूपवंत देवकुमारसमान पुत्रने तुं जणीश ॥९॥ ॥ ते पण बालक बाल्यावस्था रहित थाशे तेवारे ते पोताना विज्ञान नावथीज थाशे ते केवो थाशे ते कहे छे एटले ते पुत्र युवान अव स्था पामे थके ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद तथा पांचमो इतिहास पुराण शास्त्र, छठो नाम कोश निघंटनाम माला ए सर्व छ ए शास्त्र ने अंग उपांग सहित तेना तात्प र्यनो जाणवा वालो थाशे, चार वेदनो जणाववा वालो थशे, जे चूकशे तेने बतावबा वालो चूक देखाडवा वालो थशे, जूठुं बोलशे तेने वर्जवा वालो थशे, शुद्धनो धारण करनारो थशे पारगामी थशे, छ अंगनो जाण थाशे, साठ अर्थ छे जिहां एवा साठ तंत्र शास्त्र तथा कपि लशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो जाणनार थशे, अक्षर शिक्षामां निपुण थशे, क्रिया शास्त्रमां निपुण, व्याकरणनो जाणनार, छंद जोडवामां दक्ष, टीकानो जाण नार, ज्योतिष शास्त्रमां प्रवीण एम बीजा पण ब्राह्मणोनां शास्त्रोमां परिव्राजकोनां शास्त्रोमां अत्यंत निपुण माह्यो एवो ताहारो पुत्र थाशे ॥१०॥ तेमाटे तमे रूडा स्वपनां दीठां, जावत् आरोग्य कारी स्वपनां तमनें आव्यां एवुं वारंवार केहेतो हवो अने पोते पण अनुमोदना

करतो हवो ॥ ११ ॥ हवे देवानंदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणनां मुखथी एवा अर्थ सांभलीनें, तेने मनमां धारी राखीनें, हर्ष संतोषयुक्त हृदय वाली यइ थकी हाथ जोडी, दश नख भेला करी मस्तकें चडावी कहेती हवी ॥ १२ ॥ जे ए वात जेम तमे कही तेमज छे, हे देवाणुप्रिय ! ए सत्यज छे खोटी नथी, हे देवाणुप्रिय ! जे तमे कहो छो ते सर्व संदेह रहित छे एवुं कहीने ते सपनां रूडा प्रकारें अंगीकार करीनें ऋषभदत्त ब्राह्मणनी साथे मनोहर मनुष्य संबंधि सुख भोगवती थकी विचरे छे ॥ १३ ॥ ते कालनें विषे शक्रेंद्र देवताउनो राजा जेना हाथमां दैत्योने विदारण करनारुं वज्र छे जेणे पूर्वना भवमां श्रावकनी पांचमी प्रतिमा सो वार वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवुं बीजुं नाम ते पूर्वना कार्त्तिकशेठना भवनी अपेक्षायी छे ते कार्त्तिक शेठनी कथा कहीयें छैयें. पृथ्वीभूषण नामे नगरने विषे प्रजापाल नामे राजा हतो ते नगरमां राजानो घणो मानितो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी, परम श्रावक एवो कार्त्तिक नामा शेठ रहेतो हतो तेणे श्रावकनी अगीआर प्रतिमा माहेली पांचमी प्रतिमा सोवार वही तेथी तेनुं शतक्रतु एवुं नाम लोकोमां प्रसिद्ध थयुं एम करतां एक समये गैरिक नामा तापस महिने महिने पारणुं करे छे ते परिव्राजकें नगरनी बाहेर आवी उतारो कर्यो तेने राजा आदिक सर्व लोक वांदवा गया पण एक कार्त्तिकशेठ शुद्ध समकेति छे माटे वांदवा गयो नही तेथी तेना ऊपर तापस क्रोध करवा लागो एवामां ते तापसने राजायें पोतानें घेर जमवानें नोतरुं दीधुं तेवारें तापसें मनमां विचार्युं जे बीजातो सर्व लोक मने वांदवा आव्या पण एक कार्त्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने पगे लाग्यो नथी माटे हवे तेने नमावुं एम चिंतवी राजाने कहेवा लाग्यो जे हे राजन् ! कार्त्तिक शेठ पोतानी पीठ ऊपर खीरनी थाली राखीनें भोजन करावे तो हुं तमारे घेर जमवा आवुं




चित्र ६
राजा
गैरिक तापस
कार्तिक शेठ
राजसभा.

ए वात राजायें कबुल करी तापसने पारणुं करवानुं कह्युंने पछी राजा कार्त्तिकशेठ पासे आ वीनें कहेवा लाग्यो जे महारो गुरु गेरिकनामे तापस महारे घेर जमवा आवशे तेंनें तमे पीरसवा आवजो ते सांजली शेठ बोल्यो के हुं सम्यक्त्व धारी छुं माटे महारे ए वात योग्य नथी पण तमारी वस्तिमां रहेवुं माटे शास्त्रमां "रायाभिओगेणं" ए आगार छे ते आगारें करी ताहारी आज्ञाथी जमाडीश परंतु महारा जक्तिजावें करी जमाडीश नही पछी तापस जमवा आव्यो तेवारें शेठें खीर पीरसी, पण तापस जम्यो नही अने कहेवा लाग्यो जे शेठ वांसो मांडे तो पात्र मूकी जोजन करुं पछी राजाना कहेवाथी शेठें आडो थइ वांसो मांड्यो शेठना हाथनी अंगुलीमां वींटी पेहेरी हती तेमां जिनप्रतिमा हति तेने नमस्कार कर्यो हवे तापस शेठनी पीठ उपर उनो उनो खीरनुं पात्र मूकी जोजन करतो जाय छे अने आंगुलीयें करी शेठनुं नाक पण घसतो जाय छे ने शेठनें चेष्टामां कहेतो जाय छे के जो मुजने पगें लागवा न आव्यो तो हुं आ ताहारुं नाक कापुं छुं अने हमणा वारंवार तुजने महारा आगल नमावुं छुं एम चेष्टा करतो तापस पारणुं करीने पोताने स्थानकें गयो अने पात्रथी गरम थाल शेठनी चामडीमां मली गयो ते घणे कष्टें राजायें छोडाव्यो ए रुत जोइ शेठें विचार्युं के जो में पहेलांज दीक्षा लीधी हत तो आज एवी हेलना थात नही एवुं चिंतवी वैराग्य पामीनें शेठ एक हजारनें आठ वणिक पुत्रोनी सार्थें श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासेथी दीक्षा लइ द्वादशांगी जणी, बार वर्षे चारित्र पाली सौधर्मेंद्र थया अने गेरिक तापस पण अज्ञान तप करी मरण पामीनें इंद्रनुं वाहन ऐरावत नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनुं रूप करी इंद्रनी पासे आव्यो जेवारें इंद्र तेना उपर चडवा लाग्यो तेवारें ऐरावते देखीने अवधिज्ञाने करी जाण्युं

के अरे एतो कार्त्तिक शेठ ठे एवुं जाणी नासवा मांड्यो पण इंड तेने पकडीने उपर चड्यो तेवारें शक्रेंड्रने वीवरावना सारुं हाथीयें वे रूप कर्यां ते देखी इंडे पण वे रूप कर्यां वली हाथीयें चार रूप कर्यां त्यारें इंडें पण चार रूप कर्यां पठी इंडें अवधिज्ञानें पूर्वनो नव जोइ हाथीनें तर्जना करी चलाव्या अने कह्युं के अरे गैरिक हवे तुं क्यां बूटी जाइश तुं पूर्वनो नव जाणतो नथी? जे महारी पीठ उपर थाल राखी जम्यो हतो? तो हमणा तुं महारुं वाहन थयो ठो माटे जे बांध्या कर्म ते नोगव्या विना बूटको नथी एवुं सांजली, अपराध खमावी मूलगुं रूप धारण करीने हाथी शांत थयो ए इंड्रमहाराजना पूर्वला नव संबंधि कार्त्तिक शेठनी कथा कही॥ ॥ वली ते शक्रेंड्रनी सजावें तो वे आंख्यो ठे परंतु पांचशे देव ते इंड्रना काम करवा वाला ठे ते पांचसो देवोनी हजार आंख्यो एना काममां आवे माटे सहस्राक्ष एवुं नाम ठे तथा महामेघ जेने वशमां ठे माटे मघवा एवुं नाम ठे तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे पाकशासन एवुं नाम ठे एवो शक्रेंड दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी, ऐरावत जेनुं वाहन ठे, सुरनो इंड, बत्रीश लाख विमाननो मालेक, रजरहित स्वच्छ निर्मल एवा वस्त्रनो धारण करनारो, लंबायमान माला मुकुटमां नवा सुवर्णना कुंमल तेणें करी घसीजता एवा गाल ठे जेना, वली महोटी ऋद्धि, महोटी कांति, महोटुं बल, महोटो जश, महोटुं माहात्म्य, महोटुं सुख, लांबी पुष्पोनी माला धारण कर्याथी देदीप्यमान ठे शरीर जेनुं एवो इंड ते सौधर्म देवलोकमां, सौधर्मावतंसक विमानमां, सौधर्म नामे सजाने विषे, शक्र नामा सिंहासन उपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख सामानिक देवो, तेत्रीश त्रायत्रिंसक गुरु स्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाल देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोलहजार

देवीना परिवार सहित, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकना सामी, प्रत्येके एकेकी दिशा मां चोराशी चोराशी हजार करतां चार दिशामां मली त्रणलाखनें बत्रीश हजार आतम रक्षा कारी देवो तथा बीजा पण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाला एवा देव तथा देवीउं तेमनी उपर रक्षाकारी पणुं, अग्रेसर पणुं, नायक पणुं, पोषक पणुं, सर्वमां महोटाइपणुं, सर्वने पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणुं करतो थको, पोतें पालतो थको तथा महोटा स्वरसहित नाटक, गीत, वाजित्र वीणा, करताल अने बीजा पण घणा वाजित्र जेवा के मृदंग पडह प्रमुख वाजाउंना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव संबंधि जोग जोगवतो थको विचरे ले ॥ १४ ॥ ॥ एवा समयने विषे आ प्रत्यक्ष जंबुद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो महोटो अ विधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे ले ते कालनें विषे ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्रीम हावीर स्वामीने ऋषजदत्तनामा ब्राह्मण कोमालगोत्रनो धणी तेनी देवानंदानामें जार्या जालंधर गोत्रनी तेनी कूखनें विषे गर्ज पणे उपन्या देखीनें मनमां घणो आनंद पाम्यो,हृदयमां घणो हर्ष पसर्यो, मेघ धारायें हणाणुं एवुं कदंब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे रोमांच विकस्वर थयां, प्रधान क मलनी पेरे नयन अने वदन प्रफुल्लित थयां, जगवंतनुं अवतरवुं देखीनें तेना दर्शनथी उत्पन्न थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकंपें करी चलायमान थया ले प्रधान कडां, कंकण, बेरखा बाजुबंध, मुकुट, कुंमल, हार अने महोटां घरेणां जुमखां प्रमुख जेनां एवो इंद्र ते तत्काल सिंहासनथी उठी उनो थइनें चलकतो मणिरत्ननो बाजोट ते उपरथी उतरीनें जला वैडुर्यरत्न मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अंजनरत्न, तेणेकरीनें निपुण कारीगरे घडेली देदीप्यमान मणिरत्ने ज डेली एवी पावडी (चांखडी) पगथकी उतारी पछी अखंड वस्त्रनो एगसाडी उत्तरासंग क

रीनें बे हाथ जोडीने तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आठ पगलां जइ पोताना विमानमांहे बेठो थको मावो ढींचण उंचो राखी अने जमणो ढींचण भूमिकाने विषे थापे थापीनें लगारेक नमीनें त्रण वार मस्तक धरतीयें लगाडे लगाडीने वली चोथीवार लगारेक नमीने थोडो उंचो थइने कडां, कंकण, बेरखा, बाजुबंध, फुंमणां तेणे करी सहित थंभाय ली एवी भुजाउने संहरीने वालीने दशनख भेला करी, बे हाथ जोडी मस्तकें अंजली करीनें शक्रस्तवनो पाठ कहेतो हवो ॥ १५ ॥ ॥ तेनो अर्थ आ प्रमाणे छेः— नमस्कारहोजो श्री अरिहंत भगवंत प्रत्यें, आदिनां करवा वाला, चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, श्री संघने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेले बोध पाम्या, पुरुषोमांहे उत्तम, पुरुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां प्रधान पुंमरीक कमल समान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तिनें देखी बीजा हस्ति नाशि जाय तेम श्रीतीर्थंकर भगवानने देखी परवादी रूप हाथी उ नाशि जाय एवा भगवान, लोक मांहे उत्तम, लोकना नाथ, लोकना हितकरनार, लोकमां दीपक समान, लोकनेविषे उद्योत करनार, अभयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाला, मोक्षमार्गना दातार, कर्मथी बीक पामनारा जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जीवित व्यना दातार, बोधबीज जे सम्यक्त्व तेना दातार, सर्व मरणना मटाववा वाला, धर्मना दातार, धर्म उपदेश देवा वाला, धर्मना नायक, धर्ममां सारथी समान जेम सारथी रथने शुद्धमार्गमां लइ जाय तेम भगवान धर्ममार्गथी भ्रष्ट थयेला लोकोने धर्म मार्गमां लइ जाय एना उपर मेघकुमारनुं दृष्टांत कहे छे ॥ तत्रश्यादौ ॥ श्लोकः॥ पुत्रः श्रेणिकधारिण्योः,श्रुत्वा वीरजिनोर्गिरः ॥ प्रबुद्धोष्टौ प्रियास्त्यक्त्वा, मेघोदीक्षामुपाददे ॥ १ ॥ व्याख्याः—राजगृही नगरीने विषे श्रेणिकराजानी धारिणी

चित्र ७



नामे राणीनी कूखें मेघकुमार, पुत्रपणे उपन्यो, ते वखत गर्भना प्रभावें करी राणीने एवो दोहलो उपन्यो के वर्षाकालमां आपणें राजा, तथा राणी, बेहु जण हाथी उपर बेशीने वनमां जइ क्रीडा करीयें? ते अजयकुमारें पूर्व भव संगति देवतानुं आराधन करीने दोहलो संपूर्ण कर्यो, पछी नव मासें पुत्रजन्म थयो, तेनो जन्ममहोत्सव करी, स्वजन कुटुंबने जमाडी मेघकुमार नाम पाडयुं, अनुक्रमें यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें पितायें आठ कन्या परणावी, तेमनी साथें विषयसुख जोगवतो विचरे ले, एहवा समयमां राजगृही नगरीयें श्रीमहावीर समोसर्या, श्रेणिकादिक सर्वलोक वांदवा गया, तेमनी साथें मेघकुमार पण गया, त्यां जगवंतनी देशना सांजली प्रतिबोध पामी, आठ कन्या त्यागी, माता पितानी आज्ञा लेइ दीक्षा लीधी. पछी जगवाने पण ग्रहण, आसेवना, साधुनो आचार शीखववा निमित्तें स्थविरोने जलाव्यो. रात्रियें संथारवानी वेलायें अनुक्रमें सर्व साधुने छेडे मेघकुमार ऋषिनो संथारो आव्यो, तिहां साधु, मात्रुं करवाने जते, तेवारें मेघकुमारने वारंवार पगनी ठोकर लागे, तेथी एक क्षण वार पण निद्रा न आवी, भूखथी जराइ गयो आखी रात जाग्यो अने विचार कर्यो जे किहां महारी सुखशय्या, अने किहां आ भूमिने विषे लोटवुं, अने वली एक रात्रिमां केटलो उपसर्ग थयो, तो ए कदर्थना हुं केटलाक काल सुधी सहन करुं, माटे ए दीक्षा महाराथी तो पले नही, तो हवे प्रजात समयें जगवंतने पूछी हुं महारे घेर जइश? हजी कांइ वगडयुं नथी एम विचारी प्रजातें उठ्यो, मुहपत्ती लइ, जगवंत पासें आव्यो, तेवारें जगवंत पण मीठा वचने बोल्या के हे मेघ ऋषि! आज रात्रिमां तमाराथी साधुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमां मातुं ध्यान ध्यायुं जे हुं प्रजातमां

घेरजाइश एवात सत्य ने? मेघकुमार बोल्यो हा महाराज! सत्य ठे प्रनु बोल्या हे मेघकुमार ! ए तमने योग्य नथी जे जणी नरक तिर्यंचनां डुःखो तो जीवें अनंतिवार दीठा ठे तेनी आगल आ डुःख, कोण लेखामां गणे? एवो कोण मूर्ख ठे जे चक्रवर्त्तीनी ऋद्धि मूकीने दासपणुं वांठे? माटे मरवुं सारुं ठे पण चारित्र नंग करवो सारो नथी ए चारित्रनुं ज्ञान सहित कष्ट ठे, ते आगल घणां फल देनारुं थाशे तथा जोके तें पूर्व नवें पण धर्मनें अर्थे घणां अकाम कष्ट नोगव्यां ठे, ते पण महाफलादायक थयां ते ताहारा पूर्व नव सांजल. आ नवथी त्रीजा नवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासें ठ दंतोशल सहित श्वेत वर्णे एक हजार हाथणीनो नायक एवो सुमेरुप्रननामें तुं हस्ती हतो, तिहां एकदा दावानल लागो देखी नय पामीने त्यांथी नाठो तृषायें पीड्यो थको एक सरोवरमां कादव घणो हतो अने पाणी स्वल्प हतुं तेमां हस्तीना मार्गने अजाणतो पाणी पीवाने पेठो, त्यां कर्दममांहे खूतो, पाठो नीकली शक्यो नही एटलामां एक पूर्व नवनो वैरी बीजो हाथी त्यां आव्यो तेणे दंतोशलने प्रहारें करीने तुजने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना नोगवी, एकशो वीश वर्षनुं आयु पूर्ण करी मरण पामी विंध्याचल पर्वतनी नूमिकायें तुं चार दंतोशलवालो, रातवर्णे, सातशें हाथणीनो नायक, मेरुप्रन नामें हस्ती थयो, तिहां पण एक समयें दावानल लागो देखी जातिस्मरण उपन्युं, तेथी पूर्वनव दीठो, पठी दावानलनो नय टालवासारुं चार गाउ लगें नूमिकानुं मांमलुं बनावी शुद्ध कीधुं; तेमां तृणवेलि मात्र राखतो हतो नही उगतां पदेलांज उन्मूली नाखतो हतो, एम घणां वर्ष वीत्या पठी, एकदा वली महोटो जंगी दावानल लागो, तेवारें सर्व वनचर जीव, आवी मांमलामां रह्यां, तुं पण तत्काल आवी मांमलामां रह्यो, मांमलामां तिल

जेटलो पण मार्ग रह्यो नही, एवुं संकीर्ण थयुं, एटलामां तें खरज खणवाने पग ऊंचो की धो, ते पगने स्थानकें निराली भूमिका देखी एक शशलो ताहारा पग नीचेनी भूमियें आवी बेठो पछी पग नीचो मूकतां नीचें शशलो दीठो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर रा ख्यो, अढी दिवसें दावानल उपशम्यो, तेवारें शशला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानकें गयां, ताहारो पग जोडीयें भराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी पेरें तुं हेठो पड्यो. त्रण दिवस सुधी भुखतृषायें पीडातो सो वर्षनुं आयु भोगवी दया सहित मरण पामी, हे मेघकुमार ! तुं राजकुलें उपन्यो छो. अकालें मेघवृष्टिनो दोहलो तारी माताने थयो माटे ताहरुं नाम मेघकुमार स्थाप्युं जे वखतें तुजने हाथियोयें मार्यो, ते वखतें तो तिर्यचनुं करेलुं दुःख हतुं, तो ते दुःख आगल आ साधुना संघट्टथी तुं शुं दुःख धरे छे ? ते साधु तो जगद्वंद्य छे, एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जीवने लागे माटे साधुना पग लागवाथी दुःख न आणवुं. एवां भगवानना वचन सांभली जातिस्मरण उपन्युं, तेणें करी पूर्वला भव दीठा, पछी प्रभुने पगे लागी चारित्रने विषे स्थिर थइने एवो अभिग्रह लीधो के आज पछी महारे बे नेत्रनो जाववो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवुं संकट पडे तो पण न क रवी एवो जावज्जीव सुधीनो अभिग्रह करी निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली अंते एक मा सनी संलेषणा करी विजयनामा अनुत्तर विमानमां देवपणे उपन्यो, तिहांथी चवी महा विदेहमां उपजी मोक्ष पामशे, इति मेघकुमार कथा ॥ माटे भगवंतने धर्मसारथि सरखा कहियें ॥ ए प्रथम व्याख्यान समाप्त थयुं ॥ १ ॥ ॥ अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारंभः ॥ वली भगवानने नमस्कार करे छे. धर्ममां चार अंत कर्या एवा चक्रवर्त्ति समान भगवान छे

जेम चक्रवर्त्ति त्रण बाजु समुद्र अने एक बाजु चुल्लहेमवंत पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम नग दान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररूपे माटे धर्म चक्रवर्त्ति कहीयें, संसार समुद्रमां बूडता प्राणीउने द्वीप समान शरणागत वत्सल, क्यांय हणाय नही एवा ज्ञान अने दर्शनना धरवा वाला, जेमने छद्मस्थ पणुं रह्युं नथी, पोते राग द्वेषनें जीत्या, बीजाने जीतावे, पोतें संसार समुद्रथकी तर्या, बीजाने संसार समुद्रथी तारे, पोतें तत्त्वने जाण्या छे, बीजाने तत्त्वनो बोध करे, पोतें कर्म रहित थया, बीजानें कर्मथी मूकावे, सर्वज्ञ, सर्वदर्शि, शिव एटले निरूपद्रव, अचल, रोग रहित, जेनो अंतनही अने क्षय पण नही, बाधा रहित, ज्यांथी फरी पाछुं संसारमां आववुं नथी एवुं जे सिद्धिगति नामक स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरनें मह्यारो नमस्कार होजो, जीत्याछे जय जेमणे एवा जगवंतनें नमस्कार हो, श्रमण जगवंत श्रीमहावीर छेल्ला तीर्थंकर, आदिना करनार पहेला तीर्थंकर श्रीऋषजदेव स्वामीयें देखाड्या यावत् मोक्षमां जावा वाला तेमने हुं वांडुं छुं जगवान तो त्यां गर्नमां छे अने हुं देवलोकमां छुं माटे त्यां रह्यां थकां आपे मने देखवो एवुं कहीने जगवानने नमस्कार करे करीने सिंहासन उपर पूर्वदिशानी साहामुं मुख करीनें बेगे तेवारें शक्रेंद्रनां मनमां एवो विचार उत्पन थयो ॥१६॥

॥ एम सर्वं तीर्थंकरोना एक चवन कल्याणक, बीजुं जन्मकल्याणक त्रीजुं दीक्षा कल्याणक, चोथुं ज्ञानकल्याणक. अने पांचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पांच कल्याणकें सदा काले शक्रस्तव कहे एटले शक्रजे इंद्र ते स्तव एटले थुणे माटे तेने शक्रस्तव कहीयें ते इंद्र महाराज शक्रस्तव कहीनें रोमांचित थाय, आनंद पामे, वली ए पांच कल्याणकें चोसठें इंद्र जेला थइने अठाइ महोत्सव प्रमुख करीने प्रत्येक कल्याणकनो महिमा करे ए मर्यादा छे ॥

ते कहे छे. इंद्र महाराजें विचार्युं जे श्रीअरिहंत भगवंत अथवा चक्रवर्ति अथवा वासुदेव अथवा बलदेव ए श्रेशठ उत्तम पुरुष छे,ते अंतकुल जे क्षुद्रजाति तेने विषे तथा प्रांतकुल ते अधमाचारीना कुलने विषे तथा अल्पपरिवार वाला तुच्छ कुलने विषे तथा निर्धन ते दरिद्रीना कुलने विषे तथा अदातारते कृपणनां कुलने विषे तथा चारण प्रमुख भीखारीना कुलने विषे तथा ब्राह्मणना कुलने विषे आव्या,आवे अने आवशे निश्चयथी ए वात पूर्वेथइ नथी,वर्तमान कालें थाती नथी अने आगामिक कालें थाशे पण नही एटले त्रेशठ शिलाका पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत कुलादिकने विषे आव्या पण नथी, आवता पण नथी अने आवशे पण नही ॥ १७ ॥ ॥ ए पूर्वोक्त अरिहंतादिक त्रेशठ शिलाका पुरुष तो, निश्चयथकी श्रीऋषभदेवजीयें आरक्षक पणे जेने राख्या तेने उग्रकुल कहीयें ते कुलने विषे तथा जेने गुरुस्थानीया पणे राख्या तेने भोगकुल कहीयें तेने विषे तथा जेने मित्रस्थानें राख्या तेने राजन्य कुल कहीयें तेने विषे तथा प्रजा लोकपणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीयें तेने विषे तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलीयानो जे परिवार तेने हरिवंश कुल कहीयें एवा बीजा पण तथा प्रकारनां विशुद्ध जातिनां उत्तम कुलने विषे आव्या छे, आवें छे अने आवशे, ए मर्यादा छे ॥ १८ ॥ ॥ तथापि ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमां आवी उपन्या ए लोकने विषे अछेराभूत वात थइ एटले अनंती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी ज्यारें व्यतिक्रमे त्यारें कोइक कालें एवा अछेरा थाय छे तेम आ अवसर्पिणीमां पण एवा दश अछेरा एटले आश्चर्यकारी वातो थयेली छे एम इंद्र महाराज विचारे छे ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १०० ॥ ॥ हवे अवसर्पिणीनें विषे जे दश अछेरां थयां ते वखाणे छे. त्यां प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग

थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवल ज्ञान उपन्या पछी गोशालायें उपसर्ग कस्यो, ते कहे छे. एकदा जगवंत श्रीमहावीर स्वामी विहार करतां सावछी नगरीयें समोसस्या, तेवारें गोशालो पण, हुं तीर्थंकर छुं. एम लोकोमां कहेतो थको सावछीयें आव्यो, ते समयें गौतमस्वामी गोचरीयें गया, तिहां लोकोना मुखथकी एवुं सांजल्युं जे आज नगरीमां एक महावीरस्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे. पछी संशयवंत थइनें श्रीगौतम स्वामीयें जगवंत पासें आवीनें गोशालानी उत्पत्ति पूछी, तेवारें प्रजुयें कह्युं के शरवण ग्रामनो रेवासी मंखली जरडानीजाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुजद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गायनी शालामां जन्म्यो तेथी मातापितायें गोशालो नाम पाड्युं छे. ए जिक्षामागतो हतो ते आवीने महारो शिष्य थयो, छद्मस्थावस्थायें महारी सायें छद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, महारी पासेंथी जणीनें कांइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे बीजुंवली दिशाचरो पासेंथी निमित्तविद्या शीखीनें ए मिथ्या जिननाम धरावे छे, परंतु ए तीर्थंकर नथी, एवी वात प्रजु पासेथी सांजलीने श्रीगौतमें बीजा घणा लोको पासें वात करी, जे गोशालो मंखली पुत्र छे, ते वात, गोशालाने कानें गइ, तेवारें गोशालो क्रोधायमान थयो. एवा समयें जगवंतनो आनंदनामा शिष्य गोचरीयें गयो तेने गोशाले बोलावीनें कह्युं के हे आनंद ! तने एक दृष्टांत कहुं ते सांजल, कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थे विविध प्रकारनां करियाणानां गाडां जरी परदेशें चाल्या मार्गमां कोइएक महोटी अटवीमां पेठा, तिहां तृषालागी तेथी उजाडमां पाणीनी गवेषणा करतां पाणीतो क्यांय दीठुं नही पण चार वाल्मिक एटले उदेहीनां शिखर (टीम) दीठां अने तेना उपर नीलां ... दीठां ...

नक्ष पाणी हशे? एवुं जाणी एक शिखर फोड्युं तेमांथी घणुं निर्मल शीतल जल नीकल्युं, ते सर्वजनोये पीने तृषा जांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी जरी लीधुं, पत्नी बीजुं शिखर जांगवा मांड्युं, तेवारें तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजुं शिखर फोडशोमां; एम वार्या थका पण तेणें बीजुं शिखर फोड्युं, तेमांथी सोनुं नीकल्युं, तेवारें लोन लागो तेथी जोपण वृद्धें वार्यो तो पण त्रीजुं शिखर फोड्युं तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धें घणो वार्यो तोपण चोथुं शिखर फोड्युं, तेमांहेथी महाविकराल जयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पे दृष्टिविषें करी सूर्य सामुं जोइने सर्वने बाली जस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांतें ताह्मारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पण असंतुष्ट थको म्हारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवंत करे ने तेथी हुं त्यां आवी म्हारा तेजथी सर्वने बाली जस्म करीश, माटे तुं उतावलो जइने ताह्मारा धर्माचार्यने कहेजे, हुं वृद्धवाणीयानी पेरें मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात सांजली आनंद,मुनि जयभ्रांत थयो थको जगवंत पासें आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारें जगवंते कह्युंके हे आनंद तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुउने कहेजो जे अहींआं म्हारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटे तमें कोइ पण तेनी सार्थे जाषण करशोमां जो बोलशो तो बाली जस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते सांजली सर्व साधुउ एकांते बेशीरह्या तथापि सर्वानुजूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, जगवंत पासेंज रह्या, एटलामां गोशालो आवीने जगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप! तुं कहे ने जे म्हारो शिष्य गोशालो ने ते खरी वात ने पण ताह्मारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने

हुं तो वीजो छुं मात्र तें गोशालानुं शरीर परीषह सहन करवा सरखुं हतुं माटें में तेना शरीरमां प्रवेश कर्यो छे ते सांजली जगवान वोल्या के अरे गोशाला कोइ चोर चोरी करी नाठो होय तेनी पठवाडे वाहार चढी होय ते जोइने पहेलो चोर नाशी जवानें असमर्थ छतो एक तरणुं लइने पोताने ढाकवा सारुं आडुं आपे अने मनमां जाणे के हवे मने कोइ देखी शकशे नही तेथी शुं ते छानो रही जाशे! तेम तुं पण म्हारी आगल केवीरीतें छप्यो रहीश तुं तेहज म्हारो शिष्य गोशालो छो! एवुं सांजली गोशालो रोषआणीने जगवाननें कहेवा लागो के अरे तुं जीवतो रहीश त्यांसुधी मने सुख थाशे नही एवा तेना तुछ वोल सांजलीने सुनक्षत्र मुनि वोल्या के अरे गोशाला तुं पोताना गुरुने सामुं वोले छे एतो तुं संसारमां अनंता जव भ्रमण करवानुं काम करे छे एटलुं वोल्यो तेटलामां गोशालायें तेनां उपर तेजोलेश्या नाखी तेथी ते मुनि वली जस्म थइ गयो. फरी पण जगवानने गोशालो कडवां वचन कहेवा लाग्यो तेवारें सर्वानुजूति मुनि वोल्या तो तेने पण तेजोलेश्यायें करी वाली जस्म कीधो ते वन्ने साधु मरण पामीने देवलोकमां गया हवे जगवाने गोशालाने कह्युं के तुं चोरनी पेठे कां छिपतो रहे छे तेवारें जगवान उपर पण तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या जगवाननें त्रण प्रदक्षिणा आपीनें पाछी गोशालाना शरीरमां पेठी तेथी गोशालो दाझ्यो तेना ताप थकी सात रात्रि सुधी विविध वेदना जोगवीने गोशालो मरण पाम्यो अने तेजोलेश्याना तापथी जगवाननां शरीरें वेदना थवा लागी, छ महीना सुधी लोही खंम जाडो थयो, रेवती श्राविकानां घेरथी बीजोरांपाक सिंह अणगार पासें मगावी जगवंतें खाधो, तेथी शरीरें शाता थइ. एवीरीतें जेमो नाम मात्र लीधाथी पण सर्व उपद्रव मटी जाय तेमने पण महा

पीडा थइ एम तीर्थंकरने जिनपद लह्या पछी एटले केवलज्ञान उपन्यापछी उपसर्ग न थाय, ते थयो. ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं ॥ ॥ हवे बीजुं अछेरूं जे आ वर्तमान चोवीशीमां श्रीमल्लीनाथ ओगणीशमा तीर्थंकर स्त्रीवेदपणे उपन्या, तेनो संबंध कहे छे. आज जंबूद्वीपना श्रीमहाविदेह क्षेत्र ने विषे सलिलावती विजयमां वीतशोकानामें नगरीनो बलनामें राजा तेने धारिणी नामें स्त्री छे, तेनो महाबल नामें पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारें राजायें तेने पांचसो स्त्री परणावी, पछी वृद्धावस्थायें पुत्रने राज्य आपी पोतें दीक्षा लइ चारित्र पाली मोक्षे पोहोतो, हवे महाबल राजा राज्य करे छे, तेने एक अचल, बीजो धरण, त्रीजो अभिचंद, चोथो पूर्ण, पांचमो वसु, छठो वैश्रमण, ए छ मित्र हता. एकदा ते साते जणे गुरु पासें धर्म सांभली दीक्षा लीधी, अगीआर अंग भण्यां अने ते साते जणे मांहोमांहे एवो संकेत कर्योके आपण सर्व जणायें छठ अठमादिक जे तप करवुं ते सरखुं बराबर करवुं पण एक बीजाथी अधिकन्यून तप कोइयें करवुं नही ते प्रमाणे ते सातेजण सरखुं तप करे, तेमां एकदिवस महाबल ऋषिना मनमां एवो विचार थयो के हुं एनाथी कांइ अधिक तप करुं के जेथकी हुं ए सर्वथी अधिक थाउं एवो निश्चय करी, कपटथकी ते छ जणथी छानो जेवारें पारणुं करवानो दिवस आवे तेवारें छ जणने एम कहे के महारुं तो माथुं दुखे छे,हुं आज पारणुं करीश नही तमें सुखे पारणुं करो. बीजे दिवसें वली तेमना सरखुं तप करे. ए प्रमाणे कपट थकी वीशथानकतप कर्युं तेथी तीर्थंकरनाम कर्म उपार्ज्युं परंतु कपटनेलीधे स्त्रीपणानुं कर्म बांध्युं शेवट सातेजणा बे मासनी संलेषणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मरण पामीने बत्रीश सागरोपमने आउखे विजयंतनामा अनुत्तर विमानें जइ ऊपन्या, पछी तिहांथी चवी एक अचल

नो जीव तो अयोध्यानो सुप्रतिबद्धनामें राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चंपानगरीयें चंद्र
जसा नामें राजा थयो, त्रीजो अभिचंद्रनो जीव, काशी नगरीयें शंखनामें राजा थयो, चोथो
पूरणनो जीव, सावत्थी नगरीयें रुक्मिनामें राजा थयो, पांचमो वसुनो जीव कुरुदेशें अदी
नशत्रुनामें राजा थयो, छठो वैश्रमणनो जीव कपिला नगरीयें जितशत्रुनामें राजा थयो, अ
ने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीयें कुंभ राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखें आवी
मल्लीकुमरी पणे उपन्यो,तेवारें मातायें चौदसुपनां दीठां,आगु शुदि अगीआरशें पुत्रीपणे ज
न्म्या अनुक्रमें यौवन अवस्था प्राप्त थइ, पछी अवधिज्ञानें करी पोताना छ मित्र, जूदे जूदे
ठेकाणें उपन्या देखी तेने प्रतिबोध करवाने अर्थें अशोक वाडीमां रत्नें जडित घर कराव्युं, तेनां
छ बारणां कराव्यां, तेमां पोताना रूप सरखी रत्नेंजडित सोनानी एक पूतली करावी, हवे म
ल्लीकुमरी जे जे वारें भोजन करे, ते ते वारें ते रत्ननी पूतलीने माथे बारणुं कराव्युं छे ते बा
रणानी उपर एकेको कवल नाखती जाय अने फरी पाछुं ढांकणुं आपी दीये, एम नित्य
करती जाय. हवे एकदा अयोध्या नगरीयें सुप्रतिबद्ध राजायें यक्षने देरे पूजा रचावी छे,
तिहां फूलनी माला देखीने दूतने पूछ्युं जे तमें एवो फूलनो श्रीदामक्यांहिं पण दीठो छे?
तेवारें दूत बोल्यो जे हे राजन्! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणा रूपमय छे, ते जेवो फूल
नो श्रीदाम बनावे छे तेहना लाखमां अंशें पण ए श्रीदाम नथी.हवे पूर्वभवना प्रेमथकी सुप्र
तिबद्धराजायें मल्लीकुमरीनी याचना करवाने कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्युं जे
तमारी बेटी मुजने परणावो ॥ इति प्रथम दूत ॥ १ ॥ तेवार पछी चंपानगरीना अरहन्नक
प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण भरी गंभीर पवने द्वीपांतरें चाल्या, एवा समयमां इंद्र महाराज

अरहन्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सनाने विषे करवा लाग्या जे धन्य छे अरहन्नकने, आज
नरत क्षेत्रमां एना समान बीजो कोइ दृढ श्रावक नथी! ते इंद्रना वचनने कोइएक मिथ्या
त्वी देवता अण सद्दहतो थको तिहां अरहन्नक पासें आवीने ते देवतायें समुद्रमां महोटो
उत्पात कर्यो ते जोइ अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निश्चल मनें श्रीवीतराग देवनुं
स्मरण करवा लाग्यो, तेनें देवतायें वहाण चलाव्यो अने एवुं कह्युं जे तुं श्रीवीतराग देवनुं
स्मरण मूकीने हरि हरादिक देवोनुं स्मरण कर, तो उपसर्ग निवारण करुं नहींतर ताहारां
जिहाज समुद्रमध्यें बुडावी देइश, एम कही जिहाज समुद्रमां बुडाववा लाग्यो, ते जोइ सर्व
लोक एकठा मली अरहन्नकने कहेवा लागा जे देवतायें कह्युं तेम करो,तो पण अरहन्नक आ
गळनुं समकित दृढ छे, तेथी चलायमान न थयो, ते जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंडलाजरण
नो जोडो आपी, अर्हन्नकने पगें लागीने कह्युं के अहो अर्हन्नक ! तमोने धन्य छे,हे कृत
पुण्य! तमारुं जीवितव्य सफल छे,तमोने इंद्र महाराजें सना समक्ष वखाण्या ते अणमा
नता में तमारो अपराध कर्यो, ते म्हारो अपराध तमें खमजो, ते सांजली अर्हन्नक बोल्या
जे इह लोक अने परलोकनुं साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीने बीजो धर्म हुं अंगीकार न करुं,
तेवारें देवतायें चार कुंडल आप्यां, अनें पोताने स्थानकें गयो, हवे ते व्यावहारीयो कुशल
क्षेमें गंजीरपत्तनें गयो तिहां व्यापार करी फरी मिथिला नगरीयें आव्यो तेवारें देवतायें आ
पेला चार कुंडलमांथी राजाने बे कुंडल आप्यां, राजायें मल्लीकुमरीने दीधां, वली व्यापा
रियें पोतानी चंपानगरीयें आवी, तिहां चंपानगरीना राजाने बाकी रहेला बे कुंडल आप्यां
राजायें पूछ्युं जे हे व्यवहारीया! तमें परदेशमां कोइ तमासो दीठो ? ते सांजली व्यवहारीयो

बोल्यो के अमें मल्लीकुमरीनुं रूप अद्भुत दीठुं, एवुं रूप बीजे क्यांहिं पण दीठुं नथी, पछी चंद्रजस राजायें पण कुंभराजा पासें दूत मोकलीने कहेवराव्युं के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो ॥ इति द्वितीयदूतः ॥२॥ एक दिवसें मल्लीकुमरीनां बे कुंमल भांग्यां, तेवारें कुंभराजायें सोनीने बोलावीने कह्युं के आ कुंमलनो जोडो सांधी आपो, तेवारें सोनी कुंमल जोइने बोल्या जे महाराज! ए संधाय नहीं एतो देवतानां कुंमल छे, ते अमें केवी रीतें सांधियें? तेथी राजायें सर्व सोनीउने देशनिकाल कीधा, ते सोनी वाणारसी नगरीयें गया, तेवारें त्यांना शंख राजायें पूछ्युं के तमें देश केम छोड्यो? सोनी बोल्या जे महाराज! मल्लीकुमरीनां कुंमल देवता संबंधी छे, ते अमारा थकी संधाणां नहीं, तेणें करी देश छोडवो पड्यो अने मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेवारें वाणारसीना राजायें पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थें कुंभराजाने दूत मोकल्यो ॥ इति तृतीयदूतः ॥ ३ ॥ हवे रुक्मी राजायें पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने दूतने पूछ्युं जे हे दूत! तें आवुं रूप क्यांही पण दीठुं छे? तेवारें दूत बोल्यो जे मल्लीकुमरीने लाखमे अंशें पण ए रूप नथी, ते सांभली, रुक्मी राजायें पण कुंभराजा उपर दूत मोकली, मल्लीकुमरीनी याचना करावी ॥ इति चतुर्थदूतः ॥४॥ हवे कुंभराजानो पुत्र छे, तेणें पोतानी चित्रशाला चित्रावी, तिहां चितारे मल्लीकुमरीनो अंगुठो दीठो, ते प्रमाणें मल्लीकुमरीना सर्व अंगनुं स्वरूप चित्री काढ्युं, एकदा मल्लीकुमरीना भाइयें क्रीडा करतां मल्लीकुमरीनुं रूप चित्रशालामां जोयुं, तेने रीश चढी तेथी चितारानो हाथनो अंगुठो कापीने काढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरें अदीनशत्रु राजाने मल्यो, तिहां मल्लीकुमरीनुं रूप वर्णन कर्युं, ते सांभली तेणें पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंभराजाने दूत मोक

व्यो ॥ इति पंचम दूतः ॥ ५ ॥ ॥ एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुमरीयें जीती, मानभ्रष्टा करी, तेथी ते रीशाणीथकी कंपिलानगरीयें जइ जितशत्रुराजाना मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेणें पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थें कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो ॥ इति षष्ठदूतः ॥ ६ ॥ ॥ ए रीतें छ दूत कुंभराजा पासें समकालें आव्या, कुंभराजायें सर्व दूतोने कह्युं के हुं म्हारी कन्या कोने आपवानो नथी, एवी रीतें अपमान करी काढी मूक्या, पछी ते छए राजाउ पोत पोतानुं लशकर लइने समकालें आवी मिथिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजायें पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांड्युं युद्ध करतां हार्यो अने पाछो नगरीमां पेठो, तेवारें मल्लीकुमरीयें छए राजाउने कहेवराव्युं के तमें म्हारा रत्नघरमां आवजो, पछी ते छए राजा छ बारणामांथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीयें आवीने ते पुतलीना माथा उपरथी ढांकणुं उघाड्युं तेवारें ते सडीगयेला अनाजमां कीडा पड्या हता तेमांहेथी दुर्गंध नीकल्यो एटले सर्व जणे मोढा पासें लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने दुःखी थवा लागा तेवारें मल्लीकुमरी बोली जे हे नृपो ! आ रत्नमय पूतली छतां नित्यप्रत्यें एक कवल आहारना संयोगथी एवी दुर्गंध वास आपे छे, तो म्हारा शरीरमां तो नित्यप्रत्यें शेर धान्य पडे छे. तेथी मलमूत्रनो भंडारज छे. तेमां तमें शुं रागांध थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वलो भव संभलाव्यो, तेथी ते छए राजाने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं,पूर्वभव दीठा पछी ते छए कहेवालाग्या के हवे अमने तारो, तेवारें मल्लीकुमरीयें कह्युं के हमणां तो तमें घेर जाउ, जेवारें मने केवलज्ञान उपजे, तेवारें तमें आवजो, हुं तमोनें दीक्षा आपीश, पछी ते छए राजा पोतपोता

ने स्थानकें गया, मल्लीकुमरीयें पण संवत्सरी दानआपीनें त्रणशें राजपुत्र सायें मार्गशिरशु दिअगीआरसने दिने दीक्षा लीधी, तेज दिवसें केवल ज्ञान उपन्युं, पछी ते छए मित्रें आवी श्रीमल्लीनाथ पासेंथी दीक्षा लीधी ते छए ने गणधर कर्या तेहज नवें मोक्ष गया, ए श्रीमल्ली नाथ स्त्रीवेदें उंगणीशमा तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमां स्त्रीनी परषदा आगल वेशती हती अने पुरुषनी परषदा पाछल वेशती हती ते स्त्रीवेदें कोइ तीर्थंकर थाय नहीं ते थयुं ए बीजुं अछेरूं जाणवुं ॥ २ ॥ ॥ त्रीजुं कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते आहीं श्रीम हावीर स्वामीने व्याशी रात्रि पछी देवानंदानी कूखथी हरणिगमेषी देवतायें अपहरीनें त्रिश ला क्षत्रियाणीनी कूखमांहे धर्या अने त्रिशलानी कूखें पुत्री हती, ते महाणकुंमें देवानंदानी कूखे मूकी. तेवुं कोइवारें थाय नही, माटे ए त्रीजुं गर्भ पालटन आश्चर्य जाणवुं ॥ ३ ॥ ॥ चोथुं श्रीवीरभगवाननें जेवारें केवलज्ञान उपन्युं, तेवारें देवतायें मली समोसरणनी रचना कीधी, त्यां घणी महोटी परषदा भेली थइ तेवारें भगवानें धर्मदेशना दीधी परंतु प्रभुनी देश ना सांभलीनें कोइ समकेत पाम्यो नही, तेमज व्रत पच्चरकाण पण कोइयें लीधुं नही एरीतें देशना निःष्फल गइ, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखतें खाली न जाय ते आ वेलाये खाली गइ, माटे ए चोथुं आश्चर्य जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ पांचमुं जे एक द्वीपनो वासुदेव होय ते बीजे द्वीपें जाय नही, ते श्रीकृष्णजी द्रौपदी लाववानें अर्थे धातकीखंमें गया तेमज कपिल वासु देवनो शंख अने श्रीकृष्ण वासुदेवनो शंख ए बे शंखेशंख मल्या ते पण कोइवारें मले नही माटे आश्चर्य जाणवुं तेनी कथा कहेले. कांपिलपुर नगरमां द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी कूखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह माटे स्वयंवर मंमप मांमयो, सर्व देशोना राजा ते

डाव्या हस्तिनागपुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पांच पुत्रने तेडी पांडुराजा पण आव्यो, अर्जुनें राधावेध साध्यो तेवारें द्रौपदीयें अर्जुनना गलामां वरमाला नाखी ते वरमाला पूर्वभवमां द्रौपदीयें पांच जरतारनो नीयाणो कर्यो हतो तेना प्रजावथी पांचे पांडवोना गलामां जइ पडी पूर्वला जवमां द्रौपदीनो जीव नागिला नामें ब्राह्मणीनो हतो तेणे एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुंबडीनुं शाक वोह्नोराव्युं ते मुनियें अनशन करी खाधुं तेनां योगथी मुनि मरण पाम्या पठी नागिला साधुनी घात करनारी ठे एवुं आचार्यें साधुउने गाममां मोकली कहेव राव्युं तेवारें ब्राह्मणे नागिलाने घरमांथी काढाडी मूकी, ते जमती जमती मरण पामीने नरकें गइ त्यांथी अनेक तिर्यंचादिकना जव करी एक शेठने घेर घणी सरूपवाली सुकुमालिका नामे पुत्री पणे उपनी तेने तेज गाममां एक बीजा शेठना दीकराने परणावी ते रात्रे सुवा गयो त्यां सुकुमालिकानो स्पर्श थतांज तत्काल तेने दाहज्वर उपन्यो तेथी ते पडती मूकी चाल्यो गयो पाठलथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक जिक्षुकने परणावी ते पण तेमज मूकी जागी गयो पठी सुकुमालिका डुःखगर्जित वैराग्य पामीनें साधवी थइ तेने गुरुणीयें नाकारो कर्यो तो पण ते वनमां तप करवा गइ त्यां एक वेश्याने पांच पुरुष हाज रीमां रह्या ठे तेने जोइने सुकुमालिकायें कह्युं के म्हारा तपनो प्रजाव होय तो आगला ज वमां मुजनें पण पांच जरतार होजो एवुं नियाणुं कर्युं, अंते अनशन करी इशान देवलोकें गइ त्यांथी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली ठे ते पूर्वकृत नियाणाना योगें वरमाला पांच जणानां कं ठमां पडी, देवोयें आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पांच जरतारी ठतां पण सती ठे,पांच पांडव द्रौपदीने परणी हस्तिनागपुरमां आव्या त्यां सुखें रहे ठे, एक दिवस जेनी मुखाकृति सौम्य

छे,परंतु मनमां कपट घणुं राखे छे, वल्कल चीर पहेरे छे,जनोइ पहेरे छे, काला मृगना चाम डानो उत्तरासंग करेलो छे, जेनो जटाजूट महाकांति वालो छे, जे कलह कोलाहलनो लगा डनार छे, एवो नारद ऋषि आकाशमार्गेथी ते पांडुराजानी सभामां आव्यो, तेवारें पांडवो स हित सर्व सभाजनोयें ऊभा थइने आदर सन्मान आप्युं, परंतु ते नारद जेवारें द्रौपदीनें जो वा गयो तेवारे द्रौपदीयें तेने असंयती जाणी वांद्यो पूज्यो नही, तेम उठीने उभी पण थइ नही, अने बोलाव्यो पण नही, तेथी नारदने रीश चडी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौ पदी पांच भरतार पामीनें मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हवे हुं एने संकट मां नाखुं एम चिंतवी, धातकीखंडना पूर्व भरत क्षेत्रमां अमरकंका नामे नगरी छे त्यां कपि लवासुदेवनो सेवक पद्मनाभ नामे राजा राज्य करे छे, ते राजा पोतानी सातसें राणीयो सा थें वाडीमां रमतो हतो तेवा समयमां नारद पण त्यां गयो, तेने पद्मनाभ राजायें वांदीने पूछ्युं के हे नारदजी! महारो जेवो अंतेउर छे तेवो अंतेउर बीजे क्यां तमें जोयो छे, तेवारें नारदजिये जाण्युं के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे. एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा लाग्यो, के हे राजन् तुं कूवानां देडका सरखो देखाय छे, जेम कोइएक समुद्रनो देडको कूवाना देडकानी पासें आव्यो, तेवारें तेने कूवानां देडकायें पूछ्युं जे तुं किहां रहे छे अने क्यांथी आव्यो छो, तेणे कह्युं हुं समुद्रमां रहुं छुं अने त्यांथीज आव्यो छुं तेवारें कूवाना देडकायें पूछ्युं जे ताहारो समुद्र केटलो महोटो छे, तेणे कह्युं घणो महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको हाथ पग पसारीने बोल्यो के आटलो महोटो छे, समुद्रना देडकायें कह्युं एथी तो घणोज महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको पोताना कूवानी चारे बाजुयें कूदका

मारीनें वोल्यो के आटलो महोटो ने, तो पण तेणे कयुं के एनाथी तो घणोयणो महोटो ने, तेवारे कृष्णनो देमको रोष आणीनें वोल्यो के अरे असत्य वादी तुं इहांथी दूर जा, महारी फाजथी पण वली कोइ महोटो हशे ? माटे तुं जुठुं वोले ने, तेम हे राजन्! तें पण कृष्णना देमकानी पेरें आटलीज स्त्रीयो दीठी ने तेथी एनाज वखाण करे ने, परंतु पांच पां मवनी स्त्री द्रौपदी एवी ने के तेना एक अंगुठाना नखाग्रना रूप सरखुं पण ताहारी को इ राणीनुं रूप नथी, त्रण लोकमां ए द्रौपदी समान कोइ स्त्रीनुं रूप नथी एम कहीनें नारद चालतो थयो,पाठलथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो जे एवी स्त्री विना जन्म निष्फल ने पण द्रौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूज्यो नही तेवारें अठम तप करी पूर्वभवसंग ति देवतानुं आराधन कर्युं देवता प्रत्यक्ष आवी उनो रह्यो अने कहेवा लाग्यो के हे राजन्! मने केम संजार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजायें द्रौपदी लेइ आववानी याचना करी तेवारें देवतायें कयुं ते महा सती ने माटे शील जंग करशे नही तो तुं फोकट शा वास्ते तेने तेडावे ने. तो पण पद्मोत्तरें घणो हठ कर्यो त्यारें देवतायें द्रौपदीनें अवस्वापिनी निद्रा आपी, ज्यां सुती हती त्यांथी ढोलीया सहित कपाडीनें पद्मोत्तर राजानी अशोक वाडीमां आवी मूकी अने राजाने कयुं के तें महारा हाथें मारुं काम कराव्युं ने, माटे हवे कोइ पण दिवसें तुं मने याद करजे नही कदापि वोलावीश तो पण हवे हुं आवीश नही एम कही देवता स्वस्था नकें गयो,केटलिक वार पठी द्रौपदी निद्रामांथी जाग्रत थइनें विचारमां पडी जे हुं इहां क्यां आवी हुं! तेवारें पद्मनाज वोल्यो के में तुजनें महारी सार्थे जोग करवा सारुं देवतानी मार फते इहां मगावी ने, तो हवे तुं महारी सार्थे विषयसुख जोगव, हुं ताहारो दास हुं, तेवारें

पदी बोली हे देवाणुप्रीय! तुं ठ महीना सुधी मह्यरुं नाम लइश नही, मह्यरी वाहार करवा वाला, पांच पांमव तथा श्रीकृष्ण ठे तें जो ठ महीनामां आंही आवशे नही तो तुं कहीश तेम थाशे, पद्मनाभें पण हा कही अने विचार्युं जे इहां एनी खवर लेवा कोण आवनार ठे? वली जोरावरीथी प्रीति पण नथाय एम जाणी, द्रौपदीनें पोताना महेलमां तेडी गयो द्रौपदीयें त्यां ठठ ठठनुं तप अने पारणे आयंविल करवा मांम्युं, हवे प्रभातें हस्तिनाग पुरमां द्रौपदीनें महेलमां दीठी नही, तेवारे पांमवोयें घणो शोध कराव्यो पण क्यांये पतो लागो नही, तेवारे पांमवोनी माता कुंताजीयें द्वारिकामां जइने श्रीकृष्ण वासुदेवने कह्युं के हे पुत्र! द्रौपदीने रात्रियें सुतां थकां कोइ देव, दानव, राक्षस अथवा विद्याधर अपहरी गयो ठे, अमें सर्व जगा जगायें जोइ पण मली नही तेवारें श्रीकृष्णजी कांइक हास्य पूर्वक बोल्या के पांच पांमव एक द्रौपदीने पण राखवाने समर्थ न थया, हुंतो मह्यरी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करुं हुं, ते सांजली, कुंताजी बोल्यां के हे वत्स! आ अवसरमां हास्य करवानुं काम नथी तुं तरत द्रौपदीनी खवर कराव पठी श्रीकृष्णजीयें पण घणो शोध कराव्यो परंतु क्यांय खोज पाम्या नही तेवारें चिंतातुर थइ बेठा. एटलामां नारदऋषि त्यां आव्यां तेणे आवी कृष्णजीनें चिंतामां वेसवानुं कारण पूठ्युं त्यारें कृष्णजीयें कह्युं के तमें कोइ स्थानकें द्रौपदीने दीठी? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुनें पण बोलावती नहती माटे दुःखमां पडी हशे, तथापि हुंतो कांइ उंलखतो नथी, परंतु धातकीखंममां अमरकंका नगरीयें द्रौपदी सरखी एक स्त्री दीठी ठे पठी कोण जाणे तेहज होयतो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया पठी श्रीकृष्णे विचार्युं के आ कृत्य अवश्य कवचित् नारदनुंज करेलुं ने माटे अमरकंका मांहेज द्रौपदी हशे

एवुं जाणी पांमवोंने लइ सेना सहित श्रीकृष्णजी समुद्र तटें आव्या, समुद्र अधवान अ अठम तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पण प्रगट थइ बोल्यो के कहो शुं काम छे हुं करवाने तत्पर छुं, तेवारें कृष्णजीयें सर्ववृत्तांत निवेदन करी कह्युं के अमने धातकीखंडमां जावुं छे, माटे अमारी सेनाने समुद्रमांथी जवानो मार्ग आपो, त्यारे देवता बोल्यो के तमे शा वास्तें त्यां जवानो श्रम करो छो हुं पोते जइ द्रौपदी लावीने तमोने आपीश,वली तमारो हुकम होय तो अमरकंका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुद्रमां नाखी देउं, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के हे देव! तमे एवाज शक्तिवान छो एमां कांइ संशय नथी तथापि अमोने पांच पांडव सहित छ जणने जवानो मारग आपो तो अमारें त्यां जवानी इच्छा छे ते सांभली सुस्थित देवे ते छ जणाना छ रथ चालवानो मार्ग आप्यो पछी पांडवो सहित श्रीकृष्ण समुद्र उल्लं घीनें अमरकंका नगरीना उद्यानमां जइ दारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्म नाभ पासें मोकल्यो तेणे जइ पगचपर पग आपी त्रिवडी ललाटे चडावी,कह्युं के हे पद्मनाभ! श्रीकृष्णवासुदेवें तमोने कहेवराव्युं छे के,पांडवोनी स्त्री द्रौपदीने तमे लइगया छो ते घणुं अ योग्य काम कर्युं छे तथापि हजी कांइ बगडशुं नथी माटे तमे आवी द्रौपदी अमोने आपी जाउ, तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के हुं तमोने पाछी आपवा सारुं द्रौपदीने लइ आव्यो नथी, हुंतो म हारा बलथी लाव्यो छुं माटे तुं ताहारा स्वामीनें जइ कहे के तमारे युद्ध करवुं होय तो सुखें क रो,हुं पण क्षत्री छुं एम कही दूतने निर्भ्रंछी ने काहाडी मूक्यो,दूतें आवी श्रीकृष्ण आगल तेणे कहेली सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्युं के असाध्य रोग कांइ औषध विना जाय नही माटे युद्ध करवा तैयार थया,पद्मनाभ पण सेना लइ लडवाने साहामो आव्यो,पांडवो बोल्या के

अमे एनी सायें युद्ध करीशुं कदापि जो हारी जइयें तो आपे सहाय करवो त्यारें श्रीकृष्णे कह्युं के तमें महोटा योधा छो पण तमारी आवी आणी सांजलतां थकां एवुं लागे छे के तमारे जीतवुं कठण थइ पडशे,तो पण पांमवो श्रीकृष्णनी आज्ञा लइ युद्ध करवानें गया,पद्मनाजें पण महोटुं लशकर लइने पांमवो सायें युद्ध कह्युं, त्यां नवितव्यताना वशथी पांमवो हारी गया ते वारें नाशतां थकां सिंहनाद कह्यो ते सांजली पांमवो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ उपर वेशीनें पद्मनाजनी सेनाने मथन करवा लाग्या त्यां धनुषना टंकारवथीज पद्मनाजनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाज पोतें पण नाशिनें नगरमां घुंसी गयो नगरना दरवाजा वंधकरी मूक्या, तेवारें श्रीकृष्णे नरसिंह रूप धारण करीनें हाथल मारी अमरकंका नगरीनो सर्व कोट नांजी नाख्यो, सर्व नगर धुजवा लाग्युं, घणा महेल पडीगया, पद्मनाज राजा श्रीकृष्णजीनुं एवुं पराक्रम देखीने वीहीनो थको डौपदीने शरणे गयो अने कहेवा लाग्यो के हे सति! तुं महारी रक्षा कर, डौपदी वोली हे कंगाल ! में तुजने प्रथमथीज कहेलुं हतुं जे महारी पठवाडे श्रीकृष्णादिक घणा वलवंत राजाउ वाहार करनारा छे तो पण तें मान्युं नही तेतो ठीक पण हवे जो तुं जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी मुखमां तृण लइ महारी पठवाडें वेसी रहे एटलुं जो महारुं कह्युं करीश तो हुं तुजने पगेलगाडी दइश केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुष छे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नही माटे ताहारे जीवतो रहेवानो ए उपाय छे ते कर, पद्मनाजे पण तेमज कह्युं, एटलामां श्रीकृष्ण पण आव्या, त्यां जुवे तो पद्मनाज स्त्रीनुं रूप करी डौपदीनी पठवाडे वेठो छे, श्रीकृष्णें डौपदीनें पूछ्युं के आ कोण वेठो छे, डौपदीयें कह्युं पद्मनाज राजा तमारा जयथी नाशिनें महारे शरणे आ





चित्र ९

व्यो ने एम कही डौपदियें पद्मनाजने श्रीकृष्णनें पगें लगाव्यो तेवारें श्रीकृष्णे तेना उपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाजनें कह्युंके अरे तुं जाणतो नहतो जे आ डौपदीनी पदवा हे महोटा महोटा वाहार करवा वाला ने ? पण मूर्खना माथामां जेवारें पडे ने तेवारें अक्ल आवे ने, तो हवे ताहारुं कर्युं कर्म तें जोगव्युं, डौपदीना प्रतापथी तुं जीवतो रह्यो एवुं कही अखंम शीलवंती एवी डौपदीने लइने पांच पांमव सहित श्रीकृष्णजी पाठा वव्या जयनो शंखपूर्यो, एवा वखतमां ते खेत्रमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासें त्यांनो कपिल वासुदेव वखाण सांजले ने, तेणें शंखनाद सांजव्यो, मनमां शंका उपनी जे कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो! तेथी जगवंतने पुढ्युं के महाराज ! ए बीजो वासुदेव कोण थयो ने केंणे महारो शंख वजाव्यो ? जगवंत बोल्या के हे कपिल ! एक खेत्रमां बे तीर्थंकर अने बे वासुदेव, न थाय पण एतो जं बुद्वीप संबंधि जरत क्षेत्रनो श्रीकृष्णनामें वासुदेव ताहारा सरखी रूद्धिनो धणी ने, ते पद्म नाज राजा डौपदी हरण करी लाव्यो हतो,तेने लेवाने आव्यो हतो,ते पद्मनाजने जीतीने पाठो जाय ने,तेणें शंखनाद कर्यो,ते सांजली तीर्थंकरनी आज्ञा लइने कपिल वासुदेव तरत तिहांथी चढीने पोताना सरखो वासुदेव जोवा सारु समुद्रने कांठे आव्यो, पण श्रीकृष्णतो दूर नीकली ग या,मात्र समुद्रमां नीली, पीली रथनी ध्वजाउंदेखीने, शंखनो शब्द कर्यो, तेमां एवुं जणाव्युं के हे मित्र ! आप उजा रहो हुं तमोने मलवा सारुं आव्यो बुं माटे एकवार पाठा आहीं आवो, तमारा दर्शननी मने अजिलाषा ने, एवो शंखनो शब्द सांजलीनें श्रीकृष्णे पण पाठो शंख नो शब्द कर्यो तेमां आवीरीतें कहेता हवा के हे मित्र ! अमे घणा समुद्रनु उल्लंघन करी गया ठैयें माटे पाठा अवाशे नही तमे अमारा उपर कृपादृष्टि राखजो एवुं कहीने चालता थया,

पाछळथी कपिल वासुदेवें जइ, पद्मनाभनें कह्युं के आ ताहारी नगरीना गढ मढ कोट केम पडीगया ? पद्मनाभें कह्युं के अहींआं जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनो वासुदेव म्हारी राजधानी जोवा आव्यो हतो तेनी साथें म्हारेंयुद्ध थयुं तेणे ए गढादिक भांगी नाख्या छे, कपिलवासुदेवें कह्युं के अरे अन्यायी म्हारी पासें तुं जुठुं बोले छे एम कही घणो निर्भंछीने देशमांथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रने राज्यपाटे थापी कपिल पोतानें स्थानकें गयो, पछी श्रीकृष्ण पांडवो सहित समुद्र उलंघन करी पांडवोने कहेवा लाग्यो जे हुं लवणाधिप सुस्थित देवने मळवा जाउं छुं एटलामां तमे नावा लइ गंगानदी उतरीने पछी एक जण साथें तरत नाव मोकली देजो पछी पांडव द्रौपदी सहित नाव लइ गंगानदी उतर्या अने विचार्युं के जोइयें तो खरा जे कृष्णजी पोतें एकला गंगानदी उतरी आवे छे के नथी आवता एम निरधार करीने नाव मोकली नही, त्यां श्रीकृष्ण घणो वखत थोभ्या पण नाव आवी नही तेवारें मनमां जाण्युंजे पांडवो मुंकी गया देखाय छे एवुं विचारी चार भुजाउ करीने एक हाथमां सारथी सहित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमां घोडानें पकड्या अने एक हाथथी गंगा नदी तरवा लाग्या तिहां साडी बासठ योजन गंगानदी पोहोळी छे तेनी मध्य भागमां जेवारें आव्या तेवारे श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गंगादेवीयें सहाय आपीने मध्यमां विकुर्वित थळ कर्युं त्यां केटलोएक वखत विश्राम लइने वळी पोतानी भुजाउथी गंगानदी तरीने तट उपर आव्या तिहां आगळ आवीने जुवे छे तो पांडवो नाव सहित बेठा बेठा हसे छे, तेवारें श्रीकृष्ण रीस चडावीने पांडवोने पूछवा लागा के अरे दुष्टो ! तमें नाव पाछी केम न मोकली ? पांडवो बोल्या, तमारी परीक्षा जोवाने न मोकली, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या

के अरे में घे लाख योजन समुद्र उलंघन करी पद्मनाभथी तमे नाग्ग तेने जीती द्रौपदी आणी आगी, तेवारें मारी शक्ति न दीठी? जे हमणा मढ़ारुं बलजोवा बेग? एम कही क्रोध चढावी ने पांचे पांडवोने मारवा सारु लोहदंड उपाड्यो, वली दया आवीने जाण्युं जे महोटो अ नर्थ थाशे? एम विचारी पांचे पांडवना रथ नांगी चूर्ण कर्या अने कह्युं के जाव रे पापीउ हवे महारी नजरे आवशो नही अने महारा देशमां पण रहेशो नही एम कही पांचे बांध वने देशनिकाल कर्या अने जिहां रथ नांग्या, तिहां रथमर्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लइ द्वारकामां गया अने पांडव पण द्रौपदीने लइ सेना सहित हस्तिनापुरें आवी कुंता जीने देशनिकालनी वात कही, तेवारें कुंताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचनें संतोषी पांडवोने पोताने श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्णे आज्ञा आपी के ज्यां में तमारा रथ नांग्या त्यां तमे पांडवरथनुपुर नगर वसावीनें रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवट पांडुसेन नामें पोताना पुत्रने राज्य पाटें थापी पांच पांडव अने छठी द्रौपदीयें दीक्षा लीधी, छठ, अठमादिक तप करी चौद पूर्व जणी ते पांचे पांडव श्रीश त्रुंजय तीर्थे उपर मोक्षें गया, अने द्रौपदी पण अगीयार अंग जणी मासनी संलेषणा करी पांचमा ब्रह्मदेवलोकें गइ. तिहांथी चवी महाविदेहक्षेत्रे मोक्ष पामशे. ए रीतें जंबूद्वीपनो वासु देव, धातकीखंडमां न जाय, ते गयो. ए पांचमुं अछेरुं जाणवुं. वली केटलाएक आचार्य एम कहे छे के बे वासुदेवनुं शंखेशंख पण भेगो न थाय अने इहां शंखेशंख मल्यो, माटे ए पण अछेरुं जाणवुं. ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे छठुं आश्चर्य कहे छेः—युगलिया मरण पामीने नरकें न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए बे युगलिया मरण पामीने नरकें गयां माटे

ए थयेलुं थयुं. तेनी कथा श्राम ने के, जंबुद्वीपनांना जरतक्षेत्रनेविषे कौशांबी नगरीनो सुमुख नामें राजा हतो. एकदा प्रस्तावें वसंत रुतुयें ते राजा हाथीऊपर आरूढ थइ नगरीनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थे जतो हतो. मार्गें जतां वीरकनामें कोलीनी वनमाला नामे जार्या अत्यंत स्वरूपवती ने ते पोताना धणीने घणी वल्लज ने तेने देखीने मांहोमांहे सराग दृष्टियें जोतां प्रीतिजाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यांथकी आगल जाय नहीं. तेवारें सुमतिनामा प्रधान कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! समस्त सौजन आव्यां उतां तमें आगल केम चालता नथी? ते सांजली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो. पण शून्यचित्तपणे मनमांहे केवल ते स्त्रीनुं चिंतवन ने तेथी क्यांयें पण चेन पामतो नथी. ते जोइने प्रधानें पूठ्युं के हे महाराज! तमें आज आवा शून्यचित्त केम देखाउ ठो? एम फरी फरी घणो आग्रह करी पूठ्याथकी पोताना मननी सर्व वात राजायें प्रधानने कही. ते सांजली प्रधान बोल्यो के तमें कांइ चिंता करशो नहीं; हुं तमने ए स्त्री मेलवी आपीश. पठी घेर आवी प्रधानें आत्रेयिकानामें परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासें मोकली, ते पण त्यां जइ जुए ठे तो वनमाला पण विरहविव्हलपणे मुखें निःश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे, ए रीतें महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से! तुं आज एम दुःखित केम देखाय ठे? ताहारुं दुःख मने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारुं. ते सांजली वनमालायें गुह्यनी वात कही. तेवारें परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं कांइ चिंता करीश नहीं, पठी ते परिव्राजिका दृष्टांतपणे त्यांथी जइ सर्व वात प्रधानने कही. प्रधानें जइ राजाने सर्व वृत्तांत संज

लाव्युं. तेवार पछी प्रजातें परिव्राजिका वनमालाने राजा पास तेडी आवी. राजायें तेने
थइ अंतःपुरमां तेने राखी अने तेनी सार्थे ते पंचविध विषयसुख जोगववा लाग्यो. हवे वीरक
कोली घेर आव्यो, तेवारें तेणें स्त्रीने दीठी नहीं. पछी पाडोशी प्रमुखने पूछतो थको जार्यांना
विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां हे वनमाला हे वनमाला करतो फरतो फरतो एक
दिवसें चोमासामां राजाना प्रासाद नीचें आवी उनो रह्यो तेवामां राजा पण वनमालाने
साथे लइ गोंखमां आवी बेठो. राजायें वीरककोलीने देखीने मनमां विचार्युं जे में पापिष्टें
पारकी स्त्री लइ लीधी ए अत्यंत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधुं. माटे मने धिःकार छे एम
मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. अने वनमालायें पण विचार्युं जे में पापणीयें
स्नेहवंत जरतारने त्याग्यो ए महारा विरहथी ग्रंथिल थयो माटे महारी शी गति थाशे एम
बन्ने जण पश्चात्ताप करे छे. तेवामां अकस्मात् उपरथी विजली पडी तेथी बेउ जणां शुन्न
ध्यानें मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां. त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूर्ण
करे छे अने सुखें रहे छे. पछी वीरक कोली पण ते बेहुनुं मरण जाणी ग्रंथिलनाव त्यागी,
अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोकें किल्बिषिया देवमां जइ उपन्यो त्यां अवधिज्ञानें
जोयुं त्यारे जाण्युं के अरे महारा पूर्वजवना वैरी तो युगलीया थया छे, ते त्यांथी मरण पा
... मी नेगला थशे माटे ए देवता न थाय एवो उपाय करुं एम विचारी ते युगलने त्यांथी उपा
... इक्ष्वाकुवंशनो चंद्रकीर्त्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्यां नगरनां लोक
... राजा थाशे एवी चिंतामां पड्या छे एटलामां ते देवतायें ते युगलीयाने
... लोकोने सोंप्या अने कह्युं के हुं तमारे माटे ए राजा लाव्यो छुं, एने जेवारे

भूख लागशे तेवारे ए कल्पवृक्षनां फल खाय छे, तेनी सार्थे मांस मेलवीनें खवरावजो तथा आहेडो करवा शीखावजो, देवतायें मनमां विचार्युं जे ए मांस जक्षण करशे अने मांसना लोलुपी थाशे तेथी मरण पामीने नरके जाशे तो मह्यारुं वैर वलशे एम चिंतवी हरि अने हरिणी एवुं तेनुं नाम आपी देवता पोतानें स्थानकें गयो, लोकें पण देवताना कह्या प्रमाणे तेने मांस मदिरा खवरावता शीखव्युं तेथी ते मांसना लोलुपी थयां,पछी ते हरिराजाना पुत्रादिक जे थया तेनो त्यांथी हरिवंश कुल कहेवाणो, ते हरिने हरिणी मरण पामी नरकें गया एरीतें युगलीया नरकमां जाय नही ते गया माटे ए छठुं आश्चर्य जाणवुं ॥ ६ ॥ ॥ हवे सातमुं अछेरुं कहे छे. आ जरतक्षेत्रने विषे विजेलनामा सन्निवेषें एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसें पाछली रात्रें जाग्यो थको कुटुंब जागरण करतां मनमां विचार उपज्यो के, मह्यारा घरमां घणुं धन परिवार छे ते में पूर्वला जवमां कोइ सारी धर्मकरणी कीधी छे तेना योगथी हुं संपदा पाम्यो छुं माटे फरी हमणा पण कांइक धर्मकरुं तो वली आगल पामीश, एम चिंतवी, प्रजातें स्वजनादिकने पूछी, पुत्रनें कुटुंबनो जार सोंपी, पोते तापसी दीक्षा लइने एवो अजिग्रह कर्यो के जावज्जीव सुधी मह्यारे छठ छठ एटले बे बे उपवासें पारणो करवो अने पारणानें दिवसें चारखूणानुं पात्रुं लइने जिक्षा मागवी तेमां पहेला खूणामां जे जिक्षा मले ते जलचर जीवोने खवरावी देवी, पण मह्यारे खावी नही तथा बीजा खूणामां जे जिक्षा पडे ते पंखीउने खवरावी देवी तथा त्रीजा खूणामां जे जिक्षा पडे ते अन्यागतने खवरावी देवी तथा चोथा खूणामां जे जिक्षा पडे ते जलमां धोइनें मह्यारे पोतें खावी एरीतें बार वरस पर्यंत तपस्या करी मरण पामीनें चमरचंचा राजधानीमां चमरेंद्रपणे जुवनपति देवोमां जइ

उपन्यो त्यां उपजतांज अवधिज्ञानें करी जोयुं तो सौधर्मेंद्रनो पग पोताना
तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारें सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्युं के हे देवो ! आ कोण
दुष्ट मारा पुण्यनो धणी जे महारा मस्तकें पग देइने बेठो छे, तेवारें देवो बोल्या हे स्वामी पूर्व
जन्मने विषे संपादन करेला पुण्यें करी सर्वना करतां अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनुं एवो
आ सौधर्माधिप छे. ए अनादिकालनी मर्याद छे माटे इहां तमारे कोप न करवो तमारा सर
एा इंद्र पूर्वें थइगया तेना उपर पण एमज पग रहेता आव्या छे माटे इर्ष्या म करो इत्यादिक
देवोये कह्युं तोपण चमरेंद्र क्रोधें जल्यो थको बोल्यो के जेनी उपर सौधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्व
थयेला चमरेंद्र ते जूदा अने हुं जूदो माटे हुं त्यां जइ सौधर्मेंद्रने पग पकडी हेठो नाखुं, एवुं
कही आयुधशालामां आवी, परशु शस्त्र हाथमां लइने सौधर्मदेवलोकें जावा लाग्यो तेवारें
सर्व देवोये वर्ज्यो तोपण कोइनुं मान्युं नही, ते वखत सुसुमारपुरने विषे श्रीमहावीर प्रतिमा
स्थित रह्या हता तेनुं शरण लइने लाखयोजननुं रूप विकुर्वी ब्रह्मांड फूटीपडे एवो शब्द
करतो, पगथी धरती कंपावतो, हाथें तालोटा देतो, मेघनी परें गर्जारव करतो,वीजलीनी पेरें
जबकार करतो, ज्योतिष्यचक्रनें त्रास पमाडतो, देवताउने जयत्रांत करतो, देवीउ बीक पाम
ती थकी देवोने गले वलगवा लागीउ एवा प्रकारनो कोलाहल करतो, परिघायुध फेरवतो, ग
र्वकरी अंध थयो थको सौधर्मेंद्र सामो धायो त्यां पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमान
नी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामां राख्यो तेवारें सर्व सौधर्मदेवलोकना
देवता जयत्रांत थइने इहां तिहां नाशीगया चमरेंद्र बोल्यो अरे देवो तमारो इंद्र क्यां छे?
काली अमावास्यानो जन्म्यो मने बतावो तो हमणा फरसुथी मारी नाखुं एवुं देवताउने क

हीने मुखमांथी अग्निज्वाला काहाडतो थको, लांबाहोठ, कूवा सरखा गाल, खाम सरखा नाकना फोरणां, अग्नि सरखां नेत्र, सूपडा सरखा कान, कुसी सरखा दांत, गलामां सर्प. हाथमां वींछीना घरेणा, क्यांकतो उंदरो वांधेला, क्यांकतो नोलीया घोह वांधेली, कालुं रूप धारण करेलुं एवो देखी, देवदेवीयें कोलाहल कर्यो, ते कोलाहल सांभलीनें इंद्रें अवधिज्ञाने जोयुं तेवारें जाण्युं जे एतो चमरीयो अडधो घडो भरेलो छलके छे माटे हवे एने हुं शिक्षा आपुं एम विचारी, हजार देवताउथी उपडी शके नही एवुं अग्निज्वाला करतुं देदीप्यमान वज्र चमरीया उपर मूक्युं ते पोतानी उपर आवतुं देखीनें चमरेंद्र बीक पामतो थको माथो नीचुं अने पग उंचा करेला एवो थको, त्यांथी नाठो तेना क्यांएक घरेणा पड्या, क्यांएक पोतें पडतो थको नासवा मांड्यो पण स्वभावें चमरेंद्रनी नीचे आववामां शक्ति घणी होय अने वज्रने उंचुं चडवामां शक्ति घणी होय तेथी छेटुं रही गयुं त्यारें चमरेंद्र पोताना लाख योजन वाला विकूर्वेला शरीरनो उपसंहार करी, " शरणं शरणं " एवुं बोली, कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीरस्वामीना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो एवीरातें वज्रथी मरतो थको श्रीमहावीरस्वामीने शरणे वेगो एटलामां शक्रेंदें जाण्युं जे चमरीयानी एटली शक्ति नथी जे विना शरणे इहां चाल्यो आवे माटें निश्चेंथी ए श्रीअरिहंतनुं अथवा अरिहंतनी प्रतिमानुं अथवा भावित अणगारनुं शरण लेइनें इहां आव्यो हशे ? तो रखे आशातना थाय नही ? एवुं विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयुं तो श्रीमहावीरस्वामीनुं शरण लेइ आव्यो हतो एवुं जाणी तत्काल वज्रनी पाछल शक्रेंद्र पण चाल्यो ते श्रीमहावीरस्वामीथी चार आंगुल आसाम थयेला वज्रने पाछुं खेंची लीधुं कारणके महावीरस्वामीथी चार आंगुल

तेटे वज्र परिभ्रमण करवुं कर्युं पण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थंकरनी पासें वज्र
जाय नही एवीनें चमरेंद्रने श्रीमहावीरने शरणे आव्यो जाणी छोडी दीधो अने भगवानने कह्युं
के प्रभु! महारो अपराध समजो एवुं कही भगारेक दूर जइने पगथी जमीकूटीने बोल्यो अरे चमर
हवे श्रीवीरभगवाननी कृपायें तुं महारो भय म गणजे एवुं कही भगवानने वांदी तेमनी आज्ञा
लेइ शक्रेंद्र पोतानें स्थानकें गयो, चमरेंद्र पण नाना प्रकारें भगवाननी स्तुति करी,वांदीनें पोता
नी चमरचंचा राजधानीयें गयो, त्यां पोताना सिंहासन उपर उदास थइ बेठो त्यारे सामा
निक देवे आवी नमाव्यो अने कह्युं के शोच कां करो छो तेवारें चमरेंद्रें पोतानी वीतक वात
सर्व कही अने कह्युंके हे देवानुप्रियो! ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वांदवानें चा
लो एम कही सर्व देव देवीयोने लइ महोटी ऋद्धि सहित आवीने श्रीमहावीरने वांदी नाट
क करी पोताने स्थानकें गयो एवीनें पातालवासी चमरेंद्र उंचो सौधर्मदेवलोकें जाय नही ते
आ अवसर्पिणी कालें गयो माटे ए सातमुं चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवुं ॥ ७ ॥ हवे
आठमुं अछेरुं कहे छे. अष्टापद पर्वत उपर उत्कृष्ट पांचशें धनुष अवगाहना वाला एक श्री
ऋषभ देव पोतें अने भरत विना नवाणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मली
एकसो ने आठ पुरुष एक समयमां सिद्धि पाम्या, ते मध्य अवगाहना वाला सीझे पण उत्कृ
ष्ट अवगाहना वाला एक समयें एकसोने आठ न सीझे, मात्र बेज सीझे अने इहां एकसो आ
ठ सिद्धा माटे ए आठमुं अछेरुं जाणवुं ॥ ८ ॥ ॥ हवे नवमुं अछेरुं कहे छे. श्रीमहावीर
देव कोशंबी नगरीयें समोसर्या, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वतां विमान, ज्योतिषचक्र
मां छे. ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसियें श्रीमहावीरने वांदवा सारु आव्या, अहिं

आं कोइएक एवुं कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेशीने आव्या, परंतु तेम न जाणवुं. ए मूलगें विमानें बेशीनेज वांदवा आव्या छे ते, मूलगें विमाने कोइवारें न आवे अने हमणां आव्या माटे ए अछेरुं जांणवुं ॥ ए ॥ हवे दशमुं असंयती, आरंभी, परिग्रहवंत, अब्रह्म चारी गृहस्थना वेषें रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असंयतिपूजा नामें दशमुं अछेरुं छे, ते आ वी रीतें के श्री सुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानंतर हुंमावसर्पि णीना दोषने लीधे साधुउनो विछेद थयो, सर्व साधुकाल करी गया कोइसाधु रह्यो नही, ते वारें लोक बोल्या हवे कोने पूजीयें तेवारें ऋषभदेवजीनी वारें श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो दाखलो लइ जे स्थविर श्रावक हता, तेनी पासें जइ लोको धर्म पूछवां लाग्या ते पण जेवुं जा णता हता, तेवुं तेउने कहेवा लाग्या. लोक पण तेमने धन वस्त्रादिक देवा लाग्या, तेथी तेउ गर्वित थया थका पोतानां मनःकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के. जे कोइ पृथ्वी शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोकें तथा परलोकें महा फल पामे अने अमेंज सुपात्र छइयें. एवो उपदेश सांभली लोके तेमने गुरु करी मान्या. एवी असंयतीनी पूजा चाली. एम केटलाएक काले तो वली साधुनो धर्मज विछेद गयो अने जैन विना पांखमी संन्यासी प्रमुख अन्य दर्शनीज पूंजाववा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा संयतीनी पूजा थती हती. तेथी विपरीतपणांयें करीने श्रीशीतलनाथजिननां तिर्थ वेसतां सु धि आश्चर्य चाल्युं, इहांजे साधु नहोय अने साधुपणे पूजाय ते आश्चर्य जाणवुं तेमज श्रीतीर्थं करोनुं तीर्थविछेद नथाय ते विछेद थयो ते पण आश्चर्य जाणवुं ए दशमुं अछेरुं छे एरीतें ए दश आश्चर्य [illegible] थशे ॥ १० ॥ हवे दश अछेरां

कया कया तीर्थंकरनी वारें थयां ? ते कहे ने. श्री रूषजदेवना वारामां एकशो ने आठ सिद्ध थया ॥ १ ॥ श्री शीतलनाथना वारामां हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ ॥ २ ॥ श्री मल्लीनाथ ना वखतमां स्त्री तीर्थंकर थइ ॥ ३ ॥ श्री नेमिनाथना वखतमां अमरकंका नगरीयें श्रीकृष्ण नुं गमन थयुं ॥ ४ ॥ अने श्री सुविधिनाथना वारामां असंयती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ॥ ५ ॥ ए असंयतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमां पण मरीचि कपिलादिकनी सांजलि यें ढेयें. एम घणुं करीने बीजा तीर्थंकरोना वारामां पण प्रवाहें थाय ने ॥ ॥ अने पांच अछेरां श्री महावीर स्वामीने वारें थयां ॥ १० ॥ ॥ इति अछेरा अधिकार संपूर्ण ॥ ॥ हवे इंड महाराज विचारे ने के जगवान श्रीमहावीर स्वामी माहणकुंम नगरें रूषजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदानी कूखमां उपन्या ए आश्चर्य थयुं. जे माटे तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती, बलदेव अने वासुदेव एमनो जो नीचगोत्रकर्मक्षय न थयो होय, वेद्यो न होय, निर्जर्यो नहोय, ते कर्म उदय आवे तेना उदयें करीने श्रीअरिहंत, चक्रवर्त्ती बलदेव अने वासुदेव ते पण अंतप्रांत तुछ दरिडी प्रमुख कुलमां आव्या, आवे अनें आवशे. कूखने विषे गर्नपणे उपन्या ने, उपजे ने अनें उपजशे पण जे योनी मारगे जन्म पणे निकलवुं ते कोइ निकल्या पण नथी निकलता पण नथी अने निकलशे पण नही एटले जन्म्या पण नथी, जन्मता पण नथी अने जन्मशे पण नही ॥ १९॥ ॥एवीरीत ने पण ए जगवान श्रीमहावीरस्वामी, माहणकुंमनगरमां रूषजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदा तेनी कूखमां आव्या ॥ २० ॥ तो हवे महारो ए आचार ने के जे वखते जे इंडहोय ते इंड ते वखतें अरिहंत, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव ए जो अंतप्रांत तुछ दरिडी प्रमुख यावत् ब्राह्मणना कुलोमां आवी उपन्या होय तो

तेने अंतप्रांतादिक नीच कुलोमांथी लइने, उग्र, जोग, राजन्य,क्षत्री, हरिवंश इत्यादिक उत्तम कुलोमां संहरावे, ए कुलोमां लावी मूके, नीच कुलमां जनम थवा आपे नही, ए सर्व त्रणे कालनां जे इंद्रहोय तेमनी मर्याद छे तो निश्चे हुं पण जगवान श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमांथी लइने ज्ञातक्षत्री, ज्ञात सिद्धार्थक्षत्री, तेमनो काश्यप गोत्र, तेनी जार्या त्रिशला क्षत्रीयाणीनी कूखमां गर्जपणे मूकुं,एवुं तेमना जाग्य प्रमाणे विचारीनें इंद्रमहाराजें, हरणीगमेषी नामा देव जे पायदल कटकनो मालेक छे तेने बोलावीने एवीरीतें कह्युं ॥२१॥ के निश्चे हे देवाणुप्रिया! आ वात थइ नथी,थाती नथी ने थासे पण नही जे श्रीअरिहंतादिक शिलाका पुरुषो छे ते अंतप्रांतादिक नीचकुलोमां आव्या, आवे अने आवशे ॥ २२ ॥ अने जो कोइ नीचकुलमां आवेतो ते, लोकोमां अछेरो कहेवाय, अनंता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालथी जो कोइ अरिहंतादिकोनो नीचगोत्रकर्मनो क्षय न थयो होय, वेद्युं जोगव्युं न होय ते उदय आवे तो श्रीअरिहंतादिक नीचकुलमां आवे खरा पण तेनो ते नीचकुलमां योनि मार्गे जन्म नथाय ॥ २३ ॥ अने ए जगवान श्रीमहावीरस्वामी, जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंडगामे ऋषजदत्तब्राह्मणनी जार्या देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां उपन्या ॥ २४ ॥ तो अतीत, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणेकालें जेवारें जे इंद्र होय तेनो ए आचार छे जे श्रीअरिहंतादिक जो नीचकुलमां आवी उपजे तो तेने उग्रादिक उंच कुलोमां लइ मूकवुं ॥२५॥ तेमाटे हे देवाणुप्रिया! तमे जाउ ते जगवान श्रीमहावीर स्वामीनें ब्राह्मणकुंडगाम नगरने विषे ऋषजदत्त ब्राह्मणनी जार्या देवानंदानी कूखमांथी लइने, क्षत्रीयकुंड नगरने विषे सिद्धार्थ राजा तेनी जार्या त्रिशला क्षत्रियाणी छे तेनी कूखमां गर्ज पणे जइ मूको अने

त्रिशला क्षत्रियाणीनो जे गर्भ ने ते देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां मूको आ महारी आज्ञा तत्का ल करीनें पाछी सोंपो अर्थात् ए काम करीने पाछुं मने आवी कहो के जे आपे फरमास करी ते काम हुं करी आव्यो छुं एवुं कहो ॥ २६ ॥ ॥ इहां कोइ प्रश्न करेके इंद्रमहाराजनें एज विचार केम उपन्यो जे देवानंदानी कूखमांथी अपहरीने त्रिशलाराणीनी कूखमां संक्रम ण करावयो केमके ते वखतमां बीजा पण श्रेणिक प्रमुख महोटा महोटा राजा हता तेमने तो संजाख्या नही अने ए सिद्धार्थ तो सामान्य राजा हतो तेने याद कर्यो तेनुं शुं कारण हशे? एनो उत्तर एम ने जे सहु सहुनां पोत पोतानां जाग्य प्रमाणे देवोने पण करवानी बुद्धि उप जे ने, कर्मथी उपरांत करवानी शक्ति देवोमां पण नथी इहां पण पूर्वेला जवमां त्रिशलारा णीनो जीव देराणी हतो अने देवानंदानो जीव जेठाणी हतो बन्ने एक घरमां रहेती हती, परंतु कषाय महा बलवान ने जो जीव रुडुं करवानी चाहना करे तो कषाय माठुं करी आपे हवे लोजना वशथी जेठाणीयें देराणीनो रत्नकरंमीयो चोरी लीधो देराणीयें संजाख्यो पण लाधो नहीं तेवारे बे जणीयोने घरनी मांहोमांहे घणाघणी बोलाचाली थइ तोपण जेठाणीयें करंमीयो आप्यो नही तेना प्रजावथी कर्म बंधाणुं ते कर्म देवानंदानें उदय आव्यो, त्रिशला नी देवादार हती तेथी इंद्रने पण एवोज विचार स्वाजाविक पणे आवीगयो जे त्रिशलाराणी नेंज पुत्र रत्न देवरावुं तेमाटे हे जव्य प्राणीयो तमे जूर्ठ के जे जीव जेवुं शुजाशुज करशे ते जीवने तेवुं शुजाशुज मलशे ए उत्तर कहेवुं. इहां कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए जगवानने गर्जमां जे आयो पाठो कर्यो ते तमे दीठो तो नथी तेवारें अमे केम मान्य करीयें ? एवो प्रश्न करे तेने कहेवुं के तमारा मतमां पण जागवतना दसमस्कंधना बीजा अध्यने बलदेवनुं

परागर्भ थयुं छे वली पुराणने विषे पण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थया छे ते देवतायें काढ्या छे ए उपर मांधाता राजानी कथा कहे छेः-विशाला नगरीयें वनराजा महाधनवान छे परंतु ते अपुत्रीयो छे माटे पुत्र थवा सारुं सोलशे स्त्री परण्यो तो पण तेने पुत्र थयो नही तेथी ते राजा घणो चिंतातुर थयो जेमाटे शास्त्रमां कह्युं छे के "अपुत्रस्यगतिर्नास्ति, स्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वा, स्वर्गंगच्छतिमानवाः ॥ १ ॥ ॥ अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियो थाय तेवारे ते राजायें कोइकना उपदेशथी अठाशी हजार तापस ऋषियोने नोतरीनें भोजन कराव्युं तेत्रीशक्रोड देवता आराध्या, तथापि कोइमां पुत्र आपवानी शक्ति न दीठी तेवारें अठ्याशी हजार ऋषियोने पूछ्युं जे स्वामी तमें पेटज भरी जाणो छो पण म्हारुं काम करता नथी एवुं राजानुं बोलवुं सांभली एक तापस बोल्यो जे हे राजन्! ताहारे पुत्र थाय एवो उपाय हुं जाणु छुं, हुं तुजने सोनाना कचोलामां पाणी मंत्रीने आपुं ते पाणी ताहारी स्त्रीनें पीवरावजे तेथी ताहारे पुत्र थाशे पछी राजा पाणी मंत्रावीने कचोलो भरी घेर लइ आव्यो एटलामां तो सर्व राणीयोये पुत्र संबंधी वात सांभलीने प्रत्येक जुदीजुदी राणी राजाने कहेवा लागीके पाणी अमने आपो एम मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो, राजायें विचार्युं जे हवे हुं कोने पाणी आपुं अने कोने न आपुं! एम चिंतवी कोइने पाणी आप्युं नही पछी ते कचोलुं लेइ वस्त्रे ढांकी पाणीयारा उपर राखीने राजा पोताने आवासें आवी सुइ रह्यो एटलामां रात्रीयें राजाने तृषा लागी त्यारे पाणी मगाववा सारुं पासे कोइ माणस हतो नही पण एक दासी तेनी शय्या पासे सूतीहती तेने कह्युं के अरे दासी तृषा लागी छे माटे पाणी लइ आव ते दासीयें जइ मंत्रेलुं कचोलुं पाणीनुं भरेलुं हतुं ते आणी आप्युं

राजायें पण अजाणतां पीधुं ते पाणीना प्रभावथी राजाये गर्भ धारण कर्यो. [illegible]
पेट वधवुं गयुं तेथी राजा लज्जायमान थयो थको सनामां पण आवे नही, प्रधाने विचार्युं जे
ए गणुं खोटुं काम थयुं पछी राजाने कह्युं पाछा अठ्याशी हजार ऋषीउने नोतर्या अने उवांनो
दीधो जे तमे आ शुं कर्युं ? हवे करार करो. पछी ऋषीउयें तेत्रीश कोटी देवतानुं आराधन कर्युं तेवा
रें ईंद्र आवी पोताना सेवकोने हाथे राजानुं उदर विदारीने मांहेथी गर्भ काढ्यो तेवारे सर्वे बोल्या
जे ए धावी शकशे नही पछी ईंद्रे स्त्रीनुं रूप करी धवराव्यो क्रमेक्रमे वधवा लाग्यो तेनु मांधता एवुं
नाम दीधुं इत्यादि अनेक वातो छे माटे गर्भ पण परावर्तन थाय छे ए वात निःसंदेह छे इति मांधा
तादृष्टांत ॥ हवे ईंद्रे हुकम कर्या पछी हरणीगमेषी देवता पायक्कटकनो मालेक ते खुशीथइने
हाथजोडीने मस्तकें अंजली करीने आज्ञाने विनय सहित प्रमाण करीने इंद्रमहाराजनी पा
सेथी निकलीनें ते हरणीगमेषी उत्तरपूर्वनी वच्चमांनी इशानखुणमां आवीनें वैक्रियसमुद्घात
करे ते केवीरीतें तोके पोताना जीवना प्रदेश शरीरमांथी बाहेर काहाडीने समुद्घात करे सं
ख्याता योजननो उंचो दंडकरे, जीव प्रदेश कर्मपुद्गलनो समूह दंडरूप करीने प्रगट करे ते
दंड रत्नमय करे ते रत्न केवी जातिउना होय ते कहे छे. १ कर्केतनरत्न, २ वैडुर्यनीलरत्न, ३ व
ज्ररत्न, ४ लोहिताक्षरत्न, ५ मसारगलरत्न, ६ हंसगर्भरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सोगंधिकरत्न, ९
ज्योतिःसाररत्न, १० अंजनरत्न, ११ अंजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ सुभगरत्न, १४ अं
करत्न, १५ स्फाटिकरत्न, १६ अरिष्टरत्न, ए शोल जातिनां रत्न तेना असार पुद्गलने वांमीने
सार पुद्गल ग्रहण करे ॥ २३ ॥ करीने उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप तिहांहिज राखे, न
वुं रूप करीनें, मनुष्यलोकमां आवे, केवीगतियी मनुष्यलोकमां आवे ते कहेछे. एक चंमा, थी

जी चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चारगतियें करीनें चालतां तो केटलोएक काल वीतीजाय तोपण मनुष्यलोकमां आवी शके नही ? ते चारगतिनुं प्रमाण कहेछे. २८३५८० एटले बे लाख त्रियाशीहजार पांचशेंने एंशीयोजन अने एक योजनना सात नाग करीयें तेवा ७ नाग उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं नरतो चाले ते प्रथम चंमा गतिनुं प्रमाण जाणवुं तथा ४७२६३३ एटले चारलाख बहोंतेर हजार ठशेंनें तेंत्रीश योजन अने त्रीश कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं नरतो चाले ते बीजी चपलागतिनुं मान जाणवुं तथा ६६१६८६ एटले ७ लाख एकसठ हजार ठशे ठयाशी योजन अने चोपन कला उपर एटला क्षेत्रनुं एक मगलुं नरतो चाले ते त्रीजी जयणागतिनुं मान जाणवुं तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पचाश हजार सातसें चालीश योजन अने अढार कला उपर एटला खेत्रनुं एक मगलुं नरतो चाले ते चोथी वेगागतिनुं मान जाणवुं ए चार गतिना प्रमाण कह्यां हवे ए गतियोना प्रमाणथी जो देवता चाले तो ७ महीना सुधीमां पण आ मनुष्य क्षेत्रमां आवी शके नही तेमाटे दिव्य देवगतियें करी असंख्याता द्वीप समुद्र उल्लंघन करतो थको जिहां जंबूद्वीपनुं नरतक्षेत्र तिहां ब्राह्मणकुंम गाम नगर तेमां रुषनदत्त ब्राह्मणनो घर तेमां जिहां देवानंदा ब्राह्मणी सुती ठे तिहां आव्यो, आवीनें नगवानने देखी प्रणाम करीने, देवानंदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइनें अशुन्न पुजल दूर करीनें शुन्न पुजल (घालीने) प्रक्षेप करीनें कहेतो हवो के हे नगवन् आज्ञा आपो एवुं कहीने, नगवानने पीडा रहित देवप्रनावे करीने हाथमां ग्रहण करी करसंपुटमां लइने, जिहां क्षत्रियकुंम नगर त्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजाना घरमां जिहां त्रिशला क्षत्रियाणी ठे तिहां आवीने तेना सर्व परिवारनें

चित्र ९

देवानंदा ब्राम्हणी सुतेली
छे



चित्र १०
दासी
त्रिशला राणी सूता छे
हरणी गमेषी देव गर्भ संक्रम णकरे छे

अवस्वापिनी निद्रा आपीने अशुभ पुद्गल बाहेर काढाडीनें शुभपुद्गल प्रक्षेपीने नगवाननें पीडा रहित त्रिशलाराणीनी कूखमां मूक्या. दशमाद्वारथी देवे प्रवेश कस्यो अने नाजियी पाछो नि कस्यो एवुं वृद्ध वाक्य छे. पछी त्रिशलाना गर्भमां पुत्री हती तेने त्यांथी लइनें देवानंदानी कूखमां गर्भपणे मूकीने जे दिशायी देवता आव्यो हतो ते दिशाये पाछो चाल्यो गयो ॥ २८ ॥ तिहां चंमा चपलादिक चारगतियी अधिक दिव्य देवगतियें करीने तीर्ग असंख्याता द्वीप समुद्रमांथी अइने लाखयोजनना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको उंचो जिहां सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने जिहां शक्रेंद्रनामे देवताउंनो राजा छे तिहां आव्यो आवीनें शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कहुंके तमे कहुं ते सर्व काम करी आव्यो छुं ॥ २९ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे, श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामीनें वर्षा कालनो त्रीजो महीनो पांचमुं पखवाडियुं आसु वदि तेरशने दिवसें व्याशीमी रात वीतीगइ अने त्र्याशीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा नगवाननी अनुकंपाने लीधे ईंड्रे मोकलेला हरणीगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुंमगाम नगरमां रुषजदत्तब्राह्मणनी जार्या देवानंदा ब्राह्मणी छे तेनी कूखमांथी लइने जिहां क्षत्रियकुंम गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजा नी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्यरात्रिनेविषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आव्यां थकां पीडा रहित मूक्या ॥ ३० ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान त्रणज्ञान सहित आवी उपन्या तिहां मुजने इहांथी संहरण करशे एवुं जाणे पण संहरणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नही अने संहरण कस्या पछी जाणे जे मने संहरण कर्युं एवुं जाणे. जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामीनें देवानंदानी कूखथी लइने त्रि

शला क्षत्रियाणीनी कूखमां गर्नपणें मूक्या ते रात्रियें देवानंदा ब्रह्मणी पोतानी सुकोमल शय्या मां सूति कांइक जागतीने सुपनुं आव्युं के मद्दारा जे मद्दामंगलकारी चौद स्वप्नां हतां ते त्रिशलाक्षत्रियाणीयें खेंची लीधां एटले हरणकर्यां एवुं सुपनुं देखीने जागी ॥ ३१ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदानी कूखमांथी लइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वासिष्ट गोत्रवाली तेनी कूखमां मूक्या ते रात्रिमां त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामां सूती हती ते शय्यानुं स्वरूप आवीरीतें कह्युं ने तिहां प्रथमतो जेनुं स्वरूप कहेवामां आवे नही एवुं तो वसवानुं घर ने ते घर कहेवुं ने तोके ते घरनी मध्य एटले नींतनी मांहेनी वाजु चित्रें चित्रित ठे अने नींतनी वाहेरनी वाजुने घसीने धोली चलकादार करी ठे एवुं ते घर ठे जिहां उपरनो नाग चित्राम सहित ठे अने जमीननो नाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय तेवो ठे तेथी ते घरमां सर्व अंधकारनो नाश थइगयो ठे, अने नित्य उद्योत रहे ने वली जेने विषे जमीन उपर अनेक मांमणा मांम्या ठे एवुं आंगणुं ठे वली आंगणे सरस सुगंधि पांच वर्णना फूलनां पुंज मूकेला ठे ते फूलोनी रचना सहित ठे तथा कृष्णागर नलो कुंदरु शिलारस तेनो धूप तेणे घमघमायमान ठे तेणे करी मनोहर ठे सुगंध प्रधान चूर्णनो गंध ठे जिहां, गंधवट्टी समान ठे. तिहां पुण्यवंतने योग्य जेनुं वर्णन करवामां न आवे एवी शय्या ठे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासें उशीसा तकीया राख्या ठे, बे पासे गालमसूरीयां मूकेलां ठे, बे पासें उंची ठे,मध्यमां ऊंमी ने, जेम गंगानदीनी रेतिमां पग मूकीयें ते नीचो जाय तेम जेमां पग मूकतां नीचो जाय ते समान नीखाखा अतलसना पटकूल वस्त्रें ते खाट ढांकी ने, नली मछरदानीयें रचित, रजत्राणवाना वस्त्र लाल रमणीक सुकोमल वस्त्रे ढांकी ने, आकडानां फल मांहेलो कपास तथा माखण ते सरखो ते श

व्यांनो स्पर्श छे, जखुं सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे विछाव्यां छे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमां त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामां सुती छे ते वेलायें गजवृषभादिक चौद सपना देखीनें जागी ॥२१॥ ॥ तेवारें ते त्रिशलाक्षत्रियाणी ते चौद सपनामांथी पहेले सपनें हाथी देखे ते हाथी कहेवो छे तो के? चार दांत वालो छे, घणो उंचो छे, जेवा मेघ नां छांटा धोला थाय तेवो धोलो छे, तथा जेवो मोतीनोहार, क्षीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रुपानो पर्वत एना सरखो धोलो छे, वली ते हाथीनाकुंभ स्थलमांथी मद झरे छे तेथी तेना कपोल पासें भमरा गुंजारव करी रह्या छे, इंद्रना ऐरावत सरखो महोटो देखाय छे, ते हाथी मेघनी पेरें गंभीर शब्दें गाजतो थको छे, शुभ उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, महोटा पेट वालो एवो हाथी पहेले सपने त्रिशलाक्षत्रियाणीयें दीठो ॥ ॥ १ ॥ २२ ॥ ॥ तेवार पछी बीजे सपने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषभ देखे ते वृषभ कहेवो छे तोके? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत छे, तथा पोताना शरीरनी कांतियें करी सर्वदिशा उमा उद्योत करतो थको छे, तथा घणी शोभाना समूहे करी शोभित एवी खांधानी खूंधि छे जेनी एवो छे वली तेना शरीरमां पातला केश छे ते केश जाणे तेलें चोपड्या होयनहि ? एवा छे, घणो रुडो स्थिर शरीर छे, वली जिहां जेवुं अंग जोइयें त्यां तेवुं अंग छे, जेवुं एटले जिहां पातलुं अंग शोभे तिहां पातलुं छे अने जिहां जाडुं अंग शोभे तिहां जाडुं अंग छे तथा दृढ गोल शोभायमान मलरहित तेलादिकें चोपड्या तीखां एवा बे शींगडा छे जेनां तथा मोती सरखा उजला बरोबर सरखा शोभता दांत छे जेना एवो वृषभ तें जाणीयें अनेक मंगलनुंज मुख होय नहि? तेने बीजा सपनामां त्रिशलायें दीठो ॥२॥२३॥ ॥ तेवार पछी त्रीजा सपनामां त्रिशला राणी

सिंहने देखे ते सिंह कहेवो छे तोके? मोतीनोहार, खीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोळुं शरीर छे जेनुं वली ते सिंह रमणीक देखवा योग्य छे, तथा दृढ छे हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वली उज्वल गोल अने तीक्ष्ण एवी जेना मुखमां दाढा छे तेणे करी मुख शोभतुं छे जेनुं, वली कमल सरखा सुकोमल राता एवा जेना होठ छे, राता कमलना पत्रनी परें सुकोमल तालवुं छे, जीभ बाहेर काहाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे छे, वली पीला अने वीजली सरखां चलकतां चंचल जेनां नेत्र छे, वली विस्तीर्ण पुष्ट अने माता एवा साथल छे जेना, स्कंध जेनुं दृढ प्रतिपूर्ण निर्मल छे, वली सुकोमल छे भला विस्तीर्ण एवां जे सिंहकेसरा इहां केसरा एटले मुखना केश जाणवा तेने आटोपे करी शोभित छे मुख जेनुं, वली जमीन उपर पछाडीने फटकारीने उंचुं कर्युं छे पुंछ जेणे एवा पूछडानो अंत एटले छेडो कानमी वचमां छे वली सौम्याकारवालो लीला करतो थको आकाशमांथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमां पेसतो थको तीक्ष्ण नखवालो सिंह त्रिशलायें त्रीजा स्वप्नामां दीठो ॥ ३ ॥ ३५ ॥ ॥ ते वार पछी चोथा स्वप्नामां त्रिशलाक्षत्रीयाणी संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रमा सरखुं छे मुख जेनुं एवी लक्ष्मीदेवताने देखे ते लक्ष्मी किहां रहे छे ते कहे छे. उंचो हिमाचल पर्वत तेनी उपर एक पद्मद्रह छे ते द्रहमां एक कमल छे तिहां रहेवा वाली लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लइने सर्व अंगनी शोभानुं वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे छे केमके प्रायें देवताना रूप वर्णनमां पगोथी वर्णन कराय छे माटे आंहीं पण पगोथी मांमीने वर्णन करे छे, ते लक्ष्मीदेवीना पग भले प्रकारें करी सोनाना काचवा सरखा जाणे लाखने रसे रंग्या मांस सहित एवा नचमां अति उंचा अने

पगमाटे नम्या एवा ने तया त्रांबा सरखा नख ने, कमल सरखा कोमल आंगलां ने तया पिंडिउं गेल सरखी गोल ने नीचेनीचें पातली अने उपरउपर जाडी एवी जंघापिंडियो ने तया गुप्त मांसयी नेगला ने माटे गुप्त ने गाढ वेलाय नहीं तथा ऐरावत हाथीना सरखो जं घानो यगलो प्रवेश शोने ने, सोनानी कटिमेखला ने केडमां जेनी, वली लक्ष्मीदेवीनी मूटी थी ग्रहनें मान सुधी रोमराजी ने, प्रायें स्त्रीयोना शरीरमां रोमराजी होती नथी तेमां वली देवताने तो सर्वथा नहीज होय तोपण कवीश्वर शृंगाररस वर्णन करतो बोले ने, हवे ते रो मराजी कहेनी ने तोके कज्जलनीपेरे तथा जमरानी श्रेणीनी पेरे श्याम ने, मेघघटा सरखी काली ने, सरल सलेला यका सुकोमल, मनोहर विलास सहित सरस सूका फूल सरखा को मल ने, वली नाभिमंडल वर्त्तुं ने जेनुं, मुष्टीमां समाइ जाय एवी कटि ने, पेटमां त्रण वल पड्या तेथी शोनाये मान ने, वली सर्वांगोपांगमां घरेणा आनूषण पहेरेलां ने जेने ते घ रेणा कहेवां ने तोके अनेक प्रकारना मणियोयें करी जडेला ने, रत्नोयें करी सोनामां मढ्या ने, वली स्तनयमां चे मान ने ते जाणे सोनाना कलश ज होय नहिं ? एवां ने, वली ते स्तन हारें करी तया कुंदमालायें करी व्याप्त ने तथा नवां मोतीयोनां जालीयां तेणेकरी विराज मान शोनेवानी माला व्यापक मणिसूत्रनो दोरो ने तेणेकरी कंठ शोजायमान ने, बे कानोमां कुं डल बे शोने ने, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानुं मुख शोने ने, जेम राजा कुटुंबयी शोने ने तेम लक्ष्मीदेवीनुं मुख घरेणायी शोने ने वली निर्मल कमलनी पांखडी सरखा दीर्घ तीखां अने अणीयालां एवां महोटां नेत्र ने जेनां बे हाथमां कमल ने तेमांथी पाणी टटकावती थकी ने, वली लीलाने वास्ते हाथमां कमलवींजणो धरेलो ने, ते जेवारें कमल लीलाने सारुं

हलावे तेवारें कमलमांथी सुंगध नीकले वली लक्ष्मीदेवीने मस्तकें वेणीदंम घणो निर्मल नखो कालो ठे लांबो केड सुधी शोजे ठे एवी ठे. ए नखयी मांमीने मायानी वेणीसुधा वर्णन कखुं. एवी लक्ष्मीदेवता पद्मद्रहना कमलमां वसती हिमाचलनामा पर्वत उपर वेठी थकी दशदिशायी शोजायमान ठे वली हायी श्रावी सूंढमां पद्मद्रहयी जल जरीनें लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी लक्ष्मीदेवताने त्रिशलाक्षत्रियाणीयें चोथा स्वनमां दीठी ॥ हवे हिमाचल पर्वत उपर लक्ष्मी देवता नो निवास ठे तिहां ए देवीनो परिवार केटलुं ठे तथा निवास केवा प्रकारनो ठे ते कहे ठे. आ जरतखेत्रना ठ खंम ठे तेना अंतमां उत्तरदिशा तरफ एक चुलहिमवंत पर्वत सोनानो ठे ते एकसो योजन उंचो ठे, तथा एक हजार वावन योजन अने बार कला उपर, एटलो पोहोलो ठे, तेमध्यें पद्मद्रह ठे, ते दश योजन उंमो, हजार योजन लांबो, पांचशें योजन पोहोलो ठे संपूरण जलेकरी जखो शाश्वतो ठे, तेनुं तलीयुं वज्ररत्नमय ठे, चोफेर पण वज्रमय ठे, ते द्रहना मध्यजागें एक कमल ठे, ते कमलनुं नाल दश योजननुं दीर्घ ठे, जलथी उपर बे कोश उंचुं ठे, एक योजन पोहोलुं ठे, एक योजन दीर्घ ठे, कांइक जाजेरा त्रण योजननी परिधी ठे, दश योजन पाणीमां नाल ठे, तेनुं वज्र रत्नमय मूल ठे, रिष्ट रत्नमय मूलनो कांदो ठे, इंद्रनील रत्नमय नाल ठे, राता सुवर्णमय बाहेरना पांदडां ठे,कांइक जांबूनंद सुवर्णमय अभ्यंतरनां पांदडां ठे, तेमां सुवर्णमय कर्णिका ठे, एटले वचली मोमी ठे,ते बे कोश पोहोली अने एक कोश उंची ठे, तिहां रातां सोनानां केसरां ठे ते कर्णिकामां श्री लक्ष्मी देवीनुं जवन ठे,ते एक कोश लांबु, अर्धो कोश पोहोलुं अने चउदशें चालीश धनुष उंचुं ठे,ते घरनां बारणां पूर्व,दक्षिण अने उत्तर एवी त्रण दिशायें ठे, ते बारणां पांचशें धनुष उंचां अने अढीशें धनुष पोहोलां ठे, वली ते घरमां

अढीशें धनुष प्रमाण एक मणिमय पीठिका छे, ते पीठिका उपर लक्ष्मी देवीनी शय्या छे, हव
लिहो ए देवीनां मुख्य कमलनी पांखडियें लक्ष्मी देवीने आजरणादिक मूकवानां वलयाकारें
एकशो ने आठ कमलो छे, ते कमलोनुं सर्व उंच नीचपणुं मुख्य कमलथी अर्द्ध प्रमाणे जा
णवुं. ए एकसोने आठ कमलें करी ते मूल कमल वींटेलुं छे, जेम गढें करी नगरी विंटायेली
होय छे, तेम जाणवुं, हवे ते मूलगा कमलना बीजा वलयनी पूर्व दिशायें महर्द्धिक चार
देवीउने वसवानां चार कमल छे, तथा वाव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानकोण, ए त्रणे
दिशायें देवीना सामानिक देवताने वसवानां चार हजार कमल छे, तथा श्री देवीनी अभ्यंतर
पर्षदानां जे आव हजार गुरुस्थानीय देवता छे, तेने वसवानां आठ हजार कमल, अग्नि
कोणें छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवानां दश हजार कम
ल, दक्षिण दिशायें छे, तथा श्री देवीनां बाह्य पर्षदाना किंकर स्थानीय बार हजार देवताने
वसवानां बार हजार कमल, नैरुत कोणें छे, अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, म
हिष, नाट्य, गंधर्व. ए सात कटकना स्वामीने रहेवानां सात कमल, पश्चिम दिशायें छे.
हवे वली लक्ष्मी देवीना अंगरक्षक शोल हजार देवताने वसवानां शोल हजार कमल, ते
त्रीजा वलयनी चार दिशामांहेली प्रत्येक दिशाने विषे चार चार हजार कमल करतां शोल
हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्री देवीना अभ्यंतर आभियोगिक बत्रीश लाख
देवताने वसवानां बत्रीश लाख कमल छे, तथा पांचमां वलयने विषे श्री देवीना मध्यम
चालीश लाख आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमल छे, तथा छहा वलयने विषे
श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमल छे; एवं

मूल कमल सहित सर्व मली ठ वलयनां एक क्रोड, वीश लाख, पच्चाश हजार, एकसो ने वीश कमल जाणवां. ते कमलनां मान मुख्य कमलथी मांमी अनुक्रमें अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण लेवां. ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार जाणवो. ए देवी नवनपति मांहेली जाणवी ॥ ए चोथुं स्वप्नं कह्युं ॥ ४ ॥ ३६ ॥ इहां वीजो वखाण संपूर्ण थयो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो वखाण कहे ठे. तेवारपठी वली त्रिशलाराणी पांचमां स्वप्नमा फूलोनी माला देखे ते मालामां रस सहीत कल्पवृक्षना फूल, तेणे करी घणी मनोहर ठे, वली चंपानां फूल, अशोकनां फूल, पुन्नागनां फूल ते नागप्रियंगु सरखा ए फूलनां ऊाड थाय ठे, मोगरानां फूल, मालतीनां फूल, जायनां फूल, जूइना फूल, कोछ्नज फूल ते कोइ वेलि विशेषना फूल, कोजनां फूल, कोरंटनां फूल, दमणाना फूल, नवमालिकानां फूल, वकुलवृक्षनां फूल, तिलवृक्षनां फूल, वासंतिकानां फूल, पद्मकमलनां फूल, उत्पलते पुंमरीकनां फूल, कुंदमचकुंद वृक्षनां फूल, अगथियाना फूल, आम्रमांजर एवा प्रकारनां फूलोनी घणी सुगंध ठे जेमां एवी वे फूलोनी माला तेनी मनोहर गंधथी खेंचाणा थका आव्यां एवां जे नमरा नमरीयो तेनो गुंजारव शब्द जेनेविषे थइ रहेलो ठे. वली ए वेउ मालामां सर्व ऋतुनां फूल सुगंधा पांच वर्णी ठे परंतु तेमां धोलो वर्ण विशेष ठे, ते ज्यां ज्यां जे जे फूल शोने त्यां त्यां ते ते फूल गुंथ्यां ठे एवी वे माला पांचमां स्वप्नें त्रिशलादेवीयें दीठी ॥ ६ ॥ ३७ ॥ ॥ तेवार पठी ठ्ठा स्वप्नमां त्रिशला देवी चंद्रमा देखे ते चंद्रमा कहेवो ठे तोके ? गायना दूधना फीण सरखो उजलो ठे, रूपानां कलश सरखो धोलो ठे, वली हृदय नेत्रने वल्लन, संपूर्ण पुर्णिमाना अंधकारने हरवा वालो, वली शुकलपक्षमां शोजायमान, कमुदवननो वोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोजाने करवा

वालो, वलीरीतें रजता कावनी परें शोनायमान, आकाश रूप तलावनो हंस येव पहें करी पूर्ण, सर्व ज्योतिषियाना मुकुटनुं मंडन, अंधकारनो वेरी, कंदर्पबाणनो पुरवा वालो, समुद्रनां जलनो वधारवा वालो केमके जेवारें शुक्लपक्षमां चंद्रमा उगे तेवारें समुद्रनी वेल वधे, विरहिणी स्त्रीनें चंद्रना उदयथी अधिक विरह जागृत थाय तेमाटे विरहियोने किरणोये करी शोषण करवा वालो, आकाशनुं तिलक, रोहिणीना हृदयनें वल्लभ केमके चंद्रमा रोहिणीनो नरतार ने एवी लोकोमां केवत ने परंतु रोहिणीतो नक्षत्र ने ते थने नही. एवो पूर्णिमानो चंद्र त्रिशलादेवीयें वडा स्वप्नामां दीठो ॥ ६ ॥ ३० ॥ ॥ तेवार पठी त्रिशलाराणी, सातमें स्वप्ने सूर्यदेवने ते सूर्य कहेवो ने तोके? अंधकारनां पडलने फोडवा वालो, वली रातो वर्ण ने तेवणे कहेवो ने तोके? राता अशोक सरखो, केशूडानां फूल सरखो लाल ने, जेवुं पोपटनुं मुख लाल होय, जेवी अर्द्ध चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल ने, वली कमलनां वननो उद्या डवा वालो ने, तेमाटेज कमलनी शोजा करवा वालो ने, ज्योतिष शास्त्रनो तथा ज्योतिषचक्रना चिन्ह सरखो उजवालणनो करवा वालो ने, आकाशमां दीवानी पेरे शोने ने, उगतो थको हेमना समूहने हाथथी गरदन पकडीने काढाडवा वालो, वली ग्रहोनो राजा ने, रात्रिनो नाश करवा वालो ने, वली उगतीवेलाये तथा आथमति वेलायें बे घडी पर्यंत सुखे दीठामां आवे पछी सुखें दीठामां आवे नहीं, वली रात्रिना विचरवा वाला जे चोर आदिक तेमनुं भ्रमण मटाडवा वालो, वली शीत टालवाने मथन करवा वालो, मेरुपर्वतने शाश्वति निरंतर महोटा मंगल सहित नमवा वालो, वली सूर्यना हजार किरणोये करी सर्वज्योतिषीयोनी प्रजा मटी गइ माटे इहां सूत्रकारोजे सूर्यनी हजार किरणो कहे ने ते जघन्यआश्रित लिखे ने अने लोकमां

पण सहस्र किरण कहेवानी रूढी ने परंतु सूर्यना किरणोमां तो महीने महिने वध गट थाय ने ते आ प्रमाणे जे चैत्रमां बारसें किरणो, वैशाखमां तेरसें किरणो, ज्येष्ठमां चौदसें किरणो आषाढमां पन्नरसें किरणो. श्रावणमां चौदसें किरणो, नादरवामां चौदसें किरणो, आसोमां शोलसें किरणो, कार्त्तिकमां अगीआरसें किरणो, मार्गशिरमां एकहजारनें पच्चाश किरणो, पौषमां हजार किरणो, माघमां साडादशसें किरणो, फाल्गुनमां अगीआरसें किरणो, एवो सूर्य लोकोना चक्षु समान त्रिशलादेवीये सातमे स्वप्ने दीठो ॥ ७ ॥ ३९ ॥ ॥ तेवार पछी आठमें स्वप्ने, त्रिशलामाता, ध्वजा देखे ते ध्वजा कहेवी ठे तोके ? सोनानो जेने दंम ठे ते उपर रहेली ठे, पांच वर्णना वस्त्रनी ध्वजा ठे, वली ते ध्वजानी उपर सुकोमल अनेक रंगनां मोरपीठ धर्यां ठे ते चोटी सरखा शोनायमान ने तथा घणो श्रीकार ठे, तथा ते ध्वजामां सिंहनुं रूप लख्युं ठे तेणेकरी वली बहुज शोने ठे ते सिंह कहेवो ने के जेवो शंख उजलो, कुंदवृक्षनुं फूल उजलुं, जलनो कणीयो उजलो तथा रूपानो कलश उजलो होय तेवो श्वेत वर्णे ठे; जे सिंहनें देखीने लोक एवुं समजे के आ सिंह आकाश मंमल नेदवाने उद्यम करे ठे के शुं ? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीराकृति ठे, जे ध्वजानुं वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडुं थोडुं च लायमान थइ रह्युं ठे, वली घणो उंचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आठमां स्वप्नामां त्रिशला देवीयें दीठो ॥ ८ ॥ ४० ॥ ॥ तेवार पछी, नवमां स्वप्नमां, श्रीत्रिशलादेवी, पूरण कलश देखे ते कलश कहेवो ने तोके ? उत्तम देदीप्यमान ठे रूप जेनुं, निर्मल जलथी नर्यो थको घणोज सुंदर ठे, सूर्यमंमल सरखी जाज्वल्यमानशोना ठे जेनी, वली जे कलशनी पासें कमलनी वाडी ने एटले कमलोथी वींटयो थको ठे वली ते कलश सर्वे मंगलोनो मलाववा नाजो ने,

वली ते पूरण कलश, प्रधान रत्नोनुं कमल तेना उपर धरेलुं ने, नेत्रोने आनंद आपवा वाला ने, सर्व दिशाउंमां उद्योत करतो थको सर्व लक्ष्मीनो घर तेनी परें सर्व पाप रहित सर्व शोभा सहित लक्ष्मीनो निवास ने, वली जे कलशने गलामां व ऋतुना सुगंधि फूलोनी माला ने, एवो पूरणकुंभ जलो रूपामय ते नवमे सपने त्रिशलाराणीयें दीठो ॥ ए ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ तेवार पनी, दशमां सपनामां त्रिशलादेवी पद्मसरोवर देखे ते पद्मसरोवर कहेवुं ने तोके ? जे सरोवरमां उगता सूर्यथी उपज्यां एवां हजार पांखडीना कमलो ने, ते विकस्वरमान कमलनी वासनायें करीने जेनुं पाणी सुगंधमय थयुं ने, वली ते कमलोनी प्रनायें करीने पाणी लाल पीला रंग जेवुं देखाय ने, वली जे पद्मसरोवर ज लमत्स्य कछपादिक जलचर जीवोयें सेव्युं थकुं रह्युं ने, वली जे पद्मसरोवरमां कमल पत्र उपर पड्यो जलनो ढांटो तेणे करी जाणे नीला आंगणामां मोती जड्यां होय नहि ? एवुं देखाय ने, वली ते महोटुं सरोवर ने तेमां सूर्यविकासी कमल, चंद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म श्वेत कमल, रातां कमल, इत्यादिक कमलनी शोभा बनी रही ने तेथी घणुंज रमणीक थयुं ने, वली ते कमलो उपर प्रसन्नथया एवा ज्रमर ज्रमरीयो आवीने गुं जारव करी रह्यां ने ॥ ग्रंथा ग्रंथ ॥ २०० ॥ वली तिहां कादंबक हंस, चकवा, राजहंस, ब गला, सारस, एवा पंखीयोयें करी शोने ने, अर्थात् ए जातियोना पंखीयो तिहां रहे ने, ए वो पद्मसरोवर त्रिशलादेवीयें दशमां सपनामां दीठुं ॥ १० ॥ ४२ ॥ ॥ तेवार पनी अगीआ रमां सपनामां त्रिशलादेवी खीरसमुद्र देखे ते खीरसमुद्र कहेवो ने तोके ? चंद्रमाना किरणोनी जेवी शोभा तेवी शोभा ते समुद्रमां ने, वली चारे बाजु जे समुद्रनुं जल वृद्धि पामे ने, वली

तेमांथी चंचलथी पण घणा चंचल एवा घणा उंचा कल्लोल उठी रह्या छे, ते कल्लोलेंकरीने पाणी घणुंज चंचल थयुं छे, वली मंदमंद वायराथी चलायमान थया जे कल्लोल ते समुद्रना तट उपर आवीने जफाका खाइ रह्या छे, तेनो शब्द थइ रह्यो छे जेनेविषे ते कल्लोलोथी समुद्र शोजी रह्यो छे, वली ते कल्लोल मल्या थका दोडता छे एटले एक कल्लोलनी पछवाडे वीजो कल्लोल दोडी रह्यो छे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले, वली महोटो कल्लोल चाले, एवी कल्लोलोंनी शोजा छे जेने विषे, वली जे समुद्रमां जलचर जीव कल्लोल करी रह्या छे, ते केवा जातिनां तोके महामगरमछ, तिमिंगलमछ, लघुमछ ते सर्वं परस्पर मल्या थका रमत करे तेवारे तेमनां पूंछना उलालवाथी उछल्युं जे पाणी तेमांथी फीण प्रगट थइ ते फीण कल्लोलोथी तणाइने किनारापर आवी पडे छे, तेनां ढगला थइ गया छे ते ढगला सर्वं कपुरना ढगला सरखा देखाय छे, वली जे समुद्रमां गंगा प्रमुख नदीयोना पाणी पडे छे तेमां चौद चौद हजार नदीयोना परिवार साथे गंगा अने सिंधु ए बे जरतक्षेत्रनी नदीयो पडे छे. एमज चौदचौद हजार नदीयोना परिवार साथें ऐरवतक्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवती ए वे नदीयो पडे छे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे रोहिता अने रोहितासा ए वें नदीयो हेमवंतक्षेत्रनी पडे छे तथा अठावीश अठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे सुवर्णकुला अने रूपकुला ए वे नदीयो ऐरण्यवतक्षेत्रनी पडे छे तथा छपन्न छपन्न हजार नदीयोना परिवार साथे हरिकंता अने हरिसलिला ए वे हरिवर्ष क्षेत्रनी नदीयो पडे छे तथा छपन्न छपन्न हजार नदीयोना परिवार साथें नरकांता अने नारिकांता ए वे नदीयो रम्यकक्षेत्रनी पडे छे तथा पांच पांचलाखनी उपर बत्रीश बत्रीश हजार नदीयोना परिवार साथें सीता

अने सीतोदा ए बे नदीयो महाविदेह क्षेत्रनीपडे छे, सर्वमली चौदलाखने छपन्न हजार न दीयोनुं पाणी जे समुद्रमां पडे छे इहां कोइ प्रश्न करे के सूत्रमांतो खीरसमुद्र स्वप्नमां दीठो एवो पाठ कह्यो छे अने तमे तो नाना प्रकारनी वेलाये वधतो पाणी कहोवो तथा नदीयो मांहे जाय छे एवो कह्यो छो तेनुं शुं कारण छे? तेने उत्तर कहे छे जे खीरसमुद्रनो पाठ कहेवा थकी लवण समुद्र लेवो कारणके जो लवणसमुद्र नही कहेशो तो गंगा अने सिंधु नदीयो पडे छे ए पाठ पण सूत्रकारेंज कहेलो छे ते पाठ मलशे नही माटे इहां एम समजवुं के लवणस मुद्रनुं पाणी मोलुं छे ते स्थानके त्रिशला माता ए लवणसमुद्रनुं पाणी खीरसमुद्र सरखुं देखे छे एवो अगीआरमे स्वप्ने खीरसमुद्र त्रिशला देविये दीठो ॥ ११ ॥ ४३ ॥ ॥ तेवार पछी बारमे स्वप्नें, त्रिशला माताये देवविमान दीठुं ते कहेवुं छे तोके? पुंडरीक उत्कृष्ट वि मान छे तेमां उत्तम सुवर्णमणीनां एकहजारने आठ थंजोये करी विराजमान छे वली ते वि मान आकाशमां दीपकनी पेरें दीपी रह्युं छे, उद्योतमां सूर्यमंमल सरखी शोजा छे जेनी, वली जे विमानमां सोनानी जींतोमां नागफणा खीला गेक्या छे, वली स्थानकें स्थानकें दिव्यफूल मालाउ, सुवर्ण पत्रेंकरी लंबायमान एवी मोतीयोनी मालाउ लटके छे, वली ते विमाननी जींतमां मृग हरणना रूप, नाहारना रूप, बलदना रूप, घोडाना रूप, मगरमछ, जारंमपंखी, गरूड, मयूर एमनां रूप, सर्पनां रूप, किन्नरदेवोनां रूप, कस्तुरीया मृगनां रूप, सर्दूलसिंहनां रूप, हाथीनां रूप, वनलता, पद्मलता, एमनां रूप चित्रामणमां छे, वली जे विमानमां नाटक थइ रह्यां छे ते नाटकमां जे वाजिंत्रो वाजी रह्यां छे तेना शब्दें करी पूराणुं एवुं ते विमान छे, वली जे विमानमां मेघगाजे तेना सरखो देवडुंजीनो शब्द थइ रह्यो छे तेथी जाणीये छेयं

के सर्व जीवलोक संसार ते शब्दथी पूरण कर्यो छे अर्थात् ते शब्द सर्वत्र फेलाइ गयो छे, वली ते विमानमां, अगर, कुंदरु, शिलारस, एमना धूपनो मघमघायमान धूप सुगंध थइ रह्यो छे, वली जे विमानमां देवोने योग सदाउद्योत थइ रहेलो छे, देवोने योग्य सर्वदा सात सुखनो निवास रूप एवुं देवविमान त्रिशला मातायें बारमां स्वप्नमां दीठुं ॥ १२ ॥ ४४ ॥ ॥ तेवार पछी त्रिशलाक्षत्रियाणीए तेरमे स्वप्ने रत्नोनो ढगलो दीठो तेमां कयां कयां रत्न छे. १ पुलकरत्न २ वज्ररत्न, ३ नीलरत्न, ४ ससांकरत्न, ५ कर्केतनरत्न, ६ लोहितरत्न, ७ मरकतरत्न, ८ प्रवाल रत्न, ९ स्फाटिकरत्न, १० सौगंधिकरत्न, ११ हंसगर्भरत्न, १२ मसारगल्लरत्न, १३ अंजनरत्न, १४ चंद्रप्रभरत्न एवा वीजा पण अनेक जातिनां उत्तम रत्न ते सोनानां म्होटा थालोमां ज रेलां ते रत्नोनो ढगलो कहेवो छे तोके? मेरुपर्वत जेटलो उंचो, आकाशमां देदीप्यमान एवो रत्ननोनो ढगलो त्रिशला देवीयें तेरमां स्वप्नामां दीठो ॥ १३ ॥ ४६ ॥ ॥ तेवार पछी चौदमे स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीयें निर्धूमअग्निदीठो ते अग्नि कहेवो छे तोके? घणो उजलो निर्मल पीलो अने लाल वर्ण वालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्निमां अनेक न्हानी शिखाउ छें वली तेथी कोइक शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पण वली कोइक शिखा उंची केटलीएक शिखाउ वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालायें करी अग्ननी शिखा मली रही ने वली जे अग्निमां अनेक ज्वालायो मांहोमांहे मली रही छे, एवा धूम्ररहित अग्निनी ज्वालाउ ते कोइ आकाश प्रदेशमां चालती होय तेनी पेरें घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशला देवीयें चौदमां स्वप्नामां दीठी ॥ १४ ॥ ४८ ॥ ग्या स्वप्नामां बारमें स्वप्ने देवतानुं विमान कह्युं ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी आवीने ...

नी कूखमां आव्यो होय तेनी माता विमान देखे अने जे तीर्थंकरनो जीव नरकथी निकली मातानी कूखमां आव्यो होय तेनी माता बारमां स्वप्नांमां भुवन देखे एवो पाठ छे ॥ ॥ एवा चौदे स्वप्नां देखीनें त्रिशला राणी जागृत थइ ए स्वप्नां केवां छे तोके? शुभ छे, सौम्य जलां छे, घणुं रूडुं वखन छे दर्शन जेमनुं, जलुं रूप छे जेमनुं, एवां स्वप्नां देखीने त्रिशला माता जागी ते केवी छे तो के? जेवा कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थयां छे जेना, हर्षना वशथकी सर्वअंग हर्ष सहित होतुं हतुं, सर्व रोमराजी उल्लसित थइ ॥ ए चौद स्वप्नां सर्व तीर्थंकरोनी माताउ देखे, जेवारें तीर्थंकर गर्भमां आवे तेवारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पण श्रीमहावीर स्वामी कूखमां आव्या तेना योगें चौद स्वप्नां देखीने शय्यामां जागती हवी ॥ ४७ ॥ तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वे कह्या एवां चौद स्वप्नां देखीने जागती थकी घणीज पोतानां हृदय मां खुशी थइ, संतोष पामी, जेवुं मेघनी धाराये करी हणाएुं कंदब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे उल्ला सपाम्या छे रोमकूप जेनां, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते स्वप्नाने याद करे जे अनुकर्में में एवां एवां स्वप्नां दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट ऊपर पग आपीने हेठी उतरे उतरीने नही उतावली एटले मनमां उतावल नथी तथा कायाथी चपल पणुं नथी, र स्तामां ठोकर रहित, विलंबरहित, गीत प्रमुखना उंछीगणने न लेती थकी, राजहंसी सरखी गतिये करी चालती थकी जिहां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी शय्या छे, जिहां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढ्या छे, तिहां आवी, आवीनें, सिद्धार्थक्षत्रियराजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी वाणी तोके? जे सिद्धार्थराजाने वल्लभ लागे, सिद्धार्थराजा एवी वाणीनी सर्वदा वाहना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित एवी तथा सर्वना मनने गमती एवी तथा वल्लभपणानी चेतवणी

करवा वाली तथा स्वर अक्षरें करी स्पष्ट एवी तथा कल्याणनी करवा वाली एवी तथा वृद्धिनी करवा वाली एवी तथा निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित एवी तथा धनना लाभनी करवा वाली एवी तथा मंगलनी करवावाली, श्रीकार अलंकारादि शोभा सहित, हृदयमां कोमल लागे एवी, वली जे वाणी सांभलवाथी मनमां आनंद थाय एवी, वली कोमल, मीठी रस युक्त, जेमां वचन थोडा अने अर्थ घणो एवी वाणीयी त्रिशलादेवी पोताना जरतारने जगावती हवी ॥ ४८ ॥ • ॥ तेथी सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशला राणी सिद्धार्थराजानी आज्ञायी नाना प्रकारना मणिरत्नथी चितर्यो एवो सोनानो बाजोट मणिरत्नोथी जड्यो ते उपर पलोंठी वालीने बेठी, रस्तानो खेद मटाडीने सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्यें जेवी रीते पूर्वें वर्णन करी आव्या एवी वाणीयें करी कहेती हवी ॥ ४९ ॥ ॥ हे स्वामी ! निश्चें हुं आज पूर्वोक्त शय्यामां कांइक सुती कांइक जागती थकी, में गज वृषभ आदिदेइ जे पूर्वें कही आव्या ते चौद स्वप्नां दीठां, देखीने जागी, ते महोटा स्वप्नांनुं फल जाणुं जे कांइ फलवृत्ति फलनुं पामवुं कांइ थाशे ? एवुं त्रिशलायें पोताना जरतारने पूछ्युं ॥ ॥ ५० ॥ तेवारें सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवो अर्थ सांभलीनें, हर्ष संतोष पामीनें, चित्तमां आनंद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमां फेल्यो, जेम मेघनी धारायें छंटायेलुं एवुं कंदवृक्षनुं फूल तेनी पेरें उल्लसित थयो थको, सांभलीने तेनो विचार कर्यो, पोताना स्वभाव प्रमाणे पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ ग्रहण कर्यो, अर्थ ग्रहण करीने त्रिशलाराणीने मीठे वचने करी एवुं कहेतो हवो ॥ ५१ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया ! तें मनोहर स्वप्नां दीठां, तें कल्याणकारी स्वप्नां दीठां, शिवकारी, धनकारी, आरोग्यकारी.



चित्र १७

घणा दीर्घायुना करवा वाळा एवा तें स्वप्नां दीठां ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ३०० ॥ तेनुं फल आवी रीते छे. हे देवाणुप्रिया ! तमोने अर्थनो लाभ थाशे, तमोने जोगनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चे नवमहीना उपर साडासात दिवस गये थके अमारा कुळमां ध्वजा समान, अमारा कुळमां दीप समान, अमारा कुळमां दीवासमान, अमारा कुळमां पर्वत समान स्थिर, अमारा कुळमां शिखर समान, अर्थात् मुकुट समान, अमारा कुळमां तिलक समान, अमारा कुळमां सूर्यसमान, कुळनो आधार, कुळनी वृद्धिनो करवा वाळो, कुळनी कीर्त्तिनो करवा वाळो, कुळना निर्वाहनो करवा वाळो, कुळना यशनो करवा वाळो, कुळमां वृक्षसमान, घणा लोकोने तत्रछायामां राखवाथी कुळनी विशेष वृद्धिनो करवा वाळो एवो पुत्र थाशे. वळी सुकोमळ छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेंद्रिय परवडां छे जेनां. लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित, मानोन्मान प्रमाण सर्व शरीर सुंदर, चंद्रमानी पेरे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा योग्य, एवो पुत्र तुजने थाशे ॥ ५१ ॥ ॥ ते पुत्र कहेवो थाशे तोके ? बाळक अवस्था छांमीने जेवारें विज्ञान अवस्थामां आवशे तेवारे सर्व कळाउं मात्र देखवाथीज जाणी लेशे पण तेने शीखाववुं पडशे नही. वळी युवान अवस्थामां शूरवीर, महादानेश्वरी, सप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोते अंगीकार करेली वातना निर्वाहने करवा वाळो, संग्राममां वीर एटले पाछो जागे नही, जमीन उपर राज्य करवा वाळो, घणा हाथी घोडा रथ पायदळ प्रमुखनो माळक एवो, राजाउंनो राजा थाशे ॥ ५२ ॥ ॥ तेमाटे तमे उदारकारी यावत् स्वप्नां दीठां एवीरीतें सिद्धार्थराजा बे वार त्रणवार त्रिशला राणीने कहे, प्रशंसा करे, तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात

सांजलीनें हर्ष संतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने, मस्तकें अंजली करीनें, एवुं कहेती हवी ॥ ५४ ॥ ॥ हे स्वामी ए अर्थ एमज छे, तमे कह्युं ते तहत्त छे, संदेह रहित छे, जे प्रमाणेमें वांछयोहतो हे स्वामी तेज प्रमाणेमें आपना मुखथी ग्रहण कर्यो, एम हे स्वामी जे तमे कह्यो छो ते अर्थ सत्य छे एवीरीतें वारंवार कहेती थकी एम कहीने, स्वप्नानां अर्थने रुडीरीतथी अंगीकार करीनें, सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने, नानाप्रकारना मणीये जडित एवा सोनानां बाजोट उपरथी उठीने, नही उतावली, नही धीरी एवी पूर्वें कहेली रीत मुजब चालती थकी जिहां पोतानुं शयन घर छे तिहां आवीने एम कहेती हवी ॥ ५५ ॥ ॥ जे महारे उत्तम स्वप्नां दीठमां आव्यां तो हवे महारे सूवुं नही, जो सुइजाउं तो वली कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्वप्नां आवीजाय तो ए रुडा स्वप्नांनुं फल जातुं रहे तेमाटे देव गुरु संबंधि रूडी मंगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूरण करुं एवुं कहीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोतें जागती बीजाने जगावती विचरे ॥ ५६ ॥ ॥ तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थ राजा कौटुंबिक जे सेवक पुरुष तेमने बोलावीने एम कहेतो हवो ॥ ५७ ॥ उतावलथी हे देवाणुप्रिय! आज सारीरीतें बाहिरनी उवठाणशाला जे कचेरी छे तेने गंधोदकथी सींचो, कचरो कांटो काहाडीने साफ करो, लींपो, लींपीने पछी प्रधान सुगंधि पांचवर्णना फूल तेना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुगंधना चूर्णनी गोली, अगरबत्ती उखेवो, सुगंधे अभिराम करो, सुगंधे वासित करो, गंधनी वाटमूको, आ काम तमे करो, बीजा कोइनी पासें करावो, आ महारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो ॥ ५८ ॥ तेवारे कौटुंबिक पुरुष एवुं सांभली घणाज खुसी थइने, हाथजोडी तहत्ति करीने, सिद्धार्थ

राजा पासेथी निकलीने ज्यां बाहेरनी सना ने त्यां आवीनें गंधोदकादिक गंटया आदिक सर्व काम राजाना हुकम प्रमाणे करीने यावत् तिहां सिंहासन मांमीने जिहां सिद्धार्थक्षत्रियराजा ने त्यां आवीने हाथजोडी मस्तकें अंजली करी कहेता हवा के हे स्वामी! जे आपे फरमाव्युं ते सर्व काम अमे करी आव्या एम कही आज्ञा पाछी सोंपी ॥ ५९ ॥ ॥ तेवार पछी कांइक रातुं धोलुं पीलो प्रजात थयुं, सूर्यविकासीकमल फूल्यां, चंद्रविकासी कमल कुमलाणा, उज्वलप्रजात थयुं, सूर्य उग्यो ते सूर्य केहेवो ने तोके? राता अशोक सरखो लाल ने,केसुना फूल सरखो लाल ने, सूडाना मुख सरखो लाल, अर्द्ध चिणोठी सरखो लाल, मा मोलीयो जीव थाय ने तेना जेवो रातो. बकोरीयाना फूल सरखो लाल, कबूतरना पग नेत्र सरखो लाल, जासूसना फूल सरखो लाल, हिंगलुना ढगला सरखो लाल ए पूर्वे कही जे वस्तु तेथी कोइ पण लाल वस्तु होय तेथी पण अधिक लाल एवो उगतो सूर्य, कमलाकर नामे तलावने विषे घणा कमलोने उघाडतो थको एवो सूर्य उग्यो, हजार करणनो धरनार, दिवसनो करवा वालो, तेजेकरी जलजलायमान,जेना किरणोथी अंधकार नाश पाम्यो ने, चोरना प्रचारने टालनारो, बालिकानी जाणीयें कुंकुनी पीयाली ते सरखो, लाल, ते सूर्यनो नवो तावडो (तडको) ते तावडे करी जाणे कुंकु सरखो सर्व मनुष्यलोक लाल थयो ने, एवुं प्रजात थयुं, ॥ ६०॥ तेवारें राजा शय्याथी उठीने बाजोठ उपर पग मूके,बाजोटथी हेठो उतरे,उतरीनें, जिहां मल्लयुद्ध करवानी शाला ने तिहां आवीनें,मल्लयुद्धशालामां प्रवेश करीने,अनेक प्रकारनी मल्लयुद्धनी कलाउ करीने थाका पछी, सो ओषधीना पाकनुं तेल, हजार ओषधीना पाकनुं तेल, सुगंध प्रधान तेल प्रमुख बीजा पण तेल जे धातुनी वृद्धि करवा वालां, जठराग्निनें

दीपाववा वालां,कामदेवनी वृद्धि करवा वाला, मांसने पुष्ट करवा वाला, बलवृद्धि करवा वाला, सर्व इंद्रिय शरीरने उल्लास करवा वाला, जेना अभ्यंगन थकी चामडीमां तेजनी वृद्धि थाय एवां अनेक जातिनां तेल ते तेलना मसलवा वाला कहेवा छे के घणा चतुर, जेमना हाथ पग घणा सुकोमल छे, ते तेलने मसलतां थकां हाथना तलांनो जे मल ते शरीरमां समावी आपे, एवी क्रियामां दक्ष, परिपूर्ण छे हाथ पग जेना, अवसरना जाण, उतावलथी कार्यना करनार, सर्व मर्दन करवा वालामां उत्कृष्ट, विवेकवंत, बुद्धिवंत डाह्या, पंडित, मसलतां थकां हारे नही, एटले परिश्रमना जीतवा वाला इत्यादिक गुणना जाण पुरुषो ते केवी रीतें तेल मसले तोके जे थकी हाडने सुख थाय एटले हाडने सुखकारी, मांसनें सुखकारी, चामडीने सुखकारी, रोमने सुखकारी ए चारेनें सुखकारी एम ए पूर्वोक्त तेल ते उपर कह्या प्रमाणे मसलवाथी राजाने थाक मट्या पछी सिद्धार्थराजा मल्लशालाथी निकलीने॥ ६१ ॥ जिहां स्नानकरवानुं घर छे तिहां आवीने स्नान घरमां पेठा, ते स्नान घर कहेवुं छे तोके ? मोतीयोनी जालीयोनां गोखला छे जेमां,विचित्र मणिरत्ने जडित धरती तल छे जेनुं,तिहां रमणिक स्नान करवानो मंडप छे तेमां अनेक प्रकारना मणिरत्नोये करी जड्या चित्र्या एवा अनेक बाजोट छे तेना उपर राजा सुखें बेठो. हवे स्नान करवानुं जल, कहेवुं छे ते कहे छे. फूलना गंधवालुं जल, चंदन कपूरादि वासित जल, उष्णजल, शुद्धजल, गंगा प्रमुखनुं निर्मलजल, एवा जलथी कल्याणकारी प्रधान मज्जननी विधियें स्नान करे तिहां घणा प्रकारनां जल उछालवा प्रमुख कौतुक करीने कल्याणकारी स्नानना अंतमां कमल सरखा सुंवाला गंधवस्त्रथी अंग लुह्युं पछी घणां मोघां वस्त्र पहेर्यां, नवा रस सहित गोशीर्ष चंदनथी शरीरने लेपन कर्युं, पवित्र माला पहेरी,

चित्र १८





वर्ण कुंकुमादि विलेपन कर्या पछी मणि जडित सोनाना घरेणा पहेर्या, वली अढार सरो हार, नवसरो हार, त्रीशसरो हार, लांबा जूमखां प्रमुख घरेणां तथा कनदोरो पहेर्यो तेथी शोनवा लागो, गलामां कंठीउ प्रमुख पहेर्या, आंगुलीउमां वींटी, वेड प्रमुख पहेर्या, केडोमां फूल प्रमुखना घरेणां धारण कर्यां, कडा जडाव कडा, जडाव वहेरखा पहेर्या, भुजा प्रमुखमां भुजबंधादिक पहेर्या तेणे भुजा थंभित थइ छे, तेथी घणुं श्रीकार रूप छे तथा कानोमां कुंमल पहेर्या तेणे करी शोनायमान मुख थयुं, मस्तकें देदीप्यमान मुकुट धार्यो, हारप्रमुखे करी सुशोभित थइ छे गाती जेनी, वींटीयोथी पीली थयली छे अंगुलीउ जेनी तथा लांबा वस्त्रे करी कर्यो छे उत्तरासंग जेनुं, अनेक प्रकारना मणिरत्न निर्मल घणा मूल्यना माहा कारिगरोनां घड्यां देदीप्यमान वली रचनायें करी एकमां बीजा घरेणां मलेला तेथी मनोहर देखाय छे तथा वीरवलयने धारण कर्यो ए घरेणो जे शूरवीर होय तेने राजा बक्षीश आपे छे एटले मान आपवानुं घरेणुं छे ते कोइक तो कहे छे के ए घरेणुं हाथमां पहेराय छे वली कोइ कहेछे ए वीरवलय कानमां पहेराय छे हवे घणुंवुं वर्णन करीयें ते सिद्धार्थराजा साक्षात् कल्पवृक्ष सरखो थयो, जेम कल्पवृक्ष पत्र, पुष्प, फल सहित शोभे तेम सिद्धार्थराजा घरेणाथी शोभे छे तथा पुरुषोमां इंद्र समान, कोरंट वृक्षनां फूलोनी माला सहित एवुं छत्र मस्तकें धरावतो थको, श्वेत चामरोथी वींजातो थको, जिहां लोकोयें मंगलिकना जय जय शब्द कर्या छे, वली १ अनेक गणनो नायक एटले पोताना घरमां जे मनुष्य छे तेनो मालक, २ दंमनायक देशनी चिंतानो करवा वालो, ३ हाथीयोनो इश्वर ४ राजानो पुत्र, ५ कोटवाल, ६ मांमवीया, ७ कुटुंबना स्वामी, ८ न्हाना प्रधान, मसोटा प्रधान, ए मंमलिक, १० महामंमलिक, ११ ज्योतिषी, १२ दरवान, १३ जे

राजासार्थें जन्म्या ते अमात्य, १४ पीठी मर्दनना करवा वाला, १५ नगरना चोवटीया, १६ चोधरी, १७ वाणीया, १८ शेठ, १ए सेनापति, २० सार्थवाह, २१ दूत, २२ देशनी सिंधीना रखवाला एटले सिंधिपालक तथा व्यवहारीया, २३ अंगरक्षक, २४ पुरोहित, २५ वृत्तिनायक, २६ वहिवाहक, २७ यक्षआयत, २८ पडुपडिआयत, २ए टाकटमाली, ३० इंद्रजाली, ३१ फलमाली, ३२ मंत्रवादी, ३३ धनुर्वादी, ३४ दंमधर, ३५ धनुर्धर, ३६ खड्गधर, ३७ छत्रधर, ३८ चामरधर, ३ए पताकाधर, ४० नेजाधर, ४१ दीवीधर, ४२ पुस्तकधर, ४३ जारीधर, ४४ तांबूलधर, ४५ प्रतिहार, ४६ शय्यापालक, ४७ गजपालक, ४८ अश्वपालक, ४ए अंगमर्दक, ५० आरक्षक, ५१ मिष्टवचनबोलनारा, ५२ कथाकहेनारा, ५३ सत्यबोलनारा, ५४ गुणना बोलनारा, ५५ समस्याना बोलनारा, ५६ पारसीजाषा बोलनारा, ५७ वैयाकरण पाठी, ५८ तर्क पाठी, ५ए साहित्य बंधक, ६० लक्षण बंधक, ६१ छंद बंधक, ६२ अलंकारना जाण, ६३ नाटक बंधक, आंहीं त्रेसठ नाममां जे सिंधीपालक कह्युं ते राजाना सीमाडीया राजा सार्थे सीमसेढानां वांधा पडवाथी राजाने विरोध थाय तेवारें सीमकाढी निवेडो करी आपे तेने सिंधीपालक कहीयें तेना दृष्टांत उपर कथा कहे छे. कौशंबीनगरीमां जितशत्रुराजा राज्य करे छे. तेने प्रधान, पुरोहित, शेठ, सेनापति, जंमारी, सिंधीपाल इत्यादिक घणो परिवार छे सहु सहु पोत पोताना अधिकारमां सावधान छे हवे कोइक पुरुषें राजाने कह्युंके तमारा बधा सेवको काम करे छे पण सिंधीपालतो तमारुं अनाज खाइने खोटुं करे छे माटे एनो तपास करवो, तेवारे राजायें सिंधीपालकने कह्युं के तमे मनचिंतित द्रव्य खाउ छो अने कार्यतो कांइ करता नथी तेवारे सिंधीपालक बोल्यो हुं महोटा काम करी आपुं, [illegible]

आपुं अने मित्रता होय तेमां विरोध पाडे। आपु, अनेक गुण...
गुण ने, पछी राजायें परिक्षा निमित्तें पोतानो डुसमन अरिमर्दन राजा ने तेनी सार्थे मेलाप करवा
माटे नेटणा सारुं एक मावलो सीवी आप्यो ते राजाने आपजो अने वेर टाली आवजो एवुं
कही सिंधीपालकने मोकल्यो सिंधीपालक त्यांथी चालतां केटलेक दिवसें अरिमर्दनराजा पासे
जइ नेटणुं मूकी पगेलागीने कहेवा लाग्यो जे हे राजन्! जितशत्रुराजायें तमोने सलाम कही
ने अने नेटणुं आप्युं ने, राजाये ते नेटणुं छोडयुं तेमांथी मावडो निकल्यो ते कपाव्यो तेमां
वली घणे पडें बांधेली एक सोनानी मावली निकली तेना बंधन छोडयां तेवारे मांहेथी राख
निकली तेवारे प्रधाने कह्युं तमारा वैरीयें राख मूकी ने, ते राख चोपडी तमे जोगी थाओ, ते
सांजली राजा क्रोधातुर थयो तेवारें सिंधीपालके जाण्युं जे राजायें वेर सांध्युं एवुं चिंतवी च
त्पातनी बुद्धियें करी कहेवा लाग्यो के हे राजन्! तमे उलटो विचार म करो, ए राख बहु गुण
कारी ने राजायें पुन्युं एमां शो गुण ने? सिंधीपालक बोल्यो अमारा राजायें यज्ञ कीधो हतो
तेना उपर असंख्य द्रव्य खरच्युं ते यज्ञ पूरण थयाथी तेनी नस्म तिलक करवाने अर्थे सर्व राजाउ
ने मोकली ने एमां कांइ विरोध नथी एनुं प्रनातकालें तिलक करतां जन्मांतरनां पातक टले अने
सोनाग्य पामे, ते सांजली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्युं जे में वैरनावथी अवलुं विचार्युं पण
एणे तो वेर टालवा ए उपकार कर्यो ने पछी राजायें ते सिंधीपालकने घणुं सन्मान आपी, एक
महीना सुधी पोतापासे राखी पणा हाथी घोडा आनरण देइ पहेरामणी करीने शीख आपी,
तथा हवे तमारा राजासार्थे अमारे परम मित्राइ ने एवो पत्र लखी आप्यो ए सर्व नेट लइ
सिंधीपालक पोताना राजा पासें आव्यो राजाने पत्र दीधो सर्ववस्तु पण आपी तेवारें राजा

विस्मय पाम्यो,वली राजायें पटराणीने कह्युंके तुं ताह्यरे पीयरे जा, जेवारें हुं नामांकितमुद्रिका मोकलुं तेवारे तरत आवजे पण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नही, पछी ते राणी पीयर गइ पाछलथी राजायें सिंधीपालकने कह्युंके मह्यरी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तेने तमे तेडी लावो तो तमारी अकल खरी जाणुं, पछी सिंधीपाल तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरनां गाममां गयो राणीने खबर पडी तेवारें राणीयें तेडाव्यो अने कह्युंके तुं मुजने मलवा केम नाव्यो तेणे कह्युं हुं तीर्थवासी थयो छुं तेथी संसार संबंधि कोइ कार्यमां पडतो नथी, राणीयें कह्युं धन्य ताह्यरा अवतारने तोपण मने राजाना समाचार कह्यो तेवारे सिंधीपालक माथुं धूणावीने कहेवा लाग्यो के राजायें ह्मणा कोइक राजानी पुत्री परणवानो आदर कर्यो छे ते कन्या घणी रूपवंती छे तेने पटराणी करवा धार्युं छे एवी वात सांभली राणी उतावली पाछी पोताने घेर आवी राजायें पुछ्युं तमे तेड्या विना उतावलां केम आव्यां तेवारे राणी रीश आणीने बोली जे तमे नवी पटराणीने घेर जाउ छो तो ह्वे मुने शावास्ते तेडो एवो उलंभो सांभली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजायें सिंधीपालकने तेडावी भ्रांतभांगी राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, सिंधीपालकने घणा वस्त्र आभूषण आपी सन्मान्यो ॥ एम सिद्धार्थराजानी सभामां एवा सिंधीपालक आदिदेइने शेठनापुत्र सेनापति बुद्धिवंत प्रमुख घणा बेठा छे॥ इति सिंधीपालक कथा ॥ इत्यादिक बावीशथी आदि लइने त्रेसठ पर्यंत टीकाकारें लख्या छे एमना परिकरसाथें परवर्यो थको सिद्धार्थराजास्नानघरथी निकलीने सभा मंडपमां आवे छे ते कहेवो शोभे छे तोके धवलमेघनी घटामां जेवो सूर्य निकले तेनी पेरे शोभे छे वली जेवा नक्षत्र ग्रह प्रमुखना तारामां चंद्रमा शोभे तेवो लोकोमां राजा शोभे एवो मज्जनघरथी निकलतो शोभायमान थयो थको

नरपति, नरोमां इंद्र, नरोमां वृषभ समान, नरोमां सिंहसमान, घणी अधिक राजतेजनी लक्ष्मी
थें करी दीपतो थको,स्नानघरथी निकलीने ॥ ५१ ॥ ॥ जिहां सजानी शाला छे तिहां आवीने
॥ बेशीने पोताथी उत्तर
सिंहासन उपर पूर्वदिशानी सन्मुख मोढोढुं करीने बेठो ॥ ५२ ॥
अने पूर्वदिशानी वचमांनी ईशानकूणमां आठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढांकेला श्वेत सरसव अने
श्वेत धान कृत्य। मंगल अर्थे पूजीने थापे अने एक पडदो एटले पडदो बांधे ते पडदो केहेवो
छे तोके? नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली छे,सर्व लोकने देखवा योग्य, घणामूल्यनी, नला
पाटणमां नीपजेली,रेशमना वस्त्रनी, अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषभ, घोडा, मनुष्य,मत्स्य,
पंखी, सर्प, किंनर, अष्टापद, चमरीगाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक अनेक रूप
जे पडदिमां मांड्या छे एवी पडदी बांधी, (पडदी एटले पडदो जाणवो) ते पडदीनी मांहेली
बाजुयें, अनेक जातिना मणिरत्ने करी जडित रूडा सुंवाला गादलां सहित मशरुंने वस्त्र
विशेषें ढांक्युं तेनी उपर श्वेत वस्त्र आछाद्युं, सुकोमल अंगने सुखकारी स्पर्श छे जेनो एवो रूडो
एक बाजोठ त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पछी सिद्धार्थराजा कौटुंबिक पुरुषने
बोलावीने एम कहे ॥ ५३ ॥ ॥ के शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवाणुप्रिया, अष्टांग महानि
मित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवा वाला, अनेक प्रकारनां शास्त्रमां कुशल, स्वप्न शास्त्रमां
कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो इहां आठ अंगनां नाम कहे छे. तेमां प्रथम फर
कण विचार अंग तेमां शरीर फरके तेनो विचार जेमके स्त्रीनुं मायुं अंग फरके तो सारुं इत्या
दिक वातो जाणवी, बीजुं स्वप्नविचार अंग तेमां उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ एवा स्वप्नांनो
विचार,त्रीजो स्वरविचार अंग तेमां काली चिडी,रूपारेल,शीयाल प्रमुख बोले ते मुजब फल कहे

माय, चोथुं भूमिकंप अंग तेमां भूमिकंपथकी जे शुभाशुभफल तेनां कहेनारां शास्त्र ते भौमविद्या नामे चोथुं अंग जाणवुं, पांचमुं मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते व्यंजनविद्या नामे पांचमुं अंग जाणवुं, छठो हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमां छे ते लक्षणविद्या नामे छठुं अंग जाणवुं, सातमुं उत्पातविद्या ते उल्कापात तारा त्रूटे, मंमल मंमे इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते सातमुं अंग जाणवुं, आठमुं अंतरिक्षविद्यानुं अंग ते ग्रहोनां अस्त उदय वक्र तेना फल जेमां छे ते आठमुं अंग जाणवुं, एवा जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो. एवुं सिद्धार्थराजायें कह्युं त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष सांभलीने घणो खुशी थयो पछी हाथजोडी यावत् सांभलीने तहत्त करीने ॥ ६५ ॥ ॥ सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीने खत्रीकुंम गामनगरनी वचमांथी थइने ज्यां स्वप्न पाठकोनां घर छे त्यां आवीने स्वप्नलक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥ ६६ ॥ ॥ हे स्वप्न पाठको तमोने सिद्धार्थक्षत्रिय राजा याद करे छे तेमाटे हुं तमोने बोलाववा आव्यो छुं तेवारें स्वप्नलक्षणपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना कौटुंबिक पुरुषनी वाणी सुणीने एटले तमोने सिद्धार्थराजा बोलावे छे एवी वाणी सांभलीने, घणाज हर्ष संतोष हृदयमां पामवा लाग्या पछी स्नान मज्जन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने पूजीने, शरीर उपर कौतुकने अर्थें तिलक छापा प्रमुख करीने, दहीं, फाल अने सरसवने मांगलिक माटे करीने इहां डुःस्वप्न प्रमुखनो नाश करवो ए प्रायश्चित्त टालवुं छे, तेमाटे ते करीने, इहां कोइ प्रश्न करेके सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमां तो देवपूजा करवी आवी नही अने आ निमित्तियाउना संक्षेप पाठमां देवपूजा आवी तो शुं सिद्धार्थराजा देवपूजा नही करता ह

ता कता तेथी तिहां रही, मान अने सरसवनी पेरे पाठ नथी तथा ...
निमित्तियाउंने पूर्वे विदाय करीने पछी पूजा करी हशे! केमके सिद्धार्थराजा पण श्रीपार्श्व
नाथ भगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमां अवश्य होवी जोइयें,
वली आगल "णायाकय बलिकम्मा" ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमां चाल्यो छे अथवा कर्त्ता
यें पण ए पाठ सहजनो जाणी नही लख्यो होय!! एम पण संभवे छे पछी केवली गम्य.
हवे स्नानकर शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने, घणा मूल्यनां घरेणां पहेरी सर्व शरीर शोभायमान
करीने, वली पण सरसव अने दर्भ मंगल निमित्ते मस्तके धारण करीने, चालीने, पोतपोताना
घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंड गामनगरनी वच्चमांथी थइने, जिहां सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल
छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व भेला थइने मांहोमांहे विचार करवा लाग्या
के आपणा वर्गमां कोइने महोटो थाप्यो नथी माटे एक जणने महोटो थापो, केमके
वृद्धविना तो अप्रतिबंध टोलुं थाजे माटे मांहोमांहे सघनो अर्थ विचारीने एक महोटाना
मुखथी राजा आगल कहेवरावबुं, पण जणे जणे जुदुं जुदुं बोलवुं नही जो जणे जणे जुदुं
बोलवा जाशो तो आदर पामशो नही जेम न्यायशास्त्रमां कह्युं छे के ॥ यत्रसर्वेविनेतारः
सर्वे महत्वाभिलाषिनः ॥ सर्वे ममत्वमिच्छंति, तत्सीदंति वृंदवत् ॥ १ ॥ जिहां सर्वजण अर्थ
सर थावा जाय अने सर्व अहंकार सहित बोलवा वाला होय, परस्परें ईर्ष्या करवा
वाला होय, सर्व महोटाइ पणाने वांछवा वाला होय तेमनो समुदाय जेम पांचसें सुभट
अनादर पामी दुःख करवा लागा तेम दुःख करे ते पांचसें सुभटनी कथा कहे छे. कोइ
समये इहां तिहांथी आवीने पांचसें सुभट भेला थइ गया, ते रोजगार करवा सारुं देशांतरे

गया तिहां कोइ कोइ राजाउनी पासें बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करतां एक मर्हर्द्धिक महोटा राजाने जइ मल्या तेवारें ते राजायें घोडा, वस्त्र, घरेणां, शस्त्र इत्यादिक सामग्री तेमनी पासे दीठी तेमज ते सुजटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी बोल्यो के तमे कोण छो अने क्यांथी आव्या छो तेवारें ते पुरुषोयें राजाने प्रणाम करीनें कह्युं के हे राजन्! अमे नोकरी रहेवा सारुं आव्या छैयें यावत् तेमनी वातो सांजलीने राजा प्रमुख सर्व सजा खुशी थइ तेवारें राजायें प्रधानने बोलावीने कह्युं के आ सुजटो सारा देखाय छे, आ वरुदार छे, काम पडतां संग्राममां पाछा हटे तेवा नथी एवां राजानां वचन सांजली प्रधान बोल्यो के हे स्वामी! ए सुजट देखवामां तो सारा छे पण असंबंध छे केमके एमनामां कोइ मालेक नथी तेथी काम पडशे तेवारे जागी जाशे तो तमे उलंजो कोने आपशो? एवुं प्रधाने कह्युं तोपण राजा समज्यो नही तेवारें प्रधाने जाण्युं जे राजानुं मन ए सीपाइयोने नोकरी राखवानुं छे एवुं समजीने प्रधाने कह्युं हे महाराज! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमां राखशुं. राजायें पण कह्युं के सुखेंथी परीक्षा करो पछी प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमां उतारो आप्यो अने रातनी वखतें एक ढोलीयो, एक गादलुं अने एक उसीसुं ते सुजटोने उतारे मोकल्यों वली जोजनादिक सामग्री पण घणी मोकली ते सुजटोये जोजन कर्युं पछी जेवारे सुवा लागा तेवारें ढोलीयो देखीने मांहो मांहे पांचसे जण लडवा लाग्या तेमांथी एक बोल्यो के मेरादादा बडाथा, और मेंजी बडाहुं, इस्सें मेंसुउंगा. तेवारें बीजो बोल्यो के एकदिन बनमें सिंह बोलाथा, उसका साद घरमें बेठेबेठे सुनके मेरा बाबाकूं सातदिन तक ताप आयाथा, इस्सें मेंही सबसें बडा हुं, वली त्रीजो बोल्यो के मेरे बडे जइयानें मेके हूए सजाइस कूंपापडो




चित्र १९
राजसभा
सिद्धार्थ राजा
सखीओ सहित
त्रिशलादेवी
निमित्तप्रकाशक जण
च्यार

एक पांवकी लातसें नांजि मारेथे, इस्सें मेंही वडाडुं. वली चोथो बोल्यो के मेरे मामाने एक चंदराकों हराइ दीयाथा इस्सें मेंही वडाडुं, वली पांचमो बोल्यो के मेरा मामाने सातसेरकी खीचडी खाइथी, ठठो बोल्यो के मेंतो ठ गोलीकी ठास पीताडुं, सातमो बोल्यो के मेंतो घरमेंही जंगल जांता डुं,आठमो बोल्यो मेंतो सातदिनतक सोइ रहताहूं जागतानही, नवमो बोल्यो मेंतो थिलीसेंजी फरताहूं, दसमो बोल्यो में कुत्ता नसे जव नाग जाउं,एवीरीते एक कहे हूं सुउं, बीजो कहे हूं सुउं तुं कांइ मालेक नथी, एम अर्धरात्र सुधी लड्या तेवारें तेमां पांच सात जण समजु हता ते बोल्या अरे तमे लडाइ मकरो, ए शय्यानी साहामां पगराखीनें वढाये सूइ रहो ए न्याय सर्वने बराबर जाणवामां आव्यो तेथी सर्वजणो ढोलीया सामा पगराखीनें सूइ रह्या अने बीजी पण सर्व चीजो पाती प्रमाणे वेंची लीधी पठी प्रजात थयुं तेवारें राजाना माणसो जे निगाह करवा रह्यां हतां तेणे जइ राजा आगल सर्ववात कही तेवारें राजायें निवंठीने स र्वने शीख आपी, कांइ आदर पाम्या नही एवुं स्वप्न पाठकें परस्पर विचारीनें एक जणाने मालेक थाप्यो अने जिहां सिद्धार्थक्षत्रियराजा ठे तिहां आव्या आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्द करी वधाव्या ॥ ६७ ॥ ॥ इति तृतियव्याख्यान समाप्त ॥ ॥ अथ चतुर्थ व्याख्यान प्रारंभः ॥ ॥ हवे ते स्वप्नपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने हाथजोडीने जयविजय शब्द करी वधावे अर्थात् हाथ प्रसारीनें आशिर्वाद आपे अने कहेके हे राजा! तमे दीर्घ आयु ष वाला हो, घणी आजीविकाना धणीहो, लक्ष्मीवान्हो, जशवान्हो, बुद्धिमान्हो, कीर्त्ति मान्हो, वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुतिक रीनें अशिर्वाद आप्यो ॥ श्लोक ॥ दशावतारोवः पायात्, कमनीयांजनद्युतिः ॥ किंतुदीपो नहि

श्रीपः, किंतुवामांगजोजिनः॥१॥ ॥अर्थ दश छे अवतार जेना तेने दशावतार कहीयें एवा वली मनोहर श्यामकांतिवाला एवा कोण छे? तेवारें बीजो कोइ कहेके दीप एवुं नाम दीवानुं छे अने दशा एवुं वतीनुं नाम छे वली काजलनी श्यामकांति छे, तेवारे कहे छे के ए दीवो तो नही परंतु श्रीपः एटले श्रीकृष्ण तेना पण दश अवतार थया तेथी कृष्ण हशे केमके कृष्ण काला पण छे अने तेना दश अवतार पण छे, तेवारे कवि कहे छे के दीवो अने श्रीकृष्ण ए बेउ नथी तेवारे ए कोण छे के? श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वामादेवीना पुत्र छे केमके ए दशभव करीनें तीर्थं कर थया इहां अमरभूतिनां भवथी दशभव गणवा वली एमनी श्यामकांति पण छे तेथी पार्श्वनाथ स्वामी छे ते तमारी रक्षा करो. एवो आशिर्वाद सांभलीने सिद्धार्थ क्षत्रियराजायें ते स्वप्नलक्षण पाठकोनें वांद्या, वस्त्रादिक देवाथी पूज्या, सद्गुणेकरी स्तव्या, सन्मान आप्युं, अने पूर्वें तैयार करेला जे आठ भद्रासन छे तेनी ऊपर जूदा जूदा बेसाड्या ॥६८॥ ॥ इहां कोइ कहेके श्रीपार्श्वनाथजीनो श्रावक सिद्धार्थराजा समकेती छे तेणे मिथ्यात्वी एवा स्वप्न पाठकोने केम वांद्युं? हवे एने उत्तर कहे छे एतो लोकोपचार विनय छे तेतो संसारिक पणानो छे पण पूज्यपणाने तथा धर्मना कामने माटे नथी. जेम लौकिकमां जुहार करे तेने पण वंदन कहे छे तेम ए पण जाणवुं ॥ तेवारपछी सिद्धार्थराजा त्रिशलाक्षत्रियाणीने पडदामां बेसाडे ते पण पोताना हाथमां फूलफल लेइने बेसे पछी उत्कृष्ट विनयथी सिद्धार्थराजा स्वप्न लक्षण पाठकोनें कहे ॥ ६९ ॥ ॥ हे देवाणुप्रिया आज त्रिशलाक्षत्रियाणीयें पूर्वें वर्णवी आव्या एवां महोटा गजवृषभादि चौद स्वप्नां ते यावत् अल्पनिद्रामां सुती थकी देखीनें जागी ॥ ७० ॥ ॥ तेथी ए चौद स्वप्नाउं हे देवाणु प्रिया कांइ कल्याणकारी फल थाशे?

॥ ७१ ॥ ॥ तेवारें ते स्वप्नलक्षणपाठक, सिद्धार्थक्षत्रियराजाना मुखथी ए अर्थ सांजली घ
णाज खुशी थया, ते स्वप्नांने हृदयमां धारण कर्यां, अने अर्थ विचारवा लाग्या मांहोमांहे
विचार कर्यो, ते स्वप्नांनो अर्थ ग्रहण कर्यो, मांहोमांहे एक बीजाने पूछीने निश्चय कर्यो,
पछी सिद्धार्थराजानी आगल स्वप्नांनां शास्त्रोनो विचार कहेता हवा ॥७२॥ ॥ ते शास्त्रांतरथी
स्वप्नांनो विचार लखे छे. मनुष्योने नव प्रकारें स्वप्नां आवे ने तेमां प्रथम तो जाणेली वात
स्वप्नामां आवे, बीजी सांजलेली वात स्वप्नांमां देखे, त्रीजो दिवसें दीठेली वस्तु स्वप्नामां देखे,
चोथुं वात, पित्त, कफना विकारथी स्वप्न आवे, पांचमो सहज स्वभावथी स्वप्न देखे अथवा
मलमूत्रादिकनी पीडाथी स्वप्न देखे, छठो चिंतामां पड्यो थको स्वप्न देखे, ए छ कारणथी जे स्वप्नां
आवे ते निष्फल छे एनुं कांइ शुभाशुभ फल प्राप्त थाय नही. सातमो देवतानी सान्निध्यथी
स्वप्नुं देखे, आठमो धर्म कर्ममां रहेलो प्राणी घणो धर्म करे तेने धर्मना प्रभावथी उत्कृष्ट पु
ण्यने योगे स्वप्नुं आवे, नवमो घणा उत्कृष्ट पापनां उदयथी स्वप्न आवे ए पाछला त्रण स्वप्नां
जो प्राणी देखे तो तेनुं शुभाशुभ फल अवश्य थाय खाली न जाय तथा धातुप्रकोपथी वा
युनुं जोर होय तेवारें वृक्ष, पर्वत, टूंक उपर चडवुं तथा आकाशमां उडवुं एवा स्वप्नां आवे
तथा पित्त प्रकोपथी सोनुं, रत्न, सूर्य अने अग्नि प्रमुख स्वप्नांमां देखे तथा श्लेष्म अधिक होय
तेना योगथी अश्व, नक्षत्र, चंद्र, शुक्लपक्ष, नदी, सरोवर, समुद्र इत्यादिक उलंघणा देखे ते नि
ष्फल जाणवां वली गाय, बलद, हाथी, महेल, पर्वत, टूंक एमनां उपर चड्यो एवुं स्वप्न देखे
तो महोटाइ पामे तथा विष्टाविलेपन शरीर देखे तो निरोगी थाय,स्वप्नमां रुदन करे तो हर्षनी
प्राप्ति थाय, स्वप्नांमां राजा, हाथी, घोडो, सोनुं, बलद, गाय,कुटुंब देखे तो कुलनी वृद्धि होय,

तथा प्रासाद उपर चढीने जाणे जमुं छुं एवुं स्वप्न देखे तथा समुद्र तरुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो जो नीचकुलमां तेनो जन्म थयो होय तोपण ते राजा थाय वली दीपक, मांस, फल, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वाना स्वप्नांमां देखे तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमां देखे तो आयुर्वृद्धि पामे तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पण वृद्धि पामे. वली जे कपास, जस्म, हाड अने ठार ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पण सपेत वस्तु स्वप्नांमां देखे तो जली जाणवी तथा जे हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ काली वस्तु स्वप्नमां देखे तो ते सारी जाणवी नही. तथा स्वप्नमां गायन करे तो रुदन करवुं पडे, स्वप्नमां नाचे तो बंदीखाने पडे, स्वप्नमां हसे तो शोचमां पडे, स्वप्नमां जणे तो कलह थाय, वली जो स्वप्नमां देवता, साधु, ब्राह्मण, राजा, पितृ, वृषज एटला मांहेलो कोइ आवीने कोइ प्रकारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय. तथा स्वप्नमां धोलो सर्प जुजाने मसे तो हजार सोनैयानो लाज थाय, वली कोइ फल्युं फूल्युं वृक्ष तथा रायणनुं वृक्ष तेना उपर पोते चढयो एवुं स्वप्नमां देखे तेने घणुं धन मले, वली गधेडो, उंट, जेंस जेंसो एमना उपर एकलो हुं चढयो छुं एवुं स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे, वली जे पुरुष धोला कपडा वाली धोला चंदननुं विलेपन करेली एवी स्त्रीने हुं जोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मले, वली जे रातां वस्त्रवाली, रातो चंदन कृष्णगंध विलेपन वाली स्त्री जोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेनुं लोही सुकाइ जाय, वली जे रूपानां, सोनानां अने सीसानां ढगलाउ उपर हुं चढयो छुं एवुं देखे तो ते अवश्य समकेत पामीने मोक्ष जाय तथा जे स्वप्नमां [illegible]

ने माने तो ते समकेत पामीने त्रीजा नवमां मोक्ष जाय ॥ हवे त्रिशला मातायें जे चौद स्वप्नां दीठां तेनुं फल तो आ प्रमाणे ने जे प्रथम स्वप्नमां चार दंतोसलवालो हाथी दीठो ते देख वाथी ए पुत्र महा पराक्रमी थाशे वली दान, शील, तप अने भाव रूप चार प्रकारनां धर्म नी प्ररूपणा करशे, वली चोसठ इंद्र तथा गजपति जे राजाउ ते एनां चरणकमलने सेव शे ॥ वली बीजे स्वप्ने वृषभ दीठो तेथी तमोने धर्मधोरी पुत्र थशे एटले भरतक्षेत्रने विषे जेम कर्षणीउ वृषभ थकी धान्यनुं बीज वावे तेम ए पुत्र बोधरूप धान्यनुं बीज वावशे ॥ त्रीजे स्वप्ने सिंह दीठो तेथी निर्भय अने शूरवीर त्रण भुवनमां पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतुं एवुं जे वन तेनुं रक्षण करे तेम ए पण सम्यक् प्ररूपणा रूप सिंहें करी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वापद जीवो तेथकी नाश पामतुं एवुं जे नव्यजीवरूप वन तेनुं रक्षण करशे, एटले मिथ्यात्वरूप आपदाथी नव्यजी वोनुं रक्षण करशे अथवा आठकर्म अने आठमदरूप श्वापदोनो नाश करशे, वली त्रण भुव नने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ॥ चोथा स्वप्नमां लक्ष्मी देवता दीठी तेथी त्रणजगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो नोक्ता थशे एटलें वरसीदान देइ दीक्षापाली केवल रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्यरूप तीर्थंकरनी लक्ष्मीने नोगवशे ॥ पांचमां स्वप्नमां फूलनी बे मालाउ दीठी तेथी सत्पुरुषोने माथे पूज्य पणुं नोगवशे एटले जेम फूलनो तोरो मस्तकें धराय ठे तेम एनी आज्ञा पण सर्व नव्यजीवो मस्तके धरशे तथा बे माला दीठी माटे एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा बे प्रकारना धर्म कहेशे ॥ ठठा स्वप्नमां चंद्रमा दीठो तेथी ए सौम्यदर्शन वालो थशे, शीतल परिणामवालो थशे,नव्यजीवरूप कुवलयनो बोध प्रकाश करवाने चंद्रमा सदृश

थशे ॥ सातमा स्वप्नमां सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो हर्त्ता थशे तथा पोते प्रजामंमलें करी अलंकृत थशे ॥ आठमा स्वप्नमां ध्वजा दीठी तेथी कुलमां ध्वजा समान उत्तम थाशे तथा धर्मध्वजायें करी विराजमान थाशे, जगतने चारे दिशायें धर्मध्वजायें करी शोजावशे ॥ नवमा स्वप्नमां पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थशे तथा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चडावशे ॥ दशमा स्वप्नमां पद्मसरोवर दीठुं तेथी जगतना तापने हरवावालो थाशे तथा चालतां थकां एनां पगतले देवताउ सुंवर्ण कमल थापशे ॥ अगीआरमां स्वप्नमां खीरसमुद्र दीठो तेथी गंजीर हृदय वालो थाशे तथा केवल ज्ञानरूप रत्न पामीने चौदराजलोकना जाव जाणशे ॥ बारमां स्वप्नमां देवविमान दीठुं तेथी देवताउनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायनां देवताउ एनी सेवा करशे ॥ तेरमां स्वप्नमां रत्ननो राशि दीठो तेथी देवता त्रणगढ करशे, तिहां वेशी जव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे ॥ चौदमा स्वप्नमां निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवंत थाशे तेजवंत थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे ले तेम ए तमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वजावनी शुद्धि करनारो थाशे, जव्यजनोनां मन शुद्ध करशे, कर्ममलने बाली नाखशे ॥ तथा ए चौद स्वप्नां दीठां तेथी चौदराज लोकनो स्वामी थाशे ॥ एवां चौद स्वप्नांथी एवां फल वालो तमारो पुत्र थशे ॥ वली स्वप्न पाठको कहे ले के हे देवाणुप्रिया अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेतालीश स्वप्नां सामान्य अशुजफल दायक कह्यां ले अने त्रीश स्वप्ना उत्तम महोटा फलनां देवावालां कह्यां ले सर्वमली बहोतेर स्वप्नां कह्यां ले तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता, अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्भमां आव्यां थकां ॥ ग्रंथा ग्रंथ

वासुदेव गर्नमां आवे तेवारे वासुदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला कोइ पण सात स्वप्नां देखे ॥ ७५ ॥ ॥ बलदेव गर्नमां आवे तेवारे बलदेवनी माता ए चौद महोटा स्वप्नां मांहेला चार स्वप्नां देखे ॥ ७६ ॥ ॥ मंमलिक राजानी माता ए चौद स्वप्नां मांहेलुं एक स्वप्न देखे ॥ ७७ ॥ हवे बेंतालीश मध्यम अने त्रीश उत्तम स्वप्न जे पूर्वे कह्यां तेनां नाम कहे ले. तिहां प्रथम बेंतालीश स्वप्ननां नाम कहे ले. गंधर्व, राक्षस. नूत, पिशाच, बुकस, महिष, अहि, वानर, कंटकडुम, नदी, खजूर, स्मशान, उंट, खर, मार्जार, श्वान, दोस्य, संगीत, धीज, नस्म, अस्थि, वमन, तम, कुस्त्री, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि, जलशोष, नूकंप, ग्रहयुद्ध, निर्घात, नंग, नूमज्जन, तारापतन, सूर्यचंद्र स्फोट, महावायु, महातप, विस्फोटक, डुर्वाक्य. ए बेंतालीश मावां स्वप्न अशुन फल दायक जाणवां. हवे त्रीश उत्तम स्वप्नां नाम कहे ले. अर्हन, बौद्ध, हरिकृष्ण, शंनु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप, हस्ती, गौ, वृषन, चंद्र, सूर्य, विमान, गेह, अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर, सिंह, रत्नरेल, गिरि, ध्वज, पूर्ण घट, पुरीष, मांस, मत्स्य, कल्पडुम, ए त्रीश स्वप्न शुन फलदायक जाणवां. ए बधां मली बहोंतेर स्वप्ननां नाम श्री वर्द्धमान सूरिकृत स्वप्नप्रदीप ग्रंथने अनुसारें लख्यां ले ॥ ॥ हवे जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, पंचेंद्रिय जेणें वश करेलां होय, शांत मुद्रावालो होय, वली धर्मरुचि होय, धर्मानुरागी होय, धर्म उपर श्रद्धावंत होय, दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुणनो धणी होय, तेने जे स्वप्नुं दीगमां आवे, ते सारुं अथवा मातुं तरत फले. वली रात्रिने प्रथम प्रहरें स्वप्न देखे, तो एक वरषमांहे फल आपे, रात्रिने बीजे प्रहरें स्वप्न देखे तो लमास मांहे फल आपे, रात्रिने त्रीजे प्रहरें स्वप्न देखे तो त्रणमास मांहे

फल आपे, रात्रिने चोथे प्रहरें स्वप्न देखे, तो एक मासमांहे फल आपे, रात्रिनां अंतनी छेल्ली बे घडीरात्र रहे तेवारें स्वप्न देखे, तो तेनुं फल दश दिवसमांहे पामे, सूर्य उगती वेलायें स्वप्न देखे तो तत्काल फल पामे. तथा जो मातुं स्वप्न दीठामां आवे तो पाछा सुइ रहेवुं अने कोइनी आगल कहेवुं पण नही. तथा उत्तम स्वप्न देखी गुर्वादिक आगल कहेवुं, जो संन लाववा योग्य कोइ जन न मले तो गायना कानमां पण संनलाववुं, नलुं स्वप्न देखी पछी सुवे तो निष्फल थाय, नलुं स्वप्न देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा न ज कहेवुं. केम के जेवुं फल सांनले, तेवुं फल पामे. पण उत्तम पुरुष आगलज कहेवुं ते उपर मूलदेवनुं दृष्टांत कहे छे. को इएक राजानो पुत्र अणमानितो थको छे तेनुं नाम मूलदेव छे पण तेने दान आपवानुं घणुंज व्यसन छे तेथी राजायें तेने काहाडी मूक्यो ते फरतो फरतो कोइक गामे आव्यो पोते महा धर्मवंत जैनमति छे परंतु खावाने नहतुं तेवारे शहेरमां याचवाने गयो तिहां फरतां एक वा णीयायें जेंशने अर्थें अडद रांध्या हता ते मूलदेवने आप्या तेने लइ वाडीमां आव्यो अने मन मां चिंतववा वेगो जे कोइ अतिथि आवेतो तेने नोजन आपीने पछी हुं नोजन करुं. एटलामां एक साधु पण नूख्यो थको त्यां आव्यो, तेवारे मूलदेवें ते ऋषिने देखी वाकला वोहोरावी दी धा अने पोते आनंदपणे सुइ रह्यो तिहां निरावाध पणे वक्ो चंड्मा मे गल्यो एवुं स्वप्नुं दीठुं, ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वली जे वाडीमां ए मूलदेव सूतो हतो तेज वाडीमां एक बावानो मठ छे ते बावाना चेलायें पण तेहज स्वप्नुं दीठुं देखीने जाग्यो प्रनातें पोताना गुरुनें कह्युं ते वारे गुरुयें कह्युं जे तुं आज गाममां निक्षा लेवा जइश तेवारे तुजने चंड्मा जेटलो महोटो पूर्ण घोरडेलो रोटलो गोल सहित मलशे ते सांनली चेलो राजी थइने निक्षा लेवा गयो ते

वारे तेने गुरुना कह्या प्रमाणे रोटलो मल्यो हवे ते वात राजकुमार मूलदेवें सांभलीने विचा
र्युं जे हुं एनी आगल म्हारा स्वप्नांनी वात जो कहीश तो मने पण एटलुंज फल कहेशे केम
के जे स्वप्न एना चेलायें दीठुं छे ते में पण दीठुं छे माटे एनी आगल तो वात करीश नही ए
म विचारी हाथमां श्रीफल लेइने शहेरमां गुरु आगल गयो तिहां स्वप्नांनी वात कही तेवारें
गुरुयें कह्युं जे तुं म्हारी दीकरी परणीशलो हुं तुजने स्वप्नुं फल कहीश मूलदेवे कह्युं म्हारी
नात जात तो तुं जाणतो नथी अने ताहारी पुत्री केम परणावे छे ? निमित्तियें कह्युं में सर्व
वात जाणी छे एम कही तेने पुत्री परणावीने पछी स्वप्नांनुं फल कह्युं के आ गामनो अपुत्रीउ
राजा आजथी सातमें दिवसें मरण पामशे अने तमे आ गामनां राजा थाशो तेवात साची
मानीने मूलदेव फरी तेहज वाडीमां गयो एम करतां सातमे दिवसे गामनो राजा पण मरण
पाम्यो तेवारे राजाविना कोइने चाले नही तेथी पंच एकठा थइने एवो ठेराव कर्यो के पाटवी
घोडो, पाटवी हस्ति अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शणगारीने कह्युं जे जेने ए राजा करी
थापे तेने राजगादीयें बेसाडीयें केमके एम कर्याथी पित्राइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ
वांधो करी शके नही हवे हाथी अने घोडो ए बे बाहेर नीकलीने जे वाडीमां मूलदेव सूतो
छे ते वाडीमां आवी हाथीयें गलगाट करी मूलदेवना मस्तके कलश ढोल्यो अने घोडे हणह
णाट कर्यो पछी हाथी तेने सूंढथी उपाडी पोतानी पीठ उपर बेशाडीने शहेरमां लइ आ
व्यो, लोकोये तेने राजपाटें थाप्यो. माटे सारुं स्वप्न दीठुं होय तो उत्तम माह्या पुरुष आगल
कहेवुं पण मूर्ख आगल नज कहेवुं ॥ हवे उत्तम स्वप्न मूरख आगल कहेवाथी जे दुःख थाय ते
आश्रयी वणिकस्त्रीनुं बीजुं दृष्टांत कहे छे, कोइएक वणिकस्त्रीयें स्वप्नमांहे समुद्र पीधो, प्रभातें

गुरु समीपें पूछवाजतां मार्गमां एक सहियर मली तेणें पूछ्युं जे हे बेहेन! गहूंली लइ कि हां जाउ छो? एम घणा बलात्कारें पूछ्युं, तेवारें तेने यथास्वरूप कह्युं जे में स्वप्नमां समुद्र पीधो, तेनुं फल गहूंली करी गुरुने पूछीश, एवुं सांभलतांज सहसाकारें सहियर बोली एवडो मोहोटो समुद्र पीतां ताहारुं पेट केम फाट्युं नहीं? एम हांसीमां बोलीने चालती थइ, पछी गहूंली करी गुरुने स्वप्ननुं फल पूछ्युं, तेवारें गुरुयें आकार इंगित देखीने कह्युं के ए स्वप्न तमें प्रथम कोइ आगल प्रकाश्युं देखाय छे? तेवारें तेणीयें सहियरनी वार्ता कही, ते सांभलीगुरु बोल्या जे तमें पूर्वें कोइ आगल जो न कह्युं हत, तो तमोने भाग्यवंत पुत्र थात, हवे तो आ जथी सातमे दिवसें शरीरें कष्ट थशे, तेमाटे तमें घेर जइ आत्मसाधन करो, पछी बाइ घेर आवी आत्मसाधन करी देवगत थइ, तेमाटे रूडुं स्वप्न जेना तेना आगल कहेवुं नहीं, तथा कोइ कहेवा योग्य न मले, तो गायना कानमां कहियें, पण कह्या विना फल न होय तथा प्रथम शुभ स्वप्न देखी पछी माठुं स्वप्न देखीयें,तो माठा स्वप्ननुं फल पामीयें, एम परावर्त्त जा एवुं. तथा कोइ सिंहें अथवा घोडे अथवा वृषभें जोतस्यो रथ तेना उपर पोतें बेठो छे एवुं स्वप्न देखे, तो राजा थाय, घोडा, वाहन, वस्त्र, घर, कोइ लइ जाय छे, एवुं स्वप्न देखे, तो राजभय, शोक, बंध, विरोध अर्थहानि थाय. सूर्य चंद्रनुं बिंब गल्युं पीधुं देखे, तो समुद्र पर्यंत पृथ्वीनो धणी थाय. तथा उजले गजे बेठो, नदीतीरें शालनु करुं छुं. एवुं स्वप्न देखे, तो समस्त देशनो पति थाय. पोतानी स्त्रीनुं हरण देखे, तो धननो नाश थाय, उजले सर्पें जमणी भुजायें डंक दीधो, एवुं स्वप्न देखे, तो रात्रिमां सहस्र सोनैया पामे. मनुष्यनां मस्त-
[illegible]

तो सारुं थाय अने बीजी काली वस्तु देखे, तो मारी जाणवी. तथा मातुं स्वप्न देखी देवनी
पूजा देखे,तो सारी वस्तु पामे, धो,अक्षत,चंदन देखे, तेने मांगलिक थाय. वली राजा,हाथी,
घोडो, सुवर्ण, वृषभ, गाय, एटलां वानां स्वप्नमां देखे, तेनी कुटुंबवृद्धि थाय. रथें बेठो जाय, ते
राजा थाय, तांबूल, दधि, वस्त्र, चंदन, जाय, बकुल, कुंद, मचकुंद, फूल, वृक्ष, एटला वानां
देखे, तो धनागम थाय. दीप,पान्नां, फल, पद्म, कन्या, छत्र, तथा ध्वज, हारादिक आभरण
देखे,तो लक्ष्मीनो लाभ थाय. हरण, प्रहरण, भूषण. मणि मोती, कनक, रूपुं तथा कांस्यपात्रनुं
हरवुं देखे, तो तेने धननी हानि थाय. वारणां,भोगल, ढींमोलो, पावडी, घर, भांग्यां देखे,तो
तेने स्त्रीनो नाश थाय. पगरखां तथा छत्र लाधां देखें अथवा तीक्ष्ण तरवार देखे, तेने मार्गे
चालवुं थाय,जे वाहाणमां चढ्यो,ते वाहाण भांग्युं ने पोतें तरी नीकले एवुं स्वप्न देखे,ते परदेशें
जाय. तिहां धन पामी आवे. अंजनें नेत्ररोग,रोमछेद देखे, तो धन क्षय थाय,भेंशो, ऊंट उपर
चढी दक्षिण दिशायें जाय, तेनुं शीघ्र मरण थाय. कमलाकर, रत्नाकर, जलें पूर्ण नदी, तथा
मित्रनुं मरण देखे, तो घणुं द्रव्य पामे, काथ पीवुं हुं एवुं देखे,तें अतिसार रोगें मरण पामे,
वली जात्रायें जाय, पूजा करें,तेने कुलवृद्धि थाय. ह्रद, सरोवरें कमल उग्यां देखे,ते कोढ रोगें
मरण पामे. हाथी, घोडो, गाडलुं, सिंहासन तथा घरनां वस्त्र एटलां वानां गयां देखे तो रा
जानो भय थाय, हथीयार, आभरण, मणि, मोती, सोंनुं अने रूपुं एटला वानांनो नाश
थतो देखे तो तेनुं धन अने मान बे वानां जाय, जे पोतानी भार्याने कोइ लइ जाय छे एवुं
देखे तो तेनी संपदानो नाश थाय, पोतानी स्त्रीने कोइ पराभव करेछे एवुं देखे तो क्लेश
उपजे, गोत्रमांहेली स्त्री कोइ लइ जतो देखे तो तेना भाइ प्रमुख बंधीखाने पडे, पोतानो

दोलीयो अने धोळुं वस्त्र स्वप्नमां देखे तो पोताने पीडा उपजे, कोइ मनुष्यना पगनुं हुं मांस जक्षण करुं हुं एवुं स्वप्न देखे तो राजा थाय, पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो देखे तो घणुं द्रव्य पामे वली उनुं पाणी, गायनुं गाण गोळमां जेळवेलुं पीधुं एवुं देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करुं हुं, यात्रा करुंछुं एवुं देखे तेने सर्वप्रकारें वृद्धिथाय, हृदय उपर कमल उग्युं देखे तो तेनुं शरीर कोढरोगे विनाश पामे इत्यादि ॥ माटे हे देवाणुप्रिया! त्रिशलाक्षत्रियाणीयें जे चौद महोटा स्वप्न दीठां ते उदारकारी, मंगलकारी छे तेनुं फल हे देवाणुप्रिया! अर्थनो लाज थाशे जोगनो लाज थाशे, पुत्रनो लाज थाशे, सुखनो लाज थाशे तेमाटे हे देवाणुप्रिया! निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीनें नव महीना अने साढासात दिवस व्यतिक्रम्यानंतर तमारा कुलमां ध्वजा समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलमां सूर्यसमान तेजवंत, कुलनो आधार, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृक्ष समान, कुलपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सुकोमल छे एवो वली कोइ इंद्रिये हीन नही, लक्षण व्यंजन गुण सहित, मानोन्मान सहित, संपूर्ण सर्व अंग जलो सौम्याकार, वल्लजकारी जेनुं दर्शन छे एवो पुत्र थाशे ॥ ७८ ॥ वली ते बालक बाल्यावस्था छोडीने जेवारे विनय विज्ञान पणो युवान अवस्था पामशे तेवारे शूरवीर, पराक्रमवंत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अंत पृथिवी सुधी राज करवा वालो एवो चक्रवर्त्ति राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ति एवो तीर्थंकर थाशे ॥ ७९ ॥ तेना वास्ते हे देवाणुप्रिया त्रिशलाक्षत्रिया

लीयें यावत् मंगलकल्याणकारी, लक्ष्मी दीठां ॥८०॥ तेवारें सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठकोनां मुखथी एवो अर्थ सांजली करीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथजोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो ॥८१॥ एमज थवानुं ले, हे देवाणुप्रिया एवोज ए अर्थ ले, जुठो नथी, में सांजल्यो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कह्यो ते सत्य ले एवुं कहे. आ वचन उपर कोइक टीकाकारे जोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थयो ले तेनुं दृष्टांत आपेलुं ले परंतु ते पाठथी थयेलो ले अने आ वालतो प्रथमनी ले तेथी ए दृष्टांत मलतुं नथी पण वचनयनमां मलती वात ले वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय माटे लोकने आनंदने वास्ते जोपण अंतर्वाच्यादिकोमां नथी तोपण लखी मूकीये लैयें तद्यथा ॥ सिद्धार्थराजा कहे ले के सुसिद्धिनुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय ले जेम गांगा तेलीने थयुं. ते गांगा तेलीनी कथा कहे ले. कोइएक विद्यार्थि दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक नटनी पासेंथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या जणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा उपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याये करीने महारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो बांध्यो, वली जो कोइ वादी महारा साथे वाद करतां नाशिने आकाशमां जाय तो तेने निसरणी उपर चढी नीचो पटकी आपुं एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहार काढीश एवा अनिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी तिहां निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा उपर आपी तथा वली जो कोइ वादी महारा साथें वादमां हारी जाय तो तेना मुंखमां तृण रखावी देवुं एवा विचारथी एक माणस घासनो पुंजो लइने तेनी

पठवाडे पठवाडे चाले एवा आमंबर सहित चालतो थको दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक देशोनां पंमितोनी साथे वाद करी तेने जीतीने सरस्वतीकंठाजरण इत्यादि विरुदा वली बोलावतो थको सर्व गामोना पंमितोने जीततो थको अनुक्रमे मालवदेशमां उज्जेणी नगरीना जोजराजानी सजामां पांचशें पंमित छे एवी वात सांजलीने ते पंमितोनी साथें वाद करवा सारुं उज्जेणीयें आव्यो तेने राजायें महोटा आमंबरथी नगरमां प्रवेश कराव्यो, रुडा महेलमां उतारो आप्यो, पछी ते पंमित राजानी सजामां आवी पंमितोनी साथे वाद करीने राजानी समक्ष कालिदास माघ आदिक पांचशें पंमितोने जीत्या तेवारें राजाये विचार्युं जे आ महोटो आश्चर्य थयो जे परदेशी जट्टें आवीने महारा सर्व पंमितोने हरावी दीधा तेथी महारा पंमितोना माननी हानि थइ एवो चिंतातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थें जावा लाग्यो मार्गमां जतां रस्तामां एक आंख्य वालो एक गांगोतेली घाणी उपर बेठो छें ते घाणीमांथी तेल लइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमां नाखे पण तेलनुं एक टीपुं मात्र बाहेर पडवा दीये नही एवा काणा घांचीने देखीने राजाये विचार्युं जे आ काणानी बुद्धि जूठ केवी छे! तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नही होय एम कहेवुं तेज सत्य छे पछी राजायें तेने बोलावीने पुछ्युं के अरे तुं जट्टाचार्य साथे संवाद करीश? तेंवारें ते बोल्यो हा महाराज! हुं वाद करीश एमां महारुं शुं जवानुं छे? ए जट्टाचार्यनी साथे वाद करवो कांइ महोटी वात नथी जो जोरावर जबर देखीश तो पण अटपटा न्यायथी तेने जीती लइश पछी राजायें आदित्यवारने दिवसें जट्टाचार्यने बोलावीने कह्युं के हे जट्टाचार्य! महारा जे साधारण जट्टो हता तेने तमेजीत्या पण हजी महारा सर्व पंमितोनो जे आचार्य छे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हुं जाणु जे तमे

खग पंमित गो तेवारें दक्षिण नट्टाचार्यें कह्युं हा राजन्! हुं तेनी साथें पण वाद करीश माटे ते क्यांने तेने श्रांही बोलावी ल्यो तेवारें राजायें नट्टाचार्यने श्रासन श्रापी बेसाड्यो पठी कालीदास, क्रीडाचंद्र प्रमुख नट्टोने एकठा करीने कह्युं के जाउ पंमितजीने लइ श्रावो तेवंये जइ गांगातेलीने नट्टाचार्यनो वेश कराव्यो, घरेणां पहेराव्यां श्रने शरीरमां तो ते, प्रथम श्रीज मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो ने तेने पालखीमां बेसाडी पांचशें पंमितोयें परवर्यो थको राजसन्नामां लाव्या, राजायें ठठी श्रादर दीधो, सर्व सन्ना उठी ठनी थइने महोटा सन्मानथी सिंहासन उपर बेसाड्यो तेवारे दक्षिण नट्टाचार्यें तेने जोइने विचार्युं जे श्रातो मातेलो ने श्रने हुंतो शरीरे कुबलो हुं तेथी एनी सार्थे वाद करतां पार श्रावे नही माटे एनी सार्थे वच ननो कलह करवो नही, मात्र तत्त्वज पूठवुं एम चिंतवीने एक श्रांगुली उंची करी तेवारें नोजराजाना नट्टें क्रोधकरी बे श्रांगुली उंची करी ते जोइ दक्षिण नट्टाचार्यें चमत्कार पामीने पांच श्रांगुली उंची करी बतावी ते जोइ गांगातेलीयें मुठी नीडी बतावी तेवारें दक्षिण नट्टाचार्यें पोताना मस्तक उपरथी श्रंकुश उतारी नाख्यो, पेटे पाटो बांध्यो हतो ते ठोडी नाख्यो श्रने निसरणी तथा कोदाली पण नाखी दीधी, तृणनो पूलो बाली नाख्यो, समस्त माननो त्याग करी सर्व सन्ना समक्ष नोजराना नट्टने पगे लाग्यो श्रने कहेवा लागो के महोटी श्राश्चर्यनी वात ठे जे मने कोइए पण जीत्यो नही पण तुं महोटो पंमित माटे तें मुजने जीत्यो ते जोइ नोजराजा विस्मय पामीने दक्षिण नट्टाचार्यने पूठ्युं के तमे केवा प्रकारनो वाद कर्यो तेवारे नट्ट बोल्यो के तमारो नट्ट महाज्ञानवान् ठे कारणके में एनी साथें समस्यायें वाद कर्यो जे श्रा जगतमां एक शिव ठे एवुं स्थापन

करवा सारुं एक आंगुली तमारा जट्टने वतावी तेवारें तमारा जट्टे वे आंगुली देखाडी तेथी हुं समजी गयो के एक मात्र शिवज नथी पण शिव अने शक्ति ए वेउ ठे पठी वली में कह्युं के इंद्रियो पांच ठे तेथी पांच आंगुली वतावी तेवारें आपना जट्टाचार्यें मुठीजीडीने वतावी तेथी हुं समजी गयो के पांचइंद्रियोतो खरी पण तेने वश राखवी जोइयें तेवारें में जाण्युं जे ए पंमित त्यागी ज्ञानी अने जितेंद्रिय ठे एवीरीते वाद थयो तेमां हुं हारीगयो एना समान वीजो पंमित में क्यांय पण दीठो नही एवुं कहीने दक्षिणजट्टाचार्य मानत्रृष्ट थयो थको पोताने वेशे चाल्यो गयो, पाठलथी जोजराजायें गांगातेलीने पूछ्युं के तें केवा प्रकारनो वाद कस्यो अने केवीरीते जीत्यो तेवारे तेली वोल्यो के महाराज दक्षिणजट्टाचार्य घणो खराव माणस ठे मने कहेवा लाग्यो के ताहारी एक आंख ठे तें हुं फोडी नाखीश एवुं मनमां लावीने एक आंगुली उंचीकरी तेवारें में वे आंगुली उंची करीने समजाव्यो के तुंतो एक आंख फोडतो पण रही जाइश परंतु हुं ताहारी वे आंखो फोडी नाखीश त्यारे मने पंजो देखाडी वोल्यो के हुं तने थाप मारीश तेथी ताहारुं मोहोडुं फरी जाशे तेवारे में मुठीवाली वतावीके हुं तुजने एक मुठी मारीश तो तुं पातालमां पेसी जइश एवी वात तेलीना मुखथी सांजलीने राजा प्रमुख सर्व सजाने हसवुं आव्युं अने वोल्या के ए महोटो जाग्यशाली सुसिद्धिवालो ठे एवुं कही वस्त्रादिक पहेरामणी आपी सन्मान देइ गांगा तेलीने घेर पोचतो कस्यो एनी पेरे सिद्धार्थ राजा कहे ठे के हे स्वप्न पाठको ! तमे सुसिद्धि कहो तेथी महारेतो तमारुं कहेवुं सत्य थाउ एवुं सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने कह्युं कहीने ते स्वप्नांने रुडीरीते धारण करीने ते स्वप्नलक्षण पाठकोने घणा अशन पान खादिम स्वादिमादिक चार आहार जमाडीने फूल फल गंध माला

घरेयादिकें करीने सत्कार सन्मान आप्युं ते सत्कार सन्मान आपीने घणी आजीविका जीवे
तिहां सुधी खाया करे एवी करी दीधी अर्थात् गाम प्रमुख आपीने शील आपे ॥८२॥ ॥
तेवारपत्नी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने जिहां त्रिशलाक्षत्रियाणी पडदामां बेठी
ने त्यां आवीने कहे ने ॥८३॥ ॥एवो निश्चय हे देवाणुप्रिया स्वप्न शास्त्रमां बेंतालीश सामा
न्य स्वप्नां अने त्रीश महा स्वप्नां सर्वे बहोंतेर स्वप्नां कह्यां ने तेत्रीशमांथी चौद महोटां स्वप्नां
तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौद स्वप्न मांहेला सात स्वप्नां वासुदेवनी माता
देखे अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मंडलिकराजानी माता देखे, एवुं स्वप्न पाठके कह्युं
ने जे तमे चौदे स्वप्नां दीठां ॥८४॥ ॥ते तमारे चक्रवर्त्ति तथा तीर्थंकर होवावालो पुत्र थाशे
॥८५॥ ते पत्नी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांजलीने हृदयमां खुशी थइ यावत् स्वप्नांनो अर्थ धारण
करीने ॥८६॥ ॥ सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणिरत्नोना बाजोठथी उठीने ता
कीदरहित यावत् राजहंस सरखी गतियें चालती थकी ज्यां पोतानुं भुवन ने तिहां आवीनें पो
ताना मंदिरमां प्रवेश करती हवी ॥८७॥ ॥ जे दिवसथी श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते
राजानाकुलमां हरणिगमेषी देवें संहराया ते दिवसथी वैश्रमणनामे इंद्रमहाराजनो जे भंमारी
जेनुं लोकोमां धनद एवुं नाम ने ते भंमारीना हुकमना उठावचा वाला एवाजे तिर्यक लोक
निवासी वैताढ्यपर्वतनी मेखलाये रहेनारा व्यंतरनिकायनां तिर्यगजृंभक देवता ते शक्रेंद्रना
हुकमथी घणाजवणा एवा जे जुनाधन घच्चा महानिधान ते केवा धन तोके जे धनना सामी
हीण थइगया, जे धनना संचयकरवा वाला घडावचा वाला मरण पामी गया ने, तेमनो कोइ
गोत्री पण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना सामी विछेद गया, मांडवा वाला विछेद गया,

गादवा वालानां कुलगोत्र पण विछेद पाम्यां तेमनुं धन. ते हवे जे स्थानके गालीने मरीगया ते स्थानकोनां नाम कहे ने. गामवुधिनां गुण जिहां जता रहे तेने गाम कहीये तिहां वडावीने मरीगया ते धन तिहांज रहीगयुं, ते धन तथा जिहां कर नही लागे तेनें नगर कहीये, धूल नो कोट जिहां होय तेने खेट कहीयें, खोटुं नगर ते कर्बट कहीये, शहेरथी त्रे कोश उपर जे गाम होय ते मंडप कहेवाय, जेने चारे बाजुये गाम वसे ते द्रोणमुख कहेवाय, जलमां अने थलमां थइने मार्गे जाय ते पट्टण कहीये, जिहां तापसोनुं वसवुं होय तेने आश्रम कहीयें, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने संवाह कहीयें, सार्थवाहने उतरवानुं स्थानक होय तेने सन्निवेश कहीयें. एवा प्रकारनां गामोने विषे सिंघोडाने आकारें रस्ता होय तेने विषे तथा त्रिवाटाने विषे, चोवटाने विषे तथा घणा मार्ग जिहां भेला थता होय तेने चच्चर मार्ग कहीये तथा चौमुखां देवोनां मंदिरमां, महोटापंथ वाला राजमार्गने विषे, देवकुलमां, सभामां, पाणीना स्थानकमां, बागमां, उद्यानमां, वनमां, वनखंडमां, एकजातिनां वृक्ष होय तेने वन कहीयें, अनेक जातिनां वृक्ष जेमां होय तेने वनखंड कहीयें, मसाणमां, सूनाघरमां, पर्वतनी गुफाउमां, होमना स्थानके, पर्वतनी शिला खोदेली होय तेमां, बेसवानी शालामां, लोकोने वसवाना स्थानकोमां एटला स्थानके घालेलां जे धन ते सर्वजगाउनां धन लइ लइने सिद्धार्थ राजानां घरमां नाखो एवो इंद्रमहाराजनो हुकुम थयो तेवारें तिर्छालोकना वसवा वाला तिर्यग्‌जृंभक देवता ते सर्वधन लइ लइने सिद्धार्थराजानां घरमां नाखे ॥८८॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी ज्ञातकुल जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां आव्या ते रात्रिथी मांडीने सिद्धार्थराजा. सोनेकरी. रूपेकरी. धनेकरी, धान्येकरी राज्येकरी, देशेकरी, वाहनेकरी, कटके

करी, वाहली प्रमुखेकरी, नंमारेकरी, धान्यना कोठारेकरी, पुरेंकरी, अंतेउरजे राणीयोनो परिवार तेणेकरी, देशवासी लोकोयेकरी, यशवातेकरी, घणुं घणुं वध्या, वृद्धि पाम्या तथा घणो धान्य गणवामां आवे एवां चोवीश प्रकारनां धान्य तेनां नाम कहेछे. जव, घउं, शालि, व्रीहि, साठी, कोद्रवा, सामो, कांग, राल, तिल, मग, अडद, अलशी, चणा, तिउडा, वाल, सिलिंद, राजवडद, वघू, मसूर, तुअर, कुलथ, धाणा, कलायरो, इत्यादिक प्रकारनां धान्यथी तथा बीजां पण सोनुं, रूपुं, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्तशंख, राजवर्त्त, शिला, मुगिया, लाल रत्न, पद्मराग आदिके करी वध्या वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, समुदाये करीने घणा घणाज वध्या, वृद्धिपाम्या, तेथी श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीनां माता पिताउनां मनमां एवो इषे विचार उपन्यो ॥ ८९ ॥ ॥ के जे दिवसथी अमारे आ पुत्रकूखमां आव्यो छे ते दिवसथी लइने अमे सर्वप्रकारें पूर्वे कह्यां एवां सोनां रूपां प्रमुख वस्तुयेंकरी वध्या,प्रीति सत्कारें करी घणाघणाज वध्यां, माटे जेवारे अमारे घेर आ पुत्रनो जन्म थाशे तेवारे अमे ए छोकरानुं नाम जेवा एमां गुण छे तेवुं आपीशुं, वृद्धिपणाना गुणेकरी वर्द्धमान एवुं नाम स्थापन करीशुं ॥ ९० ॥ ॥ तेवारे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामी पोतानां मातानी उपर अनुकंपा एटले दया लावीने विचार्युं जे हुं जेवारे गर्भमां हालुं चालुं छुं तेवारे माताने डुःख उपजे छे एम चिंतवीने मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या नही, कंप्या नहि, पोतानां अंगोपांग गोपवी राख्यां एवा थया थका रह्या, इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जाणे भगवान् मोहराजाने जीतवासारुं एकांते विचार करता रह्या छे केशुं ? अथवा कोइ परब्रह्मनुं अगोचर ध्यान करे छे केशुं ? अथवा कल्याणरस प्रत्यें पोताना आत्मगुण साधवा

रह्या छे केशुं ? अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या छे केशुं ? एवीरीतें श्रीजगवान् मातानी कूखने विषे रह्या ते तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थें थाउ इति ॥ ए१ ॥ ॥ तेवारे त्रिशलामातानां मनमां एवुं थयुं जे मह्यारोगर्ज कोइ देवता लइगयो, ए मह्यारोगर्ज मरण पाम्यो, मह्यारो गर्ज चविगयो, मह्यारो गर्ज गलिगयो, ए मह्यारो गर्ज प्रथम हालतो चालतो हतो ते हमणां हालतो चालतो नथी तेथी जाणुंछुं जे गर्जने कुशल नथी एवुं विचारीने मनमां संकल्प थयो, चिंतारूप समुद्रमां बुड्यां, अने हाथ उपरं मोहोडुं धरी नीचीदृष्टि राखीनें आर्त्तध्यान ध्याववा लागी, ते आर्त्तध्यान आ प्रमाणे छे ते आगला आलावामां कहे छे ॥ ए२ ॥ ॥ हवे त्रिशलादेवीनो शोक विचार लखीये छैयें ॥ अहो एटले खेदकारक वचने शोक करे छे के माह्यारो जे गर्ज जतो रह्यो ते हुं निश्चें अजागणी छुं, हीणापुण्यवाली छुं, अजागीयाना घरमां चिंतामणीरत्न रहे नही अथवा दारिद्रीनां घरमां निधान केम रहे ? जेम मारवाडमां कल्पवृक्ष रहे नही तेम पुण्यहीणने तृषालागे तेवारे अमृत पान करवानी इछा थाय तो ते इछा केवीरीतें पूरणथाय ? वली कहे छे के हे दैव, हे कर्म, तुं महा निर्दय छो, निर्लज्ज छो, तुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ठ डुष्ट अरे निरपराधी लोकने मारवा वाला, तुं मह्यारो विना मुद्दे वैरी केम थयो ? ताह्यारो में शो अपराध कस्यो के जेथकी तें मा ह्यारो मनोरथरूप कल्प वृक्ष उखेडी नाख्यो, जो में कोइ ताह्यारो अपराध कस्यो होयतो हे पापी तुं प्रगट थइने शावास्ते कहेतो नथी ? तें मुजने दुःखनी खाण प्राप्त करी दीधी, तें मु जने आंख्यो आपीने पाछी खेंची लीधी, तें मुजनें हाथमां निधान आपीनें पाछो खेंची लीधो, तें मुजनें मेरुपर्वत उपर चडावीने पाछी जमीन उपर नाखी दीधी, तें मह्यारा मुखमां आ

रेलो कोलीयो खेंची लीधो, तें मल्हारा निपजेला पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाल्यां हशे, ते मल्हारां
रसकुपिका नांजी दीधी, तें मल्हारुं जहाज नर समुद्रमां मूवाबी दीधुं, अथवा वली देवने वलंजो
देवार्थी शुं थाय ! अरे जीव तें आगला नवमां एवाज कर्म बांध्या हशे ते कर्म तुजने हमणां
उदय आव्यां छे. पूर्वजन्ममां में माताउनी पासेथी बालकोने दूर कर्यां हशे तथा गाय प्रमु
खनां वाछरुने दूध पीवा दीधुं नहीं, वृक्षनी मालीयो नांगी, सरोवरनी पाल फोडी, दव ल
गाव्या, अणगल पाणी पीधां, उंदरोना बिल खोद्यां, धूलथी नर्यां, नोलीयां अने गोहनां
दरोमां उन्नुंपाणी तथा तेल रेडधुं, कीडी मकोडाना दरमां उन्न पाणी रेड्यां, पोपट मेना
प्रमुखने पांजरामां घाल्यां, तेमनी माताना वियोग कर्या, चिडा प्रमुख पंखीउनां माला पा
ड्या, इंडां फोड्यां, जूं लीख मार्यां, लोकोना गर्भ उपर द्वेष कर्यो, गर्भ पडाव्या, गर्भस्तंभन
कराव्या, वशीकरण, उच्चाटन कराव्यां. ताहारो पुत्र मरण पामजो एवा शराप दीधा, पापना
मंत्र अने औषध कर्यां, कोइने विष दीधुं, कोइना रत्न चोरी लीधां, कोइनुं शील नंगाव्युं,
अथवा व्रत लेइने नांग्या, कोइनां गाम बाल्यां, महोटां वृक्ष धरतीमांथी उखेडी नाख्यां, म
होटा तालावनां शोषण कर्यां अथवा देवद्रव्य नक्षण कर्यां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अ
वर्ण वाद बोल्या, देवगुरु उपर द्वेष कर्यो, दान देतांने वर्जना करी, वृक्षनां फल विनाश्यां अ
थवा अनंतकाय नक्षण कर्यां, काचांफल तोड्यां घणुंशुं कहुं ! एवा माहारे जीवे पाप कर्यां
हशे ते पाप हमणां मुजने उदय आव्यां छे के जेथकी महारो आवो गर्भ गली गयो, माटे
हुंतो पारविनानी डुलणी थइ, जो महारो ए चौद स्वप्ने सूचित गर्भ गयो तो हवे महारे संसा
रमां बीजुं शुं सुख छे, हुं राजपाटने शुं करुं वधारे शुं कहुं, त्रणलोके पूजित एवा पुत्र विना

कह्यो छो माटे हवे तमारे बोलवुं नही एम कही सर्प्पउपर छांटा नाख्या ते बली जस्म थयो ॥ इति कलिकाल दृष्टांत ॥ एम विचारी गर्नमांहे रह्यां जगवाने एक देशें टचली अंगुली ह लावीने एक देशे हाल्या तेवारे त्रिशलाजीये जाण्युं अरे महारो तो गर्न छतो छे, अने में फोकट खोटो शोक कस्यो एवुं चिंतवन करीने कहेती हवी के हे सखीयो! महारा गर्नने कुशल छे, एवी वात हर्षथी कहेती हवी, में अज्ञानथी विलापात कस्यो, महारा जाग्य महोटां, हुं धन्य कृतपुण्य, हुं त्रणजुवनमां मान्य, माहारुं जीववुं प्रशंसनीय, मने जैनधर्म फल्यो, में पूर्वे जे धर्म सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, महारुं जीववुं सफल, सखीयो जयजय करवा लागी, अष्टमंगल मांरुघां, कुंकुमछांट्यां, राजाने वधाइ दीधी, राजापण खुशी थयो, वाजित्रवाज्यां, नाटक महो त्सव थया, तोरण बांध्यां, वंदीजन जयजय शब्द बोल्या, वंदीखानां छोड्यां, अनेक लोक मल्या, मंगलिकनी वातोयें करी कोलाहल थइ रह्यो, महा दान आप्यां, ए प्रमाणे आनंदथी राजानी राजधानी हर्ष रूप थइ, सूत्रकार कहे छे के ते गर्ननुं कुशल न जाणवाथी सिद्धार्थराजाना घरमां मृदंग, ताल, वीणा, हस्तताल, नाटक इत्यादि लोकवचन एवा सर्व कार्य आनंद रहित थया हता ॥९३॥ तेथी महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक देशथी हालता हवा तेवारे त्रिशला हृदयमां हर्ष पामीने बोली ॥ ९४ ॥ ॥ माहारो गर्न हरण थयो नथी, यावत् गल्यो नथी, आ महारो गर्न प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले छे, एवुं कहीने हर्ष पामीने विचरवा लागी. हवे श्रमण जगवंत श्रीमहावीरस्वामीने विचार थयो जे महारा मा बाप हमणाथीज एवा प्रकारनो मोह करे छे तो जेवारे हुं दिक्षा लइं तेवारें तो ए घणुं दुःख पामे माटे हवे महारे महारा माता पिता जीवे तिहां सुधी दीक्षा लेवी कल्पे नही एवुं जेवारें साडाछमहिना

गर्भने थया तेवारे जगवाने अनिग्रह लीधो अर्थात् आंही साडाआठ दीनानो गर्भ थया, साडा आठ दीना वीत्या ॥ ९५ ॥ ॥ तेवार पढी त्रिशलामातायें स्नान कर्युं, घरे देवपूजा मंगल कर्यां, सर्व घरेणां आनूषण पहेर्यां, हवे गर्भप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो ठंमो आहार लीये नही, घणो उन्हो आहार लीये नही, घणो तीखो सुंठ मिरचादिकनो आहार लीये नही घणो कडवो निंबादिक, घणो कशायेलो हरडे प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडादिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख, घणो सूको ते भुंडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कंदमूलादिक इत्यादिक नोजन खाय नही, जे नोजन करे ते पण विधि सहित करे, वस्त्रपण विधियें करी पहेरें, गंधादिक विधियें लीये, माला प्रमुख विधियी पहेरें, गर्भनी रक्षाने वास्ते पोताने रोग थवा दीये नही, शोक करे नही, मोह करे नही, नय राखे नही, घणा काम करे नही, जेजे काम गर्भने हितकारी होय ते ते कामकरे, मानोपेत पथ्यकरती थकी गर्भने पोषे, जे देशमां जे चीज पाचन थती होय, जे कालमां जे चीज गुणकर्त्ता होय ते चीज वापरे, एवुं करे, कोमल शय्याये शयन करे, सुखासनने विषे बेसे, उंची नीची फरे नही, इत्यादिक गर्भ यत्न करे वली वाग्नट्टादिक ग्रंथोमां कहेलुं ठे ते कहे ठे. गर्भिणी स्त्रीजो वायडुं खाय एटले वायुचीज खाय तो गर्भ कुबडो थाय, आंधलो थाय, वामन थाय, पित्तकर नारी चीज खाय तो गर्भ पडीजाय तथा तेनुं अंग पीलुं थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पांडु रोग श्वेत वर्ण वालो थाय अथवा कायरचितरो थाय तथा जो गर्भवाली स्त्री लूण घणुं खाय अने आंखमां काजल घणुं घाले तो ठोकरो नेत्र रहित आंधलो थाय, घणोठंमो आहार करे तो वायु घणो थाय, घणुं उनुं खाय तो ठोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्भ

मरण पामे, घोडा प्रमुख उपर चडे, घणी दोडे, घणी चाले, चालती पडे, पेट मसलावे, खाल प्रमुख नलंगे, उंची नीची सूवे, मेडी प्रमुख उपर चडे उतरे, उत्कट बेसे, उपवास करे, वमन विरेचन जुलाब लीये एटलां वानां करे तो गर्भ पडीजाय, घणुं रुदन करे तो छोकरो चीपडी आंख वालो थाय, घणा गीत गायतो छोकरो बहिरो थाय, घणी वातो करे तो लायर थाय, घणुं हसे तो मश्करो थाय, घणी गालो बोले तो छोकरो लंपट थाय ॥ तथा ऋतुऋतुमां शुं शुं पथ्य करवुं शुं खावुं ते कहे छे, वर्षाऋतुमां लूण गुणकारक छे, शरद ऋतुमां जल गुणकारक छे, शिशिर ऋतुमां खाटोरस गुणकारी छे, वसंत ऋतुमां घृत गोल इत्यादिक गुणकारक छे ॥ वली कोइ महोटी वृद्धावस्था वाली सइयर बतावे तेरीते त्रिशलाराणी करे छे ते कहे छे के बाइ धीर जथी बोलो, धीरजथी चालो, क्रोध मकरो, पथ्य खाउ, घणो आकरो घाघरों अने काचली बांधो नही, घणुं हसवुं मकरो, चांदणीमां सूवो नही, केमके अगासें सुवाथकी पुत्र वामो रावणखंभो थइ जाय इत्यादिक वली घणुं नीचुं न चालवुं, घणी उंची चडीशमां, दिवसे सुवाथकी छोकरो उंघण थाय, आयीउं थाय, नख कापवा थकी पुत्र कुशीलीयो थाय, घणुं दोडवाथी पुत्र चंचल थाय, घणुं हसवाथी होठ, दांत, तालु अने जीभ कालां थाय, घणा गीत गावाथी बहेरो थाय, वींजणे वायु करवाथी उन्मत्त थाय, अति बोलवाथी बोलको थाय, अति शोक करवाथी उच्चाटीयो थाय, मूर्छाथकी निर्बुद्धि थाय, अति भय राखवाथी गर्भ बीक ण थाय, अति परिश्रम करवाथी मंदशक्ति वालो अने आलसु थाय इत्यादिक वातो सर्व वडे री कहे ते प्रमाणे त्रिशलाराणी पण गर्भनी प्रतिपालना करे ॥ हवे त्रिशला मातानें भला भो होला उपजे छे के पूजा करुं, दान आपुं, स्वामी वात्सल्य करुं इत्यादिक डोहोला सर्व त्रिकार्थ




चित्र १०
पर्वत
सैन्य
सिद्धार्थ राजा
कुंडल उतारे छे.
इंद्र नासी जाय छे

राजा संपूरण करे, हर्ष सहित सन्मान करीने पूरा करे पण एवुं न कहेके तुंतो वेठी वेठी फंद करे ने एवीरीतें मोहोलानुं अपमान करे नही, एम त्रिशलादेवीने उपजता मोहोलानी इछा सर्वथा तेना मनमां रहे नही एप्रकारें मटावी आपे ने. तिहां रथवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखनां मोहोला तो सर्व सिद्धार्थराजायें पूर्या परंतु एक दिवसें त्रिशलादेवीने एवो मोहोलो उपन्यो के इंद्राणीनां कुंमल खेंची लइने हुं पहेरुं ते मोहोलो राजाथी पूरण थयो नही तेथी मनमां डुमणी थइ (अर्थात् खिन्न थइ) तेवारे राजाना पूछवाथी मोहोलो पूरो करवानी वात राणी ना मुखथी सांजलीने राजा कहेवा लाग्यो के ए मोहोलो पूरण करीश पण ए वात महारा हाथमां नथी एटलामां इंद्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारे इंद्रे अवधिज्ञाने जोइने जगवाननी माताने मोहोलो पूरण करवा सारुं इंद्राणी प्रमुख देवांगनाना समूहने लइने क्षत्रियकुंम नगरनी समीपे एक महादुर्गम पर्वत ने तिहां इंद्रपुरनामे नगर वसावीने पोताना परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजायें सांजल्युं जे इंद्र महाराज आपणा पर्वतमां रहे ने तेवारे सिद्धार्थराजायें इंद्र महाराजने कहेवरावी मोकल्युं के अमारी राणीने कुंमल जोइयें नेयें माटे तमारी इंद्राणीनां कुंमल आपजो ते सांजली इंद्रे कुंमल आप्यां नही तेवारे सिद्धार्थराजा सेना लइ इंद्र सार्थे युद्ध करवा गयो तिहां इंद्रमहाराजतो जीतवाने समर्थ ने तथापि जाणी बूजी हार खाइने जागी गया पाछलथी सिद्धार्थराजायें पोकार करती रुदन करती एवी इंद्राणी अप्सरानां वृंदमां वेठेली हती तेना कुंमल ब्रूटीने त्रिशलाराणीने आपीने मोहोलो पूरण कर्यो. वली बीजा पण सत्तरजेदी पूजा रचावुं, तीर्थयात्रा करुं, देवगुरुनी जक्ति करुं, सुपात्रे दान आपुं इत्यादिक अनेक मोहोला त्रिशलाने उपन्या ते राजायें पूरण कर्या ॥ ॥ एवी

रीतें शिशजा राणी गोहोजा पूरीजती, सुवे, वेशो, उनीरहे, सघली रुतुने विषे सेववा योग्य, गर्नने सुखनां करनार, एवां जोजन, आछादन, वस्त्र, गंध, माला प्रमुख लीये, गर्जना हित कारक पथ्ये करी देशकाल योग्य आहार करती थकी, गर्जपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी साहेलीउ प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी फरती थकी पोताना आवासमां रहे छे ॥ ए६ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमणजगवंत श्रीमहावीर स्वामी उनालानो पहेलो चैत्र महीनो तेनुं बीजुं पखवाडियुं एटले चैत्रशुद्ध, ते चैत्रशुद्धनी तेरशने दिवसें नवमहीना उपर साडासात दिवस गया थकां इहां नवमहीनाने साडासातदिवस गर्जावासनो अधिकार छे परंतु उंडो अधिको होय तोपण पाठ एवो बोले तो तेनी कांइ हरकत नथी गर्नमां रहेवानो काल तो चोवीशेयतीर्थंकरनो आ प्रमाणे छेः— श्रीरुषजदेवजी नवमहीनाने चारदिवस रह्या, श्रीयजितनाथजी आठ महीनाने पच्चीश दिवस रह्या, श्रीसंजवनाथ नवमहीनाने छ दिवस रह्या, अजिनंदन आठ महीनानें अठावीश दिवस, सुमतीनाथ नवमहीनाने छ दिवस, पद्मप्रज नवमहीनाने छ दिवस,सुपार्श्वनाथ नवमहीनाने छदिवस,चंद्रप्रज नवमहिनाने आठदिवस,सुवि धिनाथ आठ महीनाने छवीश दिवस, शीतलनाथ नवमहीनाने छ दिवस, श्रेयांसनाथ नवम हीनाने छ दिवस, वासुपूज्य आठमहीनाने वीशदिवस, विमलनाथ आठमहीनाने एकवीश दिवस, अनंतनाथ नव महीनाने छ दिवस, धर्मनाथ आठमहीनाने छवीश दिवस, शांतिनाथ नव महीनानें छ दिवस, कुंथुनाथ नवमहीनाने पांचदिवस, अरनाथ नवमहीनाने आठदि वस, मल्लीनाथ नवमहीनाने सातदिवस, मुनिसुव्रत नवमहीनाने आठदिवस, नेमिनाथ तथा नेमनाथ नवमहीनाने आठदिवस, पार्श्वनाथ नवमहीनाने छ दिवस, श्रीमहावीरस्वामी नवम

हीनाने साडासात दिवस ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्भस्थिति कही ॥ हवे चंद्रराशिना सात ग्रहमां पहेलो चंद्रयोग होते छते, निर्मल दशदिशाओ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होते छते, जनमति वेलायें अंधकाररहित, अग्नि दावानल प्रमुख नाश्य रहित दिशाओ होते छते, एवा वखतमां पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्यां छे, प्रदक्षिणावर्तसानुकूल शीत मंदमंद सुगंध सहित एवो पवन भूमिमां चालीरह्यो छे पृथ्वीमां सर्वजातिनां धान्य नीपज्यां छे तेना योगें करी हर्षवंत थया थकां सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थका विचरी रह्यां छे तेकालें मध्य रात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना त्रीजा पाया सार्थे चंद्रमानो योग होते छते रोग रहित एवी त्रिशलाराणी ते रोगरहित त्रणज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हवी ॥९७॥ ॥ इति चतुर्थ व्याख्यान समाप्त ॥ यत्र जन्मकुंडली स्थापना ॥ स्वस्तिश्री ऋद्धि वृद्धि जयोमंग



लाभ्युदयश्च संवत् छविशें एकाणुना वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ सोमवासरे घटी. ५५ पल. ११ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी. ६० ध्रुवयोग घटी. ४५ पल. ५५ तैतलकर्णे एवं पंचाग शुद्धौ श्री इष्ट घटी. ४५ पल, १५ इक्ष्वाकुवंशे श्रीक्षत्रिय कुंडग्राम पुरनयरें सिद्धार्थगृहे नार्या त्रिशला क्षत्रियाणी कुक्षौपुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण भुवन दीपक भगवंत श्रीमहावीर जन्म्या तस्य जन्म कुंडली स्थापना ॥ ॥ अथ पंचम व्याख्यान प्रारंभः ॥ जे रात्रिमां श्रीमहावीर स्वामी जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता अने देवीयो ते स्वर्गमां जातां आवतां जाणे घणाज आकुल व्याकुल थइ रह्या होय तेनी पेरें जाणवामां नही आवे एवो तेनो शब्द होतोहवो अर्थात् अव्यक्त कोलाहल शब्दमय होतो हवो एटले जेवारे घणाजनो बोले

तेवारे शब्दमय थाय पण मालम पडे नही॥ हवे सूत्रना अर्थने अनुसारें विस्तार सहितजन्ममहो त्सव कहिये छैयें ॥ जे समयमां श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो तेवारें त्रण जगतमां उद्योत थयो,वली आकाशमां देवडुंडुनी वाग्यां,वली नरकना जीवोने पण क्षणमात्र आनंद थयो, केम के नगवंतना अतिशय थकी नारकी जीवने पण मुहूर्त्त मात्र शाता रहे वली स्थावरजीवोनुं पण विशेष छेदन नेदन नथाय तेथी तेने पण सुख उपजे,जन्मती वेलायें सर्व जमीन उल्लासमानननी पेरें थइ रही,हवे श्रीनगवंतनो जन्ममहोत्सव कहेछे. तेमां पण प्रथम छप्पन्न दिशाकुमारीयें करेलो जन्ममहोत्सव कहे छे. तिहां नगवानना जन्म थयाथी छप्पन्न दिग्कुमारिकानां आसन चलायमा न थयां तेवारें अवधि प्रयुंजी नगवाननो जन्म थयो जाणी, रात्रें तिहां आवे, तेनां नाम कहे छे, रुचकद्वीपनी वसनारी चार दिशानी आठ आठ, तथा वे विदिशानी चार चार अने मेरुनी ऊर्ध्व दिशानी तथा गजदंत गिरीनी अधो दिशानी आठ आठ, मली छप्पन्न दिग्कुमारिका ते रात्रें तिहां आवे, तेमां प्रथम नोगंकरा, नोगवती, सुनोगा, नोगमालिनी, तोयधरा, विचित्रा, पुष्पमाला अने अनंदिता, ए आठ दिग्कुमारिकाउ अधोलोकें गजदंताकार पर्वतनी हेठें वस नारी छे, ते आवीने नगवंतने तथा नगवंतनी माताने नमस्कार करीने, ईशानकोणें एक सू तिका घर बनावे, एक योजन एटले चार गाउ प्रमाण धरतीने संवर्तक वायरे शुद्ध करीने कांटा, कांकरा, दूर करीने सुगंधित करे ॥ तेवार पछी मेघंकरा, सुमेघा, मेघवती, मेघमालिनी, सुव त्सा, वत्समित्रा, वारीषेणा अने बलाहिका, ए आठ दिग्कुमारिकाउ ऊर्ध्व लोकें नंदन वनना कूटोने विषे वसनारी छे, त्यांथी आवीने प्रजुने तथा प्रजुनी माताने नमस्कार करीने ते सू तिका घरने विषे सुगंधित पाणीयें करी सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती रहे॥ तेवार


चित्र २१
दिग् कुमारिका
दिग् कुमारिका



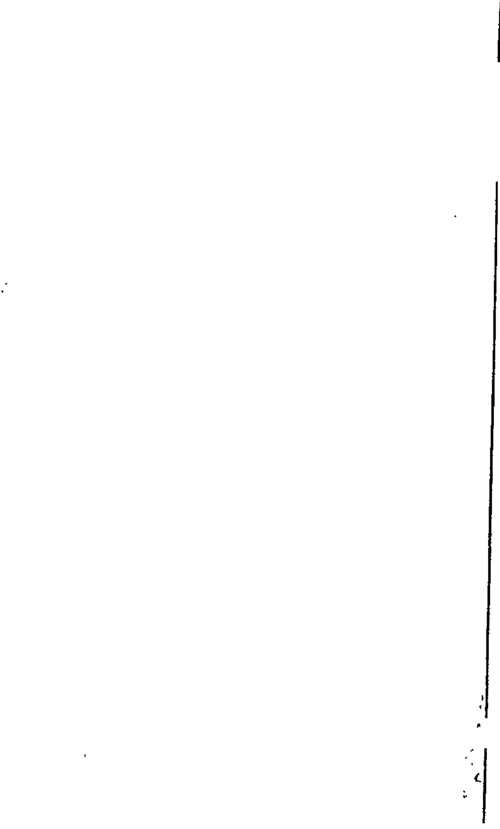
पछी वळी नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा नंदीवर्द्धिना, विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता, ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे. ते त्यांथी आवीने भगवान् तथा भगवाननी माताने नमीने मुख देखवाने प्रभुआगळ दर्पण हाथमां लइने गीत गाती उभी रहे॥तथा समाहारा,सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा, ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकनामा तेरमा द्वीपनी दक्षिणदिशाना पर्वतने विषे वसनारीओ छे, ते त्यांथी आवी जिनने तथा जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना शृंगार कलश सुगंधित पाणीथी भरी हाथमां धारण करी भगवाननीमाताने स्नान करावे प्रभु आगळ गीत गान नाटारंभ करे ॥ तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी. पद्मावती, एकनासा, नवमिका, भद्रा, अने सीता, ए आठ रुचक द्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारीयो छे, ते त्यांथी आवीने प्रभु तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करी भगवाननी मातानी आगळ वायरो करवाने अर्थे वींजणा हाथमां लइ उभी रहे ॥ तथा अलंबुशा, मितकेशी, पुंडरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री अने ह्री, ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचक द्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने विषे वसनारीओ छे, ते आवी भगवंत तथा भगवंतनी माताने नमीने भगवंतनी बे बाजुयें चार चार उभी थकी चामर हाथमां लइने प्रभुने ढोळे ॥ तथा विचित्रा, चित्रकनका, तारा अने सौदामिनी ए चार दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते यावीने भगवंत तथा भगवंतनी माताने नमीने हाथमां दीवा ग्रहण करीने उभी रहे॥ तथा रूपा, रूपासिका, सुरूपा अने रूपकावती, ए चार दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशिमां वसे छे, ते आवीने भगवंत तथा भगवंतनी माताने नमीने भगवंतनुं चार अंगुल प्रमाण नाळवर्जीने कापे पछी

धरतीमांहे खामो खणीने माटे, तेना उपर वैडूर्य रत्ननो चोखंभो चोतरो करे, तेनी उपर दर्न वावे तेवार पठी सूतिका गृहथकी वेगलां एक पूर्वदिशें, एक दक्षिणदिशें अने एक उत्तर दिशें, ए त्रण ठेकाणें त्रण केलीनां घर करे, तेमां सिंहासन रचे पठी दक्षिण दिशिना केलीगृहमध्यें नगवंत तथा नगवंतनी माता, ए बेहुने लावीने सिंहासन उपर बेशाडीने तेमने सुख उपजे एवुं सुगंधी तेलोनुं मर्दन करे, पठी पूर्वदिशिना केलीगृहमां लइ जइ सिंहासन उपर बेसाडी स्नान करावें, चंदन लेपन करे, पठी उत्तर दिशिना कदलीगृहमां सिंहासन उपर बेसाडी अरणीकाष्ठथी घसीने अग्नि जगाडी चंदनना काष्ठयी शांति पुष्टि होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली करी नगवंत तथा नगवंतनी माता ए बेहुना हाथमां बांधे, बांधीने हे नगवान्! पर्वतायुर्नव. एवी आशीष आपीने मणिमय गोला बे उठाले पठी तेने वजावीने नगवानने रमवासारुं पल्यंक उपर बांधीने गीत गान करी नगवंत तथा नगवंतनी माताने जन्मस्थानकें मूकी पाठी पोत पोताने स्थानकें जाय॥ ए एकेकी दिग्कुमारिकाने चार चार महत्तरादेवी ठे, चार हजार सामानिक देवो ठे, शोल हजार अंगरक्षक देवो ठे, सात अनीकाधिपति ठे, तथा बीजा पण घणा परिवारें परिवृतथकी एक योजनना विमानमां बेशीने प्रजुनो जन्ममहोत्सव करवाने जेम आवें, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानकें पाठी जाय, ए देवी नवनपतिमांहेली एक पल्योपमायु वाली जाणवी, ए देवीयोनो एज स्वजाव ठे, के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनुं आसन चलायमान थाय, तेवारें प्रजुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पठी बीजा इंडादिक देवो करे इति॥१॥ एम दिग्कुमारिकाउयें महोत्सव कस्या पठी चोसठ इंडोना आसन चलायमान थाय तेवारें श्रीमहावीर नगवानने जन्म थयो एवुं अवधिज्ञाने जाणीने प्रथम सौधर्म

चित्र ११







इंद्र, हरणीगमेषी देवताने बोलावी बार योजन पोहोळी अने ७ योजन उंची तथा एक यो
जन नाली, पाठांतरें चार योजननी नाली कहे छे ॥ उक्तंच ॥ बारसजोयण पहुला, सुघोसा
घंटाई अद्धउच्चत्तं ॥ चत्तारिय नालाउ, देवा सयपंच वायंति ॥ १ ॥ एवी सुघोषा नामे घंटा
वजाववानो हुकम आपे, तेवारें हरणी गमेषी देवता पांचसें देवोनी साथें ते घंटा वजावे ते
घंटाना शब्दथी सौधर्म देवलोकनां बत्रीश लाख विमाननी घंटा वाजे,तेवारें सर्व देवता साव
धान थइ जाय ॥ यदुक्तं ॥ सुणिऊण संखसद्दं, मिलंतिभवणाय वितरं पडहं ॥ जोइसियं सीह
नायं, घंटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥ एज प्रमाणें इशानेंद्र लघु पराक्रमनामा देवता पासे
सुघोषा घंटा वजडावे, एम चोसठ इंद्र सहु पोतपोताना देवोनी पासें घंटा वजडावे तेवारें
सर्व देवो इंद्र महाराजनुं कांइ कार्य छे एवुं जाणीने इंद्रमहाराजनी पासें आवी हाजर थाय
पछी सौधर्मेंद्र पण पालकनामा देवतायें बनावेल लाख योजननुं पालकनामक विमान तेना
मध्यभागमां पूर्वदिशानी साहामो सिंहासन उपर बेसे तेनी आगल इंद्रनी आठ अग्रमहिषी
आठ भद्रासन उपर बेसे अने इंद्रनें डाबे पासे चोराशी हजार सामानिक देवो भद्रासनो
उपर बेसे जमणे पासे त्रण पर्षदा बेसे तेमां बार हजार अभ्यंतर पर्षदाना, चौद हजार म
ध्यम पर्षदाना तथा शोल हजार बाह्य पर्षदाना मली बेंतालीश हजार देवो भद्रासन उपर
बेसे तथा इंद्रनी पछवाडे सात कटकना देवो भद्रासन उपर बेसे चारे दिशायें चोराशी चो
राशी हजार आत्मरक्षक देवता भद्रासनो उपर बेसे. एवीरीतें सर्व चोसठ इंद्रो पोतपोताना
विमानमां बेग जाणी लेवा. ए प्रकारें सर्व इंद्र देवदेवीउ सहित नंदीश्वर द्वीपें आवे तेमां
केटलाएक देवो इंद्रनो हुकम राखवा सारुं आवे, केटलाएक देवो मित्रना प्रेर्या थका आवे,

केटलाएक पोतानी देवीउंना प्रेर्या थका आवे, केटलाएक तीर्थंकरनी नक्ति नावें करी आवे, केटलाएक कौतुक जोवा सारुं आवे, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थे आवे, ते देवो पोतपोताना जूदा जूदा वाहन उपर चड्या थकां मांहोमांहे आपसआपसमां सिंहना वाहन उपर चडेला देवता हस्तिना वाहन उपर चडनारा देवताने कहे ठे के ताहारो हाथी दूर राख, नही तो महारो सिंह जबरजस्त ठे ते तारा हस्तिने मारी नाखशे एमज पाडाना वाहन उपर चडेला देवता घोडाना वाहन वालाने कहे ठे तथा गरुड उपर असवारी करनार देव सर्प उपर असवारी करनाराने कहे ठे तथा चित्राना वाहन उपर बेठेला देवो ठे ते गगना वाहन उपर बेसनाराने कहे ठे एम वचन विवाद करता कोडाकोडी देवताउ सहु पोतपोताना वाहननी प्रशंसा करता चाले ठे, तिहां देवसमुदायें करी आकाश यद्यपि घणुं महोटुं ठे तोपण सांकडुं थई गयुं, वली मार्गमां कोइएक देवता मित्रने ठोडी आगल चाल्या जाय तेवारें तेनो मित्र कहे के अरे थोडीवार उना रहो हुं पण आवुं हुं तेवारें ते देवता कहे प्रथम नगवानने वांदवानो महोटो लान कोण मूके? एवुं कहीने चाल्यो जाय एवीरीतें जे जबरजस्त होय ते आगल निकली जाय अने कोइएक नबला होय ते पडता थका बोले जे नाइ आ मार्ग घणो सांकडो ठे तेवारें बीजो कोइ कहे चुप रहो ए पर्वना दिवस सांकडाज होय ठे कोइ कहे घणुं नही बोल खबर पडशे तो इंद्र मारशे एवीरीतें आकाशथी हेठा उतरतां थकां जेवारें ज्योतिषीना तारा पासें आव्या तेवारें ताराउंनी किरणो लागवाथी कवि उत्प्रेक्षा करे ठे के जो पण देवता सर्व निर्जर ठे तोपण जरा सहित थया मस्तकमां जाणे धोला केश लाग्या के शुं? एवा देवताना मस्तकें ताराना विमान शोनि रह्यां ठे. ते जाणीयें



चित्र १३





रूपानो घडोज होय नहि!! वली शरीरे तारा लाग्या तेना योगें परसेवाना बिंड सरखा दिसवा लाग्या एरीतें सर्व इंद्र अने देवो नंदीश्वरद्वीपमां विमान संकोचीने रहेता हवा ॥ हवे सौधर्मेंद्र भगवानना जन्म घरने विषे आवीने,भगवान तथा भगवाननी माताने नमस्कार करीने, त्रण प्रदक्षिणा आपी भगवाननी माताने कहे के हे रत्नकुक्षिधारिणी! हे रत्नगर्ने! हे रत्नदीपक हे माता! पहेला देवलोकनो हुं इंद्र छुं ते ताहारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे तेनो जन्म महोत्सव करवा सारुं आव्यो छुं माटे तमे कांइ डरशो नही एम कही "नमोस्तु रत्नकुक्षिधारिके तुभ्यं" ए पाठ भणीने भगवंतनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपीने बीजो भगवान जेवुंज स्वरूप करी मातानी पासे राखीने इंद्रे पोताना पांच रूप वैक्रिय बनाव्यां तेमां एक रूपे करी बे हाथे करसंपुटमां राखी भगवानने उपाड्या अने एक रूपें भगवंतनी पछवाडे रह्यो थको उपर छत्र धर्युं अने बे रूपें बे पासें चामर ढालवा लाग्यो, अने एक रूपें वज्र उछालतो थको भगवाननी आगल चाल्यो, एम बधां मली पांच रूप इंद्र महाराजें वैक्रिय कर्यां, तेमां आगलो पाछला रूपने वखाणे अने पाछलो आगला रूपने वखाणे, एम पांच रूपें करी इंद्रमहाराज, मेरुपर्वत उपर जिहां पांडुक वन छे, तिहां भगवंतने लइ आवीने मेरुनी चुलिकाथी दक्षिण दिशियें अतिपांडुकमला शिलाने तले शाश्वतुं सिंहासन छे, तेनी उपर भगवानने उत्संगमां लइने इंद्रमहाराज पूर्व सन्मुख बेठा, तेवारें तिहां बार देवलोकना दश इंद्र, भवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, अने चंद्रमा तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इंद्र, एम सर्व मली चोसठ इंद्र सपरिवार प्रभुनेस्नात्र करावबाने अर्थे मल्या छे, ते सर्व इंद्र तथा देव मलीने पोतपोताना सेवक देवताउने आज्ञा आपे के जाउ एक हजारने आठ

सोनाना कलश, तथा एक हजारने आठ रूपाना कलश, तथा एक हजारने आठ रत्नना कलश, तेमज चोथा सुवर्णरौप्यमय, पांचमां सुवर्णरत्नमय, छठा रत्नरौप्यमय, सातमा सुवर्णरौप्यरत्नमय,आठमा मृत्तिकामय, ए आठ जातिना प्रत्येक एक हजारने आठ आठ कलशो, करतां आठ हजारने चोसठ कलश थाय एवा सर्व मली अभिषेक कलशो एक क्रोडने साठ लाख होय तेनो विवरो लखीयें छैयें भवनपतिना वीश इंद्र, व्यंतरना बत्रीश इंद्र, वैमानिकना दश इंद्र, तथा अढी द्वीपना एकसोने बत्रीश सूर्य चंद्र, धरणेंद्र भूतानेंद्रनी चार इंद्राणी, व्यंतरनी चार इंद्राणी, चमरेंद्रनी दश इंद्राणी, ज्योतिषीनी चार इंद्राणी, सौधर्म ईशान ए बेनी सोल इंद्राणी, सामानिक देवोनो एक, त्रायस्त्रिंशकनो एक, लोकपाल देवोना चार, अंगरक्षक देवोनो एक, पर्षदाना देवोनो एक, प्रजाना देवोनो एक, अने सात कटकना देवोनो एक, एम सर्व मली बशें ने पचाश अभिषेक थाय, ते एकेंक अभिषेकें चोसठ हजार कलश होय, तेवारें चोसठ हजारने अढीसो गुणा करतां,एक क्रोडने साठ लाख कलश थाय. ए एकेका जातिना कलश, पच्चीश योजन उंचा बार योजन पोहोला, अने एक योजननां नालवा वाला जाणवा, एवा कलश, तेमज वली भृंगार, दर्पण, रत्नकरंडीआ, थाला, पात्रिका, पुष्प चंगेरी इत्यादिक पूजानां उपकरण प्रत्येकें एक हजारने आठ प्रमाणे जाणवां तथा मगधादिक तीर्थनां जल, गंगा प्रमुख नदीउनां जल, पद्म द्रहनां जलथी कलशाभरी लावो अने चुल्लहिमवंत, वृत्तधर, वैताढ्य, विजय, वक्षस्कार, देवकुरु, उत्तरकुरु, भद्रशाल अने नंदनवन प्रमुखना सर्व फल, प्रधान गंध, सर्व औषधि, पाणी प्रमुख अभिषेक वस्तु पण देवतापासेंथी अणावें, तेवारे सेवक देवो सर्व क्षीरसमुद्र प्रमुखना जलें करी कलशभरी पोताना ...



चित्र १४

पांडुक वनमां प्रभुजीनो स्नात्रमहोत्सव देवो करेछे. चार वृषभना रूपें इन्द्र नवरावेछे.



धरीने नना रहे ते सर्वे विचारे ले जे इंद्रमहाराज आज्ञा आपे तो कलश ढोलीयें ते देवता एवा शोचे ने के जाणीयें संसार समुद्रने तरवाने अर्थें कुंज धर्यो होय नहीं ? एवा शोचे ले. तथा नावबृक्षने सिंचेने किंवा पोतानां पापरूप मलने धुवे ले, अथवा धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चढावे ले, के शुं ? हवे एवा अवसरने विषे, इंद्र महाराजना मनमां एवो संशय उत्पन्न थयो के आ नानो बालक थका श्रीवीर नगवान्, एटला कलशोनी जलधाराथी महारा खोलामांथी क्यांय जता रहेशे एवडा जलाजिषेक केम सहन करी शकशे ? एवुं जाणी अनिषेकनो आदेश न देता हवा, तेवारें नगवंतें अवधिना बलें करी इंद्रनुं शंकित मन जाणीने अरिहंतपणानुं अतुल्य बल जणाववा निमित्तें खोलामां बेठा थकांज बालरूपें मावा पगने अंगुठेथी सिंहासन फरस्यो, तेवारे शिला कंपायमान थइ तेना कंपवाथी मेरुचुलिका कंपायमान थइ, तेवारें लाख योजननो मेरुकंप्यो, तेना कंपवाथी सर्व पृथ्वी कंपी, सकल धरती थरहरवा लागी, पर्वतनां शिखर तूटवा लाग्यां, समुद्र जलक्षोन पाम्यो चलाचल थयो, ब्रह्मांम फाटवा सरखो शब्द थयो, सर्व देवो नय पाम्या, देवांगनाउं नयने लीधे देवोना गलामां वलगी तेवारें इंद्र क्रोधें धाम्यो थको कहे ले, के अरे आ हर्षना समयने विषे आवो उत्पात विषाद कोणें कर्यो ले ? वली प्रनुना जन्म महोत्सवमां एवां विघ्न करवा वालो आ कोणदुष्ट ले ? एम विचारी हाथमां वज्र लइने अवधि प्रयुंजीने जोयुं तो प्रनुनी शक्ति जाणी के एतो नगवाने पोतेज सर्व कर्युं ले में अज्ञानथी तीर्थंकरनुं बल नही जाण्युं एवुं जाणीने इंद्र पगे लागी खमावीने स्तुति करवा लागो ॥ नुजंगप्रयात लंद ॥ सुणो वीर्य वोल्लुं विशालो विबुधो, नरें बार योद्ध मली एक गोधों ॥ दशे गोधले लेखवो एक घोडो, तुरंगेण बारें मली एक पाडो ॥ दशे पंच महियो

मदोन्मत्त नागो, गज पांचशें केशरी वीर्य त्यागो ॥ हरि वीशशें वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष अष्टापदे राम एको ॥ नला रामयुग्में समो वासुदेवो, द्वितीय वासुदेवें गणी चक्रि लेवो ॥ नला लक्ष चक्री समो नाग शूरो, वली कोडि नागाधिपें इंद्र पूरो ॥ अनंते सु इंद्रे मली वीर्य जेतुं, टची अंगुली वीरप्रञु वीर्य तेतुं ॥ १ ॥ ॥ एम इंद्रे वखाण्या तथा मेरुपर्वतें विचार्युं जे अनंता तीर्थंकरना जन्माजिषेक म्हारा उपर थया, परंतु मुजनें कोणे पगें फरश्यो न हतो, ते हमणां श्रीवीरें फरश्यो, तेथी हुं पण धन्य हुं. एम समजीने जाणे हर्षथी नाच्यो थको चिंतवे ठे जे हुं सर्व पर्वतनो राजा ते खरे खरो हुं. वली पांच मेरुमां पण हुं म्होटो अग्रेसर ते पण खरेखरो हुं. हवे शक्रेंद्रना आदेशथी प्रथम बारमां देवलोकनो अच्युतेंद्र स्नात्र करावे ते पठी अनुक्रमे उतरता उतरता इंद्रादिको अजिषेक करे ठेल्ला चंद्र सूर्य स्नात्र करे एम सर्व अ दीठें अजिषेक थाय पठी इशानेंद्र, जगवानने खोलामां लेइनें बेसे अने सौधर्मेंद्र चार धवल वृषजना रूप विकूर्वीने तेना आठ शींगडायें करी खीर समुद्रना पाणीनी धारायें अजिषेक करे एवा विधियी सर्व देवो पोतपोतानी जक्ति करी स्नात्र करावे पठी जगवंतनुं शरीर गंधकं पायें वस्त्रें लोहीने फूल, बावना चंदन विलेपन, अक्षत ढोकन, दीप, फल, धूप, पाणी, नैवेद्य ए आठ प्रकारनी पूजा करीने जगवाननी आगल श्रीवत्स, मत्स्ययुग्म, दर्पण, पूरण कलश, स्वस्तिक, नंदावर्त्त, जद्रासन, सरावसंपुट ए आठ मंगल रूपानां अक्षतें करी आलेखे, पठी आरति करे, गीतगावे नृत्य करे, वाजित्र वजावे, पठी अपूर्व एकसो आठ काव्यनी रचना करी स्तुतिरूप जावपूजा करे ते करीने पठी जगवानने जगवाननी माता पासे मूके, अवस्वा पनी निद्रा दूर करे. वली जगवाननो प्रतिबिंब तिहां प्रथम स्थापन करेलो हतो तेपण दूर



चित्र १५






चित्र २६
सिद्धार्थ राजा
दासी वधामणी आपेछे.
चोकीदार
सीपाई

करीने रत्नजडित कुंमल युगल तथा देवद्रूष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजडित दडो जगवानने रमत करवाने अर्थे मूकीने तथा बारकोड सोनैयानी वृष्टि करीने वली एज पाठ केटलिएक प्रतोमां आवीरीते लखेलुं ने के उपर रत्नजडित चंदुउं बांधी, रत्न जडित बे कुंमल तथा श्रीदाम ते रत्नजडित सुवर्णनो दडो ए सर्व उसीशे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पछी सौधर्मेंद्र सर्व देवोमां एवो ढांको करीने कहे के नोनो देवो जे हुं कहुं छुं ते तमे सांजलो केजो के जे कोइ देव अथवा असुर दानव, जगवान उपर तथा जगवाननी माता उपर माठी चिंतवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजर नी पेरे आ वज्रथी नेदी नाखीश ए प्रमाणे कहीने जगवानने अंगुठाथी अमृत संचार करी सर्व इंद्र नंदीश्वरद्वीपमां आवी अठाइमहोत्सव करीने पछी पोतपोतानें स्थानकें जाय तिहां पण अठाइ महोत्सव करे इति देवकृत जन्ममहोत्सव समाप्त ॥ २ ॥ हवे सिद्धार्थराजायें क रेलो जन्ममहोत्सव लखे ने. पुत्र जन्म्या पछी दासीयें जइने राजाने वधामणी आपी राजा पोताने घेर पुत्रनो जन्म सांजलीनें रोमरोम हर्षवंत थयो एक मुकुट विना बीजां सर्व आजू षण जे पोताना अंग उपर हतां ते दासीने आपी दीधां, मायुं धोयरावीने तेनुं दासीपणुं दूर कर्युं, पेढीधरपेढी सुधी खाय एटलुं धन दासीने आप्युं. जे रात्रिमां श्रमणजगवंत श्रीम हावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवनी आज्ञा धारक तिर्यग्जृंजक दे वताउए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्रहो रानी वृष्टी करी, वस्त्रनी वृष्टी करी, आजूषणनी वृष्टि करी, नागरवेल पत्र, फल, फूल तथा बीजने शालि प्रमुख ते सर्वनी वृष्टि करी, माला, गंध, वास, सुगंधि चूर्ण तथा हिंगलु

प्रमुख रंग अने सोनामोरोनी वृष्टि करी, ते अगणित वृष्टि करी, कोइक ठेकाणे एवुं लखेलुं छे के पन्नर मास पर्यंत त्रणक्रोड रत्न वरसावे ॥ ९९ ॥ हवे देवताउयें जे घरेणानी सिद्धार्थराजाने घेर वृष्टि करी तेनां नाम कहे छे ॥ मुकुट, कुंमल, हार, अर्द्धहार, बाजुबंध, बेरखा, त्रिसरा, चोसरा, छसरा, सातसरा, आठसरा, नवसरा, अढारसरा, एकावली, कनकावली, टकावली, रत्नावली, मुकुटावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवाली नक्षत्रावली श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, रसना, खूंप, पट्टशिखर, चूडामणि, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रानंदक, दशमुद्रक, मुद्रिका, अंगुलीय, कदंब, पुष्पक, तिलजंगक, कर्णपीठिक, चत्रक, अजर, मेखला, मुंदक, पदक, पडकडि, सांकलुं, सांकली, विशिष्ट, मौक्तिकजंग, छतरी, दोरा, हांसडी, कर्णपाल, संकपाल, गेययक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, रत्नजाली, गोपुछक, उरसूका, ममेक, वर्ण, वरिका, हांस, जांजर, नेपूर, घूघरा, पागडां, वीठीआ, अंगूथली, बालाजाली, फूंमणा, अकोटा, रूपालहेरिआ, राखमी, गोफणो, फूली, सियो, त्रसंटीउं, त्रोटी, बोरडां, कडी, वेढला, मुरकी, मोती, नरगंगोडा, नागफणां, तुंगल, चंपकली, पानडी, झलरा, वाली, मोतीसर, तांतिं, गांठिआ, बरघली, पोंची, गलसिरि, टीली, चांदला, आडी, नवग्रह, मुद्दडी, अंगुठी, वेढ, वींटि, वांकडा, छाप, करजालुं, मादलिआं, कंदोरो, खेलमादलियां, पाटीआलो कंदोरो, लटकण, मउड, नागफूली, नाग, नागलां, मौर, वैसण, नय, कांटो, मयोदय, आंजण, उगनियां, हिंगलो, कुंकुम, एला, जवला, चूडी, चूडली, थर, कंकण, कारेली, लालि, पंचमेखला, हायसांकली, सोनानांलहेरिआं, तावीत, कडलां, सलिआलुं, कलांडी, अणवट, लोलिआं, कुंची, पाईल, सातग्रैवेयक, नवग्रैवेयक, [illegible] जेवेद इत्या

दिक अनेक जातिनां आजरणोनी वृष्टि करता हवा ॥ हवे जगवंतने जन्म कल्याणके चौदराजलोके उद्योत थाय नरकमां पण उद्योत थाय तिहां पहेली नरकें सूर्यसमान तेज थाय, बीजीयें बादलायें ढांकेला सूर्यसरखो तेज थाय, त्रीजीयें चंद्रमा सरखुं तेज थाय, चोथीयें बादलायें ढांकेला चंद्र सरखुं तेज थाय, पांचमीयें ग्रह सरखुं तेज थाय, छट्ठीयें नक्षत्र सरखुं तेज थाय, सातमीयें तारा समान तेज थाय एम जगवानने जन्मादिक पांच कल्याणकें नरकादि सर्व चौदराजलोक पृथ्वी आदिकमां सर्वत्र तेज थाय एवीरीतें जवनपति, व्यंतर, वाणव्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवतायें तीर्थंकरनो जन्ममहोत्सव कर्या पछी प्रजातसमये सिद्धार्थराजा नगरना रखवाळाने बोलावीने कहेतो हवो ॥१००॥ ॥ हे देवाणु प्रिया तमे उतावळा क्षत्रियकुंडनगरमां बंदिवानोने छूटा करी मूको अने तोल मापां वधारो तथा क्षत्रियकुंडनगरनी मांहेली कोरे अने बाहेर कचरो कांटो काहाडी साफ करो, लींपावो, तेनी उपर सुगंधजलनो छटकाव करावो, त्रिखूणामार्ग त्रणमार्ग, त्रवाटा, चोवटा तथा जिहां घणा मार्गजेलाहोय तेचत्वर चारमुखमार्ग, राजमार्ग ए सर्व रस्ताने पवित्र करावो, कचरा कांटा काहाडीने साफकरावीने रस्ताने बरोबर करो, तथा जेनी उपर बेशीने सुखेथी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके एवा महोटा मांचाउपरमांचा बंधावो, अनेक प्रकारना रंगनी ध्वजा पताकाउ करावी स्थानके स्थानके बंधावीने नगर शोजायमान करो, शहेरना मार्गोने लीपावो, धोवरावो, वळी गोशीर्षचंदन, रक्तचंदन, पांचआंगुलीआ छापा देवरावो, घरमां चंदनना कलश थापन करावो, चंदनकलशघटित तोरणोने घरोना बारणे बंधावो, लांबी महोटी अने गोळ तथा लटकति एवी पुष्पमालाउनो समूह लटकावो, पांचवर्णा फूलोना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस, धूकतो थको घमघमायमान

मनोहरगंध सुगंधगंधित अगरबत्ती उखेवो, मनोहर गंध करो, वली नाटक करवा वाला जे पोतें नाटक करे ते, स्त्रीउपर नाचे ते, मल्लयुद्धकरनारा, मुठीयोथी युद्धकरनारा, जांभ नगा इगा, कथाना करणावाला, रास बोलवावाला, उंट अने हाथी उपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वंशावलीनां बोलनारा, पावक कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमि त्तना कहेवा वाला, वांसनी उपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखवावाला जेने मंख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी भरीनें वजावे तेने तूणयल्ला कहे छे ते, तुंबिनी वीण वजावनारा, हाथताल देइने नाचनारा, अनेकतालना वजावनारा, ए सर्वने बोलावीने ठेकाणे ठेकाणे बेसाडी आपो ए सहु पोतपोतानी कलाउं लोकोने देखाडे ए काम तमे करो तथा बीजापासें करावो वली हजारो गमे धूंसरा एटले विवाहना मंडपमां घाले छे ते तथा हजारो गमे मुसल उंचा करावीने म्हारी आज्ञा मने पाछी सोंपो ॥ १०१ ॥ ॥ तेवारें ते कौटुंबिक पुरुष घणाखुशी थइने राजाना हुकुम प्रमाणे काम करीने राजानी आज्ञा राजानें पाछी सोंपी ॥ १०२ ॥ तेवार पछी सिद्धार्थराजा मल्लयुद्धनी शालामां आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नानकरीने सर्व वस्त्र घरेणां माला प्रमुख पहेरीनें महोटा तेजसहित, मोहोटाबलसहित, सर्व वाजा वाजतां थकां, महोटी ऋद्धि, महोटीकांति, महोटी सेना, घणां वाहन, घणो समुदाय, महोटां महोटां वाजित्र सर्व भेलां समकाले साथें वजाड्यां, तेथकी शंख, पटह ढोल, भेरी, झलर, खरमुखी ते काहली, रणसिंगो कोइ वाजानुं नाम छे. मांदलनी जात, मृदंग, देववाजुं तेने दुंदुभि कहीयें, ए नव जातनां वाजाना शब्द, प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे. वली स्थितिपतित गामनगरमां अमुक एटले दश दिवस सुधी दाण कोइनी पासेथी लेवुं नही

पर्यंत न लेवो तथा उक्किमं एटले
तथा उभारं एटले गायो ढोर प्रमुखनुं जे कर लागे ते दशदिवस सुधी नही लेवो तथा अदिमं एटले दशदिवस सुधी
खेत्र प्रमुखथी जे कर लागे ते दशदिवस सुधी नही लेवो तथा अदिमं एटले दशदिवस सुधी
कोइ हाटमां मूल्यलइने वस्तु वेंचे नही जेने जोइति होय ते राजानी पासेंथी मफत लइ जाय
तेना पैसा राजाना भंमारमांथी वेंचाय तथा अमिमं एटले दशदिवस सुधी कोइ चीज मापवी
नही तथा अप्पडप्पवेसं एटले दशदिवस लगें कोइ राजानो माणस जोरकरीने जोरावरीथी
कोइना घरमां प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीये नही तथा अदंम एटले कोइयें अपराध कर्यो
होय तेनी पासेंथी गुनाह प्रमाणे दंम लेवो जोइयें ते दंम दशदिवस सुधी लेवो नही तथा कुदंम
एटले कोइकें अपराध अल्प कर्यो होय अने दंम वधारे लेवो तेने कुदंम कहीयें ते कुदंम
दशदिवस पर्यंत लेवो नही तथा अधरिम एटले दश दिवस सुधी कोइ वधारे लइने रुण करे
नही एटला वाना सिद्धार्थराजायें मूक्या वळीस कलां वळी अत्यंत सारूपवान एवी वेश्याउना
नाटक थाते तथा अनेक ताल वाजा सहित नाटक थाते पळी उत्कृष्ट मृदंग वजावना सारुं
सजकर्या ने मृदंग जिहां ग्रंथाग्रंथ ॥ ५०० ॥ ॥ कुंमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फूल
मालाउनो समूह ने जिहां, हर्षवान थया थका ते देशना सर्वलोक क्रीडा करे ने. ए प्रमाणे
दशदिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परंपरानी मर्यादा पुत्रजन्मनी ते सिद्धार्थ
राजा क्षत्रियकुंम नगरमां करे ॥ १०२ ॥ ॥ तेवार पळी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुल
मर्यादामां जिनपूजामां सो सोनैया लागे तथा हजार सोनैया लागे तथा लक्ष सोनैया लागे
एवुं जे पूजन तेना निमित्तें द्रव्य राखे एटले पळी पूजा करावीशुं एवो अभिप्राय करीनें
पूर्वोक्त द्रव्य काढाडे वळी आठम, चोदशनां दिवसें पोसह करनारा श्रावकोनी भक्ति करवा

द्रव्य राखे ते एवा अनिग्रायपोतें जाणे पोसह करवावालाने पारणे साहामी वात्स
ए । काममां आवशे वली बीजुं पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थे कल्प्युं एवुं द्रव्य पोतें
सिद्धार्थराजा देतो थको, बीजाउनी पासेथी देवरावतो थको विचरे ॥ वली पूर्वोक्त रीतें सो,
हजार अने लाख सोनैया प्रमाणे वधामणाने अर्थे नेट लोको लइ आवे ले ते लेतो थको,
बीजा कने लेवरावतो थको एवीरीतें दशदिवस सुधी करतो थको कुलमर्यादा करे ॥ १०४ ॥

पठी श्रमण नगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता नगवानना जन्मदिवसथी पठी
पहेलादिवसें तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसें चंद्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे.
आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे काच देखाडे ले. परंतु मूल विधि आवो ले जे गृह
यगुरु आवीने श्रीअरिहंतनी प्रतिमा आगल स्फाटिक अथवा रूपानी चंद्रमूर्त्ति करावे ते
प्रतिष्ठावी पूजीने मांमे पठी बालक तथा बालकनी माताने स्नान करावी नला वस्त्र पहेरावी
दयनी वेलायें पुत्रने हाथमां लइने माता सहित पुत्रने वेशाडी प्रत्यक्ष चंद्रमा साहामां
आवीरीतें मंत्रजणे ते लखे ले ॥ ॐअर्हंचंद्रोसि निशाकरोसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोसि
गर्नोसि अस्यकुलस्यवृद्धिंवृद्धिं कुरुकुरु ॥ एवा मंत्रनो गुरु उच्चार करे,माता पुत्रनें चंद्रमा
डी नमाडे वली पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे, गुरु आशिर्वाद आपे ते आवीरीतें:—श्लोक ॥
सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदांसंहरणे प्रवीणः ॥ करोतु वृद्धिंसकलेपिवंसे, युष्माकमिंदुः
सततं प्रसन्नः ॥१॥ ॥ तेवार पठी चंद्रमानी स्थापेली मूर्त्तिने विसर्जन करे. कदाचित् कालि
गोचर, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चंद्रमा न देखाय तो मेज रात्रियें तेज
चंद्रमानी मूर्त्ति आगल तो अहर करे एवीरीतें ...

करे. पछी ते दिवसें प्रनातें सूर्य उदयनी वेंलायें सोनानी अथवा त्रांबानी सूर्यमूर्त्ति करीने पूर्वनीपेरे स्यापन करी ते मूर्त्तिनी आगल पुत्र सहित मातानें बेसाडी गृहस्थ गुरु आवीरीतें मंत्र बोले ॥ ॐअर्हंसूर्योसि, दिनकरोसि, तमोपहोसि, सहस्रकिरणोसि, जगच्चकुरसि, प्रसीदास्य कुंलस्य तुष्टिं पुष्टिं मोदं कुरु कुरु ॥ ए सूर्यमंत्रउच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनुं दर्शन करावे पछी माता पुत्रने लइ गुरुने पगें लगाडे तेवारे गुरु आशीर्वाद आपे ते लखीयें छेयें ॥ श्लोक ॥ सर्वसुरासुरवंद्यः, कारयिता सर्वधर्मकार्याणां ॥ नूयाश्विग चक्षुः, मंगल दस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥ ॥ पछी थापन करेली सूर्यमूर्त्तिने विसर्जन करे वली छठे दिवसें धर्मजागरण करे, अगीआरमें दिवसें अशुचिकर्मनिवर्त्तन करे, माटीना जुना नाजन काहाडी नाखे, नवा वस्त्र पहेरे ॥ ॥ हवे बारमो दिवस आव्या थकां अशन ते अन्न विगय प्रमुख तथा पान ते मीठा पाणी प्रमुख तथा खादिम ते खारक टोपरा प्रमुख तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख ए चार प्रकारनो आहार रंधावे रंधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने,न्यातिने एटले पोतानी जातिवालाने, पोताना पुत्रपौत्रादिकोने, काकाने,ससरा प्रमुखने,पोताना दास दासीयोने, वली सिद्धार्थराजानाज गोत्रवालाउने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने, एवा बीजा पण महोटा लोकोने निमंत्रण करे अर्थात् नोतरा आपे पछी नगवानने तथा त्रिशलाजीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्ननिवारवाने अर्थें कौतुकथी काजलना टीलांटवकां करे, मंगलिकने अर्थे सरसव, दही, दर्न, चावलनुं तिलक मस्तकें धारण करे, नवा वस्त्र पहेरे, वली जेमां नार अल्प अने मूल्य घणुं एवा घणा मूलनां घरेणा पहेरें, पहेरीने नोजननी वेलायें नोजन मंडपमां सुखे बेसे. वली पूर्वे नोतरेला मित्रादिकोने

अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारना आहार जमाडे हवे तेमां केटलाएक आ
हार स्वाद करवा योग्य तेना स्वादकरतां थकां अशनादिक मोदक प्रमुख सर्व चीज खवाइ
जाय तथा केटलीएक सेलडीप्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी नाखी आपे वली केटली
एक खजुरप्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी नाखीदीये एवीरीतें चारे प्रकारनो आहार साध
र्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जमाडता थकाविचरे ॥ १०५ ॥ ॥ हवें ग्रंथांतरथी जोजननो
विधि लखीयें ठैयें ॥ केलिपत्रे गयेला मांडवा नीचें मध्यान्ह वेलायें कुंकुमठंटित मंडपमां सर्वने
बेसाड्या, मखमलनां पांतिया नाख्यां, ते उपर सर्व पवित्रथइने आवीबेठा, तेना पेट पाताले
पेठा, आगल सर्णरत्नजडित बाजोट मेल्या, तिण उपर सोनाना थाल,जमवावाला थया उज
माल ॥ कनेमेली कटोरीयां, निर्मल जलसें धोवे, मांहे मुखडा जोवे, ते कहेवा ले तोके ? फां
दाला, फुंदाला, डुंदाला, सुंहाला, आंखे अणिआला, मुगाला, केइ जमाइ केइ साला, इसी
पांति बेठी, तिहां पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली, नला वस्त्र पहेर्यां, शोले सणगार कर्या,
हाथमां महोटी झारी, सुयानोंकी निजरो ठारी ॥ हाथधोवाया, मनमें काम जुराया, पहेलां ते
फल पिरसे, देख्यासें मन विकसे ॥ ते कहेवा फल पिरस्यां तेनां नाम कहे ले. अखोड
मिसरिकीपात, चोपडी चारोली, केला रायण लीलांनालियेर बदाम पिस्ता इख आखा आंबा
तथा स्याग दाल पक, सेवां सेतुत दाडिम नारंगी मीठांलींबु, पाकांकिरणां खारक खजुर
सेव जांबु गुंदा पेमदीबोर लीलीइख ठोलेली सेलडी कांगटा जामफल रामफल सीताफल
बीजोरां, इत्यादिक उदार मनथी पिरस्यां, तेरकीया खातां हीया हुय्यां ॥ किस्याक खावे के पिर
सवावालीतेना मुख सामा जोइ मोहमां पड्या लायां आवे, पण पेटफाटे ते नजर न आवे ॥

मालवानी जमीनमां नीपज्या घउं ह्यायथी मसल्या धोइने दव्या जला वस्त्रथी मेदो गण्यो तेना पिरसण पिरस्या खाजां, दांतोमां करे अवाजा ॥ हवे कहुं पकवान, खावा थया सावधान ॥ पिरसण नाखी सुंहाली, मानकरे रढीयाली, पहेली पिरसे लाडु, जिमे वेग जाणे साढु, सिंहकेसरीया मेल्या, मसाला अधिका भेल्या ॥ कंसार मगदारा मोदक, किटिया जलरीया दालिया, इस्यामो दक खावे, बूढो मरद हो जावे, अधीपिरसी मुरकी, खावा जीनडी फुरकी, जलेबी मुखमां घाले, रसना गटका चाले, पेडापेटमां पडिया, मुखमेलंता गुडिया, मखाणा मुखमां घाले. वडवड जाणे बोले, घेवर मुखमां धरिया, खातां घृतबहु करिया, जीणातारनी फीणी, आणीसेवां जीणी, दहीथरा वेग खावे, मनमां हसता जावे, सांकली तिलनी खाधी, सिंघोडा सेवसु साधि, आवे साकर सीरो, मोकरा मन थयो धीरो, लापसी आठी आवे, मेवाखीचडी खावे ॥ इम अनेक पकवान, जिमे वेग राजान ॥ देवसुगंधीसाल, खावा थया उजमाल ॥ मुगदालनें भेली, घीसुगंधी ठेली ॥ खीचडी पतली पोली, थाये इकचीशनी एकफोली ॥ सालणा मुखमां जावे, जीनवरफरी थावे ॥ मूगीया केर रायफोमी, वालोल, करमदा काचा, केलां, चोरानी फली, मुगनी फली, नीलाचणा, मिरच, पीपल, सांगरी, काचरी, वावल्या, करेलां, चीभी, तरोइ, वेंगण, मोगरी काकडी तवडा तीफसी इस्या जातना साग, जीरा मिरच समभाग ॥ गरम मसाला पडिया, घृतमांहे पहेला ठमकिया ॥ हिंग वघार सुगंधा, खातां तज्या सब धंधा ॥ जीनवरफरी होवे, फलीकंदने जोवे ॥ नालीविणारीमेथीरीचदलेवारी पालखारी सुआरी थेगरी, खातां जीन शोभाथरी ॥ मिसरीमां भेल्यो दूध, पीतां नरही शुद्ध ॥ जखोपेट बोल्या सहु एम, हवे खावानो नेम ॥ दहीदेखीनें मुखडे चाल्यो पाणी, जीराराव शुद्ध तिहां आणी ॥ करवो खाधो

पुर, राइडी रामतापुर ॥ मीठा पाणी पीधां, पापडमुख शुद्ध कीधां ॥ शुद्ध पाणीसें नखु करीजें, न मावे पेटमें उत्तर दीजे ॥ वली दीधा पान तंबोल, केशरछांटे रंगरोल ॥ हीरचीर मखमल पटंबर, वस्त्रदीधां ते पहिरे सुंदर ॥ फूलमाला पहेरावे, हर्षे मने बहुलावे ॥ आभूषण पहेरामणी देवे, एम सिद्धार्थ जस बहु लेवे ॥ इति सिद्धार्थराजाकृत जन्मोत्सव ॥ एवीरीतें मरुदेशआदिकमां जे जोजन विधि कहेवाय छे ते प्रमाणे लख्यो ॥ हवे वली प्रकारांतरें कच्छगुर्जरादि देशोमां जे प्रमाणे जोजनविधि कहेवानो चाल प्रवर्त्ते छे ते मुजब आहीं लखीयें छैयें. ए बे प्रकारमांथी वाचनारने जे रुचे ते वांचवुं अथवा बेहु प्रकार सजा आगल वांची संजलाववा. ते प्रकारांतर आहीं लखीये छैयें ॥ मांड्यो तोरण उत्तंग मांडवो, तरत आंगणुं बेसवानुं नवुं ॥ तेतो नीलां रत्नज तणुं, तिहां सखरा मांड्यां आसन, बेसतां किसी विमासण ॥ वली आगल मूकी सोनानी आंमणी, ते केम जाये छांमणी ॥ उपर सोनाना थाल, अत्यंत घणा विशाल ॥ विचमा चोसठ वाटकी, लगार नही जास काटकी ॥ गंगोदक दीधा थाल, कचोलामें हाथ जाल ॥ हवे सघली पंक्ति बेठी, एटले पीरशण हारी पेठी ॥ ते कहेवी छे? शोल शणगार सज्या, बीजां काम तज्यां ॥ हावजावनी रूडी, खलके हाथें सोनानी चूडी ॥ लघु लाघवनी कला, मन कीधां मोकलां ॥ चित्तनी उदार, अति घणी दातार ॥ बोलती हाय, परमेश्वर देजो तेहनो साथ ॥ धसमस्ती आवे, सघलांने मन जावे ॥ पहेलां फलहवे पीरसे, सघलांनां मन हर्षे ॥ एवी छे पिरसनारी जली, मृगनयनी, हौंसनी पूरी, धर्मनी शूरी, शीलवंति, शक्तिवंति एवी पिरसनारीयो छे ते प्रथम फल खावानां लावे ते [illegible] [illegible]. ते [illegible] [illegible] [illegible] ॥ वली [illegible] [illegible] [illegible], ते [illegible]

कीधां नेलां ॥ सखरां करणां, वली पीला वरणां ॥ लीजां नारंगा, दीसे महासुरंगा ॥ नी लीरापण, पीरसी नली नायण ॥ दाडिमनी कली, खातां पूगे मन रली ॥ लींबजाने अखोड, खातां पूगे मनना कोड ॥ डाखने बदाम, कइ कागदीने कइ श्याम ॥ सिन्नेमी खारेकने खजूर, ते पीरश्यां नरपूर ॥ नालियेरी नगरी, ते मालवी गोलथं नरी ॥ लींबु खाटांने मीगं, एहवां ते कही न दीगं ॥ चारोलीने पीस्तां, लोक जमे हसतां ॥ वली शेलडीने सीताफल, ते पण पीरश्यां परिघल ॥ हवे पकवान आणे, ते केहेवां वखाणे ॥ सतपडा खाजां, ते तुरत कीधां ताजां ॥ सहलांने साजां, जाणे प्रसादनां गजां ॥ एहवां पवित्र प्रधान, मालवी घउं, तेह ने दल्यां तेहनी पडछ्दी, महाचतुरें शोधी ॥ घीयें करमोइ, तेहनां खाजां घीयें तल्यां फुल्यां, महाविशाल, एवा सातपुडां खाजां, वली फगफगता फेणा, ऊथवर्णां दहीयरां ॥ घृतवर्णांसुंवाली, अमृतजेवी जलेवी ॥ घीनाघेवर पतासा मोतीचूर गुंदवडां एलचीदाणासहित साकरीया चणा, खांमसाकरनां दहीयरां, अनेक नातिनी सुखमी पिरसे. विछुहदलें केलव्या, सारमिश्र खांमयी नेलव्यां ॥ मांहे एलचीना चमत्कार, पछी पिरश्या लाडु, जाणे नाना गाडु ॥ कुण कुण तेहनां नाम, जमतां मन रहे नही एक गम ॥ वली लाडुनां नाम कहे ढे. मोतीश्रा लाडु, दलिया लाडु, सेवैया लाडु, चूरमांनां लाडु, तिलना लाडु, तिगडुना लाडु, मगना लाडु, जगरीना लाडु, सिंहकेसरीया लाडु, कीटीनां लाडु, तेजाना लाडु, खसमसीयाना लाडु, जांखरीया लाडु, चोंटीया लाडु, अडदीया लाडु, अमृतिया लाडु, दीगं दाढ गले, पूरणपुन्याइयें ए मले ॥ नोजनने अर्थे पीरसे, लक्ष्मी एवा मोदक, जातजातनां दीसे, जमतां याधे मुखनो वान, तेनां हैयडाहीसे ॥ दातारना हाथें परीघल, कृपणना हाथ धुजे ॥ वली

वीजां आण्यां पकवान, जमतां वाधे मुखनुं वान ॥ कुण कुण जाति, नव नवि जाति, सखरासांटां, तेमांहे नही खाटां ॥ वरफीनी जाति, फीणीनी जाति, मरकीनी जाति, डुधपिंडीनी जाति, साकरीयांमोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति, जलेबीनीजाति, सक्करपारानीजाति, गोलपापडीनी जाति, हवे आव्यां वडां गुंदवडा, फीणी सखरां सोट ॥ तेमांहे नही खोट ॥ दहीवडां, फेण वडां, मंथीयावडां, कांजीयावडां, सालियावडां ॥ पातली सेव, पीरश्यानी रूडी टेव, ताजो गुंद, तळ्यो गुंद ॥ कुंमलाकृत जलेबी, शीरो, लापसी ॥ जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गहुंति देव देवी टलवले ॥ वली मीठो मगद, सारो माल नगद ॥ खांमनुं चूरमुं, साकरनुं चूरमुं, पठी पीरशी सालि, ते जमीयें विशाल ॥ ते कुण कुण नेद, सांजलतां उपजे उमेद ॥ सुगंधसालि, सुवर्ण सालि, धवली सालि, राती सालि, नीली सालि, पीली सालि, महा सालि,शुद्ध सालि, कौमुदि सालि. मालवी सालि, कलम सालि, कुंकणी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि, कंद सालि, रायजोग सालि, कुंवारी सालि, चंद्रायण सालि, निकी सालि, गुरुडा सालि, वली सावु चोखा अखंम चोखा ने वली खांमया, सबला ठांमया, हलवा हाथथी सोह्या, नख थकी वीण्या, उत्तम स्त्रीयें उंखा, सुजाण स्त्रीयें उंसाया, एवा अणीयाला सुगंधि फरहरा, उंचा कूर पीरश्या ॥ वली उपर दाल पीरशी, तेनां नाम कहे ठे, मंमोरनी दाल, मुगनी दाल, कावली चणानी दाल, गुजराती तुयरनी दाल, अडदनी दाल, जालरनी दाल, मठनी दाल, वर्णे पीली, परिणामें सीली, वली परियलघृत पीरश्यां ते कहेवां ठे ? तो के आजना ताव्यां, एवा गायनां घी, नेशनां घी, पीला वरणनां घी, नाकें पीयां घी, मजीठवर्णा घी, हवे पोली पीरसी, ते कहेवी ठे ? तो के आठी पोली, घीमांहे जबोली, फूंकनी मारी फजाली जाय, एकवीश पोलीनो

खाजां खुरमां खाफ,
एक कोलीउं थाय ॥ वण्यो ॥ मुरकी मोतीचूर, सेवफिणी साकर सरखी ॥ घन घन घीनी नाल,
त्रिगा तिहां पीरसें हरखी ॥ केला तणी कातली, अंबरस मूके घोली ॥ कृपन कहे ए जमण
पीरसे पातली पोली ॥ साल दाल बहुसालणां, गोरस करवे चित्त थयुं ॥ पीरसे चूंमी
करयुं, शाकी सघळुं एलो थयुं ॥ १ ॥ चोला मरटी तेल, साक विण निलयें सारे ॥ सिंधव नहीं ल
नार, पेट कहो केणी परें गारे ॥ उपर दीली घेंश, दास पण पीरसे पाणी ॥ कवी कृपन
गार, किशुं कहे करमनी कांणी ॥ आहार सेर अढी तणो, सेर सवा दोहिलो लहे ॥
कहे एलो थयुं, भोजन एहने कुण कहे ॥ हवे शाक पीरस्यां तेनां नाम कहे छे, नीली मो
मीनां शाक, टिंडसीनां शाक, चीनडांना शाक, कोढेला, कंकोडां, करमदां, कालिंगडां, केलां,
कारेलां, आरियां, तुरियां, खडबुजां, वेंगण, मोघरी, नींबु, अंबोलीया, वालोल, चोलानी
फली, सरगवानी शिंग, सांगरी, काचरी, आमलां, केरनां फूल, केरडां, लीलां मरचां, लीली
पीपर, लीली रायण, खाटां, खारां, मोलां, गल्यां, तल्यां, वघार्यां, फुगार्यां, ठमकार्यां, वली
पीरसी भाजी, ते उपरें सहुको राजी ॥ ते कोण कोण जातनी ते कहे छे. सरसवनी भा
जी, सुवानी भाजी, मूलानी भाजी, चणानी भाजी, चीलनी भाजी, मेथीनी भाजी, पेगीनी
भाजी, अफीणनी भाजी, तांदूलनी भाजी, हवे वडीनां शाक कर्या तेना नाम कहे छे. दाल
वडी मचकावडी चूयरावडी घासवडी घारवडी दहीवडी घोलवडी पापडवडी मरियालावडी,
गणा जोतेंजीना, घणा बघार मसालाना चमत्कार सबडका देतां अंगुली चाटता मनमां
निशोरे भावतां, हवे रायतानां नाम कहे छे. खारेकना रायतां, टोपरानां रायतां, द्राखना रा
यतां, बदाम प्रमुख मेवानां रायतां, हवे वडां कइ कइ जातनां पीरस्यां? ते कहे छे. मरचा

नां वडां, तळ्यां वडां, कोरां वडां, काजीघोळवडां, घोळ वडां, मगनी दाळनां वडां, चोळानी दाळनां वडां, अडदनां वडां, दहींवडां, गूंदवडां, फेणवडां, मेथीया वडां, साळीयावडां, घणे जोळें जीनां, घणे तेळें सीनां, मरचांना घणा चमत्कार, अत्यंत घणा सुकुमार, हाथें लीधा उछळे, मुखें घाल्यां तरत गळे, घणुं शुं कहियें ए वडां एवां तो छे, के जेने खावाने अर्थें घणा देव देविउ पण टळवळे छे. हवे पळेव पीरसी, ते कहेवी छे? चोखानी पळेव, जुहारनी पळेव, बाजरीनी पळेव, गहुंनी पळेव, हळदीया पळेव, पींपळीयां पळेव, सुंठीयां पळेव, लवडकीया पळेव, हवे जोजन जमतां वचमां पीवानां पाणी आवे छे, ते कहे छे. साकरनां पाणी, द्राखनां पाणी, खांमनां पाणी, गंगानां पाणी, पाळर पाणी. कपूरे वास्यां पाणी, एळचीयें वास्यां पाणी, टाढां सीतळ पाणी, हीमनां पाणी. हवे दही अने दहीनां घोळ आवे, ते कहेवां छे? ते कहे छे. गायनां दहीं, जेशनां दहीं, काठा जाम्यां दहीं, मधुरां, सखरां, सजीराळां, सळवणां जामां, घोळ, तेनां जखां कचोळ, चावलशुं जिमतां, थया रंगरोळ ॥ वळी सखरां करंबा जरी आणीने पीरस्यां, ते करंबामांहे घणी राइ, जमतां ढीळ न कांइ, उपर जीरा लुणनो प्रतिवास, करणहारी पण खास ॥ एम जोजन कराव्या पछी एकांते तेंहज आशने रह्या थकां ने चळु कराव्या ते चळु करावबानां पाणी केवां आव्यां, ते कहे छे. केवडानी वासनां पाणी, काथानां पाणी, कपूरें वास्यां पाणी, चंदने वास्यां पाणी, पाडळे वास्यां पाणी, सुगंधी पाणी, गंगोदकना पाणी, चंदने निवास्यां पाणी, एळचीयें निवास्यां पाणी, इत्यादिक पाणीयें करी चळु कस्या. पछी तृणशळा प्रमुखथी मुख सोधी दांतोनी शुद्धि करीने परम सौख्य थया. हवे मुख वास दीधां ते कहे छे. चांकडी सोपारी, चीकणी सोपारी, ते पण केशर वरणी, कपूरें वा

चित्र १८





लित, वली तीखां लविंग, जावंत्री, जायफल, मोटा मोमा, एलची, पाकां नागरवेलनां पान, ते वली काथा चूना सहित दीधां, वली घणां आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां तानने मान, हवे कइ कइ जातिनां कइ कइ जातिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे छे. देवडूष्य वस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांजडी, खीरोदक, अटाणां सेलां, अभोतर, मूलकसवी, जरबाफ, मख मल, निणीयां, बुलबुल, चरम, पाटु, टसरिया, शणीया, नेत्र, नारीकुंजर, पट्टहीर, पट सीऊली, पंचसइयां, फूलपगर, फूलकारी, दोरीयां, जादर, घादर, नेत्रपट्ट, धोतीपट्ट, राज पट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंसवडी, कालवडी, चुअगिया, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुंमखाप अतलसवगेरे. खारावीनी, पापडीआंचीनी, सचीआ गुआगरी, आसणिआ आगराइ, सणलीपट्टणी, मशरु ताफ्ता, शालु, दोपट्टा, त्रपट्टा, वाफ्ता, टुकडी, मुगटां, गयल नारी कुंजर, शाडला, रत्नकंबल, चुनडी, धाटकी, इत्यादिक पांचरंगी वाघा पहेराव्या, वली काशमीरी केशरना छांटणां कीधां, नवां नवां सुगंध बावना चंदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चंपेल, फूलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चंपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाओ पहेरावी. पछी वली मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, वेर ला, ग्लावली, मुक्तावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, ग्रहावली, नक्षत्रा वली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीखर, चूडामणि, कुंमल, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रनंदक, रत्नमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सांकलुं, सांकली, चिचिट, भंगरजरी, दोरा डोगडी, रुपाली, ग्रैवेयक हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, जांजर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वींटीया, अंगुवडी, वालाजाल कुमणां, अकोटा, रूपाला, हरीयारावडी, गो

फणा, भज्ञसीपो, त्रिगंथीपो, श्रोटी, बोरडांकरी, वेदला, मुंरकी, मोतीदर, गंथोडा, तुंगल, चं पकली, पानडी, छोजेरताली, मोतीसर, सरलीपा, टीलां, टीली, चांदला, श्राड, नवग्रह, मु ऽडी, श्रंगुठी, वींटी, गांथरुं, गलसरी, वापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीयां, कंदोरा, पाटीश्राला कंदोरा, लटकणमोड, नागफूली, नागला, मोरवेसण, नयवाली, सिंदूर, कुंकुमरीली, जवलाचूडी, परचूडी, चूना, कांकणी, कारेली, लाल, पोंची, मेखला, हाथलां कली, सोना लहेरीयां, तावीत, कमलां, कमली, वांकडी, वेलीयां, लोलीयां, इत्यादिक श्राज रण पहेराव्यां. ए रीतें मित्र, ज्ञाति पोताना स्त्रियो तथा कुटुंब, सगा संबंधीनी नक्ति विवि ध प्रकारनी कीधी. इति जोजन तथा श्राजरण विधिः हवे बालकनुं श्रीवर्द्धमान एवुं नाम दीधुं, ते वखाणे छे. हवे ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान श्रापीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थराजा एवुं कहेवा लाग्या ॥१०६॥ ॥ जे हे देवानुप्रियो ! श्रमारे घेर ए पुत्र गर्जने विषे श्रावी उपन्या पछी श्रमें रूपेकरी, श्रणघडे सोनें करी, धान्यें करी, राज्यें करी, वाहनें करी, मनुष्यना सत्कारें करी, श्रत्यंत घणा वृद्धि पाम्या तथा सा मंत जे सीमाडाना राजा श्रने चंदप्रद्योतनादिक राजा, ते पण श्रमारे वश थया. तथा श्रमारी चाकरी करवा श्राव्या ॥१०७॥ तेथी श्रमारा मनमां एवुं चिंतव्युं हतुं के जेवारे श्रमारे घरे बाल कनो जन्म थाशे तेवारें ए बालकनुं नाम रूप गुणें करी प्रधान निष्पन्न श्रीवर्द्धमान एवो श्रापीशुं, ते श्रमारा मनोरथ सिद्ध थया, श्रमारी इछा पूरण थइ माटे श्रमें ए कुमारनुं वर्द्ध मान एवुं नाम श्रापीयें छैयें. तमें पण ए कुमारने श्रीवर्द्धमान कुमार एवा नामें बोलावजो. एरीतें संबंधी सर्वने सिरपाव पहेरामणी करीने सर्वे सकलनी साखें बालकनुं नाम स्थापन

कर्युं ॥ १०८ ॥ पढी ते सर्वने विदाय कर्या ॥ इतिश्री वर्द्धमान नामस्थापन संपूर्ण ॥ ते श्रीवर्द्धमान नगवान् कहेवा ने? तोके सात हाथनुं महोटुं शरीर ने जेनुं, वली समचोरस संस्थान ने, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति ने, वज्र ऋषननाराच संघयण ने, एवा नगवान् ने. हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्वमली त्रण नाम थयां ते कहे ने. एकतो माता पितायें आपेलुं नाम श्रीवर्द्धमान नगवान् ने अने बीजुं रागद्वेष रहित तपस्यामां खेद सहन करवाथी श्रमण एवुं नाम जाणवुं अने त्रीजुं जे अकस्मात् उपजे ते नय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे नय उत्पन्न थाय ते नैरव कहीये ए नय नैरवोथी चलायमान थया नही निर्नय पणें रह्या थका नूख तृषा प्रमुख परिसहे करीने क्षोन पाम्या नहि एम परिसह उपसर्गे सहन कर्या तथा सर्वतोनद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवा वाला, चारज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिसहने वेठीने रागद्वेष रहित पणे सुख दुःख सहन कर्यां तेथी इव्यवीर्य पाम्या थका मोक्षजवानो निश्चय कर्यो ने तोपण चारित्र पालवामां तत्पर रह्या एवा वीरपणांनां गुणोयें करी देवतायें श्रीमहावीरस्वामी एवुं नाम दीधुं तथा नगवान् आमल क्रीडा करतीवेलायें देवता क्षोन पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नही ते कथा आगल कहेवाशे तेवारे पण देवतायें महावीर एवुं नाम दीधुं ॥ १०९ ॥ ॥ हवे नगवान् श्रीमहावीरस्वामी दिवसें दिवसें चंद्रकलानी पेरें वधता थकां, घणा दासदासीयो साथे परवर्या थकां, अत्यंतरूपवान, मस्तकें नमरानां सरखा काला केश ने जेना, कमल सरखां नेत्र ने, परवाला समान बिंबोष्ट ने, धोला दांत ने, कमल गर्न सरखो गोर वर्ण ने, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास ने, सर्व देवताउना रूपथी पण घणुंज रूपने जेनुं एटले सर्व देवोनुं रूप जो एकतुं करीयें तो नगवानना

मावा पंगना अंगुलनी एक कलाने पण पहोचें नही केमके त्रणे लोकमां सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर जगवाननुं होय छे तेथी उतुं गणधर महाराजनुं रूप, तेथी उतुं आहारक शरीर वाला साधुनुं रूप, तेथी उतुं अनुत्तर विमानवासी देवोनुं रूप जाणवुं, तेथी उतुं नव ग्रैवेयकना देवोनुं रुप, तेवार पछी बारमो देवलोक, अगीयारमो, दशमो, नवमो, आठमो, सातमो, छठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो देवलोक ए सर्व क्रमें करी एक बीजाथी उतरता उतरता रूप वाला कहेवा. तेवार पछी जोतिषि देवोनुं, पछी जवनपतिदेवो, पछी व्यंतर देवो, पछी चक्रवर्त्तिराजा, पछी वासुदेव, पछी बलदेव, पछी मंमलिक सामान्यराजानुं रूप जाणवुं ए सर्व अनुंक्रमें एकेकथी हीनहीन रूपवाला जाणवा वली जगवान जातिस्मरण ज्ञानसहित अप्रतिपाति मति, श्रुत अने अवधि मली त्रणज्ञानें करी सहित, सर्वथी उत्कृष्ट देहनी कांति छे जेनी, एवा जगवान अबीह, बलवंत, बुद्धिमंत, सुरूपी, दिव्यस्वरूप धारी, साहसिक वली रूपाला, रंगीला, रढीयाला, रेखाला, रतीला, मतिला एवा जगवान रमतां रमतां जेवारें आठवर्षनां थया तेवारें सरखे सरखा राजकुमारो सार्थे क्रीडाकरता थका ते देशमां प्रसिद्ध पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारुं नगरनी बाहिर एक पीपलीनुं वृक्ष छे त्यां सर्वकुमारो एकठा थइने सर्व छोकरा दोडवा लाग्या ते आवीरीतें के बे बे छोकरा सार्थे दोडे तेमां पहेलो जे पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाछल रहीजाय ते हार्यो पछी जे हारे ते पोतानी खांध उपर जीतेला छोकराने बेसाडीने जे स्थानकथी होड करीने दोड्या होय ते स्थानकें पाछो जइ मूके एवीरीतनी रमत पोतानां जेवडा छोकरा सार्थे जगवान करे छे एवामां सौधर्मेंद्र सजामां बेठा थकां अवधिज्ञाने करी जगवाननुं महाबल



चित्र २९

जाणीने सनामां कहेवा लागा के, आजना समयमां जेवा श्रीमहावीर भगवान बलवान छे एवो कोइ बीजो बलवान नथी जो महाराक्षसहित सर्वदेवो मळीने तेने म्हरावबा जाय तोपण म्हरे नहीं एवा छे. ते इंद्रमहाराजना वचनने असद्दहतो थको एवो कोइ मिथ्यात्वी देवता तिहांथी चालीने जिहां भगवान रमे छे तिहां आव्यो अने छोकरानुं रूप करी भगवान साथें रमवा लाग्यो तेवारे भगवान अत्यंत वेगथी छोडीने तरत जइ पीपळीना झाडने हाथ लगाडीने आगल चाल्या अने देवतायें पीपळीना नीचेनी मालीयोमां सर्वत्र फूंफरा करतो एवा सर्पनुं रूप बनाव्युं ते भगवाननी सामो फणाटोप करीने बीवराववा लाग्यो पण भगवानें सर्पने पोताना हाथथी दूर करीने पोतें पीपळी उपर चढीगया अने मनमां ते सर्पनो कांइ पण भय आण्यो नहीं हवे जेवारे ते देवकृत बालक हार्यो अने श्रीवर्द्धमान जीत्या तेवारे ते देवकृत बालकें पोतानी खांध उपर भगवानने चडावीने तेने बीवराववा सारु सात ताडवृक्ष जेटलुं मोटुं रूप कर्युं तेने जोइने बीजा सर्व बालको भयपामीने नाशि गया अने प्रभुना मातापिताने जइ सर्ववृत्तांत कह्युं तेवारे माता पिता चिंता करवा लाग्यां तेमनी चिंता टालवाने माटे भगवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ उपर मारी तेथी ते देव अरराट करतो चीस पाडतो थको जमीन उपर पडी गयो पछी घणो लज्जायमान थइ पोतानुं रूप प्रगट करीने कहेवा लाग्यो के हे प्रभु! जेवा तमोने इंद्रमहाराजे वखाण्या तेवाज तमे धीरजवाला महाबलवान छो ए अवसरमां इंद्रमहाराज पोतें पण तिहां आव्या अने ते देवताने भगवानने पगे लगाड्यो देवतायें पण भगवानने पगे लागी अपराध खमाव्युं तें देव मिथ्यात्वपणुं त्यागी समकेति थयो पछी इंद्रमहाराज तेने पोतानी साथें देवलोकमां लइ गयो इति आमलकीक्रीडा संपूर्ण॥

इने नगवान श्रावर्षना थया एटले माता पितायें मोहना वशथकी विचार्युं ॥श्लोक॥ लाल येत्पंचवर्षाणि, दशवर्षाणिताडयेत् ॥ प्राप्तेषोडशकेवर्षे, पुत्रंमित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥ ॥ तथा ॥ मातावैरीपिताशत्रुः, पुत्रोयेन नपाठितः ॥ शोजते न सजामध्ये, हंसमध्येबकोयथा ॥२॥ ॥ अर्थः-बोकराने पांचवर्ष रमाड्यो रमतकराववो अने दशवर्षनो थाय तेवारें धाकमां राखवो तथा शोजवर्षनो जेवारें थाय तेवारें तेने मित्र सरखो जाणवो ॥ १ ॥ ॥ तथा जो पुत्रने जणावे नहि तो माता तेनी वैरिणी जाणवी अने पिता तेनो शत्रु जाणवो केमके जो जणे नहींतो ते पंमितोनी सजामां जेम हंसोनी पंक्तिमां बगलो शोजे नही तेमतेपण शोजा पामे नही ॥ २ ॥ एवो विचारकरी, सारुं मुहूर्त जोइने शुजदिवसे पोताना स्वजन क्षत्रियोने जमाडी वस्त्राजरण आपी, केसर कस्तूरीनां गंटणा करी, हाथी रथ घोडा शणगारी, गीत वाजित्र सहित महा महोत्सवथी निशाळीयाउने आपवा सारुं गोळधाणी मेवा प्रमुख लीधां तेनां नाम कहेडे. वरसोळा, गुंदवडा, खारक, टोपरां, शख, खजूर, सिंघोडा, अखोड, बदाम, चारोळी, नाळियेर, साकर, सेव, पेडा, फल, फूल, साकरीया चणा, एळचीपाक, धाणी, गोळधाणी, बीजोरां, चणा, सोनानाखडीया, रत्नजडित लेखणो, रूपानीपाटीउ, पाननां बीडां प्रमुख अनेक वस्तुउ सार्थे लइने तथा पंमितने आपवा योग्य वस्त्राजूषण सार्थे लइनें सोहागणी स्त्रीयो गीत गाती थकी श्रीवर्द्धमानने स्नान करावी शणगार पहेरावी हाथी उपर वेसाडी मेघा मंबर उत्र चामरो सहित, याचकोने दान देतां थकां,जाटस्तुति करता थकां, ब्राह्मणवेदध्वनि जणता थका, असिवोर करी वधीजताथकां, जणाववा वाळा पंमितनी पासें आव्या तेवारे [illegible]


चित्र ३०
भणावनार मेता
वृद्ध ब्राह्मणने
रूपें इंद्र महाराज
भणनार निशालिया

जाणी अर्हंकार आणी महोटुं आसन मंकावी शणगार करीने बे मणिबंध, बे बाहु, बे कहा, बे कान, बे कानना मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेठो ने. ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आ सन पण ध्वजानी पेरे कंपायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी पेरे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी पेरे चपल थयुं तेवारे इंद्रमहाराजें अवधिज्ञाने जोयुं तो जगवान जणवा बेठा ने एवुं देखी कौतुक पामी चिंतववा लाग्यो के आ मोहनीयनो चमत्कार जूर्ड कहेवो ने माटे मातापिता जाणे जे एने जणावीयें पण जगवानतो त्रणज्ञाने सहित ने महागंनीर ने एने शुं जणववुं ने? एतो जाणा गुणा सर्वज्ञ ने, अमृतमां वली मीठाश शी करवी ने? सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी ने? चंद्रमाने वली उज्ज्वलता शी करवी ने? आंबाने विषे तोरण बांधवुं? तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एमणे अज्ञानना वशथी जगवानने निरर्थक जणवा बेसाड्या ने माटे हवे जगवाननी आशातना न होवी जोइयें एवुं विचारी शक्रेंद्र ब्राह्मणनुं रूप करी जिहां जगवान नीशालमां आव्या ने तिहां ब्राह्मणनें सिंहा सन उपरथी उठाडी जगवानने उंचा सिंहासन उपर बेसाडी प्रथमतो उपाध्यायनी समीपें बेशी तेनें केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या परंतु उपाध्यायथी बराबर तेनो जवाब अपाणो नही तेवारे वली तेहज प्रश्न जगवानने पूछ्या तेना उत्तर जगवाने निःसंदेह पणे आप्या ते जोइ अध्यापक जे जणावनारो ते मनमां विचार करवा लाग्यो के आ वातोना तो महारा मनमां पण आज सुधी संदेह हता में पूर्वे घणा पंमितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइये महा री शंकार्जनुं समाधान कर्युं नही अने आ न्हाना बालकें महारा संदेह दूर कर्या ए महोटो

आश्चर्य जणायने पछी पण इंद्रमहाराजें जगवाननें शब्दोनी उत्पत्ति पूछी तेवारें जगवानें संज्ञा सूत्र, परिजाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवादसूत्र, विजाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, शब्दसाधनिका बतावी तेवारे लोकोये जाण्युं जे आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो ठे ते बालकने प्रश्न करे ठे अने बालक तेना उत्तर आपे ठे पण एवा उत्तरतो आ जणावनार पंमितनां मातापिता पण जाणतां नथी एम लोक सर्व आश्चर्य पामीनें विचारवा लाग्यां के आटलां शास्त्र आ बालक ते किहां जण्यो हशे? अनें उपाध्याय पण चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के आते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात् आहीं आव्या ठे केशुं? ते वारे सर्व लोकना मननां संशय मटाडवा सारुं इंद्रमहाराज बोल्या के अरे लोको आ वर्द्धमान कुमार ठे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नही ए त्रण लोकनो नाथ ठे, सर्व पदार्थोंनो जाण ठे, परंतु महागंजीर ठे माटे पूठयाविना उत्तर आपे नही. लोकोमां केवत ठे के गाजा ते वाजणा, गाजा थोडा पोलाढोल, जाणे आश्विन अने कार्त्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह तथा जेवो शरदृतुनो गर्जारव तेवो गाजो जाणवो पण जे पंमित ठे ते तो वर्षादना मेघ सरखा गाजा बोले नही जे मूर्खहोय ते पोतें पोतानें जाणेजे हुं पंमित हुं एवी लपरायो करे पण एवा महोटा पुरुष जे ठे ते विना पूठे बोले नही एवुं कहीने जगवाने प्ररूप्यां जे व्याकरण संबंधि दशप्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण करीने व्याकरण बनाव्युं ते जिनेंद्र व्याकरण नामा आठ व्याकरणनी आदिमां थयो पठी इंद्रमहाराज पंमित प्रमुख लोकोमां जगवान सर्वज्ञ ठे एवुं जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीने स्वर्गमां गयो. उपाध्यायें जगवानने पगे

लागीने घणुं के हे प्रभु! तमे ज्ञानसमुद्र छो हुंतो अपूर्ण कलशनी पेरे छुं माटे तमे महारा गुरु छो पछी प्रभुयें उपाध्यायने घणुं दान आप्युं भगवानना माता पिता घणां राजी थयां थकां भगवानने हाथी उपर बेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या इति लेखक शालामहोत्सव समाप्त ॥ ॥ हवे प्रथम इंद्रमहाराजें आवीने भगवानने जैनेना अर्थ पूछया छे ते विस्तार होवाथी उपरे सूचव्या नथी माटे अहीं लखीयें छेयें ॥ ॥ अथ जैनेना अर्थ प्रारंभः॥ श्रीवीरप्रभुने नीशाले बेठा जाणीने सौधर्म इंद्र ब्राह्मणनें रूपें आवी प्रभुने नमस्कार करी सर्वलोकनें चमत्कार उपजाववा निमित्तें प्रथम जैनेना अर्थ पूछया थकां प्रभुजीयें आ प्रमाणे अर्थ कह्या ॥ १ बे लीटी ते जीवनी बे राशि छे तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीवते सकर्मी जाणवा. २ भले ते अरे जीव तुं सिद्धना जीवनी रा शिमां भळवानी इच्छा राखजे. ३ मिंडुं ते संसार रूप गोळाकारें कर्मो कूप छे ते मांहेथी नीक ळवानुं छिद्र छे माटे नीकळीश तो सिद्धमां भळीश. ४ बिलाडी ते जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी बिलाडीथी बाहेर काहाडीयें तेम इहां संसारी जीवने संसार रूप कूप मांथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप बे बिलाडी जाणवी. हवे ते सिद्धना जीव किहां रहे छे ते कहे छे. ५ उगण चोटीउ माथे पोटीओ एटले चौदराज लो कना एक अधोलोक बीजो मध्यलोक अने त्रीजो उर्ध्वलोक एवा त्रण भाग छे तेमां उर्ध्व लोकनें चोटीने स्थानके बार योजन विस्तार वाली ईसीपभारा नामे पृथिवी छे तिहां एक योजननें चोवीशमें भागें ३३३ धनुषउपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तकें अलोकने अडी रह्यां थकां सिद्धना जीव रहे छे. ६ भलो बीटालो ते हे जीव! तुं संसारना

आने समारंत तेना जारें करी अहर्निश पलाळ्यो थको रहे ते ने नारकी तुजने गुरु पू काशे. १४ नजीइ आराण दुमणो एटले गुरुयें जे उरनो जाव जीवडाजना माटे पांच अणु व्रत अने पांच महाव्रत रुप अभिग्रह नियमादिक अंगीकार कराव्या ते पालतां थकां आमण दुमणो थाय विलवाजो थइने पश्चात्ताप करीशमां. १५ नचानिनीचोरडी एटले गुरुदत्त चारित्र धर्म पालवानी विशमां चोंप राखजे. १६ ठगावदियापोटला एटले ठद्मस्थ पणे गुरु समीपें श्रुतज्ञान चौदपूर्वनी विद्यानुं पोटलुं बांधजे ज्ञाननो अभ्यास घणो करजे. १७ जळोजेसलवा णीं एटले नियाणशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रणशल्य ताहारा अंतरंगने विषे ने तेने टालवानो वणिज व्यापार करजे. १८ झलोझरीसारिखो एटले तुं झारी सरखो स्वभाव राखजे जेम झारीनुं मुख सांकडुं होय अने पेट पोहोळुं होय तेम तुं पण पेट मह्नोटुं राखजे अने मुखथकी कोइना दोष मर्म प्रकाशीशमां एवीरीतें मुखने सांकडुं राखजे. १९ ऊजीयो खांमोधारें एटलें खांमोधांरो ते अर्द्धचंद्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला ने ते स्थानकें जावानुं तुं निरंतर साधन करजे. २० टटापोळिखांभेयु एटले तुं पोताना व्रत नियम अगड आखडी जे कांइ गुरु समीपें लीधां छे ते खंडित करीश नही अर्थात् पच्चरकाणनी पोल जे बारणां तेने दृढ राखजे. २१ ठळठोवर गाडुउ एटले तुं ठोबर ते जांगेलो घडो तेनी पेरे बाइमां गुरुयें आपेली श्रुतशिक्षा ते हृदयरूप घटने विषे संग्रह करी राखजे. २२ डडाडामरवांडे एटले तुं बाह्य आडंबर करी अभ्यंतर कर्मनी गांठे बंधाइशमां. २३ ढढा ढूलोढूंढे एटले ढूंढुळो ने आव तेवा दूकडानी पेरें [illegible] गाळीश नही परंतु मनक्ष [illegible] राखजे. २४ [illegible] एटले [illegible] ने [illegible], [illegible], [illegible]

तथा अणगुतिरूप त्रण सेल हाथमां रारवजे. ३५ तनोताने तेन्ले एटले तुं तप जप करतो थको कोइनां आक्रोश वचन सांजलीने तत्त तेजनी पेरें ताती थाइशमां. ३६ यवा येरलना ली एटले कदापि ताहारुं मन वशवर्ति नथाय तोपण वचन अने काया ए वेनें तो स्थिर करी रारवजे. ३७ दहीपोदीयह्रो एटले समकेत दर्शनरूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां रारवजे वली दया दमननें दान तेनी अजिलाषा धरजे. ३८ गहीयोधाणको एटले तुं धन कमाववानुं परिग्रह मेलववानुं ध्यान राखीशमां केवल धर्मध्यान ताहारा हृदयमां रारवजे. ३९ ननीयो धुन्नायसो एटले तुं नास्तिक मति अंगीकार करीने हृदयमांथी समकेतने पोलुं एटले पातलुं करीशमां. ४० पव्वापोलीपाटॅ एटले पाप आववानी पोल जे पांचेंद्रियनां आश्रवद्वार ने तेने संवर रूप कमाड जडीनें बंधकरी रारवजे पण पोलां रारवीश नही जेम अढार पापस्थानकनो प्रचार तेमां प्रवेश करी शके नही एवां दृढ मजबुत बंधकरी रारवजे. ४१ फण्फाफगडेजोडे एटले फोकट फांसीया, अशुद्ध, अविनीत, अनाचारीनी जोडे संगत करी विचरीशमां. ४२ मच्चा मांहेचांदणुं एटले बोधबीजनो वधारो करजे जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चांदणुं एटले चंद्रमां प्रगट थाशे. ४३ नग्नोनारीनेंसको एटले नेंस जेम मूकें लीलुं जक्षण करीने पेटें नारी थाय तेम तुं पण यावीश अजक्ष अने बत्रीश अनंतकाय जे कं दमूल कहेवाय ने ते पामीने तेनुं जक्षण करी पेटे नारी थाइशमां कदापि वैनादिक आवीने चलावे तोपण चलायमान थाइश नही. मामसूकीशमां एटले अर्हंतक श्रावकनी पेरे दृढ ता रारवजे तथा वली व्रत नियमादिक पालतो थको मनमां मह्रोटो अजिमान धरीशमां, फरी कहे ने. जनीपोजाटचूलेतरो एटले जेम चूलानी जाट धगधगती रहे ने तेम तुं कोइना आ

कोस स्गहसमर्थेधाजो वचन सांभजीने श्रंतरंग हैयानां क्रोध रूपश्रग्नियें धगधगतो रहीशमां एटले क्रोधाग्निर्येजेदीशमा. ४४ ममपीपोमोचक एटले श्राठकर्मने मूकजे मोक्ष मार्ग महोटो ले तेने श्रादरजे. ४५ पयीपोजाडोपेटको एटले संसारमांहे यमजे कृतांत तेनुं पेट महोटुं ले ने सर्वजगतने ग्रास करे ले तोपण तेनुं पेट जरातुं नथी तेमाटे एनो जय ताहारा हृदयमां रासीने धर्मने विषे श्रालस करीशमां. ४६ रायरोकटारमल्ल एटले राग श्रने द्वेष ए बे महोटा मल्ल ले तेमां रागना वली बे प्रकार ले एक प्रशस्तराग श्रने बीजो श्रप्रशस्तराग ए बेहु मल्लने जी तीने तो कर्मथी हलवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने श्रक्षयपद जे मोक्षपद तेनो जोगी थइश. ४७ जलापोडोजातवा एटले लोजरूप घोडानी जातथी वेगलो रहेजे. ४८ ववाविंगणवासदे एटले कामादिक व्यंग ले तेने ताहारा मनरूप घरमां वास एटले वसवा देजे नही, केमके जो कामादिक ताहारा मनरूप घरमां प्रवेश करशे तो श्रात्माना उत्तमगुण रूप धनने सर्व चोरी लइ जशे. ४९ शशाकोटा मरडीया एटले ससलानी पेरें कोट श्रने कांनथी ढंकाइने गलीयार थइ बेसी रहीशमां पण धर्मने विषे उद्यमी थाजे जे पटलालोकनी गतियाशे तेम ताहारी पणथाशे एवुं चिंतवतां एकदिवसें कालरूप पाराधी दुर्गतिमां लइजाशे जेम ससलाने श्राहेडी लेइ कोट एटले गलुं मरडी नाखे तेम तुजने पण काल श्राहेडी मरडी नाखशे. ५० रपाखूणे फाडिया एटले खरुं बोलजे खोटुं बोलीशमां केमके एक पण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्वगुण श्रने सर्वव्रतनो नाश थइ जाशे जेम कोइक वस्त्रनो कोथलो खूणे फाटो पडी तेमां जे वस्तु जरेली होय ते हलवे हलवे निकलीजकी [illegible] सर्वखाली थइ जली रहे तेम ताहारा गुण सघला [illegible]

पण ते आगळ उदयिककाळें प्रगट थाशे इत्यर्थः ५१ सारमे दंती जोक एटले जो तुं मोहरा जानी साथे युद्ध करे तो दंती एटले हाथीनी पेरें साहसिक थाजे जेम हाथी साहसिक थको सर्वनी आगळ आगेवान थइ किल्लानां कपाट, गढ कोट सर्वने भांगी नाखें तेम तुंपण मोह राजानो मिथ्यात्वरूप गढ भांगी नाखीश. ५२ हाहोलोहरिणेकलो एटले तुं मोहरूप पाराधीनां पाशमां पडीशमां पण हरण जेम पाराधीने देखी नाशी जाय तेनीपेरें तुंपण फाळ मारीने नाशी जाजे परंतु जो मोहना पाशमां पड्यो तो संसारनां बंधनथी छूटीश नही. ५३ लावेलछी वोप गीहार एटले जोतुं मोक्षनो अभिलाषी थइने संसारनां बंधन छेदीश तो एक द्रव्यलक्ष्मी अने बीजी भावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी ताहारे घेर पाणी भरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देव ता पणे उपजीश अथवा मनुष्यभवे नरदेव चक्रवर्त्ति पणे उपजीश तो भरतादिक जेम द्रव्य लक्ष्मीनां सुख भोगवीने सिद्धने विषे भावलक्ष्मी भोगवे छे तेम तुं पण पामीश ॥ हवे एवां सिद्धनां सुख केवीरीते पामीयें ते आगळ कहे छे. ५४ खडीयाखाटक मोर पाळें बांध्या बे चोर एटले संसारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने लूटवाने माटे राग अने द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले ऊभा छे तेने पकडी बांधीने तेनुं बीजमात्र का ढी नाखजे के जेथकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फरी थायज नही ॥ रागोयदोषोयमाबीज ॥ इतिवचनात् ॥ माटे ए बे ने टाळीने चारघनघातीया कर्मने टाळजे के जेम केवलरूप लक्ष्मी पामे पछी ते केवलश्री भोगवीने अंते चौदमे गुणठाणे योगनिरुंधी शैलेसी करण करी शुक्ल ध्यानने चोथे पाये कार्मणशरीर छेदी क्रिया रहित थइ सिद्धना जीवोनी राशिमां भळजे के जेम ५५ मंगलमहाश्री, देविया परमेश्वरी एटले मंगलिक रूप महोटी भावलक्ष्मी पामीश अर्थात्

पोताना आत्मानां अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अगुरु लघु, अरूपी, अखंम, अक्षय, अव्यय एवी महामंगलिक रूप जावलक्ष्मी पामी सादिअनंतजांगे अजर, अमर, अविनाशि पणे, महानंद, परमानंद पद पणे रहीश इतितत्त्वं ए जलेनो अर्थ समास थयो ॥ वली एनो अर्थ प्रकारांतरे जुदा जुदा महापुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो दीठामां आव्यो ठे परंतु आंही ग्रंथगौरवना जयथी मात्र आ एक प्रकारनोज दाखल कर्यो ठे ॥ ॥ हवे जगवान जेवारें बाल्यावस्थायें करी रहित थया अने यौवनवय पाम्या तेवारें मातापितायें रूडुं मुहूर्त्त जोवरावीने घणा आमंबर सहित समरवीरनामा सामंतनी पुत्री यशोदा नामे हती ते प्रजुने परणावी घणी प्रतोमां नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परण्या एवा अक्षर लखेला ठे पठी ते यशोदा राणी साथें विषयसुख जोगवतां प्रियदर्शना नामे एक पुत्री थइ ते पुत्री जगवाननी बहेननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी एम करतां जगवानने गृहस्थ पणामां अष्ठा वीश वर्ष वीत्यां ॥ हवे जगवानना परिवारनां नाम सूत्रकार वर्णवे ठे. महावीरस्वामीनां पिता काश्यपगोत्रीया ठे तेनां त्रण नाम ठे ते कहे ठे. एक सिद्धार्थ, बीजुं श्रेयांस, त्रीजुं यशस्वी हवे जगवाननी मातानुं वाशिष्टगोत्र ठे अने तेमना पण त्रण नाम ठे ते कहे ठे. एक त्रिशला, बीजुं विदेहदिन्ना, त्रीजुं प्रीतिकारिणी तथा जगवाननां काकानुं सुपार्श्व एवुं नाम ठे तथा जग वाननां महोटा जाइनुं नंदीवर्द्धन एवुं नाम ठें तथा बहेननुं नाम सुदर्शना ठे तथा स्त्रीनुं नाम यशोदा ठे तेनुं कोडिन्न गोत्र ठे तथा जगवाननी पुत्रीनुं काश्यप गोत्र ठे तथा तेनां अणोद्या अने प्रियदर्शना एवां बे नाम ठे तथा जगवाननी दौहित्री तेनुं काश्यपगोत्र ठे अने शेषवती तथा यशवती एवां बे तेनां नाम ठे ॥ ११० ॥ ॥ हवे जगवान श्रीमहावीरस्वामी



चित्र ३१



कहेवा ने लोके ? सर्वकलाउंमां निपुण ने, जलीरीतें निर्वाह करवा वाला, जला रूपवंत, सर्व गुणे संपूर्ण, सरलपरिणामी, विनयवान, ज्ञातराजाना पुत्र, प्रसिद्ध एवाजे सिद्धार्थराजा तेनां कुलमां चंद्रमा समान, जलो ने देह एटले शरीर जेमनुं, वज्रऋषभनाराच संघयण, समचउरंस संस्थान, त्रिशलामाताना पुत्र, महा कोमल शरीर वाला, कांतिवंत, ममता रहित, दीक्षानी वांछा करनार, त्रीशवर्ष गृहस्थावासें रह्या तेवारे मातापितातो प्रजुनी अठावीशवर्षनी वयमां देवलोके पहोतां हतां ते दिवसें दीक्षा लेवाने माटे पोताना महोटा जाइ नंदीवर्द्धननी आज्ञा लीधी अने जाइने कह्युं के मातापिता जीवता रहे तिहां सुधी महारे घरमां रहेवुं एवी म हारी प्रतिज्ञा हती ते पूरण थइ फरी जाइनी अनुमतियी वे वरस घरमां रह्या तेवारे लोकां तिक देवो आवीने इष्टकारी वल्लन वाणीयें करी नित्यआशीष देता थका नित्य स्तवना करता थका एवुं कहे ॥ १११॥ ॥ के हे प्रजु! हवे तमारो अजिग्रह पूरण थयो, ते हवे अजिग्रह संबंधि वात लखे ने. जगवान अठावीश वर्षना थया तेवारे जगवानना मातापिता देवलोके गयां ते आवश्यकनिर्युक्तिमां तो चोथे देवलोके गयां एवुं लख्युं ने अने श्रीआचारांगसूत्रमां बारमे देवलोके गया एवुं लख्युं ने ए वातनुं समाधान करवा सारुं केटलाएक एवी कल्पना करे ने के देवोनी वधीमली चारनिकाय ने तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी ने माटे ए चोथो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवी तो ते चोथी निकायमां बारमो देवलोक आवीगयो तेथी आचारांगमां कह्या प्रमाणे बराबर वात मली आवे ने ए प्रमाणे समाधान करे ने पठी तत्वकेवलीगम्य ठे ॥ हवे मातपिता देवलोके गया पठी महोटा जाइ नंदीवर्द्धनने जगवाने पूठ्युं के हुं दिक्षा लउं तेवारे नंदीवर्द्धन बोल्या

के नाइ तुं घाकपा उपर लूण नाखे डे केम के मातापिता मरण पाम्यां तेना वियोग रूप दाघ
जे घजतरा एटले फोडला तेतो हाजमां मने कायम डे तेना उपर वली ताहारा वियोग
रूप लूण नाखवुं ते महाराणी सहुं जाय नही हजीतो माता पितानो शोक पण मट्यो नथी
माटे हुं दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नही तेवारें जगवान बोल्या जे माता पिता
नाइ बहेन एतो जीवने अनंतिवार थयां ते सर्वने मूकीने वली जीवतो एकलोज आवे डे,
एकलोज जाय डे, एकलोज पोतानां करेलां शुजाशुज कर्मोने जोगवे डे, एवीरीतें संसारमां
कोइ कोइनो सगो नथी तो हवे कोनो कोनो शोक करीयें अने कोनी कोनी सायें प्रतिबंध
राखीयें ! फरी नंदीवर्द्धन बोल्या के नाइ ! एवुं हुं पण जाणुं हुं तोपण हुं शुंकरुं जे महारे
मोहनीयकर्मनो बंध हजी घणो जारे डे तेथी ताहारो विरह हुं खमी शकतो नथी तेमाटे
हजी महारा कहेवाथी तुं बे वर्ष घरमां रहेतो ठीक डे हवे उत्तम पुरुषनी चाल डे के
दुःखीयाने देखी तरत करुणा आवे माटे जाइनुं एवुं कहेण सांजलीने कह्युं के हे जाइ हुं बे
वर्ष रहीश पण जातपाणी सर्व फासु लइश महारा वास्ते आरंज करीने कांइपण बनाववुं
नही तेवारे जाइयें कह्युं के सुखे एमज रहो अमे तमारा वास्ते कांइ करीशुं नही तेवारें जग
वान फरी पण बे वर्ष गृहवासमें रह्या ॥ हवे जेवारें जगवान जन्म्या हता तेवारें लोकमां एवी
प्रसिद्धि थइ हति जे चौद स्वप्न मातायें दीठां माटे ए चक्रवर्त्ति थाशे, एवुं जाणीनें श्रेणिक
अने चंडप्रद्योतन राजायें पोताना कुमरोने बालक ठाकोरनी सेवा करवा निमित्तें मोकल्या हता
ते सहुयें प्रजुने आवा घोर अनुष्ठान करता देखीने विचार्युं जे ए चक्रवर्त्ति नथी थतो संयम
[illegible]


चित्र ३७
श्रीमहावीर
भगवान्
नवलोकांतिक
देव

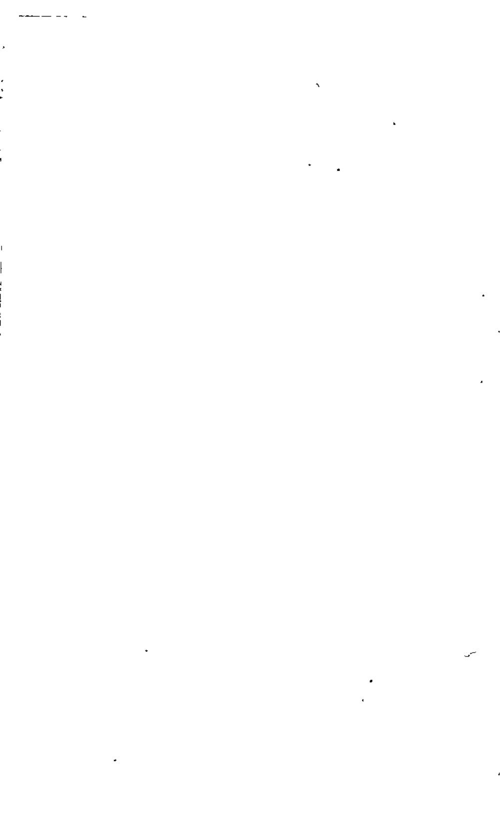
वली बे वर्ष गृहस्थावासे रह्या, सर्व सचित्त वस्तुनो त्याग कर्यो, ब्रह्मचर्य पाल्युं पण न
नखत दीक्षालीधी बे ते वखत सचित्तजलथी स्नान कर्युं बे केमके एवी मर्याद बे जे दीक्षा
लेती वखतनुं स्नान उष्णजलथी करवुं तीर्थंकरने न होय तेथी प्रतिमाने पण उष्णजल न
डावता नथी एवी स्थिति बे पछी ते वर्षमांथी जेवारे एकवर्ष वीत्युं तेवारें नवलोकांतिक देवो
आव्या तेनां नाम कहे बे. १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वन्हि, ४ वरुण, ५ गर्दतोय, ६ तु
षित, ७ अव्याबाध, ८ अग्नि, ९ अरिष्ठ ए नव आवीने जो पण नगवान स्वयंबुद्ध बे तो पण
एमनी एवी मर्यादा बे माटे प्रनुनी पासे आवीनें जाण करे केवीरीतें जाण करे ते कहे बे. जय
जयवंत होवो हे समृद्धिमान! हे कल्याणवान! तमारुं नद्रुं थाउ, हे क्षत्रियोमां वृषनसमा
न! तमारो जयहोवो बोधकरो बोधकरो बुजो बुजो हे नगवान! हे लोकनाथ! सर्वजगत जी
वने हितकारी प्रवर्त्तो हे नगवान्! तमे धर्मतीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्मतीर्थ सर्वलोकनें हितकारी,
सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवुं कहीने जयजय शब्द कहे ॥११२॥ ॥ हवे श्रमण नगवान
श्रीमहावीरस्वामीने मनुष्ययोग्य गृहस्थधर्मथी, गृहस्थना व्यवहारथी पहेला, पण अनुपम उप
योग ते अप्रतिपाति एवुं अवधिज्ञान अने अवधि दर्शन होतुं हवुं ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने
अवधिदर्शने करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करीने, सोनानो त्याग
करीने, धनने, राजनो, देशनो, वाहननो, कोठारनो, नंमारनो, अंतेउरनो, देशवासी लो
कनो, धन, कण, धान्य, मणिरत्न, मोति, दक्षिणावर्त्त शंख, शिला, प्रवालुं, रातांरत्नादिक जे
पोतानी पासें हतां बे हाजर बे ते सर्वनो त्याग करीने अर्थात् तेना उपरथी मन उतारी
लीये, सर्व रूपादिक गोडीने जे चांदी प्रमुख धरतीमां दाटेला होय तेने बाहार काढ

डीने ते सहु आपणा गोत्रियाने वांटी आपीने आ सूत्रथी वरसीदाननो अधिकार एवो छे के भगवान दिक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेलां वरसीदान देवा मांडे ते सूर्यउगयाथी मांडीने जमवानी वेला सुधी प्रतिदिवसें प्रभातना सवा पहोर दिवस चडता सुधी नित्यप्रत्यें एक क्रोडनें आठ लाख सोनैया भगवान दानमां आपे अने गाममां एवी उद्घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइयें ते धणी ते वस्तु मागे तेवारें जे धणी जे मागे तेने ते आपे ते सर्वशक्रेंद्रना आदेशथी देवता पूरण करे एवी रीते एक वर्षमां जेटला सोनैया दान आपे ते कहे छे. त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज अठासी क्रोड ने एंशीलाख एटला सोनैया एक वर्षमां दान आपे ते सोनैयो एक एंशी रतीभार जेटलो होय अने तेना उपर तीर्थंकरनां मा बापनुं तथा पोतानुं नाम होय ते बारसो सोनैयानो एक मण करता नवहजार मण सोनैया दिनप्रत्यें दान देवाय तेना आजना समय प्रमाणे एक गाडलामां चालीशमण भार भारवतां बसोने पच्चीश गाडलां थाय ते सोनैया शक्रेंद्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देवमायायें करी आठ समयमां नीपजावीनें, तीर्थंकरनां घरमां भरे, ए दानदेवानो अतिशय छे, अने तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेंद्र एवी स्थिति करे के दान देतां थकां तीर्थंकरनो हाथ थाके नही अने इशानेंद्र रत्ने जडित सुवर्णनी लाकडी लइ उभो रहे ते चोसठ इंद्रवर्जीने बीजा सामान्य देवताउने दान लेतां वर्जे तथा जे मनुष्यनां ललाटमांहे जेवी प्राप्ति होय जेवुं जेने आपवुं पोसाय तेवुं तेना मुखमांथी इशानेंद्र वचन कहेवरावे, तथा चमरेंद्र अने बलेंद्र ए बे इंद्र जो तीर्थंकरनी मुठीमांहे अधिकद्रव्य आव्युं होय तो पाछुं पडावी नाखे अने उंछुं द्रव्य आव्युं होय तो पूरण करे. भाग्यभाग्यनी प्राप्ति माफक थाये तथा भुवनपति देवता

चित्र ३३







भरतक्षेत्रनां मनुष्यने दानलेवा सारु तेडी आवे अने वाणव्यंतर देवो ते मनुष्यने पाछा तेने स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिषी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे ए सर्व तीर्थंकरनां अतिशय जाणवा ए प्रस्तावें तीर्थंकरनो पिता म्होटी त्रण शालाउ करावे त्यांहीं भगवाननां मातापिता देवलोकें गयां छे माटे तेने ठेकाणे एमनो म्होटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते त्रणशालाउ करावे तेमां पहेली शालायें भरतक्षेत्रनां मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामां वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामां आभरण आपे हवे तीर्थंकरना हाथनां दाननो महिमा कहे छे. चोसठइंद्रने दानने प्रभावे बार वरस पर्यंत मांहोमांहे कलेश उपजे नही तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थंकरनुं दान लइने ते सोनैया पोतानां भंडारमां मूके तो बार वर्ष सुधी तेमनो भंडारअखूट रहे तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मलेतो तेना महिमा थकी बारवर्ष पर्यंत यशःकीर्त्ति घणी वधे तथा रोगी पुरुषने दान मलेतो तेना प्रभावथी रोग सर्व मटी जाय अने फरी बारवर्ष पर्यंत तेना शरीरमां कोइ नवो रोग पेदा थाय नही इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो हवे छ घडी दिवस चढ्या पछी दानदेवा मांडे ते पोणा बे पोहोर दिवस चढ्या सुधी दान आपे एवो पाठ घणी प्रतोमां लखेलो छे परंतु आमां सूर्यउग्याथी ते जमवाना वखत सुधी आपे एवो प्रथम लेख आव्यो छे एवीरीते प्रभुजी वरसीदान रूप वर्षाद एकवर्ष सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र्य रूप दावानलने उपशमावे. जे दारिद्री हता ते सर्व धनवंत थया, घोडें करी वध्या, वस्त्रेंकरी वध्या, आभरणें करी वध्या, ए आदिक लक्ष्मीयें करी सहित थया ए प्रभुना हाथनुं दानलइने जेवारें पोताने घेर पाछा आवे तेवारे तेना घरनी स्त्रीयो

सरखी पण पोताना स्वामीने उंलखे नही पछी इंद्र महाराज आवी उंलखाण करावे ते वारें तेने सर्व प्रकारनी उंलखाण पडे ए प्रजुना हाथनुं दान सर्व जव्यजीवोने मले परंतु अजव्यनेंतो ए प्रजुना हाथनुं दान सर्वथामलेज नही इति संवत्सरीदान महिमाधिकार वर्णन समाप्त ॥ ॥ हवे जगवान महाराजनो दीक्षा समय जाणीने नंदीवर्द्धन राजा दीक्षानो महोत्सव करवाने अर्थें प्रथमतो क्षत्रियकुंमपुर नगरने विषे ध्वजाउ बंधावी हाट शणगार्यां, घरघर तोरण बंधाव्यां एवीरीतें नगरशणगारीने पछी चोसठ इंद्र अजिषेक करवा आवे तेवारे देवोना प्रजावथी देवोयें करेला जे आठजातिना अजिषेक कलश ते कलश नंदीवर्द्धन राजाना करावेला अजिषेक कलशमां प्रवेश करी मली जाय पछी नंदीवर्द्धनराजा जगवानने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवतायें लावेला जलथी जगवानने अजिषेक करे तेवखतें इंद्रादिकदेवो सर्व जृंगार दर्पण हाथमां लइ जयजयशब्द कहेता थका आगल ऊजा रहे पछी जगवाननां शरीरने लूही बावनाचंदने करी शरीर लेपे अमूल्य वस्त्र मुकुट, मोतीना हार, कंठसूत्र, केयूर, बाजुबंद, वहिरखा अने कुंमलादिक सर्व जातनां आजरण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे पछी नंदीवर्द्धनना कहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पच्चाशधनुष लांबी, पच्चीश धनुष पोहोली अनें छत्रीश धनुष उंची मणिकनक रचित एवी एक चंद्रप्रजानामे पालखी बनावे तेमज देवता पण एवीज एक पालखी बनावे ते पालखी दिव्यानुजावे नंदीवर्द्धनकृत पालखीमां प्रवेश करे पछी ते पालखी प्रजुना मुख आगल मूके प्रजुते पालखीमां पूर्व सन्मुख सिंहासनें आवीने बेसे अने जगवाननी जमणी बाजु कुलमा वडेरी कुलमहत्तरिका हंसलक्षण स्त्री साडीलेइने बेसे तथा [illegible] बाजु [illegible] आवी [illegible]

नी पछवाडे शोल शणगार पहेरीने एक घणीज सरूपवान जली स्त्री छत्रधरीने बेसे तथा ईशानकोणे एक स्त्री जलें पुरण कलश हाथमां लइ उन्नीरहे अग्नि कोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वींजणो करती उन्नीरहे,ए सर्वे स्त्रीयो शणगार करेली युवान अवस्था वाली जाणवी तेवार पछी नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जेटलामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामां ते वखतमां शक्रेंद्र ते पालखीनी जमणी बाजुनी आगली उपरली तरफनी बाहा उपाडे,तथा ईशानेंद्र डावी बाजुनी आगली उपरली बाहा उपाडे तथा चमरेंद्र जमणी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे तथा बलींद्र डावी बाजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे अने बीजा जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवोना जे इंद्र छे ते जिहां जेवी तिहांथी उपाडे, केटलाएक देवडुंजी वजावे, केटलाएक पंचवर्ण फूलनो वर्षात करे पछी शक्रेंद्र अने ईशानेंद्र बाहुने जोडीने चामर ढोले तेवारे शिबिकाने बीजा इंद्र उपाडे एम शिबिकाने प्रथमतो मनुष्य उपाडे पछी सुरेंद्र, असुरेंद्र, नागेंद्र उपाडे बीजा सर्वदेवो हर्ष पाम्या थका केटलाएक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे आ ठेकाणे जेम वनखंड फूलें करी शोजे, जेम पद्मसरोवरमां शरदकालें कमल शोजे, तेम देवता आकाशें रह्या थका शोजे छे तथा जेम अलशीनुं वन, कणेरनुं वन, चंपानुंवन, फूलेकरी शोजे तेम क्षत्रिय कुंड नगरथी मांडीने देवताना जवन सुधी देवदेवीयें करी आकाश संकीर्ण थयुंथकुं शोजे छे. प्रधान पडह जेरी जालरी डुंडुजी इत्यादिक कडोगमे वाजित्र आकाशें तथा धरतीयें वाजी रह्यां छे, घरना व्यापारधंधा मूकीने मनुष्यना वृंद जोवा मल्या छे, हवे पालखी चालतां देवदेवी तथा नर नारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमां आवे तेवाप्रकारनां हर्षनां वाजां वजावें छे, गाय छे, नाचें

छे,फूल फल मोतीप्रमुखने वरसावे छे ॥ हवे वरघोडामां जगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेलातो आठमंगल चाले,पछी पूरण कलश भृंगार चाले,पछी महोटी वैजयंति ध्वजा चाले,पछी छत्रधरचाले, पछी मणीपीठ सिंहासन चाले,पछी शणगारेला पण अस्वार विनाना एवा एकसोने आठ हाथी चाले, पछी एकसोने आठ घोडा चाले, पछी एकसोनें आठ शस्त्रें जरेला रथ चाले, पछी एकसोने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ अने पाला ए चार प्रकारनी सेना चाले, पछी एक हजार योजन उंचो अने न्हानी न्हानी एक हजार ध्वजायें मंमित एवो महेंद्रध्वज चाले, पछी कुंतग्रहा, बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्मकारिका, वशकारिका, ज्ञानकारिका, विनोदकारिका, खड्गधर, धनुर्धर, एवा पुरुषो चाले, पछी पाटीया धरवावाला पुरुष चाले, पछी घणा चारण जीखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्र जोगकुलादिकना क्षत्रिय, मांमविक, कोमंबिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी प्रजालोक चाले, जगवाननी पछवाडे घणी सेनायें परवर्यो थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आमंबर सहित नंदीवर्द्धनराजा चाले, बीजा पण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारनां वाजां वाजे तेनो शब्द सांजलीने नगरनी स्त्रीयो पोतपोतानुं काम मूकीनें त्यां आवे ते केवी थकी आवे तोके ? त्रणवातो स्त्रीयोने वह्लज छे एक कगडो, बीजुं काजल, त्रीजो सिंदूर वली त्रण वातो बीजी अत्यंत वह्लज छे एक दूध, बीजो जमाइ, अने त्रीजुं वाजुं यतः ॥ तिस्रिवि तियां वह्लहा, कलिकज्जल सिंदूर ॥ एपुण अतिहि वह्लहा, दूध जमाइ तूर ॥ १ ॥ ॥ माटे ते स्त्रीयो वाजानो शब्द सांजलीने उतावलथी आवीयो तेथी कोइएक स्त्रीतो काजल आंखमां आंजवी हती ते आंखने बदले [illegible]



चित्र ३४

ठनी ते आंखोमां आंजी दीधी, केटलिएक स्त्रीयो पगोमां कांकर पहेरवां चूलीगइ तेने बदले गलामां कणेणाट करतां कांकर पहेरी लीधां, केटलिएक स्त्रीयोये गलामां पेहेरवानां घरेणां ते पगमां पहेरी लीधां, केटलीएक स्त्रीयोये कटीमेखला गलामां पहेरी लीधी अने गलानो हार ते कटीमेखलाने स्थानके केडमां बांधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोये चंदन घसीने पगे चोपडवुं अने अलतो मस्तकें चोपडी लीधो, केटलिएक स्त्रीयो अर्धुंस्नान कर्युं न कर्युं एवी थकी दोड ती आवी, कोइकतो घाघरा उंढीनें चालती आवी तेथी नीचेना नागमां नागीज दीसवा ला गी, कोइक बीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोनां छोकरां ते चूलथी पोताना काखमां तेडीने दोडी आवी, केटलिएक तो पोताना रडतां बालकने पडतां मूकी चाली आवी, केटलिएकें पहेरवानुं वस्त्र ताणी बांध्युं नही तेथी वायराने योगें ते वस्त्र उडीगयुं तेना योगें नववधू बालकुमारी सरखी दीसवा लागी, कोइएक स्त्रीये एक कानमां आजूषण पहेर्युं अने बीजा कानमां पहेरतां चूलीगइ, कोइएक स्त्री जमी तो रही पण चलु करवुं रहीगयुं, कोइक स्त्रीये एकज पगधोयो बीजो धोवो रहीगयो, कोइक कांचली पहेरतां वीसरीगइ एवी उतावलथी जोवा नीकली केटलिएक चामर उलाले छे, केटलिएक नाचे छे, एवा आडंबरथी जगवाननो दिक्षा महोत्सव थयो ते कया दिवसे थयो ते दिवस कहे छे. तेकालने विषे ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते हेमंतऋतु एटले शीयालानी ऋतुनो पहेलो महीनो पखवाडीयुं, मागशिरवदि दशमीने दिवसें दिवसनी पाछली छाया एटले पोरिसी विन रहे एक पहोर दिवस रहे तेवारे तथा सुव्रतनामा दिवसनुं नाम ते दिवसने विषे, विजय मुहूर्ते आवे थके, चंद्रप्रजा नामा पालखीमां बेठा थका, जेनी आगल पाछल देवता अने

उतारे, उतारीने ते घरेणां जे तेमनां कुलमां वडेरी हंसलक्षण स्त्रीते पोताना वस्त्रमां लीये, पछी पोतानां हाथथीज पंचमुष्टि लोच करे ते केश इंद्रमहाराज पोते लइजइने खीरसमुद्रमां मूके. लोचकरीने चउविहारी छठ एटले बेलानी तपस्या करे, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथें चंद्रमानुं योग आवे थके एकज शक्रेंद्रे आपेला देवडूष्य वस्त्र लइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने जावथी मुंमित थइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणानो अंगीकार कर्यो ॥ ११७ ॥ ॥ हवे जे वखतें जगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखतें शक्रेंद्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे. पछी जगवान् नमोसिद्धाणं एवुं कहीनें करेमिसामाइयं इत्यादि यावत्तस्सपडिक्कमामि इत्यादिक कहे इहां बीजो गुरु करवानो अजाव छे पोतें स्वयं चारित्र लीये छे माटे जंते ए पद कहे नही तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, ते माटे जंते पद न कहे, इहां जगवानने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उपन्युं हवे सर्व इंद्र तथा देवो ते जगवाननें नमस्कार करीनें नंदीश्वरद्वीपे जइ अठाइ महोत्सव करीनें पोत पोतानें स्थानके गया, अने जगवाने पण पोताना जाइ नंदीवर्द्धन प्रमुखने पूछीने विहार कर्यो हवे स्वजनादिको पण ज्यांसुधी जगवान नजरे देखाता हता त्यांसुधी त्यांज उजारह्या पछी जगवानना गुण याद करता फूरता फूरता पोताने घेर आव्या ॥ इति कल्पव्याख्याने पंचमो वखाण समाप्त ॥ ॥ हवे जगवाने दीक्षा लइने पछी विहार कर्यो ते वखतमां बे घडी दिवस शेष बाकी रह्यो हतो तेवारे जगवान कुमारगामनी बाहेर काउस्सग्ग रह्या ते वखत एक हालो आव्यो तेणे पोताना बलदो जगवानने जलाव्या अने पोते घेर जइ जमीने केट लिएक वार रही पाछो तिहां आव्यो एटलामां आव्यो दिवस खेडवाथी थाकी गयेला बल



चित्र ३५




चित्र ३६
भगवान
सिद्धार्थव्यन्तर

दीया तो वनमां चरता चरता क्यांय चाल्या गया पछी हालीये इहां तिहां घणा जोया पण बलद मल्या नही तेवारे भगवानने पूछवा लाग्यो के बलद क्यां गया ते वखत भगवान मौन रह्या थका कांइपण बोल्या नही पछी ते हालीयें वनमां जइ आखीरात्रि बलदोने शोध्या परंतु तेने बलद जड्या नही अने बलदतो वनमां चरीचरीने पाछली रात्रें पोतानी मेळे त्यांज आवी बेशी रह्या हालीपण पाछो आवीने जूएछे तो बलद त्यांज बेठा छे ते देखीनें क्रोध पाम्यो थको बोलवा लाग्यो के हे पापी! हे पाखंडी! आ बलद तेंज संताडी मूक्या हता ए बधुं ताहारुंज काम करेलुं देखाय छे मने आखी रात्रि निरर्थक भमवुं पड्युं एम कही हाथमां रासडी लइने भगवानने मारवा दोड्यो ते वखतमां इंद्रमहाराजें पण अवधिज्ञाने करी भगवानने थतुं उपसर्ग जाण्युं अने पोते तिहां आवीने हालीने कहेवा लाग्यो के अरे दुष्ट! तुं जाणतो नथी के आ श्रीवर्द्धमान स्वामी नंदीवर्द्धनराजाना भाइ छे, सिद्धार्थराजाना पुत्र छे एणे दीक्षा लीधेली छे एमकहीने हालीने हलकारी काहाड्यो पछी इंद्रमहाराजे भगवानने कह्युं के हे भगवान! आपने बारवर्ष पर्यंत छद्मस्थपणुं छे तेमां उपसर्ग घणा थवाना छे माटे आप आज्ञा करो तो हुं आपनी पासें हरहमेश रहुं अने आपनी सेवा करुं तथा उपसर्ग निवर्त्तन करुं एवो म्हारा मननो मनोरथ छे तेवारें भगवान बोल्या हे इंद्र! आ वात थई नथी थातीनथी अने थाशे पण नही जे श्रीअरिहंत भगवंत इंद्रना सहायथी केवलज्ञान उपजावीने मोक्ष जाय? अरिहंततो पोतानाज उपार्जित कर्म बलवीर्यथीज केवलज्ञान पामीनें मोक्ष जाय एवुं सांभळ्युं तोपण इंद्रे मरणांतिक उपसर्ग टालवा सारुं भगवाननी माता त्रिशलादेवीनां बहेनना पुत्र सिद्धार्थनामे व्यंतर तेने आज्ञा आपीने भगवान पासे मूकी गयो आंही सिद्धार्थवि

तरने मार्गीनो वीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको करी पण लखेलो ने पनी इंद्रमहा राज देवलोकें गयो अने हालीपण पोताने घेर गयो ॥ इतिहालीकृत उपसर्ग ॥ हवे प्रनातमां जगवान तिहांथी विहार करीनें कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां बहुलनामे ब्राह्मणने घरे कांस्य पात्रें खीरजइने प्रभुयें परमान्ने पारणुं कीधुं पात्र धर्म बतावबा सारुं गृहस्थनां कांस्य पात्रमां खीर लीधी तिहां पांचदिव्य प्रगट थाय ए जगवंतनो अतिशय ने ते पांचदिव्य कहे ने. एकतो आकाशमां ध्वजा विस्तार देवता करे, बीजो सुगंधि जलदेवता वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, ४ चोथो देवडुंजी वजावे, पांचमो अहोदानमहोदान एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरें क्यांएकतो साडीबार क्रोड सोनैया वरसावे एवा पाठ पांचमां दिव्य विषे लखेला ने. इहांपण कोइक आचार्यना मतें पांचमुं वरसाण पुरुषपुं कहेवाय ने ॥ ॥ हवे प्रभुयें जेवारें दीक्षा लीधी, तेवारें इंद्रादिकोयें सुगंधितबावना चंदनादिकें करी जगवंतने शरीरें लेप कर्यो ने, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत न जाय, ते वासनायें करी हजारो गमे भ्रमरादिक मदोन्मत्त थया थका जगवंतना अंगोपांगने वेधे ने, महोटो उपद्रव करे ने कोनी पेरें तो के? जेम कामी पुरुष कामांध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, फंख मारे तेम भमरापण वासनायें अंधधुंध थया थका, जगवंतना शरीरना अवयवें फंकमारे ने. ए दृष्टांत कह्युं पण अहींआं एटलो फेर ने, जे स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु जगवान् तो जमरानो एटलो थयो उपद्रव छतां पण वज्रऋषभनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुनी पेरें अडग रहे ने. वली बीजे अर्थे ग्रामाध्यक्षा कामी पुरुष, गंध उपर मूर्छा पाम्या थका गंध लेवाने

[illegible]

गन करवा लागी एम नगवान पासेंथी सुगंध मागवा लागा एवा उपसर्ग चार महीना आकरा रह्या तोपण नगवान मग्या नहीं मेरुनी पेरे अकंप रह्या ॥ ॥ हवे नगवान तिहांथी विचरता मोराक सन्निवेशने विषे सिद्धार्थराजा प्रनुना पिता तेनो मित्र कुलपति, डुईजंत नामा तापसने आश्रमें आव्या, तापस पण नगवानने देखी सामो मलवा आव्यो, तेने नग वंत पण ढूंकडा पूर्वपरिचयाच्यास थकी हाथ पसारीने मव्या, पढी तेना आग्रहथकी नीराग चित्तथका एक रात्रि तिहां रह्या, फरी प्रनातें विहार करवा लाग्या, तेवारें ते तापस, पहोंचा डवा साथें चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासुं पोताना आश्रमें रहेवानी प्रनुने विनंति करी, घणो आग्रह कस्यो तेवारें प्रनुयें देशकाल विचारीने कह्युं के एमज थाओ एवुं कही पढी चार ज्ञानें सहित एवा प्रनु ते पृथिवीने विषे विहार करतां जेवारें चोमासुं आव्युं तेवारे ते तापसनी फुंपडीमां रहेवाने आव्या कुलपतियें तृणपलानुं फुंपडुं प्रनुने रहेवा सारु आप्युं नगवान तेमां रह्या पण दैवयोगें वर्षाद न थयो तेवारें गामनी गायो प्रमुख ढोर नूखें मरतां थकां फूंपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रनुतो मौन पणे रहे कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुउ खाइ गयां तेवारें फुंपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के हे देवाणुप्रिया हे प्रनु ! पंखीउ पण पोताना माला साचवे ले अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम सां चवी शकता नथी ? एवी रीतें कुलपतिने अप्रीति उपनी देखी नगवाने निर्धार्युं जे महारे अहीं आं रहेवुं नहीं, पढी आशाढी पूर्नेमथकी पंदर दिवसें एटले श्रावण वदि अमावास्यायें चो मासाना पन्नर दिवस जातां प्रनुयें तिहांथी विहार कस्यो तेथी उपज्या नगवंतने न गणे

चोमासुं एवुं कहेवाणुं तिहां जगवंतें पांच अनिग्रह लीधा, ते कहे छे. एक अप्रीति उपजे तिहां न रहेवुं. बीजुं ज्यांसुधी छद्मस्थपणुं छे त्यांसुधी निरंतर काउस्सग्गमांज रहेवुं, त्रीजुं गृहस्थनो विनय न करवो, चोथुं यथा संजवें मौन पणे रहेवुं, कायायें करीउंचु उनाउन रहेवुं पण सुवुं नही पांचमुं सर्वदा हाथमां नोजन करवुं, एवा अनिग्रह सहित विचरतां थकां शूलपाणि यक्षने देहरे अस्थिग्रामे प्रथम चोमासुं रहेवा पधास्या, त्यां अत्यंत उपसर्ग सहन करीने शूलपाणि यक्षने प्रति बोध्यो, तेनी कथा कहे छे. धनदेव नामें सार्थवाह पांचशें गाडां मालनां नरी, व्यापार करवा कोइ गामांतरे जतो हतो, मार्गमां वेगवती नामे बहुवालुका नदी वर्द्धमान गामपासे आवी, तिहां उनालाना दिवस हता तेथी कोइ बलद ते रेती नरेली नदी मांथी गाडुं ताणीने चाली शके नहीं पण ते बलदोमां एक बलद घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचशें गाडां नदीथकी उतारी पहेले पार कर्यां, परंतु पोते त्रुटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो ते वारें सार्थवाहें चारा पाणीने अर्थे वर्द्धमान गामना अधिकारि शेठ,पटेल,गामोद, पटवारी, प्रमुख पंचने ते धोरी नलाव्यो. तेने घृत गोल तृण जलादिक सारु घणुं धन आप्युं,वली ते बलदनी चाकरी करवानी घणी नलामण आपीने शेठ तिहांथी चाल्यो गयो. पछवाडेथी ते गामना लोकोयें ते बलदनी सार संनाल कांइ पण कीधी नही,शेठनुं धन आपेलुं सर्व वांटीने खाइ गया. पछी ते बलद नूख तृषायें पीड्यो थको अकाम निर्जरायें मरण पामीने व्यंतर देवोमां शूलपाणीनामे यक्ष थयो,तेणें अवधिज्ञानें पाछलुं वृत्तांत जोयुं, पछी गामनां लोको उपर रूठोथको मरकी विकूर्वी तेथी घणां माणस अनें ढोर मरवा लाग्यां तिहां कोइ माणसने बालवावालो पण मले नही जे कोइ मरे तेने फोगो गामनी बाहेर नाखी जाय तेथी त्यां हाडकांना ...



चित्र ३७

करनारा लोकोयें तेनुं अस्थिगाम एवुं नाम पाडी दीधुं पछी घणा माणसोने मरता देखीने गामनां लोकें मली तेने आराध्यो तेवारें यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीयें करी बोलवा लाग्यो के हुं बलदनो जीव छुं, तमें महारुं इच्छाइने कांइपण चाकरी करी नही तेथी तमे मने कुमरणें मार्यो ने माटे हुं कोप्यो छुं तो तमें हवे महारा नामनुं लाडका उपर देहेरुं करावो, तेमां वृषभना रूपें शूलशस्त्र हाथमां आपीने महारी मूर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पण मटशे, अने जीवता पण रहेशो नहींकां सर्व मरण पामशो एवी वात सांभलीने लोकोयें म रण भयथी तेनी प्रतिमा करी देहेरे थापी पूजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ. हवे भगवान ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रति बोधवाने माटे तेने देहेरे आव्या, तेवारें ते यक्ष महादुष्ट छे, कोइने पोताना देहेरे रात्रें वास करवा आपे नहीं, तेथी ते यक्षना देरानो पूजारो इंद्रशर्मा नामें विप्र हतो, तेणें भगवंतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोयें पण वार्या, तो पण प्रभु मौनपणे तिहां रात्रें काउस्सग रह्या, ते देखीने यक्ष रुठो अने संध्या समयथी उपसर्ग करवा लागो, तिहां प्रथम तो भराववा सारुं अट्टहास्य कर्युं, पछी हस्तीनुं रूप करी उलाल्युं, पिशा चनां रूप करी छरी कहाडी बीवराव्युं, तेमज सर्प थइने डंक मार्यो इत्यादि घणा उपसर्ग क र्या मांड्या पण भगवंत लगार मात्र क्षोभ न पाम्या तेवारें वली मस्तक, कान, नासिका, आंख, दांत, होठ, पुठ, नख, ए आठ स्थानकें विविध वेदना उपजावी. तथापि भगवंतने अ क्षोभ जाणी, यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रभुनी भक्ति करवा लाग्यो, एटलामां सिद्धार्थ व्यंतर आव्यो, तेणें कह्युं के अरे शूलपाणि यक्ष! आ तें शुं कर्युं? तुं नथी जाणतो के ए सिद्धार्थ राजानो पुत्र छे, महोटी समतानो भंडार छे, जो इंद्रमहाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी

रूकशे, ते सांजली जगवाननी शांतमुश देखी वली पण यक्षें पोतानो अपराध खमाव्यो अने प्रनु आगल गीत गान करवा लागो तिहां ते यक्ष समकेत पाम्यो इति ॥ हवे जगवंत पण रात्रिना चार प्रहर कदर्थना पाम्या तेना श्रमें करी काउस्सग्गमांज पाछली रात्रें बे घडी निद्रा आवी गई, तिहां निद्रामां दश स्वप्न प्रजुयें दीठां, ते कहे छे. एक तालपिशाच हण्यो, बीजुं उजलो कोकिला पक्षी अने त्रीजुं पंचवर्ण विचित्र कोकिलानुं जोडुं, सेवा करतुं दीठुं, चोथी फूलनी माला बे दीठी, पांचमुं गायनो वर्ग दीठो, छठुं पद्मसरोवर दीठुं, सातमुं समुद्र जुजायें तख्यो दीठो, आठमुं सूर्य उगतो दीठो, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुष्योत्तर पर्वत दीठो, दशमुं पोते मेरुपर्वतें चढ्या एवुं दीठो, ए दश स्वप्न देखीने जगवंत प्रजातें जाग्या, ते वखतें लोक पण एवुं जाणताहता जे ए साधु रात्रें मरीजशे. तेथी प्रजातना जोवा आव्या तिहां जगवाननो देव महिमा देखीने लोकोयें जगवंतने पूज्या, घणां हर्ष पाम्यां, यक्ष पण नाटकादिक पूजा सेवा करतो हवो, तेथी लोक चिंतववा लागा जे साधुने उपसर्ग करी हवे गीत गान करे छे, पुष्पादिकें करी पूजे छे. त्यां लोके पण स्वामीनो घणो महिमा कस्यो, एवा समयने विषे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पलनामा निमित्तियो ते पण तिहां आव्यो प्रजुने वांद्या, अने कहेवा लागो जे हे स्वामि ! तुमें पाछली रात्रें स्वप्न दीठां तेनुं फल कहुं छुं ॥ हे प्रजु ! तमें जे ताल पिशाच हण्यो, तेथी तमें तरत मोहनीय कर्मने हणशो. वली श्वेत कोकिलापंखी दीठो, तेथी अक्षोज शुक्लध्यान ध्यावशो. पांचवर्णी विचित्र कोकिल पंखीनुं जोडलुं दीठुं, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो वली तमें देवतायें सेवित पद्मसरोवर दीठुं,तेथी चार निकायना देवता तमारी सेवा करशे,वली मेरुपर्वतनी चूलिका उपर

तमे चढ्या एवुं दीठुं, तेथी तमें देवोयें रचित सिंहासने बेशी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो वली सूर्यनुं मंमल दीठुं, तेथी केवलज्ञान पामशो,तथा मानुष्योत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्मां जशकीर्त्तिनुं मंमाण पामशो तथा प्रतापवंत देवनिकाये करी सेवनीय थाशो. पोतानी भुजाबलें समुद्र तर्यो दीठो तेथी तमे संसार रूप समुद्रने तरशो, हे भगवन्! तमें फूलनी मालानुं युगल दीठुं तेनो अर्थ हुं नथी जाणतो माटे तमेज उपकार करीने कहो तेवारें भगवंत मौन छे माटे छद्मस्थावस्थाने विषे बोल्या नहीं,तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो भगवानना मुखमां प्रवेश करीने कहेवा लागो के फूलनी बे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए बे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हुं करीश एवीरीतें फल सांभलीने सर्वलोक भगवानने वंदन करी पोतपोताने स्थानके गया हवे भगवाने निरविघ्न पणे पन्नरदिवस न्यून प्रथम चोमासुं तिहां पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमयपकां चोमासीपारणुकरी तिहांथी विहार कर्यो ए प्रथम चोमासुं ॥१॥ तिहांथी विहार करी मोराकसन्निवेशें उद्यानमांआवी काउस्सग्गें रह्या तिहां भगवाननो महिमाकरवा सारुं सिद्धार्थ व्यंतरो स्वामीना शरीरमां संक्रमीने लोक आगल भूत, भविष्य अने वर्त्तमान संबंधि निमित्त भाखे छे तेथी त्यांनां लोक भगवाननी सेवा करवा लागा हवे ते गाममां अच्छंदक नामा निमित्तियो रहे छे ते भगवाननी इर्ष्या करवा लाग्यो केमके लोक तेने कहेवा लागा के देवार्य सरखो तुं निमित्त जाणतो नथी में काले स्वप्नमां सर्प दीठो ते तेणे कही दीधो तथा हुं जमीने गयो हतो ते कही दीधुं तेवारें ते अच्छंदक नामा निमित्तियो क्रोधकरी भगवाननुं निमित्त जूठुं करवा सारुं हाथमां तृण लइने प्रभुने पुछवा लागो के हे आर्य आ तृण छेदाशे, किंवा नहीं, ते सांभली सिद्धार्थे ना कही तेवारें

ते छेदवा लागो एटलामां इंद्रें अवधियें जोइने जगवंतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आंगली छेदी नाखी तेथी तृणत्रुटयुं नही निमित्तिउं विलखो थयो पछी सिद्धार्थें लोक आगल कह्युं के ए निमित्तिउं चोर छे, कांइ जणोनथी एणें वीराघोष कर्मकरनो दश पलनो कांसानो पात्र चोरीने खजुरीनावृक्ष हेठे माट्यो छे तथा इंद्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनुं मांस एणे खाधुं छे, तेनां अस्थि एना घरनी पछवाडे बोरडीनाजाड नीचें माट्यां छे तथा त्रीजुं दूषण जे एमां छे ते हुं नही कहीश एनी स्त्रीज केहेशे एवुं सांजली लोकें सर्ववातसाची मानी एनी स्त्रीने जइ पूछ्युं, तेवारें ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी जगिनीने जोगवे छे, एवी पोतानी निंदानी वातो प्रसिद्ध थयाथी अच्छंदक लज्जापाम्यो अने गाममां फिट फिट थयो थको प्रजुपासें आवी विनंति करी के तमें त्रैलोक्य पूजनीक छो, हुं अहींआंज सुखे उदर पूरणा करुं छुं ने जीवुं छुं जगवंतें अप्रीति जाणी त्यांथी विहार कर्यो ॥ ॥ हवे जगवान श्रीमहावीर स्वामी एक वर्ष उपर एक महीना सुधीतो इंद्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र सहित रह्या अने ते वार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया हाथमां जोजन करे पण अतिशयना योगथी नागा देखाय नही हवे वस्त्र रहित शीरीतें थया ते कहे छे. जगवाने जेवारें वरसीदान दीधुं तेवारें सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्मण जन्मथी दारिद्रीते परदेश धनकमाववा गयो हतो पण क्यांयें धन पाम्यो नही तेवारे वली जगवाने दीक्षा लीधा पछी जेवो गयो तेवो खाले हाथे पाछो पोतानें घेर फरी आव्यो पण एक कोडी मात्र कमाइ आव्यो नही दारिद्रीज रह्यो तेवारें तेनी स्त्रीयें तेने घणो निर्भंछयो अने कहेवा लागी के अरे निर्जाग्य तुं किहां गयो हतो तुं जिहां गयो हतो तिहां आवोनें आवो दारिद्री रह्यो जेम घडो जिहां जाय

तिहां पाणीजरे तथा कपासीयो जिहां जाय तिहां लोढाय तेम तुं पण जिहां गयो तिहां दरिद्री रह्यो पण दारिद्र्य ताहारो केडो मूकतुं नथी जेम कोइ दरिद्री पुरुष धन कमावानें अर्थे परदेशे जवा तेयार थयो तेवारें ते पुरुषें दारिद्र्यनें कह्युं के ॥ रे दारिद्रवियरकणा, वत्ता इक्क सुणिय, हम देसांतर चल्लिया, तुं घर घरें रह्दिज्ज ॥१॥ एटले हे दारिद्र्य हे विचक्षण, तुं एक म्हारी वात कहुं ते सांभल जे हवे हुं देशांतर जाउं छुं अने तुं घरमांज थिरथइ रहेजे एवां तेना वचन सांभली दारिद्र्य बोल्युं ॥ पडिवन्नो गिरुआ तणो, अविहड जाण सुजाण ॥ पागं तरें ॥ पालिज्जइ सुविहाण ॥ तमे देसांतर चल्लिया, तो अमे आगेवान ॥ १ ॥ अर्थः—हे नाइ सांभलो हुं तो महोटानो विनय मूकुं नही केमके जे उत्तमपुरुष अंगीकार करे ते अविचल जाव ज्जीव अंगीकार करे तेमाटे हे नाइ! जो तमे देशांतर जाशो तो हुं पण आगेवान थइने तमारी साथें आगलथी आगल चालुं छुं. तेम हे निर्भाग्य! ताहारी पठवाडे पण एमज दारिद्र रहे छे तुं हमणा घरमां आव्यो छो पण घरमां तो कांइ पण नथी, खावाने अन्न नथी, पीवाने पाणी नथी, जुखे मरती बेठी छुं, क्यांथी ताहारा वास्ते खावा सारुं लइ आवुं, घरमां तो शाकमां नाख वाने मिरची अने मीठुं पण नथी, मात्र दारिद्रज लहेरो ले छे ॥ यतः ॥ जिणघर भेंस न रीके पाडो, जिणघर बलद न दीसे गाडो ॥ जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र ले हेरि लहके ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— जेना घरमां भेंस सहित पाडो रीकतो न होय, वली जेना घरमां बलद अने गाडु दीसतुं न होय, वली जेनां घरमां स्त्रीना हाथमां चूडी खलकती न होय, तेना घरमां दारिद्र लहेरें लहकतुं जाणवुं. ते माटे तुं घरमां आवीश नही आवीश तो भूखे मरीश अरे दारिद्री हजी हमणा पण तुं नगवान पासें जइश तो कांइक पण मलशे

एवां स्त्रीनां वचन सांजली ते ब्राह्मण, जगवान पासें आव्यो अने बे हाथजोडी हीनस्थितियें थको दीन वचने करी श्रीवीरजगवाननें पगे लागीने विनंति करतो हवो के हे कृपानाथ,! हे परदुःखनंजक! हे परमार्थना करनार! हे महाराजिनना पुत्र! हे दारिद्य रूपवेलडीनां छेदक! तुं महारी मूलथकी विनंति सांजलीने महारो निस्तार कर, आ महारो दारिद्रूप बांधव, महारो सहायी, महारी सार्थे जन्म्यो, महारी सार्थे वध्यो, वली परणवानें समयें पण महारा पहेलां महारी स्त्रीनें एणे परणी, शुं घणुं तमारा आगल कहुं ए दारिद्य महारा शरीरनी बायानी पेरे तथा पोतानी बांधेली कर्मप्रकृतिनी पेरें एक क्षण मात्र पण महारो केड मूकतुं नथी में धन उपार्जन करवा निमित्तें परदेश चालवानें समयें एने घणो घणो वर्ज्यो तो पण ए महारी सार्थेज चाल्यो, में गंगामां स्नान कर्युं तो पण एणे महारी सार्थेज स्नान कर्युं, में यमुना, नर्मदा संबंधि तीर्थकर्यां तो एणे पण महारी सार्थेज तीर्थकर्यां, माटे एना प्रजावथी परदेशमां घरघरने विषे लोकोनी आगल जिक्षा मागती वखत हुं तो सर्वने देखुं परंतु दारिद्य बांधवना प्रतापथी हुं प्रत्यक्ष प्रगट बतां पण मने कोइ पण देखे नही ॥ यडुक्तं ॥ दीसंतिजोग सिद्धा, अंजनसिद्धा य केइ दीसंति ॥ दारिद्दजोग सिद्धा, पासेविठिया न दीसंति ॥ १ ॥ पुनरपि ॥ जोदारिद्यनमस्तुभ्यं, सिद्धोहंतवदर्शनात् ॥ अहंसर्वंप्रपश्यामि, नमांपश्यति कश्चन ॥२॥ ए बे श्लोकोनो जावार्थ कहे बे जे योगसाधीने सिद्धथया तेपण नजरे देखाय बे, वली जे आंखोमां अंजन करी अदृश्य थाय एवा सिद्ध जे होय तेपण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नजरे देखाय, परंतु दारिद्यरूप योगें करीने जे सिद्धथया ते पुरुष जो पासें जजारह्या होय तो पण देखाय नही ते माटे हे दारिद्य ! तजने नमस्कार थाओ जे हुं ताहारा दर्शनथी सिद्धपुरुष

थयो तेथी हुं तो सर्वने देखुं हुं पण मनेंतो कोइ पण देखतो नथी ॥ २ ॥ ए कारण माटे हे स्वामी! ते दारिद्य बांधवना प्रसादथी हुं परदेशने विषे घणो जम्यो, घणो उद्यम कर्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पण, हुं नाग्य हीन तेथी एक फुटी कोडी मात्र पण धन पाम्यो नही. जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घेर पाछो आव्यो तेथी में हजी म्हारा घरमां प्रवेश न कर्यो तेनी पहेलांज तेणे माहारा घरमां प्रवेश कर्यो तेना प्रतापथी अनार्जणी एवी जे म्हारी स्त्री ते क्रोध करी मुसलनेइने म्हारी सन्मुख मने मारवाने दोडी आवी तेवारे में जाण्युंजे मंगलिक करीने मुजने वधावे ले पण तेणेतो पासें आवीने एवां कठोर अने निष्ठुर वचन बोलवा मांड्यां अने कह्युंके हे निर्नाग्य शिरोमणी! अरे जन्मदरिद्री अरे निर्गुणनाथ! अरे ढोलण! हुं तुजने धनविना साक्षात् दारिद्री रूपनें शुंकरुं! तुं परदेशें गयो थको पण कांइ लाव्यो नही. म्हारे पण ताहारा दारिद्य रूप नाइनां सहायथी ॥ यतः ॥ अन्नंनास्त्युदकंनास्ति, गृहे नास्ति गुगंधरी ॥ शाकमध्येलवणंनास्ति, तत्रास्तियजुतुज्यते ॥ १ ॥ नावार्थः— स्त्री कहे ले के ताहारा बांधवना सहायथी म्हाराघरमां अन्नपण खावाने नथी अने पाणीपण पीवाने नथी, जुवार पण नथी शाकमां नाखवानें मीठुं पण नथी एवुं कांइ पण घरमां नथी के जेथी तुजने आदरकरी घरमां बेसाडीने जमाडुं म्हाराघरमां तो एक दारिद्य लहके ले. वली आ ब्राह्मणी कहे ले रे ढोला, धनेकरीने जगतमां मानीता थाय ले, पण धनविना जगतमां कोइ कोइने पूछतुं नथी, यडुक्तं ॥ धनैर्दुष्कुलीनाः कुलीनाजवंति, धनैरेवपापात्पुन र्निस्तरंति ॥ धनिच्यो विशिष्टोन लोकेपिकश्चित् धन प्रार्जयध्वंधनं प्रार्जयध्वं ॥ १ ॥ नावार्थः— धनेकरीने हीणाकुलवालो पण उत्तम कुलवान कहेवाय, वली धनेकरीनें पापथकी निस्तार पामे, धन

वान होय तेज जगतमां महोटो कहेवाय, ते कारण माटे धनउपार्जन करवानो उद्यम पुरुषने श्रेष्ट छे वली धनविना जीवतो थको पण पुरुष मडदा समान छे ॥ यदुक्तं ॥ धनमार्जय काकुस्थ, धनमूलमिदं जगत् ॥ अंतरंनैवपश्यामि, निर्द्धनस्य मृतस्यच ॥ १ ॥ भावार्थः- जेवारें रामचंद्रजीने वनवास थयो तेवारें विचार्युं जे वसिष्ट ऋषिने नमस्कार करीने चालीये तेवारे जिहां कदलीवनमां वसिष्ट ऋषि बेठा छे तिहां जइ रामचंद्रजीयें नमस्कार कर्यो परंतु वसिष्ट ऋषियें नेत्र उघाडीनें सामुं पण जोयुं नही कारण के रामचंद्रजीनी पासें ते वखत धनकांइ पण न हतुं पछी जेवारें लंकाजीतीने चतुरंगिणी सेना लइ धनधान्य सहित पाछा आव्या ते वखत वसिष्ठ ऋषि सात आठ पगलां सामा चाली आव्या तेवारे रामचंद्रजी बोल्या के तेहज हुं रामचंद्र छुं अने आ तेनुं तेज कदलीवन तथा तमे वसिष्टऋषि पण तेना तेज छो परंतु पहेला हुं तमारी पासें आव्यो हतो तेवारें तो तमे नेत्र उघाडीनें सामुं पण जोयुं न हतुं अने हमणा उठीने सात आठ पगलां सामा आव्या तेनुं शुं कारण? तेवारें वसिष्ठजी पूर्वोक्त श्लोक कहेता हवा के हे काकुस्थ,! हे रामचंद्र! एक धननुं उपार्जन करो, आ जगतमां धनेकरीनेंज प्राणी शोभे छे, परंतु निर्धनने अने मडदाने कांइपण अंतर देखातुं नथी, ते कारणे तुं प्रथम आव्यो हतो तेवारे निर्धन हतो तेथी में ताहारा सामुं न जोयुं अने हमणातो तुं सर्व विभूति सहित छो माटे हुं सामो चाली आव्यो छुं एवुं कहीने वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख! धनविना हुं तने शुं करुं? वली कह्युं छे के ॥ पुत्तायसीसायसमंविभत्ता, रीसाय देवाय समंविभत्ता ॥ मुक्कातिरिक्काय समंविभत्ता, सुयादरिद्दाय समंविभत्ता ॥ १ ॥ भावार्थः-पुत्रने शिष्य ए बे बरोबर जाणवा, वली ऋषी अने देव ए बे पण बराबर जाणवा,

वळी मूर्ख अने तिर्यंच ए बे पण समान जाणवा, तेम मूवेला अने दारिद्री ए पण बे सर खाज जाणवा ॥ वळी ते स्त्री कहेवा लागी के अरे नाग्यहीन! श्रीवीरजगवानें वरसीदान आपीने सर्वनां दारिद्र्यदुःखनो विनाश कर्यो, ते वेलायें तुं परदेश गयो ते ताहारे कहेवुं थयुं के जेम द्राख पाकवाने समये कागडानी चांच पाकी आवे तेनी पेरे थयुं अथवा नदी तटे जवासाना फाड तुल्य तुं थयो. अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षतां बतां पण पलाशवृक्षनां पान ढां त्रणज होय माटे रे अनिष्ट! रे पापिष्ट! रे पांडुरपृष्ठ! तुं इहांथी जा इत्यादिक निष्ठुर वचने घणो निर्ब्रत्तीने गलहथो देइ मने घरथी बाहेर काहाड्यो ते कारण माटे ॥ आगेंदारिद्र्य पाछे दारिद्र्य, मज्झे जमणो पासि ॥ पिंभियाणीमुज मारण मांडयो, तेणे हुं आयो नासि ॥ १ ॥ माटें हे स्वामी! मह्ारे आगल पण दारिद्र्य चाले छे, पाछल पण दारिद्र्य चाले छे अने बे बाजुयें पण दारिद्र्य चाले छे एम मह्ारे चारे बाजु दारिद्र्य चाल्युं आवे छे तेथी ब्राह्मणीयें मने मारवा मांड्यो माटे हुं नाशिनें तमारी पासें आव्यो छुं अने में विचार्युं जे श्रीवीर अगम्यगतिवंत छे, जो पण दीक्षा लीधी छे तो पण परमकृपालु छे, माटे मुजने निश्चयथी कां इक पण आपशे एवुं चिंतवीने प्रतीति पूर्वक निरधारकरीने तमारी पासें आव्यो छुं माटे म ह्ारा दारिद्र्यने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो. पण हे स्वामी! एवुं मनमां आणशो नही जे मह्ारा वर्षीदाननें अवसरें सर्वलोक मनवांछित दान पामी गया अने तुं कांइपण केम पा म्यो नही एवो विचार आणशोमां ॥ यतः ॥ स्वामिन्कनकधाराभि, स्त्वयि सर्वत्रवर्षति, अना ग्यछत्रसंछन्ने, मयिनायांतिबिंदवः ॥ १ ॥ नावार्थः—हे स्वामी! तमें कनक रूप धारायें सर्वत्र वरस्या पण मह्ारा मस्तक उपरें अनाग्य रूप छत्र ढंकायुं हतुं तेथी एक बिंदुमात्र पण

म्हारे माथे पडशुं नही तेवारें एवुं विचार्युं जे यतः ॥ रे मन अप्पा खंतिधर, चिंताजाल म पाड ॥ फलतनोळ्ळिज पामीयें, जित्तो लख्यो लिलाड ॥ १ ॥ एम चिंतवी बेसी रह्यो पण हे सामी! एकतो तमारुं दान न पाम्यो ने वली तमारा दाननो व्यतिकर सांजलीनें सामो मुजने म्हारीस्त्रीयें घरथी काहाडी मूक्यो तेमाटे कह्युं बे के ॥ यतः ॥ त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सर्वपल्लविता द्रुमाः ॥ अस्माकमर्कवृक्षाणां, पूर्वपत्रेषु संशयः ॥ १ ॥ भावार्थः– हे सामि! तमारा रूप मेघवर्षतां ढतां सर्वजन रूप वृक्ष नवपल्लवयुक्त थयां अने म्हारा सरखा अर्क वृक्षोनें पूर्वपत्रनो संशय थयो इत्यादि लज्जित पल्लवित वचन सांजलीनें, कृपासागर जगवंत विचारता हवा जे हुं निर्ग्रंथ बुं म्हारी पासें कांइपण नथी अने ब्राह्मणने नही देवाथी इंद्रादिक सर्वलोक समक्ष प्रार्थना जंग होय ते प्रार्थनां जंग कस्याथी लघुता थाय ॥ यतः ॥ तणलहु पं तूल लहु पं, तिणतुस लहुयंच पठणा लहुयं ॥ तत्तोवि सो लहुउ, पठण जंगो कउजेण ॥ १ ॥ भावार्थः– सर्वथकी तृणलघु बे ते थकी तुष लघु बे अने तृणथलां तथा तुष थकी पण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो जंग करवा वालो जे बे तेतो सर्व थकी लघु जाणवो ॥ पुनरपि ॥ परपठणापवत्ति, मा जणणी जणउ एरिसंपुत्तं ॥ उपरोवि मा धरिज्जउ, पठण जंगो कउ जेण ॥ १ ॥ भावार्थः– परपासें प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता तुं जणीश नही अने वली प्रार्थना जंग करनारनें तो उदरने विषे पण धारण करीशमां ॥ पुनरपि ॥ यांतुयांतु वत प्राणाः, अर्थिनिव्यर्थी तांगते ॥ पश्चादपिहिगंतव्यं, कसार्थः पुनरीदृशः ॥ १ ॥ भावार्थः– जाउ रे म्हारा प्राण जे आर्थप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी साथें तमे पण आउ केमके पाछल पण तमने कोइक



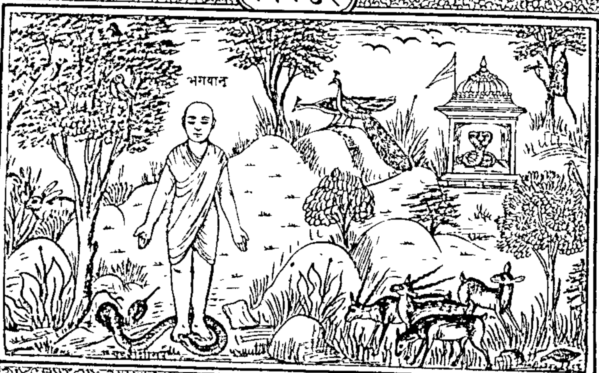

चित्र ३८
भगवान्
देवदूष्यवस्त्र
ब्राह्मण

दिवसें जावुं तो लेजं तो एवो साथ वली तमोने मलवो मुशकील जे माटे हमणाज जाउं ॥१॥ इत्यादिक शिष्टाचार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देव कृपाकरी अरधुं देव दुष्य वस्त्र फाडीनें ब्राह्मणने देता हवा ए विप्रने चीवर दीधाथी बीजा प्राणीउने एवुं जणावता हवा ॥ यतः ॥ जांसंतितां देड्ड धन, इणपरि अवकइ नीर ॥ पितामित्र बांजण नणी, आधो दीधो चीर ॥ १ ॥ नावार्थः—ज्यांसुधी घरमां संपत्ति होय त्यां सुधी धन, चीवर, अन्नादिकनुं दान देवुं, पिताना मित्र ब्राह्मणनें अरधुं चीर आप्याथी श्रीवीर एवुं पूर्वोक्त प्रमाणे जणावता हवा ॥ १ ॥ हवे ते ब्राह्मण अरधुंचीर लइने पोताने घेर गयो तेने चीवर सहित घार णाने समीपें आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ थकी उठीने सन्मुख आवी बे हाथ जोडी ए वीरीते कहेती हवी के हे प्राणनाथ! हे मम जीवना! हे महारा हैयाना हार, हे कांत! सुन्नग हुं तमारी मेवनी पेरें वाटजोती हती अने जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना हुं टलवली रही हती इत्यादिक मीठां मनोहर वचन रचना कथन पूर्वक अपूर्वरीतें घणी प्री तियें स्नान मज्जन करावी नोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उपचार करीनें स्त्री घणो प्रमोद पमाडती हवी तेवार पछी ब्राह्मण ते व स्त्रनी दशीयो बंधाववाने वास्ते तुंनारा पासें गयो तुंनारे पण ते वस्त्र तेवुं अणत्रुटधुं जाणी ने सोमविप्रने कहेवा लागोके हे ब्राह्मण! आ वस्त्रनो बीजो कटको लइ आव्य तो एनें सांध्यां थका ए लाख मूलनुं थाशे तेथी ताहारा अने महारा बेहुना दारिद्रयनो नाश थाशे तेवारें ते विप्र पाछो फरीने लोनें ग्रथतो थतो श्रीवर्द्धमान स्वामी पासें आवतो हवो पण मनमां विचा रवा लागो के हुं वारंवार केवीरीतें याचना करुं, अतिलोन करवो पुरुषनें युक्त नथी अने नग

वान पण एवुं जाणशे जे आ विप्र लोभी छे. एवुं जाणीने लाजनो मार्यो मौन करी रह्यो पण मुखथी मागे नही ॥ यतः ॥ लज्जा वारेइ मुहं, असंपया भणई मागिरे मग्ग ॥ दिन्नं मानकवाडं, देहित्तिमग्गिया वाणी ॥ १ ॥ भावार्थः– लज्जा छे ते मुखने वारती हवी अने असंपदा कहेति हवी के माग्य रे माग्य! पण मानरूप कमाड देवराणा तेथी आपो एवी वाणी मुखथी न निकलती हवी ॥ १ ॥ अने जाण्युं जे क्यांय पण खंभाउपरथी पडी जाय तो उपाडी लइश एवीरीतें जेवारें भगवंतने दीक्षा लीधे एकवर्षने उपर एक मास थयो त्यां सुधी भगवाननी पाछल ते ब्राह्मण चाल्यो पछी एकदिवस ते देवदुष्य भगवाननां खंभा उपरथी वायराना गोटथी उपड्युं ते उत्तरचावालागामनी पासें सुवर्णवालुका नदीनें कांठे बोरडीना वृक्षनां कांटामां जइ पड्युं तेने विप्रे ग्रहण कर्युं. भगवान पण सिंहावलोकन दृष्टियें करी देखता हवा इहां कोइकतो कहे छे के ममत्वें करीनें देखता हवा, कोइक कहे छे के शुभस्थानकें पड्युं के अशुभस्थानकें पड्युं ते जोवाने माटे देखता हवा वली कोइक कहे छे के सहसात्कारे देख्युं, कोइक कहे छे के म्हारी पाछल म्हारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलभभावे थशे के नही थाय एवा कारणथी देखता हवा कंटके लाग्युं तेथी भगवाने विचार्युं जे म्हारी पछवाडे जे साधु स्वसंतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायि कंटकी कलहकारी प्राय असमाधिकारक थाशे मूंभा घणा थाशे अने साधु थोडा थाशे एवुं जाणीनें निर्ममत्वथी ग्रहण न कर्युं. हवे विप्र पोताना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो थको, संपूरण मनोरथवंत थयो थको तुंनारा पासें बे खंड सं धावी तूणावीने वेच्युं तेना लक्ष सोनैया आव्या तेमांथी अर्द्धा तुंनाराने दीधा अने अर्द्धा ब्राह्मणे राख्या तेहुनुं दारिद्र्य गयुं जावज्जीव सुधी सुखी थया आनंदमां रह्या ॥ इति अचेलक

दृष्टांत ॥ ॥ तेवार पछी जगवाने कपडां राख्यां नही ते दिवसथी अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोनां देवदुष्य वस्त्र जावज्जीव रह्यां हतां केटलिक प्रतोमां वचला बावीश तीर्थंकरोनां देवदुष्य जावज्जीव रह्यां कह्यां ने तेथी ते सचेलक जाणवा हवे श्रीमहावीर स्वामी शरणे उपर साडा बारवर्षना छद्मस्थपणे कायाने वोसरावी कांइ शुश्रूषा करे नही एवा थका विचर्या तेमां जे कांइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्यंचना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा बे प्रकारनां उपसर्ग थया तिहां जे नाटक देखाडवां, आलिंगन करवां, इत्यादिक देवादिकोये करेला उपसर्ग ते सर्व अनुलोम उपसर्ग जाणवा अने जे देवादिकोयें जय ब ताव्या, प्रहार कर्या, कूट्या, मार्या एवा उपसर्ग ते सर्व प्रतिलोम उपसर्ग जाणवा ए बन्ने प्रकारना उपसर्ग सर्व पोतानी खुशीथी सहन कर्या पण चारित्रथी लगार मात्र चलायमान थया नही तेमज कोइ उपर रागद्वेष पण लाव्या नही तथा कोइनी पासें दीन वचन पण बोल्या नही तेमज कोइनुं जय पण लाव्या नही एवी रीतें अनेकप्रकारना उपसर्ग सहन कर्या ते कही देखाडे ने ॥ ॥ एकदा जगवान् उत्तर वाचाल सन्निवेशें जातां मार्गे वर्द्धमान गामें आव्या, तिहां एक सुवर्णवालुका, बीजी रुप्यवालुका, ए बे नदीउं आवी, ते उतरी आगल चालतां एक वक्रमार्ग बीजो सरल मार्ग, एवा बे मार्ग आव्या, तिहां लोके निवार्या के पाधरामार्गमां सर्पनो जय ने माटे जाओ नही तो पण जगवंत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गें चंडकोशीया सर्पने प्रतिबोध देवासारुं चाल्या, ते मार्गमां कनक खल नामा वनमां तापसनो आश्रम ने, तिहां एक महा जोरावर पणो झेरीलो चंडकोशीयो सर्प रहे ने. ते चंडकोशिया सर्पने जगवाने देवता कर्यो, तेनी कथा कहे ने. कोइक गामने विषे बे साधु गुरु चेला चोमासुं रह्या हता ते एक दिवसें

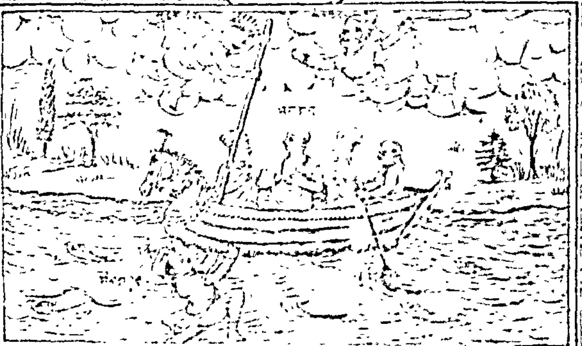
मास , मणना पारणाने अर्थे वे जणा गोचरीयें गया, त्यां वर्षाऋतुने लीधे घणा जीवोनी उत्पत्ति थये छते मार्गमां गुरुना पग नीचें सूक्ष्म मेडकी आवी ते चंपाइ मरण पामी तेवारें चेलायें कह्युं महाराज तमारा पग नीचें मेडकी आवी ते मरण पामी एवुं सांभली गुरु बोल्या घणी मेडकी मरेली पडी छे माटे बीजा कोइनो पग आववाथी मरण पामी हशे तेवारें तिहां ते चेलो मौन रह्यो वली गोचरी आलोवतां शिष्य बोल्यो के मेडकीनो मिछामि दुक्कड द्यो ते सांभली गुरुने रीश चडी अने चेलाने कहेवा लागो जे अरे आ मेडकीतो आगलथीज मरेली हती, मेंतो मारी नथी चेले घणुं कह्युं तो पण मान्युं नहीं तेवारें चेले जाण्युं जे सांजें पडिक्कमणामां आलोयण लेशे गुरुयें पण सांजें पडिक्कमणामां सर्व आलोयण लीधी, पण मेडकीनी आलोयणा न लीधी तेवारें वली पण चेले कह्युं जे महाराज मेडकीनी आलोयणा ल्यो तेवारें पण गुरुयें रीश करीने तेवोज जवाब आप्यो फरी रात्रें संथारानी वेलायें कह्युं के हे महाराज! मेडकीनी आलोयणा ल्यो एवुं सांभलतां गुरुने रीश चडी तेथी रजोहरणनी दांडी लइने मारवा दोड्यो रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाछल दोड्यो अने उपाश्रयना थांभलामां अफडायो तेथी गुरुनुं मस्तक फूटयुं त्यांथी मरण पामी बीजे भवे ज्योतिषी देवता थयो त्यांथी चवीने चंडकोशी नामें तापस थयो तेना पांचसो शिष्य थया परंतु पोतें घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसें राजकुमारने वाडीमांथी फूल लेता देखीने हाथमां फरसी लइ तेमने मारवा दोड्यो तिहां पग लपसीगयो तेथी मार्गमां एक अंध कूवो आव्यो, तेमां पड्यो [illegible] फरसी लागी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेहज आश्रमने विषे चोथानवें चंडकोशीओ [illegible] छे, आश्रममां [illegible]



चित्र ३९

देखे, तेने बाळी नस्म करे ले, घणा तापसोने बाळ्या, बीजा केटलाएक नाशी गया लोकें पण ए मार्गे जवानुं गेडी दीधुं, एककोश प्रमाण नूमिमां रहेला जीवमात्रने बाळी नाखे ले. त्यां ते सर्प कोइने रेवा देतो नथी ते सर्पना बिलउपर नगवंत काउस्सग्गें रह्या, ते देखी सर्पें क्रोध आणीने प्रनुने मंख माय्यो, तेवारें प्रनुना पगमांथी दूध सरखुं लोही मांस नीकल्युं, तेने देखी सर्पे विचार्युं जे हुं जेने साहामुं जोउं, तेने पण बाळी नस्म करुं अने एने तो मंख मार्यो तो पण थोडुं लोइ नीकल्युं माटे ए कोइ महोटो पुरुष ले एम चिंतवीने नगवाननां मुख सामुं जोयुं. तेवारें नगवान् बोल्या के अरे चंमकोशिया ! बूज बूज तुं नथी जाणतो एवुं केतां थकां ते सर्पने विचार उपन्यो जे आवुं रूप में क्यांक दीठुं ले एटलामां मूर्ग आवी गइ अने जाति स्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें पाळो जव दीठो, पत्नी प्रनुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विनति करी के हे करुणासागर ! दुर्गतिरूप कूपथी तमें मुजने उद्धर्यो, पत्नी वैराग्यपामी पन्नर दिवसनुं अन शन करी परोपकारार्थे ते सर्प पोताना बिलमांहे मुख घाली अने आखुं शरीर बाहेर राखीने रह्यो पत्नी ते मार्गे दूध, दहीं, घृतनी वेचनारी आहिरलोक तेणें ते नागराज संतुष्ट थयो एवुं जाणी दूध, दहीं, घृत, शर्करादिकें करी सर्पने पूज्यो तेनी गंधें करी कीडीउ शरीर उपर चढी पत्नी विचार्युं, जे हुं महारा शरीरने फेरवीश तो कीडीयो मरीजशे एवुं जाणी शरीर हलाव्युं नहीं कीडीयें ते सर्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प शुजध्यानें मरण पामीने आठमे देवलोकें देवता थयो. प्रनु तिहांथी विचरता उत्तर वाचाल सन्निवेशें पहोता तिहां नागसेन श्रावकनें घेर परमान्नें पारणुं कर्युं, देवतायें पंचदिव्य प्रगट कर्यां. तिहांथी विहार करीने नगवान श्वेतांबिका नगरीये गया तिहां परदेशीराजायें प्रनुनो महिमा

करवो ॥ तिहांथी विचरता थका नगवान सुरनिपुरनगरनां मार्गमां गंगानदी श्रावी ते उतर
वाने अर्थे घणा लोक सिद्धदत्त खारवानी नावमां बेठा तेनी सार्थे प्रनु पण बेठा एवा
मां घुवड बोल्यो तेनुं शुकन जोइ क्षेमिलनामे निमित्तिउ ते नावमां हतो तेणे कह्युं के हे
लोको आज आपणने मरणांत कष्ट उपजशे परंतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रनावथी जी
वता रहीशुं मरशुं नहीं एवामां नगवंते त्रिपृष्ट वासुदेवना नवमां जे सिंहने विदार्यो हतो
ते सिंह पण नवभ्रमण करीने हमणां नुवनपति देवोमां सुदंष्ट्रनामे नागकुमार देवता थयो ने ते
अवधिज्ञाने प्रनुने जोइ पूर्व वैर संनारी इहां आवीने नाव बूडाववानो उपद्रव करवा लाग्यो
तेवखत नवा उपन्या एवा कंबल अने संबल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक
देवतायें तो नाव बूडती राखी अने बीजा देवतायें पहेला सुदंष्ट्रदेवनी सार्थे लडाइ करी तेमां
सुदंष्ट्र हारीगयो तेथी नगवान सुखें गंगानदी उतर्या हवे ए कंबल संबलनी पूर्वनव संबंधि
कथा कहे छे, मथुरा नगरीमां जिनदास नामा श्रावक रहे छे तेनी साधुदासीनामे स्त्री ते पण
श्राविका छे ते बन्ने जणायें पांच अणुव्रतमां चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग करेलो छे तेथी
दूध दही जे घरमां वापरवा सारुं जोइयें ते एक आहिर पासेथी मूल्य आपीनें वेंचातुं लीये छे
तेने लीधे ते आहिरने अने शेठने मांहोमांहे प्रीति थइ ते आहिर सार्थे लेवड देवडनो संतोष
ऊतऱ्यो, राखेलुं छे हवे एकदिवस ते आहिरने घेर विवाह आव्यो तेवारे आहिरे शेठ पासेंथी
विवाहने माटे केटलिएक चीजो मागी शेठे पण तेने चंद्रवा प्रमुख सर्व उपकरण तेना माग
[illegible]



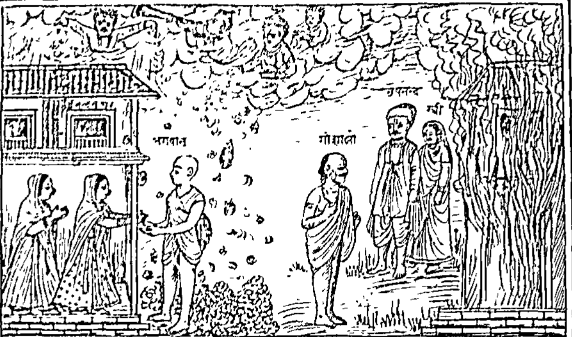
ਚਿਤ੍ਰ ੪੦

व्यो गयो ते यद्यपि शेठने तो राखवानी इछा हती नही तोपण शेठे विचार्युं जे पाछा आ पीश तो ए बीजे क्यांय वेचशे तिहां ए बापडा दुःखी थाशे, बांध्या रहेशे, जार ताणशे, एवुं विचारीनें पोताने घरें राख्या तिहां तेमने पुत्रनी पेरे फासु घास जल प्रमुख खवरावीनें पोष्या कंबल अने संबल एवां बे नाम दीधां हवे शेठ पाखीने दिवसे पोसह करे धर्मचर्चा करे पुस्तक वांचे ते वातो सांभलतां सांभलतां ते बलदीया घणीज रूडी समजण वाला थया एवा भद्रिक परिणामि थया के शेठ जेवारें उपवास करे तेवारे ते पण उपवास करे तृणादिक चारो बिलकुल खाय नही एवीरीतें शुभभावनायें विचरे छे हवे एक दिवस शेठ पोसहमां बेठा हता एटलामां कोइएक शेठनो मित्र आव्यो ते पुष्ट वृषभनुं जोडलुं देखी शेठने पूछ्या विना पोताना रथमां जोडीनें भंभीर वनमां यक्षनी यात्रायें जइ गयो मार्गमां घणा दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो त्रूटी पडी पछी ते लानो आवीने पाछा शेठने घेर बांधी गयो पण हाडकां भांगी गयां तेथी चारो पाणी त्यागी बेठा शेठें पोताना पुत्र जेवा बलदोने दुःखी थयेला देखी घणो विषाद करीने अनशन कराव्युं चार आहारना पच्चखाण करावी न वकार संभलाव्युं ते बलदीया शुभध्याने मरण पामीनें नागकुमार देव थया ते नवा उपन्या थका अवधिज्ञाने उपयोग आप्यो तेथी ए कृत देखी इहां आवीनें भगवानने थतो उपसर्ग मटाड्यो अने भगवान आगल नाटक नाची गीतगान करी पूजा सत्कार करी स्वस्थानकें गया ॥ इति कंबल संबल दृष्टांत ॥ एक दिवसें भगवान् विहार करता गंगा नदी उतरतां सूक्ष्मवेलु मांहे प्रतिबिंबित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश प्रमुख लक्षण थया एवामां पाछ ल्यी कोइ एक पुष्पनामा सामुद्रिकशास्त्रनो जाण, आव्यो तेणे मनमां चिंतव्युं जे आ कोइएक

चक्रवर्त्ती थनारो जीव छे चक्रवर्त्ति विना एवा पग बीजानां न होय ते हमणां एकाकी जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करुं, पछी ते चरणानुसारें तिहां आव्यो अने जगवानने वस्त्ररहित दिगम्बररूपें देखीने विचारवा लागो जें हुं सामुद्रिकशास्त्र फोकट जण्यो हुं जो एवा लक्षणनो धणी जिक्षुकरूपें एकाकी छे तो ए म्हारां पुस्तक खोटां छे पाणीमां बोळवा लायक छे, एम चिंतवी पुस्तकने पाणीमां बोळवा लाग्यो, इंद्रमहाराजें ए वृत्तांत जाण्युं तेवारें तिहां आवीने प्रजुनी सेवा साचवी. पुष्पनिमित्तिया आगळ प्रजुनुं स्वरूप वर्णवी शास्त्र पाणीमां बोळवां न दीधां, पछी जगवंतना गुण ग्राम कही इंद्र स्वस्थानकें गयो, पुष्प पण इंद्र पासेंथी मणि कनकादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानकें गयो, प्रजुयें परोपकारार्थें गंगानदीउतरी विहार कीधो ॥ हवे गंगानदी उतरीने जगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीयें नालंदीनामा पाडामां वणकरनी एटले तंतुवायकनी शाळा छे तेना एकदेशने विषे खूणामां आज्ञा लइने रह्या तिहां प्रथम मास खमण कर्युं अहींआं शरवणग्रामे मंखली पुत्र सुजद्रानो अंगज बहुल ध्वजनी गोशालाने विषे उपन्यो छे तेमाटें तेनुं नाम पण गोशालो राखेलो छे ते अनुक्रमें जमतो जमतो जगवंत पासें आव्यो, जगवाने तिहां चारमासमां चार मास खमण करीने चार पारणा कर्यां तेमां पहेला मास खमणने पारणे प्रजुनें विजयशेठें क्षीरादिक विपुल जोजने पारणुं कराव्युं तिहां देवतायें पंच दिव्य प्रगट कर्या पछी ते सरस क्षीरादिक कूरादिक मोदकादिकनो आहार देखीने गोशालायें विचार्युं जे एने घर घर बोरावे छे माटे हुं पण जूदो जिक्षायें फरीश तो माहारी पण मान्यता थशे, तेवारें जगवंतने जेणे वोहोराव्या तेना पाडोशीने घरे गोशालो पण वहोरवा गयो ते देखी पाडोशी हर्ष पाम्यो जे म्हारें घरे जग

वान् पधाग्या तेथी वळी वेगो थयो पछी वांदीने कह्युं के हे महाराज ! मह्वारे घरे पारणुं करो तेवारें गोशालायें वे हाथ पसाग्या गृहस्थें उनी उनी रसोइ पीरशी अने उंचुं माथुं करी जोवा लाग्यो जे मह्वारे घरे सोनैयानो वर्षाद थाय एम करतां वायस आवी माथे वेगो ते वारें मेढा उपरथी गोशालाना हाथ उपर एक वाश्यें वेवता नाख्यो. ते जोइ शेठें विचार्युं जे पाढोशीने घेर तो सोनैयानो वर्षाद वरश्यो अने मा्हारे घरे तो कोयला वरश्या गोशालाना हाथ बळ्या तिहांथी उदास थइ गोशालो निकळ्यो हवे जगवानने बीजुं पारणुं नंदे पकान्ना दिकनुं कराव्युं, त्रीजे मासखमणे त्रीजुं पारणुं सुनंदे परमान्नादिकें कराव्युं तिहां सर्वत्र पंच दिव्य प्रगट थयां ते जोइ गोशाले मनमां विचार्युं जे एनी पासें सारविद्या छे जे घर घर सोनुं वरसावे छे, ए विद्या हुं पण शीखुं माटे एनी संगत करुं तो शीखुं अने मह्वारी शोना वधे ! एम विचारी गोशालो बोल्यो हे जगवान ! हुं आपनो शिष्य हुं एम कही जगवंत सार्थे फरवा लागो, जगवाने तिहांथी जइ चोथुं पारणुं कोलागसन्निवेशे बहुलनामा ब्राह्मणने घेर केवल खीरना जोजने कर्युं. तिहां पांच दिव्य प्रगट थयां ए बीजुं चोमासुं जाणवुं ॥ २ ॥ पाछलथी गोशाले जगवानने दीठा नही सर्व नगरमां फरी जोयुं तो जगवान मळ्या नही तेवारें सर्व उपक रण ब्राह्मणने आपी मुंडमुंड थइने चाल्यो पछी कोल्लागसन्निवेशे जगवानने देखी बोल्यो के आ पनी दिक्षा मुजने हो हुं आपनो चेलो हुं ए वात जगवाने पण मानी पछी गोशाला सहित जगवान विहार करी एक दिवसें जगवान् स्वर्णखलग्रामें चाल्या, मार्गमां कोइ गोवालीए खीर पकावतां देखी तिहां गोशालो बोल्यो, हे जगवान् ! ए खीर थाशे ते खाइने जइशुं माटे थो डीवार वेसो तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो ए खीरनुं पात्र जांगशे पछी गोशालायें जइ गोवालीयाने

कखुं हांमी फुटशे गोवालीयायें घणा यत्न कराव्या तो पण हांमी फूटी गइ तेवारें गोशालो बो
ल्यो जे थानार होय ते थायज. एवुं बोली हठ पकडी नियतवादीपणुं पडिवज्युं ॥ तिहांथी
नगवान विहार करी ब्राह्मण गाम गया तिहां एक नंद अने बीजो उपनंद ए बे नाइना बे
पाडा छे तेमांथी नगवाने नंदनां पाडामां पारणुं कखुं अने गोशालाने उपनंदने घेर वाशी
अन्न सातदिवसनी घेंस मली तेथी कोपायमान थइने गोशालो बोल्यो जे महारा धर्माचा
र्यना प्रनावथी तहारुं घर बली नस्म थाउ एवुं कहेतांज व्यंतरदेवोयें नगवाननुं महत्त्व रा
खवा माटे तेनुं घेर बाली नाख्युं. हवे त्रीजे चोमासें बे बे मासनी तपस्यायें प्रभु चंपानगरीयें
रह्या ए त्रीजुं चामासुं ॥ ३ ॥ ॥ त्यां छेल्लुं पारणुं करी कोल्लाग सन्निवेशें गया तिहां शून्य
गृहमां काउस्सग्ग रह्या तिहां सिंहो रजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी साथें क्रिडाकरतो
हतो तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो तेवारें तेणे गोशालाने कूट्यो गोशालो प्रभुने कहेवा
लागो जे मने मार आपे छे माटें तमें एने कां वारता नथी ? प्रभु मौन छे तेथी सिद्धार्थ बोल्यो
के आज पछी एवुं हास्यनुं काम म करीश ए काम करीश तो एवांज फल पामीश. तेवार
पछी स्वामी मोराकसन्निवेशें रमणीय नामा उद्यानमां काउस्सग्ग रह्या, त्यां कुंनारशालामां
श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरि घणा शिष्यो साथे रह्या छे ते साधुउने देखी गोशाले पूछ्युं
तमें कोण छो, ते बोल्या अमें साधु छैयें गोशालो बोल्यो तमें क्यां अने महारो धर्माचार्य क्यां ?
तेवारे ते साधु बोल्या जेवो तुं छे, तेवो ताहारो गुरु पण हशे तेवारें गोशालो रुठो थको बो
ल्यो जे महारा धर्माचार्यना तप तेजना प्रनावथी तमारो आश्रम बली नस्म थाउ तेवारे
शिष्य बोल्या एथी कांइ अमे बलता नथी. हवे आश्रमबल्यो नहीं तेवारें गोशाले स्वामीनें प


चित्र ७८
भगवान्
गोशालो
उपनन्द
स्त्री

तुने कह्युं के स्वामी आगल जेवो तमारो प्रभाव हतो तेवो हमणां नथी तप तेज घटी गयुं जणाय ने तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो अरे गोशाला ! ए साधुउने शाप लागे नहीं ए साधु नहीं बले, पढी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरिजिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमां उना ने तेने कुंनारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंद्रने अवधिज्ञान उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवतायें महिमा कर्यो त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो जुउ साधुना आश्रम बले ने महारा गुरु साचा ढे, तेवारें सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के, अरे कुपात्र ! ए तो मुनिचंद्र देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय ने ते सांजली गोशालो विलखो थयो ॥ ते पढी प्रभु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे तेवारें त्यांना लोकोयें हेरु जाणी प्रथम गोशालाने(कूप) खोडामांहे घाल्यो पढी नगवंतने पण नाखवा लागा, एवामां उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयंतिनामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ ने तेणे आवी नगवानने उंलखीने ढोडाव्या. गोशालाने पण ढोडी मूक्यो ॥ तेवार पढी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ट चंपायें चार मासी तप करीने रह्या, तिहां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं ए चोथुं चोमासुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ तिहांथी विहार करी नगवान कयंगलें गया, तिहां माघ मासें जागरणना दिवसें दारिद्र अने स्थविर पांखमिणी नाचें ढे, गाय ने तेनी गोशाले हांसी करी तेथी तेउए गोशालाने मार आप्यो वली प्रभुनो शिष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहांथी विहार करी नगवान सावत्थीनगरीयें आवीने काउस्सग्गें रह्या तिहां पितृदत्तवणिकनी स्त्री श्रीनद्रा ढे तेने पुत्र जीवता नथी, तेवारें शिवदत्त निमित्तियें तेने पूर्वें कह्युं ढे के मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां रांधीने कोइ निक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने जेवारे



तुने कह्युं के स्वामी आगल जेवो तमारो प्रताप हतो तेवो हमणां नथी तप तेज घटी गयुं जणाय ने तेवारें सिद्धार्थ बोल्यो अरे गोशाला ! ए साधुउने शाप लागे नहीं ए साधु नहीं बले, पछी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरिजिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमां रह्या छे तेने कुंभारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंद्रने अवधिज्ञान उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवतायें महिमा कर्यो त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो जुउ साधुना आश्रम बले छे महारा गुरु साचा छे, तेवारें सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के, अरे कुपात्र ! ए तो मुनिचंद्र देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय छे ते सांभली गोशालो विलखो थयो ॥ ते पछी प्रभु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे तेवारें त्यांना लोकोयें हेरु जाणी प्रथम गोशालाने(कूप) खोडामांहे घाल्यो पछी भगवंतने पण नाखवा लागा, एवामां उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयंतिनामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ छे तेणे आवी भगवानने उलखीने छोडाव्या. गोशालाने पण छोडी मूक्यो ॥ तेवार पछी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ट चं पायें चार मासी तप करीने रह्या, तिहां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं ए चोथुं चोमासुं जाणवुं ॥ ४ ॥ ॥ तिहांथी विहार करी भगवान कयंगलें गया, तिहां माघ मासें जागरणना दिवसें दारिद्र अने स्थविर पांखंडिणी नाचें छे, गाय छे तेनी गोशाले हांसी करी तेथी तेउए गोशालाने मार आप्यो वली प्रभुनो शिष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहांथी विहार करी भगवान सावत्थीनगरीयें आवीने काउस्सग्गें रह्या तिहां पितृदत्तवणिकनी स्त्री श्रीभद्रा छे तेने पुत्र जीवता नथी, तेवारें शिवदत्त निमित्तियें तेने पूछें कह्युं छे के मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां रांधीने कोइ भिक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने जेवारे

मृतक पुत्र थयो तेवारें तेनां मांसनी खीर तैयार करी राखी अने अहीं गोशाले सिद्धार्थ व्यंतरने पूछ्युं के मने आज केवुं जोजन मलशे? सिद्धार्थें कह्युं तनें आज मनुष्यनुं मांस मलशे, ते खाइश. पछी सिद्धार्थेनुं वचन खोटुं करवा सारुं गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर वोहोरवा गयो, मनमां विचार्युं के वाणीयाने घेर मांस होयज नही एवुं जाणी तिहां खीर जमी फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कह्युं के हुं खीर जम्यो छुं सिद्धार्थें कह्युं तुं मांस जम्यो छो, तेवारें गोशालायें गलामां आंगली घाली वमन कर्युं, मांहे मांसना कटका दीठा तेवारें गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो परंतु ते स्त्रीयें शरापना जयथी घरनुं बारणुं फेरवी नाख्युं हतुं तेथी गोशालायें घर लाधुं नही तेवारें कहेवा लाग्योजे महारा स्वामीना तप प्रजावथी तमारो पाहाडो बली जस्म थाजो तेथी पाडो बल्यो ॥ इति ॥ तिहांथी जगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गें रह्या तिहां पंथीयोयें जगवानना पग पासें वासदी बाली तो पण जगवान किंचित्र मात्र सरक्या नही जगवानना पग बलता देखीनें गोशालो नाशि गयो ॥ तिहांथी गलगामें वासुदेवनें देहरे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालो आंख्यो काढीने बालकोने बीहीवराववा लाग्यो तिहां लोकोयें मार्यो, कूट्यो वार्यो जगवाननो शिष्य जाणी मूक्यो त्यांथी विहार करीने जगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मंदिरने विषे काउस्सग्गें रह्या तिहां गोशालायें छोकराउने बीवराववा सारुं महोडुं मरडी बताव्युं तेथी छोकरा सर्व जय पामीने पोताना माता पितानी आगल कहेवा लागा तेवारें ते माता पिताउ तिहां आवीने कहेवा लागा के आ चेलाने शुं मारवो एना गुरुनेंज मार आपो एटले फरी चेलाने पाधरे मार्गे चालवानो उपदेश करशे एवुं कहीने जेटलामां जगवानने मारवा

तेयार थया एटलामां बलदेवनी मूर्त्तियें हल लइने लोकोनें वीबराव्या तेवारें सर्वलोक नगवा नने नमवा लागा ॥ पठी तिहांथी विहार करी घणा क्लिष्टकर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थे नग वान लाटदेश गया तिहां अनार्य लोकोयें घणाज उपद्रव कस्या ते प्रनुयें सहन कस्या ॥ ति हांथी पुरणकलश नामें अनार्य गामें जातां थकां नगवाननें मार्गमां बे चोर मल्या ते न गवानने देखी अपशुकन थयां एवुं मानीने खड्ग लइ मारवा दोड्या तेने इंद्र महाराजें वज्रथी मारी नाख्या केटलिक प्रतोमां इंद्रमाहाराजें ते चोरोनां पग थंन्या तेथी ते वृक्षनी पेरें ति हांज उना रह्या एवीरीतें उपसर्ग निवारण थयो ॥ पठी तिहांथी प्रनु चोरांगे आव्या तिहां मांमवे धान रंधातुं देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो तेने लोकोयें चोर जाणी माख्यो, गोशालो रुठो थको बोल्यो जे महारा स्वामीना तप वडें तमारो मंमप बलजो, ते तेमज थयुं तेवार पठी नगवंत हरिवृक्ष नीचें काउस्सग्गें रह्या, तिहां कोइ पंथीयें आगल नूमिका बाली हती तिहां गोशालानां पग बल्या तेवारें त्यांथी गोशालो नागो ॥ तेवार पठी पांचमुं चोमासुं प्रनु नद्रिकानगरीयें रह्या तिहां चोमासी तप प्रनुयें कीधुं ए पांचमुं चोमासुं चार मासी त पनुं जाणवुं ॥ ५ ॥ ॥ पठी पारणुं करी तिहांथी नगवान कुंडिक सन्निवेशें गया त्यां लो कोयें चोर जाणीने पकड्या पठी श्रीपार्श्वनाथजीनी एक विजया बीजी प्रगल्ना ए बे सा ध्वियो परिव्राजिकणी थयेलीउ ने तेमणे ठोडाव्या तिहां गोशालायें जाण्युं जे एनी पठवाडे फरवाथी घणा दुःख सहन करवा पडे ठे एवुं विचारी नगवंतथी जूदो विचस्यो मार्गमां जातां पांचसें चोर मल्या ते मामो मामो कहीने गोशालानी खांध उपर चडी आगल पाठल फरावधा लागा तेथी दुःख पाम्यो वली बीजे पण ज्यां जाय त्यां तोफान करे, तेवारे

लोक गार आपे तेथी गोशालायें विचार्युं जे जगवंत सायें रहेवुंज नथुं ठे एवुं जाणी जगवानने जोगालाग्यो हवे जगवंत विशाला नगरियें गया, तिहां लोहकारनी शालायें काउस्सग्गें रह्या, लोहार पण ठ महीना सुधी आजारी हतो, ते पण ते दिवसें साजो थयो ठे, तेथी लोह घडवानां उपकरण लइने आव्यो, प्रजुने मुंमा देखी अपमंगलिक जाणी घण लइने मारवा उठ्यो, एटलामां इंईं अवधिज्ञानथी जाणी त्यां आवी लोहारने निवार्यो कोइक स्थानकें इंइमहाराजें लोहारने तेहज घणथी मारी नाख्यो एम स्पष्ट लखेलुं ठे पठी तिहांथी जगवान ग्रामाकसंन्निवेशे आव्या तिहां वनमांहे बिजेलक यक्षें महिमा कर्यो त्यांथी निकल्या थका शालिशीर्षग्रामनी बाहेर आवी काउस्सग्गें रह्या ते वखतें माघ मासनी ऋतु हती तेमां अत्यंत टाहाड पडे ठे एवा वखतमां जगवानें शीत उपसर्ग सहन कर्यो ते कहे ठे. त्रिपृष्ठ वासुदेवना जवमां जगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक जवच्रमती थकी ते वखत कटपूत नामा व्यंतरी थयेली ठे जगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो तेथी तापसणीनुं रूप करी पोतानी जटामांहे पाणी जरीने परमेश्वरनां शरीर उपर ठांटयुं घणो कठण शीत उपसर्ग कर्यो एकतो शीयालानी ऋतु हती तेमां वली व्यंतरियें मेघवृष्टि करी, घणो ठंमो वायरो विकूर्व्यो एवा एवा विकट उपसर्ग कर्या ए सर्व प्रमाण विनानां पूर्वकृतकर्म प्रजुनां हतां ते आहीं आवी नड्यां तेने कठण उपसर्ग सहन करीनें दूर कर्या पठी व्यंतरिनां उपसर्गथी प्रजु अमग रह्या एवा धैर्यवंत प्रजुने जाणी पोतानो अपराध खमावीने व्यंतरि स्वस्थानकें गइ. हवे तिहां शीतवेदना सहन करतां थकां जगवंतने ठठ्ठें तपें करी यथार्थ लोकावधिज्ञान उपन्युं ॥ त्यांथी जगवाने फरी उठुं चोमासुं जद्रिका नगरीयें कर्युं तिहां चार महीना

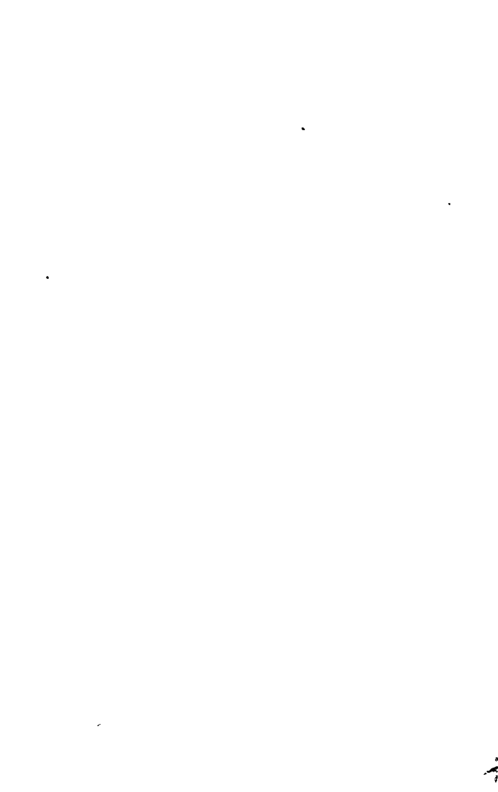
सुधी अनेक प्रकारना कुत्सल अभिग्रह कर्या ए नवुं चोमासुं जाणवुं ॥ ६ ॥ ॥ इहां ठ म
हीना बाहेर नटकीनें गोशालो पण फरी आवी प्रभुने मल्यो हवे ए चोमासुं पुरुं थया
पत्नी शेषकाल आठ महीना सुधी नगवान मगधदेशमां विचर्या ते आठ महीनामां नगवानने
कोइ पण उपसर्ग थयो नही तेवार पत्नी सातमो चोमासो आलंनिका नगरीनी बाहिर देव
कुलें चारमासी तप करीनें रह्या ए सातमुं चोमासुं ॥७॥ ॥ तिहां गोशालायें बलदेवनी प्रति
मानां मुखमां लिंग घस्युं ते लोकें दीठुं तेवारें गोशालाने मार आप्यो कोइक प्रतमां बलदेवनी
मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजारायें मार आपी एम पण लखेलुं ठे तिहांथी
विहार करी मर्द्दनग्रामे वासुदेवने देहेरे तेमज गोशालायें मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह कर्युं तिहां पण
मार खाधो पत्नी प्रभु उन्नागगामे जतां रस्तामां कोइएक नवपरिणीतवधूने तेडी जाय ठे तेमां
वरनां दांत बाहार निकलेला महोटा हता अने वहु कांणी हती ते जोइ गोशालो हसीने
बोल्यो के आ तो देवें सरखी जोड मेलवी आपी ठे तेणे गोशालानें मार आपीनें वंशजालमां
नाखी दीधो ॥ आ ठेकाणे कोइक कूटपूतनानो उपसर्ग लखे ठे एकदिन विचरता थका नग
वान पुरिमताल नगरनी बाहेर शकटमुख उद्यानमां कायस्सग्गे रह्या ते वखत ते नगरनो व
ग्गुर नामा शेठ तेनी सुनद्रा नामे जार्या ते बेहु जणे पुत्र थवा सारुं श्रीमल्लीनाथजीनी मा
नता करी हती ते जेवारें पुत्र थयो तेवारे उद्यानमां श्रीमल्लीनाथजीनुं नवुं मंदिर करावीने
तिहां नित्य पूजा करे ठे हवे जे वखत शेठ स्त्रीसहित पूजा करवा आव्यो ठे तेवखत नगवाननी
आगल इंद्रमहाराज बेठा ठे तेणे नगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कह्युं के हे शेठ! जेनी
तुं पूजा करे ठे ते हुं तुजने प्रत्यक्ष देखाडुं एवुं कही शेठने तेडी नगवानने पगे लगाड्यो शेठें

करी सहित नगवानने पूजीनें पछी श्रीमल्लीनाथजीनी पूजा करी तेवार पछी आठ मुं चोमासुं नगवानें राजगृही नगरीमां कर्युं तिहां चार मास तप कर्युं पछी चोमासी तपनुं बारणे पारणुं करीने प्रनु अनार्यदेशमां विचरवा गया ने ए आठमुं चोमासुं जाणवुं ॥ ७ ॥ हवे अनार्यदेशमां विचरतां थकां नगवानें घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कर्या ने अने न वमुं चोमासुं पण तिहां अनार्यदेशमांज कर्युं ते वली चारमासी तप सहित कर्युं वली तिहां रहेवानें जग्या पण मली नही तेथी विचरताज रह्या ने ए नवमुं चोमासुं जाणवुं ॥ ॥ ए ॥ वली पाछल पण बे महिना तिहांज अनार्यदेशमां तप सहित विचर्या ते पण आहार विनानुं बें मासी तप थयुं ॥ पछी अनार्यदेशमांथी विहार करीनें सिद्धार्थगामथी कूर्मगामें जतां मार्गमां एक तलनुं फाड उनुं देखीनें गोशाले नगवानने पूछ्युं के आ थंन थाशे के नही थाय नगवानें कह्युं ए तिलनां फूल सात ने तेना जीव मरण पामीने एक सांकलीमां शींगमां तलपणे उपजशे ते सांनली गोशाले नगवाननुं वचन जुठुं करवा सारुं ते फाडने उखेडीने फेंकी दीधुं तेवारें निकट रहेला व्यंतर देवतायें चिंतव्युं जे नगवाननुं वचन जुठुं म थाजो एवुं जाणी वर्षाद कर्यो पछी गायना खुरथी ते तलनुं फाड चंपाणुं तेथी धरतीमां पेठुं स्थिर थयुं अने वर्षादना योगें पाछुं उनुं थयुं ॥ हवे नगवान कूर्मगाम गया तिहां एक वेश्यायन नामा ता पस ने तेनुं नाम वेश्यायन केम पडयुं ते कथा कहे ने. राजगृही नगरी अने चंपानगरी ए बेनी वचमां गुबर नामा एक गाम ने तेमां कोशंबी नामे एक कुटुंबी रहे ने हवे ते गुबर गामनी पासें वली एक बीजुं गाम ने ते गामनी बाहेर कोइक राजानी फोज आवी पडी तेथी गामना लोक सर्वे नाशी गया तेमां एक स्त्री पोताना पुत्र सहित [illegible]


चित्र ४२
सिद्धार्थ व्यंतर
गोशालो
भगवान्
वैश्यायन तापस

मार्गमां चोर लोकोयें पकडी लीधी अने वालक धूर्वरगामने वाहेर पड्यो रह्यो तेने कोशंवी नामा
कुटुंवीयें वाहेर जमतो देखीने उपाडी लीधो ते कुटुंवीने पुत्र हतो नही माटे तेने पुत्रनी पेरे रा
खीने मह्योटो कर्यो अने ते छोकरानी माताने चोर लोकोये जइ चंपानगरीमां कोइ वेश्यानी पा
से वेची तेथी ते वेश्यानो धंधो करवा लागी पछी अनुक्रमें ते छोकरो जेवारे मह्योटो थयो तेवारे
एक दिवसें चंपानगरीमां व्यापार करवानें अर्थे आव्यो तिहां पोतानी माता जे वेश्यानो धंधो करे
छे तेनी सायें अजाण पणे जोगजोगववा लाग्यो एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय वाछडानुं रूप
करीनें रस्तामां आवी वेठी एटलामां ते छोकरो पण वेश्यानें घेर जाय छे तेणे रस्तामां वाछडानां
पूंछ उपर पगदीधो तेवारे वाछडो वोल्यो जूउ माताजी आ महारा पूंछ उपर पग आपीनें चाल्यो
जाय छे पण रस्तो देखतो नथी तेवारें गाय वोली के हे वेटा! तुं एनुं नाम लइश नही एतो
पोतानी सगी माता सायें जोग करतां पण कांइ डरतो नथी तो वली ताहारूं शुं सांजलशे?
ए वात सांजली छोकरो चमक्यो पछी सर्वहकीगत कुलदेवीयें कही तेथी सांजलीने तापस
थयो लोकोये तेनुं वेश्यायन ऋषि एवुं नाम आप्युं ते फाडमां उंधे मुखे लटकतो नीचे अग्नि
कुंड कर्यो छे तेमां तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे एवामां तिहांथी जगवान चाल्या जाय छे
पछवाडे गोशालो पण चाल्यो जाय छे ते वखत वेश्यायन पोतानी जटाजूटमांथी जूंउ निक
लीने जमीन उपर पडी गयेली छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामां मूके छे ते जोइने
गोशालो वोल्यो अरें तुंतो निष्केवल जूंनोज घर छो के मुनिछो? एवुं हास्यनुं वचन त्रणचार
वोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध चड्यो तेवारे गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी ते जोइ जग
वानने करुणा आवी तेवारे जगवाने तेने साहामी सीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो वच्यो नही

तपार्थि पण नगवाननो प्रताप जाणी नगवानें समस्या करी गोशालायें नगवानने पूछ्युं के तेजोलेश्या केम थाय थाय तेनो उपाय दखावो तेवारें नगवान बोल्या के नेजानी नपस्या करे पारणे अडद सहीने पाणी एक मुठी अडदना बाकुला लाइने नेना उपर एक पसलीनर उष्ण पाणी पीवे, सूर्य साहामो ऊनो रहे, एरीने ६ महीना सुधी करे तो केवट तेजोलेश्या पुरुषनें उपजे श्रावी वेदनाएक कहे डे सिद्धार्थ व्यंतरे ए विधि कह्यो ने. गोशाले पण ए सामान्य विधि धारण करी लीधो ॥ हवे नगवान कूर्मगामथी सिद्धार्थपुर आवतां त्यामां पूर्वे कहेलुं तलना छोडने अंगेनुं वृत्तांत हेरी तेने गोशाले दीठुं नेमां मानपुंज तल दीठा तेवारे सर्व सत्य मानीने गोशाले विचार्युं जे थवा वालुं होय ते जरुर थाय एवीरीतें मानीलइने दृढनिश्चय वादी थयो ए मन निरधार करी लीधो तेवार पठी गोशालो जगवानथी जूदो रह्यो अने सा वठीनगरीयें जइ तेजोलेश्या साधि तेपण सिद्ध थइ. तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टांग नि मित्त सीख्यो ते जिन नही एटले तीर्थंकर नहतो तोपण लोकोने कहे हुं तीर्थंकर छुं एवीरीतें तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको जगवानथी न्यारो सा वठी नगरीयें फरे डे ॥ एवामां जगवान पण विचरता विचरता दशमुं चोमासुं सावठी नग रीयें आवीने रह्या अने तिहां अनेक प्रकारनां तप कर्यां ए दशमुं चोमासुं जाणवुं ॥ १० ॥ हवे नगवान चोमासुं पुरुं कर्या पठी विचित्र तपें विचरता थका ॥ यकंच ॥ दृढनूमि बहु मिला, पेढालु उज्जाणस्सो जयवं ॥ पोलास चेश्यंमि, ठिएगराय महापडिमं ॥ १ ॥ स क्कोइव देवराया, सनागर्ज नणइ हरिसीनि वयणं ॥ तिन्निविलोग समत्था, जिणवीरं मणं चले उं ॥ ॥ ॥ सामाणिय संवन्नं, देवो सक्कस्सनो यमरिसेण ॥ श्रह श्रागर्ज तुरंतो, मि




चित्र ४३
भगवानने सगमो देवता उपसर्ग करेछे

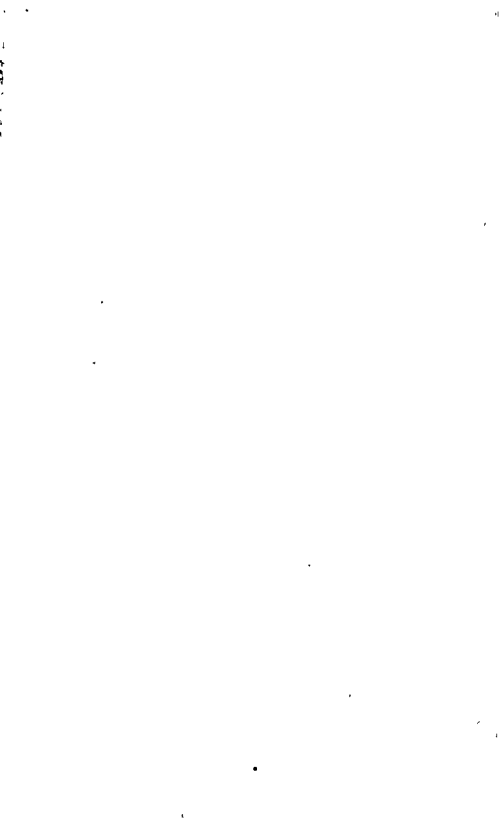
गतिहि पडिनिविठो ॥ २ ॥ ॥ हवे जगवान दृढ एटले कठणजूमिने विषे वडुम्लेछ जिहां
वसे ने एवा म्लेछना देशमां गया तिहां जगवानने कुतरा प्रमुखें करड्या ने एवा बीजा पण
अनेक प्रकारना कठण उपसर्ग थया ने ते सर्व सहन कर्या पढी एकदिवस जगवान पेढाल
नामा ग्रामना उद्यानमां पोलास नामा कोइएक देवनो चैत्य ने तेने विषे अष्ठमतपें सहित
एक रात्रि महाप्रतिमायें रह्या ने एवामां शक्रेंड देवताउनो राजा ते पोतानी सजाने विषे रह्यो
थको जगवानना धीरपणानी प्रशंसा करे ने के जो त्रणलोक नेगा थाय तोपण श्रीवीरप्रजुने
चलाववाने समर्थ थाय नही एवुं प्रजुनुं सत्व ने एवुं इंड्महाराजनुं वचन सर्व देवतायें
सत्य करी मान्युं परंतु एक संगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अजव्यजातिनो ने तेणे
अमर्ष आणीने विचार्युं जे मनुष्यने चलाववुं मगाववुं एकांइ महोटी वात नथी एवुं चिं
तवी इंड्महाराज पासें बोल्यो के हुं एक क्षणवारमां चलावी आवुं एवुं कही इंड्नां वचन
अणमानतो थको चलाववानी प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रजु पासें आव्यो तेणे आवीने एक
रात्रिमां महोटा वीश उपसर्ग प्रजुने कर्या तिहां प्रथमतो धूल उडावी धूलनो वरसाद क
रीने प्रजुनां श्वासोश्वास रुंध्या, पढी बीजो वज्रना जेवां मुखवाली कीडीयो विकूर्वीने प्र
जुना शरीरने चुंटाव्युं करडाव्युं चालणी जेवुं शरीर कर्युं, पढी त्रीजुं वज्रना जेवा मुखवालां
मांस मछर विकूर्वीने प्रजुना शरीरने करडाव्युं, चोथुं घीमेल कीडीयो बनावीने चुंटाव्युं,
पांचमुं वांछी बनावीने शरीरने करडाव्युं, ढतुं सर्पनां रूप करीने मसाव्युं, सातमुं नोली
यानां रूपबनावीने मुख अने नखथी शरीरने विदारण कराव्युं, आठमुं उंदरोनां रूप बनावीने
शरीरने करडाव्युं, नवमुं हाथी अने हाथीणना रूप करीने सुंढथी उंचा उगाल्या, दशमुं दांत

अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरनें कचराव्युं, अगीआरमुं पिशाचोनां रूप बनावीने अट्टहास्य करी बीवराव्या, बारमुं सिंहनुं रूप करी नख मार्या, शरीर फाड्युं, तेरमुं सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के हे पुत्र! अमे ताहारां माता पिता आव्यां छैयें माटे तुं दुःख देखीशमां अमारी साथे आव अमे तुने सुख करी आपीशुं, चौदमुं तीक्ष्ण चांच वालां पंखीनां रूप विकूर्वीने प्रभुना कान अने मुखनुं मांस खवराव्युं, पन्नरमुं चांमालनां रूप करीनें तर्जना करी, सोलमुं लाकडा खंधा वाली करीनें बेहु पग उपर हांमी चडावी उपर खीर रांधी, अग्निथी बाल्या. सत्तरमुं प्रचंम वायरे करी भगवंतने उंचा उछालीने पाछा नीचे जमीन उपर पटकी दीधा, अढारमुं कलिकाल वायरो विकूर्वीने जे वायरो भगवानने चक्रनी पेरे भमाडे तेरीतें भमाड्या, ते पछी उंगणीशमुं हजार भार प्रमाण लोखंमनो गोलो बनावीने भगवानना मस्तक उपर नाख्यो तेणे करी भगवान केडसुधी केटलिक प्रतोमां ढींचण सुधी भूमिमांहे पेसी गया ए उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान होय तो पण चूरण थइ जाय पण एतो तीर्थंकरनुं शरीर छे तेने कांइ पण थयुं नही, वीशमुं रातनी वखतें दिवस करी देखाड्यो अने संगमो बोल्यो के हे देवार्य! प्रभात थयुं माटे हवे विहार करो, गोचरी जाउ ते वखत भगवाने अवधिज्ञाने करी रात्रि जाणीने विचार्युं जे ए देवकृत चरित्र छे वली संगमाये देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनानां रूप करी हाव भाव देखाडी अनुकूल उपसर्ग कर्या अने वली बोल्यो के तमोने जोइये ते वर मागो जो स्वर्ग मागो तो स्वर्ग आपुं एवुं कह्युं तो पण कोइ रीतें भगवान लगारमात्र भम्या नही चलायमान थया नही एम महाविकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमां संगमे कर्या पछी जेवारे भगवान

गाममां गोचरी करवा जाय तेवारे ते घरनो आहार अशुद्ध करी आपे जे भगवानने लेवो
कल्पे नही एवो करी नाखे तथा दरदमेश गाममांथी चोरी करीने ते चीज भगवान आगळ
मूकी जाय तेथी लोक भगवानने मार आपे कलंक चडावे वळी भगवाननो चेलो बनीने
गाममां कोइकोइ लोकोनां छिद्र जोता जाय जेवारें लोक पूछे के तुं शावास्ते आंही आडो अ
वळुं जोयां करे छे तेवारे तेने कहेके महारो गुरु रात्रिये चोरी करवा आवशे ते माटे हुं आग
ळथी जोइ राखुं छुं ते सांभळी लोक आवीने भगवाननें मार आपे एवो उपसर्ग थयेलो जो
इने भगवाने अभिग्रह कर्यो के जिहांसुधी आ उपसर्ग मने थाय छे तिहांसुधी महारे आहार
पाणी लेवुं नही वळी ते संगमो केटलिएक गामनी स्त्रीयो भगवान साथे मळती छे एवुं लोक
माने तेवुं करी देखाडे तेवुं छतां पण तिहां भगवान एकांत स्थाने रह्या एवा छ महीनासुधी
उपसर्ग कर्या तो पण इंद्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वार्यो नही केमके इंद्रमहाराजें एवुं
विचार्युं जे हुं एनें वारीश तो ए कहेशे के हुं तो भगवंतनें चलायमान करत पण शुं करुं के
तमे मने वर्जना करी तेथी लाचार थयो एवो अपवाद टाळवा सारुं इंद्रें तेने कांइपण कह्युं
नही तोपण जिहांसुधी एणे उपद्रव कर्या तिहांसुधी इंद्रें श्वास लीधो नही, मनमां घणोज
उदास रह्यो, बीजां पण सर्व देव देवीयो शोकमां निस्तेज थकां बेशी रह्यां एम करतां
छ महीनाने अंते ते संगमो देवता पोतानी मेळे पोतेज हार खाइनें बोल्यो के हे आर्य!
तमे सुखेथी गोचरी करो हुं हवे बिलकुल उपसर्ग करीश नही तेवारें भगवाने कह्युं हुं
महारी इछायें गोचरी जइश एवी रीतें हारीने संगमो स्वर्गमां गयो, इंद्रमहाराजें तेनुं मुख
पण जोयुं नही लाकडीयोथी कुंटावी मार मराव्योनें स्वर्गमांथी काहाडी मूक्यो, ते ति

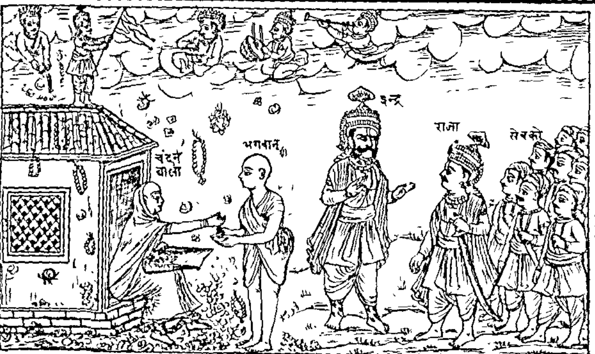
हांथी निकलीने पोतानी देवांगनाउ सार्थे लइने मेरुपर्वतनी चूलिकायें आवी रह्यो, एनुं एक सागरोपमनुं आयुष्य छे, अने ए अनव्यजीवनी जाति छे एवुं कहेवाय छे. एम प्रज्ञुनें दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया पछी प्रज्ञुयें छमासी तपनुं पारणुं वज्रगाममां गोपालकनें घरे खीरनां जोजने कखुं. घणी प्रतोमां गोकुलने विषे वत्सपालीनामें वृद्ध स्त्रीयें परमान्ने पारणुं कराव्युं कखुं छे तिहां पांचदिव्य प्रगट थयां. वली चोसठ इंडादिकोयें तथा देवोये आवीने प्रज्ञुने सुखशाता पूछी सावछी नगरीयें शक्रेंडे प्रतिमामां प्रवेश करीनें प्रज्ञुने वांद्या लोकोये देखीनें जगवाननो महिमा कस्यो ॥ हवे अगीआरमुं चोमासुं जगवाने विशाला नगरीमां कखुं, तिहां जीर्णशेठें जावना जावी के जगवान जातपाणीनो लाज देजो एवीरीतें चार महीनां पर्यंत जावना जावी तोपण मिथ्यात्वी पूरणशेठें दासीने हाथे अडदना वाकुला आप्या ते लइने जगवाने तेने घेर पारणुं कखुं तिहां पंचदिव्य प्रगट थयां तेवारें लोक सर्व पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या अने जीर्णशेठें जाणुं जे हुं जाग्यहीण तेथी महारे एवो योग किहांथी मले, एम पश्चताप करतो रह्यो पछी केटलेक दिवसे केवली जगवान ते गाममां पधास्या तेवारें राजा प्रमुखें पूछ्युं के महारा नगरमां जाग्यशाली कोण छे? केवलीबोल्या के जीर्णशेठ जाग्यशाली छे राजायें पुछ्युं जगवानने दानतो पूरणशेठें दीधुं छे? केवली बोल्या एणे जावविना दान दीधुं छे माटे तेने ड्व्यथी लाज थयो छे अने जीर्णशेठें जावथी दान दीधुं छे माटे बारमो देवलोकनुं आयुष्य बांध्युं छे ए अग्यारमुं चोमासुं कखुं ॥ ॥ ११ ॥ हवे जगवान तिहांथी विहार करीने सुसमारपुरे प्रतिमास्थित काउस्सग्गें रह्या तेव खनें चमरेंड्नुं सौधर्म देवलोकें जावुं थयुं ते कहे छे


चित्र ४४
भगवान



आगल दश अछेरानी वातमां सविस्तर आवी गयो ने माटे आहीं लख्यो नथी. तेवार पछी
अनुक्रमें चंदनबालायें प्रभुने पडिलाभ्या ने एटले नगवंतें कांइक कर्म शेष रह्यां जाणी कोशं
बीनगरीने विषे पोष वदि एकमना दिवसें पोतानी इछायी एवो अनिग्रह कीधो ने के १ द्रव्य
थकी सूपडानां खूणामां अडदनां बाकला राखेला होय, २ क्षेत्रथी एक पग घरनी मेलीनी
मांहेली कोरे होय अने एक पग मेलीनी बाहेर रह्यो होय ३ कालथी सर्व निक्षुक लोक
निक्षा मागी जाय ते पछी ४ नावथी राजानी पुत्रीहोय परंतु दासपणुं पामेली होय, ५ माथुं
मुंमेलुं होय, ६ जेनां पगमां बेडीयो पडेली होय, ७ अठम तपकर्युं होय ते वली रुदन करती
बेठी होय एवी स्त्री जो बे पोहोर दिवस चडे मध्यान्ह पछी निक्षा आपे तो महारे पारणुं क
रवुं एवो अनिग्रह करीने श्रीवीरजगवान् गोचरियें नित्य भ्रमण करे पण क्यांय एवो योग बने
नही त्यां राजानां मंत्रीश्वर प्रमुखें अनेक उपाय कर्या पण कोइरीतें प्रनुनो अनिग्रह पूर्ण
थाय नही एवा अवसरमां चंपानगरीनो दधिवाहन नामें राजा तेनी धारणी नामा स्त्रीनी व
सुमतिनामा पुत्री ने तेनुं अपर नाम चंदनबाला ने हवे कोशंबी नगरीनो संतानिक नामें राजा
ने तेणें राज्यविरोधें लशकर लेइ चंपानगरीने लूटी तेवारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने
धारणी राणी तथा चंदना ए बे कोइ एक संतानिक राजानो पायदलसेवक हतो तेना हाथमां
आवी तेणे धारणीने कह्युं के तने हुं महारी स्त्री करीश ते सांनली धारणी राणी तो पोतानी
जीन चांपीने मरण पामी पछी सुजटें विचार्युं जे रखेने आ छोकरी पण मरी जाय एवुं
जाणी तेने विश्वास आपीने कोशंबी नगरीनां चोवटा मांहे ते चंदनबालानें वेचवा गयो तेने
वेश्या लेवा आवी तेवारे चंदनायें पूछ्युं तमारो शो आचार ने वेश्या बोली उत्तम पुरुष साथे

प्रीति करती नथी मन मान्यां भोजन करवां, ए अमारो आचार छे. तेवारें चंदना बोली ए म हाराथी न थाय तथापि ते वेश्यायें बलात्कारें लेवा मांडी तेवारें शासन देवीयें वेश्याना कान अने नाक छेदी नाख्यां वेश्या नाशी गइ पछी धनावहनामे शेठ जिनधर्मी हतो तेणे मूल्य आपी चंदनाने वेचाती लइ पोताने घेर तेडी आव्यो अने चंदना एवुं नाम आपी पुत्री पणे थापी, पण चंदनानुं सु रूप देखी धनावहशेठनी मूलानामा वांजणी कुहाड स्त्री छे ते मनमां द्वेष राखवा लागी के रखेने ए माहारी शोक थाय! तेमाटे प्रथमथीज कांइ उपाय करुं तो सारुं पछी एक दिवस शेठना पग पखालतां चंदनाना माथानी वेणी धरतीयें पडी तेने शेठें उपाडी उंचीकरी ते पेहेली दुराचार मूला स्त्रीयें दीठी अने मनमां चिंतववा लागी जे शेठ एनी वेणीयें मोह्यो देखाय छे मुखथी तो पुत्री कहे छे पण एने स्त्री करी राखशे एमां संदेह नथी केमके हुं हवे बुढी थइ छुं अने ए स्वरूप वती छे. पछी एक दिवसें शेठ कोइएक गामें गया पछवाडे मूलायें चंदनानुं मस्तक मूंमावी हाथ पगमां बेडी घाली धूसानुं वस्त्र पहेरावीने गणा प्रमुखना ओरडामां बेसाडी पोते घरने बारणें तालुं आपी पोतानें पीयरें जती रही हवे चंदना तो ओरडामां बेठी नवकार गणे छे पोताना करेला कर्मने निंदे छे एम करतां चोथे दिवसें शेठ फरी पोताने घेर आव्यो तिहां चंदनबालाने दीठी नही, तेवारे पडोशी लोकने पूछवा लाग्यो पण पहेली कजीयाखोर मूलानी बीकथी कोइ जवाब आपे नही पछी एक डोकरीयें सर्व वात कही तेवारें शेठें तालुं उघाडी ओर डामांथी बाहेर काहाडी मेडीमां बेसाडीने कह्युं के हुं लोढाग्ने बोलावी लावुं छुं ते ताहारी बेडीयो उपाडशे चंदनायें कह्युं हुं भूखें मरुं छुं तेवारें शेठें अडदना बाकला एक सूपडाने खूणे [illegible]


चित्र ४५
इन्द्र
राजा
सेवको
भगवान्
चंदन
बाला

बेडी काढवा माटे लोहारने तेडी आवुं हुं एम कही धनवाह पूर्वला अवस्था साकृत ठेवी बेगाडी पोते लोहारने तेडवा गयो पळवाडे शुद्धसम्यक्त्वनी धरनारी चंदना मनी चिंतवे छे जे कोइ अतिथि आवे तो तेने ए बोकळानी आपुं एटलामां मध्यान्ह वीत्या पछी प्रभु पधा र्या तेने देखी चंदनबाळा हर्षवंत थइ थकी बाकळा देवा लागी परंतु प्रभुयें लीधेला अभिग्र हना चार भेद तो मळ्या दीठा पण पांचमुं रुदन दीठुं नहीं तेथी पाछा वळ्या तेवारें चंदना दुःख धरती थकी रुदन करवा लागी जे साधु पण म्हारा हाथनो आहार लेता नथी माटे मने धिक्कार छे पछी भगवंते रुदन करती देखी पोतानो संपूर्ण अभिग्रह थयो जाणी ते अ डदना बाकळा लीधा तिहां देवतायें पंचदिव्य प्रगट कर्यां बेडी भांगीने नेउर थयां मस्तकें वेणी पाछी आवी इंद्रमहाराज आव्या, चंदनानी मातानी बहेन मृगावती ते चंदनानी मासी थाय तेना घरथकी संतानिकनामे राजा धन लेवा लाग्यो तेने इंद्रे वार्यो अने कह्युं के चंद नाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काममां आवशे, चंदनायें कह्युं ए धन धनावह शेठनें स्वाधीन करो तेने आपीने इंद्र बोल्यो भगवाननी प्रथम साधवी ए चंदना थाशे एम कही इंद्र स्वस्थानकें गयो आर्द्रांत्रा पांचदिवसें उणा छम्मासी तपनुं प्रभुने पारणुं थयुं वळी कोइक ग्रंथमां एम कह्युं छे के वसुधारानी वृष्टि आपणे घरे थइ एवुं सांभळीने मूळा पोताना पिय रथी नठति वठति चलति कांपतीने जेम तेम चांपती तिहां आवी पछी मह्योटो लोभ वाळ ती थताफळमां लोभा करीने धन उपाडवा मांड्युं ते उपाडतां अग्निज्वाळा थवी वस्त्र सर्व बळी भस्म थयां श्याम वदन थइ थकी जाती हती तेने देवतायें तर्जना करी कह्युं के ए दुष्ट चंदनबाळानुं छे चंदनायें ते धन शेठने आप्युं शेठें ते सर्व धन चंदनानी दीक्षाना म

द्वेषमें सरखुं छे. पछी भगवान षण्मानिक गामे कायोत्सर्गे रह्या तेवारें इंद्रमहाराज वां दवा आव्या अने बोल्या के हे भगवान! आपने आटला दिवस पछी अमुक दाहाडे केवलज्ञान उपजशे एवुं कहीने गया. हवे प्रभु विचरता अनुक्रमें चंपा नगरीयें स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शा लायें बारमुं चोमासुं रह्या ए बारमुं चोमासुं ॥ १२ ॥ ॥ पछी तिहांथी पारणुं करीने भग वान विचरता षण्मानिक गामें आवी बाहेर उद्यानमां काउस्सग्गें रह्या ॥ ते अवसरमां भग वंतना कानमां गोवालियें खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे छे. प्रभुयें त्रिपृष्ट वासुदेवने भवें शय्या पालकना कानमां तरुं उष्ण करी नखाव्युं हतुं ते कर्म अहीआं प्रभुने उदयें आव्युं, ते शय्या पालक अनेक भवभ्रमण करी हमणां गोवालक थयो छे, तेथी ते वैरने लीधे तेणे गोवालीये

पुने बलद भलाव्या पोतें गाममां गयो त्यांथी पाछो आव्यो तेवारें बलद न दीठा, पछी बलद जोवा सारु चार प्रहर रात्रि भम्यो प्रभातें आव्यो तो भगवंत पासे बलद बेठा दीठा, ते वखत ते गोवालीयाने पूर्वभवना वैरथी द्वेष उपन्यो तेथी भगवंतना कानमां खीला बेसाड्या, जेम कोइ देखे नहीं कोइने खबर पडे नही तेवीरीतें बाहेरथी कापीने सरखा करीदीधा ते खीला जेना तीर थाय छे एवा शरकट वृक्षना अग्र कापीने कानमां ठोक्या तेथी भगवंतने महावेदना प्राप्त थइ तेनायोगें अत्यंत कृश थइ गया पछी भगवंत तिहांथी विहार करता मध्यम अपापायें सिद्धार्थ वणिकने घेर गोचरीयें पधार्या तिहां खरक वैद्य बेठो हतो तेणे मार्गानुसारें प्रभुने सशल्य दीठा ते वारें शेठने कहेवा लाग्यो के भगवानने व्यथा छे.शेठे कह्युं तो ए व्यथा मटाडवी आपनो भाग तमे कां लेता नथी? पछी शेठ अने वैद्य बेहु प्रभुनी पछवाडे गया तिहां गयें विचार करी बे साणसा



चित्र ४६



भिक्षा मली नही एटलो उपसर्ग थयो तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया छे ॥ हवे भगवान जेवारे आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अणगार थया तेवारे एक चाल वानी ईर्या समिति एटले जोइने चाले, बीजी भाषा समिति एटले विचारीने बोले, त्रीजी एषणा समिति एटले दोष रहित आहार लीये, चोथी आदाण भंडमत्त निरकेवणा समिति एटले भांड मात्रां प्रमुखने जोइने जयणायें ग्रहण करे तथा जयणाये मूके, पांचमी उच्चार प्रश्रवण खेलजल्ल सिंघाणपारिष्टापनिका समिति एटले ठलो, मात्रो, खंखार अने सेडो ए सर्व निर्जीवस्थानकें परठवे ए पांच समितियें समता होता हवा पण श्रीतीर्थंकरनो आहार निहार कोइनां दीठामां आवे नही, कोइना जाणवामां आवे नही, खेल, नाकमल, खंखार, होयज नही केमके एने रोगनो अभाव छे वली भगवान मन, वचन अने कायाने कुकर्ममां न चलावता हवा मन वचन कायानें भलीरीतें वर्त्ताववाथी त्रण समिति सहित थया ॥ वली भगवान मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तियें गुप्त होताहवा, वली भगवान इंद्रियोने गोपवी नववाड सहित शील राखता हवा, वली क्रोध मान माया अने लोभरहित, घणाज शीतल स्वभाववाला, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया छे एवा छे, वली जेणे पापने रोधि मूक्यां छे, निराश्रव थया छे, ममत्त्वरहित, धनरहित, ग्रंथरहित होवाथी निर्ग्रंथ थया छे जेम कांसानां पात्रने पाणी लागे नही तेम भगवान पण निर्लेप स्नेह रहित छे, जेम शंखने रंग लागे नही तेवा निरंजन छे तथा कोइ उपर राग नही द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेमजीवनी गति क्यांय रोकाती नथी तेम भगवानने क्यांयजातां गति हणाती एटले भगवानने विहार करवामां कोइ रोकी शके नही,आकाश जेम निरालंब छे तेम भगवान पण कोइनो आधार राखता नथी,

वायराना पेरें अप्रतिबद्ध विहार करे, शरदऋतुना मेघ समान जेनुं हृदय निर्मल ने कमलना पत्रनी पेरें निर्लेप जाणवा, काचवानी पेरें इंद्रियोने गोपवी राख्यां ने, वली गहगी नामनुं जानवर थाय ने तेना शिंगडानी पेरें एकजाज ने, पंखी जेम पोतानी पासे कांइ पण परि ग्रह राखे नही तेम जगवान पण पोतानीपासे कांइ पण परिग्रह राखे नही, जारंमपंखीनी पेरे अप्रमत्त, हस्तिनी पेरे कर्मरूप शत्रुने मथन करवामां महापराक्रमवंत, वृषजनी पेरे संयमरूप जार निर्वाह करवाने सामर्थ्यवान, सिंहनी पेरें परिसह जीतवामां डुर्द्धर, मेरुनी पेरे अचल अकंप परिसह पामवाथी चलायमान थाय नही एवा ने, समुद्रनी पेरे गंजीर ने, चंद्रमानी पेरे सौम्यले श्यावंत ने, वली सूर्यनीपेरे दीप्तनुं तेज ने जेनुं, तपाव्या कुंदनना सोना सरखा जातरूप ने, पृथ्वीनी पेरें सर्व फरस सहन करनार ने, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान ने, एवी जगवानने क्यांये प्रतिबंध नथी, हवे जेनो प्रतिबंध नथी ते प्रतिबंध चार प्रकारनो ने ते कहे ने प्रथम द्रव्यथकी प्रतिबंध त्रण प्रकारनो ने तेमां एकतो मातापिता पुत्रादिक ते द्रव्य थकी सचित्त प्रतिबंध जाणवो बीजो घरेणा प्रमुखनो प्रतिबंध ते द्रव्यथी अचेत प्रतिबंध जाण वो, त्रीजो शणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबंध ते मिश्रप्रतिबंध जाणवो एरीतें द्रव्यथकी त्रणे प्रकारनो प्रतिबंध जेने नथी माटे ममत्व रहित ने. वली बीजो खेत्रथकी प्रतिबंध ते गाम, नगर, अरण्य, खेत्र, खलो, घर, घरनां आंगणां, आकाश इत्यादिक कोइनी उपर महारा पणुं नथी माटे प्रतिबंध नथी, त्रीजो कालथी प्रतिबंध ते समयने विषे, आवलिका, श्वासोश्वास, सातश्वा सोश्वासें एक स्तोक, क्षण, सातस्तोकनो एक लव, बे घडीनुं मुहूर्त्त, त्रीशमूहूर्त्ते एक अहोरात्रि, पन्नर अहोरात्रीयें एक पक्ष, बे पक्षे एक मास, बे मासे एक ऋतु, त्रण ऋतुनुं एक अयन, बे अय

नतुं एक वर्षे, पांच वर्षनो एक संवत्सर, इत्यादिक वीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत आ अमुक काम हुं करीश एवो प्रतिबंध नथी तथा चोथो भावथी प्रतिबंध ते क्रोध, मान,माया, लोभ, भय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटुं कोइने कलंक आपवुं, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति द्वेष, रति प्रीति, कपटथी बोलवुं, मिथ्यात्वशल्य ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ६०० ॥ ए काम करे तो भावथी प्रतिबंध कर्यो कहेवाय ते मांहेलो ए भगवानने विषे कांइ पण नथी ॥ ११८ ॥ ॥ वली ते भगवंतें वर्षादना कालविना शेष उनाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पांच रात्रि लगण रहेवुं एवो विहार कर्यो एवा थका विचरे तथा जेम कुहाडो चंदनने कापीनाखे पण चंदनतो उलटो कुहाडानी धारनें सुगंधज आपे अने जे नही छेदे तेने पण सुगंध आपे छे तेम भगवानने कोइ वांसले छेदे कोइ चंदने लेपे ते वेहुनी उपर समान सरखुं मन छे जेनुं वली तृण अने मणी तथा पाणो अने सोनुं ए वेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख वेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इछा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुनें मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे ॥ ११९ ॥ ॥ जे भगवाननां उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित स्थान विहार पराक्रम आर्जव मार्दव अल्प उपधी क्षमा निर्लोभता गुप्ति मनप्रसन्नता ए सर्व काम उत्कृष्ट छे. साचो संयम तप करवाथी उपचय करेलुं फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने भावता थका विचरे एवी रीतें भगवाननें बारवर्ष वीत्यां ॥ हवे भगवाने बारवर्षमां जे कांइ तप कर्युं तेनी संख्या तथा पारणां कर्यां तेनी संख्या कहे छे. एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनुं पारणुं

एक. बीजुं पांच दिवसें न्यून ठ मासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कर्युं तेनां नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, ठ दोयमासी तपनां ठ पारणां, बे दोढमासी तपनां बे पारणां, बार एकमासी तपनां बार पारणां, ब होतेर अर्द्धमासी तपनां बहोतेर पारणां, बसेनें उंगणत्रीश ठठ तप कर्यां तेनां बसेने उंगण त्रीश पारणां, ए बेलानी तपस्या करतां पन्नरमहीनानें आठ दिवस तपस्यामां गया, नद्रप्र तिमा दिन बे, महानद्र प्रतिमा दिन चार, सर्वतोनद्र प्रतिमा दिन दश, ए त्रण प्रतिमानां त्रण पारणां अने तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां बार. ए रीतें सर्व तपना दिवसो मेलवतां सरवाले अगीआर वर्ष ठ महीनानें पचीश दिवस एटला सर्व दिवस निराहार पणे चउविहारा जाणवा एनां यंत्रनी स्थापना नीचें करी ले तेमां बशेने उगणत्रीश ठठ करी ले तेनां पारणा बशे उंगणत्रीश थयां तेमांथी एक ठठ्ठनुं ठेल्लुं पारणुं केवली पणे थयुं गणीनें बाकी बशे अठावीश पारणां लख्यां ले तथा बार एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानकें बार अठम तप लखीने सरवाले ४१६५ दिवस चउविहारा तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया सर्वमली ४५१५ दिवस ठद्मस्थपणे रह्या तेना एकवर्षमां ३५० दिवसनी संख्या करतां बार वर्षने साडा ठमहीनां थाय. एरीतें नग वाने नित्य नोजनतो रह्युं पण चोथ तप एटले एक उपवास करीने पण पारणुं कोइ वखत कर्युं नहीं थोडामां थोडुं तप कर्युं ते पण ठठ्ठनुं एटले बे उपवासनुं कर्युं ले॥ यंत्र स्थापना ॥ हवे श्रीवीरचरित्रानुसारें ठद्मस्थपणाना चोमासानी संख्या कहीयें ठैयें. एक अस्थियामें, बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चंपानगरीयें, चोथुं पृष्टचंपायें, पांचमुं नद्दिकायें, ठहुं पण नद्दिकायें,

तपनां नाम.	केटला कस्या	एकंदरदिवसनीसंख्या.	पारणानी संख्या.
छमासी पूरण.	१	१८०	१
पंचदिवसूण छ मासी.	१	१७५	१
चारमासी.	९	१०८०	९
त्रणमासी.	२	१८०	२
अढीमासी.	२	१५०	२
बेमासी.	६	३६०	६
दोढमासी.	२	९०	२
एकमासी.	१२	३६०	१२
अर्धमासी	७२	१०८०	७२
प्रतिमा, अष्ठमतप.	१२	३६	१२
छठतप.	२२९	४५८	२२८
भद्रप्रतिमा.	१	२	१
महाभद्रप्रतिमा.	१	४	१
सर्वतोभद्रप्रतिमा.	१	१०	१
सरवाळे.		४१६५	३५०

सातमुं आलंभिकायें, आठमुं राजगृहीयें, नवमुं वज्रभूमीयें, दशमुं सावत्थियें, अगीआरमुं विशालायें, बारमुं चंपानगरीयें, एरीतें बार चोमासां प्रभुनां थयां ॥ हवे तेरमां वर्षने विषें वर्त्तमान थका उनालानो बीजो महीनो, चोथुं पखवाडचुं एटले वैशाखशुदि दशमने दिवसे पाछलो पोहोर दिवस रहे थके सुव्रतनामा दिवसे. विजयमुहूर्त्तमां जंभिक गामने बाहेर ऋजुवालुका नदीना तीर उपर वैयावर्त्तनामा चैत्यने घणुं दूर नही तेम घणुं ढूकडुं पण नही एवा स्थानकें सामक नामे गाथापतिना खेत्रमां शालिवृक्षने नीचे भगवान गोदुह आसने एटले गायने दोहोवा बेसीये तेवा आसनें उकडा बेसी आतापना लेता थका पाणी रहित बेलानी तपस्यामां आत्मानें भावता एवा स्वरूपें रह्या थका उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे छते —

सरें ध्यानमां वर्त्तमान अर्थात् शुक्लध्यान ध्यावता थका [illegible]
नथी एवो व्याघात रहित, आवरण एटले ढांकणा रहित, सर्व द्रव्य पर्यायोने ग्रहण करवा
वालुं संपूर्ण पूर्णिमानां चंद्रनी पेरें केवल एटले एकज पण बीजो कोइ जेने सहाय नही एवुं
केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं ॥१२०॥ पछी जगवान श्रीमहावीरस्वामी अर्हन् एटले
पूजनीय थया, राग द्वेष रहित थया, केवली थया, सर्व जाण थया, सर्वना देखवावाला थया, सर्व
देव, मनुष्य, असुर लोकना पर्यायोने जाणे देखे, सर्वलोक सर्वजीवोनी आगति, गति, जवांतरमां
जावुं, आयुष्य, देवलोकादिकोथी चववुं, देवलोकादिकोमां जइ उपजवुं, ते जीवोने मन, मनमां
चिंतवेते, अन्न प्रमुख खाय ते, चोरी प्रमुख करे ते, मैथुनादिक सेवे ते, प्रकट्कर्म करे ते, गनुं
कर्म करे करावे ते, इत्यादिक वातो मांहेली कोइ एक पण वात जेनाथी गनी रहे नही एवा
ज्ञानवान थया. जेनी जघन्यथी पण एक क्रोड देवता सेवा करे एवा थया, ते कालमां मन
वचन कायाना योगमां वर्त्तमान सर्वजीवोना सर्व जाव जाणता थका, देखता थका जगवान वि
चरे ॥१२१॥ ॥ हवे जगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी चोसठ इंद्रोनां आसन चलाय
मान थयां तेवारें चोशठे इंद्र दिक्षा महोत्सवनी पेरे केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या
ते महोत्सव करीने जांनिकागामनी बाहेर समोसरणनी रचना करी तिहां प्रजुयें क्षणेकवार
देशना आपी पण ते देशना निष्फल गइ कोइयें मात्र सामायिकादिक व्रत पण ग्रहण कर्यां नही
तथा देव सर्वे अव्रति ने तेणे नवकारशी प्रमुख पच्चरकाण पण कर्युं नही, "इदमपिआश्चर्य" एटले
ए पण आश्चर्य जाणवुं जे तीर्थंकर जेवानी देशना पण खाली गइ. तेवारे जगवाने लाजनो
अजाव जाणी आगल लाज थवानो अवसर जाणी तेज वखत तिहांथी विहार कर्यो. यतः

कहेतां जेमाटे कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ तत्रादिश्यक्षणंधर्मं, देवोद्योतेजगद्गुरुः ॥ ज्ञानाज्ञानावान्मध्य मायां, महीसेनवनेगमत् ॥१॥ ॥ अर्थः-जिहां केवलज्ञान उपन्युं तिहां जगवान जीत एटले तीर्थंकरनो आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्योतने विषे जग तना गुरु एवा वीरस्वामी लाजनो अजाव जाणी तिहांथी बार योजन मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन तिहां आवता हवा एटले रात्रियें विहार करवानी मर्याद नथी अने एमणे विहार कर्यो ते कल्पातीत पणुं जणाववा माटे जे तीर्थंकर आचरे ते कल्पमां होय तथा कदापि नही पण होय. परंतु छद्मस्थ साधु तो जे प्रमाणे तीर्थंकरें कल्प कह्यो होय ते प्रमा णेज चाले पण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्तने पामे वली रात्रिनो विहार ते जीवनी जयणानें अर्थे वर्ज्यो छे केमके रात्रियें कोइ जीव जोवामां आवे नही माटे इहां श्लोकमां देवोद्योत एवो पाठ कह्यो ते व्यवहार जणाव्यो अन्यथा तीर्थंकरनें तो ज्ञान उद्योत सदा सर्वदा छे. वली देवरचित कनककमल उपर पगला देतां चाले छे तेमाटे एमनुं चालवुं सदा रात्रि दिवस सरखुं छे पण एवुं दृष्टांत आपीने जे साधु रात्रिये विहार करे छे ते सुखशीलिया तीर्थंकरनी आज्ञा बाहिर छे माटे ते चारित्रथी ज्रष्ट जाणवा ॥ हवे जगवान मध्यमपावापुरीयें आव्या तिहां शुं थयुं ते कहे छे. जेवारें मध्यम पावापुरीयें वीर प्रनु पधार्या तेवारें देवोये विशेष समवसरणनी रचना करी तिहां जगवंत पूर्वने बारणे पेसी अशोकवृक्षने त्रण प्रदक्षिणा देइ सिंहासने बेसी " नमोतित्थस्स " एम कही धर्मोपदेश आपे इहां मंगलाचार जणाववा माटे तीर्थ एवुं सूत्रनुं नाम छे तेने नमस्कार करीनें पछी धर्मोपदेश करे हवे एटलामां तिहां एक सोमिल ब्राह्मण यज्ञार्थि यज्ञ एटले होम करावे छे

तिहां घणा ब्राह्मणो एकठा थयेला छे वली तेना तेड्या अगीयार महा पंमित सर्वशिरोमणि ब्राह्मण आव्या छे यतः ॥ अपापायां महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलोद्विजः ॥ तत्राहूताः समा जग्मु, रेकादशद्विजोत्तमाः ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– अपापा नामनी महानगरी तेने विषे रहेनारो सोमिलनामा ब्राह्मण तेणे यज्ञकरवाने अर्थे अगीयार महोटा ब्राह्मण बोलाव्या ते तिहां आव्या छे " तेषां नामानि " एटले तेनां नाम कहे छे. १ इंद्रभूति, २ अग्निभूति,३ वायुभूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म, ६ मंमित, ७ मौर्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मेतार्य, ११ प्र भास ए अगीयारे महापंमित, चौदेविद्यानां जाण, वेदपाठी, महाअभिमानी छे ते एवुं जाणे छे के अमारा जेवो जगतमां कोइ पंमित नथी तेम सर्वज्ञ जे लोक कहे छे ते अमेज छैयें हवे ते अगीयारे जणना मनमां जे अगीयार जुदाजुदा संदेह छे ते कहे छे ॥ पहेला इंद्रभूतिना म नमां जीव छे के नथी एवो संदेह छे, बीजा अग्निभूतिना मनमां कर्मनो संदेह छे, त्रीजा वा युभूतिना मनमां जीव अने कर्म जुदां छे के एक छे एवो संदेह छे, ए त्रणे संदेह वाला त्रणे जण सहोदर एटले सगा भाइ छे एमनुं गौतमगोत्र छे. चोथा व्यक्तना मनमां पंचभूतनो संदेह छे, पांचमां सुधर्मना मनमां जे जेहवो ते तेहवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने बीजे भवे पण स्त्रीज थाय अने जे पुरुष होय ते मरीने पुरुषज थाय एवो संदेह छे, छठा मंमितना मनमां बंध मोक्ष छे के नथी एवो संदेह छे,सातमा मौर्यपुत्रना मनमां देव छे के नथी एवो संदेह छे,आठमा अकंपितना मनमां नरक छे के नथी एवो संदेह छे, नवमा अचलभ्रातना मनमां पुण्य पाप छे के नथी एवो संदेह छे, दशमा मेतार्यना मनमां परलोक छे के नथी एवो संदेह छे, अगी आरमा प्रभासना मनमां मोक्ष छे के नथी एवो संदेह छे. एवा अगीयारे जणने वेदना अर्थ

विपरीत समजवाथी संदेह रह्यो गया छे. पोतापासें पंमिताइनुं बल घणुं ने माटे अजिमा नथी बीजानी वात चालवा देता नथी हवे ए अगीआरनी पासें जे छात्र जणे ने तेनी संख्या कहे छे ॥ गाथा ॥ पंचएहं पंचसया, उच्चसयाइंहुंति डुन्निगणा ॥ डुन्नं तु जुअल सयाणं, तिसउ तिसउ हवइगछो ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— पहेला पांच पंमितोनी पासें पांचपांचसो छात्र जणे छे. ते पांचेनां पचीशसो छात्र थया तथा छठा अने सातमा पासे उच्चसया एटले साडात्रणसें साडात्रणसें छात्र जणेने एम बेउनां सातसे थया तेवारपछी वली बे युगल एटले आठमो अने नवमो ए पहेलो युगल अने दशमो तथा अगीआरमो ए बीजो युगल मली चारजणनी पासे त्रणसो त्रणसो छात्र जणे छे ते चारना मली बारसो थया एम सरवाले अगीआरेनां मली चुमालीशसो छात्रोनो गछ एटले समुदाय थयो एटले अगीआरे पंमितोने चुमालीशसो विद्यार्थिउ छे एम घणा विप्र तिहां यज्ञमां मल्या ने ते सर्व यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रभाते ब्रह्म गायत्री जपे ने, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, संध्यायें शिवसरस्वती जपे छे, हवे एमां प्रथम उपाध्यायनां नाम कहे ने. शंकर, शिवंकर, इश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, शुभंकर, सीमंकर, क्षेमंकर, करुणाकर इत्यादि हवे जानीनां नाम कहे छे. गंगाधर, गयाधर, विद्याधर, महीधर, श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणीधर, भूधर, दामोदर, रुपोदर इत्यादि हवे दवेनां नाम कहे छे. महादवे, शिवदवे, रामदवे, धामदवे, कामदवे, सहदवे, हरदवे, वासुदवे, श्रीदवे, बलदवे, धनदवे, चंद्रदवे. हवे व्यासनां नाम कहे ने. श्रीपतिव्यास, उमापति, गणपति, प्रजापति, विद्यापति, भूपति, महिपति, लक्ष्मीपति, गंगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति, धनपति. हवे पंमितोनां नाम कहे छे.


चित्र ४५
यज्ञशालाना ब्राह्मणो



नागार्जुन पंमित, गोवर्द्धन, गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद, आनंद, परमानंद, उ
द्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम. हवे जोशीनां नाम कहे ने. खिमादत्तजोशी, जीमा
दत्त, रामादत्त, प्रज्ञादत्त, गुणादत्त, विद्यादत्त, सोमादत्त, धनादत्त, कर्मादत्त, धर्मादत्त, देवादत्त,
चंद्रादत्त, सूरादत्त. हवे त्रिवाडीनां नाम कहे ने. हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नर
शर्म, सोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, धर्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धन
शर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म. हवे चतुर्वेदीनां नाम कहे ने. हरि, हरिहर,
नरहरि, नारायण, नीलकंठ, कालकंठ, वैकुंठ, श्रीकंठ, मुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ,
श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव, वामदेव, चंद्रदेव, स्वयंभू. हवे शुक्लनां नाम कहे ने. कमला
कर, दिवाकर, प्रज्ञाकर, शंकर, यशस्कर, शोभाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास,
गोकुलदास, कृष्णदास, देवीदास, हरदास, द्वारिकादास, इत्यादिक जुदीजुदी शाखानां नाम
वाला ब्राह्मण ते देवलोकनां सुख पामवानां अर्थि थया थका यागकर्म करी रह्या ने ॥ एवा
अवसरमां श्रीवीरस्वामी पूर्व सन्मुख बेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गं
भीर ध्वनियें देशना आपे ने ते सांजलवा सारुं वैमानिक देवता आकाशें देवडुंडुभि वजा
डता थका आवे ने, ते डुंडुभिनो नाद सांजली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने चिंतववा
लागा के अमारा यज्ञमंत्र कहेवा ने के जे जणवाथकी प्रत्यक्ष देवो आवी उना रहे एवा
मंत्र अमे हमणा जण्या जेथी देवो पण आव्या एटलामां तो जेम चांमालनो पाडो वे
गलो मूकीनें माणस बीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पण विप्रोनो याग मंडप मूकीने
श्रीवीरने समोसरणे जावा लागा वली ते देवो मांहो मांहे एवुं कहेता थका चाल्या जाय ने

के जलदी उतावला जइ सर्वज्ञदेवने वांदीयें एवीदेवोना मुखनी वाणी सांजलीने इंद्रजूति म नमां अमर्ष लावीने बीजा ब्राह्मणोनी आगल कहेवा लागो के जूवो जाइ ए आश्चर्य जेवी वात छे. के जे मनुष्यतो अजाण छे मूर्खछे माटे जूले पण आ देवो ज्ञानवान थइने पण जूले छे जे माटे ए आश्चर्य लागे छे के आवो महोटो यज्ञमंमप देखीने आघा ते वली किहां जाय छे वली महाराथी उपरांत बीजो सर्वज्ञ ते कोण छे के जेनी पासें ए जाय छे? तेवारे ते ब्राह्मणमांथी एक ब्राह्मण कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! ए कोइक महोटो ढोंगी इंद्रजालीउ आ नगरनी बाहेर आव्यो छे ते इंद्रजाल काढीनें पोते ज्ञानी थइ बेठो छे. बीजा लोकोने कहे छे के हुं पारका मननी वात वधी जाणुं छुं, एम घणा लोकोने जरमाव्या छे तेथी देवता पण तिहां जोवा जाय छे. एवुं सांजली इंद्रजूतिने अत्यंत मान सहित क्रोध चढयो तेवारे कहेवा लाग्यो के एवो कोण छे जे महारा छतां ज्ञानीवुं अजिमान धरीने इहां आवे. ते शुं मने जाणतो नथी? माटे जूउ जाइ ए देवजे जूला ते एदेव पण एनां जेवाज अणसमजु हशे जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पण जाणवा ॥ यतः ॥ अहोसुराःकथंभ्रांत्या, तीर्थाश्रइववायसाः ॥ कमलाकरवभेका, मक्षिकाचंदनंयथा ॥ ३ ॥ ॥ अर्थः—अहो इति आश्चर्य जे ए देव थइने भ्रांतियें करी जेम कागडा तीर्थप्रत्यें छोडी जाय छे तेम ए पण यज्ञ छोडीने जाय छे माटे ए देव कागडा सरखा छे, वली जेम देडका समुद्र तजी जाय छे तेम ए पण समुद्र जेवो यज्ञ तजीने जाय छे माटे देडका जेहवा ए देव छे. वली जेम मक्षिका चंदनने छोडी जाय तेम ए देव पण यज्ञरूप चंदनने छोडी जाय छे ॥ श्लोक ॥ करजा इव सद्गुहान, क्षीरान्नं शूकरायथा ॥ अर्कस्यालोकवद् घूका, त्यक्त्वायागं प्रयांतियत् ॥४॥ ॥ अर्थः— वली ए देव कहेवा छे ते कहे

छे. जेम उंट जला वृक्षोने छोडी देइने कांटाना वृक्ष उपर जाय [illegible]
चाल्या जाय छे, माटे उंट जेवा छे, वली जेम क्षीरना जोजनने मूकीने चूंड विष्टा उपर जाय
तेम ए देवो पण यक्षरूप क्षीर जोजन तेने मूकीने विष्टाना जोजन समान इंइजालीया पासे
जाय छे माटे चूंम जेवा ए देव छे; वली जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अंधारामां जाय
तेम यक्षरूप सूर्यने मूकीने ए देव अंधाराररूप इंइजालीया पासे जाय छे माटे घुड समान ए
देवो छे. ॥ ४ ॥ ॥ अथवा वली एवी पण रीतिले के जे चूंमो माणस होय ते चूंमा पासे
जाय जे माटे कणुं छे के ॥ गाथा ॥ अहवा जारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरावेति ॥
अणुसरिसो संजोगो, गाम नमाणं च सुरकाणं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– अथवा वली इंइचूति चिं
तवे छे के जेह्वो ए ज्ञानी छे तेवा ए देव छे तेथी ए बेहुनो सरखो संयोग मल्यो छे जेम
गामनट मूर्ख छे तेम गामना लोक पण मूर्ख छे ए बेनो सरखो संयोग मले छे तेम ए देवता
जे जाय छे ते पण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पण मूरख छे तेमाटे जे पोते जेवो होय
ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे छे ए
रीत छे वली गाहा ॥ रे छिद्री विछिद्री करेली, मम चडिस पायवे निंबे ॥ अहवा तुज्झ न
दोसो, सरिसा सरिसेण रचंति ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– कोइ एक माणस कारेलीनी वेलिने लिं
बडाना वृक्ष उपरे चढती देखीने बोल्यो के हे सखि ! हे कारेली! तुं ए निंबना वृक्ष उपर च
ढीश नही केमके तुं पोते कडवी छो अने निंब वृक्ष पण कडवो छे माटे रे चूंमी! तुं वली
अधिक कडवी थइश एवुं केण तेणे मान्युं नही अने निंबना वृक्षनी उपर चढती बंध थइ
नही तेवारे ते माणस बोल्यो हे जोली! ए ताहारो दोष नथी केमके जगतमां सरखे सरखा

मळे तेवारे राजी थाय तेम तमे पण वे सरखे सरखां गो तो एमां कांइ आश्चर्य नथी तेम इहां पण ए देवता अने ए ज्ञानी वेहु सरखे सरखा मळ्या ठे वळी एवा इंद्रजाळीयाने जइ देवो वांदे ठे तो शुं ए देवो पण नूला पड्या न कहेवाय ? वळीपण इंद्रनूति चिंतववा लाग्यो के महारा जेवा पंमितनी आगळ ए लोकोने ठगे ठे अने ज्ञानी नाम धरावे ठे, ते महाराथी केम सहन करी शकाय ? महाराथी तो एनुं खोटुं अजिमान सह्युं जाय नही अने ए ढोंगीनो ढोंग पण माहारा शिवाय बीजो कोइ पाधरो करी शकशे नही माटे हुं जइने एनुं अजिमान उतारी नाखुं जेम एक आकाशमां बे सूर्य होय नही वळी एक गुफामां बे सिंह एकठा न रहे तथा एक म्यानमां बे तरवार समाय नही तेम ए पण सर्वज्ञ अने हुं पण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज नही. ए इंद्रजालियो तो विदेशे कळा शीखी आवेलो ठे ते सर्वज्ञनुं नाम धरावी लोकोने अने देवताउने जोळवे ठे अने हुंतो सर्व विद्याउमां निपुण हुं एवो विचार करे ठे एवामां प्रज्ञुने वांदीने समोसरणथी केटला एक लोक फरी आव्या तेमने इंद्रनूति पूठवा लाग्यो के अहो लोको तमे जेनी पासे गया हता ते सर्वज्ञ कहेवोक ठे ? तेवारे लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामां आवती नथी परंतु तमे पोते सर्वज्ञ नाम धरावीने अमने शुं पुठोगो, ते सर्वज्ञतो बधी मननी वातो जाणे ठे पण तमे तो एटलुं पण नथी जाणता अने फोकट सर्वज्ञ कहे वरावो गो ते सांजळी इंद्रनूतियें जाण्युं जे ए निश्चय मायानुं घर ठे माटे सर्वलोकतो एने मानवा लाग्या पण जेवारे हुं जइश तेवारे ए माहारा आगळ बोली शकशे नही, यतः ॥ घरसूरा मठ पंमिया, गाम गमारा गोठ ॥ नरी सनामां बोलता, थरथर धूजे होठ ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— पोताना घरमां तो बधाय कहेके अमे शूरवीर ठैयें अने पोताना मठमां पण व

धाय कहेके अमे पंमित छैयें वली पोताना गाममां जे गमार होय तेपण पंच थाय छे परंतु ज्यारे पंमितोनी नरी सन्नामां बोलवुं पडे त्यारे तो तेना होठपण थर थर धूजवा मंमी जाय छे तेम ए पण सर्वज्ञ एवुं नाम बीजानी आगल कहे छे पण माहारी आगल ते बोली शकशे नही वली पण विचारे छे के जे अग्नियें पर्वतोने बाली नाख्या तो ते अग्निनी आगल वृक्षनो शो नार? तथा जे वायुयें हाथी जेवाने उडाडी मूक्या ते बापरानी आगल पुणीनुं शुं जोर चाले? तथा जे नदीमां हाथी तणाइ गया ते नदीमां कीडी बापडी शा हिसाबमां गणाय? एम इंद्रनूति चिंतवे छे एवामां अग्निनूति बोल्यो के हे नाइ! तमे ए इंद्रजालीयाने जीतवा माटे एटलो विचार शुं करो छो, ए कीडी ऊपर कटक शो करवो? अलसीयानी ऊपर गरुडने तेडवो ते शुं? तृणनी ऊपर कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारुं फरशी उपाडवी ते शा कामनी, वेलडी उखेडवामाटे हस्तिनुं शुं काम पडे! तेम ते विचारा गरीबडा सर्वज्ञ पासे तमे वाद करवा शुं जाशो; मनेज आज्ञा आपोतो हुंज एने जीती आवुं, एवां नाइनां वचन सांनली इंद्रनूति बोल्यो के हे नाइ! एने शुं जीतवो छे एनेतो महारा पांचलो शिष्य मांहेलो कोइ एक शिष्य जाय तेपण जीती आवे तथापि महाराथी रहुं जातुं नथी केमके थोडुं पण शल्य कामनुं नही माटे हुं पोतेज जाइश जे कारण माटे बीजा तो सर्व वादी मात्रने में जीत्या छे पण एक ए किहांएक रही गयेलो देखाय छे जेम हाथीना मुखमांथी कोइक कण पडी जाय, जेम मग रांधतां कोइक करडुं रही जाय, जेम घाणी पीलतां कोइक तलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति ऋषिने समुद्रनां त्रण चलुं करतां कोइक जलबिंदु रही जाय, जेम चणा ढुंजतां कोइक चणो बाहेर पडी जाय, तेम ए

पण रही गयेलो जाणवो माटे हे नाइ! ए एकने अणजीते सर्वेने न जीत्या एम लोकोमां कहेवाय जेम एकवार जे स्त्रीनुं शील खंमन थयुं ते स्त्री असती कहेवाय तेम एने जीत्या विना लोकमां मह्यारो यश रहे नही माटे एनाथी माह्यारे पोतानेज वाद करवा जवुं पडशे अने एने हुं हरावुं तोज मह्यारो यश जगतमां रहे, वली पण अजिमानथी इंद्रजूति कहेछे॥ ॥ यतः ॥ हंहो वादिगणा लोटाः, कर्णाटादि समुद्भवाः ॥ कस्माददृश्यतां प्राप्ता, यूयं मम पुरः सदा ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– अरे कर्णाटादिक देशोमां उत्पन्न थयेला वादिठ! तमे मह्यारा आगल केम नथी देखाता? शा माटे अदृश्य थइ रह्या गो? जावार्थ ए छे जे तमे वक्षाय वादियो मह्यारा आगल हारेला गो तेथी छुपी रह्या गो, ते शा माटे के में आटला देशोना पंमितोने हराव्या छे. ते कहेछे–॥ काव्य ॥ लाटा दूरगताः प्रवादिनिवहा मौनं श्रिता मालवाः, मूकत्वं मगधागता गतमदा गर्जंति नो गुर्जराः ॥ काश्मीराः प्रणताः पलायनकरा जातास्तिलंगोद्भवाः, विश्वे चापि सनास्ति योहि कुरुते वादं मया सांप्रतं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः–लोट कर्णाटक देशना वादि माह्यारी आगल अदृश्य थया, तो बीजा देशोना वादिठनो माह्यारे आगल श्यो जार तेज कहे छे, लाट देशना वादिठना समूह तेतो मह्यारुं नाम सांजलीने दूर जइ रह्या, परंतु कोइ ढूकडो नाव्यो, एटले तेणे एवुं विचार्युं जे जइशुं तो हारीने पाछुं आववुं पडशे एम जाणी दूर जइ रह्या तथा एकलाखने बाणुं हजार मालव देशना वादि हता ते हारी जवाना जयने लीधे माह्यारी आगल मौनपणुं धारण करी रह्या वली मगध देशना दश लाख वादि तेतो मह्यारा आगल मुंगा थया एटले एक बोलपण बोली शक्या नही तथा सत्तर हजार गुजरात देशना वादि ते मह्यारी आगले मद रहित थइ गया परंतु हाथीनी पेरे गाजीने

एक शब्द पण कही शक्या नही एटले दीन थइ रह्या हता वली जिहां सरस्वतीनो वास छे एवो श्रीकाश्मीर देश तिहांना वसनारा वादी ते आवीने म्हारे पगे लागा तथा जे तेलंग देशमां उत्पन्न थयेला नवलाख वादि तेतो मात्र म्हारुं नाम सांभलीने नाशि गया बीजी कांइ पण बुद्धि तेमने उपनीज नही वधारे शुं कहुं जगतमां एवो कोइ पण पंडित नथी जे म्हारी साथे आवीने हमणा वाद करे एटले में सर्वकोइने जीत्या पण मने जीतनारो जग तमां कोइ पण नथी तो ए इंद्रजालीयानो श्यो भार छे हुं ज्यांसुधी प्रमादमां हुं त्यांसुधी ए सर्वज्ञ कहेवाय छे पण जेवारे हुं वाद करवाने साहामो थयो तेवारे ए तेज वखत नाशि जाशे जेमाटे कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ तावगर्जंति खद्योता, स्तावगर्जंति चंद्रमाः ॥ उदिते तु सहांशौ, न खद्योतो न चंद्रमाः ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—खजुआनो उद्योत क्यांसुधी रहे के जिहां सुधी चंद्रमानो उद्योत नथाय त्यांसुधी खजुउ जलहल करी गाजतो चलके परंतु चंद्रमानो उद्योत थाय तेवारे खजुआनो उद्योत कांइ पण चाले नही अने चंद्रमानो उद्योत पण क्यां सुधी रहे के ज्यांसुधी सूर्यनो उदय नथाय त्यांसुधी रहे, पण जेवारे हजार किरणोने धरनार एवो जे सूर्य तेनो उदय थाय तेवारे खजुआनो अने चंद्रमानो ए बेहुनो उद्योत रहे नही तेम बीजा वादीयोने हरावयाने तो ए इंद्रजालियो समर्थ छे पण माहारी आगल एनो प्रभाव चाले नही एणे ज्यांसुधी मुजने दीठो नथी त्यांसुधी बीजा लोकोने भरमावे छे तो हवे म्हारे फोकट घ रमां बेशी मान करवुं ते शा कामनुं! हुं पोते तिहां जइने तेनुं बल पराक्रम जोवुं के ए शुं जाणे छे मुजने एटलां शास्त्रतो जलेना पाणी पेरे आवडे छे॥ श्लोक ॥ लक्षणे मम दक्षत्वं, साहित्ये संहिता मतिः ॥ तर्के कर्कशता नित्यं, क शास्त्रे नास्ति मे श्रमः ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—लक्षण शा

अर्था महारे पढ़णणुं ले एटले लक्षण शास्त्रतो हुं सारी पेठे जाणुंछुं स्त्री पुरुषादिकोनां व त्रीश लक्षण रुडीरीते कही देखाडुं तथा पदार्थनां लक्षण तो एवां प्रतिपादन करुं के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नही ॥ १ ॥ तथा साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक तेतो सर्व महारे अस्खलित ले ॥ २ ॥ तथा तर्कशास्त्रमां तो हुं एवो निपुण छुं के महारा साहामो कोइने ज वाब देतां आवडेज नही एवा कठण तर्कने हुं जाणु छुं माटे तर्कशास्त्र महारे कठण नथी एतो सदा अकर्कश ले ॥ ३ ॥ वणुं शुं कहियें एवुं कयुं शास्त्र ले के जेमां महारो श्रम न थयो होय? अर्थात् अढार व्याकरण, कोशनीतो गणतरीज नथी, छंद रत्नाकरादिक, अलंकार ते काव्यनी शोभा अतिशयालंकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमांसादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए वधां शास्त्र महाराथी अजाण्यां नथी तो ए इंद्रजालीयो ते शुं महाराथी जीते एवोले माटे हवे हुं त्यां जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखतां एने हरावीने एनुं सर्वज्ञपणानुं विरुद टाली नाखुं एवो मनमां गर्व आणी पांचशे छात्रोने लेइ जेम जाणे इंद्र खेंची लइ जतो होयनी? ते श्यामाटे के भगवाननी देशना प्रथम खाली गइ ले ते माटे भगवान बार योजन चालीने एक रात्रीयें आव्या तेथी इंद्रमहाराजे जाण्युं के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडुं थाय ते माटे इंद्रनो प्रेर्योज जाणे इंद्रभूति समोसरण तरफ जतो होयनी? एवी कवीश्वर घटना करे ले अन्यथातो एमज बनारुं ले. हवे इंद्रभूति पांचशे छात्रसहित परवर्यो थको वाद कर वानी इछाथी श्रीवीर भगवानना समोसरण तरफ चाल्यो ले वखते पांचशे छात्रो इंद्रभूतिनी

वादिविजय लक्ष्मी
वने गलानुं आनूषण वे अर्थात् सरस्वतीतो सदा एमना कंठमांज वसेवे, कुमतांधकार नत्नोमणि,
शरण, ज्ञात सर्वपुराण, वादिकदली कृपाण, पंमितश्रेणी शिरोमणि, वादिसमुद्र अगस्ति, वादिवृ
जितवादिवृंद, वादिगरुड गोविंद, वादिघटमुज्जर, वादिघूकनास्कर, परवादिमस्तकशूल, वादिगो
कृद्स्ति, वादिमुखनंजन, सकलनूपालरंजन, पद्नावानधीमूल, वादिगजसिंह, वादिशिरलीह,
धूमधरट्ट, मर्दितवादि मरट्ट, वादिकंदकुद्दाल, वादिवृंदचूपाल, चौदविद्या अलंकार, वादिलदयशाल,
वादिवेश्याभुजंग, शब्दलहरी, गंगातरंग, सरस्वतीनंमार, ज्ञानरत्नाकर, शब्दविवाकर, महाकवीश्वर,
वादियुथमाल, वडुराजसमाजमुकुट, वडुबुद्धिविकट, कौजंगम सरस्वती, प्रत्यक्नारती, जितानेकवाद,
कृतशिष्यवृहस्पति, निर्जितचार्गवमति, इत्यादि अनेक प्रकारनी विरुदावली गात्रो बोली रह्या वे अने इंडनूति
सरस्वतीलब्धप्रसाद, लाग्यो के अरे जुउंतो खरा के आ मूर्ख शुं कर्युं
चाल्यो जाय वे वली रस्तामां विचार करवा नाहक कोप चडाव्यो तो हवे एथी ए शुं सुखी थवानो वे
एणे सर्वज्ञपणांना आटोपथी मने जेम कोइ अग्निमां पडे तो वली नस्म थया विना रहे नही तेम एणेपण कर्युं वे एम चिंतवतो
चालतो चालतो जेवारे समवसरणनी पहेली पावडी वे तिहां चडीने जोवा लाग्यो ने जोतुं
तो त्रण गढ दीठा ते गढ कहेवा वे ते कहेवे त्यां प्रथम रूपानो गढ वे तेना सुवर्णमय को
शीशा वे, चारेदिशायें चार पोलोल वे. बीजो सुवर्ण गढ वे तेना रत्नना कोशीशा वे. त्रीजो र
त्ननो गढ वे तेना मणिकांतना कोशीशा वे एक योजनने विस्तारे वे तेनी वचमां अशोकवृक्ष
वे उपर त्रण वत्र तिहां सुवर्णनुं सिंहासन वे तेनी उपर स्वामि बेठा वे ते इंडनूतियें पोतानी
नजरे दीठा तेवारे मनमां विचार्युं जे में घणाय वादी दीठा वे परंतु आवो प्रकार किहां पण

स्त्रमां म्हारुं दक्षपणुं ढे एटले लक्षण शास्त्रतो हुं सारी पेठे जाणुंछुं स्त्री पुरुषादिकोनां व त्रीश लक्षण रुडीरीते कही देखाडुं तथा पदार्थनां लक्षण तो एवां प्रतिपादन करुं के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नही ॥ १ ॥ तथा साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक तेतो सर्व माहारे अस्खलित ढे ॥ २ ॥ तथा तर्कशास्त्रमां तो हुं एवो निपुण छुं के म्हारा साहामो कोइने ज वाब देतां आवडेज नही एवा कठण तर्कने हुं जाणु छुं माटे तर्कशास्त्र म्हारे कठण नथी एतो सदा अकर्कश ढे ॥ ३ ॥ घणुं शुं कहियें एवुं कयुं शास्त्र ढे के जेमां म्हारो श्रम न थयो होय? अर्थात् अढार व्याकरण, कोशनीतो गणतरीज नथी, छंद रत्नाकरादिक, अलंकार ते काव्यनी शोभा अतिशयालंकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमांसादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए वधां शास्त्र म्हाराथी अजाण्यां नथी तो ए इंद्रजालीयो ते शुं म्हाराथी जीते एवोछे माटे हवे हुं त्यां जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखतां एने हरावीने एनुं सर्वज्ञपणानुं बिरुद टाली नाखुं एवो मनमां गर्व आणी पांचशे छात्रोने लेइ जेम जाणे इंद्र खेंची लइ जतो होयनी? ते श्यामाटे के भगवाननी देशना प्रथम खाली गइ ढे ते माटे भगवान बार योजन चालीने एक रात्रीयें आव्या तेथी इंद्रमहाराजे जाण्युं के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडुं थाय ते माटे इंद्रनो प्रेर्योज जाणे इंद्रभूति समोसरण तरफ जतो होयनी? एवी कवीश्वर घटना करे ढे अन्यथातो एमज थनारुं ढे. हवे इंद्रभूति पांचशे छात्रसहित परवर्यो थको वाद कर वानी इच्छाथी श्रीवीर भगवानना समोसरण तरफ चाल्यो ते वखते पांचशे छात्रो इंद्रभूतिनी बिरुदावली बोले ढे ते कहीयें ढैयें. सरस्वती कंठाभरण एटले सरस्वतीतो अमारा उपाध्या

॥ १ ॥ ॥ अर्थः– शुं ए महादेव ले? अथवा शुं ए कृष्ण ले? अथवा शुं ए बहुरूपवंत ले माटे कामदेव ले? अथवा शुं ए नलराजा ले? अथवा शुं ए इंद्रनो भंडारी कुबेर ले? अथवा शुं ए विद्याधर ले? अथवा शुं इहां ए इंद्र आव्यो ले? अथवा शुं ए चंद्र ले? अथवा शुं ए विधाता ले? एवीरीतें कल्पनाओ करीने वली विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के ए महादेव तो नथी केमके ते तो लंगोट्यो ले तथा एनो सुवर्ण सरखो वर्ण ले माटे ए कृष्ण पण नथी वली स्त्रीवर्जित ले माटे ए कामदेव पण नथी वली राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी निश्चयथी ए नलराजा पण नथी वली त्यागी ले माटे कुबेर भंडारी पण नथी, तथा पादचारी ले माटे विद्याधर पण नथी, नगररहित ले माटे इंद्र पण नथी, कलंक रहित ले माटे चंद्र पण नथी, घटना विवर्जित ले माटे विधाता पण नथी, एतो ए पूर्वे जे कह्या ते सर्वथी अधिक लक्षण धारी ले तो ए कोण ले एम विचार करतां जाणवामां आव्युं जे अरे एतो तीर्थंकरवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीने प्रवर्त्या ले एवो देवाधिदेव श्रीवीर जिनेंद्र जे लोक कहे ले ते एज ले बीजो कोइ नथी. एम जणाय ले तो हा इतिखेदे ए में शुं कर्युं आ हुं केवा संकटमां आवी पड्यो, हवे हुं शुं करुं एनी आगल मारुं मान केम रहेशे! ॥ श्लोक ॥ कथं मया महत्वं मे, रक्षणीयं पुरार्जितं ॥ आसादं कीलिकाहेतो, भंक्तुं कोनाम वांछति ॥ १ ॥ अर्थः– तो हवे मारुं पूर्वे महोटापणुं थयुं ले तेने हुं केम करीने राखीश? एटले में पूर्वे घणा वादिओने जीत्या ले तेथी हुं लोकमां प्रसिद्ध थयो छुं, पंडित कहेवाउं छुं, तो हवे मुजने म्हारा पंडितपणाने राखवानो उपाय श्यो करवो के जेथकी ए म्हारी पंडिताइ लोकोमां कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करुं तो लोको कहेशे के ए वाद करवा गयो हतो ते पाछो केम फरी

बीजो नथी तो ए शुं ब्रह्मा छे, ना ए ब्रह्मा पण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमां पवित्री छे, करे कमंडल छे, हंसवाहन छे, पांचमुं गर्दभनुं मुख छे एटलां एं पाण मलतां नथी तेमाटे जाणीयें छैयें जे ए ब्रह्मा तो नथी, तो शुं ए विष्णु छे, ना ते पण नथी केमके विष्णुनेतो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शंख, चक्र, गदा अने धनुष ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वरणे श्याम छे, ते एंधाण एने नथी माटे ए विष्णुपण नथी. तो ए शुं ब्रह्मज्ञानी छे, ना ते पण नथी केमके ते तो अरूपी छे, वली चंद्रमा सोले कलायें संपूर्ण छे परंतु कलंकसहित छे माटे चंद्रमा पण ए नथी तथा वली जो एने सूर्य कहुं तो सूर्यथी पण एनुं तेज तो घणुं अधिक छे परंतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पण केम संजवे!! वली इंद्र छे एम जो कहुं तो ते पण नथी कारण के तेने सहस्रनेत्र छे ते एने नथी वली जो ए मेरु हशे एम कहुं तो मेरु कठण छे ते एमां कठणपणुं देखातुं नथी माटे ए मेरुपण नथी तो ए सर्वगुणसंपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे केमके एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमां होय नही माटे समस्त पापहर, सर्वलोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, अशरण शरण, तरण तारण, एवा श्रीवर्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवायछे ते ए संजवे छे सूर्यनी पेरे तेजवंत, चंद्रमानी पेरे सौम्य, समुद्रनी पेरे दीठे दुस्तर, एवा ए छे ते श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम संजवे!! वली पण इंद्रनूति श्रीवीर प्रजुने देखीने चिंतवे छे ॥ काव्य ॥ किंनंदी किमुरारिः किमुरतिरमणः किंनलः किंकुबेरः, किंवा विद्याधरोसौ किमिह सुरपतिः किंविधुः किंविधाता ॥ नायं नायं न चायं न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव, तीर्थं कर्त्तुं प्रजुर्यो निजगुणविजवैर्वाछितेनाधिदेवः ॥

ली एक वंति

तुं कयुं तथा लोखंमना

गी नाखवां जेवुं कयुं एम चिंतव

न ते कहेने ॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशावं स्पृशति

, मार्जारी हंसबालं प्रणयपरिवशात्केकिकांता भुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि

वोन्येत्यजंति, श्रुत्वासाम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—

एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां ने कलुष एटले पाप जेमनां एवा वली क्षीण

नो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा

ज याग ने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांभलीने बीजा जीव पण जेने जन्म

थकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वेर रहेलां ने एवा तिर्यंच जीव पण समोसरणमां मद

थया थका पोतपोतानां वेरने त्यजे ने एटले जेनां एवां वचन ने के जे सांभलवा थकी

गो जन्मनां वेरने पण भूली जाय ने ते वेर कोने कोने ने ते कही देखाडे नेः—प्रभुना समोसर

णमां आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे ने एटले सिंहने अने हरणने

आव्यो, माटे में ए मूरखाई करी तो पण हवे वाद कर्या विना म्हारे पाछुं जावुं नही केमके मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे तो हवे अल्पने माटे म्हारो वधो यश न गमाववो जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद भांगी खीलाने काढवा वांछे नही एवो मूर्ख कोइ होय नही वली कहेछे ॥ श्लोक ॥ सूत्रार्थी पुरुषोहारं, क स्रोटयितुमीहते ॥ कः कामकलशस्यांशं, स्फोटयेत् ठिकरीकृते ॥ ३ ॥ ॥ अर्थः– एवो कोण पुरुष होय जे सूत्र एटले तांतणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछना करे एटले सूत्रनो तागो जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वांछे नही तेम म्हारे पण ए एकने हराव्या विना म्हारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नही ए तात्पर्य जाणवुं तथा वली कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेने अर्थे मनोवांछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेना गला प्रमुखने फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुंभने कोइ फोडी नाखे नही तेम हुं पण एनी साथे वाद कर्या विना जो एमज पाछो फरी जाउं तो कामकुंभ जेवो माहारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवुं थइ पडे, तेथी हुं मूर्खोनी गणतीमां थाउं माटे म्हारे एम न करवुं वली पण कहेछे॥ श्लोक ॥ भस्मने चंदनंकोवा, दहेद्दुःप्राप्यमप्यय ॥ लोहार्थी कोमहांभोधौ, नौभंगं कर्तुमिछति ॥ ४ ॥ ॥ अर्थः– वली कोण डाह्यो पुरुष भस्म एटले राखने अर्थे दुःखे प्राप्त थाय एवा चंदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चंदनने कोइ बाले नही तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वाहाण तेने भांगी नाखवानी वांछा करे अर्थात् कोइ पण भांगे नही परंतु जो मूर्ख होय तो भांगी

जस्म थाय तथा महारी यश रूपी नौका महासमुद्रमां नांगी नाखवा जेवुं मने थाय माटे एवो मूर्ख हुं न थाउं इति ॥ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेळववो जे इंद्रभूतियें जगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो जे ए कोइ महापुरुष ने माटे एनी साथे हुं वाद करीने अवश्य हारी जइश तेथी में पण एनी पासें आवीने एक खीलाने माटे महारो यशरूपी प्रासाद नांगी नाखवा जेवी मूरखाइ करी तथा एक तांतणाने माटे हार त्रोडी नाखवानी इछा करी वली एक ठीकरीने माटे कामकुंजनें फोडी नाखवा जेवुं कर्युं तथा राखने अर्थे चंदन बाळवा जेवुं कर्युं तथा लोखंमना कटकाने अर्थे महासमुद्रमां महारा संपादन करेला यशरूपी जहाजने नांगी नाखवां जेवुं कर्युं एम चिंतवी प्रजुना वचननो अतिशय जोवा मांम्यो तो आ प्रमाणे ने ते कहेने ॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसबालं प्रणयपरिवशात्केकिकांता नुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोन्येत्यजंति, श्रुत्वासाम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः– सम परिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां ने कलुष एटले पाप जेमनां एवा वली क्षीण थयो ने मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांजलीने बीजा जीव पण जेने जन्मथकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वेर रहेलां ने एवा तिर्यंच जीव पण समोसरणमां मद रहित थया थका पोतपोतानां वेरने गंमे ने एटले जेनां एवां वचन ने के जे सांजलवा थकी जीवो जन्मनां वेरने पण नूली जाय ने ते वेर कोने कोने ने ते कही देखाडे नेः–प्रजुना समोसरणमां आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे ने एटले सिंहने अने हरणने

आव्यो, माटे में ए मूरखाई करी तो पण हवे वाद कर्या विना म्हारे पाछुं जावुं नही केमके मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे तो हवे अल्पने माटे म्हारो वधो यश न गमाववो जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद भांगी खीलाने काढवा वांछे नही एवो मूर्ख कोइ होय नही वली कहेछे ॥ श्लोक ॥ सूत्रार्थी पुरुषोहारं, क स्त्रोटयितुमीहते ॥ कः कामकलशस्यांशं, स्फोटयेत् ठिकरीकृते ॥ ३ ॥ ॥ अर्थः— एवो कोण पुरुष होय जे सूत्र एटले तांतणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछना करे एटले सूत्रनो तागो जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वांछे नही तेम म्हारे पण ए एकने हराव्या विना म्हारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नही ए तात्पर्य जाणवुं तथा वली कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेने अर्थे मनोवांछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेना गला प्रमुखने फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुंभने कोइ फोडी नाखे नही तेम हुं पण एनी साथे वाद कर्या विना जो एमज पाछो फरी जाउं तो कामकुंभ जेवो माहारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवुं थइ पडे, तेथी हुं मूर्खोनी गणतीमां थाउं माटे म्हारे एम न करवुं वली पण कहेछे ॥ श्लोक ॥ भस्मने चंदनंकोवा, दहेद्दुःप्राप्यमप्यय ॥ लोहार्थी कोमहांभोधौ, नौभंगं कर्तुमिछति ॥ ४ ॥ ॥ अर्थः— वली कोण माह्यो पुरुष भस्म एटले राखने अर्थे दुःखे प्राप्त थाय एवा चंदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चंदनने कोइ बाले नही तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वाहाण तेने भांगी नाखवानी वांछा करे अर्थात् कोइ पण भांगे नही परंतु जो मूर्ख होय तो भांगी नाखे तेम जो हुं एनी साथे वाद न करुं तो म्हारुं यशरूप मलयागिरि चंदन ते बालीने

नस्म थाय तथा महारी यश रूपी नौका महासमुद्रमां नांगी नाख्या जेवुं मने थाय माटे एवो मूर्ख हुं न थाउं इति ॥ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेळववो जे इंद्रभू तिर्ये नगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो जे ए कोइ महापुरुष ठे माटे एनी साथे हुं वाद करीने अवश्य हारी जइश तेथी में पण एनी पासें आवीने एक खीलाने माटे महारो यशरूपी प्रासाद नांगी नाखवा जेवी मूरखाइ करी तथा एक तांतणाने माटे हार त्रोडी नाखवानी इछा करी वळी एक ठीकरीने माटे कामकुंजने फोडी नाखवा जेवुं कर्युं तथा राखने अर्थे चंदन बाळवा जेवुं कर्युं तथा लोखंमना कटकाने अर्थे महासमुद्रमां महारा संपादन करेला यशरूपी जहाजने नांगी नाखवां जेवुं कर्युं एम चिंतवी प्रभुना वचननो अतिशय जोवा मांमयो तो आ प्रमाणे ठे ते कहेठे ॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्र पोतं, माजीरी हंसबालं प्रणयपरवशात्केकिकांता भुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोन्येत्यजंति, श्रुत्वासाम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहं ॥ १ ॥ ॥ अर्थः— सम परिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां ठे कलुष एटले पाप जेमनां एवा वळी क्षीण थयो ठे मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांजळीने बीजा जीव पण जेने जन्म थकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वैर रहेलां ठे एवा तिर्यंच जीव पण समोसरणमां मद रहित थया थका पोतपोतानां वैरने ठांमे ठे एटले जेनां एवां वचन ठे के जे सांजळवा थकी जीवो जन्मनां वैरने पण नूली जाय ठे ते वैर कोने कोने ठे ते कही देखाडे ठेः—प्रभुना समोसर णमां आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बाळकने स्पर्शे ठे एटले सिंहने अने हरणने

जन्मनुं वैर छे पण इहां समोसरणमां तेने वैर मटी जाय छे तेथी ते पोतपोतामां मलीने एकठां बेठां छे तथा (नंदिनी के०) गाय ते (सुतधिया के०) पोताना पुत्रनी बुद्धियें करीनें (व्याघ्रपोतं के०) वाघना बालकने चाटी रही छे एटले वाघने अने गायने वैर छे तोपण इहां ते वैर टली गयुं छे माटे वाघना बालकनी पासे बेठी थकी लाड करे छे वली बिलाडी छे ते (प्रणयपरिवशात् के०) स्नेहना वश थकी हंसना बालकने स्पर्श करीने बेठी छे एटले बिलाडी पण हंसना बालकने मारती नथी वली मोर अने सर्पने पोतपोतामां वैर छे तोपण ते इहां प्रभुना समोसरणमां कहेवा थई बेठा छे तोके (केकिकांता के०) ढेल छे ते (भुजंगं के०) सर्पनी साथे बेठी छे ए रीते इहां एवा प्रकारनां वैर ते सर्व जीवोनां मटी गयां छे एवो भगवानना वचननो अतिशय देखी इंद्रभूति विस्मय थइ रह्यो छे एटलामां भगवान बोल्या के हे इंद्रभूति! गौतम गोत्रिया! तुं भले आव्यो तुं सुख समाधिमां वर्त्ते छे एवुं स्वामिनुं वचन सांभली इंद्रभूति मनमां चिंतववा लाग्यो जे ए महारुं नाम गोत्र किहांथी जाणे छे केमके हुं एनी साथे क्यारे पण मल्यो नथी, तथापि वली एम विचार्युं जे महारुं नामतो जगतमां प्रसिद्ध छे माटे कोण नथी जाणतो सर्व कोइ जाणेज छे जे हुं कांइ अछतो माणस नथी सूर्य किहां पण छानो रहे नही पण एणे मने महारुं नाम कहीने जे बोलाव्यो तेनुं तत्व महारा जाणवामां आवी गयुं के एणे मात्र मने छगवा सारुंज बोलाव्यो जणाय छे परंतु हुं कांइ एवो अण समजु नथी जे एना मीठा वचनथी रीझ पामुं पण हुं तो जेवारे ए महारा मनमां जीव छे के जीव नथी एवो संदेह रहेलो छे ते कही आपे अथवा ते संदेह भांजी आपे तेवारे रीझ पामीने जाणुं जे ए खरेखरो सर्वज्ञ छे. नही कां तो मात्र महारी साथे एने वाद करवो पडे

तेथी बीह्तो थको मने ..जी राखवा माटे मीठे वचने करी बोलावे छे तेणे करी ए पोताना मनमां एवुं समजतो हतो जे ए म्हारी साथे वाद करशे नही, पण ते तो हुं मानुं नही एवुं विचारे छे एटलामां फरी भगवान बोल्या हे इंद्रभूति ! जीव छे के नथी एवो ताहारा मनमां संदेह छे ते हे इंद्रभूति! ते वेदनां पद जीवने उठापवावाळां अने जीवने थापवावाळां जा गीने संदेहमां पड्यो छो तेहनो अर्थ तुं विपरीत करे छे तेथी तने संदेह रही गयो छे माटे ते वेदनां पदोनो अर्थ पूर्वापर विरोध रहित हुं तमोने कहुं छुं ते सांभळ एम कही भगवान पोतें सम्मुखें वेदनां पदोनुं उच्चारण करे छे ते कहेवा ध्वनियी करे छे ते कहे छे. श्लोक ॥ समुद्रोमथ्यमानःकिं, गंगापूरोथवा किमु ॥ आदिब्रह्मध्वनिः किंवा, वीरवेदध्वनिर्बभौ ॥ १ ॥ अर्थः—जेम समुद्र मथन करवा मांड्युं होय ते वखतें जे ध्वनि थाय तेहवोज ध्वनि थायछे के शुं? अथवा गंगानदीनुं पूर आवे ते वखतें जे ध्वनि थाय तेज ध्वनि थाय छे के शुं? अथवा आदिब्रह्म ध्वनि थायछे के शुं एवो वीर भगवानना मुखथी ध्वनि थयो तेमां वेदमां जीवसत्ता निषेधपद एवां छे ते कहे छे ॥ अथ वेदपदानि यथा ॥ अर्थः—वेदना पद एम छे " विज्ञान घन एवेतेभ्योभूतेभ्यः समुत्थाय, तान्येवानुविनश्यति, नप्रेत्यसंज्ञास्तीति इति जीवाभावश्रुतिः ॥ अर्थः—हे गौतम! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारें जाण्योछे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंड (सएव के०) तेहज चेतन पिंड ते (एतेभ्योभूतेभ्यः के०) भूतजे पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच भूतो थकी (समुत्थाय के०) उत्पन्न थइने (ता न्येवानुविनश्यति के०) ते भूतोनो नाश थया पछी ते विज्ञानघन चेतननो पण नाश थाय छे तेमाटे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) परलोक नथी एटले ए पृथिव्यादिक पांच भूतोथी जीव उत्पन्न

थाय ठे अने ए पृथिव्यादिक पांचजूत जेवारें नाश पामे तेवारें जीवनो पण नाश थइ जाय ते माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय ठे एम कहेवुं वृथा ठे केमके परलोकें जाय एवो जीव नथी तो शुं ठे तोके ज्ञान ठे तेह्ज ए जूतोथी उत्पन्न थाय ठे जेम दीपक उपजीने जेवारें विनाशने पामे ठे तेवारें तेनो प्रकाश पण जतो रहे ठे तेम जूतोनो नाश थये ए जीवनो पण नाश थाय ठे. वली प्रयोग पण इहां ठे ॥ ज्ञानंनान्यजवगंजौतिकत्वात् दीपवत् ॥ अर्थः—ज्ञान ठे ते जूतथकी उत्पन्न थायठे माटे बीजे जवे जनार नथी एटले बीजा जवमां जवावालुं नथी जेम दीपक ठे तेम ए पण ठे माटे परजवे जनारो जीव नथी वली प्रत्यक्ष देखीयें ठेयें जे पांचजूतनो देखवामां आवे ठे पण जीव देखवामां आवतो नथी जेवारें माणस मरण पामे ठे तेवारें तेने बालीने राख करीयें ठेयें तिहां हाम प्रमुख तो नजरें दीठामां आवे ठे पण जीवनुं चिन्ह तो काइ देखातुं नथी एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने जासे ठे के जीव नथी बीजुं वली ताहारा मनमां एम पण थाय ठे के वेदमां एवुं पण पद ठे ॥ सवैअयमात्मा ज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो वायुमय स्तेजोमयः आपोमयः पृथिवीमयः क्रोधमयः अक्रोधमयः हर्षमयः शोकमयः धर्ममयः अधर्ममयः इत्यादि ॥ अर्थः—(स के०) ते (वै के०) पादपूरणे अथवा संबोधने (अयं के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमयः एटले ज्ञानवंत, मनवालो, वचनवालो, नेत्रवालो, एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय, जलमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय, हर्षमय, शोकमय, धर्ममय, अधर्ममय, इत्यादिक वेदनां पद देखवाथी तने शंका उत्पन्न थयेली ठे के जीव ठे के नथी एवो तुने संदेह ठे पण हे इंइजूति! योगीश्वरें प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा ते एटले ज्ञानीने

ए आत्मा प्रत्यक्ष ढे जेम परमाणु बीजा सामान्य जीवोने दीठामां आवतां नथी पण ज्ञानवंत जाणे ढे (अनुमानादपि के०) अनुमानथी पण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय ढे ते अनुमान आ प्रमाणेनेः–अस्त्यात्माशुद्धपदवाच्यत्वाद्‌घटवत्‌ ॥ अर्थः–ढे आत्मा शुद्धपद कहेवापणुं ढे माटे. जेम घट पद ढे ते असंयोगी पद ढे तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद जे ढे तेपण संयोग रहित पद ढे तेथी एनी पण नास्ति कहेवाय नही जगतमां जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य ढे ते ते पदार्थ असत्‌ नथी अर्थात्‌ सत्‌ ढे वली शास्त्रमां पण आत्मा कहे ढे तो हवे शुं जाणीयें जीव ढे के नथी केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र नास्ति कहे एवुं जाणी हे इंद्रभूति ! तने संदेह पड्यो ढे पण ते संदेह खोटो ढे, व्यर्थ ढे, केमके जीवने नास्ति कहेनारूं जे " विज्ञानघन " पद तेनो अर्थ तुं विपरीत करे ढे तेथी ए पूर्वापर विरोधने लीधे तने शंका रही ढे माटे एनो अर्थ आम करवो योग्य ढे जे विज्ञान एटले ज्ञान अने दर्शन ते अभिन्नपणायकी विज्ञानघन एवुं जीवनुं नाम ढे तेहज "एतेभ्योभूतेभ्यः" एटले भूत ते घटादिक ढे तेने देखी उत्पन्न थाय ढे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान उपजे ढे तेवारे जाणे जे घट ते एहज ढे ए ज्ञान ते (समुत्थाय के०) उपजीने (तान्येवके०) तेहज ज्ञान ते ज्ञेयनो उपयोग जावाथी तेमांज नाश थाय (अनुविनश्यति के०) पछी ते घटना बोधनो पर्याय करीने विनाश पामे ढे (नप्रेत्यसंज्ञास्ति के०) जे पूर्वली ज्ञानसंज्ञा हती ते रहे नही एटले जे घट दीठो ते घटनुं ज्ञान तेहज घटमां रह्युं पण घटनो उपयोग पटमां नथाय परमार्थ ए ढे जे इंद्रभूतिने विज्ञानघननी श्रुतिना अर्थथी संदेह हतो के जीव भूतमां उत्पन्न थाय अने भूतमांज नाश थाय परंतु परलोक नथी ए संदेह हतो ते

प्रथुयें अर्थ कह्यो के जे उपयोग पटनो हतो ते उपयोग घटमांज रह्यो? परंतु पटमां नथी जो एम न मानीयें तो (यथाकारी तथा जवति के०) जेहवुं करे तेहवुं थाय (साधुकारी साधुर्जवति के०) जलुं करनारो जलो थाय अने (पापकारी पापी जवति के०) पाप करनारो पापी थाय (पुण्यंपुण्येन कर्मणाजवति के०) पुण्य कर्म करीने पुण्य थाय (पापः पापेन जवतिके०) पापे करीने पापी थाय तथा "ददद" ए त्रण दकारनो अर्थ दया दान अने दम छे (इति दकार त्रयंयोवेत्ति के०) ए त्रण दकारने जाणे (सजीवः के०) ते जीव छे ए यजुर्वेदादिकनां पद छे ते केम मले माटे ए अनुमान करीयें॥ विद्यमान जोक्तृकमिदं शरीरं, जोग्यत्वा दोदनादिवत्॥ अर्थः—विद्यमान छे जोक्ता जेहनो एवुं ए शरीर एटले विद्यमान छे जोगवनारो जेहनो एवुं शरीर छे तो ए सूत्रथी एनो जोगवनारो जीव छे ते विद्यमान ने एम सिद्ध थयुं तेथी ए शरीर जोगववा योग्य छे माटे एनो जोगवनार पण छे जेम आहार जोग्य छे तो तेनो जोक्ता पण ने तेम ए शरीरने जोगववावालो जोगवनारो जीव छे ए अनुमानथी जीव छे तेमाटे हे इंद्रजूति! जेम (क्षीरेघृतं के०) दूधमां घृत तथा (तिलेतैलं के०) तिलमां तेल अने (काष्टेअग्निः के०) काष्टमां अग्नि तथा (सौरन्यं कुसुमे के०) फूलमां सुगंध वली (चंद्रकांतौ सुधा के०) चंद्रनी कांतिमां अमृत (यद्वत्तथा के०) जेम ए छे तेम (आत्मांगगतः प्रतिक्षेत्रं जिन्नः के०) आत्मा शरीरमां ने सर्व शरीर शरीरमां जुदो जुदो ने ते (अपौद्गलिकः के०) पुद्गल रहित (पारिणामिकः के०) पारिणामिक ने, कर्ता छे, जोक्ता छे, (सजीवः के०) ते जीव ने (अन्यथा जीवं विनादयाकिंविषया स्यात् के०) एम जो जीव न मानियें तो जीवदया ते शाने विषे होय (तस्मादस्तिजीवः के०) ते माटे हे इंद्रजूति! जीव ने ॥ [illegible]

श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा
टाली, मनतांनी, वैराग्यपामी, वीश सहस्रमी पावडीयें चडी, श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा
देइ, इंद्रनूति पगेलाग्यो अने शुद्धजावथी पांचसो छात्रो सहित दीक्षा लीधी एनुं गौतमगोत्र हतुं
माटे गौतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो जगवानना मुखथी उपन्नेवा, विगमेइवा, धुवेवा ए त्रि
पदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी जे माटे कहे छे ॥ श्लोक ॥ श्रीवीरमुखतोवेद, पदार्थ
मवगत्यच ॥ प्रव्रज्य त्रिपदीं लब्ध्वा, द्वादशांगीं स निर्ममे ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—श्रीवीरना मुखथी
वेदपदनो अर्थ जाणी दीक्षा लेइने त्रिपदी पामी बार अंगने रचतो हवो ॥ इति प्रथम गण
धर ॥ १ ॥ ॥ हवे इंद्रनूतियें दीक्षा लीधी ए वात एनो बीजो नाइ अग्निनूति छे तेणे सां
नली तेवारे विचारवा लाग्यो के कदाचित् अग्नि जे छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम
थइ जाय, पर्वत वायुथी नगी जाय, सूर्य पश्चिम दिशायें उदय थाय, चंद्रमाथी अंगारा वर्षे,
पाणी छे ते अग्निज्वाला थइ जाय, अमृत खाधाथी मरण नीपजे, विष खाधाथी जीवतो
थाय, पातालमां पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी आपे,
एटलां वानां बनी जाय तेनी ना नथी परंतु महारो नाइ ए इंद्रजालीयाथी हारी जाय ए
वात केवारे बने नही एम चिंतवना करे छे एवामां समोसरणथी केटलाक बीजा लोको गा
ममां आव्या तेमने अग्निनूतियें पोताना नाइ संबंधि वृत्तांत पूछ्याथी ते कहेवा लाग्या के
शुं पूछो छो ? इंद्रनूतितो जगवानना शिष्य थया ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या तेयें एवुं
सांजली अग्निनूति विचारवा लाग्यो के महारो नाइ अत्यंत माह्यो हतां केम छलाय! पण
देवेधायें वखते छलाइ गयो हशे तो हवे हुं त्यां जइ ए इंद्रजालियाने जीतीने महारा नाइने
पाछो वाली आवुं अने एना सर्वज्ञ पणानुं बिरुद पण टाली आवुं एम कही आमर्ष सहित

पांचशे छात्रोना परिवारे परवस्त्रो थको विरुदावली बोलावतो थको त्यां जइ समवसरणनी पहेली पावडीयें पग आप्यो तेवारे प्रजुयें पण तेने पूर्वली रीते नामगोत्र कहीने बोलाव्यो अने कह्युं के हे अग्निजूति ! तुजने कर्म छे किंवा नथी एवो संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी संशय रहे छे ते आवी रीतेः—अथ वेदपद ॥ पुरुष एवेदंङसर्वंयद्जूतं यच्च नाव्यं ॥ इत्यादिक वेदना पदथी तुं जाणे छे के जीव छे तेहज सर्व छे तो एथी बीजुं कर्म ते वली जूडं केम संजवे ! एटले कर्म नथी केमके आत्मा तो अमूर्त्ति छे तेने कर्म केम लागे कारण के मूर्त्तिने अने अमूर्त्तिने मांहोमांहे संयोग होय नही माटे कर्म नथी वली कर्मथी जीवने सुखङःख पण केम थाय ए पद उपरथी कर्म नथी एम तुं माने छे तथा वली कोइक वेदनां पद आम पण छे जे “ पुण्यः पुण्येन, पापः पापेन ” ए उपरथी कर्म छे एम पण देखाय छे. तो शुं कर्म छे के नथी ए ताहारो संदेह छे पण हे अग्निजूति ! ते जे वेदनां पद छे ते आत्मस्तुतिनां छे, परंतु कर्म निषेध करनारां नथी केमके अमूर्त्ति छते मूर्त्त ऽव्य साथे संयोग तो प्रत्यक्ष देखाय छे अमूर्त आकाशने मूर्त्ति वादला तेउने परस्पर योग थाय छे जे मूर्तिवंत छे ते अमूर्तिने सुख ङःख करे छे जेम मदिरापान करनारने अचेत पणुं थाय छे ते मदिरा मूर्तिवंत छे पण अमूर्ति जीव छे तेने मुंफावे छे ते माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे वली लोकमां एक सुजाग्य, एक ङर्जाग्य, एक सुरूपवान एक कुरूपवान, एक धनवान एक दारिड्री ए सर्व शुजाशुज कर्मविना केवी रीते संजवे ए रीते वेदपदमां पण कर्म सत्ता सिद्ध छे.तेथी कर्म अवश्य छे, इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांजलीने अग्निजूतिनो पण संशय टल्यो तेवारे अहंकार छोडी जावसहित पांचशे छात्रनी साथे दिक्षा लीधी ॥ इति द्वितीय गणधर ॥

॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजो जाइ वायुभूति ने तेणे अग्निभूतियें दीक्षा लीधी ते वात सांजली न वारे चिंतववा लाग्यो जे म्हारा बे जाइयें ए सर्वज्ञनी पासे दिक्षा लीधी तो ते कोइ महात्मा पुरुषोत्तम देखाय ने तेमाटे हुं पण तेने वांदु पूजुं अने संशय पूछी पाप रहित थाउं एम विचारी ते पण जगवान पासे आव्यो जगवाने तेमज पूर्वोक्त रीते बोलाव्यो अने कह्युं के हे वायुभूति! जीव तेहज शरीर एटले जीव अने शरीर ए बे एक ने एवो तुजने संशय ने ते वेदपदना अर्थ बराबर न जाणवाने लीधे ने ते वेदपद "विज्ञानघनएवैतेभ्योभूतेभ्यःसमुत्थाय" इत्यादिक एनो अर्थ पूर्वली पेरे जाणवो ए पदथी जीव सत्ता ने तो एम जाणीयें जे जीव ने तो ते जीवनुं जोग्य जे शरीर ते जीवथी भिन्न ने तथा ॥ सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण ॥ इत्यादि वेदपदनो ए अर्थ ने के सत्य, तप, ब्रह्मचर्य, एणे करीने संयतपुरुष, एह जाणे ने जे जीव शरीरथी भिन्न ने वली प्रमाणथी पण प्रत्यक्ष जीव अने शरीर भिन्न देखाय ने केमके ए म्हारुं शरीर ने एम कहेवाय ने तो इहां म्हारुं शरीर ने एम कहेनारो जीव ने माटे जीव अने शरीर भिन्न ने एवुं सांजली वायुभूतियें पण दीक्षा लीधी ॥ इति तृतीय गणधर ॥ ३ ॥ ॥ हवे चोथो अव्यक्त पण प्रभुपासें आव्यो स्वामीये कह्युं के पांचभूत ने के नथी ए तुजने संदेह ने ते तुं वेदपदनो अर्थ नथी जाणतो माटे संदेह रहे ने ते वेदपद (स्वप्नोपमंवैसकलंके०) स्वप्ननी पेठे सर्व ने एवो अर्थ थाय ने ए पद उपरथी तुं जाणे ने जे पांचभूत ने के नथी! पण ए पाठ जे ने ते अनित्यता बतावनारो ने परंतु भूतनी नास्ति करनारो नथी वली पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद जे ने ते सहु भूतनी सत्ता जूदी जूदी कहे ने माटे पांचभूत ने ते प्रत्यक्ष देखाय ने एवुं सांजली संशयरहित थइ तेणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति चतुर्थ गणधर

॥ ४ ॥ ॥ हवे पांचमो सुधर्म आव्यो तेने नगवाने कह्युं के हे सुधर्म! आ नवमां जे जेह्वा होय ते परनवमां तेह्वाज थाय एटले पुरुष मरीने पुरुषज थाय अने स्त्री मरण पामीने पर नवमां पण स्त्रीज थाय ठे एवो तुजने संदेह ठे ते वेदपद कहे ठे ॥ पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुतेपशुः पशुत्वं ॥ एनो अर्थ तुं आवीरीतें जाणे ठे के पुरुष मरीने पुरुष थाय अनें पशु मरण पामीने पशु थाय ए अर्थ तुं नित्य जाणे ठे परंतु नित्य नथी ए जे वेदपद ठे ते कोइक जीव आश्रयी ठे जो ए पद नित्य होय तो वेदमां लखे ठे जे ॥ शृगालोवैजायतेयःसपुरुषोदह्यते ॥ अर्थः—(यः के०) जे पुरुष (दह्यते के०) बले ठे (स के०) ते पुरुष (शृगालो के०) सीआलीउं वै शब्द पादपूरणार्थमां ठे (जायते के०) थाय ठे एटले जे पुरुष बले ठे ते पुरुष मरण पामीने सीआल थाय ठे एमां पुरुष ते सीयाल थाय एम कह्युं माटे पुरुष मरीने पुरुषज थाय एवो संशय रा खवो नही पुरुष मरी सीआल पण थाय इत्यादि सांजली संशय मटावी दीक्षा लीधी ॥ इति पं चम गणधर ॥ ५ ॥ ॥ हवे ठठो मंमितजी आव्यो तेने प्रजुयें कह्युं बंध मोक्ष ठे के नथी ए तुजने संशय ठे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी ते वेदपद कहे ठे ॥ सएषविगुणोविजुर्नबध्यते, संसरति वा न मुच्यते ॥ अर्थः—(सके०) ते (एष के०) ए (विगुणः के०) सत्वगुणादि रहित (विजुके०) सर्वव्यापी (नबध्यते के०) कर्मेकरी बंधातो नथी (संसरतिवा के०) संचरतो नथी एटले चालतो पण नथी (नमुच्यते के०) कर्मादि बंधनथी ठूटतो पण नथी ए अर्थथी तुं जाणे ठे जे जीवने बंध मोक्ष नथी परंतु एम न जाणवुं ए वेदपद जे ठे ते सिद्ध वर्णववुं ठे केमके सिद्धना जीवोने बंध मोक्ष नथी पण जे रागादियुक्त संसारी जीवो ठे तेने तो बंध अने मोक्ष बेहु ठे एवुं सांजली संशय टाली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति षष्ट गणधर ॥ ६ ॥ ॥

हवे सातमो मौर्यपुत्र आव्यो तेने प्रभुयें कह्युं हे मौर्यपुत्र! तुजने देव नथी एवो संदेह छे ते
तुं वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी ते वेदपद आम छे ॥ मायोपमान इंद्र यम वरुण
कुबेरादि ॥ एनो अर्थः– माया जेम इंद्र, यम, वरुण, अने कुबेरादिक छे एनाथी तुजने एवो
संदेह छे के देवादि सर्व मायारूप छे परंतु वस्तुगतें नथी एम तुं जाणे छे पण ए मायारूप
जे कह्या छे तेतो अनित्यता जणाववामाटे कह्याछे अने वेदमां ॥ सएप यज्ञायुधी यजमानो
जसा स्वर्गलोकं गच्छति ॥ अर्थः– यज्ञरूप आयुध छे जेहने ते ए यज्ञ करनारो यजमान त
त्काल सुधो स्वर्ग एटले देवलोकें जाय छे ए वेदपद उपरथी हे मौर्यपुत्र! देवलोक छे एम सिद्ध
थाय छे एवीरीतें वेदपदनो अर्थ सांभळी मौर्यपुत्रनो संदेह टळ्यो तेथी दीक्षा लीधी ॥ इति सप्त
मगणधर ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो अकंपित आव्यो तेने स्वामीयें कह्युं हे अकंपित! तुजने ना
रकी नथी एवीरीतनो संदेह छे ते वेदपदना अर्थनुं रहस्य तुं जाणतो नथी तेने लीधे संदेह छे
ते वेदपद कहे छे ॥ नेह वै प्रेत्य नरके नारकास्संति ॥ ए वेदपदना अर्थथी तुं एम जाणे छे
के परलोकमां नारकी नथी परंतु ते अर्थ तुं खोटो समजे छे एनो अर्थ आम छे ते हुं तुजने
कहुं हुं के (नेह के०) नहीं इहां (प्रेत्य के०) परलोकमां (नरके के०) नरकने विषे शा
श्वता (नारका के०) नरकना जीव (वै के०) निश्चें एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जा
णवुं, पण नारकी नथी एम न जाणवुं केमके वेदपदमां नारकी छे ते पद कहुं हुं ॥ नारको वै
एप जायते यःशूद्रान्नमश्नाति ॥ अर्थः– जे शूद्रनुं अन्न जीये ते नारकी थाय ए वेदपद उपरथी
नारकी छे एवो अर्थ सांभळी एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति अष्टम गणधर ॥ ८ ॥ ॥ हवे
नवमो अचलभ्रातजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्युं के ताहारा मनमां पुण्य पाप छे किंवा नथी एवो

संदेह ने ते तुं वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध समजे छे तेने लीधे छे ते वेदपद ॥ पुरुष एवेदङु ॥ इत्यादि बीजा गणधरना वेदपदना पाठमां एनो वधो अर्थ करेलो छे ते रीते आंही पण जाणवो माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे एम पुण्य अने पाप ए बे वेदमां छे ए अर्थ सांजली संदेह टाली एणे पण दिक्षा लीधी ॥ इति नवम गणधर ॥ ए ॥ हवे दशमो मेतार्यजी आव्यो तेने प्रजुयें कह्युं हे मेतार्य ! परलोक छे के नथी एवो तुजने संदेह छे तेना उपर वेदनां पद जे रीते प्रथम गणधरने कह्यां हतां ते रीते सर्व कही देखाड्यां वली ॥ अस्ति परलोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत् ॥ अर्थः–परलोक छे जो न होय तो आ लोक पण केम कहेवाय माटे ताहारा पूर्वजनी परें परलोक पण छे जेम ताहारा पूर्वज छे तो तुं पण छे अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय अने धर्म करे ते मोक्षे जाय एवो अर्थ सांजली तेणे पण दिक्षा लीधी अने प्रजुनो शिष्य थयो ॥ इति दशम गणधर ॥ १० ॥ ॥ हवे अगीआरमो प्रजासजी आव्यो तेवारे प्रजु बोल्या हे प्रजास! तुजने मोक्ष छे के नथी एवो संदेह ने ते तुं वेदपदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी तेने लीधे छे ते वेदपद कहे छे ॥ जरामर्यं एतत्सर्वं यदग्निहोत्रं ॥ अर्थः– जे ए (अग्निहोत्रं के०) यज्ञ छे (तत्सर्वं के०) ते सर्व (जरामर्यंचा के०) जावज्जीव करवो अने ए होममां जीव मरण पामे ने ते पाप रूप छे ते स्वर्गना सुख आपे पण तेथी मोक्ष न थाय केमके जावज्जीव ए करवो कह्यो माटे स्वर्गज जवाय पण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम थाय एम विचारतां मोक्ष नथीज एवो अर्थ तुं करे ने तेथी तुजने संदेह रह्यो ने परंतु ते अर्थ तुं करे ने तेम नथी एनो अर्थ आवी रीते छे ते हुं तुजने कहुं तुं ने सांजल जे ए अग्नि

होत्र छे ते जावज्जीव सर्व पण छे परंतु या शब्दथी मुक्तिना अर्थी ज जाता न तरुण मोक्षना कारण सारूं पण क्रियानुष्ठान करवुं एटले ए होमज सर्वकाल करवो नही परंतु मोक्षनो पण उपाय करवो तथा वली बे ब्रह्म छे (परमपरंके०) तेमां एकतो परब्रह्म अने बीजो अपर ब्रह्म (तत्रपरंसत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म के०) तिहां परब्रह्म तो सत्यरूप ज्ञान अनंतरूप नाशरहित ब्रह्म छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवुं ए अर्थ सांजली एणे पण दीक्षा लीधी ॥ इति एकादशम गणधर ॥ २ ॥ ॥ एरीते श्रीगोतम स्वामीथी मांमीने यावत् प्रजासजी पर्यंत सर्व मली अगीआर गणधर आव्या ते सर्वना म नमां जे जे संशय रह्या हता ते प्रजुयें टाल्या तेथी अगीआरे जणे मली पोताना चुम्मालीशसो शिष्यो सहित प्रजु पासेथी दीक्षा लीधी प्रजुयें सर्वने त्रिपदी आपी ते आवीरीतें:– प्रथम उपणेइवा ॥ एटले सर्व उपजे छे एम कह्युं तेवारे शंका पेदा थाय जे सर्व उपजे छे तो ते जगतमां केवीरीतें समाय तेवारे बीजुं पद ॥ विगमेइवा ॥ एटले विनाश पामे छे ए पदमां पण शंका उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जाय एम विचारी त्रीजुं पद कहेछे ॥ धुवेवा ॥ एटले ए संसारनी स्थिति निश्चल छे तेवारें जाणवुं जे उपजे छे, विणसे छे अने रहेनारो छे ते रहे पण छे एवी संसारनी स्थिति सदा सर्वदा त्रणेय कालमां चालती आवे छे एम त्रिपदी प्रजु पासेथी पामीने ए अगीआरेय गणधरे बे घडीमां एटले एक मुहूर्त्तमां द्वादशांगीनी रचना करी ते अवसरने विषे इंद्र महाराज पोते रत्नना थालमां वासक्षेप लेइ हाजर थया तेमांथी प्रजुयें मुठी जरीने अगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कस्यो. ए तीर्थनी स्थापना थइ देवताउए देवडुंदुभि वगाड्यां अने जयजय शब्दने बोलवा लाग्या ॥ इति गणधरवाद

स्तथा गणधरस्थापनाधिकारः ॥३॥ ॥ पछी चंदनबालायें जगवाननी देशना सांजली प्रतिबोध पामीने महामहोत्सव सहित प्रजुपासेथी दीक्षा लीधी तेनी पठवाडे बीजा पण घणा जनोए दीक्षा लीधी घणा श्रावक थया,घणी श्राविकाउ थइ, एम चार प्रकारना संघनी स्थापना करी॥ ॥ हवे गौतम स्वामीनो संबंध कहे ठे, गौतम स्वामीनुं उत्कृष्टरूप, प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान, ठठ अठमादिक तपश्चर्या करता थका, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अठावीश लब्धि नाधरनार, चार ज्ञानवंत, चौदपूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, तेने केवल उपजे पोताने प्रजुउपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नही तेवारें चिंतव्युं जे केम मने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाशे के नही ? गौतमनी एवी चिंतवणीजोइ श्रीवीर जगवान देशनामां एवीरीतें बोल्या के जे पोतानी लब्धियें अष्टापद पर्वत उपर चढी चोवीश तीर्थंकरनें वांदे, ते जीव तेहज नवें मोक्ष जाय, एवी वीरनी वाणी सांजली वत्रीश कोश उंचो अष्टापद पर्वत ठे जेनी आठ पाव डीयो ठे तेना उपर सूर्यना किरण अवलंबीने श्रीगौतम स्वामी पोतानी लब्धियें चढया, तिहां चोवीश जिनने वांदी जगचिंतामणि स्तवन जोडी श्रीवयरस्वामीनो जीव तिर्यक्जृंजकनामा सामानिक देवठे तेने पुंमरीकाध्ययनें प्रतिबोधीने नीचें उतरया, तेवारें पन्नरशेनें त्रण तापस चोथ, ठठ अने अठम तपने पारणें कंदमूल फलादिनुं पारणुं करे, एम करतां बार मास वहि गया ठे तेमणें श्रीगौतमने उतरता दीठा तेवारें चिंतव्युं जे आपणे एना शिष्य थाइयें तो अष्टापद उपर जइ देवने वांदीयें एम धारी उवीने श्रीगौतमजीने पगें लागा, गौतमें तेमने प्रतिबोधिने दीक्षा आपी पठी मंकोलारें अष्टापदें चडावी तापसने देव वंदावीने पाठा उतास्या, तेवारें गौतमजीयें पूठ्युं के हे शिष्यो ! तमें पारणुं करशो ? ते बोल्या हा स्वामी, पठी गौत

मजी पोतानी लब्धियें करी खीरनो एक पडघो सवा शेरनो जरी आव्या अने तापसोने कह्युं के तमो पारणुं करो, तेवारें खीरपात्र देखी तापस कहेवा लागा के खीर थोडीने खानार घणा माटे आटली खीरथी तो आंखे आंजण थाशे? अथवा बधाने एकेकुं टीपुं कराशे! पछी, गौतमजीयें कह्युं के हे शिष्यो मांमले चालो म्हारे पारणुं करी गुरु पासें जावुं छे एम कही मांमले बेसाडी तापसोनो संदेह जांजवाने अर्थें खीरना पात्रमां पोतानो अंगुठो मेल्यो, तेवारें अक्षीण लब्धियकी पन्नरशें त्रणे तापसने पारणां कराव्यां, पोतें पण पारणुं कर्युं, तिहां पांचशे ने एक तापसने तो खीर जमतां जमतां श्रीगौतमना गुण चिंतवतां चिंतवतां केवल ज्ञान उपन्युं अने पांचशेंने एकने प्रजुनुं समोवसरण देखी केवल ज्ञान उपन्युं तथा पांचशें एक तापसने तो श्रीवीर जगवाननुं मुख देखतांज केवल ज्ञान उपन्युं एम पन्नरशें त्रणे तापस केवली थया तेणे वीरजगवानने वांदी केवलीनी सजायें जावा मांड्युं, तेवारें गौतम बोल्या हे शिष्यो! तमे छद्मस्थनी सजायें बेसो अहींयांतो केवलीनी सजा छे माटे न बेसवुं तेवारें वीरजगवान् बोल्या हे गौतम! तमें केवलीनी आशातना म करो, ए पन्नरशें त्रणे केवली थया छे, ते सांजली गौतम खेद पाम्या के शुं? म्हारा शिष्य केवली थया पण हुं केवली थातो नथी एम घणो घणो चित्तमां खेद करवा लाग्यो, तेवारें जगवानें कह्युं के हे गौतम! तुं खेद म कर, अंते आपणे बे सरखा थाशुं॥ इति गौतम संबंधः॥ हवे जगवानें कया कया गाममां केटलां केटलां चोमासां कर्यां ते सूत्रकार कहे छेः– ते कालने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवंत श्रीमहावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्रायें वर्षाकालनुं पहेलुं चोमासुं थयुं तेवार पछी चंपानगरीमां अने पृष्ठचंपानी निश्रायें त्रण चोमासां वर्षाविकालनां थयां एवं चार तथा विशाला नग

रीयें वाणिय गामनी निश्रायें करीने बार चोमासां वर्षाकालनां थयां एवं सोल तथा राजगृह नगरना नालंदीनामे पाडानी बाहेर निश्रायें चौद चोमासां वर्षाकालनां थयां एवं त्रीश तथा मिथिला नगरीयें छ चोमासां कस्यां तथा भद्दिका नगरीयें बे चोमासां कस्यां तथा आलंभिका नगरीयें एक चोमासुं कर्युं तथा सावत्थि नगरीयें एक चोमासुं कर्युं तथा अनार्य देशमां एक चोमासुं कर्युं एवं एकतालीश थयां ठेलुं बेतालीशमुं चोमासुं मध्यम पावापुरी अपापा नगरीयें हस्तिपाल राजानी जूनी लेखकशालामां जगातनी मांडवी कारकुननी सभामां वर्षाकाले रह्या ॥ १२३ ॥ ते चोमासानो चोथो महीनो सातमुं पखवाडीयुं कार्त्तिक वदि आमावास्याना दिवसनी रात्रिना छेहडाने विषे, भगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया. जाति, जरा, मरण बंधन एटले जनमवुं, वृद्ध थावुं, मरवुं तेनुं जे बंधन तेने छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जाणवा वाला थया, मुक्त थया, सर्व दुःखनो अंत कस्यो, संताप रहित थया, सर्व दुःखनो क्षय थयो. ॥१२४॥ पांच संवत्सर मांहेलो चंद्रनामा बीजो संवत्सर वर्त्ते छे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास ते कार्त्तिक मास तेने विषे, नंदीवर्द्धन नामा पक्ष, अग्निवेश्य नामा दिवस तेने विषे तथा क्यांएक उपशम एवुं बीजुं नाम ए दिवसनुं कहे छे, देवानंदा नामा रात्रि क्यांएक बीजो निरत्ति एवुं नाम पण ए रात्रिनुं छे जे लवमां भगवंत मोक्षे पहोता ते लवनो नाम अर्च छे एटले अर्च नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासोच्छ्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण, सर्वार्थ सिद्ध नामा मुहूर्त्त, स्वाति नामा नक्षत्रनी साथें चंद्रमानो योग होते छते भगवान काय स्थिति भवस्थिति खपावीने कालगत थया, यावत् मन संबंधि शरीर संबंधि सर्व दुःखथी रहित थया ॥ १२५ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रा



भगवान् सुवर्ण कमलें बेश घणा भव्यजीवोने धर्मोपदेश देता थका निर्वाण पाम्या समाधिस्थ थया



त्रियें चारे निकायना घणा देव, घणी देवीयो स्वर्गलोक थकी हेठा तिर्यग् लोकने विषे उतरवा लाग्यां तेणे करी तथा उंचा उर्ध्वलोकने विषे जावा लाग्यां तेथी करीने ते रात्रिने विषे आकाशमां घणो उद्योत होतो हवो ॥१२५॥ ॥ जे रात्रियें श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया, ते रात्रियें घणा देव अने देवीयो आवतां जातां बहुज आकुल थयां तेथी अव्यक्त कोलाहल शब्द थवा लाग्यो ॥१२०॥ ॥ जे रात्रियें भगवान श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमां गौतम जे इंद्रभूति अणगार भगवानना शिष्य तेनुं प्रेमबंधन त्रूटयुं तेथी श्रीगौतमजीने केवल ज्ञान केवल दर्शन उपन्युं ॥ १२७ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीगौतमस्वामीजीने केवल ज्ञान उपन्युं ते केवीरीते उपन्युं तेनी कथा कहे छेः— पोतानो अंतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवें श्री गौतमजीनो पोतानी उपर निबिड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्त्तन करवाने अर्थें संध्यासमयथी पहेलां श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा सारुं पार्श्ववर्त्ती ग्रामें मोकल्या हता, ते ब्राह्मणने प्रतिबोध आपी तिहां रात्रि रही प्रभातें पाछा वल्या, तेवारें मार्गमां केटलाएक देवोने शून्य चित्तें देख्या अने उपयोगथी वीरनिर्वाण सांभल्युं, ते वारें वज्राहतनी पेरें मूर्छा पाम्या, थोडीवेला पछी सावधान थया, तेवारें मोहने वशें विलाप करवा लागा के हे प्रभो ! तमे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हवे मिथ्यात्वरूप अंधकार पसरवा मांडशे ! कुतीर्थरूप घुवडना समूह जागृत थइ गर्जारव करशे ! दुरमति दुःकालरूप राक्षस प्रवेश करशे ! कुमतिरूप चोर घणा थाशे ! जेम सूर्य अस्त थये कमल कुमलाय, तेम चतुर्विध संघरूप कमल वन कुमलाशे ! जेम चंद्रविना आकाश, जिम दिवाविना मंदिर, जेम सूर्यविना दिवस, ए जेम शोभता नथी तेम तमारा विना ए भरत क्षेत्र शोभा रहित थाशे !

हे वीर तमारा विना हवे सात प्रकारना इति उपद्रव प्रवृत्त थशे, हे वीर तमारा विना पाखंमी रूप तारा दे दीप्यमान थशे, तमाराविना धर्मरूप चंद्रमाने पापरूप राहु ग्रहण करशे, हे श्री महावीरदेव ! हवे हुं कोना पगतलियां उल्लासंतो थको म्हारा मनना संदेह पूछीश कोने हुं जगवान् कही बोलावीश ! कोने हुं नमीश ! हे प्रभो ! हवे मुजने तुम विना बीजो कोण गौतम कही बोलावशे ! हाहा ! ! हे वीर हे वीर ! तमें ए शुं कर्युं जे आ वखतें मने दूर कीधि, लौकिक पणुं पण नही राख्युं, हुंशुं बालकनी पेरे आडो वेशी आपनो छेहडो पकडी रहेत ? अथवा शुं केवल ज्ञाननो जाग मागत ? शुं मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा शुं तमोने कांइ जारलागत ? के मुजने जोलावीने चाल्या गया, हे वीर जे वेलायें पोतानो बालक वेगलो होय तो पण तेने बोलावीने पोतानी पासें राखवो जोइयें ते वेलायें उलटो तमे मुजने पोताथी दूर कर्यो, हे वीर तमे शुं तमारा उपर म्हारो कृतिम स्नेह जाण्यो ? हे वीर हुं तमारे शुं असुखकारी थातो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर तमे मुजने केम वीसारी मूक्यो, हे वीर तमे आजे मुजने म्होटा विरह रूप समुद्रमां नाख्यो, हे वीर तमारा विना हुं म्होटा वियोग रूप दाहमां दाझ्यो, हवे तमारा विना म्हारो दुःख कोण जांजशे, हे वीर हवे समोसरणनी शोजा विलय थइ गइ, हवे मुक्ति मार्गनो साथ जांग्यो, हे वीर हवे जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना चतुर्विध श्रीसंघ टलवलतो थशे, हे वीर तमारा वचनरूप उपशम जलविना जिनशासन रूप वाडीयो बाग बगीचा सूकाइ जशे, हे वीर तमारा विना समता रूप केतकी सूकाइ जशे, हे वीर हवे जव्यजीवना मनरूप जमर ते किहां जइने गुंजारव करशे, हे वीर हे गुणनिधान, हे जिनशासन नायक, हे जव्यजीव सुख दायक, हे

जिनशासन सणगार, हे करुणासागर, तमे मुजने विलविलतो मूकीने साताराज दूर जइ वस्या तो हाहा हे वीर हवे हुं कोनी साथें संदेसो कहेवरावुं एम अनेक प्रकारें गौतमजी प्रशस्त मोहना उदयथी नाना प्रकारनो दुःख करता थका श्री गौतमने वार वार मोहने वशें करी वीर! वीर! एवा अक्षर मुखें रही गया. पछी गौतमजीयें विचार्युं जे ए श्रीवीतराग तो निःस्नेहीज होय, माटे अहींआं तो महारोज अपराध छे, हुंज भूलो थयो जे में मोहने वशें तदा श्रुतनो उपयोग आपी जोयुं नही माटे ए महारा एक पखा स्नेहने धिःकार होजो. ए स्नेहें सर्युं॥ अरे आ मोहराजानो कहेवो महात्म्य छे जे महारा सरखाने पण एवीरीतें पीडाकरे छे तो वली बीजा ते सी गणतीमां? अरे में रागना वशथकी विचार्युं नही जे ए श्रीवीर प्रभुतो निरागी निस्नेही हता तो महारे एना उपर राग करवो ते फोकट छेक कारीज जाणवो ए निरमोहीने शानो मोह होय अर्थात् कांइ पण नहोय वली हे जीव तुं कोणछो अने ते कोण छे तेमां पण जो निश्चे दृष्टीयें विचारवा जइयें तेवारें तो श्रीवीर अने हुं कांइ जूदा नथी केमके आ आत्मातो एकज ज्ञान, दर्शन, चारित्र मयी शाश्वतो छे, बीजा सर्वभाव अशाश्वता छे, हुं एकलो छुं, महारो बीजो कोइ स्नेही नथी, जगतमां कोइ कोइनुं नथी इत्यादिक सम भावना भावतां श्रीगौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं, इंद्रादिकदेवतायें प्रभातें केवलज्ञाननो महोत्सव कीधो, इहां कवि युक्ति करे छे के श्रीगौतमस्वामी अहंकारथी तो प्रतिबोध पाम्या अने रागथी गुरुभक्ति करी तथा विषवादमां केवल ज्ञान पाम्या ए आश्चर्य छे, दीर्घायुष्यवंत जाणीने सौधर्मस्वामीने पाटदीधो॥ पछी बार वरस केवल पर्याय पाली सर्व मली बाणुं वर्षायु पाली, मोक्षें पोहोता छे ए गौतमस्वामी जेमने दीक्षा आपे ते तेहज भवमां मोक्ष जाय ए गौतम

स्वामीमां महोटो अतिशय कह्यो छे इति गौतम केवलोत्पत्ति संपूर्ण ॥ जे रात्रीयें नगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां नव मल्लनी जातिना उपन्या, नव लछनी जातीना उपन्या, काशी कौशल्य देशना मालक गण एटले परिवारना धणी एवा अढारे गण राजा छे ते नगवानना मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे देशना राजा मित्र समान छे माटे मलवाने अर्थें आव्या छे ते राजा अमावास्याने दिवसें उपवास करीने रात्रें पोसहमां बेठा हता पछी ते राजाउए नगवंत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञान रूप जे जाव उद्योत हतो तेतो गयो तो हवे इव्य उद्योत करीशुं ॥ १२९ ॥ एटले पोसह उपवास रूप जे इव्य उद्योत ते आगला वरसो वरसें ए अमावास्या आवे थके करीशुं अथवा हवे इव्य उद्योत करशुं एवुं विचारीनें दीवा प्रमुख इव्य उद्योत कस्यो ते दिवसथी मंगलिकने अर्थें महोटुं पर्व दीवालीनुं थयुं ते पर्वे नगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपद्रव सुख पाम्या ॥ वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसें गौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्युं तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी बीजने दिवसें नगवानना महोटो नाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रजुनुं निर्वाण सांजलीने घणोज शोकवंत थयो तेनो शोक मटाडवा सारूं नगवाननी बहिन सुदर्शनायें पोताने घेर नंदीवर्द्धनने तेडीने जिमाड्यो नाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमां नाइबीज चाली ॥१२९॥ जे रात्रिमां नगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां कुइ एटले क्रूर स्वनाव छे जेनो एवो अवधासी ग्रह माहेलो त्रिशमो नस्मराशिनामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र उपर स्थिति छे ते नगवानना उत्तराफाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र उपर आव्यो छे ॥ १३० ॥ ॥ जे दिवसथी नस्मराशि नामा महोटो ग्रह नगवानना जन्म नक्षत्र उपर आव्यो ते दिवसथी प्रारंजीने निर्ग्रंथ जे साधु साधवी छे तेमनी घणी

पूजा एटले वळीने जलुं थालुं आहारादिकनुं देवुं तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनुं देवुं तेनी वृद्धि थाशे नही ॥१३१॥ इहां प्रथम जगवानने सोधर्मेंई वीनंति करी हती के हे महाराज! तमे मोक्ष जाउंशो परंतु तमारा संतानीयांने बे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे माटे बे घडी जस्म ग्रह बाकी रह्यो ने एटलुं बे घडीनुं आयुष्य तमारुं वधारो एटले जस्मग्रह उतरी जाय तो पाछळथी आपना संतानीयां चेला चेलीने शाता उपजशे ते सांजळी जगवान बोल्या हे इंड! ए वात कोइ काळमां न थाय तमे तो बे घडी आयु वधारवा कहो गो परंतु एक समय मात्र आयु पण महाराथी वधे नही त्रूटयुं आयु कोइथी वधार्युं जाय नही ए एमज जावी ने जे बे हजार वर्ष पर्यंत महारा तीर्थमां शिष्योने बाधा थवा वाळी ने तेने कोण वर्जी शके कोइनुं पण सामर्थ्य नथी अने जेवारे जस्मराशी ग्रहना बे हजार वर्ष पुरण थइ जाशे तेवारे निर्ग्रंथोनी पणीज पूजा सत्काराधिक मानता थाशे धर्मनो उदय थाशे, श्रीसंघने हर्ष थाशे ॥ श्लोको ॥ घडीन लघे आगली, इश्युं अखे वीर ॥ इम जाणी जीव धर्मकर, ज्यां लगे वहे शरीर ॥ १३२ ॥ ॥ जे रात्रियें जगवान मोक्ष गया ते रात्रयें घणा जीणा जीणा कुंथुआ तेंड्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उहला पण नजाय, उहरीने अलगा पण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे नही आवे सीघ्र चाले तेवारे देखाय ॥ १३३ ॥ ते देखी घणा साधु साध्वीयें जात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी अनशन कर्युं तिहां शिष्यें पुछयुं जे हे गुरु महाराज आवी रीतनो उपद्रव केम थयो तेवारें गुरु बोल्या हे वत्स! आज पछी चारित्र कुःखे पळशे ॥ १३४ ॥ ते काळने विषे ते समयने विषे जगवान श्रीमहावीरस्वामीने इंद्रजूति आदेदेइने चौद हजार उत्कृष्टी साधुउनी संपदा थइ ॥ १३५ ॥ ॥ जगवान श्रीमहा

वीरस्वामीने चंदनबाला प्रमुख छत्रीश हजार उत्कृष्टी साध्वीउंनी संपदा थइ ॥ १३६ ॥ ॥ जगवानने शंखजी तथा शतकजी आदे देइने १५ए००० उत्कृष्टी श्रावकोनी संपदा थइ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ जगवानने सुलशा, रेवती प्रमुख ३१७००० उत्कृष्टी श्राविकाउंनी संपदा थइ ॥ १३७ ॥ जगवानने केवली नही पण केवली सरखा सर्व अक्षरोना संयोग जाणे तेवा केवलीनी पेरें सत्य प्ररूपणा करवा वाला एवा त्रणशें साधुउं चौद पूर्वधारीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १३ए ॥ जगवानने तेरशो साधुउं अवधिज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ १४० ॥ ॥ जगवान श्रीमहावीर स्वामीने सातसें केवलज्ञानी संपूर्ण केवलज्ञान अने केवल दर्शनना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४१॥ ॥ जगवानने जे देवतानी रुद्धि बनावी लीये एवा सातशें वैक्रियलब्धिना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४२॥ ॥ जगवानने पांचशें विपुलमति जे अढीद्वीप बे समुद्रमां संज्ञीपंचेंडीय पर्याप्ता जीवोना मनना जाव जाणे एवा विपुलमति मनःपर्यवज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ १४३ जगवानने जे देवो अने मनुष्योनी परषदामां बेशी वाद करता कोइथी हारे नही एवा चारसे वादिउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥१४४॥ ॥ श्रीमहावीरने जे अंते एटले समीपे वासी एटले वसे रहे तेने अंतेवासी कहीयें एवा सातशे शिष्य उत्कृष्टा मोक्ष गया ए जगवानना पोताना हाथ दिक्षित जाणवा तथा चौदशे साधवी उत्कृष्टी मोक्ष गइ ते पण पोतानी हाथ दिक्षित जाणवी ॥१४५॥ ॥ श्रीमहावीरने जे आगामि जवे मोक्ष जावावाला जेमनी गतिनुं जद्रुं आयुष्य एवा उत्कृष्टा आठशे साधुउं विजयादि पांच अनुत्तर विमाने गया ॥ १४६ ॥ श्रमण जगवान् श्रीमहावीर स्वामीने बे प्रकारें अंतगड जूमि थइ एटले मुक्ति मार्गनी मर्यादा थइ ते आवी रीते के जव जे संसार तेनो अंत कस्यो तेनी जे जूमिका एटले मर्यादा अथवा

कर्मनो अंत करयो तेनी मर्यादा ते बे प्रकारनी थइ ते बे प्रकारना नाम कहे छे एक युगांत
कृत भूमि अने बीजी पर्याय अंतकृत भूमि जाणवी तेमां प्रथम युग एटले कालमान विशेष,
अनुक्रमे गुरु शिष्य प्रतिशिष्यादिरूप जे पुरुषो तेना प्रमाणे कालमान जाणवुं ते आंही
श्रीवीर भगवानने त्रण पुरुषना पाट पर्यंत काल सुधी कर्मनो अंत थयो एटले बीजा घणा
जीवोए कर्म खपाव्यां छे ते श्रीवीर भगवानना पाटथी मांमीने श्रीजंबूस्वामी पर्यंत मोक्ष
मार्ग चाल्यो तेमां एक तो श्रीवीर भगवान पोते बीजा तेमने पाटे तेमना शिष्य श्री सुधर्मा
स्वामी त्रीजा भगवानना प्रतिशिष्य अने श्रीसुधर्म स्वामिना शिष्य श्रीजंबूस्वामी ए त्रण पाट
सुधी मोक्ष मार्ग वह्यो छे तेने युगांतकृत भूमि कहीयें अने बीजी पर्याय अंत कृतभूमि ते
श्रीतीर्थंकरने केवल ज्ञान उपन्या पछीनो काल ते आश्रयी जाणवो ते भगवान श्रीमहा
वीरस्वामिने केवलज्ञान उपना पछी चार वर्षे मुक्तिमार्ग वह्यो एटले प्रभुने चार वर्षनो केवल
पर्याय थया पछी बीजा कोइक जीवने कर्मनो अंत थयो कोइ मुनि मोक्ष गयो एम चार वर्ष
वीते मोक्षमार्ग प्रवर्त्यो छे, बीजा जीवोने कर्मनो अंत थयो छे ते पर्याय अंतकृत भूमि क
हीये ॥ १४० ॥ ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी
त्रीश वर्ष घरवासे रह्या अने कांइक जाजेरा बार वर्ष छद्मस्थ पणे रह्या तथा कांइक उंणा
एटले साडा छ मासे उणा त्रीश वर्ष केवली पणे विचर्या एकंदर बेतालीश वर्ष लगे चा
रित्र पर्याय पाली साधुपणुं पाल्युं सर्वमली बहोतेर वर्षनुं आयुष्य पालीने वेदनीकर्म, आ
युकर्म, नामकर्म अने गोत्रकर्म ए चार कर्म शेष रह्यां हतां ते क्षय थयां तेवारे एहज
अवसर्पिणी कालने विषे दुषम सुसमानामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने चोथा आरानां

त्रण वर्षने साडा आठ महीना बाकी रहे थके पावानगरीमां हस्तिपाल राजानी कारकुननी सनामां पोते एकला परंतु साथे बीजो कोइ नही एटले बीजा तीर्थंकरो सर्व साधुउना परिवार सहित मोक्ष गया ने अने श्रीवीर जगवान तो एकलाज बेलानुं तप एटले पाणी रहित बे उपवास चउविहारा करीने पलांठीवाली बेठा थका स्वाति नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके पाठली चार घडी रात रहे थके पञ्चावन्न अध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला अने पञ्चावन्न अध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा ठत्रीश अध्ययन पूठ्या विना कहीने ठेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनुं अध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, उंचा गया, जाति जन्म जरा मरणनुं बंधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो अंत करीने सर्व संताप रहित थया. दुःखथी ठूटा ॥ १४८ ॥ ॥ जगवान श्रीमहावीर स्वामि मोक्ष गया पठी नवसे वर्ष बीत्यां अने दशमां सैकडानां एंसी वर्ष थयां तेवारे एटले वीरनिर्वाणथी ९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं अने वांचनामां नवशे त्र्याणु वर्षे पुस्तक लखाणुं एवुं देखाय ने ॥ १४९ ॥ हवे जगवंतनुं निरवाण थयुं, तेवारे इंद्रादिकना आसन चलायमान थयां, जगवंतनुं पांचमुं निर्वाण कल्याणक जाणी सर्व इंद्र जेगा थइने चमरेंद्रादिकें बावना चंदने करी जगवंतनी चय रची, अग्निकुमार देवोयें अग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, जगवंतना मांस सर्व शोषाव्यां पठी मेघकुमार देवोयें वरसाद वरषाव्यो शरीरनी राख खीर समुद्रमां नाखी, जगवंतनी उपरली दाढा सौधर्मेंद्रे लीधी, हेठली दाढा चमरेंद्रे लीधी, ते दाढाने रत्नमय डाबडामां राखी पूजे. ए विस्तारे अधिकार श्री जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां कह्यो ने, त्यांथी जोवुं ॥ हवे पुस्तक लखाणुं ते आ प्रमाणे के श्रीवीर निर्वाण पठी वल्लनीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण



भगवानने अग्नि संस्कार करवामाटे पालखीमांथी उतार्या







मण प्रमुख सर्व श्रीसंघे मलीने सिद्धांत पुस्तकारूढ कीधो, पढले आगम तो सर्व मुखे आ
चार्य प्रमुखने मुखपाठे हतां पढी बार वर्ष दुःकाल पड्यो तेने लीधे केटला एक साधुउ मरण
पाम्या तेथी घणा सूत्रपाठ साधुउने मुखे हता ते विछेद गया, तेवार पढी जेवारे सुगाल
थयो, तेवारे सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो संघ नेगो थइ जेने मुखे जेटलो पाठ स्म
रणमां रह्यो हतो ते सर्व ताडपत्र उपर लखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटला एक एम कहे छे
के नवशें एशीमा वर्षथी सर्व सिद्धांत पुस्तकें लखवा मांड्या ते नवशेंने आणुंमे वर्षे आनंदपुर
जयाइ रह्या एवुं पण देखाय छे यतः ॥ वलहिपुरंमिनयरे, देवड्ढिपमुह सयल संघेहिं ॥
पुत्थे आगमलिहिउ, नवसय असिआउ वीराउ ॥ १ ॥ तथा कोइ एक कहे छे के स्कंदिला
चार्ये माथुरी वाचना करी पुस्तक लिख्यो छे तथा कोइएक कहे छे के कालिकाचार्ये चोथनी
संवत्सरी नवशेंने आणुं वर्षे थापी अने पढी चौमासी एक दिवसे थापी एवा केटला एक
मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे. ए वातनो विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जा
णवो ॥ श्रीवीर प्रभुना शासननुं प्रमाण एकवीश हजार वर्षनुं कह्युं छे ॥ श्रीवीर प्रभुना नव ग
णधरो प्रभु पोते छतांज राजगृहि नगरीयें एक महीनानी संलेषणा करीने परिवार सहित
सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण पढी बार वर्षे श्रीगौतम स्वामी मोक्ष पाम्या छे, सांप्रत पां
चमा कालना जे मुनिराज वर्ते छे ते सर्व भगवंतना पाटे श्रीसुधर्मा स्वामी पांचमा गणधर
थेला हता तेनो परिवार जाणवो ते श्रीसुधर्मा स्वामी वीरनिर्वाण पढी वीश वर्षे सिद्धि पाम्या
छे तथा श्रीवीर भगवानना जन्म चैत्र महीनामां छे अने कार्तिक मासमां मोक्ष गया छे
माटे महावीर स्वामीनुं बराबर आयुष्य नथी ते माटे घणा ग्रंथोमां संवत्सरना दिनमाननो फेर

देखाडी समाधान करे छे परंतु खरेखरी वात केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना पांच कल्याणक विस्तारे कह्यां ए छठा वखाण पर्यंत श्रीवीर जगवाननो अधिकार जाणवो ॥ इति सुबोधिनी जाषायां षष्ठी व्याख्यानं समाप्तं ॥ ६ ॥ ॥ अथ सप्तम व्याख्यान प्रारंनः ॥ ॥ हवे पश्चानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनां पांच कल्याणक कहे छे. ते काजने विषे ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शिलाका पुरुषमां प्रसिद्ध जेने सर्व मतवाला जाणे छे एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया ते कहे छे. विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कुखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमां जन्म पाम्या, विशाखा नक्षत्रमां गृहस्थ पणाने त्यागीने साधु पणानुं ग्रहण कीधुं, एटले दिक्षा लीधी, विशाखा नक्षत्रमां सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयुं छे अने विशाखा नक्षत्रमां मोक्ष गया छे इति संक्षेप वाचना ॥ १५० ॥ ॥ हवे विस्तारथी वाचना लखीये छैयें ते काजमां ते समयमां श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोमां प्रधान ते उनालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडयुं एटले चैत्रवदि चोथने दिवसे प्राणातनामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनुं आउखुं पुरण करीने तिहांथी चव्या ते इहां जंबुद्वीपना जरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमां अश्वसेन.नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूखे मध्यरात्रीयें विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार, देव संबंधि शरीरनो त्याग करीने ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ७०० ॥ गर्नपणे उपज्या ॥ १५१ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ जगवान प्राणात देवलोकें कया जवथी आव्या ते दर्शाववा सारु श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना दशजव लखियें छैयें ॥ आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वजूति नामे

पुरोहित हतो तेनी अनुद्धरी नामनी स्त्रीना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता पछी अनुक्रमे तेनां माता पिता काल धर्म पाम्यां केडे राजायें कमठने पुरोहित पदवी आपी पण ते कमठ स्वनावे कठोर, लंपटी, डुष्ट मागालक्षणवालो मूर्ख हे तेनी स्त्रीनुं नाम वरुणा हे अने मरुभूति तो सरल स्वनाववालो नश्कपरिणामी धर्मात्मा श्रावकधर्म पा लनारो हे तेनी स्त्री वसुंधरा नामे अत्यंत सरूपवाली अने घणी चपल स्वनाववाली हे एक दिवसे ते कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी रूपें मोह्यो थको जोग करवाने माटे तेने बे त्रण वार पोतानी तेवारे ते स्त्री पण कमठ उपर राग करवा लागी एक दिवसे कमठे प्रधान वस्त्रानूषण आपीने वसुंधराने पोताने वश करी मांहोमांहे प्रीति बांधी जोग कर्म करवा मांम्यो ते वात कमठनी स्त्री वरुणाना जाणवामां आवी तेवारे पोताना नरतारने कहेवा लागी जे हे नरतार! आ अकृत तमे करोगो ते सारुं देखातुं नथी जो देवरना जाणवामां आवशे तो लोकोमां निंदा थाशे एवो पोतानी स्त्रीयें कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नही तेने लीधे ते वरुणा नाराजी थइ थकी कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही तेवारे मरुभूतियें जाण्युं जे पोतानी नजरे दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नही एम विचारी एकदिवसें कपटथी कोइक गामे जवानो मिष करीने बाहेर गयो वली कापडीनो वेश करी पाछो मरुभूतिने घेर एटले पोताने घेर आवी रह्यो ते रात्रीयें तेणे डुराचार। कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने क्रीडा करतां दीठां तेवारे क्रोधकरीने प्रजातें कमठना डुराचारनी वातो अरविंद राजा आगल आवीने कही राजायें कमठने पकडी चोरनी पेरे चुंमे ह्याने करी रासन उपर चडानी नगरमां फेरवी विटंबना करी शहेरनी बाहेर काहाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरो

हित गयो पछी कमठ दुःखी थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लइ बारवर्ष पर्यंत तपस्या करतो पृथ्वीमां नमतो नमतो फरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्वतनी उपर आवी तपस्या करवा लाग्यो पण गाममां न आवे गामना सर्वलोक तेने तपशी देखी नो जनादिक आपे प्रशंसा करे तेवात मरुभूतियें सांजलीने विचार्योजे ए महारो महोटो नाइ छे में एने दुःख दीधुं छे तेथी तापस थयो छे माटे हुं पण जइने महारो अपराध खमावी आवुं एम चिंतवी घणा नोजनादिक रंधावी साथे लइ कमठने खमाववा गयो तिहां जइ तेने पगे लागी पोतानो अपराध खमावी पाछो वले छे एटलामां कमठे मरुभूतिने उंनखी पोतानो वैर संनारी तेना मस्तक उपर एक महोटी शिला नाखी तेथी मरुभूति मरण पाम्यो ए पहेलो नव कह्यो ॥ १ ॥ ॥ हवे ते मरुभूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे नवें विंध्याचलनी अटवीमां सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव पण दुष्टकर्मना जोरथी ते पर्वत उपरथी उतरतां नीचें त्रूटी पड्यो तेथी मरण पामीने तेहज विंध्याचलनी भूमिमां पंखीनी पेरे उडतो चाले एवो कूर्कट नामे सर्प थयो हवे एकदा अरविंद राजायें संध्या समयने विषे पंचवर्णां वादलां दीठां तेथी वैराग्य पामी दीक्षा लेइ अगीआर अंग नणी उग्रतप करता थका एकाकी विचरवा लाग्या एकदा सागरचंद नामा सार्थवाहना संघनी सार्थे अष्टापद समेतशिखरनी यात्रायें गया तिहां विंध्याचल वनमां एक सरोवर देखी संघे तेस्थानके उतारो कर्यो एवामां मरुभूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते पोतानी हाथणीयोना परिवार सहित तिहां सरोवरने विषे जल पीवा सारुं आव्यो तेणे क्रोधें करी सर्व संघने उपद्रव कर्यो तेथी सर्वे सार्थवाहना लोक नासी गया पछी साधु काउस्सग्गमां रह्या हता तेने ते हाथी मा

रवा आव्यो तेवारें मुनिना तपप्रजावथी तिहां थंनाइ गयो ते अजगो रह्नो थको मुनिने जो
वाजागो मुनिने जोतां थकां हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें पूर्वजा नव देखी साधुने
उंलख्या पछी शूंढ लांबी करी साधुनें पगें लागो मुनियें पण नव्यजीव जाणीने तेने प्रतिबोध
आप्यो तेथी ते हाथी समकेत पाम्यो ते जोइने बीजा पण घणा लोक तिहां प्रतिबोध पाम्या
पछी हाथीयें श्रावक धर्म अंगीकार कस्रो श्रावकना बार व्रतनी अनिलाषा धरतो थको सा
धुने नमस्कार करी सरोवरमांथी पाणी पीइने पोताने स्थानकें गयो साधुजा पण तिहांथी
विहार करी सथवारानी पाठल चाली यात्रायें गया चारित्र पालीने शुजगति पाम्या हवे मरु
नूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उनालाना दिवसोमां मध्यान्ह समयें तृषायें पीडायो थको
तलाव उपर पाणी पीवाने आव्यो तिहां कादवमां खूची रह्यो ते वखत पेहेलो कूर्कट सर्प
पण तृषायें पीडायो थको उडतो उडतो तिहां आव्यो तेणे पाणी पीइने पछी हाथीने दीठो
तेवारे आगला नव ना वैरनेलीधे हाथीनी उपर चढीने तेना मस्तकमां मंक माख्यो तेथी
तेज वखत हाथीने जेर व्यापी गयुं तिहां श्रावकधर्म पालवाना योगें शुजध्याने मरण
पाम्यो ए बीजो नव ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजे नवे ते हाथी त्यांथी मरण पामीने आठमें
देवलोकें देवता थयो अने हाथी पडतां सर्प पण चंपाइने मरण पाम्यो ते हाथीनी घातना
पातकथी पांचमी नरकें जई नारकी पणे उपन्यो ए त्रीजो नव ॥ ३ ॥ ॥ चोथे नवें
मरुनूतिनो जीव आठमा देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकछ नामा
विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिमां तिलवती नामा नगरीने विषे विद्युतगतिराजानी
कनकवती नामा स्त्रीनी कूखें पुत्र पणे उपन्यो तेनुं करणवेग एवुं नाम मातपितायें दीधुं अ

नुक्रमें युवावस्थायें सुरुपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पण पाम्यो एकदिवसें सुरुपा राणी सायें सुख नोगवतां गोखमां बेठा थकां संध्या फूली देखी वैराग्य पामी दीक्षा लीधी पठी वैताढ्य ना हेमशैल उपर काउस्सग्गमां ऊना रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमी नरकथी नीकलीने ते पर्वत उपर सर्प थयो ठे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुयें काल कीधो ए चोथो नव ॥४॥ ॥ पांचमें नवें साधु बारमे देवलोके देवता थया अने सर्प्प मरण पामीने पांचमी नरके गयो ए पांचमो नव ॥५॥ ॥ ठठे नवे मरुनूतिनो जीव बारमां देवलोकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गंधीलावती विजयमां शुनंकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूखे पुत्र पणे आवी उपन्यो मात पितायें तेनुं वज्रनान्न एवुं नाम दीधुं अनुक्रमे तेना पितायें तेने राजपाटें बेसाड्यो ते यौवनवयमां राज पालतो थको संसारिक सुख नोगवे ठे एक दिवसें शुनंकरा नगरीना उद्यानमां श्रीक्षेमंकर नामा तीर्थंकर आवी समोसस्या तेमने वज्रनान्न राजा वांदवा गयो तिहां तीर्थंकरनी देशना सांजली संसार अनित्य जाणी तीर्थंकर पासेथी दीक्षा लइ अगीआरे अंग नण्या जंघाचारणनी लब्धीना बले करी सुकच्छविजय मांहे निज्वलन पर्वत उपर काउस्सग रह्या ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमा नरकथी नीकलीने वली वचमां संसारने विषे बीजां पण घणां नवभ्रमण करी ते पर्वतमां कुरंग नामा निल्ल थयो ठे ते निल्ल पोतांना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो ठे तेवारे वज्रनान्न साधुने देखी आगला नवना वैरने लीधे साधुने देखतांज अपशुकन थयुं जाणी क्रोध उपन्यो माटे साधुने सामुं एक बाण माखुं ते मर्मस्थानके लाग्युं तेथी साधु शुनध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए ठठो नव ॥ ६ ॥ ॥ सातमे नवे साधु शुनध्याने मरण

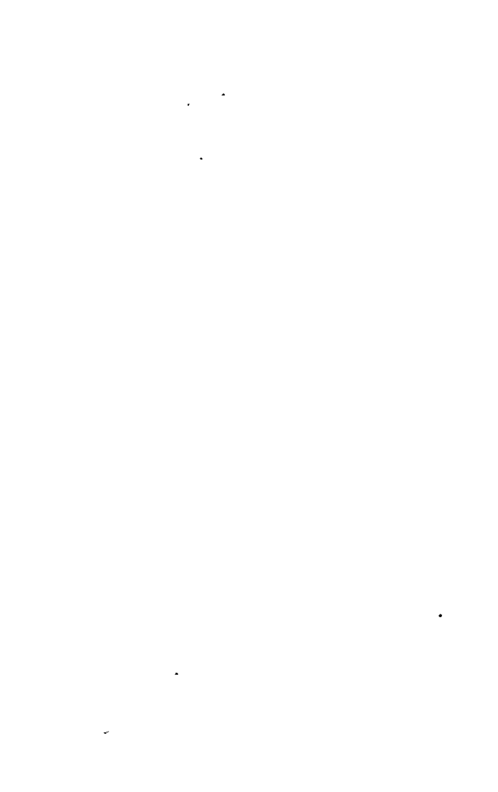
पामीने मध्यम ग्रैवेयकें देवता पणे उपन्यो अने भिल्ल मरण पामी साधुनी घातना पापथी सातमे नरकें गयो ए सातमो जव ॥ ७ ॥ ॥ आठमे जवें मरुजूतिनो जीव मध्यम ग्रैवेय कथी चवीने आ जंबुद्वीपना पूर्व महाविदेहमां शुजंकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगर तिहां कुशलबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामे राणीनी कूखनेविषे पुत्रपणे आवी उपन्यो मातायें चौदसुपनां दीठां पछी पुत्रजन्म थयो त्यारे माता पितायें सुवर्णबाहु एवुं नाम आप्युं हवे चौद सुपन देखवाना प्रजावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्त्तिनी पदवी पाम्यो, ठ खंम साधी चक्रवर्त्तिनी पदवी जोगवी, वृद्धावस्थामां तीर्थंकरनी देशना सांजली दीक्षा लइ वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थंकर गोत्र बांध्युं. हवे ते साधु एक दिवसें उजाडमां काउस्सग्ग ध्याने रह्या ने एवामां ते भिल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखुं पूरण करीने तिहांथी मरण पामी ते उजाडमां क्षीर गुफायें सिंह पणे आवी उपन्यो ने तेणे तिहां सुवर्ण बाहु मुनिने दीठो तेवारे पूर्वजवना वैरथी सिंहने क्रोध उपन्यो तेथी साधुने विदारी नाख्यो ए आठमो जव ॥७॥ ॥ नवमे जवे साधु शुजध्याने मरण पामी दशमा प्राणात देवलोके देवता पणे जइ उपन्या अने सिंह मरण पामीने चोथे नरकें गयो ए नवमो जव ॥ए॥ ॥ हवे दशमा जवने विषे मरुजूतिनो जीव दशमा देवलोकथी चवीने श्रीवामादेवीनी कूखें आवी उपन्यो अने कमठनो जीव चोथा नरकथी मरण पामीने एक दारिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे आवी उपन्यो तेनां मा बाप बालपणामांज मरण पाम्यां पाठलथी दुःखी थयो थको लोके तेना उपर दया आणीने महोटो कीधो अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो तेवारे निर्द्धनपणा माटे स्त्री मली नही तेथी अमर्ष धरी पेट जरवा सारुं अज्ञान तपस्या आदरी तापसनी पठवाडे लागी पंचाग्नि

साधवा लाग्यो तेथी ते तापस अग्नितापणे कमठनामे विख्यात थयो. इति पार्श्वनाथ दश नव अधिकार समाप्त ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, पुरुषमां प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित माता नी कूखमां आव्या इहां चौदसुपन मातायें दीठां तथा सुपनपाठक बोलाव्या यावत् गर्भनी प्रतिपालना करी इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे जाणी लेवो ॥ १५२ ॥ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे पार्श्वनाथ स्वामी शीयालानो बीजो महिनो त्रीजुं पखवाडियुं पोषवदि दशमीने दिवसे नव महीनाने साडासात दिवस गर्भमां गया थका मध्यरात्रिमां विशाखा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके वामाराणीनी कूखे रोगरहित पुत्रपणे जन्म्या ॥ १५३ ॥ ॥ जे रात्रिमां श्रीपार्श्वनाथ जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता आव्या ॥ १५४ ॥ ॥ यावत् चोसठ इंद्र जन्ममहोत्सव प्रमुख करवा आव्या तथा दिग्कुमारिकादि आवी ते सर्व श्रीमहावीर स्वामिनी पेरे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं नाम लइ लइने इहां पण कहेवुं पछी अश्वसेन राजा जन्ममहोत्सव करीने कहेता हवा के महारी वामाराणीनी कूखे जेवारे ए पुत्र आव्यो तेवारे वामाराणीयें शय्यामां पोतानी पासेथी निकलतो कालो सर्प दीठो तेथी अमारा आ पुत्रनुं नाम पार्श्व होजो एम कही श्रीपार्श्व एवुं नाम दीधुं ॥ १५५ ॥ ॥ पांच धावे पालन कराता, बीजना चंद्रमानी पेरे वृद्धि पामता, माता पितादिकने आनंद उपजावता थका अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्या तेवारे कुशस्थल नगरना प्रसेनजीत नामे राजाने म्लेच्छ लोकोये रोक्यो तेनो सहाय करवा माटे अश्वसेन राजा जावा लाग्यो ते वखत पिताने वारीने पार्श्वकुमर तिहां जवाने तैयार थया ते जोइ इंद्रमहाराजे पोतानो रथ सारथी सहित मूक्यो ते उपर चडीने आकाश मार्गे थइ तिहां पहोंच्या तेने जोइ सर्व म्लेच्छ लोको नाशी



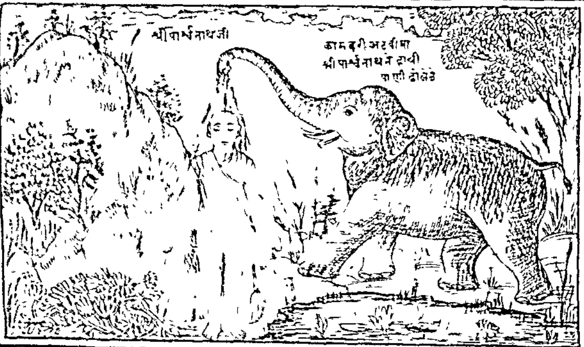
श्रीपार्श्वनाथनु रथ






चित्र ५४

गया भगवान तिहां गया तेने प्रसेनजीत राजायें सन्मान दीधुं तिहां नीलवर्ण छवी, नवहा
थनुं शरीर, युवान अवस्था अने एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महा
कांतिवंत सुंदर देदीप्यमान तेजस्वी एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री
प्रभावती नामे हती ते बोली जे हे पिताजी! मुजने पार्श्वकुमर साथे परणावो पछी भगवा
नने परणवानी इछा हती नही तो पण राजायें घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी
ते पछीने पाछा घेर आव्या प्रभावती राणी साथे सुख भोगवे छे एवामां एक दिवसे वा
राणसी नगरीने बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो तिहां घणा लोको हाथमां पूजापो
लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जाता हता तेने प्रभुयें गोखमां बेठा थकां दीठा
तेवारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्वे क्यां जाय छे तेवारे हजुरीउ चाकर पासे उभो
हतो ते बोल्यो हे महाराज! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो तेना मा बाप न्हानापणमां मरी गयां
तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतोफरे छे ते इहां आव्यो छे तेने आ सर्वे लोको पूज
वाने जाय छे ते सांभली भगवान पण तिहां आव्या त्यां काष्टमां बलता सर्पने अवधि ज्ञानथी
देखी करीने भगवान बोल्या अरे मूढ तपस्वी! आ तुं दयाविना शुं वृथा कष्ट करे छे; आ
ताहारो श्रम ते दयाविना सर्वे मिथ्या छे तेवारें क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो अरे राजा
उना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय तमे तो हाथी घोडाउनी परीक्षा करो तपनी
वाततो अमेज योगी पुरुषो समजीयें छेयें ए वातमां तमे शुं समजो? एवुं कमठनुं बोलवुं सां
भली भगवाने ते अग्निकुंडमांथी एक बलतुं लाकडुं बाहेर कढावी तेने कोहाडाथी फडावुं
तेमांथी तापे करी व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो ते सर्प भगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक


चित्र ५५
श्रीपार्श्वनाथजी
कादबरी अटवीमा
श्रीपार्श्वनाथने हाथी
पाणी ढोळे छे

पेरें आहीं पण समजवो परंतु एटलुं विशेष जे वाराणसी नगरीमांथी थइनें जिहां आश्रम पद नामा उद्यान ने जिहां अशोकवृक्ष ने तिहां आवीनें पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचें पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करे लोच करीने अठम तप पाणीरहित करीने विशाखा नक्षत्रें चंद्रयोग आवे थके एक देवडुष्य वस्त्र लेइने त्रणसें पुरुषोनी साथें दीक्षा लीधी, अणगार थया ॥ १५८ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत च्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जेकोइ देवना मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग होय ते सर्व सहन करे ॥ १५९ ॥ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथजीयें अठम तपनुं पारणुं कोपट सन्निवेशमां धन्नाने घेर परमान्ने करी कयुं तिहां पांच दिव्य प्रगट थया साढी बारक्रोड सोनैया वर्ष्या ॥ ॥ एकदिवस भगवान् विचरता थका कादंबरी अटवीमां गया, तिहां कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुंभनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमां रह्या ते स्थानके महीधरनामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते भगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणेकरी पोतानो पूर्वलो भव दीठो जे आगला भवमां हुं हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो म्हारां स्वजन कुटुंब म्हारा उपर हसतां हतां तेथी मने चिंतातुर देखीने म्हारो सुप्रतिष्ट नामा मित्र मने गुरु पासें लइ गयो तेनी पासेथी में श्रावकधर्म लीधो पण अंत अवस्थामां म्हारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समयें महोटी काया पामवानुं में नियाणुं कयुं तेना योगथी हुं महोटी काया वालो हाथी थयोछुं एवुं जाणी ते हाथीयें भगवानने कमले करी पूज्या ए हाथीनी वात सांभली चंपानगरीनो वासी करकंडू राजा तिहां आव्यो ते वेलामां भगवान विहार करी गया जेथी राजा घणो दुःख करवा लागो तेवारें इंद्रें आवीने

तिहां नव हाथनी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा प्रगट करी पछी राजायें तेनी पूजा करीने तिहां मंदिर कराव्युं ते स्थानकें कलिकुंड नामे तीर्थ थयुं, हाथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो ते चैत्यनो अधिष्ठायिक थइ रह्यो ॥ ॥ एकदा समये राजपुरनो ईश्वर नामा राजा ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने काउसग्गमां उभा देखी जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेणे करी पोतानो पूर्वलो भव दीठो तेथी मूर्छा आवी गइ पछी ज्यारे सावधान थया त्यारे तेने मंत्रीयें पुछ्युं स्वामी तमे मूर्छा केम पाम्या? तेवारें राजा बोल्यो में म्हारो पूर्वलो भव दीठो जे हुं वसंतपुर नगरमां एक कोढीयो ब्राह्मण हतो ते रोगना दुःखने लीधे गंगानदीमां पडीने मरवा तैयार थयो हतो एटलामां एक चारण मुनियें आवीने मुजने प्रतिबोध दीधो पछी समकेत वासनाथी हुं नित्य चैत्यनां दर्शन करवा जाउं तिहां मुजने पुष्कल नामा श्रावकें दीठो अने कहेवा लागो के अरे आ कोढीयो मंदिरमां केम जाय छे! पछी ते श्रावकें मुनिने पूछ्युं महाराज! ए कोढीउ मंदिरमां जाय छे तेनो कांइ दोष छे किंवा नथी तेवारें मुनि बोल्या दूरथी नमवामां कांइ पण दोष नथी वली हे श्रावक! ए ब्राह्मण आगामिक भवे राजपुरनगरे ईश्वर नामा राजा थाशे ते श्रीपार्श्वनाथजीने काउस्सग्गे रह्या देखीने जातिस्मरण पामशे माटे हे प्रधान! ते कोढीयो ब्राह्मण मरीने हुं ईश्वर नामे राजा थयो छुं; पछी ते ईश्वर राजायें भक्तिभावथी तिहां चैत्य कराव्यो तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा थापी तिहां कुकुडेसर नामे तीर्थ थयुं ॥ एक समये भगवान विहार करता थका कोइ नगर नजीक तापसनो आश्रम हतो तेनी पासें आव्या एटलामां सूर्य अस्त थयो तेवारें भगवान वडवृक्षने नीचे एक कूवानी पासें अभग ध्याने काउस्सग्ग रह्या ते अवसरमां पूर्वभवनो वेरी मेघमाली अ


चित्र ५६







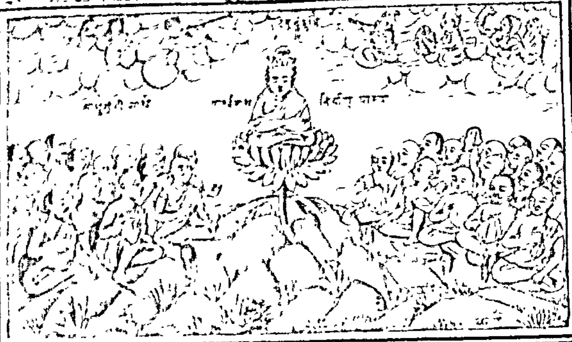
चित्र ५७

एम देवता अवधिज्ञानने अने जगवानने इहां उना देखी पूर्वेनवलुं वैर संजारी अमर्षे पूरो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी जगवानने बीवराव्या पण जगवान तेनाथी मव्या नही पछी सिंहनां रूप, वींछीनां रूप, सर्पनां रूप, हाथीनां रूप बीजां पण अनेक जातिनां रूप विकुर्वीने जगवानने करडवा लाग्यो मसलवा लाग्यो तोपण जगवान तेनाथी क्षोज पाम्या नही चलायमान थया नही तेवारे विशेष क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी विजली विकुर्वी तेनी साथे कल्पांतकालनो पवन विकुर्वी ते पवने करी धूलने उमावतो थको आकाशने पण ढाइ मूक्युं अने धूल साथे मनोज्ञा पाणीनी मूसल धारायें वृष्टि करी तथा ब्रह्मांड स्फोट सदृश गर्जारव कर्यो, दशे दिशायें वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो तिहां पाणीनुं पूर नदी जेवुं वहेवा लाग्युं जोरवालुं पाणी चढ्युं, मेघलीनेविषे आकाश अंधकारमय थइ गयुं ते वखते जगवानने कंठसुधी पाणी उंचुं आवी लाग्युं तोपण मव्या नही ते समये धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञान प्रयुंजी जगवानने उपसर्ग थयो जाणीने पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषीयो सहित तिहां आवीने प्रजुने मस्तकें फणाटोपे करी छत्र धर्युं अने प्रजुना चरणनी नीचें कमलनी रचना करी ए प्रकारें वरसादना समूहने बंध राखवानो उपाय करी पोतें इंद्राणी सहित प्रजु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो बंध थयो नही तेवारें धरणेंद्रे जाण्युं जे प्रलयकालतो हमणा छे नही तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे छे एम विचारी अवधिज्ञाने जोयुं तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो तेवारे मेघमालीने ललकार्यो के अरे दुष्ट, पापिष्ट, उद्धत, अधम, तें आ शुं अकार्य करवा मांड्युं छे प्रजुयें तो ताहारा उपर गुण कर्यो छे ते उलटो

ने अवगुण थइ परिणम्यो तेथी तुं विपरीत थइने एमनी उपर द्वेष करे छे परंतु जगवान पोते तो अतुलबलना धणी छे तथापि ते क्षमावंत दयालु छे तेतो सहन करशे पण हुं ताहारो अपराधसहन करनार नथी अरे मूर्ख! तुजने रुडो उपदेश पण वैरकारी थइ पड्यो तो हवे तुजने हुं ताहारी कमाइ देखाडीश, तें स्वामीनी घणी आशातना कीधी छे पण हवे तुं क्यां नाशी जइश एम कही धरणेंद्रे तेना उपर वज्र मूक्युं तेवारे जेम बाजने देखी सूडो तथा कबुतर जयभ्रांत थाय तेम कमठ जयभ्रांत थयो थको पोतानी देवांगना सहित जगवान पासें आवी तेमना चरणनुं शरण ग्रही जगवानने नमस्कार करीनें पोतानो अपराध खमाववा लाग्यो अने कहेवा लागो के हवे आजपछी हुं एम नही करीश ते जोइ धरणेंद्रे कह्युं के तुं महोटाने शरणे आव्यो माटे म्हारो साधर्मि जाइ समजीने तुने मूकुंछुं पछी दश जवनुं वेर खमावी प्रञु पासे नाटक करीने कमठ पोताने स्थानके गयो अने धरणेंद्र पण नाटक करी पोतानी इंद्राणी सहित स्वस्थानकें गयो आहीं धरणेंद्रे त्रण दिवस पर्यंत जगवानने मस्तकें फणनुं छत्र राख्युं तेथी ते नगरी अहिछत्रा एवे नामे करी प्रसिद्ध थइ ॥ हवे श्रीपार्श्वनाथ स्वामी अणगार थया, पांच समिति अने त्रण गुप्ति सहित थया यावत् ग्रामानुग्राम विचरता आत्माने जावता थका व्याशी दिवस वीत्या अने चोराशीमो रात्रि दिन वर्त्तमान छतां उनालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडियुं चैत्रवदि चोथने दिवसे, विशाखा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके, पहेला बे पहोरना काल समयने विषे, धावडी वृक्षनी हेठे पाणीयें रहित चउविहारो छठ्ठतप कीधे थके, निर्व्याघात पणे आवरण रहित समग्र परिपूर्ण जलहलता सूर्य सरखुं एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन

प्रभुने [illegible] बेवी सबै चौसठ [illegible] केवल [illegible]
॥ १५८ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने एक पुत्र, बीजो [illegible], त्रीजो [illegible], चोथो [illegible]
पाणी, पांचमो मोर, छठ्ठो श्रीवत्स, सातमो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
प्रमुख [illegible] पुत्र [illegible] संपदा थइ ॥ १६० ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने [illegible] प्रमुख
सोळ हजार साधुओनी [illegible] संपदा थइ ॥ १६१ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने [illegible] पुप्फ-
चूला प्रमुख आडत्रीस हजार साध्वीओनी संपदा थइ ॥ १६२ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने
[illegible] प्रमुख [illegible] एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १६३ ॥
श्रीपार्श्वनाथजीने [illegible] सुनंदा प्रमुख त्रण लाखने सत्तावीस हजार श्राविकाओनी
संपदा थइ ॥ १६४ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने [illegible] केवली नहीं पण केवली सरखा
[illegible] [illegible] चौद पूर्वधारी मुनिओनी संपदा थइ ॥ १६५ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथजीने [illegible]
[illegible] चौदसो अवधि ज्ञानिओनी संपदा थइ, एक हजार केवळीओनी संपदा थइ, [illegible]
[illegible] वैक्रिय लब्धिवंतोनी संपदा थइ, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] संपदा थइ, एक
हजार साधु मोक्ष गया, बे हजार साध्वी मोक्षे गइ, [illegible] [illegible] संपदा थइ, [illegible]
वादीओनी संपदा थइ, बारसे साधु अनुत्तर विमाने गया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
मनुं प्रमाण जाणवुं ॥ १६६ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भूमि
थइ तेमां एकतो युगांतकृत् भूमि ते श्रीपार्श्वनाथ [illegible] [illegible] [illegible] मोक्षे जाते [illegible]
[illegible], बीजी पर्याय अंतकृत् भूमि ते [illegible] केवल [illegible] [illegible] वर्ष [illegible] मोक्ष भूमि
सिद्धि पाम्यो एटले प्रथम मोक्षमार्ग [illegible] ॥ १६७ ॥ ॥ ते [illegible] [illegible] ते [illegible]

विषे श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणी त्रीशवर्ष पर्यंत घरवासे रह्या अने त्र्याशी दिवस छद्मस्थपणे रह्या तथा त्र्याशी दिवसे न्यून सीतेर वर्ष पर्यंत केवल पर्याय पाल्यो परिपूर्ण सीतेर वर्ष साधुपणुं पाल्युं सर्व मली एकसो वर्षनुं आयुष्य पालीने, शेष रहेलां चार कर्म खपावी आ अवसर्पिणी कालनो दुषम सुषमा नामे चोथो आरो ते घणो वीती गयो अने स्वल्प रह्यो ते अवसरमां वर्षादनो पहेलो महीनो वीजुं पखवाडियुं, एटले श्रावण शुदि आठमने दिवसे समेतशिखर पर्वतनी उपर मास खमणना चउविहारा पाणीरहित तपमां अणसण कीधे थके सैलेसी अवस्थायें योग संवरीने तेत्रीश वीजा साधुउ अने चोत्रीशमा श्रीपार्श्वनाथ पोते, विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके मध्यरात्रिना समयमां लांबा हाथें काउसग्गें उभा काल प्राप्त थया निरवाण पाम्या सर्व दुःखथी रहित थया ॥ १६८ ॥ ॥ विशेष वात श्रीपार्श्वनाथ चरित्र थकी जाणवी, श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वर पुरुषमांहे आदानी एटले आदेय वचनीय ए बिरुदना धरनारा छे एम प्रत्येक शब्दे जोडी देखाडीयें श्रीपार्श्वनाथ स्वामी मोक्ष गया पछी वारसोने त्रीश वर्षें श्रीकल्पसूत्र पुस्तक उपर लखाणुं केमके श्रीपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी अढीशे वर्षे तो श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया ते पछी नवशे एसी वर्षें पुस्तकारूढ थयुं ॥ १६९ ॥ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ चरित्र समाप्त ॥ ॥ हवे पश्चानुपूर्वीयें करीने बावीशमा श्री नेमनाथ स्वामिनुं चरित्र लखीयें छैयें ते कालने विषे, ते समयने विषे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तेमना पांचे कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ते कहे छे एक चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी चव्या, वीजो चित्रा नक्षत्रमां जन्म थयो, त्रीजो चित्रा नक्षत्रमां दीक्षा लीधी, चोथो चित्रा नक्षत्रमां


चित्र ५८



विशेष वांचना कहे ने ॥ ते कालमां ते समयमां श्रीनेमनाथ स्वामी आ वर्षा कालनो चोथो
महीनो, सातमो पक्ष एटले कार्तिक वदि बारसने दिवसें अपराजित नामा महा विमान
जिहां बत्रीश सागरोपमनुं आयु ने तिहांथी चवीने आ जंबूद्वीपना नरतक्षेत्रनेविषे शौ
रीपुर नगरना समुद्रविजय नामा राजानी शिवादेवी नामे नार्या तेनी कूखमां मध्यरात्रिने
विषे चित्रा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते गर्नपणे आवी उपन्या तेवारें चौदस्वप्न मा
तायें दीठां इत्यादिक सर्व वर्णन श्रीमहावीर स्वामीनी पेरें इहां पण कहेवुं ॥ १७१ ॥ ॥
ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीनेमिनाथ अरिहंत वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं प
खवाडियुं एटले श्रावणशुदि पंचमीने दिवसें नव महीनाने साडासात दिवस गर्नमां पूरण
थये थके यावत् चित्रा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवेथके पुत्र पणे जन्म्या, इहां जन्म महोत्सव
प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी पेरे श्रीनेमिनाथजीना नामथी कहेवुं पत्नी माता पितायें अ
रिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं, तेनुं कारण कहे ने जे नगवाननी माता शिवादेवीजीयें पन्नरमा स्व
प्नमां अरिष्ट रत्ननुं चक्र दीठुं तेथी अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं तथा लोकोनां अरिष्ट चूर्णां
मटाड्यां माटे अरिष्टनेमि एवुं नाम दीधुं हवे नगवानने बालपणामां इंद्राणी आवी रमत
करावे जे वारें प्रजुने चूख लागे तेवारें पोताना अंगूठाने चूशे ते अंगूठामां देवो आवीने अ
मृतनो संचार करे परंतु मातानां स्तन चूशे नही एवा अनुक्रमे प्रजुजी वृद्धि पामता हवा प्र
जुना शरीरनो श्यामवर्ण ने तथापि महा स्वरूपवान ने एकदिवसे श्रीनेमिनाथजी पालणामां
रमत करे ने ते वखते इंद्रमहाराजे पोतानी सजामांहे प्रजुना बल पराक्रमनी प्रशंसा करी ते
वात कोइएक देवता असद्दहतो थको त्यांआवी नगवानने पालणामांहेथी उपाडीने सवालाख

योजन दूर लइ गयो तेवारे जगवाने आ कोइ देवप्रयोग छे एवुं जाणीने कांइक स्वल्प बल देखाड्युं तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमां पेसी गयो तेवारे इंद्रे आवी अनुकंपा आणीने देवताने छोडाव्यो अने जगवानने पाछा पालणामां मूकी स्तवना करीने इंद्रमहाराज पोताने स्थानकें गया ॥ ॥ हवे सूत्रकार आगल एवुं कहेशे के श्री नेमीश्वर जगवाने द्वारिका नगरीमां दीक्षा लीधी तेवारें सांजलनारने आशंका उपजशे के जन्मतो शौरीपुरमां थयो अने दीक्षा द्वारिकामां लीधी ए वात केम मले ए संदेहने मटाववाने माटे यादवोनी उत्पत्ति कहे छे ॥ ॥ पूर्वे हरि अने हरिणी ए बे युगलीया थकी हरिवंश कुल प्रगट थयुं, ए वात आगल दश अछेराना अधिकारमां संक्षेपथी लखाइ गइ छे ते पछी ते हरिराजानो पुत्र अश्व थयो अने तेनो पुत्र वसुराजा थयो तेना वंशमां अनुक्रमें यदुराजा थयो तिहांथी यादववंश प्रगट्यो पछी ते यदुनो पुत्र शूरराजा थयो तेना वली एक शौरी अने बीजो सुवीर ए बेपुत्र थया तेमां महोटो पुत्र शौरी छे तेने मथुरानुं राज्य आपीने सुवीरने युवराज पाटे थापी शूरराजायें चारित्र लीधुं, पछी शौरीराजायें पोताना न्हाना जाइ सुवीरने मथुरानुं राज्य आपी पोतें कुशावर्त्त देशमां जइ पोताने नामे शौरीपुर नामा नवीन नगर वसावीने तेनुं राज्य करवा लाग्यो अने सुवीर मथुरानुं राज्य करे छे हवे शौरीराजाने अंधक, वृष्णि नामे पुत्र थयो अने सुवीरने जोजकवृष्णि नामा पुत्र थयो ते जोजक वृष्णिने वली उग्रसेन नामा पुत्र थयो पछी जोजकवृष्णियें उग्रसेनने मथुरानुं राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, हवे अंधकवृष्णिने दश पुत्र थया तेनां नाम कहे छे एक समुद्रविजय, बीजो अक्षोन, त्रीजो स्तमित, चोथो सागर, पांचमो हिमवंत, छठो अचल, [illegible]

रण, नवमो अनिलंद अने दशमो वासुदेव ए दशे दशार्ह कहेवाय हवे अंधकवृष्णियें पोताना मोटा पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य आप्युं अने एज अंधकवृष्णिनी एक कुंती अने बीजी माद्री ए बे नामे बे पुत्रीओ थइ तेमां कुंती पांडुराजाने परणावी अने माद्री दमघोष राजाने परणावी ॥ ॥ हवे संक्षेपथी पांडवोनी उत्पत्ति कहे छे, प्रथम ऋषभदेवजीनो पुत्र कुरु नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटें असंख्यात राजा थइगया तेमांथी एक हस्ति राजायें हस्तिनागपुर वसाव्युं तेवार पछी केटलोएक काल वीत्याकेडे सुभूमनामा चक्रवर्त्ति राजा थयो तेवार पछी वली घणा राजा थयाकेडे एक शंतनु नामे राजा थयो तेनी बे स्त्री थइ तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री गंगा हती तेने गांगेय नामे पुत्र थयो तेनुं भीष्मपितामह एवुं बीजुं नाम लोकमां प्रसिद्ध थयुं हतुं अने बीजी राणी सत्यवती नामे हती तेना बे पुत्र थया एकनुं नाम चित्रांगद अने बीजानुं नाम विचित्रवीर्य पछी शंतनु राजा चित्रांगदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो हवे ते चित्रांगद एक दिवसे कोइ नीलांगद राजा सार्थे युद्ध करतां मरण पाम्यो तेवारें विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अंबालिका अने त्रीजी अंबा ए त्रण नारी हती तेमां अंबिकानो पुत्र धृतराष्ट्र थयो तेनी गांधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो हती तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अंबालिकाने पांडु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री हती तेने एक युधिष्ठिर, बीजो भीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री हती तेनुं अपर नाम पद्मा एवुं हतुं तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा बे पुत्र थया एम बन्ने स्त्रीयोना मली पांडु राजाना पांच पुत्र थया ते पांच पांडवो कहेवाणा, हवे विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अंबा हती तेने एक विदूर नामे

पुत्र थयो एरीतें पांमवोनो संबंध संक्षेपथी कह्यो ॥ ॥ हवे अंधकवृष्णिनी बीजी पुत्रीजे दमघोष राजाने परणावी हती तेनो शिशुपालनामा पुत्र थयो तेने श्रीकृष्णे मार्यो छे एवीरीतें व्यवस्था कर्यापछी अंधकवृष्णियें दीक्षा लीधी, हवे मथुरानुं राज्य उग्रसेन राजा चलावे छे तेनी धारणी नामे राणी छे अने शौरीपुरनुं राज्य समुद्रविजयराजा चलावे छे तेनी शिवादेवी नामे नार्या छे ते शिवादेवीने नेमिकुमार पुत्र थयो बीजा पण सर्व नाइउ एकठा भेला रहे छे हवे मथुरामां उग्रसेनराजा सुखे राज पाले छे एक दिवसे ते नगरीनी बाहेर वनमां एक मासी उपवासनो करनारो एवो एक तापस आव्यो तेनो एवो नियम छे के महीनानी अंदर कोइ आवीने कहे के म्हारे घेर पारणुं करजो तो तेने घेर पारणुं करे पण बीजाने घेर पारणुं करे नही अने जो नोतरुं आपनार धणी चूली जाय अने तापसने पारणुं करावचा माटे तेडवा सारु नही आवे तो वली बीजा एक मासनुं पच्चरकाण करी लीये एवो ते तापस मासिक उपवास करीने वनमां बेठो छे तिहां उग्रसेन राजा रमवा गयो अने वनमां तापसने देखी राजायें पोताने घेर पारणुं करवानी वीनंति करी पारणुं करवुं कबुल करावीने पोताने घेर आव्यो परंतु जे दिवसें पारणुं करावचानुं हतुं ते दिवसें विस्मृतिमां तापसने बोलाववा माणस मोकल्युं नही तापसें पण सांज सुधी वाट जोइ कोइ बोलाववा नही आव्यो तेवारे वली बीजा महीनानी तपस्यानो नियम करी लीधो तेवारपछी वली केटलेक दिवसें राजाने ते तापस याद आव्यो के अरे में आ केवुं अकार्य कर्युं जे तापसने नोतरीने जमवा तेड्यो नही एम चिंतवी फरी पण तापसने जमवानुं आमंत्रण करी आव्यो परंतु बीजी वार पण पारणाने दिवसें जमवा माटे तेडवाने चूली गयो एवीज रीतें वली त्रीजे महीने पण नोतरुं

आणीने जमाडवाने वखतें तेडवानुं चूली गयो तेथी तापसें राजा उपर क्रोध करीने विचार्यु
जे आ दुष्ट राजा मने नोतरुं आपी जाय छे ने जमाडतो नथी माटे जो म्हारा तपनो प्र
भाव होयतो हुं एने जवांतरमां दुःख देनारो थाउं एवुं नियाणुं करी तिहांथी मरण पा
मीने उग्रसेन राजानी जार्या धारणीनी कूखमां आवी उपन्यो तेना प्रजावथी राणीने त्रीजे
महीने राजानुं कालजुं खावानो मोहोलो उपन्यो तेथी शरीरें दुर्बल थइ तेने घणुं घणुं राजायें
पूछ्युं तेवारे मोहोला संबंधि जेवी वात हती तेवी राजा आगल कही, पछी राजायें प्रधाननी
अकलथी ते मोहोलो पूरण कर्यो राणीयें गर्भ पाडवाना घणा उपाय कर्या पण गर्भ पड्यो
नही नेवट नव महीना पूरण थये पुत्र जन्म्यो ते जन्मतांज राणीयें तेने कांसानी पेटीमां
नाखीने मांहे नामांकित मुद्रिका मूकीने ते पेटी यमुना नदीमां वहेवरावी दीधी ते कांसानी
पेटी तरती तरती मथुरांथी शोरीपुर आवी एवामां घृत अने तेलनो वेचनार सुजद्र नामे वा
णीयो ते यमुना नदीमां स्नान करवा आव्यो तेणे ते पेटी नदीमांथी बाहेर काहाडी लइने
उघाडी जोइ तो तेमां बालक दीठो तेवारे ते वाणीयो मुद्रिकासहित ते बालकने छानो
मानो पोताने घेर लइ आवीने पोतानी स्त्रीने पुत्र सोंप्यो अने लोकोने केहेवा लाग्यो के म
हारी स्त्रीने गूढगर्भ पुत्र थयो तेनुं नाम कंस आप्युं अनुक्रमे ते बालक महोटो थयो तेवारे
मस्ति करे लोकोना छोकराउने मार आपे तेथी लोक आवीने सुजद्रने नित्य उंलंजा आपे
तेवारे वाणिये विचार्युं जे हुंतो सामान्य माणस छुं अने आतो राजपुत्र छे माटे म्हारे घेर
ए केवीरीतें रही शके एवुं जाणी वाणीयायें ते छोकरो वसुदेव कुमरने जइ सोंप्यो अने कंस
पण वसुदेवजीनो चाकर थइ रह्यो तेमज वसुदेवजी पण कंस उपर घणी कृपा दृष्टि राखवा

लाग्या एवा अवसरमां वसुराजाना वंशमां बृहद्रथ राजा थया तेनो पुत्र जरासंध नामे प्रति वासुदेव त्रण खंडनो जोक्ता छे ते राजगृही नगरीमां राज्य करे छे अने यादव पण सर्वे ते नीज आज्ञा पाले छे ते जरासंध राजायें समुद्रविजयनी उपर दूतनी सायें एक कागल लखी मोकल्यो के वैताढ्य पर्वत पासेनो रहेवासी सिंहनामे पल्लिपति ते सिंहपुर नगरनो राजा छे तेने जीवतो बांधी पकडीने जे महारी पासे लइ आवे तेने हुं महारी जीवयशा नामे पुत्री छे ते परणावुं अने वली एक नगर जे ते धणी पसंद करे ते नगरनुं राज्य पण आपुं एवी री तनो कागल वांचीने समुद्रविजयजी पोतानी सेना तैयार करी सिंह नामा पल्लिपतिने जी तवा माटे चडाइ करवाने तैयार थया एटलामां वसुदेव कुमरे आवी समुद्रविजयजीने वर्ज्यो अने कंसने साथे लइ पोते सैन्य सहित ते राजानी उपर चडी गयो तिहां जइ कंसने आगे वान करी तेनी साथे युद्ध कर्युं तिहां कंसे सिंहराजाने बांधी लावीने वसुदेवजीने स्वाधीन कर्यो पाछलथी समुद्रविजयजीयें कोष्टक निमित्तियाने पूछ्युं जे वसुदेवजी अने जीवयशानुं जोडुं मलतुं छे के नथी? तेवारें निमित्तिये कह्युं के ए जीवयशा जे छे ते परण्या पछी श्वसुरना कुलनो अने पोताना पिताना कुलनो एरीते बेहु कुलनो क्षय करनारी छे माटे तमे विचा रीने काम करजो महारा वचनमां लगार मात्र संदेह जाणशो नही एवुं सांभली निमित्तियाने शीख आपी विदाय कर्यो अने निमित्तियानी वातथी चिंतातुर थयो थको विचारवा लाग्यो जे वसुदेवजी जीत्यो एवुं सांभलशे तो जरासंध पोतानी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते कन्या तो बंने कुलनो क्षयकरनारी छे तो हवे आपणने एनो शो उपाय करवो एवो चिं तातुर थको बेठो छे एटलामां तो वसुदेवजी पण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी पासे

लइ आव्यो अने समुद्रविजयजीने चिंतातुर थयेला देखीने पूछवा लाग्यो जे तमे शी चिंतामां वेठा छो? तेवारें वसुदेवजीने एकांतमां लइ जइने समुद्रविजयजीयें, जीवयशा बेटु कुलना क्षयने करवावाली छे ए वात संभलावी तेवारें वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने में बांध्यो नथी परंतु कंसें बांध्यो छे ए वात सांभली समुद्रविजयजी विचारमां पड्या के ए वाणियाना छोकरामां एटलुं बल होय नहि माटे तेनी हकीगत पूछवासारुं सुभद्र वणिकने बोलाव्यो तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो पछी ते वाणियानी पासेंथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी सिंहराजासहित कंसने राजगृहनगरे जरासंध पासें मोकल्यो जरासंधें पण कंसने पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसें तेनी पासेंथी मथुरानुं राज्य माग्युं तेवारे जरासंधें पोतानुं सबल सैन्य आप्युं ते लेइ कंसें मथुरामां जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो झाली काष्टना पांजरामां नाखी दीधो अने पोतें मथुरानुं राज्य करवा लाग्यो, हवे पोतानो पिता काष्टपिंजरमां पड्यो थको दुःख भोगवे छे एवुं जोइने कंसनो न्हानो भाइ अतिमुक्तक नामे छे ते संसारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लइ चाली निकल्यो ॥ ॥ हवे वसुदेवकुमरें पूर्वभवमां स्त्रीवल्लभ कर्म उपार्जन कर्युं छे ते पूर्वभवनी कथा कहे छे वसुदेवनो जीव पाछला भवमां कोइएक गामनेविषे नंदीषेण एवे नामे कुलपुत्र हतो तेनां माता पिता बाल्यावस्थामां मरण पाम्या पछी ते मामाना घरमां रहीने मह्योटो थयो ते जेवारे युवान अवस्था पाम्यो तेवारे कालुं रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गणेशना जेवुं मह्योटुं पेट, हाथीना जेवा मोटा दांत, उंटना जेवा मोटा होठ, वानराना जेवा कान, नासिका चापडी, त्रिखूणुं कपाल, एवो कुरूपो देखीने तेने कोइ कन्या आपे नही सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा करे

तेथी चिंतातुर थयो थको मामाना घरमां कामकाज करवुं मूकी दीधुं, मामाये कह्युंके म्हारी सात पुत्री छे तेमांथी एक तुजने परणावीश तुं चिंता करीश नही पछी मामायें पोतानी दीकरीयोने एनी साथें परणवानुं कह्युं तेवारे ते साते जणीउ बोली जे अमे मरी जाइयें ते कबुल करीये पण ए दांतलाने तो कदापि काले परणीयें नही एवुं सांजली ते नंदीषेण मरवाने माटे कोइएक पर्वत उपर चडीने त्यांथी पडवा लाग्यो एवामां एक मुनिराजें तेने वर्ज्यो अने कह्युं के हे जोला आवा प्रकारें मरवाथी ताहारूं दुःख मटे नही तिहां प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधुं अने साधुउनो वैयावच्च करवानो अभिग्रह धारण कर्यो वली पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुउनो पण वैयावच्च करे एक दिवसें इंद्रमहाराजें पोतानी सजामां ते नंदीषेणनी वैयावच्च करवा आश्रयी घणीज प्रशंसा करी के एना सरखो वैयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी ते वातने एक देवता अणमानतो थको तिहां आव्यो तेणे अतिसारना रोगेंकरी ग्रस्त थयेला एवा एक साधुनुं रूप विकूर्वीने एक गामने बाहेर जइ बेसाड्यो अने वली बीजा एक साधुनो रूप बनावीने जिहां नंदीषेण मासखमणनुं पारणुं करवा लाग्यो छे तिहां मोकल्यो ते कृत्रिम साधु आवीने नंदीषेणने कहेवा लाग्यो के अरे, अतिसारना रोगवालो साधु बहार पड्यो छे तेनो वैयावृत्य कर ते सांजली नंदीषेण पारणुं करवुं पडतुं मूकीने तरतज ते साधुनी शरीर शुद्धिने माटे गाममां सूजतुं पाणी लेवा सारुं फरवा लाग्यो परंतु तेपण ते देवे देवमायाथी असूजतुं करी दीधुं लेवा योग्य क्यांय मले नही तोपण मनमां खेद आवतो नथी पण उलटो पश्चात्ताप करवा लाग्यो के अरे जुउतो खरा के हुं केहवो जाग्यहीन छुं जे आवा मुनिउनो वैयावच्च करवामां पण

मने अंतराय पडवा लागो ने पछी एम करतां पाणी पण मळ्युं ते लइने साधु पासें आव्यो ते वारे ते अतिसारी साधुयें रीशकरी लात मारीने पाणी ढोळी नाख्युं अने कहेवा लाग्यो के अरे मूर्ख आटलो वखत रहीने केम आव्यो एम कह्युं तो पण तेना उपर रोष न कर्यो पछी ते साधुने पोतानी खांध उपर चढावी गाममां लइ चाल्यो तेवारे ते साधुयें देवमायायी वळी अत्यंत दुर्गंधित विष्टा करवा मांडी तेथी नंदीषेणनुं शरीर संपूर्ण मळथी भराइ गयुं तो पण नंदीषेणने द्वेष उपज्यो नही एवी तेनी धीरज जोइ देव तुष्टमान थइ नंदीषेणने वांदीने स्वस्थानके देवलोकमां गयो एवीरीते नंदीषेणे बार हजार वर्ष चारित्र पाळ्युं अने घणा ग्रंथोमां पचावन्न हजार वर्ष चरित्र पाळ्युं एम कहेलुं ने अंते अनशन कर्युं ते वखत कोइक चक्रवर्ति तेने वांदवा आव्यो तेवारे चक्रवर्तिनी पटराणीने देखी तेणे नियाणुं कर्युं जे हुं परभवे स्त्रीवल्लभ थाउं एवुं नियाणुं बांधी तिहांथी काळ करी देवलोक गयो अने देवलोकथी चवीने इहां वसुदेव थयो छे तेनुं पूर्वे करेला नियाणानां प्रभावथी कामदेव जेवुं रूप थयुं ने ते वसुदेव जे वखत शोरीपुर नगरमां फरे तेवारे ते नगरनी सर्व स्त्रीयो पोताना घर उघडां मूकी तथा बीजां पण सर्व कामकाज पडतां मूकी रूपे मोही थकी वसुदेवनी पछवाडे फरे अने भरतारनुं कर्युं पण माने नही तेथी कोइ कोइना घरोमां चोर पेसी जाय अने घर पण लूंटी चाल्यो जाय एवुं कृत्य जोइ ते नगरना रहेनारा सर्व लोकोयें समुद्रविजय राजानी पासे जइ विनति करी के गामनी सर्व स्त्रीयो घर सूनां मूकीने वसुदेव कुमरनी पाछळ भमे ने माटे जो तमे वसुदेवजीने नही वर्जो तो अमने बीजे क्यांइ रहेवानी जगा बतावो ते सांभळी समुद्रविजय राजा बोल्या के हे पंचो! तमे कहो छो तेम हुं करीश हवे तमे सुखे आपणे घरें जाउ अने सुखसमाधिमां रहो एम

कही महाजनने शीख आपी, थोडी वार पठी वसुदेवजी पण समुद्रविजयने पगे लागवा
सारुं तिहां आव्यो तेवारे वसुदेवजीने खोलामां वेसाडीने समुद्रविजयजी बोल्या के हे जाइ!
आज काल तुं शरीरमां डुर्बल थइ गयेलो देखाय ठे ते हुं जाणुं हुं जे तुं इहां तिहां घणो
रखडे ठे माटे वेलाये कुवेलाये कोइ ठिद्र जोइ ठल करीने ताहारा रूपनी खराबी करशे तथा
वली आपणे राजा ठैयें माटे आपणा वेरी पण घणा ठे ते कोइ उपद्रव करे माटे तुं आ
पणा घरना बगीचामां रम्या करजे पण बाहेर जमवानुं मूकी आपजे वली बाहेर जम
वाथी विद्या शीखेली ठे ते पण जूली जइश एवुं सांजली वसुदेवजी पण विनयपूर्वक
बोल्यो के तमारो हुकुम महारे प्रमाण ठे एम कही घरनी वाडीमांहेज रमत करवा लाग्यो
एवामां उनालो आव्यो तेवारे शिवादेवीयें समुद्रविजयजीने माटे चंदन घसी तेनी कटोरी
जरी ढाकीने दासीना हाथमां आपी समुद्रविजयजी पासे मोकली ते कटोरी दासी लइ जाय
ठे तेने देखी वसुदेव बोल्यो के आ शुं ठे? दासी बोली हजुरने विलेपन करवा सारुं चंदननी
कटोरी राणीयें दीधी ठे ते लइ जाउं हुं तेवारे वसुदेवजीयें ते दासीना हाथमांथी ठीनवी
लइ पोताना अंग उपर चंदननुं विलेपन करी लीधुं ते जोइ दासी कोप करीने बोली जे
ताहारां आवां लक्षण ठे तेथीज तुं बंदीखाने पड्यो ठो ते सांजली वसुदेवजीयें दासीने
पूछ्युं के बंदीखानुं ते वली कयुं! तेवारे दासीयें जवाब दीधो नही पण जेवारे घणो हठ
करीने पूछ्युं तेवारे दासीयें गामना लोको संबंधि विचार सर्व कही संजलाव्यो तेथी वसुदे
वजी राजानी उपर तथा पंचोनी उपर अमर्ष आणीने अर्द्धरात्रे एकलो घरमांथी बाहेर
निकली गयो, अने विचार्युं जे हवेथी ए समुद्रविजयजी महारी आज्ञा सहीने ...

कग्वा नीकळे नही एवो कोइ उपाय करुं पछी नगरनी बाहेर एक मडदाने बाळीने पाछला कमाड उपर लोहीना अक्षरोथी लख्युं जे हे नगरवासी लोको! तमे सांभळो हुं तमोने तथा महारा महोटा भाइने सुख थवाने माटे बळी भस्म थयो छुं हवे तमे सुख समाधीमां रहेजो एवी रीते लखीने चालतो थयो प्रभाते पोळीयें पोळ उघाडी तेवारे मुडदुं बळ्युं दीठुं अने वसुदेवजीना लखेला अक्षर वांची समुद्रविजयजीने जइ कह्युं समुद्रविजय तिहां आवी ते कृत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्यो तेवारे प्रधानादि लोकोयें तेने समजावी राख्यो तोपण शोकमां गरकाव थयो थको राज्य करे ने हवे वसुदेव गामें गामे फरवा लाग्यो ते ज्यां ज्यां जाय तिहां पूर्वे करेला नीयाणाना प्रभावथी अत्यंत सरूपवान कन्याउ परणे एम क्यांक दश, क्यांक वीश, क्यांक सो, क्यांक पांचसो कन्याउने परणे ते सर्व विद्याधरराजाउनी पुत्रीयो तथा बीजा भूचरराजाउनी पुत्रीउ तथा शेठ प्रमुख महोटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीउ जाणवी एम सर्वमळी बहोंतेर हजार कन्याउने वसुदेवजी परण्यो अने घणी विद्याउ पण शीख्यो, एवा अवसरमां रोहक राजानी पुत्री रोहिणी नामे ने तेनो स्वयंवर मंडप मंडाणो ने तिहां त्रण खंडनो स्वामी जरासंध आदि देइने सर्वराजाउ ते स्वयंवर मंडपें आव्या ने तेमज समुद्रविजय प्रमुख सर्व यादवो पण आव्या छे ते रात्रियें वसुदेवजीने रोहिणीप्रज्ञप्ति विद्यादेवीयें आवी स्वप्नामां कह्युं के हे वसुदेव! रोहिणीना स्वयंवर मंडपने विषे तुं जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे वळी रोहिणी शिवाय बीजी पण एक कन्या तुं हजी परणीश एम सर्वे तुजने बे कन्याउनी प्राप्ति हवे थवानी ने माटे तुं कां सूतो छो! प्रभातें तुं तिहां जाजे एम कहीने पछी ते विद्यादेवीयें रोहिणीनी पासे जइ तेने पण स्वप्नामां कह्युं के तुं मृ

दंग वजाववावाला कुबडाने परणजे ॥ हवे रोहक राजायें प्रजातें स्वयंवर मंमप शणगाख्यो त्यां सर्व राजा, राजकुमारो पण शणगार करी पोत पोताना नामनां सिंहासनो उपर आवी बिराजमान थया एटलामां रोहिणी राजकन्या पण पोताने शरीरे सोल शणगार करी स खीउंये करी परवरी थकी हाथमां फूलमाला लेइने स्वयंवर मंमपमां आवी तेवारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा लाग्या अने ठडीदारणी प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाउंना गुण रूपादिकनो वर्णन करे ठे केमके ते रोहिणी सती ठे माटे काचमांथी सर्व देखी शके नही तेथी प्रतिहारिणीये सर्व राजाउंने वर्णवी देखाड्या पण कुलदेवीना वचनने हृदयमां धरीने जे मृदंग वगाडनारा कूबडाने रूपें वसुदेव आव्यो ठे ते एज वसुदेव एज वसुदेव एवो मृदंगशब्द वजावे ठे तेने जोइने तेना गलामां वरमाला पहेरावी तेवारे कूबडो नाचवा लाग्यो अने मुखथी आ रीतें शब्दोच्चार करतो हवो के अहो आ सर्व राजाउ करतां हुं अधिक जाग्यशाली बुं जेमाटे ए सर्व राजाउ वेगा रह्या अने मुजने वरमाला मली गइ एवुं जोइ ते मंमपमां आवेला सर्व राजाउ ते कन्या उ पर क्रोध करीने, केटलाएकतो कन्याने निंदवा लाग्या, केटलाएक कन्याना पितानी निंदा क रवा लाग्या अने केटलाएक बोल्या अरे आ कूबडाने मारीने एनी पासेंथी वरमाला खोंसी ल्यो फोकट बीजा उपर रीश करवाथी शुं थाय एवुं मांहोमांहे कहीने बोल्या के जेना सुजट कूबडा पासे उजेला ठे तें कूबडा पासेंथी वरमाला खोंसी लीये अने तेनीज ए वरमाला पण जाणवी एवुं सांजली सर्व राजाउंना सेवक ते कूबडा पासें आव्या तेने कूबडे सोनाना मृदंगथी मारीने जमीन उपर नाखी दीधा तेदेखी सर्व राजा शस्त्र लइने मारवा दोड्या तेवारे वसुदेवें सर्व राजाउंने विरूप करी नाख्या कोइनी मलो मारी मारी मारकी

नाख्यो ते जोइ जरासंध राजायें समुद्रविजयना साह्यमुं जोयुं तेवारें समुद्रविजय राजा बकतर, टोप पहेरी धनुष बाण लइने युद्ध करवा चड्या तेने देखी वसुदेवें जाण्युं जे नाइनी सायें ल डवुं नही तो हवे हुं महारूं स्वरूप प्रगट करी देखाडुं नहींतो संग्राम थाशे एवो विचारी कूबडानुं रूप त्यागी मृदंग नाखी देइने समुद्रविजय पासे एक बाण नाख्यो तेमां वसुदेवनो तमोने नमस्कार ते एवुं सुवर्णमयी अक्षरोथी लखेलुं हतुं ते वांचीने समुद्रविजय विस्मय थयो अने विचार्युं जे वसुदेव मरण पाम्याने केइक वरस थइ गयां तो आहीं वसुदेव क्हांथी आव्यो आतो कोइ इंद्रजालीयो मने जोलवतोतो नथी एवुं विचारे ले एटलामां तो वसुदेव पण आवी पगें लागो तेवारें तो समुद्रविजयजीयें सारीपेठें उंजख्यो अने सर्व यादव खुशी थया जरासंध प्रमुख राजाउ पण खुशी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रो हिणी परणावी तथा आगल पण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीगत सर्व समुद्रविज यजीने कही पाठवयी बहोतेर हजार कन्याउने नेली करी विमानमां बेसाडी लावीने वसुदेव घेर आव्या ॥ हवे स्नेहने लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कंस लइ आव्यो त्यां कंस तथा वसु देवजी बेहु मथुरामां रहे ले एकदा देवकराजानी पुत्री देवकीजी, वसुदेवने परणवा आवी ले ते देवकीजी अने जीवयशा ए बे सायें रमत करे पण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वकरी उन्मत्त ले हवे जेवारे देवकीजीनो विवाह मंमाणो तेवारें जीवयशा मदिरापान करी देवकी जीने पोतानी खांध उपर बेसाडी नाचे ले एवा अवसरमां कंसनो न्हानो जाइ अइमुत्तो नामा साधु थयो ले ते गोचरी सारु फरतो थको कंसने घरे आव्यो तेने जीवयशायें दीठो तेवारे म दोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली जे हे देवरजी! तमे जला अवसरमां आव्या गो

तो हवे एक राजकन्या तमोने पण परणावीश एवुं बोलती थकी तेंने मूके नही तेवारे तेंने वीवरावदा माटे साधु बोल्या के अरे मूरखणी तुं शुं नाचे कूदे छे जेने तें ताहारा खांध उपर वेसाडी छे तेनो सातमो गर्भ जे थाशे ते ताहारा भरतारने तथा ताहारा पिताने मारवा वालो थाशे एवां साधुनां वचन सांभली साधुने कंठे वलगेली हती ते मूकी दीधो त्यांथी साधुतो विहार करी गयो अने जीवयशाने मद उतरी गयो मनमां शंका पडी जे साधुनुं वचन खोटुं थाय नही पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार कंसने कही कंसें पण ते वात सत्य करी मानी तोपण ते वचन जुठुं करवाने अर्थे विचार्युं जे आ वात कोइने जाणवामां नही आवे तेवीरीतें एनो उपाय करवो एवुं चिंतवन करी एक दिवस वसुदेवजीने कंसें राजी कर्यो तेवारें वसुदेवजी बोल्या हे कंस ! ताहारा उपर हुं तुष्टमान थयो छुं माटे माग माग जे मागीश ते हुं आपीश एवुं सांभली कंस बोल्यो जे हे मित्र! तुं तुष्टमान थयो तो देवकीजीना पहेलवेलां साते गर्भ मने आपजे ते वात वसुदेवजीयें सरल चित्तथी मान्य करी अने कंसने कह्युं के हुं तमोने साते गर्भ आपीश एवीरीतें वसुदेवजी वचनथी बंधाइ गया, पछी ते वात देवकीजी आगल कही तेवारें देवकीजीयें अइमत्ता मुनिनां कहेलां वचन वसुदेवजीनें संभलाव्यां अने कह्युं के आ कंस आपणा पुत्रोने लइ मारी नाखशे ते सांभली वसुदेवजीने पश्चात्ताप थयो पण वचने बंधाइ गयो त्यां शो उपाय ? सत्पुरुषनुं बोलवुं फरे नही माटे सत्पुरुषें जे बोलवुं ते विचारीने बोलवुं हवें एवा अवसरमां भद्दिलपुर नगरनो रेवासी नाग नामे शेठ छे तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवत्सा दोष छे तेथी ते वध्धा मुवेला पुत्रने जन्म आपे छे माटे ते स्त्रीयें अट्ठम तपकरी हरणीगमेषी देवनुं आराधन कर्युं छे तेव [illegible]


चित्र ५९
दासी
सुलसाजीने
मुवेली छोकरी आपीछे
हरणीगमेषीदेव
व पुत्र देवकीजी
ना लई आव्या
छे.
दास

वासमां प्रगट थइने बोल्यो जे मने शानास्तें बोलाव्यो तेवारें सुलसा बोली के हे देव मुजने मृतक पुत्र थाय ने ते जीवता करी श्राप तेवारे देवता बोल्यो कोइनुं कर्म दूर करवाने हुं समर्थ नथी माटे ताहारा पुत्रतो जीवता रहेशे नही ए वात निश्चयात्मक ने तथापि तारी पुत्रसंबंधि इछा हुं पूरण करी श्रापीश एवुं कहीने देवता जतो रह्यो पत्नी कर्मयोगें देवकीजी श्रने सु लसा ए बेहुने साथेंज गर्भ रह्यो श्रने साथेंज जन्म्यो तेवारें हरणीगमेषीयें देवकीजीना जी वता पुत्रो लावीने सुलसानी पासें मूक्या श्रने मूवेला सुलसाना पुत्र ते देवकीजीनी पासे लावी मूक्या ते मूवेला बालकोने कंसना चोकीदारोयें लइजइने कंसने स्वाधीन कर्या कंसें तेमने शिला उपर पछाडी मार्या; नाख्या एवीरीतें देवकीजीना ठ पुत्र सुलसानी पासे वृद्धि पाम्या श्रने सुलसाना मृतक पुत्र देवकी पासेथी लइने कंसें मार्या ते देवकीजीयें पूर्वेला ज न्मां पोतानी शोकनां सात रत्न चोरी लीधां हतां तेथी शोक दिलगीर थइने जेवारें घणुं रुदन करवा लागी तेवारें एक रत्न तेने पाछुं दीधुं हतुं ते कर्मना योगें श्रनिकयशा, श्रनंत सेन, विजयसेन, निहतारि, देवयशा श्रने शत्रुसेन ए ठ पुत्र देवकीजीना लइने हरणीगमेषी देवें सुलसाने श्राप्या हवे देवकीजीनो सातमो गर्भ सात सुपने सूचित पांचमा देवलोकथी चवीने देवकीजीनी कूखें श्रावी उपन्यो ते गर्भ जन्मतांज लइ जवाने माटे कंसनां मा णसो चोकीदार बेठेला हता तेथी देवकीजीयें वसुदेवजीने कह्युंके श्रा सातमो गर्भ उत्तम ने माटे कोइपण उपाय करीने कदापि एने माटे जुठुं बोलवुं पडेतो जुठुं बोलीने पण श्राप णें, ए गर्भ राखवो ए वात वसुदेवजीयें सांभलीने पछी वसुदेवजी जे वखत देवकीजीने प रण्या हता ते वखत जे देवकराजायें दायजो श्राप्यो हतो तेमां गोकुलगाम पण साथे श्राप्युं

एवुं ते गोकुलगाममां नंदनामें गोप तथा तेनी यशोदा नामें स्त्री ए बे रहे ने तेगण ते दाय जातां आवी गया हतां एटलामां देवकीजीने गर्भ पयो ने वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवुं कहीने वसुदेवजी तेने तिहांथी छानो लइने निकली गयो ते वखत कंसें बेसाडेला चोकीदारोने निद्रा आवीगइ हती आगल जतां दरवाजो खोलीने निकल्यो तेवारे उग्रसेन बोल्यो आ कोण छे वसुदेवजी बोल्या आ ताहारुं काष्ठनुं पांजरुं भांगीने तेमांथी तुजने मुक्त करनार छे एवुं कही आगल चाल्यो मार्गमां यमुनानदीयें पण मार्ग आप्यो ते नदी उल्लंघीने गोकुलमां जइ यशोदाजीने ते बालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री आवी छे ते लइ आवीने देवकीजीने सोंपी पाछलथी कंसना योगायत निद्रामांथी जाग्या ते बोल्या शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी तेवारे वसुदेवजीयें पुत्री आपी ते कंसे लइने तेनुं नाक कापीने पाछी वसुदेवजीने आपी आ ठेकाणे अन्यदर्शनीउ कहे छे के कन्याने पण शिला उपर पछाडी ते वीजली थइगइ ए वात मिथ्या छे हवे कंस निश्चिंत थयो आणीगम गोकुलमां यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनुं पुत्रनी पेरे पालन पोषण करे छे कृष्ण पण सुखें सुखें वृद्धि पामे छे हवे देवकीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना रहे पण कंसनी बीकने लीधे पन्नर पन्नर दिवसें अथवा महीने महीने आज वछ बारश छे आज गोत्राट छे आज काजली त्रीज छे एवा नवा नवा उत्तर करी करीने गोकुलमां जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीउना पर्व थया पछी तिहां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे, अने यशोदाजीने कहे के ताहारो पुत्र मने घणो वाहलो लागे छे एवां वचन कही पाछी घेर आवे एरीतें कृष्णजी बाललीला करता थका यशोदाजीनां दूध दही प्रमुखनां भाजन ढोली नाखे फोडी नाखे इत्यादिक



वसुदेवजी श्रीकृष्णनेलई गंगानदी उतरे छे

अनेक प्रकारनी रमत करतो विचरेछे एकदा वसुदेवजीयें देवकीने कहुंके तमारे घणी वखत तिहां जावुं नही कारणके जो कंसने ए वातनी खबर पडशे तो वली कांइक उत्पात करशे अने जेवारे कृष्ण सात आठ वर्षना थया तेवारे तेने कलाउ शीखववा सारुं रोहिणीना पुत्र बलदेवजीने कंसथी छानो मोकल्यो अने ते छानो रहेवानो हेतुभूत कंससंबंधि सर्व हकीगत बलदेवजीने निवेदन करी एम बलदेवजी अने कृष्ण बेहु जण गोकुलमां नंदने घेर रहे छे अने बलदेवजी श्रीकृष्णने विद्याउ जणावे छे सर्व कलाउ शीखावे छे एम करतां श्रीकृष्ण चौदवर्षना थया हवे राम कृष्ण बन्ने भाइउ तिहां गोवालीआउनी साथे नाचे कूदे गाय बजावे नीला पीला वस्त्र पहेरे,कृष्ण पोताने मस्तके मोरपीछ राखे, मुरली वजावे, गोपीयोनी साथे गाय,आखो दिवस रमत करे, सांजना घेर आवे एवा अवसरमां वली एक दिवसें कंसना मनमां एवी वात आवीके साधुनुं वचन जूठुं थयुं के नथी थयुं तेनी चोकसी करवा माटे निमित्तियाने पूछयुं के मने कोइ मारनार छे किंवा नथी? ते सांभली निमित्तियो बोल्यो के साधुनुं वचन जूठुं नथी ताहारो शत्रु कोइक जगायें म्होटो थइ रह्यो छे पण ताहारो शत्रु मरण पाम्यो नथी तेवारे कंसें पूछयुं ते केवीरीतें म्हारा जाणवामां आवे, निमित्तियो बोल्यो जे अरिष्ट नामा बलदने दमन करशे, जे कालीनागने वश करशे, जे ताहारा केशी नामना घोडाने दमशे, जे खर अने मेष नामा खरोने मारशे, जे चंपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीउने मारशें, जे सारंग धनुष्य चढावशे, जे चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बेंने मारशे ते ताहारो मारनार जाणजे ए वात सांभली कंसें तेनी निगाह करवाने माटे पडह वजाडाव्यो के जे कोइ सारंग धनुष्यने चढावे तेने म्हारी बहेन सत्यभामा हुं परणावुं ए वात सांभली घणा

राजा तिहां भेला थया एवा अवसरमां वसुदेवजीनो एक अनाद्दष्ट नामा महाबलवंत पुत्र छे ते पण धनुष्य चडाववाने जाय छे मार्गमां सांज पडी तेथी रात्रे श्रीगोकुलमां रह्यो तेने बलभद्र ओळखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी प्रभात थयुं तेवारे अनाद्दष्ट बलभद्रने कहेवा लाग्यो के एक वळावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे ते सांभळी बलभद्रें श्रीकृष्णने अनाद्दष्ट साथे मार्ग देखाडवा मोकल्यो मार्गें जतां अनाद्दष्टनो रथ वृक्षोमां अटकी रह्यो ते अनाद्दष्टथी निकल्यो नही तेवारे कृष्णजीयें ते बेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्यां अने मार्ग करी रथ बाहेर रस्ते चडावी दीधो तेजोइ अनाद्दष्टीये तेने बलवान जाणी रथमां बेसाडी मथुरामां लइ गयो त्यां जइ अनाद्दष्टी धनुष्यने हाथ फरसवा लाग्यो दैवयोगथी पाछो पड्यो तेवारे तेना उपर लोक हस्या श्रीकृष्णें अनाद्दष्टीनुं हास्य थतुं देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चडावी लीधुं सत्यभामा पासे उभी हती तेणे श्रीकृष्णने वरमाला पेरावी तेवारे वसुदेवजी अनाद्दष्टी उपर क्रोधकरी कहेवा लाग्यो के एने शा वास्ते आंही लइ आव्यो जा हम णाज पाछो मूकी आव ते सांभळी अनाद्दष्टी छानोमानो कृष्णने गोकुलमां लइ आव्यो एटला दिवससुधी आ बलभद्र महारो भाइ छे एवुं श्रीकृष्णना जाणवामां न हतुं. हवे अनुक्रमें श्रीकृष्ण सोळ वर्षनो थयो एवा अवसरमां कंसें केशी घोडो अने मेष घोडो तथा अरिष्टनामा बळद ए सर्वने गोकुलमां मोकल्या ते जइ गोकुलमां उपद्रव करवा लाग्या तेमने श्रीकृष्णें मारी नाख्या एवा अवसरमां वळी मथुरामां कंसें मल्लनो अखाडो मांड्यो तिहां घणा मल्ल एकठा थया छे तेमां एक चाणूरमल्ल अने बीजो मुष्टिकमल्ल ए बे मल्ल घणा बलवान छे ते वखत कंसें जाण्युं जे धनुष्य चडाववावाळाने [illegible]पो नही माटे हवे कोइरीतें

ते आंही आवे तो हुं तेने मारी नाखुं एवुं विचारी एक बाजु कंस वेठो रह्यो छे एवामां श्री कृष्णें सांजल्युं जे आज मल्लयुद्ध छे ते हुं वेखवा जाउं एवुं चिंतवी बलजद्रने गुरु जाणी पगें लागी बोल्यो स्वामी आज आज्ञा आपोतो मथुरामां मल्लयुद्ध जोवा जाउं तेवारे बलजद्रें जाण्युं जे तिहां जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्धथइ जाय माटे कृष्णने नाइवानी वात जणावी आवुं एम विचारी बलजद्र बोल्यो के यशोदा! अमोने स्नान करवा माटे उन्हुं पाणी आप अमे आज मल्लयुद्ध वेखवा जइशुं ते वखत यशोदा बीजा कोइ काममां पडी हती तेथी बल जद्रनुं वचन सांजल्युं अण सांजल्या जेवुं करी दीधुं तेवारे बलजद्र बोल्यो केम यशोदा तुं म्हारा नाइनुं पालण पोषण करवाथी शुं राणी बनी बेठी? दासपणुं चूली गइ जे यकी म्हारी वातने गणकारी नही एवुं कहीने श्रीकृष्णने साथे लइ बलजद्र बोल्यो के चालो आपणे यमुनामांहेज स्नान करीशुं पठी मथुरामां जइशुं एम यशोदाने कडवां वचन बल जद्रें कह्यां तेथी श्रीकृष्ण नाराजी थयो तेवारे मार्गमां बलजद्रें छ नाइने मारवा आदिक कंस संबंधि सर्व वृत्तांत कह्युं तथा आपणे बे नाइनी माताउ जुदी जुदी छे परंतु बाप एकज छे तने कंसना जयने लीधे इहां श्रीगोकुलमां राख्यो छे ते वात सांजलीने श्रीकृष्ण बोल्यो के जो आजने आज हुं म्हारा छ नाइने मारवानुं वेर कंस पासेथी लेउं तोज हुं खरेखरो कृष्ण? एम कही मार्गें यमुना नदीमां स्नान करवा प्रवेश कर्यो तेवारे कालियह्रदनो काली नाग आव्यो तेने श्रीकृष्णें पकडीने नाक वींधी नाकमां कमलवेलथी नाथी तेना उपर चडी असवार थइने घोडानी पेठे दोडाव्यो आ वात लोकोये जइ मथुरामां एक बीजानी पासे करी कंसें पण लोकोना मुखथी सांजली जे आजे नंद गोवालीयाना पुत्रें कालिनागने दम्यो

एटलामांतो राम कृष्ण वेहु जाइ घणा गोवाळीयाना. वृंदे परवर्या थका नगरने बारणे आव्या तिहां चंपोत्तर अने पद्मोत्तर ए वे हाथीये तेमने रोक्या तेथी बधा गोवाळीया फरवा लाग्या पछी बलभद्रें अने कृष्णें मळी हाथीउना दंतोसळ उखेडी नाखी हाथीउने उपाडी दूर फेंकी दीधा तेथी हाथीउ मरण पाम्या पछी कृष्ण बलभद्र वेहु जण मल्लने अखाडे आव्या तिहां एक राजाने मंच उपरथी नीचे पटकीने ते मंच उपर वेठा त्यां बलभद्रें श्री कृष्णने पोतानुं सर्व कुटुंब बताव्युं वळी कंस पण देखाड्यो अने कह्युं के ए कंस आपणोज छे परंतु दुष्ट छे एटलामां कंसें पण चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए वे ने युद्ध करवा तयार कर्या अनुक्रमें कृष्णजीयें चाणूर मल्लने मार्यो अने बलभद्रें मुष्टिक मल्लने मारी नाख्यो ए रीते वेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कंस क्रोध करीने बोल्यो अरे सुभटो जेणे ए बन्ने सर्पने पालण पोषण करी महोटा कर्या छे ते नंद अने यशोदाजी वेहुने बांधी पकडीने इहां लइ आवो एटले घाणीमां पीली नखावीये एवुं कंसनुं बोलवुं सांभळी श्रीकृष्ण रोषारुण थया थका कूदको मारीने कंसने कहेवा लाग्या अरे दुष्ट महारा छ जाइने तें मार्या छे तेनुं हुं वैर लेउं हुं एम कही कंसनी चोटली पकडी, नीचो नाखी देइ, मूकी मारी तेथी कंस मरण पामी नरके गयो यादवोये मळी उग्रसेन राजाने पांजरामांथी बाहेर काढाडी छूटो करी सभामां लइ आवी बेसाड्यो, तेवारे लोकोये जाण्युं जे आ राम अने कृष्ण वेहु वसुदेवना पुत्र छे पछी उग्रसेन राजाये सोळ वर्षनी उमरवाळा श्रीकृष्णजीने त्रणसे वर्षनी उमरवाळी सत्य भामाने परणावी दीधी हवे यादवोये जरासंधथी बीक पामीने जीवयशाने पूछ्युं के कंसने अग्निसंस्कार करीये ? तेवारे जीवयशा बोली राम कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी

चित्र ६१











साथे कंसने दाद् वेयाशे तमे जुवंतो रवरा शुं थाय ने? ते सांजली कृष्णजी बोल्या के अरे जारे
शुं ताराथी थवानुं ने एवुं सांजली जीवयशा तिहांथी निकली परवारी राजगृहमां पोताना
पिता पासे जइ च्याहे मोथे रोवा लागी अने कहुंके ताहारा जीवतां यादवोये ताहारा
जमाइने मारी नाख्यो यादव घणा उन्मत्त थया ने ते सांजली जरासंध बोल्यो हे पुत्रि! तुं
धीरज धर जे थवानुं हतुं ते थयुं हवे ए राम कृष्ण वेहु महारा अपराधी ने ते वेहुने आवी
महारे साधीन करी जाशे तोज यादवो महारा राजमां रही शकशे नहींकांतो हुं ए सर्व
यादवोने मारी नाखीश एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी संतोषी पछी एक सोमनामा
सामंतने यादवोनी पासे जरासंधें मोकल्यो ते यादवो पासे आवीने समुद्रविजय प्रमुख
राजाउने कहेवा लाग्यो के हे यादवो! तमे महारी वात सांजलो के, जे थवावालुं हतुं ते
थइ गयुं हवे मात्र एक राम अने बीजो कृष्ण ए बे गोवालीयाना गोकरा ने तेने बांधीने म
हारी साथे आपी जरासंध पासे मोकली आपो ए वासोने लीधे तमारा सर्व यादवकुलनो
क्षय करावो नही, ते सांजली समुद्रविजय बोल्या अरे सोम! तुं समजतो नथी जे एवा
गुणवान अने बलवंत पुत्रोने मरावबाने अर्थें अमे तुजने आपी दइये तो हवे अमे वृद्ध थया
ते केटला एक काल पर्यंत जीवता रहीशुं माटे जे थवानुं हशे ते थशे अमे कांइ अमारा
पुत्र आपीशुं नही वली बलजद्र बोल्या के अरे सोम तुं पिताउनी पासेथी पुत्रने मागतां
लजातो नथी शुं? अरे हजीतो अमे अमारा एक जाइ मारवानुं कंस पासेथी वेर लीधुं ने
परंतु पांच जाइ बीजा मार्या ने तेनुं वेर लेवुं बाकी रयुं ने माटे तुं जीवबानी चाहना रा
खतो होयतो इहांथी चाल्यो जा नहींकां तने तो हमणाज फल देखाडीश एवुं सांजली सो


चित्र ६२
डोसी रुदन करे छे
जरासंधनु सैन्य

तेवारे जीवयशायें आशीर्वाद आप्यो अने कह्युं के जाइ ताह्रारुं मृत्यु थाय तो नक्की थाओ पण यादवोनो क्षय करजे ए रीतें जेम थवानुं छे तेम जीवयशाना मुखमांथी वचन पण नीकल्युं हवे पांचसो जाइओसहित घणी ताकीदथी कालकुमर चाल्यो ते चालतां चालतां जेवारे यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अंतरे आवी रह्यो एटलामां श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव बीजा पण वली तद्भव मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोना परिवारमां छे तेमना पुण्यना योगें खेंची थकी यादवोनी कुलदेवी आवीने यादवोनुं मुकाम तथा कालकुमरनुं मुकाम जे जे स्थानके हतुं तेना वचला मध्यजागमां एक पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमां एक चिता सलगावी ते चितानी पासे वली एक डोशीनुं रूप करीने कुलदेवी रुदन करती थकी बेठी तेने कालकुमरें आवीने पूछ्युं के आ चितामां कोण बल्या छे अने तुं शावास्ते रुदन करे छे तेवारे कुलदेवी छल करी रोती थकी बोली के हे पुत्र! कालकुमरना जयने लीधे सर्व यादवोनुं कुटुंब आ चितामां बली जस्म थइ गयुं छे कोइ पण यादव रह्यो नही माटे हुं तेमनी कुलदेवी हुं तो हवे मने कोण पूजशे ए कारण माटे मुजने बहु दुःख लाग्युं तेथी रुदन करुं हुं ते वात सांजली कालकुमर पोताना मुखें करेली प्रतिज्ञा राखवा माटें घणा सामंत तथा केटलाएक जाइयोसहित तरवार काढीने यादवोने मारवा सारुं अग्निमां पड्यो अने बली जस्म थइ गयो पछी प्रजाते बाकी रहेला जरासंधना लश्करमांहेला लोको देवमाया जाणीने पाछा फरी राजगृहे जइ जरासंधने सर्व वृत्तांत कह्युं हवे आंही सर्व यादवो मोज मजामां खुशी थया थका पश्चिम समुद्रना तट उपर आव्या तिहां सत्यजामायें ब्रमरनामा पुत्रनुं जोडुं जण्युं तेवारे नैमित्तिकना कहेवा प्रमाणे

थादवो सर्वे निश्चल रह्या पछी कृष्ण महाराजें अष्टम तप करी सुस्थित नामा लवणाधिप देवनुं आराधन कर्युं तेथी देवता प्रत्यक्ष थावी उनो रह्यो तेनी पासेथी श्रीकृष्णे रहेवाने माटे जगा मागी त्यारे देवतायें कह्युं इंद्रमहाराजने पुछीने तमोने जगा आपीश एवुं कहीने सुस्थित देवता इंद्र महाराज पासे जइ सर्व वात कही इंद्रें धनद नामें जंमारीने मोकल्यो तेणे आवीने बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी एक द्वारिका नगरी बनावी तेने फरतो अढार हाथ उंचो अने बार हाथ जाडो तथा नव हाथ पृथ्वीमां उंडो एवो सोनानो कोट बनाव्यो ते कोटने रत्नना कांगरायें करी शोभित कर्यो वली ते कोटनी चारे बाजु फरती खाइ करी तथा वाडी बाग बगीचाउ सहित एवो ते सुंदर कोट बनावी पछी धनदें ते द्वारिका नगरीमां श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आपी ते नगरीमां एक सातभूमिवालुं कल्पवृक्षोनी वाडीसहित एवुं घर श्रीकृष्णजीने रहेवा सारु बनाव्युं वली ते घरनी एक बाजु समुद्रविजयादिक दस भाइउने माटे घरो बनाव्यां तथा ते श्रीकृष्णना घरनी बीजी बाजुमां वली उग्रसेननुं घर बनाव्युं तेनी बाजुमां वली बीजा सर्व भाइउना घर बनाव्यां ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, घरेणा प्रमुख उत्तम वस्तुउथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देवता स्वर्गमां पोताने स्थानके गयो हवे सर्व यादवोये मली द्वारिका नगरीमां वास कर्यो तिहां यादवोना कुंटुंबोनी वृद्धि थवा लागी ते अनुक्रमे पचाश वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोडी यादवोमांथी वधीने छप्पन कुलकोडी यादवोनी वस्ती थइ एवा अवसरमां रत्नकद्वीप नगरीमां कोइ रत्नकंबलना व्यापारीउयें आवीने एवी वात करी के आ नगरीमां कोइ [illegible] [illegible] [illegible] के कारण के [illegible] रत्नकंबलना



श्रीकृष्ण अने जरासंधनुं युद्ध

वेपारवाला पण कोइ आवा शहेरमां निकल्या नही अने द्वारिकामां यादवो वसे ने ते महा सुखी ने एवीरीतें द्वारिका नगरीनी प्रशंसा जरासंधें सांभलीनें विचार्यु के महारा वैरी हजी सुधी जीवता ने माटे हवे एनो नाश करुं, एम चिंतवी सेना लइ युद्ध करवा चाल्यो एवामां नारद ऋषीयें जइ श्रीकृष्णने कह्यु के तमारे चेतवुं होय तो चेतजो जरासंध तमारा उपर चढी आवे ने ते सांभली श्रीकृष्ण पण सेना तयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या तेणे पंचासरा गामनी पासे आवी पडाव दीधो मुकाम कर्यु अने जरासंधनुं लश्कर पण पंचासरा गामथी चार योजन दूर आवी पोहोच्युं तेमां जरासंधनुं लश्कर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनुं लश्कर गरुडव्यूहना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव दीधो ते बेहु ल श्करने मांहोमांहे महोटुं युद्ध थयुं लाखो गमे सुभटो मरण पाम्या ने इत्यादि विशेष अधि कार श्रीनेमिनाथचरित्रादि अनेक ग्रंथोथी जाणी लेवो, आंही ग्रंथगौरवना भयथी लखता नथी हवे ते बेहु तरफवाला सुभटोनी लडाइ चालतां श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे एवुं जरासंधें विचारीनें कोइ उपाय न सूजतां जरा नामें एक बाण हतो ते श्री कृष्णनी सेना उपर नाख्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखें लोही वमती मूर्छा पामी गइ, तेवारे श्रीनेमिनाथजीना कहेवाथी श्रीकृष्णें अठम तप करी धरणेंद्रने आराध्यो धरणेंद्रे आ वीने आगामिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी तिहां मंगल निमित्तें श्री कृष्णजीयें सुस्थित देवें आपेलो शंख वजाड्यो अने धरणेंद्रे आपेला बिंबनुं स्थापन कर्यु तिहां श्रीशंखेश्वर एवे नामें तीर्थ थयुं ते आज लगण मोजुद ने कोइक आचार्य वली एम पण कहे ने के श्रीकृष्णजी त्रण दिवस उपवास करी बेठा ते त्रण दिवस पर्यंत श्रीनेमि

नाथ स्वामीयें संग्राम करवो वली इंद्र महाराजें मातली नामा सारथी सहित रथ मोकल्यो तेना उपर चढीने नेमिनाथजीयें शंख वजाव्यो तेथी जरासंधनी सेना शिथिल थइ गइ, अने त्रण दिवस श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनो न्हवण पोतानी सेनामां श्रीकृष्णें छांट्युं तेथी श्रीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ छेवट कोइ पण रीतें श्रीकृष्णने जीतवानो उपाय जरासंधने सूज्यो नही त्यारे श्रीकृष्णने मारवा सारु जरासंधें पोतानुं चक्र तेना उपर चलाव्युं तेथी कांइ श्रीकृष्णनुं बगड्युं नही पण उलटुं ते चक्र श्रीकृष्णने त्रण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हाथमां आवी बेठुं पछी तेज चक्र लइ श्रीकृष्णें जरासंध उपर चलाव्युं तेणे जरासंधनुं मस्तक छेदी नाख्युं ते वखत देवताओ आकाशमां देवदुंदुभी वगाडीने बोल्या जे श्रीकृष्ण नवमो वासुदेव थयो, ते वात सांभली समस्त जरासंधनी सेना आवीने श्रीकृष्णजीनी सेवामां हाजर थइ पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामां आव्या सुख समाधिमा त्रण खंडनुं राज्य भोगवता तिहां रह्या छे बहोतेर कुलकोडी यादव द्वारिकामां रहे छे अने साठ कुलकोडी यादवो द्वारिकानी बाहेर रहे छे तथा महापुरुष समुद्रविजयादिक दश दसार तथा बलदेवादिक पांच महावीर एटले महोटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल हजार राजाओ तथा प्रद्युम्नादिक साडा त्रणकोड कुमर तथा सांबादिक सोल हजार दुर्दांत कुमर अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार वीर तथा महासेनप्रमुख छपन्न हजार बलवंत राजाओ ए सर्व द्वारिकामां वसे छे. वली रुक्मिणीप्रमुख बत्रीस हजार राणीओ तथा अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओ एवा परिवार सहित परवर्यो थको महोटुं राज्य श्रीकृष्णजी करे छे. एवा अवसरमां इंद्रमहाराजें श्रीनेमिनाथजीना बलनी प्रशंसा करी तेवारें ते सनामां कोइ मिथ्यात्वी देव इंद्रमहाराजना वचनने

नही मानतो थको गिरनार पर्वत उपर आव्यो तेणें त्यां सुरंधग नामें नवीन नगर वसाव्युं तेमां ते देवता पोते आवीने मनुष्यनुं रूप धारण करीने रह्यो अने द्वारिका नगरीना रहे नारा लोकोने नित्यप्रत्यें घणुंज दुःख देवा लाग्यो, उपद्रव करवा लाग्यो, ए वात सांभली ने महा अभिमाननो घरनार एवो अनाद्दष्टि ते देवने पकडवा सारुं गिरनारनी उपर ते देवें वसावेला नगरनी उपर चडी आव्यो, तेने देवतायें देव मायायें करी जीती लीधो अने बांधीने पोताना नगरमां लइ गयो, ए वात सांभलीनें समुद्रविजयजी तेनी सामे लडवाने माटे जवाने तयार थया तेवारें राम कृष्ण ए भाइए समुद्रविजयने वार्या, अने पोते लडाइ करवा सारु गया तेने पण देवतायें भगवीने पोताना नगरमां लइ जइ बंदीखानामां नाखी दीधा, तेवारें द्वारिकामां हालकल्लोल थइ रह्यो अने लोको कहेवा लाग्या के राम कृष्ण बे भाइ हारी गया तो हवे आपणी रक्षा कोण करी शकशे? त्यार पछी सत्यभामाजी प्रमुख स्त्रीउंये जइ श्रीनेमनाथजीने कह्युं के तमे अनंत बली छतां तमारा भाइने शत्रु दुःख आपे ने तो एथी तमारी लाज जाय छे तेवारे नेमीश्वर भगवान एकला रथमां बेसीने शत्रुना न गरने चारे बाजु रथ फेरव्यो तेथी कांगरासहित सर्व कोट पडी गयो तेवारे देवें सिंह विकुर्व्या ते जोइ नेमिनाथें धनुष्यनो टंकारव करीने सर्व सिंहोने भगावी दीधा तेवारे देवतायें अं धकार करी मूक्यो, भगवाने उद्योतवालो बाण मूकीने अंधकारनो नाश कर्यो, तेवारें देव तायें मेघ वरसाव्यो, भगवाने वायरो चलावीने मेघने दूर कर्यो, तेवारे देवतायें अंगारनो व रसाद वरसाव्यो, तेने भगवाने पाणीथी बुझावी नाख्यो, पछी भगवाने मोह बाण मूक्युं तेथी सर्व शत्रु मूर्छा खाइने पडी गया, महादुःखी थया, तेवारें इंद्रमहाराज तिहां आवीने तिनं

करवा लाग्यो, के महाराज! ए अज्ञानी देव छे ते आपना अनंत बलने शुं जाणे? ते वारे भगवाने कृपा करीने देवताने छोडी मूक्यो पछी ते देवतायें महोटा महोत्सव सहित श्री कृष्णादिकने द्वारिकामां मोकली दीधा पोते भगवानने नमीने पोताने स्थानकें गयो. हवे अनुक्रमें श्रीनेमीश्वर भगवान त्रणसे वर्षना थया पण परणवानी इच्छा राखे नही तेवारे शिवादेवी जीये कह्युं के हे पुत्र! तुं एक विवाह करीने महारा मनोरथ पूरण कर तेवारे भगवान बोल्या हे माताजी! कोइ महारा योग्य कन्या हशे तो हुं परणीश ते वात सांभली माताजी मौन धारण करी रह्यां हवे श्रीसमुद्रविजयकुलसणगार, शिवादेवी मात मल्हार, एक दृढनेमि, बीजा दृढनेमि, त्रीजा अतिनेमि, चोथा अरिष्टनेमि अने पांचमां रहनेमि ए पांच कुमर मांहेला श्रीअरिष्टनेमि कुमर ते लघुवय सरखा सरखी जोडि, मनतणे कोडि, घणा कुमरे परवर्या लीलायें रमता भमता श्रीकृष्णनी आयुध शालायें आव्या, आयुध जोवा लाग्या, तेवारे रक्षपाल बोल्यो तमे लघु बालक छो, माटे अलगा रहो, एनो स्पर्श करवो पण दोहिलो छे, छोकरडे छाश न पीवाय, महोटुं कार्य ते महोटाथीज थाय, ते न सांभलतां श्रीअरिष्टनेमि कुमारें श्रीकृष्णना चक्रने उपाडी कुंभारना चक्रनी पेरे भमाव्युं तथा सारंग धनुष्य उपाडीने तेने कमलना नालनी पेरे नमाव्युं तथा कौमोदकी नामें गदाने लाकडीनी पेठे उपाडीने पोताना खांधा उपर राखी हवे जेवारे पांचजन्य शंख पूर्यो तेवारे तेनो शब्द सांभलीनें त्रण भुवन कंप्या, पर्वतना शृंग तूटी तूटीने पडवा लाग्या, समुद्रजल उछलता हवा, हस्ती तुरंगमादिकना बंधन तूटी पड्या तेथी सर्व नागी गया, लोक सर्व बहेरा थइ गया, धरती धूजवा लागी, नगरनो कोट पण भूज्यो, समुद्र ऊछल्यो, दिग्गजआरा पाम्या, यादव

चित्र ६४





सर्वे मूर्छागत जेवा थइ गया, सर्वे बीक पामवा लाग्या, श्रीकृष्ण, बलनद्र, कंपता थका अने नयाकुल थया थका चिंतववा लाग्या जे आ ते कोण बलवंत छे? के जेणें सर्वे पृथ्वी क्षोन पमाडी एवी रीतें तेमने कांइ पण जंप न आव्यो, तेथी तरत तिहां आव्या अने पूजा करी, ते वारे सर्वे बोल्या जे श्रीअरिष्टनेमि कुमारनो ए बल छे, ते सांजली चमत्कार पाम्या पछी श्री कृष्णें कयुं के हे नाइ! आपणे बलपरीक्षा करीयें, तो चंकित थीने तेवारे नेमिकुमर बोल्या के जे नूमि लुंठनादिक बाह्य खेल करतुं, ते उत्तम नरने योग्य नही, माटे माहोमाहे एकेकनी नूजावालीने बलपरीक्षा करियें, ते वचन श्रीकृष्णे प्रमाण करी पोतानी नूजा लंबावीने कयुं के, आ महारी बाहु नमाडो तेवारे नेमिकुमारें कमलनालनी पेरे एक आंगुलीयें श्रीकृष्णनी बाहु नमावी दीधी पछी श्रीनेमिकुमारें पोतानी बाहु लंबावी तिहां कृष्ण घणुं बल करी वानरनी पेरे वलगीने हिंच्या तेवारे श्रीनेमिकुमर बोल्या के हे कृष्णजी! तमोनें माता देवकीयें पालणे पोढाडीने रमाड्या नही, ते माटे हवे हुं तमने हिंचोलुं, एम कहीने श्रीकृष्णने हिंमोलानी माफक हिंचोल्या एरीतें जेम जुगारी दाव हारे, तेम कृष्ण हारी गया एवुं जोइने बलनद्रजी बोल्या के हे नाइ ब्रमरने नारे तरुशाखा नमे नही, पछी कृष्ण तथा बलनद्रजी चिंतातुर थका चिंतवे छे के ए पितराइ नाइ आपणाथी अधिक बलवान् छे माटे आपणुं सर्वे राज्य लइ मूकशे कीडी तीतर न्याय करशे एटलामां आकाशे देव वाणी थइ के अहो कृष्ण वासुदेव तमे चिंता म करशो एतो नेमीश्वर नगवान, बाल ब्रह्मचारी, बावीशमां तीर्थंकर एवुं अतुल्य बल छे तथापि तमारो राज्य लेवानी एने गरज नथी अने स्त्री परणवानी पण गरज नथी ए तो परण्या विनाज संसारनो त्याग करी दिक्षा लेशे. ए वचन सांजली

कृष्णजी हवें पाछी पोताने घरे पोहोता हवे एक दिवस शिवादेवीजीये नेमिकुमरने निरागी जाणीने गोपीयोने नजारण करी के तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाओ अने एने जेम तेम सरागी करी विवाह करवानो मनावो तेवारे सत्यभामाप्रमुख सोल हजार गोपीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमां जइ जइ विचित्र प्रकारना वचनो कहेवा लागी तिहां एक बोली तमे शामाटे परणता नथी तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो परण्यो छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनुं कारण शुं? तेवारे बीजी बोली हे भला पुरुष! आवी रीतें युवानपणुं कां फोकट गमावो छो, परणवामां घणी मजा छे, त्रीजी बोली परण्याविना मोक्ष पण जइ शकशो नही, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने मोक्ष गया छे तो वली तमे ते कांइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो, एक बोली एतो मोट्यो थाशे परणीने शुं करशे, सत्यभामा बोली जो नही माने तो एनो पल्लो पकडो, तेवारे लक्ष्मणा बोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नही, पण परणवुं तो अवश्य जोइयेज, वली सत्यभामाजी बोली एनी पासे कांइ सामर्थ्य नथी कारणके जो स्त्री परणे तो तेने पालवानुं काम मुश्केल छे ते एनाथी बनी शके नही तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले छे तेनी साथें एक एनी पण पालशे एवी वातो सांभलीने नेमिनाथजी कांइक हस्या तेवारे सर्व गोपीयो ताळोटा आपीने बोलवा लागी जे एणे विवाह मान्यो, मातापितायें पण जाण्युं जे विवाह मान्य कर्यो एवुं समजीने शिवादेवीना कहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी प्रमुख राजायें उग्रसेन राजाने घरें जइने राजीमती कन्यानी मागणी करी तेणे पण खुशीथी करी के गुणेथी वाणमाशे बनी बेहु जणाने विवाहनो महोत्सव करवा मांड्यो चणावा माटे



नेमीश्वर भगवान् वसंतक्रीडा करवा गया तेनुं चित्र.

शणगार करावना लागा पण नेमजी विनयवान ...
यथी जो पण निस्पृही छे तोपण मौन धारण करी रह्या हवे जान निकली ते वखत अनेक यादवोना क्रोडो गमे मनुष्य साथे चाल्या, सर्व राजाउ साथे चाल्या, अनेक वाजां वाजतां, हाथी उपर बेठा, चमर ढलता, देवदेवी आकाशमां चालतां, स्त्रीयो पृथ्वी उपर गीत गाते थके चालता चालता उग्रसेनना महेल पासे जान आवी तेवारे नेमजी सारथीने पुछवा लाग्या के आ महेल कोनो छे, सारथी बोल्यो तमारा श्वसुरानो महेल छे, आंही विवाह मनाववा तथा जान संबंधि युक्ति बीजी प्रत उपरथी लखीयें छैयें. जेवारें वसंत मास आव्यो,तेवारे बत्रीश हजार राणी सहित श्रीकृष्ण वासुदेव श्रीनेमिकुमरने साथें लइ वसंतक्रीडा करवा वनमां आव्या तिहां स त्यभामादिक राणीयोनें नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सन्कारी कृष्ण स्थानांतरे रह्या, हवे ते अनेक स्त्रीउ मली थकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाब प्रमुख सुगंध नीर छांटे, फूलनो दडो हृदयजणी नाखें, कटाक्ष बाणे वींधे, कामचेष्टापूर्वक जल छांटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर! विवाह मानो अने एक स्त्रीतो परणो, जो स्त्रीनुं भरण पोषण तमाराथी न थाय तो तमारो भाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो भरण पोषण करे छे, तेम तमारी एक स्त्रीनुं पण पोषण करशे? तेनी चिंता करशो नही, पण स्त्री जरुर परणो, स्त्री विना पुरुष शोभे नही, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नही, वली अंगनी शुश्रूषा कोण करे, प्राहुणा प्रहीने कोण साचवे, ते माटे पाणिग्रहण अंगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनंति मानो, वधे जेम वानो, नही तर पण नही छूटो, जोर करी जूगो, अमने वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज. एवा वचन सांभली नेमीश्वर नीचुं जोइ रह्या, जे

े ते गली इणो वचनविचार करवो एम चिंति हा ना कांइ न कही, तेवारे स्त्रीउ
मान्यो मान्यो विवाह, जहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने
ति पे वधामणी उजमाज ॥ हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान,
पासे थइ , मागे राजीमती कन्या, सतीशिरोमणि धन्या, उग्रसेन पभणे सघले साज,
इहां आणो ते वरराज, तो देउं कन्या तास, जग विस्तरे जश वास ॥ हवे समुद्रविजय
राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी कोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि छठ्ठुं लगन जाणी, वांटे
वधामणी, तेडावे सगासणीजा जणी, मांडे मोहोटो आडंबर, धवल मंगल गाये घर घर,
पोषे जन जने पकवान, जुगते वजावे जान ॥ तद्यथा ॥ शोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति
राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावतसमान ॥ बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साजतेने स
जोडा ॥ बेतालीश लाख रथ, शोभा पामता पथ, अडतालीश कोडी पायक, शत्रुदल घा
यक, नव कोडी सामान्य तुरंगम, एक एकथी अनोपम ॥ छ्नु कोडी चिराकदार, नव
ोडी गगजियादार ॥ बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमरप्रमुख शाठ सहस्र
दुर्दांत कुमर ते पारसीक जातिने घोडे चढ्या, प्रद्युम्नप्रमुख पंचोतेर सहस्र कुमर महाधीर
ते हयरेवा जातिने अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दनप्रमुख पांच लाख कुमर ते वह्लीली जा
तिने अश्वे चढ्या, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणीपंथा जातिने तुरंगे चढ्या, साग
रचंद्रप्रमुख एक लाख कुमर ते कंबोजा जातिने अश्वे चढ्या, अनादृष्टिप्रमुख तेर लाख
कुमर रेवाविरूढ थया, पाजकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमंगल जातिने अश्वे चढ्या, दं
ढनेमिप्रमुख बार लाख कुमर रेमंगली जातिने अश्वे चढ्या,



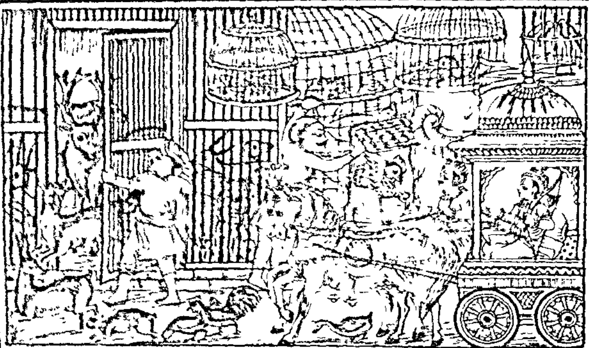
चित्र ६६

नेमीश्वर भगवाननी जान

मर चंद्रभना जातिने अश्वे चढ्या, महानेमिप्रमुख पन्नर लाख कुमर अग्नि पंथा जातिने अश्वे चढ्या, एवा यादव कुमर, जोगी जमर, जेहना जाणीता कुल, नालानुं बल, आगलथी चाले, थोडुं बोले, थोडुं ठाकुरने नमे, दर्शनीने नमे, परनारी सहोदर, वाचा अविचल, शरणागत साधार, सूर वीर दातार, फूंझार रणांगण धीर, रिपुंरुदय दल सीर, कसबोइ गरकाव, केशरीए पागे, लीधीए वागे, कांधाल, मूछाल, जलजला नूपाल, आवे उमह्यां, पंथे वह्यां, वली बे कोडी सेजवाला, चोराशी कोडी स्त्री गीत गान करे, छपन्न कोडी अलंब धजा, बार कोडी नाट विरुदावली बोले, बार कोडी सुखासन पालखी, पन्नर लाख खचर इथ्ये नख्या, त्रण लाख श्रीछत्र, बेतालीश लाख रथ, त्रण कोडि चामर ढले, एंसी लाख नीसान वाजे, सत्तर लाख ढोल वाजे, छन्नु कोडी नेरी वाजे, नव लाख मादल वाजे, पीस्तालीश कोडी छडीदार, शाठ कोडी सुरदीपा, वडवडा वहीया, मंत्रीश्वर प्रधान, कहियें केता अभिधान, नवाणु कोडी सामान्य वहिल, यइ इम जाननी चहिल पहिल, हवे वर राजाने सर्वौषधिनीरे कराव्युं स्नान, उजुआल्युं विशेषे वान, मातायें नालस्थले कीधो तिलक, अक्षतनो प्रतिष्ठयो उपर पदक, नव कोडीनो मुकुट, पचाश कोडीनो नवग्रहो, बार कोडीना बे कुंमल, अडतालीश कोडीनुं रत्ने जडित तिलक, पच्चीश कोडीनी मुद्रिका, पच्चीश कोडीना अनेक रत्न जडित हार, बे लाख कोडीनी रत्नजडीत शांकली, जनोइनी पेरे पहेरे, पन्नर कोडीनी चंपकलि, देवदत्त अमुलिक पागडी, पच्चीश लाख कोडीनी कवाइ, एकाणुं कोडीना बे बहिरखां, पीस्तालीश कोडीना बे बाजुबंध, सत्तावीश लाखनो कणदोरो, पच्चीश कोडीनो रत्नजडित कणो, त्रीश कोडीनी वाणही पगरखां, छन्नु कोडीनो अनेकरत्नजडित श्रीफल रूप फूलदडो,

अमूलक वस्त्र पहेरावी, सकल सणगार करावी, आंख आंजी, मुख मांजी, सिर धाल्यो खूंप, शोभे सुरूप, आण्यो गजराज, सुवर्णमय साज, मेघाडंबर छत्र, प्रतिष्ठयो पवित्र, चढयो वर राज, जाणे इंद्रमहाराज, के मूर्त्तिवंतो कामराज, शोभा समाज, पसर्यो तूर्यमंगलनिनाद, गह गह्यो स्त्रीजनसाद, आकाशें अनेक देव देवांगना इंद्र इंद्राणी रंभा अपत्सरा आवे, मनने भावें, किन्नरी गीत गाये, सरस्वती वीणा वाये, तुंबर गंधर्व नाचे, सहु मन राचे, कृष्ण बल भद्र दशे दशार छमावे, जीर्ण छुगी भणी जान आवे, जेम ज्येष्ठमास उद्यान, साजन जनने अधिको मान, याचक जनने देतां दान, हुउ धवल मंगल उच्चार, आवीउ वर तोरण बार, जोये जोवणहार, धन्य धन्य राजीमती नार, जेणीयें वर लाधो श्रीनेमिकुमार, हवे राजीमती गवाक्षमां बेठी थकी सखीयोने कहे छे के महारो भर्त्तार कहेवो छे तेवारे सखीयो बोली आ हाथी उ पर बेठा थका महाऋद्धिसहित चाल्या आवे छे ते नेमजी छे तेवारे प्रभुनुं रूप देखी मोह पामीने विचारवा लागी के महारो महोटो भाग्योदय थयुं जे नेमजी जेवो वर आवीने मुने परणशे एम विचारती चंद्रानना, मृगलोचना सखीसहित वार्त्ता करतां सखीयें कह्युं के, ए वर सर्वगुणसंपूर्ण छे पण एक अवगुण ए छे जे एनुं श्यामवर्ण छे, वरतो गोरो जोइयें, राजीमती बोली एतो दूधमांहेथी पुरा काढवा मांडया श्यामवस्तु मांहे तो घणो गुण छे, भमि, चित्रा वेली, अगर, कस्तूरी, मेघ, कीकी, केश, कशोटीनुं पाषाण, मसी, रात्रि, इत्यादिक वस्तु श्याम होय छे ते जगतमां भली कहेवाय छे तथा धोली वस्तु कपूर छे, तेने मरी अंगाराशुं मेल छे, चित्रा ने रोहिणी श्याम होय तो शोभे, निःकेवल गोर तो लुण, अस्थि, हिम, स्वेत कुष्ट, एमां हे शुं वखाणवा योग्य छे? श्यामने वरणे वरप्रशंस्य देखी लोचन अमीय भराणी, हृदय



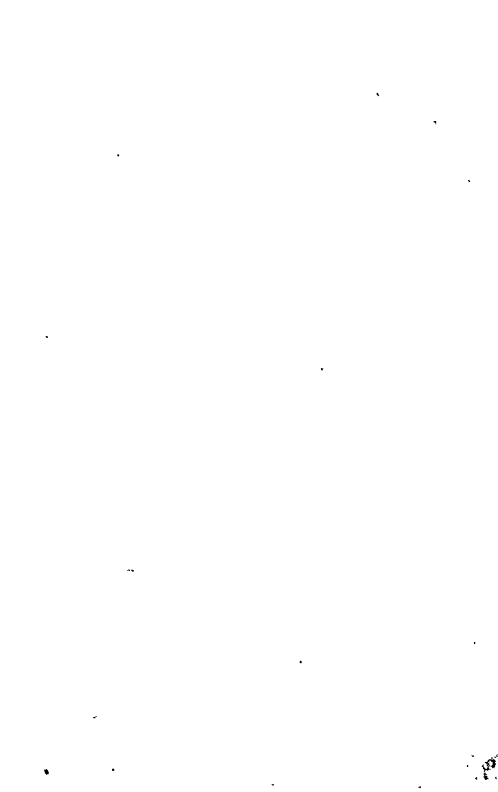


चित्र ६७

भोजन कारण माटे एकठा करेला चतुष्पद जीवो तथा पांजरामां रहेला पक्षीओ नेमने भगवान् छूटा करी मुकेछे.

कमल उल्लस्यां, मनना मनोरथ रूप वेली प्रसरति हुइ ॥ ॥ एवामां राजीमतीनी ज
मणी आंख फुरकी तेवारें शोच करवा लागी अने जाण्युं जे सर्वथा प्रभुनो संयोग न मले,
पछी सखी प्रत्ये कहेवा लागी के महारो जमणो अंग फुरके छे ते सांजली सखी बोली हुं
मंगलमां अपमंगल कां बोले छे एवामां प्रभुयें पण तोरणें आवतां थकां मार्गमां चतुष्पदा
दिक जीवें जर्यां वाडा दीठां तथा पंखीयें जरेला पांजरा दीठां तथा घणा जलचर जीव पा
णीविना ऊंचा ऊंचा कुदी रह्या छे तथा थलचरमां हरिण, सांबर, रोज, गेटा, मेंढा, ससला,
प्रमुख अनेक जातिना जीव तथा खेचरमां कूकूट, तीतर, मोर, सारसना जोडला, राजहंस,
कोयल, बगलां, सूडा, इत्यादिक जीवो एकठा कर्या छे, तेनी पोकार सांजली तथा एवामां एक
हरिण अने हरिणली कोटें कोट जरावी विलाप करतां प्रभुने विनति करे छे के हे प्रभु! अ
मने आ कष्टमांहेथी उगार, अमे कांइ अपराध कीधो नथी, तृणखला मुखे दीये छैयें, हे अनाथ
नाथ! प्रभु, राख राख. ते जोइ श्रीनेमिकुमरे हस्ति मावतकने पुठ्युं के ए जीवोने शे कारणे रों
की राख्या छे, तेवारें मावत बोल्यो तुमारा विवाह गोरव जोजनार्थे राख्या छे ते सांजली प्रभु
बोल्या धिक् धिक् ए विवाहें सर्युं मने आ नरकना मूलरूप विवाह जोतो नथी प्रभु दीनद
याल सर्व जीवायोनीने छोडावी हस्तियकी उतरी रथें बेसी पाला वल्या, तेवारें श्रीसमुद्रवि
जय राजा, शिवा देवी राणी, कृष्णवासुदेव, अने बलजद्रप्रमुख छप्पनकुलकोडि यादव रथ
अटकाववाने आडा फर्या परंतु प्रभु कोइना वाल्या वल्या नहीं अने एवुं बोल्या के आ सर्व
जीवो बंधनमां बांध्यां थका महादुःख देखे छे तेम हुं बंधाउं नही अने संसारमां पण रहुं
नही. हाथीउं वाये जाल्या न जाय, तिहां जायरे जाय यादव राय ॥ एवी वार्त्ता सांजली रा

जीमती धरणी ढली पडी क्षण एकें सचेतन थइ तेवारें मुखयकी बोली के हे हे हे प्रनु तमें हर्षस्थानकें ए श्यो विषवाद उपजाव्यो ? एम कहेती हार त्रोडती, वलय मोडती आन्नरण नांजती, वस्त्र मांजती, किंकणीकलाप ठोडती, मस्तक फोडती, कुंतलकलाप रोलती, नूमि लोटती, सांजन वाष्पजलें नूमि सींचती, सखीजन अपमानती, जेम थोडा पाणी मांहे माछली टलवले तेम विकल याती, विरहमाती, क्षणे रोवे, क्षणे जोवे, क्षणे आक्रंद करे, क्षणे नीसास नरे, क्षणे मूंफे, क्षणे वूजे, क्षणे फूंजे, क्षणे न सूजे, वली अनेक उलंना पूर्वक वचन कहे ठे के हा यादवकुलदिनकर, हा करुणासागर, हे शरणागतवत्सल, हुं अवलाने एम एकली मूकवी तुमने न घटे, जो सर्वजग जीवनी दया पालो ठो तो मुज उपर कां दया न आणी, माटे अरे निष्ठुर निर्लज्ज दैडातने प्रनु मूकी गया तो हवे तुं शतखंम कां नथी यातो? हवे तुं श्यो लाहो लइश एवा राजीमतीना विलाप सांनली सखीवर्ग, सज्जनवर्ग, मातापितादिक कहेवा लाग्या के ए निस्नेहि शुं श्यो राग करवो तुं एटला विलाप शावास्ते करे ठे तहारो कांइ विवाह थयो नथी माटे ए कालो कुरूपो वर गयो तो शुं थयुं ताहारे वली बीजो रूपवान वर मलशे माटे हवे अन्य उत्तम वर वरो तेवारें राजीमती बोली ए वचन सांनलवा योग्य नहिं, तमे एवा वचन मुजने म कहो, महारे तो श्रीनेमिनाथना चरणनुं शरण ठे, कालो तो कस्तुरी पण थाय ठे ते गुणवान ठे माटे तेनुं मूल्य घणुं थाय ठे अने जे सपेत लसण थाय ठे ते निरगुणी ठे माटे तेनो कोइ नाव पण पूछतो नथी तो ए प्रनुजीयें मारो हाथ न साह्यो पण हुं एनो हाथ महारे माथे मूकावीश ए प्रनुने नामे हुं सौनाग्यवती छुं माटे जो एणे मुजने नही परणी तो हुं एनी चेली थइने एनी पडखाडे फरीश पण बीजो वर प





चित्र ६८

रणीश नथी एम कही गयो गिरनारजीने कहेवा लागी ...
नेमजी जो ताहारी वारे आवे तो हुं एने वरवा आवीश नही तारी एवो वचनो आपने
के हुं अपजाने दुःखणी करीने का आव्यो अथवा राजवाळी गोडी दीधी तो जाणुं छे
एतो त्यागवावाळानी रीती छे इत्यादिक विकल्प करती, बीजा पाछली थकी पोताना पिता
ना घरमां रहे छे एवामां रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीयें तुजने परणी नही
अने हुं नेमजीनो नाह हुं माटे हवे तुं मनेज परण तेवारे राजीमती बोली अरे वमेला आ
हारने खावानी तुं शुं वाञ्छना राखे छे? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी वाञ्छना कर
ती नथी एवुं सांभळी रथनेमि विलखो थइ बेशी रह्यो ॥ हवे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तोरण
थी पाछा फरी घरे आव्या तथा वळी त्रणसे वर्ष कुमारावस्थायें घरमां रह्या पछी लोकांतिक
देवो आवी बोल्या हे प्रभु! धर्म प्रवर्त्तावो नेमिनाथ स्वामीयें अवधिज्ञानथी पोताने दीक्षानो
अवसर जाणी वरसी दान देवा मांड्युं ॥ १०२ ॥ ॥ हवे आ वर्षाकालनो पहेलो महीनो,
बीजुं पखवाडियुं, श्रावणशुदि छठने दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिनमां अर्थात् मध्यान्ह प
हेलां, उत्तर कुरुनामा पालखीमां बेठी ते पालखी देव तथा मनुष्ये उपाडी थकां द्वारिका
नगरीनी वचमांथी थइने जिहां रैवत नामा उद्यान छे तिहां आवीने अशोक वृक्षनी नीचे
पालखीमांथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलंकार उतारीने, पांच मुष्टि लोच क
रीने, छठ तप पाणीरहित एटले चउविहार ते तपवासे, चित्रा नक्षत्रे चंद्रमानो योग थये
छते, एक देवदूष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणुं
अंगीकार कीधुं ॥ १०३ ॥ ॥ अरिहंत अरिष्टनेमि चोपन रात्री सुधी काया वोसरावी यावत्

पंचावन्नमे दिन रात अंतरे वर्तमान जे वर्षाकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं परववाडियुं, आ शोजविदिनी अमावासने दिवसें पाउला पहोरमां, गिरनार पर्वत उपर, वेतस नामा वृक्षनी नीचे पाणी रहित अठमना तपमां चित्रा नक्षत्रें चंड्रमानो योग आवे उते शुक्लध्यान ध्यावता थका अनंतुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं, सर्वनाव जाणता देखता थका विचरे ॥ १७४ ॥ ॥ श्रीनेमिनाथ स्वामीने गिरनार पर्वतना सहस्राम्र वनमां केवलज्ञान उपनुं, देवे समवसरण रच्यो, वनपालकें आवी श्रीकृष्णने वधामणी आपी, श्रीकृष्ण महोटी रुद्धिसहित वांदवा आव्यो, राजीमतीपण वांदवा आवी, बीजापण घणा लोक वांदवा आव्या, नगवाननी देशना सुणीने वरदत्तनामा राजायें बे हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी. हवे कृष्णजीयें पूछ्युं के हे स्वामी आपनी उपर राजीमती एटलो मोह केम राखे छे तेनुं कारण मने संनलावो, नगवान बोल्या हे कृष्ण महारे एनी साथे पूर्वे आठ नवनो संबंध छे तेमां पहेले नवें हुं धननामे राजा हतो तेवारे ए महारी धनवती नामे राणी हती, बीजा नवमां बेहु जण पहेले देवलोके देवपणे उपन्यां, त्रीजे नवे देवलोकथी चवीने हुं चित्रगतिनामा विद्याधरराजा थयो तेवारे ए रत्नवती नामे महारी स्त्री थइ, चोथा नवमां बन्ने जण चोथे देवलोके गया, पांचमे नवें देवलोकथी चवी हुं अपराजित नामे राजा थयो तेवारे ए प्रियमती नामे महारी राणी थइ, उठे नवे बेहु जण अगीआरमे देवलोके देवता थयां, सातमा नवमां हुं शंखनामे राजा थयो तेवारे ए सोमवती एवे नामे, महारी राणी थइ, आठमे नवे अमे बेहु अपराजित नामा अनुत्तर विमाने देवतां पणे जइ उपन्यां तिहांथी चवीने नवमां नवमां हुं नेमि थयो अने ए राजीमती [illegible]

[illegible] फरी संनलावीने नगवाने ति



गिरनार पर्वतपर एक गुफामां रहनेमी साधु काउस्सग करेछे. अने तेज गुफामां राजीमतीजी नग्न थईने पोताना वस्त्र सूकावेछे.

र्‍यांथी विहार कर्यो अने श्रीकृष्णादिक तथा राजीमतीप्रमुख वृत्तांत सांजली द्वारिकायें गयां, पछी वली एकदा श्रीनेमिनाथजी गिरनारें आवी समोसर्या तेवारें राजीमतीयें बीजी घणी राजकन्याउनी सांथें दीक्षा लीधी अने रथनेमीयें पण दीक्षा लीधी, हवे एक दिवस राजीमती जीने गिरनार पर्वत उपर जगवानने वांदवा जतां मार्गमां वर्षाद वर्ष्यो तेथी राजीमतीना वस्त्र जीजाइ गयां तेने सूकाववा सारुं एक गुफामां प्रवेश कर्यो तेज गुफामां आगलथी रथनेमि काउसग्ग ध्याने रहेलो ठे तेनी कांइ राजीमतीने खबर हती नहीं तेथी राजीमतीयें ते गुफा मांहे पोताना जीजेला सर्व वस्त्र उतारी नाखीने सूकववा मूक्यां तिहां राजीमतीने नग्न देखीने रथनेमीनुं मन चलायमान थयुं अने कामे पीड्यो थको लज्जानो त्याग करी बोलवा लाग्यो के हे राजीमती ! तमे शा वास्ते तपस्या करीने नकामां शरीरने शोषवो ठो आवोनी महारी पासें आपणे बेहु जण विषयसुख जोगवीयें हमणा युवान अवस्थामां तप करवानो अवसर नथी फरी वृद्धावस्थायें दीक्षा लइशुं अकस्मात् ए वचन सांजली, अंगोपांग संवरी, धैर्य धरी; दृढता धारण करीने, राजीमती बोली के अरे तने धिक्कार पडो जे तुं दीक्षा ग्रहण करीने एवी वात करे ठे ? अरे समुद्रविजयराजाना पुत्रं सर्व सावद्य व्यापार त्यागी साधुपणुं आदर्युं तेणे मुजने वमी ठे माटे जे अंगंधकुलना सर्प ठे ते जो पण तिर्यंच जातीना ठे तो पण ते वमेला वस्तुने वांठता नथी तो तुं छुं ते तिर्यंचथी पण नीच थाय ठे जेमाटे वमेली वस्तुने जोगववा वांठे ठे वमेली वस्तुने तो श्वानादिक वांठे ठे माटे तुं तहारुं मन ठेकाणे राख हुं कोइ रीते तहारे हाथ आववानी नथी अरे तुं जोग त्यागीने फरी नरकें जवानी अ जिलाषा शामाटे करे ठे तो हे महानुजाव ए पापनी आलोयणा लइ फरी संयमनो उच्चार कर

नहींकां डुर्गतिमां पडीश इत्यादिक वचन रूप अंकुशे करी हस्तिनी पेरे रथनेमीने स्थिर कीधो पछी रथनेमी पण पापनी आलोचना लइ खमावी संयमने विषे स्थिर थइ केवलज्ञान पामी अनुक्रमें मोक्ष पोहोतो ॥ ॥ हवे श्रीनेमीश्वर नगवानथी राजीमतीजी आठ वर्ष उमरमां न्हाना हतां एवुं कोइक आचार्य कहे छे तथा राजीमतीजी चारसें वर्ष पर्यंत घरवासें रह्यां वली एक वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे रह्यां अने पांचशो वर्ष केवल पर्याय पाली सर्व मली (ए०१) वर्षनुं आयुष्य नोगवीने श्रीनेमिनाथजीनी पहेलां मोक्ष गया इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के राजीमतीजीयें एवुं जाण्युं जे शिवनारी जे मोक्षरूपिणी स्त्री छे तेने महाराथी अधिक रूपवती जाणीने तेना उपर नेमीश्वरजी मोहित थया छे तो हुं पहेलांयीज ते स्त्रीने देखी तो लेउं एटले मुक्तिरूप स्त्रीयें राजीमतीना नर्त्तारनुं मन वश कीधुं माटे ते पोतानी शोकने जोवा सारुं राजीमतीजी पण क्षपकश्रेणी साधि, कर्म खपावी पोताना नर्त्तारनी पहेलांज मुक्तियें गइ इति ॥ ॥ श्रीअरिष्टनेमि नगवानने अढार गछ अने अढार गणधर थया ॥ १७५ ॥ वली वरदत्त आदे देइने अढार हजार साधुउनी संपदा थइ ॥ १७६ ॥ ॥ तथा गुणरूप मणिरत्नना नंमार जेवी यक्षणीप्रमुख चालीश हजार साध्वीउनी संपदा थइ ॥ १७७ ॥ वली नंदीषेण आदे देइने एक लाख उंगणोतेर हजार श्रमणोपासक व्रतना धरनार श्रावकोनी संपदा थइ ॥ १७८ ॥ ॥ तथा महासुव्रताप्रमुख त्रण लाखने छत्रीश हजार श्राविकाउनी संपदा थइ ॥ १७९ ॥ ॥ वली चारशो साधु चौद पुर्वधर ते जिन नहीं पण जिन सरखा एवा सर्व अक्षरानुयोगना जाणनी संपदा थइ ॥ १८० ॥ ॥ तथा पन्नरशो साधु अवधि ज्ञानीनी संपदा थइ तथा पन्नरशो साधु वैक्रिय लब्धिना धरनारनी संपदा

थइ तथा पन्नरशे केवलज्ञानी केवलीनी संपदा थइ तथा एक हजार साधु विपुलमतीना धणी मनःपर्यव ज्ञानीनी संपदा थइ तथा आठशे वादी साधुउनी संपदा थइ तथा शोलशे साधु पांच अनुत्तर विमाने पोहोता, पंदरशे साधु जगवंत थका सिद्धि पाम्या तथा त्रण हजार आर्यका एटले साध्वीउ जगवंत थका मोक्षे गइ सिद्धि पामी ॥ १७१ ॥ ॥ ए रीते श्रीनेमी श्वर जगवाननो परिवार जाणवो, अने राजीमती पण प्रजुने हाथे संयम ग्रहण करी प्रधान मोक्षप्रत्यें पामी ॥ अरिहंत श्रीअरिष्टनेमिने बे प्रकारनी अंतगड जूमि थइ तेमां आठ पाट पर्यंत मोक्षमार्गे चाल्यो ते युगंतकृतजूमि जाणवी तथा जगवानने केवलज्ञान उपना पछी बे वर्षे कोइक साधु सिद्ध थयो ते पर्याय अंतकृत जूमि जाणवी ॥ १७२ ॥ ॥ ते कालने विषे ते समयने विषे श्रीअरिष्टनेमि जगवान त्रणशे वर्ष गृहस्थावासे कुमारावस्थायें रह्या, चोपन्न दिवस छद्मस्थ पर्यायें दिक्षा पाली अने चोपन्न दिवसे कणा सातशे वर्ष केवल पर्याय पाल्युं एटले सातसे वर्ष साधुपणे रह्या एम सर्व मली एक हजार वर्षनुं पूर्ण आयु जोगवीने शेष रहेलां चार कर्म खपावीने आ अवसर्पिणीनो डुसम सुसमा नामे चोथो आरो ते घणो वीत्यो अने थोडो रह्यो ते वखतमां गिरनार पर्वतने विषे, उनालानो चोथो, मास आठमो पक्ष, आषाढ शुदि अष्टमीने दिवसे गिरनार पर्वत उपरे मध्यरात्रियें, चित्रा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके, पांचशे ने छत्रीश साधुउनी साथे, एक मासनुं चउविहारो पाणी रहित अनशन कीधे छते, पद्मासने बेठा थका कालधर्म पाम्या ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ८०० ॥ यावत् सर्व डुःख थकी रहित थया ॥ १७३ ॥ ॥ श्रीपार्श्वनाथ जगवानथी च्याशी हजार सातशेने पचाश वर्ष पूर्वे ए श्रीनेमिनाथ जगवान थया एटले श्रीअरिष्टनेमि जगवान मोक्ष पोहोता

पछी चोराशी हजार नवशें नेएंसी वर्षे पुस्तक लखाणुं वांचना थइ ॥ १८४ ॥ ॥ इति श्रीनेमिनाथ अधिकार ॥ ॥ हवे सर्व तीर्थंकरोना वखाण कहेतां ग्रंथ वधे माटे आंही एकवीशमा तीर्थंकरथी आंतरानो अधिकारज कहियें ठैयें. एकवीशमा श्रीनमिनाथ जगवान निरवाण पाम्या पछी पांच लाख वर्ष गये थके बावीशमा श्रीनेमिनाथजी निर्वाण थया अने नेमिनाथजीथी ८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥१८५॥ ॥ वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया पछी ठ लाख वर्षे एकवीशमा श्रीनमिनाथजी मोक्ष गया ते पछी ५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १८६ ॥ ॥ उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथ मोक्ष गया पछी चोपन्न लाख वर्षे वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया ते पछी ११८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥१८७॥ ॥ अढारमा श्रीअरनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्षे उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथ स्वामी मोक्ष गया ते पछी ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥१८८॥ ॥ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्षे न्यून एक पल्योपमनो चोथो जाग एटला वर्षे अढारमा श्री अरनाथ मोक्ष गया ते पछी एक हजारकोड उपर पांशठ लाख चोरासी हजार नवशेंने एंसी वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १८९ ॥ ॥ शोलमा श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया पछी अर्ध्दा पल्योपमे श्री कुंथुनाथ मोक्ष गया ते पछी एक पल्योपमना चोथा जागनी उपर पांसठ लाख चोरासी हजार नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९० ॥ ॥ पन्नरमा श्रीधर्मनाथ मोक्ष गया पछी पोणा पल्योपमे उंठा त्रण सागरोपम गये श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया ते पछी पोणा पल्योपम उपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९१ ॥ ॥ चौदमा श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया पछी चार सागरोपम गये थके श्रीधर्मनाथजी मोक्ष गया ते पछी त्रण सागरोपम ६५८४९८०

वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १ए२ ॥ ॥ तेरमा श्रीविमलनाथजी मोक्ष गया पठी नव सागरोपम गये थके श्रीअनंत नाथजी मोक्ष गया ते पठी सात सागरोपम उपर ६५७४ए७० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १ए३ ॥ ॥ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया पठी त्रीश सागरोपम गये थके श्रीविमलनाथ मोक्ष गया ते पठी शोल सागरोपम उपर ६५७४ए७० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १ए४ ॥ ॥ अगीयारमा श्रीश्रेयांसनाथ निरवाण थया पठी चोपन सागरोपम गये थके श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया ते पठी बेतालीश सागरोपम उपर ६५७४ए७० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १ए५ ॥ ॥ दशमा श्रीशीतलनाथजी मोक्ष गया पठी एकसो सागरोपम तथा बासठ लाख छवीस हजार वर्ष उपर एटला वर्ष एक क्रोड सागरोपममांथी उंछा करीयें तेटला वर्षे एटले एक क्रोड सागरोपममांथी एकशो सागरोपम उंछा करीयें तथा वली बासठ लाखने छवीश हजार वर्ष बीजा पण उंछा करीयें बाकी जेटला वर्ष रहे तेटले वर्षे श्रीश्रेयांसजी निरवाण पाम्या अने ते पठी बेतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने न्यून एवा बाशठ लाख छवीश हजार वर्ष अधिक एकशो सागरोपम गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, तेवार पठी नवशेने एंसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १ए६ ॥ ॥ नवमा श्रीसुविधिनाथ मोक्ष गया पठी नवकोडी सागरोपम गया थका श्रीशीतलनाथ मोक्ष गया ते तेवार पठी बेतालीश हजारने त्रण वर्ष तथा उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून एक कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण थया तेवार पठी नवशोने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ १ए७ ॥ ॥ आठमा श्रीचंद्रप्रन्न स्वामी मोक्ष गया पठी नेवु कोडी सागरोपम गये थके श्रीसुविधिनाथजी मोक्ष पाम्या ते पठी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने

पछी चोराशी हजार नव सो ने एंशी वर्षे पुस्तक लख्यूं वंचाणु रहे ॥ १८३ ॥ ॥ इति श्रीनेमिनाथ चरित्र ॥ ॥ हवे सर्व तीर्थंकरोना अंतरना कहेवां थंध करे माटे त्यांथी एकवीसमा तीर्थंकरथी पश्चानुपूर्वीए अंतर कहे छे. एकवीसमा श्रीनमिनाथ भगवान निर्वाण पाम्या पछी पांच लाख वर्ष गये छते बावीसमा श्रीनेमिनाथजी निर्वाण पाम्या पछी नेमिनाथजीथी ८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥१८४॥ ॥ वीसमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया पछी ६ लाख वर्षे एकवीसमा श्रीनमिनाथजी मोक्ष गया ने पछी ५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १८५ ॥ ॥ ओगणीसमा श्रीमल्लिनाथ मोक्ष गया पछी चोपन लाख वर्षे वीसमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया ने पछी ११८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥१८६॥ ॥ अढारमा श्रीअरनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार क्रोड वर्षे ओगणीसमा श्रीमल्लिनाथ स्वामी मोक्ष गया ने पछी ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥१८७॥ ॥ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार क्रोड वर्षे न्यून एक पल्योपमनो चोथो भाग एटला वर्षे अढारमा श्री अरनाथ मोक्ष गया ने पछी एक हजारक्रोड उपर पांसठ लाख चोराशी हजार नवशेने एंशी वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १८८ ॥ ॥ सोलमा श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया पछी अर्धो पल्योपमे श्री कुंथुनाथ मोक्ष गया ने पछी एक पल्योपमना चोथा भागनी उपर पांसठ लाख चोराशी हजार नवशेने एंशी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १८९ ॥ ॥ पन्नरमा श्रीधर्मनाथ मोक्ष गया पछी पोणा पल्योपमे ऊणा त्रण सागरोपम गये श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया ने पछी पोणा पल्योपम उपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९० ॥ ॥ चौदमा श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया पछी चार सागरोपम गये छते श्रीधर्मनाथजी मोक्ष गया ने पछी त्रण सागरोपम ६५८४९८०

वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १९२ ॥ ॥ तेरमा श्रीविमलनाथजी मोक्ष गया पठी नव सागरो
पम गये थके श्रीअनंत नाथजी मोक्ष गया ते पठी सात सागरोपम उपर ६५०४९८०
वर्षे पुस्तक लखाणुं ॥ १९३ ॥ ॥ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया पठी त्रीश
सागरोपम गये थके श्रीविमलनाथ मोक्ष गया ते पठी शोल सागरोपम उपर ६५०४९८०
वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९४ ॥ ॥ अगीयारमा श्रीश्रेयांसनाथ निरवाण थया पठी चोपन
सागरोपम गये थके श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया ते पठी बेताळीश सागरोपम उपर
६५०४९८० वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९५ ॥ ॥ दशमा श्रीशीतलनाथजी मोक्ष गया पठी
एकसो सागरोपम तथा ठासठ लाख ठवीस हजार वर्ष उपर एटला वर्ष एक कोड साग
रोपममांथी उंणा करीयें तेटला वर्ष एटले एक कोड सागरोपममांथी एकशो सागरोपम उंणा
करीयें तथा वली ठासठ लाखने ठवीश हजार वर्ष बीजा पण उंणा करीयें बाकी जेटला वर्ष
रहे तेटले वर्षे श्रीश्रेयांसजी निरवाण पाम्या अने ते पठी बेताळीश हजार त्रण वर्षने साडा
आठ महिने न्यून एवा ठाशठ लाख ठवीश हजार वर्ष अधिक एकशो सागरोपम गये थके
श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, तेवार पठी नवशोने एंसी वर्षे पुस्तक लख्युं ॥ १९६ ॥ ॥ न
वमा श्रीसुविधिनाथ मोक्ष गया पठी नवकोडी सागरोपम गया थका श्रीशीतलनाथ मोक्ष
गया ठे तेवार पठी बेताळीश हजारने त्रण वर्ष तथा उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे
न्यून एक कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण थया तेवार पठी नवशोने एंशी वर्षे पुस्त
कारूढ थयो ॥ १९७ ॥ ॥ आठमा श्रीचंद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया पठी नेवु कोडी सागरोपम
गये थके श्रीसुविधिनाथजी मोक्ष पाम्या ते पठी बेंताळीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महिने

कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी नवमेंने एंशी वर्षे पुस्तका
रो ॥ १९८ ॥ सातमा श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी नवसें कोड सागरोपम गये
थके श्रीचंद्रप्रभ सामी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वरसने साडा आठ मही
ना एटले वर्षे न्यून एकसो कोड सागरोपमे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या ते पछी नवमेंने
एंशी वर्षे पुस्तक लिख्युं ॥ १९९ ॥ छठा श्रीपद्मप्रभजी मोक्ष गया पछी नव हजार कोड
सागरोपमें श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ
महीना एटले वर्षे उणा एक हजार कोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया ते पछी
नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०० ॥ पांचमा श्रीसुमतिनाथजी निरवाण पाम्या
पछी नेवु हजार कोड सागरोपम गये थके श्रीपद्मप्रभ सामी निरवाण पाम्या ते पछी बेंता
लीश हजार त्रण वरसने उपर साडा आठ महीना एटले वर्षे उणा दस हजार कोड साग
रोपम काल गये थके श्रीमहावीर सामी मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तक लिख्युं
॥ २०१ ॥ चोथा श्रीअभिनंदनजिन मोक्ष गया पछी नवलाख कोड सागरोपम काल गये
थके श्रीसुमतिजिन निरवाण थया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वरसने साडा आठ महीना
उपर एटला वर्षे न्यून एक लाख कोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीरजीनुं निर्वाण
थयुं ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ २०२ ॥ त्रीजा श्रीसंभवनाथजी निर्वाण
पाम्या पछी दश लाख कोड सागरोपम गये थके श्रीअभिनंदनजिन निर्वाण थया ते पछी बेंता
लीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून दश लाख कोड सागरोपम
गये श्रीवीर निरवाण पाम्या ते पछी [illegible]
थयुं ॥ २०३ ॥ बीजा श्री

अजितनाथ जिन मोक्ष गया पछी त्रीश लाख कोड सागरोपम गये थके श्रीसंजवनाथजी मोक्ष गया ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्षने साडा आठ महीने न्यून वीश लाख कोड सागरोपम गये थके श्रीवीरजिन मोक्ष गया ते पछी नवसेंने एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ २०४ ॥ पहेला श्रीरुषजदेव जगवान मोक्ष पाम्या पछी पचास लाख कोडी सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ जगवान निरवाण पाम्या ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष उपर साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून पचाश लाख कोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रजु निर्वाण पाम्या ते पछी नवसेंने एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो ॥ ॥ ए श्रीमहावीर प्रजुना निरवाणथी लइने पश्चानुपूर्वीयें आंतरा कह्या हवे चोथो, पांचमो अने छठो ए त्रणे आरानुं प्रमाण एक कोडाकोडी सागरोपमनुं छे तेमां बेंतालीश हजार पचोतेर वर्षनी उपर साडा आठ महीना एटला वर्ष उणां करीयें तेवारे चोवीशमां तीर्थंकर श्रीमहावीरजिननो जन्म थयो तेमां बहोंतेर वर्ष श्रीमहावीर स्वामीनुं आयुष्य हतुं अने चोथा आरानां त्रण वर्षने साडा आठ महीना शेष रह्या तेवारें श्रीवीर निरवाण थया तथा एकवीश हजार वर्षनुं कालमान पांचमा आरानुं जाणवुं अने एकवीश हजार वर्षनुं कालमान छठा आरानुं जाणवुं ए सर्वनो सरवालो करीयें तेवारें एक कोडाकोडी सागरोपम पूर्ण थाय ॥ ॥ इति श्रीकल्पव्याख्यानाधिकारे सप्तमं व्याख्यानं संपूर्णं ॥ ॥ अथ अष्टम व्याख्यान प्रारंजः ॥ एमां श्रीआदिनाथ जगवाननुं चरित्र कहेवाय छे ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे श्रीरुषजनाथ अरिहंत अयोध्या नगरीमां थया तेने लीधे एमने कोशलिक कहियें तेमना चार कल्याणक तो उत्तराषाढा नक्षत्रमां थया अने पांचमो कल्याणक अजिच नक्षत्रमां थयो छे ॥ २०५ ॥ ॥ उत्तराषाढा नक्ष

त्रमां देवलोकथी चवीने गर्भमां आवी उपन्या छे, उत्तराषाढामां जन्म थयो छे, उत्तराषाढामां दीक्षा लीधी छे अने उत्तराषाढामां केवल ज्ञान उपन्युं छे तथा अभिच नक्षत्रमां मोक्ष गया छे ॥ २०६ ॥ ॥ हवे प्रथम श्रीऋषभदेवजीना तेर भव कहेवाने अर्थे गाथा कहे छे ॥ धण मिहुण सुर महब्बल, ललियंगो वयरजंघ मिहुणेय ॥ सोहम्म विय अच्चु, चक्की सवठ उसभेय ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—पहेले भवें आ जंबूद्वीपने विषे महाविदेह क्षेत्रमां सुप्रतिष्ठित नामा नगरें प्रियंकर नामा राजा राज्य करे छे ते नगरमां महोटो धनाढ्य धन्नो एवे नामें एक सार्थवाह रहे छे एकदा ते धन्नो सार्थवाह वसंतपुर नगरे जवाने तयार थयो तेवारें नगरमां पडहो वजडाव्यो के जो कोइने वसंतपुर नगरे जावुं होय तो तेणे महारी साथे आववुं तेनो हुं निरवाह करीश एवो पडह सांभली घणा लोक तेनी साथे जवाने एकठां थयां, महोटो सथवारो थयो. हवे ते नगरमां श्रीधर्मघोष सूरि पांचसें साधु साथे रहेला हता तेमने पण यात्राने अर्थे वसंतपुर जवानी इच्छा थइ तेथी धन्ना सार्थवाहनी पासें आवीने धर्मलाभ आपी बोल्या के हे सार्थवाह जो तमारी आज्ञा होय तो अमे पण वसंतपुर जवाने अर्थे साथे आवीयें तेवारें धन्नो बोल्यो के हे स्वामी सुखेथी महारी साथे पधारो तेवारें आचार्य पण तेनी साथे चाल्या, हवे मार्गे जतां एकदिवसें शेठने आंबानुं भेटणुं आव्युं ते साधुने आपवा मांड्युं पण साधुयें सचेत जाणी लीधुं नही. हवे सथवारो हलवे हलवे धीमे धीमे थोडा थोडा कोश दररोज चाल्यो जाय छे तेथी मार्गमांज चोमासुं आवी गयुं वर्षाद घणो वर्ष्यो, नदीउ आवीगइ तेने लीधे पंथिजनोने चालवानो मार्ग रोकाइ गयो हरितप्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थइ, कादव पण घणो थयो तेथी लोक चाली शके नही तेवारे सथवारो एकठो थइ तंबुडेरा आपीने जंगलमांज

रह्यो अने धर्मघोष आचार्य पण एक पर्वतनी गुफामां निरवद्य स्थानक देखीने पांचसे
साधु सहित मासखमणनी तपस्या करी चोमासुं रह्या थका धर्मध्यान करवा प्रवर्त्त थया,
एम करतां सथवाराना लोको पासे संबल खुटी पड्युं माटे सर्वलोक कंदमूलफलादिक
नो आहार करीने दिवस निर्गमन करवा लाग्या तेथी साधुउने पण पारणें शुद्धमान आ
हार मले नही एम करतां केटलाक दिवस पछी तिहां एक चाट आव्यो ते शेठने खुशी क
रवा माटे सुजाषित कहीने बोल्यो के हे शेठ ! महोटा पुरुष जे वात अंगीकार करे ते पार
पाडे पण अधवच मूकी आपे नही ए वात सांजलीने शेठे धर्मघोष सूरीने याद कर्युं अने
मनमां विचारवा लाग्यो के अरे महारा कहेवा उपरथी साधुउ महारी साथें आव्या अने में
तो एक दिवस पण तेमनी सारसंजाल कीधी नथी माटे तेउनो विश्वासघाती हुं थयो तो हवे
प्रजातें एमनी पासें जइने खमत खामणा करुं एम चिंतवी प्रजातें आचार्य पासे जइ वंदना
करीने लज्जायी पोतानुं मुख नीचुं करी बेगे अने विनंति करवा लागो जे हे स्वामी ! म
हारो अपराध तमे खमजो में आपनी कोइ वखते पण निगाह करी नथी हे महाराज !
लोकनुं सर्व संबल क्षीण थयुं ले आपमुजने कांइ आज्ञा करो, हुकम फरमावो. तेवारें आचार्य
बोल्या हे सार्थेश ! अमारा माटे तमे कांइ पण चिंता करशो नही, अमारे तो सुखे धर्मध्यान
थाय ले, तमारा साथना योगे अमे घणी अटवी उलंघन करी तेमां तमे अमारी महोटी
वात्सल्यता करी एवुं सांजली धनो शेठ खुशी थयो अने सर्व साधुउने आहारनी निमंत्रणा
करी सथवारामां लइ आव्यो पछी पोतानी पासे शुद्ध आहार घृतना कूंपा हता ते साधु
उने घणाज उलटथी वहोरावतां थका अत्यंत जावनी वृद्धि थवा मांडी तेथी समकेत पाम्यो

त्यांही पण आचार्य कहे ने के पांचसो रूपा पूतना महोरावी दीक्षा पत्नी चली जाएवुं जे हवे तो पणुं देवाणुं एवी रीतें शेठना परिणाम घटता देखीने मुनिराये कह्युं के हे महानुभाव! हवे अमारे खप नथी, परंतु जो थोडीक वार हजीपण शेठनो भाव वधतो रह्यो हत तो केवल ज्ञान उपजी जात पण पाछा परिणाम घटवाने योगे केवल उपन्युं नही परंतु समकेतथी पोतानो आत्मा निर्मल करो पछी वर्षाकाल वीत्याबाद वसंतपुरें आव्या, धर्मघोष आचार्य पण सार्थवाहने धर्मलाभ देइने तीर्थयात्रा करवा गया धनो पण घणा दिवस समकेत पाली अंते शुभध्याने मरण पाम्यो ए पहेलो भव ॥१॥ ॥ हवे बीजा भवमां उत्तरकुरुक्षेत्रें जइ युगली पामां उपन्यो तिहां त्रण पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी मरण पाम्यो ए बीजो भव ॥२॥ त्रीजे भवें सौधर्म देवलोके देवता थयो ए त्रीजो भव ॥३॥ ॥ चोथे भवें देवलोकथी चवीने पश्चिम महाविदेहें गंधिलावति विजयें शीतबल राजानी चंद्रकांता राणीना महाबलनामा पुत्र थया, परंतु महा विषयलोलुपी भोगपुरंदर थया विनयवती प्रमुख घणी राणीयो छे, तेमनी साथें विषयसुख भोगववामां मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान, अने नाटकने प्रियकारी जाणे छे एम महामोहनी निद्रामां काल गमावतां एक दिवस नाटकादिक थाय छे ते देखे छे, गीतमां एक चित्त लागी रह्युं छे, ते वखतें सुबुद्धिनामा प्रधानें राजाने प्रतिबोधवा सारुं एक गाथा कही ते आवी रीतें "सव्वं विलविअं गीअं, सव्वं नट्टं विडंबणा॥ सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा ॥ १ ॥ ॥ अर्थः—ए सर्व गीत जे छे ते विलोपात करवा जेवा छे, सर्व नाटक जे छे ते विटंबना सरखां छे, सर्व आभरण जे छे ते भार समान छे, अने ए सर्व कामभोग जे छे ते दुःखावहा एटले दुःखदायी छे ॥ १ ॥ ॥ ए गाथा सां

वली राजा बोल्यो के हे प्रधान ! तमें विना प्रस्तावें आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही " यत्र सरागस्तत्र विरागः कथं ? यत्र विरागस्तत्र सरागः कथं ? यत्र श्रीरथैः तत्र अश्री रथैः कथं ॥ माटे हे मंत्री ! विना प्रस्तावें आ वात शा कामनी तेवारें प्रधान बोल्यो में आ वात प्रस्तावेंज कही छे, ते आवी रीतें के आज मुजने केवली मल्या तेमणें कह्युं के तमारा राजानुं आयुष्य एक मासनुं शेष रह्युं छे माटे हुं आपने चेतवणी आपुं छुं एवी वात सांजली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ जय नथी, पछी मंत्रिने कहेवा लागो के हुं तो मोहनिद्रामां सुतो हतो, तें सुताने जगाड्यो तो खरो, परंतु आग लागीने कूवो केम खणाय ? तेम हवे एक मा सनुं आयु रह्युं, तेमां शुं धर्मसाधन थाय ! तेवारें प्रधाने कह्युं तमे विषाद म करो, एकदिवसनुं चारित्र पण मोक्षने देवावालुं थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तोपण देवताना सुखनें तो आपे छे एवुं सांजली पुत्रने राज्य आपी सात क्षेत्रें धन वावरी अट्ठाइ महोत्सव करी सुगुरु पासें चारित्र लई चोत्रीश दिवस चारित्र पाली अंते अनशन करी काल कर्यो ॥ ए चोथो जव ॥ ४ ॥ ॥ पांचमे जवें ईशान देवलोकें श्रजयनामा विमानने विषे ललितांगनामा सामा निक देवता थयो तिहां स्वयंप्रज्ञ नामा देवी घणीज वल्लज छे तेनी साथें विषयसुख जो गवतो विचरे छे, पछी एक दिवसें स्वयंप्रजा नामा देवी तिहांथी चवी तेना विरह थकी मूर्छा पाम्यो, घणो डुःखी थई शोक करतो थको रुदन करवा लागो, तेवारें पूर्वजवनो सुबुद्धि मंत्री पण तिहांज देवता थयो छे, तेणें प्रतिबोध्यो, तथापि तेनो शोक मट्यो नही तेवारें मंत्री देवतायें कह्युं तमारी स्त्रीने हुं जाणुं छुं तेने मेलवी आपवानो हुं उपाय बतावुं तमे शोक करशो नही, हवे ते स्त्रीनो संबंध कहे छे धातकी खंमना महाविदेह क्षेत्रे नंदनामा

ग्रामने विषे नागिल नामे एक गृहस्थ महादरिद्री छे, तेनी नागश्री स्त्रीयें पूर्वे छ पुत्री तो जणेली छे, कह्युं छे के दारिद्रीने छोडीयो घणी थाय, पछी तेणे विचार्युं जे हवे जो महारी स्त्रीने सातमी पण पुत्री आवशे तो हुं देश त्यागीने चाल्यो जइश दैवयोगे स्वयंप्रभा देवीनो जीव पण तेने घेर आवी अवतर्यो तेथी वली पण ए सातमी पुत्री नागिलने थइ तेवारें शेठ शेठाणी बेहु डुःख धरवा लागां अने नागिल डुःखे पीडातो परदेश गयो, पछवाडे कुटुंबी उए ते पुत्रीनुं नाम पाड्युं नही अनामिका कही बोलावे, अनागणी माटे कोइ परणे पण नही तेथी काष्ठना जारा वेचीने पेट जरे तथा लोकने घेर काम करीने पेट जराइ करे. एक दिवसें कोइ धनवंतना बालकने मोदक खातां देखी अनामिकायें पण पोतानी माता पासेथी मोदक माग्या, तेवारें मातायें कह्युं ताहारो पिता मोदक लेवा गयो छे ते आवशे त्यारे आपीश, त्यां सुधी ए अंतरतिलक नामा पर्वत थकी काष्ठनो जारो लाव पछी रुदन करती जारो लेवा गइ तिहां युगंधर मुनिने केवलज्ञान उपन्युं छे, तेनो इंड महाराज महोत्सव करे छे, तिहां अनामिका पण नमस्कार करी बेठी धर्म देशना सांजली केवलीने पूछ्युं के हुं एवी डुःखनी अवस्था केम पामी? तथा महारे जर्तार प्रमुखनुं सुख कांइ पण थयो नही तेनुं कारण शुं? प्रभुयें कह्युं तें पूर्वे धर्म आराध्यो नथी माटे रे जोली धर्म विना सुख होय नही तो हवे जो सुखनी इछा होय तो धर्म कर. धर्मना प्रजावे देवना सुख पामीयें पछी अनामिकायें श्रावकनां व्रत आदर्यां उपाश्रयें बेठी श्रावकनो धर्म करे तेथी लोकोयें धर्मिणी एवुं नाम दीधुं. साधर्मि श्रावको तेने पारणा प्रमुखनो सहाय आपे छे एम धर्मना प्रभावथी ते सुखी ... [illegible] ...नी सुखी छे, ते समयें ललितांगने स्वयंप्रभ

मंत्रियें कह्युं के तमे त्यां जइ तमारुं रूप एने देखाडो के जेम ए नियाणो करे ते सांजली ललितांगे आवी पोतानुं अत्यंत उत्कृष्ट रूप देखाड्युं ते रूप देखी अनामिकायें व्यामोह पामी नियाणुं कर्युं के मह्मारे तपस्यानुं फल होय तो एनी स्त्री हुं थाउं, पछी अनामिका मरण पामी स्वयंप्रजा देवी थइ तेनी साथे ललितांग देव सुख जोगववा लागो ए पांचमो जव ॥ ५ ॥ तिहांथी चवीने छठे जवे जंबूद्वीपें पूर्व महाविदेहे पुष्कलावती विजये लोहार्गल नगरे सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मीवती राणीनो वज्रजंघनामा पुत्र थयो अने स्वयंप्रजा देवी पण तेहिज विजयें पुंमरीक नगरीयें वज्रसेन नामा चक्रवर्त्तिनी श्रीमती नामा पुत्री थइ, ते यौवन पामी थकी एक दिवसें चंद्रोदय सजामां बेठी छे ते समयें कोइ साधुने केवल ज्ञान उपन्युं छे तेने देवता वांदवा आवे छे, ते देवोने देखी एने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेवारें विचार्युं जे मह्मारो पूर्वजवनो जर्तार ललितांग नामा देवतानो जीव किहां उपन्यो हशे? ते मले, अने हुं तेने परणुं तो सारुं थाय, एम विचारी मौनपणे रही, मातापितायें अनेक उपचार कर्या पण बोले नही, पछी धाई मातायें एकांते वात पूछी तेवारें कुमरीयें तेने एक कागल उपर चित्राम करी कुंवर आलेखी आप्यो, धाइयें ते चित्रपट राजाने दीधो पछी एना पिता वज्रसेन चक्रवर्त्तीना वर्षमहोत्सवें अनेक राजपुत्रो आव्या अने ते धाई पण दिवसें चित्रपट लइ राजमार्गें बेठी, ते राजकुमर पण जति वखतें चित्रपटने अणुसार देखतां जाय छे, तेवारें वज्रजंघ ते चित्रपटने देखी जातिस्मरण पाम्यो अने कहेवा लागो के आ चित्र तो मह्मारी पूर्वजवनी स्त्री स्वयंप्रजा नामें देवीनुं चितरेलुं छे, ए वात धाइ मातायें श्रीमतीने कही. पछी श्रीमती ते वात सांजलीने वज्रजंघ कुंवरने परणी सुखे समाधे रहे छे, वली प्र

तोमां श्राम लख्युं ढे कें ते पुत्री तीर्थंकरनी सन्नामां देवोने देखी जातिस्मरण पामी तेणे पूर्वन्नव जाण्यो तिहां अनामिका अने स्वयंप्रन्नानो न्नव देखी विचार्युं जे मह्हारो पूर्वन्नवनो न्नर्तार ललितांग केवी रीतें मले पढी पिताये पूढ्युं तेवारें सर्व पूर्वन्नवसंबंधि वात कही चक्रवर्त्तियें केवलीने पूढ्युं के एनो पूर्वन्नव न्नर्तार किहां उपन्यो ढे केवलीये वज्रजंघ नाम कह्युं पढी चक्रवर्त्तियें वज्रजंघने परणावी तथा कोश्क कहे ढे चित्रपट बनावीने कह्युं के एना स्वरूपने जे कहे तेने हुं परणुं पढी बीजा राजाउए अनेक प्रकारनी वातो बनावीने कही पण ललितांगनी वात मले नही परंतु जेवारे वज्रजंघें कह्युं के श्रा मह्हारी स्वयंप्रन्ना देवीनुं रूप ढे तेवारें चक्रवर्त्तियें तेने श्रीमती परणावी एवो लेख ढे तत्व केवलिगम्य. एकदा सुवर्णजंघे पोताना वज्रजंघ पुत्रने राज्य श्रापी पोते दीक्षा लीधी, पढी वज्रजंघे पण श्रीमती राणीसहित गोखमां बेगं थकां संध्या फूली देखीने वली विलय थइ जोइ तेवारें विचार्युं जे सर्व विलय थवानी वस्तुउं श्रा संसारमां ढे माटे चिंतव्युं जे प्रन्नातें पुत्रने राज्य श्रापी दीक्षा लेशुं ते समयें पुत्रें पण राज्यनें लोन्ने फेरनो धूमाडो करी मातापिताने एटले श्रीमतीसमेत राजाने विषप्रयोगे मार्यो. ए ढठ्ठो न्नव ॥ ६ ॥ ॥ तिहांथी मरण पामी सातमे न्नवे राजा राणी बेहु उत्तर कुरु क्षेत्रने विषे युगलीयां थयां ए सातमो न्नव ॥ ७ ॥ ॥ श्राठमे न्नवें सौधर्म देवलोके मित्रपणे देवता थया ए श्राठमो न्नव ॥ ८ ॥ ॥ तिहांथी चवी नवमे न्नवें जंबूद्वीपे महाविदेह क्षेत्रें क्षितिप्रतिष्ठितनगरे सुविधिनामा वैद्यनो जीवानंद नामा पुत्र थयो ते दिवसें ते नगरीयें बीजा पण चार जीव पुत्रपणे श्रवतर्या, एक प्रसन्नचंद्र राजानो पुत्र महीधर जन्म्यो, बीजो सुनासीरनामा प्रधाननो पुत्र [illegible], त्रीजो ध

नाशेठनो पुत्र गुणाकर थयो, चोथो सागरनामा शेठनो पुत्र पूर्णभद्र थयो; हवे श्रीमतीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ईश्वरदत्तनो पुत्र केशव थयो, ए पांचे जीवानंदना परम मित्र छे ए छए मित्र साथें मली जमे, रमे, सुखें काल निर्गमन करे छे, एक दिवसें जीवानंदने घेर ते छए जणा बेठा छे एटलामां एक कोढीउ साधु गोचरी करवा आव्यो, तेने देखीने ते पांचे मित्र एकठा थइने वैद्य पुत्रने कहेवा लाग्या के अरे वैद्यतो मतलबीया थाय छे, जो पुण्यने अर्थे वैदुं करता हो तो आ साधुनो कोढरोग मटावी आपो तेवारें तो अमे पण जाणीयें जे तमे धर्मात्मा छो ते सांभली जीवानंद वैद्य बोल्यो हे मित्रो ! तमे महारी वात सांभलो आ साधुनो रोग मटाववा माटे लक्षपाक तेल जोशे ते तो महारा घरमां तयार छे पण बीजो रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन खपशे ते महारी पासे नथी माटे जो ए बे चीजो क्यांथी पेदा करो तो साधुनी वैयावच्च करीयें ए वात सांभली ते छए जणे मली अढीलाख सोनैया भेला कीधा पछी ते छए मित्र मली नगर शेठने घेर जइ सोनैया आपीने बोल्या के एक रत्नकंबल अने बीजो गोशीर्ष चंदन ए बे चीज अमने आपो शेठें पूछ्युं जे तमे एने शुं करशो तेणे कह्युं के अमे साधुनी वैयावच्च करीशुं ते सांभली शेठे विचार्युं जे ए बालको छे तोपण शुद्ध कहेवा धर्म बुद्धि वाला छे अने हुं आटलो महोटो वृद्ध थयो हुं तोपण हजी लगण कांइ धर्ममां समजतो नथी एम चिंतवी ते शेठे सोनैया तो धर्मद्वारा वापरी नाख्या अने रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन तेमने आपीने पोते दीक्षा लइ साधुपणुं पडिवजी अंतगड केवली थइने मोक्ष गयो हवे ते छए जणा औषध लइ वनमां गया तिहां मुनि काउस्सग्गमां उभा रह्या छे तेने "अनुजानीध्वं" एवुं कही चामडा उपर मुनिने सुवारीने लक्षपाक तेल मसळ्युं पछी चंदननो लेप करी रत्न

कांबलमां लपेटी दीधो तिहां पहेलीवारमां तो ते सर्व चामडीमां जे कांइ कीडा हता ते सर्व कांबलमां आवी लागा तेने गायना मृत कलेवरमां मुक्या फरी बीजीवार तेल मसल्युं तेनी उपर चंदन लगावी रत्नकांबलथी वींट्यो तेवारें मांसमांहेला कीडा निकली पड्या तेमज त्रीजीवार एमज पूर्वोक्त रीते कर्युं ते वखत हाड मींजीना कीडा निकली पड्या पछी रोहिणी औषध साधुने शरीरें लगाडी तेनुं शरीर कंचन सरखुं करी मूक्युं पछी ते छए जणे रत्नकंबलनुं द्रव्य सात क्षेत्रमां खरचीने दीक्षा लीधी निरतिचार चारित्र पालीने काल कर्यो ए नवमो नव ॥ ए ॥ ॥ दशमे नवें ते छए जणा बारमे देवलोकें देवपणे जइ उपन्या छए देव मित्र थया ए दशमो नव ॥ १० ॥ ॥ अगीआरमें नवे बारमां देवलोकथी चवीने जंबुद्वीपना महा विदेहक्षेत्रें पुष्कलावती विजयें पुंमरीकिणी नगरीयें वज्रसेन नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां ते छ मांथी पांच जण अनुक्रमे पुत्रपणे आवी उपन्या तेमां जीवानंद वैद्य जे धन्ना सार्थवाहनो जीव छे ते चौद सुपन सूचित मातानी कूखमां उपन्यो जन्म्या पछी माता पिताये तेनुं वज्रनाभ नाम आप्युं ए जीव ऋषभदेवजी थावावालो छे हमणा चक्रवर्त्ति पणे उपन्यो छे हवे बीजो राजानो पुत्र महीधरनो जीव ते बाहु नामे थयो त्रीजो मंत्रीनो पुत्र सुबाहु नामे थयो, चोथो शेठनो पुत्र गुणाकरनो जीव, पीठ नामे थयो अने पांचमो सार्थ वाहनो पुत्र पूर्णभद्रनो जीव महापीठ नामे थयो ए पांच तो भाइ पणे आवी उपन्या अने छठो केशवनो जीव जे पूर्वे निर्नामिकानो जीव छे ते वली बीजा एक राजाने घरे पुत्र पणे उपन्यो ते वज्रनाभ नामा चक्रवर्त्तिने घणोज वल्लभ छे तेथी ए एनो सारथि थाशे एरीते छए मित्र सुखे रहे छे हवे वज्रसेन राजा तीर्थंकर थवाना छे माटे लोकांतिक देवोना वचनथी

त्यार पछी वज्रनाभ नामा पुत्रने राज्य आपी संवत्सरीदान देइ दीक्षा लइ घनघातीकर्म क्ष
यकरी केवलज्ञान पाम्या तीर्थंकर थया ते पुंडरीकिणी नगरीयें आव्या वनपालकें वज्रनाभने
वधामणी आपी तेना अवसरमां चक्ररत्न प्रगट्यानी पण वधामणी आवी तेवारें विचार्युं जे
पहेलां केनी पूजा करुं ? एम विचारतां निरधार कर्यो जे तीर्थंकरने पूज्या तो सर्वने पूज्या
ए त्रण लोकना नाथथी वली बीजो कोण वधारे गणाय एम चिंतवी केवल महोत्सव कर्यो,
भगवानने वांदवा आव्यो पछी चक्रने पूज्यो अनुक्रमे छ खंड साधी, सुखे राज्य भोगवे छे
एक दिवस वली वज्रसेन तीर्थंकर समोसर्या तेमने वज्रनाभ प्रमुख वांदवा गया तिहां प्रभुनी
देशना सांभली पांच जणायें दीक्षा लीधी तेमां पहेलो वज्रनाभ चक्रवर्त्ति साधु थयो ते चौदे
पूर्व भण्यो अने बीजा पांचे अगीआर अंग भण्या, वली बाहुनामा जे साधु छे ते पांचसें
साधुने आहार लावी आपे अने सुबाहु पांचसें साधुओना पग चांपे तथा पीठ अने महापीठ
ए बे एकांतें तप करे तथा सज्झाय ध्यान करे, हवे बाहु अने सुबाहुनी गुरुप्रमुख सर्व
प्रशंसा करे तेथी पीठ अने महापीठ एवुं जाणे के जुओ काम सर्वने वहाल छे जो साधु
थया तोपण मतलबथी देखाय छे केमके अमे सज्झाय ध्यान करीयें छैयें तो अमोने कोइ
प्रशंसता नथी अने बाहु सुबाहु एमनी चाकरी करे छे तो तेमनी प्रशंसा सर्व करे छे माटे
जगत् सर्व स्वार्थी छे पछी वज्रनाभे वीश थानक तप करीने तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं
तथा बाहु साधुये आहारना दानथी भोगफल उपार्जन कर्युं तथा सुबाहु साधुयें पगचं
पीना प्रभावथी बाहुबल नाम कर्म उपार्जन कर्युं तथा पीठ अने महापीठें इर्षा करवाथी
स्त्रीवेद बांध्यो अने छट्ठो निर्नामिकानो जीव ते श्रेयांस कुमर थाशे अंते सर्व अनशन करी

मरण पाम्या ए अगीआरमो जव ॥ ११ ॥ ॥ वारमे नवे ठए जण सर्वार्थसिद्ध विमाने जइ देवपणे उपन्या ए बारमो जव ॥ १२ ॥ ॥ पठी सर्वार्थसिद्ध विमानथी तेत्रीश सागरोपमनु आयुपूरण करीने तिहांथी चवी तेरमें जवे वज्रनाजनो जीव ते श्रीरूपजदेवजी थया तथा बाहुनो जीव जरतचक्रवर्त्ती थयो अने सुबाहुनो जीव बाहुबल थयो वली पीठ अने महापीठनो जीव ब्राह्मी अने सुंदरी थया ए पांचे जीव अनुक्रमे मोक्ष जाशे ए तेरमो जव ॥ ॥१३॥ ॥ इति रूपज जव ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रीरूपजदेव अरिहंत ते उनालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, आषाढवदि चोथने दिवसें, सर्वार्थसिद्ध विमानथी, देवतानुं आयुष्य पूरण करीने चव्या ते आ जंबूद्वीपना जरतक्षेत्रने विषे इक्ष्वाकुजूमीमां नाजि कुलधरनी मरुदेवी जार्या तेमनी कूखें मध्यरात्रिने विषे देव संबंधी आहार, देव संबंधि जव, देव संबंधि शरीर त्यागीने गर्जमां पुत्रपणे आवी उपन्या ॥ २०६ ॥ ॥ इक्ष्वाकु वंशमां उपन्या तेथी इक्ष्वाकु जूमि थइ ते केवी रीतें थइ ते कहे ठे जे पूर्वें सर्वे युगलिया हता परंतु नगर कोइ हतुं नही तिहां युगलीयामां तो कल्पवृक्ष मनोरथ पूरण करतां हतां तेमां पहेला सात कुलधर थया तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे ॥ ॥ आ अवसर्पिणीना त्रीजा आराना अंतमां पल्योपमनो आठमो जाग बाकी रहे ठते आ दक्षिण तरफनो अर्धो जरत तेने दक्षिणार्द्ध जरत कहीयें तेना त्रण जाग करवा ते त्रण जाग मांहेला मध्य जागमां एटले विचला जागमां पहेला त्रण कुलघर थया तेमां प्रथम कुलघर एवीरीतें थयो के पश्चिममहाविदेहमां बे वाणीया हता ते बेहु वाणीया मांहोमांहे मित्र हता परंतु तेमां एक कपटी हतो अने एक सरलमनवालो हतो ते जेवारें मांहोमांहे द्रव्य वांटे तेवारें जे कपटी ठे ते सरल स्वजाव

वाळाने ठगीने तेनाथी घणुं धन पोते राखे अने सरल तो कपटरहितपणे व्यापार करे एक दिवसें सरलचित्तवाळानी स्त्रीने देखीने कपटी मित्रे भोग भोगववानुं कर्युं तेवारें ते सरलनी स्त्री पतिव्रता छे ते बोली के अरे मर्यादाहीन ! मित्रनी स्त्रीने वांछे छे ? एवुं कहीने निर्भछना करी बाहेर काहाडी मूक्यो पछी ते कपटीयें जइने सरलचित्तवाळाने कर्युं के ताहारी स्त्री मने वांछती हती परंतु में तेने नाकारो कर्यो एवी कपटाइ करी पछी ते सरल चित्तवाळो वैराग्य पामी मरीने इक्ष्वाकुभूमिमां मनुष्यरूपें युगलीयो थयो अने कपटी मित्र मरण पामीने इक्ष्वाकु भूमिमां हाथीरूपें युगलीयो थयो केमके जीव कपटाइथी वक्रुलतायेंकरी तिर्यंच पणाने पामे, एकदा समयने विषे हाथी युगलीये सरलयुगलीयाने दीठो तेथी बेहु मांहोमांहे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या पछी परमस्नेहथी हाथी तेमने पोताना स्कंध उपर बेसाडीने रात्रदिवस फर्यां करे तेमने सपेत हाथी उपर बेठो जोइने बीजा युगलीया बोलवा लाग्या के ए विमलवाहन छे एवुं तेनुं नाम पाडी दीधुं केंटलोएक काल गयो तेवारें काळनां माहात्म्यथी जेवा कल्पवृक्ष प्रथम हता तेवा रह्या नही तेवारें युगलीया लडवा लाग्या अने सहु पोत पोताना कल्पवृक्ष थापी बेठा सहु कोइ पोताना कल्पवृक्षमां रहे बीजाने आववा दीये नही अने कदापि कोइ आवे तो तेनी विमलवाहननी पासे राव आपवा आवे तेवारें विमलवाहन तेने हकार एवो दंड आपे तेथी युगलीयो मनमां जाणे जे सर्व महारी वात गइ एवो जाणी लडे करे नही ए प्रथम हकार नीति थइ ते विमलवाहनने चंद्रयशा नामें स्त्री हती, नवशो धनुष्य प्रमाण शरीर हतुं ए प्रथम कुलगर ॥ १ ॥ ॥ पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया तेनी चंद्रकांता नामें स्त्री अने आठशो धनुष्य शरीरनुं प्रमाण, एनी पण हकार दंडनीति थइ ए बीजो

कुलगर ॥ २ ॥ ॥ त्रीजो यशोमान् कुलगर थयो तेनी सुरूपा नामें जार्या एनुं सातसों ध
नुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एनी वखतमां मकार दंमनीति जाणवी ॥ ३ ॥ ॥ चोथो
अजिचंद नामा कुलगर थयो तेनी प्रतिरूपा नामे जार्या एनुं साडा उसें धनुष्य प्रमाण शरीर
जाणवुं एनी वखतमां म एटलो कहेवाथी मरी जाय माटे मकार दंमनीति जाणवी ॥ ४ ॥
पांचमुं प्रसेनजित् नामा कुलगर थयो तेनी चक्षुष्मती नामें जार्या एनुं उशें धनुष्य प्रमाण
शरीर जाणवुं एमां धिक्कार एटलुं कहेवाथी ते एवुं समजी जाय के मने महोटो दंम थयो
माटे धिक्कार दंमनीति जाणवी ॥ ५ ॥ ॥ उठो मरुदेव नामा कुलगर थयो तेनी श्री
कांता नामें जार्या एनुं साडा पांचसें धनुष्य प्रमाण शरीरनुं मान जाणवुं एना वखतमां
धिक्कार दंमनीति जाणवी ॥ ६ ॥ ॥ सातमो नाजिनामें कुलगर थयो तेनी मेरुदेवी नामें
जार्या एनुं सवा पांचशे धनुष्य प्रमाण देहमान जाणवुं एनी वखतमां धिक्कार एटलो कहे तेवारें
ते समजे के मुजने महादंम थयो फरीथी जनम पर्यंत ते अन्याय करे नही एरीतें पहेला
तथा बीजा कुलगरना वारामां हकार दंमनीति हती अने त्रीजा तथा चोथा कुलगरना वा
रामां जघन्यथी हकार अने उत्कृष्टथी मकार दंमनीति चाली एटले घणो अन्याय करे तेवारे
तेने (म) एटलो कहे तेथी ते एवुं समजे के मने महोटो दंम थयो फरीथी कोइवारे ते
अन्याय करे नही तथा पांचमां, उठा अने सातमा कुलगरनी वखतमां जघन्यथी तो हकार
तथा मध्यमथी मकार अने उत्कृष्टथी धिक्कार एवी त्रण प्रकारनी दंमनीति चालु थइ ॥ श्री
ऋषजनाथ अरिहंत त्रण ज्ञानें सहित मेरुदेवी मातानी कूखे आवी उपन्या यावत् मेरुदेवीयें
चौद सुपना दीठा इत्यादिक सर्व अधिकार महावीर स्वामीनी पेठे अहीं पण जाणी लेवुं

परंतु एटलों विशेष जे मरुदेवीजीये पहेला सुपनामां वृषन मुखमांहे पेसतो दीठो अने बीजा बावीश तीर्थंकरनी मातायें पहेले सुपने हाथी मुखमांहे पेसतो दीठो तथा श्रीमहावीरस्वामीनी मातायें पहेले सुपने सिंह मुखमां प्रवेस करतो दीठो वली इहां सुपनानुं फल नाजीराजायें पोतेज कह्युं परंतु सुपन पाठक ते वखते हता नही ॥ २०७ ॥ ते कालनेविषे ते समयनेविषे ऋषननाथ अरिहंत उनालानो पहेलो महिनो, पहेलो पखवाडियुं, चैत्रवदि आठमना दिवसे नवमास उपर साढासात दिवस रात्री गर्नमां प्रतिपूर्ण होते उते उत्तराषाढा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके निराबाध पणे जन्म्या ॥ २०८ ॥ ॥ इहां जन्ममहोत्सव इंद्रादिकोये आवी कर्युं इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीरजीनी पेठे कहेवुं परंतु बंदीखानामांथी केदीउने ठोडी मूकवा तथा तोल वधारवा तथा कुलमर्यादा करवी तथा पूजादिकने अर्थे इव्य रखाववो ए कृत्य ते युगलीयाना वखतमां गाम शहेरादिकना अनावने लीधे हता नही माटे ते कर्या नथी बाकी सर्व श्रीमहावीर स्वामीना पाठनी पेठे आंही पण कहेवुं ॥२०९॥ तथा ते वखत सर्व युगलीया हता तेथी प्रनुनुं नाम स्थापन करवानुं महोत्सव संबंधी व्यवहार पण चाल्यो नही तेवारें नगवाननी जंघामां रोमनु वृषन सरिखो लंछन दीठो तथा प्रनुनी मातायें पहेला सुपनामां पण वृषन दीठो तेथी ऋषन एवुं नाम दीधुं ॥ ते नगवान महा सरूपवान थका देव तथा देवीउ साथे रमत करे, इंद्राणी पोते खोलामां लइने रमाडे, हवे सुनंदा युगलीयाणी तो नगवाननी साथेज युगलपणे जनमी हती तथा एक युगलीयाना मस्तक उपर ताल वृक्षनुं फल पडयुं तेथी ते बालपणामांज मरण पाम्यो अने तेनी साथे जन्मेली युगलणी जीवती रही हती तेने बीजा कोइ युगलीयायें दीठी तेणे ति

हांथी उपाडीने नाजि कुलघरने जइ आपी नाजिकुलघरे कह्युं के आ म्हारा पुत्र रूषज देवनी सुनंदानी साथे ए पण स्त्री करीशुं एम कही तेनुं सुमंगला एवुं नाम आप्युं ते पण जगवाननी साथे वधे छे, जगवाननो सुवर्णमय शरीर छे हवे रूषज देवजी मुणमुण बोले, थाकता थाकता चाले, हशे, तेवारें माता कहेके हे पुत्र तुं इंडाणीने वह्लज छो. अने देवताये दीधेला अमृतनुं पान करे छे, म्हारी पासे तो रहेतो नथी, म्हारा स्तन पण चूसतो नथी, तो हुं ताहारी माता हुं एवो जगतमां कोण जाणशे? इत्यादिक वातो करी रमाडे ॥ हवे जेवारें जगवान देशेकणा एक वर्षना थया तेवा अवसरमां इंडमहाराज जगवाननुं वंस स्थापन करवा सारुं हाथमां सेलडी लइने आव्यो तेवारें जगवान नाजि कुलगरना खोलामांहे बेठा हता ते खोलामांहेथी सेलडी लेवा सारुं हाथ लांबो कर्यो तेथी इंडे जाण्युं जे प्रजुने सेलडी खावानुं मन थयुं ते माटे इंडे तिहां जगवाननो वंश इक्ष्वाकुकुल स्थापन कर्यो. श्रीरूषजदेवने देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र संबंधि कल्पवृक्षोना फलनो आहार देवताउंये आणी आप्यो ते आहार गृहस्थ पणामां थयो अने बालपणामां तो अंगुठामां देवोए संचारेला अमृतनो आहार सर्व तीर्थंकरोने होय छे अने एक श्रीरूषजदेव विना बीजा तीर्थंकरोने तो बालपणुं टल्या पछी म्होटा थाय तेवारें पक्व थयेलो आहार होय अने संयम लीधा पछी तो सर्व तीर्थंकरोने फासु आहार होय हवे जगवान जेवारें जोग जोगववाने समर्थ थया तेवारें सर्व इंड अने इंडाणीयो चारे निकायना देव अने देवीयो विवाह करवा आव्यां तेमां इंडादिक देवो तो वर राजानी तरफ रह्या पछी श्रीरूषजदेवने वींद बनाव्यो अने इंडाणीउ प्रमुख सर्व देवीउ ए मलीने कन्यानी तरफ रही पछी सुनंदा तथा सुमंगलाने वींदणीयो बनावी, [illegible]



ऋषभदेवजीने इंद्रमहाराज खोळमां आपेछे. मुकुट कुंडल आपेछे

नाभि राजा सभामां बेठा छे



कि सर्वप्रकारनी विवाह संबंधी जे रीतीउ छे ते रीतीउ करीने वर कन्याने परणाव्या ति
हांथी युगलीयामां विवाह करवानी रीती प्रवर्तमान थइ ते आजदिवस पर्यंत चाली आवे छे
हवे श्रीऋषभदेवजीने, सुनंदा तथा सुमंगला ए बे राणीयो साथे जोग जोगवतां व लाख पूर्व
व्यतिक्रम्या तेवारें सुमंगलाने जरत अने ब्राह्मी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो, अने सुनंदाने
एकलो बाहुबली तथा सुंदरी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो तथा उगणपचास तो निकेवल पुत्रो
नात्र जोडला थया एरीते ऋषभदेव स्वामीने सो पुत्र तथा बे पुत्रीनो परिकर थयो हवे काल
ना महात्म्यथी अनुक्रमें दिवसें दिवसें युगलीयाउमां कषायनी वृद्धि थवा मांडी तेवारें हकार,
मकार अने धिक्कार ए त्रण जातनी जे दंडनीतिउ चालती हती तेने पण लोक उल्लंघन क
रवा लाग्या तेने मान्य न करता पोतपोतामां क्लेश उत्पन्न थवाथी श्रीऋषभदेवनी पासे आवी
कहेवा लाग्या के अमारो न्याय करी आपो तेवारें जगवान बोल्या हुं राजा नथी महारा पिता
नाभिकुलगर राजा छे तेनी पासे तमे जाउ ते सांजली युगलीया नाभीराजा पासे गया ना
जीराजायें तेमने कह्युं के तमारो राजा ऋषभदेव होवो ते तमारो न्याय करशे ए अवसरमां
इंद्रमहाराजनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें अवधिज्ञानथी जगवानने राज्यपाटे स्थापना क
रवानुं अवसर जाणी इंद्रमहाराजें तिहां आवी जगवानने मुकुट,कुंमल, हार प्रमुख पहेरावी
सिंहासन उपर बेसाडी राज्य अभिषेक कर्यो तिहां युगलीया इंद्रमहाराजना कहेवाथी जल
लेवा गया हता परंतु ते राज्याभिषेक थइ गया पछी जल लेइने आव्या तेवारें जगवानने स
णगार सहित सिंहासन उपर बेठेला जोइने युगलीयाने विवेक आव्यो जे बीजा तो सर्व श
रीर उपर शोना थइ रही छे परंतु एक जगवानना पग खाली देखाय छे एवुं जाणी पग उ

पर पाणी होश्युं केटली प्रतोमां तो युगलीया मांहोमांहे वटवाड करीने नाभि कुलगर पासें न्याय करावचा गया नाभिराजायें तेमने कह्युं के अमे गरडा थया माटे तमे रुषभने जइ कहो ते तमारो न्याय करशे युगलीयायें जइ रुषभजीने कह्यो रुषभजी बोल्या मने राज्य अभिषेक करी राजा स्थापो तेवारें युगलीयाये धूलनो एक महोटो उटलो बनावी तेना उपर प्रभुने बेसाडी पोते अभिषेक करवा पाणी लेवा गया एवामां इंद्रनुं आसन कंप्युं तेणे आवीने मुकुटादिक अलंकार पहेरावी सिंहासने बेसाडी, वस्त्रविभूषित करी राज्याभिषेक विधि साचव्यो प्रभु उपर छत्र धारण कर्युं, चामर वींजतो थको इंद्रमहाराज पोते प्रभुनी सेवा करे छे एटलामां युगलीया पण कमलपत्रना डनामां पाणी भरी लइ आव्या तिहां भगवानतुं सरूप सर्वालंकारविभूषित देखीने चिंतववा लाग्या के प्रथम भगवानना केहवा प्रमाणे जो पाणी एमना मस्तक उपर नाखियें तो सर्व वस्त्र, अलंकार भीजाइ जाय माटे स्वामीनो भावो पग छूटो छे तेना उपर न्हवण करीये एम विचारी माथा पग उपर अभिषेक कीधो तेवारें इंद्र महाराज बोल्या ए युगलीया भला विनीत पुरुषो छे तेमाटे इहां विनीता नामें नगरी वसावी एवुं कहीने वैश्रवण नामें देवने इंद्रे नगरी वसावी आपवानी आज्ञा आपी तेवारें वैश्रवणें विनीता नगरी बनावी ते केवी रीतनी बनावी तोके बार योजन लांबी, नव योजन पोहोली, बाउ दरवाजा करया, फरतो महोटो कोट कर्यो, ईशान कोणमां सात भूमिउं चोखूणो एवो एक महोटो नाभिराजाने रहेवा माटे घर बनाव्युं, अने पूर्व दिशायें भगवंतने रहेवा सारुं सात भूमिनुं घर बनाव्युं, अग्निकोणमां बाहुबलीने रहेवा माटे महोटुं घर बनाव्युं तेनी बअने नैऋत्यकोणमां भरतने रहेवा माटे [illegible] बनाव्युं, एकवीस बार [illegible]

बनाव्या, वली राज्यने अर्थे हाथी, घोडा, गाय, ऊंट, वेसर, बलद प्रमुख चतुष्पदोनो संग्रह कर्यो. आगल तो ए हाथी प्रमुख सर्व जीवो जंगलमां फरतां रहेता हता. वली केटलाएक जुगलीया अपराधमां आवे तेमने दंड देवामाटे उग्रा एवा नामथी माणसो स्थापन कर्या, केटलाएक गुरुस्थानीया करी तेमने जोगा एवा नामथी स्थापन कर्या, केटलाएक मंत्राधिप करीने तेमने राजन्य एवा नामथी थाप्या, बीजा पायदल क्षत्रियो एवा नामेंकरी थाप्या एम चार प्रकारना पुरुषोनी व्यवस्था थइ ॥ तथा वली जे ब्रह्मचर्य पाले ते ब्राह्मण, जे शस्त्र राखे ते क्षत्री, खेती करावे ते वैश्य, चाकरी करे ते शूद्र, एवा नाम स्थापन कर्या वली ए विनीता नगरीमां चोरासी चौटा कर्या तेमां सोगंधिक, गांधी, तंबोली, कंदोइ, सोनार, मणियार, सोनुं वेचनार, माणिक वेचनार, नाणावटी, जाडबुंजा, धान्यबजार, दोसी, चमार, कंसारा, माली, घृत बजार, तथा तेल, सूत्र, कपास, जांमा, नाडा इत्यादिक बजारो करी अनेक जातना वयमीउ वगेरे थया ॥ ॥ श्रीऋषभनाथ स्वामीना पांच नाम थया एक ऋषभनाथ, बीजुं प्रथम राजा, त्रीजुं पहेलां भिक्षाचर, चोथुं पहेला केवली अने पांचमुं पहेला तीर्थंकर ए पांच नाम थया ॥ २११ ॥ ॥ श्री ऋषभनाथ अरिहंत महाचतुर, वली प्रतिज्ञाना पालनार, भला रूपवंत, सर्वगुणसहित, सरल, विनीत, वीश लाख पूर्व पर्यंत कुमर पदे रह्या, त्रेशठ लाख पूर्व लगें राज्य भोगव्यो, तिहां राज्य करतां लखवानी कला, गणवानी कला, बहोंतेर कला पुरुषोनी तथा चोशठ कला स्त्रीयोनी, कारीगरोना सो भेद, खेतीकर्मादिक त्रण कर्म इत्यादिक वातोनो लोकोना हित करवाने सारुं उपदेश दइने, सो पुत्रोने सो देशनो जूदोजूदो राज्य आपीने वली लोकांतिक देवोना प्रतिबोधथी वरसीदान देइने, गोत्रीयाने धन वांटी आपीने,

जगवाननो पहेलो महिनो, पहेलुं पखवाडियुं, चैत्र वदि आठमना दिवसें, पाछले पहोरे, सुदंसणा नामा पालखीमां बेसीने, देवमनुष्यसहित, यावत् विनीतानी राजधानीमांथी थइने, जिहां सिद्धार्थवण उद्यान ले तिहां अशोक वृक्षनी नीचें पालखी राखीने, ते पालखीमांथी नीचे उत रीने, सर्व घरेणा पोताना हाथथी उतारीने, चार मुष्टि लोच करे, बेलानो एटले छठ्ठनुं तप पाणी रहित चउविहारो करे छते, उत्तराषाढा नक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके उग्रकुलना, जोगकुलना, राज्यकुलना, क्षत्रियकुलना एवा कछ महाकछ प्रमुख चार हजार पुरुषोनी साथें इंद्रदत्त एक देवदुष्य वस्त्र लइने, दीक्षा लीधी, गृहस्थपणो त्यागीने साधुपणो अंगीकार कर्यो ॥ २१२ ॥ ॥ हवे वली जगवाने दीक्षा लीधी तेथी पहेलानी वात बनेली ते लखियें छैयें ॥ जरतनी साथें ब्राह्मी जन्मी हती ते बाहुबलीने परणावी अने जे बाहुबलीनी साथे सुंद रीनो जन्म थयो हतो ते जरतने स्त्रीरत्न करवा माटे राखी एटले युगलधर्म मटाड्यो ॥ हवे युगलीयाने आहार पचे नहीं ते आश्रयी कहे छे. प्रथमतो युगलीया कल्पवृक्षना पत्रादिकनो आहार करतां हता ते अयोग्य थया, खावा योग्य रह्या नहीं तेवारें लोक मूल, पत्र, कंद, फल अने फूलनो आहार करवा लाग्या अपकशालिप्रमुख काचुं धान्य खावा लाग्या, ते खातांखातां पचे नहीं, पेटमां दुःखी आवे तेवारें जगवान् पासे आवी कहेवा लाग्या के आहार कर्याथी अमारुं पेट नडी आवे छे जगवान बोल्या जगारेक हाथमां मसलीने हाथनी बाफ आपीने खाओतो पची जासे केटलाएक दिवस पछी ते पण पच्यो नहीं पछी कांखमां अने हृदयमां राखी बाफ आपीने आहार करवा कह्युं केटला काल पछी ते पण पचवा लाग्यो नहीं एवा अ वसरे वनमांहे वंश घासने घासते अग्नि उपन्यो ते देखीने युगलीयायें जाण्युं ए कोइ अपूर्व

चाणाकीलिपी, १७ मूलदेवीलिपी ए अढार लिपीना नाम तथा बीजी पण देशना नामें लिपी जे मके लाटी, चोटी, माहाली इत्यादिक लिपी जाणवी ॥ तथा गणित जे आंकनो विधान ते सुंदरीने जगवाने मावे हाथे करवाने बताव्युं ते श्या जणी तोके " अंकानां वामतो गतिः ॥ अक्षराणां दक्षिणतो गतिः" वली जरत महाराजने रूप करवानुं कर्म बताव्युं तथा बाहुबलीने पुरुषादिलक्षण बताव्या तथा पुरुषनी बहोंतेर कलाउ बतावी तेना नाम कहे ठे. १ लेखनकला, २ पठनकला ३ गणितकला, ४ गीत गावानी कला, ५ नाटकनी कला, ६ तालमाननी कला, ७ ढोल वजाववानी कला, ८ मृदंग वजाववानी कला, ए वीणा वजाववानी कला, १० वांसली वजाववानी कला, ११ जेरी वजाववानी कला, १२ हाथी परखवानी कला, १३ घोडा परखवानी कला, १४ धातुवादनी कला, १५ दृष्टिवादनी कला, १६ मंत्रवादनी कला, १७ पलितविणासनी कला, १८ रत्नलक्षण, १ए नारीलक्षण, २० नरलक्षण, २१ छंदकरण, २२ तर्कवाद, २३ न्याय, २४ तत्त्वविचार, २५ काव्यकरण, २६ ज्योतिष, २७ चारवेदनी कला, २८ वैद्यकला, २ए षट्जाषाज्ञान, ३० वशीकरण, ३१ अंजन, ३२ लिपी, ३३ रुपिकर्म, ३४ सुपन, ३५ वाणिज्य, ३६ राजसेवा, ३७ शकुन, ३८ इंद्रजाल, ३ए वायुस्तंजन, ४० अग्निस्तंजन, ४१ मेघ वर्षाववानी कला, ४२ लेपनकला, ४३ मर्दनकला, ४४ उर्ध्व जावानी कला, ४५ घट बंधननी कला, ४६ घणो फेरवो, ४७ पत्र छेदवो, ४८ मर्मजेदन, ४ए फल खेचवो, ५० पाणीवृष्टि, ५१ लोकाचार शीखवानी कला, ५२ लोकोनी मरजी राखवानी कला, ५३ फल नरवानी कला, ५४ खड्ग धारवानी कला, ५५ छुरीबंधन, ५६ मुद्राकरण, ५७ लोहघटन, ५८ दंतसमारण, ५ए काष्ठछेदन, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ दृष्टियुद्ध, ६३ मुष्टियुद्ध,

६४ दंमयुद्ध, ६५ खड्गयुद्ध, ६६ वाग्युद्ध, ६७ गरुडमर्दन, ६८ सर्पदमन, ६ए नूतदमन,
७० योगध्यान, ७१ वर्षज्ञान ७२ नामावली ए पुरुषनी बहोतेर कला नगवानें बतावी ॥
हवे स्त्रीयोनी चोशठ कला बतावी तेना नाम कहे ने. १ नाचवानी कला, २ आदर देवानी
कला, ३ चित्रकला, ४ वादकला, ५ मंत्रकला, ६ तंत्रकला, ७ ज्ञानकला, ८ विज्ञानकला,
ए दंमकला, १० जलस्तंनकला, ११ गीत गावानी कला, १२ तालमाननी कला, १३ मेघवृ
ष्टीनी कला, १४ फलाकृष्टीनी कला, १५ वाग्गोपन, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार,
१८ शकुन जोवुं, १ए क्रियाकल्प, २० संस्कृतनाषा बोलवी, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति,
२३ वर्णिकावृष्टी, २४ सुवर्णसिद्धि, २५ सुगंधितेल करवुं, २६ लीलासहित चालवुं, २७
हाथी घोडानी परीक्षा करवी, २८ पुरुषस्त्रीलक्षण जाणवुं, २ए सुवर्णरत्ननेदनुं ज्ञान,
३० अढार जातिनी लीपी, ३१ तात्कालिक बुद्धि, ३२ वास्तुसिद्धि, ३३ वैद्यक्रिया, ३४ काम
क्रिया, ३५ घटभ्रमण, ३६ सारिपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३ए हस्तलाघव,
४० वचनचतुरता, ४१ नोजनविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमंजन, ४४ शालिखंमन,
४५ कथा केहवी, ४६ फूलगुंथन, ४७ वांकुं बोलवुं, ४८ काव्यशक्ति, ४ए वेस बनाववो, ५०
सर्वप्रकारनी नाषाउ बोलवी, ५१ अनिधानज्ञान, ५२ घरेणा पहेरवा, ५३ राजानी नक्ति
करवी, ५४ घरनो आचार शीखवो, ५५ काव्यकरण, ५६ परने हरावववो, ५७ धान्य रांधवुं,
५८ केश बांधवा गुंथवा, ५ए वीणा वजाववी, ६० वितंमावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्य
वहार, ६३ अंत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका ए चोशठ स्त्रीयोनी कला नगवाने बतावी तथा
श्रीऋषनदेवजीना सो पुत्रना नाम आवी रीतें ने. १ नरत २ बाहुबली, ३ मस्तक, ४ पुत्रां

गारक, ५ मल्लिदेव, ६ अंगज्योति, ७ मलयदेव, ८ जार्गवनाथ, ए अंगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनायक इत्यादिक सो पुत्र जाणवा तेमांथी जरतने तो अयोध्यानुं राज्य आप्युं तथा बाहुबलीने तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं अने बीजा अठाणु पुत्रोने अंग वंग प्रमुख देशोना राज्य आप्या पछी पोतें चार हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लइने विहार कर्यो हतो ते वखत चार मुष्टी लोच कर्यो हतो अने बीजा तीर्थंकर सर्व पांच मुष्टी लोच करे छे तेनुं कारण कही देखाडे छे जगवाने जेवारें चार मुष्टी लोच करी लीधो तेवारें पांचमी मुठीयें उखेडी नाखीये एटला केस पाछल चोटलीमां रह्या एटलामां पवन वाह्यो तेने लीधे ते केसनी शिखा फरकीने पोहोली थइ तेथी घणीज सोजवा लागी ते जोइने इंद्रमहाराजे प्रजुने विनंति करी के महाराज केशनी शिखा घणीज सारी रमणिक देखाय छे माटे एमज रहे तो सारुं प्रजुयें पण ते शिखा एमज राखी ते जेम पद्मद्रहमांथी सिंधूनदी निकलती वखते सवा छ योजननी पोहोली छे अने पछी अनुक्रमे वधती वधती समुद्रमां मलतां साडी बाशठ योजननी पोहोलपणे थयली छे तेम ए चोटली पण मस्तकना थडमांथी नीकलेली ते आगल आगल पोहोलाइमां विस्तारने पामती पीठमां आवी तेथी पद्मद्रह सिंधुनदीना प्रवाहनी पेरे शोजाकारी देखवा लागी तेने लोक जाषायें अत्रा चोटली पण कहे छे हवे जगवान घोर अजिग्रहधारी थया थका ग्रामानुग्रामे विहार करतां आकरा परिसह सहन करता थका विचरे छे तिहां जगवानने यद्यपि छठ तपनुं पारणुं करवुं हतुं तथापि ते वखतमां सुपात्र साधुने दान देवानो विधि कोइ जाणतो न हतो जिक्षानो व्यवहार कोइ जाणतो नथी साधु ते शुं अने जिक्षा ते वली शुं? एवो कोइ समजे नही ते वखत कोइ जिक्षानो मागनार पण जूमीयामां

हतो नही तेणेकरी जिहां जाय तिहां कोइ अन्न आपे नही तेथी चार हजार साधुई नूख
तृषायें पीड्या थका प्रनुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या पण प्रनु कांइ बोल्या नही मौन
पणे रह्या तेवारें कछ अने महाकछने पूछ्युं तेणे पण कह्युं के अमे पण कांइ जाणता
नथी तेवारें सर्व विचार करवा लाग्या के आपणे प्रथमथीज नगवानने कांइ पूछ्युं नही
अने हवे पाछा घेर जइने बेसवुं पण योग्य नथी तेम आहार कर्या विना पण रहेवुं
जाय नही तो हवे आपणने ए वनवासमां रहेवुंज नखुं ने एम चिंतवीने गंगानदीना
दक्षिण तटना वनमां जटिल तापस थइने रह्या अने वृक्षमांथी नीचे तूटी पडेला पत्र,
फल, फूल आदिकनो आहार करवा लाग्या तथा वृक्षनी छालना वस्त्र पेहरे अने श्रीऋष
नदेवजीनुं ध्यान करता थका विचरवा लाग्या ॥ हवे जेवारें प्रनुयें दीक्षा लीधी हती
तेवारें सर्व पुत्रोने जुदा जुदा देशोना राज्य वहेंची आप्या हता ते अवसरमां कछ अने म
हाकछना पुत्र एक नमि अने बीजो विनमी ए बेहुने नगवानें पुत्रनी पेरे पाल्या हता ते
बन्ने जण ते वखतें क्यांएक देशांतरें जता रह्या हता पण हाजर हता नही ते जेवारें पाछा
फरी आव्या तेवारें तेणे नरतने आवी कह्युं के अमने राज्य केम न आप्यो नरतें कह्युं
के हुं तमने थोडोक नाग आपुं तेणे कह्युं के ताहारा पासेथी न लहीयें तेवारें नरतें कह्युं
नगवान जाणे ने तमे जाणो तेवारें बेहु नाइ नरतनी अवगणना करीने नगवाननी पासें
आवी तेमना चरणकमलनी सेवा करीने कहेवा लाग्या के हे प्रनु तमे सर्वने राज्य दीधुं
माटे अमोने राज्य आपो नगवाने तो संसारत्याग कर्यो छे माटे मौनपणे रह्या कांइ उत्तर
दीधुं नही तेवारें ते बन्ने जण राज्यने अर्थे नगवाननी पाछल रह्या जिहां नगवान उना

रहे तिहां जगा साफ करे, कांटो, कांकरो काहाडी नाखे, पाणी छटकावे, फूल विछावे, मांस मशकादिक उमाडे, त्रिकाल खड्ग धरे एम प्रजुनी सेवा जक्ति करता थका विचरें छे एकदा धरणींद्र जगवानने वांदवा आव्यो तेणे नमि विनमिने कह्युं के जगवान तो त्यागी छे माटे तमे जरतनी पासे जाउ ते तमोने राज्य आपशे तेवारें ते बोल्या जगवान विना अमे बीजा कोइ पासेथी राज्य मागीयें नही एवुं सांजली धरणींद्र तेमनी जक्तिथी संतुष्ट थइने कहेवा लागो के तमे एकमना थइने प्रजुनी सेवा करो छो तो महोटाना चरणनी सेवा केवारें पण निष्फल थाय नही तेथी हुं तमारा उपर निवाज्यो छुं माटे जे मागो ते हुं आपुं तो पण तेणे कांइ माग्युं नही तेवारें धरणींद्रे जगवंतना शरीर अदृष्टि अदृष्टि एटले जगवानना मुखें अवतरीने अडतालीश हजार विद्याउ पाठ गुणतांज सिद्ध थइ जाय एवी शीखावी अने गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति प्रमुख शोल देवीयो ते विद्याउनी अधिष्ठायकाउ छे ते आपी अने वैताढ्य पर्वतनी दक्षण उत्तर श्रेणीनुं राज्य आप्युं पछी विद्याउ साधी बन्ने जाइउ विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या त्यारे पोतानो सर्व स्वजनवर्ग लइने रथनुपुर चक्रवालादि पच्चास नगर उत्तर श्रेणिना तथा गगनवल्लज प्रमुख शाठ नगर दक्षण श्रेणीना वसावीने विमाना बलथी सर्व परिवार सहित तिहां रहेता हवा पछी ते वे जाइउने धरणींद्रे कह्युं के हे विद्याधरो तमे सांजलो जे एक तो केवली जगवानंनी, बीजी जिनप्रतिमानी, त्रीजी चरम शरीरीनी अने चोथी प्रतिमाधर साधुनी ए चारनी जो तमे आशातना करशो अने वली एवुं उल्लंघन करशो एटले ए चारने रस्तामां मूकी तेना दर्शन सेवा कर्या विना एमज चाल्या जाशो तथा परस्त्रीनी साथे जोरावरीथी जोग जोगवशो तो तमारी विद्याउ निःफल

थइ जाओ एवी रीते शिखामण आपीने ते शिखामण स्वजीत उपर लखीने धरणेंद्र पोताने स्थानके गयो पछी जगवाननी सेवानुं फल जरतने कहीने शोलजाति विद्याधरोनी थापी दक्षण श्रेणीनुं राज्य नमि करवा लाग्यो अने उत्तर श्रेणीनुं राज्य विनमि करवा लाग्यो ॥ इति नमि विनमि प्रबंध ॥ हवे जगवान पूर्वकृत अंतराय कर्मना उदय थकी एक वर्ष पर्यंत आहार विना रह्या ज्यांय शुद्ध जिक्षा न पामता हवा जिहां गोचरीयें जाय तिहां महोटो मोटा लोको आहार विना रह्या ज्यांय शुद्ध जिक्षा न पामता हवा जिहां गोचरीयें जाय तिहां मह्लोटा मा थाल जरी आपे, कोइक तो घणी सरूपवान् एवी कन्याने शोज शणगारे शणगारीने आपवा तयार थाय, कोइक तो हाथी, घोडा, रथ इत्यादिक वाहन आपवा आवे, कोइ एक धनवृत सुवर्णस्थालप्रमुख उचित वस्तु आपवा आवे एम घणा घणा पदार्थ लावीने लोको स्वामिनी आगल धरे ते सर्व अणखपता जणी स्वामी लीये नही पण अन्न कोइ आपवा आवे नही एवी रीते एक वर्ष पर्यंत स्वामी निराहारी रह्या पण आहार विना लगार मात्र मन्या नही दीनपणुं आव्युं नही एवी रीतें जगवान विचरता थका एकदा गजपुर नगरे पधार्या तिहां बाहुबलीनो पुत्र सोमप्रज नामे राजा राज्य करे ने तेनो पुत्र श्रेयांस कुमर युवराजा ने तेणे ते रात्रीये सुपनुं दीठुं हतुं जे मेरुपर्वत मलिन थइ गयो हतो तेने में अमृतना घडा थी धोइने उज्ज्वल शोजायमान कीधो तथा श्रेयांसना पिता सोमप्रज राजाने एवुं सुपनुं आव्युं जे कोइ एक पुरुषने शत्रुयें घेरी लीधो ते श्रेयांस कुमरना सहाय थकी जय पामी छूटो थयो तथा ते नगरना सुबुद्धि शेठने सुपनुं आव्युं जे सूर्यना सहस्र किरणो पडता हता तेने श्रेयांस कुमरे पाछा सूर्यमां थाप्या ए त्रणे जण प्रजाते राजसजामां जेला थया तिहां स

हुयें पोतपोताने आवेला सुपनानी वात कही तेवारें सर्वना मनमां एवो विचार आव्यो के आ सुपनानुं सर्व फल श्रेयांसकुमरने थाशे अने श्रेयांसने कोइ महोटो लाभ थाशे एम कही सहु पोतपोताने घेर गया पछी मध्यान्ह समये गोचरी करवाने माटे श्रीरूषभदेवजी घरघरने विषे फरवा लाग्या तेने लोको पूर्वोक्त रीते वस्त्राभरणादिक वस्तु आपवा लाग्या पण प्रभु लेता नथी तेथी लोकोमां कोलाहल थइ रह्यो छे जे भगवानतो कांइ पण लेता नथी एटलामां श्रेयांस कुमर गोखमां बेठा हता तेणे श्रीरूषभदेवजीने दीठा पछी इहापोह करता जातिस्मरण ज्ञान पाम्या तेणेकरी पूर्वलो भव दीठो तेवारें जाण्युं जे अहो! हुंतो ए प्रभुनो पूर्वभवने विषे सारथी हतो तिहां में पण दीक्षा लीधी हती तिहां वज्रसेन तीर्थंकरें एवुं कह्युं हतुं जे ए वज्रनाभ राजर्षि भरतक्षेत्रमां पहेला तीर्थंकर थाशे तेज ए प्रभु तीर्थंकर, देवोना देव गोचरीयें भमता देखाय छे एम जाणी गोखथकी हेठा उतरीने कह्युं के हे प्रभु लोको साधुने दान देवानी रीतीमां वाकेब नथी एम कही पांच अभिगमन साचवी त्रण प्रदक्षिणा देइ॥ इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसिहिआए मथ्थएण वंदामि ॥ १ ॥ ॥ एम खमासमण आपी पछी इछाकारि सुहराइ सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध सुख संजम जात्रा निर्वहोछोजी हे भगवन् भातपाणीनो लाभ देवा पधारो महारुं गृहांगण पावन करो, महारे घरे पधारो, शुद्ध बेंतालीश दोष रहित आहार वहोरीने महारो निस्तार करो एम इहां श्रेयांस कुमर पहेला श्रावक प्रगट थया ते समयें शेलडीना रसे भरला एकशोने आठ घडा श्रेयांस कुमरने कोइक भेट आपी गयेलो छे ते शुद्धमान घडा लइने श्रेयांस कुमरे भगवंतने भिक्षा

मांहोमांहे विवाद थयो ते आवी रीते के प्रथम जमणो हाथ गद्गद्स्वरे करीने श्रेयांस कुमर प्रत्ये कहेतो हवो के अहो श्रेयांस तुं सांजल हुं श्रीरूपनदेवनो आजन्मनो सेवक हुं, में श्री रुषनदेवजीना प्रसादेंकरीने घणा महोटा महोटा उत्तम काम कर्या ठे तेणेकरी हुं घणो प्रतिष्ठा पामेलो हुं ते महारा कर्त्तव्य तुं निरपेक्ष पणे सांजल प्रथम तो में इंद्रादिक देवोने देखता थकां जमणो अंगुठेकरीनें प्रभुने अमृतपान कराव्युं एटले तीर्थंकरनी एवी रीतिज ठे के पोतानी मातानुं तथा अन्य स्त्रीयोनुं स्तनपान नकरे पण जेवारें नुख लागे तेवारें पोताना जमणा हाथनो अंगुठो चूसवा मांडे के तरतज तेमां अमृतमयी पुजल प्रणमी जाय तेथी क्षुधावेदनी उपशमी जाय ॥ १ ॥ वली वंसस्थापनाने अवसरें में इंद्रना हाथथी सेलडीनो सांठो ग्रहण करीने स्वामीनी वांछा पूरण करी माटे वंसस्थापवामां पण हुं आगेवान थयो ॥ २ ॥ वली में नरतराजाने तिलक करीने विनीता नगरीनुं राज्य आपी ठ खंमनो नोक्ता कर्यो एटले राजस्थापनमां पण जमणो हाथेज मंगलिक कामे टीलुं कराय ठे ॥ ३ ॥ वली नरतनी पेरेज में बाहुबलीने तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं ॥ ४ ॥ तथा शेष अठाणु पुत्रने पण एज रीते में राज्य आप्युं ॥ ५ ॥ तथा सुनंदा अने सुमंगला ए बे कन्याउने पण हाथ मलाववाने अवसरे जमणे हाथे जालीने स्वामीने परणावी दीधी ॥ ६ ॥ वली में एक वर्ष पर्यंत स्वइछित वरसी दान आपीने त्रण जगतना मनोवांछित पूरण कर्या केमके दान पण जमणा हाथेज देवाय ठे ॥ ७ ॥ ॥ वली हुं छत्र, चामर, चक्र, गदा खड्ग, धनुष्य, अंकुश, वज्र अने शंखादिक शुन्न लक्षणेंकरी विराजमान थको शोनी रह्यो हुं एवा सर्व लक्षण हुं (जमणो हाथ) धारण करुं हुं अने लक्षण जोवावाला लोक पण महा

बीज रेखाउ आदिक सर्व लक्षणने जुए ले ॥ ८ ॥ वली तीर्थयात्रा, पुत्रप्राप्ति, सौजाग्य, यश कीर्तिनी सूचक रेखाउनो धारक पण हुंज हुं एटले ए सर्व जावोने सूचववा वाली रेखाउ जो जमणा हाथमां होय तोज तद्रूप फलनी प्राप्ति थाय ले ॥ ९ ॥ वली हुं चोखा देखवामां सो धयामां चतुर व्यापारवान हुं एटले चोखा गोधुमादिकमांथी कांकरा प्रमुख सोधी काहाडवा ते जमणा हाथथीज बनी शके ले ॥ १० ॥ वली दानने विषे, जोजनने विषे, देवपूजाने विषे, परमेश्वरना स्मरणने विषे, प्रीति बांधवाने विषे, बोल तथा कबुलात आपवाने विषे, दानने विषे, इत्यादिक शुज शुज कार्योमां म्हारोज अधिकार ले ॥ ११ ॥ एवी रीते हुं सर्वनी उपर हुं अने म्होटा म्होटा कामोमां म्हारो अधिकार ले तो कहो आ स्वल्प सेलडीना तुल रसनी सेवन केवी रीतें थाउं वली में व्यासी लाख पूर्व लगें जगवाननी सार्थे राज्य साम्राज्य पाल्युं तो हवे हुं हमणा जगवंतनी आगल थइने केवी रीतें याचना करावुं तेज कारणथी में खावुं, पीवुं, पहेरवुं, उढवुं, नाटक देखवुं, इत्यादिक क्रीडाविना मौन धरावीने वन गहन अटवीउमां प्रजुने जमाड्या तो हवे आ सेलडीना रसने हुं ग्रहण न करुं माटे तमे मावा हाथने कहो तो ते मा गी लेशे एवा जमणा हाथना वचन सांजलीने मावो हाथ बोल्यो के हे निर्लज्ज तुं वृथा पोतानी मेले पोताना आत्मानी म्होटाइ करीने शुं प्रशंसा करे ले पोताना मुखथी जे पोतानी म्होटाइ करे तेमां कोइ गुण होय तोपण ते लघुताने पामी जाय अने परनी प्रशंसा करवाथी जो निर्गुणी होय तो पण गुणवान थाय गुणवंत होय तेना गुण तो पोतानी मेलेज प्रगट थाय जेम कपूरनो सुगंध, रत्ननुं तेज अने मणिनुं निर्विषपणुं इत्यादिक जे गुणो ले ते पोतानी मेलेज प्रगट देखाइ आवे ले वली ते कोइ कोइने आमल कहेवा जवा नथी वली एकलाज रहेनार के जण होय तेमां

थी एक जण उठीने पोताना गुण बीजानी आगल वर्णवी देखाडे ते युक्त नथी जेम माताना मुख आगल मामानुं वर्णन करी देखाडवुं युक्त कहेवाय नही तेनी पेठे ए पण जाणी लेवुं॥ माटे अहो श्रीश्रेयांस श्रीऋषभ देवना परपोत्रा महारुं पण कर्तव्य जे छे ते तुं सांजल परमे श्वरे जे वे कन्याने परणवानुं स्वीकार्युं तेमने सूवा बेसवानुं ठेकाणुं तो मेंज आप्युं कारण के स्त्रीयो जे छे ते पतिना माबापासा तरफ सूवे बेशे छे एटले जमणे हाथे तो मात्र स्त्रीनुं हाथ जालीने उगाडी मूकी पण तेमने बेसवा माटे स्थानक तो में आप्युं ॥ १ ॥ वली हुं ढाल आगल राखीने संग्रामनेविषे स्वामीनुं रक्षण करुं हुं अने जमणो हाथ तो खड्ग उपाडीने पाछो नासी जाय छे ॥ २ ॥ वली हुं संग्राममां धनुष्यने आगल धारण करीने उन्नो रहुं हुं अने आ जमणो हाथ तो तीर लइने कानने विषे जुगलनी पेरे पेशे छे ॥ ३ ॥ वली आंक गणवानो व्यापार पण महारी पासे थाय छे एटले आंकनी वामगति होय छे ॥ ४ ॥ वली ग्रामांतरें प्रयाण करतां गधेडो पण जो महारी दिशा तरफ आवीने बोले तो सिद्धिदायक छे ॥ ५ ॥ तेमज देव चकली पण मावे पासे आवी बोले तेवारें शुभ फलनी सूचवनारी थाय छे ॥ ६ ॥ वली प्रथम प्रयाणने विषे प्रथम रात्रीना पहोरमां शीयालीया पण महारी दिशायें रह्या थका बोले तो सिद्धिना करवावाला थाय ॥ ७ ॥ वली जे प्राणी रोगादिकें पीडाणो होय ते पण घणुं करीने मावे पासे सूवे तो तेने समाधि कारक थाय ॥ ८ ॥ वली महारी तरफनी चंद्रनाडी वहेतां जे शुभकामनो प्रारंभ कर्यो होय ते सिद्धिदायक थाय ॥ ९ ॥ वली हे श्रेयांस तुं सांजल के आ पापी जमणा हाथे प्रभुने परणवाने अवसरे कन्याउनो हाथ ग्रहण कर्यो तेवारें पण मने बोलाव्युं नही ॥ १० ॥

वली कंसार पण एणे एकलेज खाधुं पण एम न जाण्युं जे आ महारो नाइ नूख्यो छे माटे थोडोक एने पण बोलावीने खवाडुं एवो विचार कर्या विना महाराथी कपट करीने ए एकलोज खाइ गयो तेथी ए निःकेवल पेट नरो देखाय छे, फोकट पोताना मुखथी पोताना गुणनुं वर्णन करे छे ॥ ११ ॥ वली हे श्रेयांस तुं सांजल बीजी पण एनी निष्ठुरता कही देखाडुं हुं के जे वखत मिष्टान्नपान नोजन करे तेवारें नोजन तो पोते करे अने मक्षिकाउ महारा पासे उडावे तो पण हुं ते वखत महारी दाक्षिणताथी महारो महोटो नाइ जाणीने एने कांइ कहुं नही ॥ १२ ॥ वली ए जमणा हाथमां चतुराइ किंवा बीजो कोइ गुण पण कांइ नथी कारण के जे वखत मस्तकें पागडी वींटे छे ते वखत एतो जेम तेम वींटी नाखे छे पण पाछलथी बरोबर आंटा प्रमुख सुधारवा करवानुं काम, बरावर रचना करवी, सुंदर आकार करवो तेतो सर्व हुंज करुं हुं ॥ १४ ॥ वली आ जमणो हाथ जे छे ते जूव टानो रमवावालो छे ॥ १५ ॥ ॥ इत्यादिक हे श्रेयांस हुं केटलुं तमोने कहुं अमारा बे जणना सारा माठा लक्षण तथा गुण अने अवगुणने सर्व जगत्र जाणे छे अथवा आ श्री रूषनदेव स्वामी पोतेंज त्रण लोकना नाथ छे माटे सर्व जाणे छे एवी रीते अमो बेहु जणने विवाद करता थका एक वर्ष व्यतीत थइ गयुं तेथी नगवान् वर्षी तपना करनार थया एम कुटुंबनो विरोध केवारें पण कल्याणकारी न थाय ते माटे हे श्रेयांस ए घणोज हवीजो छे तथापि हुं तहारी दाक्षिणताथी एने समजावुं छुं केमके कोइ प्रकारे जेवारें कुटुंबमां विरोध उत्पन्न थाय छे तेवारे संबंधीने संबंधीउज पोतपोतामां प्रतिबोध आपी समजावे छे एम कही मानो डाबो हाथ जमणा हाथने कहेवा लाग्यो के हेनाइ आ अवसरे आपणने विवाद





श्रेयांसकुमार भगवानने सेलडीनो रस वहोरावेछे.

करवुं घटतुं नथी हमणा स्वामीने केवल ज्ञाननी उत्पत्तिनेविषे तथा तीर्थ प्रवर्तननेविषे अने संघस्थापनाने विषे तमारुंज काम छे एमां बीजा कोइनुं काम नथी महोटाओने पोतानुं काम ते पारके अर्थेज थाय छे जेम मातायें पीधेलुं दूध ते बालकने अर्थेज थाय छे ते कारणे आ वखतें आपणने विरोध करवुं योग्य नथी एवी रीते मायो हाथ जोडी रह्या तेवारें श्रेयांस कुमर बेहु हाथने समजाववा लाग्यो जे अरे भावा जमणा हाथो तमे बन्ने जण पोतपोताना काममां कल्याणकारी छो परंतु हमणा तमे महारी प्रार्थना सफल करो ते आवी रीते के तमे बेहु एकठा थाओ के जे थकी भगवानने वार मासना तपनुं पारणुं थाय अने महारे पण उत्तम दान आपवाथी संसारसमुद्र थकी तरवुं थाय माटे तमे जला थइ महारा उपर कृपा करीने बेहु जण जगडो मटावीने भेला थइ जाओ एवी श्रेयांसनी विनंति सांभलीने बन्ने हाथ पसलीने आकारे एकठा मली गया तेवारें श्रेयांस कुमरे शुद्ध भावे करीने सेलडीनो रस वहोरावी दीधो तेनी शिखा उंची चडी तथापि एक बिंदुमात्र पण नीचे पड्यो नही जो हजारो घडा हाथमां उंधावाली आपो अथवा सर्व समुद्रोना पाणी नाखो तो पण एक टीपुं हाथथी बाहेर पडी जाय नही मात्र शिखा उंची चढती आवे एवी लब्धि जेवारें प्राप्त थयेली होय तेवारें करपात्री थाय. यदुक्तं ॥ माइज्ज घडसहस्सा, अहवा माइज्ज सागरा सव्वे॥ जस्से आरिस्स लद्धि, सो पाणिपडग्गहो होइ ॥ १ ॥ ॥ ए भगवाननी लब्धिनो प्रभाव जाणवो पछी स्वामीयें तिहांज पारणुं कर्युं ते वखत पांच दिव्य प्रगट थया एकतो गंधोदक फूलनी वृष्टि थइ, बीजुं वसुधारानी वृष्टि थइ, त्रीजुं वस्त्रनी वृष्टि थइ, चोथुं आकाशें देव दुंदुभी वागी, पांचमुं "अहोदानमहोदान" एवी उद्घोषणा देवोयें करी आ पात्रदानथी श्रेयांस

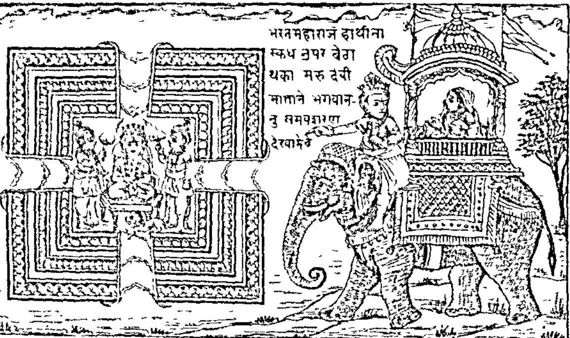
कुमरे मोक्ष फल उपार्जन कर्युं, जिहां जगवाने पारणुं कर्युं तिहां रत्नमय पीठ कराव्युं, ए जगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो तेथी अक्षय त्रीज एवे नामे ते पर्व जगतमां मान्य थातो हवो, लोकोयें प्रशंसा करी के श्रीरूषजदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो जाव ए कोइ महोटा पुण्यना योगवडे थाय छे॥ यतः ॥ रिसहेससमं पत्तं, निरवद्य इक्खुरससमं दाणं ॥ सियंससमो जावो, हविद्य जइ मग्गिग्रं हुज्जा ॥ १ ॥ श्रीआदिनाथनुं पारणुं सेलडीना रसनुं थयुं अने वीजा तीर्थकरोनुं प्रथम पारणुं खीर जोजननुं थयुं हवे ते वखत श्रेयांस कुमरने लोकोए पूछ्युं जे अमे तो जगवान आहार लेशे एवुं जाणता न हता अने तमे शी रीते जाण्युं जे जगवान आहार लेशे तेवारें श्रेयांस बोल्यो के हुं जगवानना जीवनी साथे आठ जव पर्यंत रहेलो हुं तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छुं तेवारें लोकोयें पूछ्युं के ते आठ जव केवी रीते छे तेवारें श्रेयांसे कह्युं के पहेला जवमां जगवाननो जीव ललितांग देव हतो तिहां हुं एमनी स्वयंप्रजा नामें देवी हती, वीजा जवमां स्वामी वज्रजंघ राजा थयो हुं तेमनी श्रीमती नामें राणी थइ, त्रीजा जवमां अमे बेहु युगलीया थया, चोथा जवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमां जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा जवमां प्रजु वैद्यपुत्र जीवानंद नामे थया अने हुं एमनो मित्र थयो, छठा जवमां अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उपना, सातमा जवमां प्रजुतो वज्रनाज नामे चक्रवर्ती थया तिहां हुं एमनो सारथी थयो हतो, तिहां तीर्थंकरनी पासेंथी अमें सहुयें दीक्षा लीधी, आठमा जवमां सर्वार्थसिद्ध विमानें देवता पणे थया तिहांथी चवी ए जगवान थया अने हुं एमनो पोतरो श्रेयांस हुं थयो ते वात

एटला दिवस पर्यंत हुं कांइ पण जाणतो नहोतो परंतु आजे में नगवानने दीठो तेथी मुजने जातिस्मरण ज्ञान उपन्नुं तेथी में जे सातमा नवमां दीक्षा पाळी हती तेनी सर्व रीत मने जाण वामां आवी तेवारें में साधुनी मर्यादायें आहार वहोराव्यो, ए महोटा पुरुष छे, एमने कांइ ध नादिकनी गरज नथी, ए वात सांजळीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो हवे नगवानने एक वर्ष पर्यंत नुख्यो रहेवुं पड्युं अने आहार मळ्यो नही ए कया अंतराय कर्मना उदयथी थयुं ते कही देखाडे छे नगवान पूर्वे कोइक नवमां शेठनो जीव हता ते शेठ एक दिवस करसणीयोनी पासें उगराणी करवा गया तिहां ते करसणीयें खळो कर्यो हतो तेनो धान काढवा सारुं ते करसणी पोताना बळदोने धानमां फेरवे छे ते बळ द फरता फरता जे वखत नीचें नमीने धानमां मोहोडुं घाले तेवारें करसणी बळदोना मोहो डाने उपर चाबका मारे ते जोइ शेठने दया आवी तेथी शेठें कणबीने कह्युं के अरे एने तुं फोगट शामाटे मारे छे एमना मोहोडा उपर छींकुं बांधी मूक तो धान खाशे नही पछी यथा करसणीइये तेमज छींका बांध्या ते छींका चार पोर सुधी बांध्या रह्या ए अंतराय कर्म नगवाने बांध्यो हतो ते आ नवमां उदय आव्युं तथा कोइक आचार्य कहे छे के नगवाने जेवारें महाविदेह क्षेत्रमां ब मित्रनी सार्थे चारित्र लीधुं हतुं ते बएमां श्रीऋषभनो जीव महोटो हतो ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना खेत्रनी वाडे जाय छे तेवामां ते कणबी पण धान काढवा माटे बळदोने फेरवे छे हालरुं खेडतां वचमां वचमां ते बळदो नीचा थइ थइने धान खाये तेवारें ते कणबी तेने परोणो करी मार आपे ते देखी गुरु चिंतववा लाग्या जे ए कणबी बिचारा बळदोने परोणानो मार आपे छे ते करतां जो ए बळदोना मुखे

शीकुं बांधी मूके तो कांइपण धान खाइ शके नही अने हींफयांज करे एवी रीतें मुखथी तो बोल्या नही पण मनमां चिंतव्युं हतुं पछी ते अणआलोयुं कर्म आ नवमां उदय आव्युं तेना प्रजावथी प्रजु एक वर्ष सुधी आहार पाणी पाम्या नही ए पाठांतर छे, माटे कोइने पण अंतराय पाडवो नही. एम आ अवसर्प्पिणी कालमां श्रेयांसकुमरथी पहेल वहेलुं सुपात्रदान प्रवर्त्युं ॥ यतः ॥ मिथ्यादृष्टिसहस्रेज्यो, वरमेको जिनाश्रयी ॥ जिनाश्रयिसहस्रेज्यो, वरमेकोह्यणुव्रती ॥ १ ॥ ॥ अणुव्रतिसहस्रेज्यो, वरमेको महाव्रती ॥ महाव्रतिसहस्रेज्यो, वरमेको जिनेश्वरः ॥ २ ॥ ॥ जिनेश्वरसमं पात्रं, न जूतं न जविष्यति ॥ यतः पात्रविशेषेण, देयं दानं शुजात्मजिः ॥३॥ ॥ इति जगवंत पारणाधिकार ॥ ॥ हवे जगवान विहार करता थकां बहुलीदेशमां तिक्षशिला नगरीने उद्याने संध्या समयें काउसग्गें रह्या तिहां वनपालकें जइने बाहुबलिराजाने वधामणी दीधी तेवारें वनपालकने दान आपी संतोषीने पछी मनमां विचार्युं के हमणा सांज पडी अवारुं थयुं छे तेथी थोडा वखतमां सर्व परिवार जेलो थइ शके नही केमके त्रण लाख तो महारा पुत्र छे वली पौत्रादिक अनेक छे. ते सर्व एकठा थइ शके नही माटे प्रजातें महामहोत्सवसहित प्रजुने वांदवा जइशुं एम चिंतवी बेशी रह्यो पछी प्रजातें नगरी शणगारी घणा आफंबरसहित प्रजुने वांदवा गयो एटलामां जगवानतो अप्रतिबंध विहारी छे माटे बाहुबली आव्यानी अगाउ विहार करी दूरदेशे चाल्या गया तेथी बाहुबलीये जगवानने दीठा नही माटे घणो खेद करवा लाग्यो कानमां आंगलीउ नाखीने उच्चस्वरें रुदन कर्युं अने प्रजुना बे पग पासें उजो रही बोल्यो हे बाबा आदम हे बाबा आदम एवी बांग मारी तिहांथी बांग नाखी हमणा पण ते [illegible] करे छे ॥ पछी [illegible] जक्ति करवाने अर्थे शिला

प्रनु काउस्सग्गमां उना हता ते स्थानकें धर्मचक्र एवे नामे आठ योजनना विस्तार वालो एक योजन ऊंचो, हजार श्रूणानो हजार पगथीआवालो एवो रत्नमय पीठ बांध्यो पूज कराव्यो तेनी उपर जगवानना पगला थाप्या अने जाण्युं जे एज जगवान छे एवी बुद्धिथी नम स्कार कस्रो बीजा लोकोये पण तेवोज महिमा कस्रो पठी पण तिहां आवीने परणामादि विधि साचवतो हतो तिहांथी बाहुबलीकृतपीठनो महिमा चाल्यो. एम प्रनु पृथ्वीतले विहार करे छे ॥ हवे जे दिवसथी जगवान दीक्षा लइने विहार करी गया ते दिवसथी मरुदेवीमाता जरत महाराजने उलंजा आप्यां करे छे अने कहे छे के हे जरत जेम कमलना फूलोनी मालाने ना खी आपीयें तेवी रीतें ए ऋषजो मुजने ठोडीने चाल्यो गयो अने एकाकी वनवासी थयो छे, जुख तृषायें पीडातो हशे, क्यांएक मसाण अथवा गुफाउमां तपस्या करतो हशे, टाढ ताप सहन करतो हशे, वर्षाकालमां जीजातो हशे, मांस मत्सर मंक मारता हशे, अरे हुं पा पणी हुं जे पुत्रने आटलुं डुःख थयुं छे ते सांजलुं हुं तेम ठतां मरती केम नथी माटे महारा जेवी डुःखणी क्यांय पण कोइ हसे नही, अरे जरत तुंतो राज्यना सुखमां लोजाणो ठो, महारा जोकरानी खबर पण काढाडतो नथी, तुंतो सर्व प्रकारनी सुंदर रसोयो करीने खाय छे अने महारो पुत्रतो जिक्षा मागी शुका टूकडा खाय छे, तुंतो सारा मजाना घरेणा गांठां पहेरे छे अने महारो पुत्रतो नग्न फरे छे, तुंतो सुख सय्यायें सूवे छे अने महारो पुत्र कठण कांकरा कांटावाली जमीन उपर सुइ रहे छे, अरे जे मधुर गीत गानें करी जागतो हतो ते शृगाला दिकना डुःस्वरें जागतो हशे वली तेनी जूख तृषा अने शरीरनी शुश्रूषानी खबर कोण लेतो हशे तथा अणवाणे पगें चालतो हशे इत्यादिक अनेक उलंजा आपती रहे छे, पुत्रनी चिंताथी

मरुदेवी माताने आंखें पमल आवी गया तेने वली भरतराजा समजावे के माताजी तमे कांइ दुःख करो नही तमारो पुत्र घणो सुखी छे तेवारें फरी माता कहे के मने देखाड तेने भरत कहे के हवे थोडा दिवसोमां अहींआं आवशे तेवारें हुं तमोने देखाडीश एम मरुदेवी माता भरतने उलंभा देता थका रह्या छे ॥ हवे श्रीऋषभदेव अरिहंते एक हजार वर्ष पर्यंत कायाने वोसरावी दीधी शरीरनी शुश्रूषा त्यागी आपी, एमने कांइ उपसर्ग थया नही परंतु एक वर्ष आहार मल्यो नही एटलुं कष्ट दीठुं ते कष्टने सहन करता थका, आत्माने भावता थका, एक हजार वर्ष वीत्या त्यारे सीयालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, फाल्गुनवदि अगीआरसने दिवसें पूर्वान्ह कालना समयनेविषे पुरिमताल नगरना शकटमुख नामा उद्यानमां न्यग्रोध वडवृक्षनी नीचे, पाणीयें रहित अष्टम तप कीधे थके, उत्तराषाढा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके, शुक्लध्यानने विचाले वर्त्तता थका, जेनी समान बीजो कोइ जगतमां पदार्थ नथी एवुं अनोपम अनंतुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उपनुं तेनायोगें यावत् सर्व भावने जाणता देखता थका विचरे ॥ २१३ ॥ हवे एवा अवसरमां भरतमहाराजनी आयुधशालामां चक्ररत्न पण प्रगट थयुं तेवारें ऋषभदेवना केवलज्ञाननी अने आयुधशालाये चक्ररत्न उपनानी ए बेहु वधामणी भरतजीने साथे आवी ते बेहु वधामणीयांने हर्षदान आपीने विदाय कस्या पछी भरतजी विचारमां पड्या के ए बे वधामणी साथे आवी एमांथी कोनो महोत्सव पहेलो करुं एम क्षणेकवार विचारीने निश्चय कस्यो के चक्ररत्नतो संसारिक छे अने श्रीतीर्थंकरनो केवल महोत्सव कस्यो ते लोकोत्तर छे वली पिताने पूज्या तो सर्वने पूज्या माटे प्रथम इहलोक अने परलोकनो सुखदाइ जे केवलज्ञान तेनो महोत्सव करुं पछी चक्ररत्ननी


चित्र ७३
भरतमहाराज हाथीना
स्कंध उपर बेठा
थका मरु देवी
माताने भगवान-
नु समवसरण
देखाडे छे

पूजा करीश एम निरधारी श्रीमरुदेवीमाता पासें आवीने कहेवा लाग्या के हे मातजी तमे मुजने उलंना देता हता ते तमारा पुत्र आजे अहींयां पधार्या ने माटे चालो महारी साथें हुं तमारा पुत्रनो महिमा तमोने देखाडुं एम कही मरुदेवीजीने हाथी उपर बेशाडीने पछी पोते पण देव देवीने घणा आडंबरसहित तिहांथी चाल्या ते चालतां चालतां जेवारें समो सरणने दुकडा आव्या तेवारें मातजी बोल्या हे नरत आ देवसंबंधि वाजा किहां वाजे छे, नरतजीयें कह्युं ए वाजा तमारा पुत्रनी आगल वाजे छे तोपण मातजीयें मान्युं नही वली आगल चालतां घणा देव अने देवीउ समवसरणनी रचना करवा अने केवलज्ञाननो महो त्सव करवा आव्या छे ते पोतपोतामां एक बीजाने हांकोहांक करी रह्या छे ते सांजली वली पण मरुदेवीजीयें नरतने पूछ्युं के आ कोलाहल शानो थइ रह्यो छे तेवारें नरतराजा बोल्या हे मातजी आ तमारा पुत्रनी पूजा करवाने माटे देव देवीउ आवे जाय छे तेमनो कोलाहल थाय छे तोपण मातायें मान्युं नही वली आगल जातां नरतमहाराजायें कह्युं के हे मातजी आ रुपा, सोना अने रत्नमयी एवा त्रण गढवाळुं तमारा पुत्रनुं घर तो जुउ! एनी शोनानुं हुं शुं वर्णन करुं एनुं वर्णनतो क्रोडो गमे ब्रह्माउ पण करी शके नही ए वातने मातजी सत्य करी मानती थकी पोतानी आंखोने हायथी मसलवा लागी तेथी पटल दूर थइ गया तेवारें खरे खरो समोसरण दीठो तिहां अनेक देव देवीओने देखी मनमां विचार कर्यो के जुउतो खरा आ मोहनी विकलता कहेवी छे हुंतो जाणती हती के महारो पुत्र दुःखी छे अने आतो घ णोज सुखमां बेठो छे हुंतो रडीरडीने आंधली थइ गइ आंखे पटल वली गया अने एणेतो मने संजारी पण नही, महारी तो रुदनरुदन करतां जीन पण सुकाइ गइ हती वली नरतने

भोगवा देती हती जे म्हारो पुत्र भूख, तृषा, टाढ, तडका तथा वगेरे आदिकनी पीडा खमे छे अने पगरखां तथा वाहनने रहित थको एकाकी डुंगर, वन तथा अटवीओमां भ्रमण करे छे तेने मनावी लइ आवो अने एतो म्हारा दुःखने कांइ पण जाणतो नथी, सुखवार्त्ता पण पूछतो नथी, आंहीं आव्यो तो पण मने संदेसो मोकल्यो नही माटे धिक्कार छे ए मोहने तो हवे म्हारे पण पुत्रनी साथे शुं काम छे, हुं कोण अने आ पुत्र ते वली कोण, जगतमां कोइ कोइनुं नथी, सर्व कोइ आपस्वार्थी छे, अरे म्हारा पुत्रे मने एटलुं पण कह्युं नही जे हुं सुखीयो छुं, म्हारी चिंता करशो नही, परंतु ए शावास्ते एम कहे केमके एतो निरागी छे एने कोइनी उपर राग रह्यो नथी अने हुंतो सरागी छुं तेथी मनेतो एवा विकल्प थाय एमां कोइ संशय नथी तो हवे म्हारे पण ए निरागी साथे श्यो प्रतिबंध करवो ए एकपखा स्नेहने धिक्कार हो इत्यादिक चिंतवना करी सर्व वस्तु उपर ममत्वरहित थइ थकी मरुदेवीजी माता शुभध्याने अव्यक्त भावना भावता थका केवलज्ञान पामी तेज वेलायें अंतगड केवली थइने मोक्ष पोहोंता. इहां कवीश्वर कहे छे ॥ यतः ॥ पुत्रो युगादीशसमो न विश्वे, भ्रांत्वा क्षितौ येन सहस्रवर्षम् ॥ यदर्जितं केवलरत्नमर्घ्यं, स्नेहात्तदेवार्पित मातुरग्रे ॥ १ ॥ मरुदेवीसमा नास्ति, या गाता पूर्वं शिवेहितुं ॥ मुक्तिकन्यां तनूजार्थं, शिवमार्गमपि स्फुटम् ॥२॥ अर्थः— ए श्रीयुगादिदेव सरखो पुत्र बीजो कोइ विश्वमां थयो नथी अने थाशे पण नही के जेणे पृथ्वीने विषे एक हजार वर्ष सुधी भ्रमण करी कष्ट सहन करीने उपार्ज्युं कमाव्युं ए जे केवलज्ञान रूप रत्न ते प्रधान स्नेह थकी प्रथम पोतानी माताने आप्युं तेमज मरुदेवी समान कोइ माता पण थइ नथी अने थाशे पण नही केमके जे पुत्रने [illegible] अर्थे

मुक्तिकन्या जोवाने माटे आगलथी त्यां गइ के कन्या जोइने म्हारा पुत्रने परणावुं एम आ अ
वसर्प्पिणीमां पहेलवेला श्रीमरुदेवीजी मोक्ष गया ॥ इंद्रादिकें तेना शरीरनुं संस्कार करी
खीरसमुद्रमां परठव्युं वली इंद्रना वचनथी शोक निवर्त्तावी, वावीमांहे स्नान करी, भरत म
हाराजें हर्ष शोकाकुल थकां जइ भगवंतने वांद्या ह्हांथी पहेलवेलुं केवली नाम प्रवर्त्त थयुं
॥ हवे प्रथम तीर्थंकर नाम थयुं ते कहे छे ॥ भरत महाराज श्रीऋषभदेवस्वामीने नमस्कार
करीने परषदामां बेठा, तेवारें भगवाने धर्मोपदेश दीधो तिहां पहेली देशनामां ऋषभसेन प्रमुख
पांचसो भरतना पुत्र तथा सातसें भरतराजाना पोतरा सर्व मली बारसें कुमरोयें दीक्षा लीधी
ए बारसो कुमरोमां मरिचि पण भेलो जाणवो तिहां पुंडरीकादिक चोराशी गणधरोनी थापना
करी तथा ब्राह्मीयें बाहुबलने पूछीने दीक्षा लीधी ए प्रथम साध्वी थइ अने भरत महाराज
श्रावक थयो तथा सुंदरी दीक्षा लेती हती तेने घणी स्वरूपवाली जाणीने स्त्रीरत्न स्थापवा
सारुं भरतें दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी नहीं तेवारें ते श्राविका थइ एम साधु, साध्वी, श्रावक
अने श्राविका ए चतुर्विध संघने थापीने धर्मनी प्ररूपणा करी एटले तीर्थंकर नाम थयुं ॥ जे
वृक्षनी नीचे प्रभुने केवलज्ञान उपन्युं तेनुं नाम प्रयागवड थयुं ते वृक्षनी लोकोमां पूजा चा
ली हमणा पण प्रयागवड नामें करीने ते पूजाय छे तथा कच्छ अने महाकच्छ ए बे तो तापसज
रह्या माटे ते बे टालीने बीजा सर्व भद्रक परिणामना धणी जे तापसो थइ गया हता तेमणे
आवी फरीथी दीक्षा लीधी, भरतमहाराज वांदीने पाछा अयोध्यामां आव्या अने श्रीऋषभ
देवे अनेक जीव तारवाने माटे तिहांथी अन्यत्र विहार कस्यो ॥ ॥ हवे भरतराजायें घरे
आवीने चक्ररत्ननो अठाइ महोत्सव कस्यो पछी छ खंड पृथ्वी साधवाने अर्थे भरत महा

गज सैन्य जइ पाव्यो तेनी आगल हजार देवतायें अधिष्ठित चक्ररत्न चाल्युं ते जेटले दूर चक्ररत्न जइ रहे तेटला योजन सैन्य पण चाले, अनुक्रमें गंगादेवीना घरने विषे तेणे कह्युं माटे रह्या तिहां नवी नवी जांते नवा नवा वेशें गंगादेवीनी साथे विषयसुख जोगव्या पछी गंगादेवीयें मार्ग आप्यो तेवारें तामस गुफा जांगी म्लेछोना देश साध्या एम षट्खंड साधीने साठ हजार वर्षे जरत पाछा अयोध्यायें आव्या वली नमी विद्याधरने घरे पुत्री स्त्रीरत्न नवुं उपन्युं ते जरतजी परण्या छे अने सुंदरीयें पण साठ हजार वर्ष सुधी आयंबिल तप कर्युं तेथी दुर्बल थइ गइ पछी जरत जेवारें आव्या तेवारें सुंदरीयें जरतने मोतीयें वधाव्या, सुंदरीने दुर्बल देखीने लोको उपर जरत खीज्यो अने कहेवा लाग्यो के तमे एनी सार संजाल कांइ करी नही तेवारें लोक बोल्या एणे आयंबिल तप कर्युं तेथी दुर्बल थइ छे पछी जरत जीयें तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी सुंदरी पण दीक्षा लइने साध्वी थइ हवे जरतराजा अयोध्यामां सुख जोगववा लाग्यो एवामां आयुधशालानो अधिष्ठायिक पुरुष आवीने जरतने कहेवा लाग्यो के स्वामी चक्र आयुधशालामां आवतुं नथी तेने जरते पूछ्युं के केम नथी आवतुं? तेवारें अधिकारीयें कह्युं तमारा जाइयो तमारी आज्ञा मानता नथी तेथी नथी आवतुं. तेवारें जरतें सर्व जाइउनी उपर दूत मोकलीने कहेवराव्युं के जो तमो राज्य करवानी चाहना राखता हो तो सर्वे जाइउ महारी आज्ञा मानो, सेवा करो नहीतो राजनो त्याग करो ते सांजली अछाणु जाइयें विचार्युं जे आपणने राज्यतो पिताजीयें दीधुं छे तो जरतनी चाकरी शामाटे करीयें एम चिंतवी जगवान पासें गया तेने जगवाने अंगारा करनार बालानो दृष्टांत आप्यो. सूयगडांग सूत्रनो वैतालिक अध्ययन संजलाव्युं तेवारें

प्रतिबोध पामीने सर्व नाइये दीक्षा लीधी, नगवानना शिष्य थया, ए वात दूतें आवीने नर
तने कही तो पण चक्ररत्न आयुधशालामां आवे नही तेवारें नरतनो मुख्य मंत्रीश्वर बोल्यो
हे स्वामी? बीजा तो सर्व आपनी आज्ञा माने ने पण बाहुबली महा अहंकारनो धरनार बे ते
तमारी आज्ञा मानतो नथी, पोतानी नुजाना बलनुं पराक्रम घणुं जाणे छे माटे एने मू
लथी नवाडी देवो जोइयें, ए महोटो रोग ने ते तमोने व्याधि उत्पन्न करे ने एवुं सांजली नर
तराजायें सुवेग नामे दूतने सर्व वात समजावीने बाहुबलीनी पासें मोकल्यो ते दूतने जतां
थकां पुंठे छींक थइ, पगें कांटो वाग्यो, रथनी पींजणी नांगी, जमणो रासन बोल्यो इत्यादिक
अनेक अपशकुन मार्गमां थयां तोपण ते वन, अटवी अने पहाड प्रमुख उल्लंघन करीने
बाहुबलीना देशे पोहोंच्यो तेने मार्गनी भूले नग्यो देखीने गोवालणीयो तथा पाणीहारीयोए
पुछयुं के तमे कोण गो? क्यांथी आव्या अने कोण तमारो मालेक ने तेवारें दूतें कह्युं हुं नर
तराजानो दूत हुं ते सांजली स्त्रियो बोली के नरत ते शुं जे अमारा पहेरवानी कांचलीउमां
नरत काढीयें ने ते नरत अथवा वासणमां नरत, किंवा रोग संबंधि नरत ए त्रण नरततो
अमे जाणीयें लैयें परंतु ए त्रण विना बीजो कोइ नरत राजा ने एवुंतो अमे सांजल्युं पण
नथी तेवारें दूत आश्चर्य पाम्यो अने विचारवा लाग्यो के आ बाहुबलीनुं राज्य पण वेगर
नाइ अने जबरजस्त ने. एम वातो सांजलतो विचारतो विचारतो तक्षशिला नगरीयें गयो
तिहां दरवाजा उपर पोलीये रोकी राख्यो जेवारें बाहुबलीनी आज्ञा आवी तेवारें गाममांहे
प्रवेश करी राजसनामां गयो तेने बाहुबलें आंखोनी संज्ञा करी आसन उपर बेसाड्यो अने
पुछयुं के अरे दूत, नरतने पोताना सवाक्रोड पुत्रादिको सहित कुशल ने? दूत बोल्यो हे राजन्

लाखो गमे देवताउ जेनी चाकरीमां तत्पर रहेला छे तेने कुशल केम न होय; तेने तो कुश लज छे परंतु आप तेनी चाकरीमां आव्या नही तेथी ते सर्व वात निष्फल गणे छे माटे तमे जरत राजानी पासे पधारो अने एटला दिवस नही आव्या तेनो अपराध खमावो ते पण तमारो महोटो जाइ छे ते तमारा पितानी जगाये छे माटे तमारो गुनाह सर्व माफ करशे वली अनेक राजाउ तेनी सेवा चाकरी करे छे अने तमोने तो वली अवश्य पूजवा योग्य छेज माटे चालो. एवा दूतना वचन सांजली बाहुबली ते वचनोनो परमार्थ जाणी गयो अने भृकुटी चडावी, राता लोचन करी बोलवा लाग्यो के अरे दूत तुं मारवा योग्य नथी माटे तुने मारतो नथी पण न्हाना अघाणु जाइउना राज्य लइ लीधा अने वली महारुं पण राज्य लेवा वांछे छे तेथी जाइनो स्नेह तो जाणी लीधो हवे तुं तेने कहेजे के बालपणामां जेवारें आपणे बेहु रमत करता हता तेवारें हुं तुजने दडानी पेठे महारा हाथमां धरतो हतो ते दिवस जूली गयो गो के शुं? हुंतो तेनो तेज छुं जे माटे हमणा चाकरी करवानुं कहे छे ते शुं तारा राजाने कांइ विचार छे के नथी तेवारें दूत बोल्यो हे राजन् जो बे दिवस सुखे जीववानी तमोने वांछा होय अने कुंटुबनी साथे प्रयोजन होय तो तमे एनी सेवा जक्ति करो हुं तमोने सत्य कहुं छुं ते सांजली क्रोध करीने बाहुबले दूतने धक्का अपावी काढाडी मूक्यो दूत पण पाछलना बारणाथी निकली पोतानो जीव लइ नाशी गयो ते चालतो चा लतो अयोध्यायें आवीने जरत राजानी आगल वनावी वनावीने वमणी वात कही संजलावी. तेवारें जरत पण रणजंजा वजडावी चतुरंगणी सेना लइने पोते श्रीऋषभ देवजीनी पूजा करी. गजसन्नाह पहेरी,

पुत्रना पुत्र जे पोतरा ते पण घणा ने वली चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख अश्व, चोराशी लाख रथ, छन्नु क्रोड पायक, शोल लाख रणतूर वजाडनार, दश क्रोड ध्वजा, शोल हजार मह्लोटा मंत्रीश्वर, अढार क्रोड मह्लोटा घोडा, पचाश क्रोड दीवटीआ, चोराशी लाख मह्लोटा नीशाण, नव निधान, चौद रत्न, शोल हजार यक्ष, बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा, तथा वारांगनासहित वमणी करीयें तेवारें चोशठ हजार राजकन्याओ, बत्रीश हजार नाटक, वली बीजा पण घणा विद्याधर, यक्ष, किन्नरादिक अनेक प्रकारनो परिवार चाल्यो, भरते रणपट्ट मस्तके बंधावीने सुखेणनामा सेनाधिपतिने आगल कर्यो, एवी रीते सेना लइने चढयो, अनुक्रमे बहुली देशनी सीमायें आवीने लस्करनो पडाव दीधो तेवारें बाहुबलीराय नाइ आव्यो सांजलीने श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी वज्रनो सन्नाह पहेरीने, सर्व जगतने तृणसमान मानतो थको जइनामा हस्ती उपर बेसीने, भरतनी साह्मो लडवा निकल्यो तेनी पठवाडे त्रण लाख पुत्र तथा पोतरापण घणा ने तेमज शार हजार राजा तथा घणा विद्याधरो, अनेक सुभट, हाथी, घोडा, रथ, पायक प्रमुख चाल्या. वली पोतानो पुत्र सिंहरथने सेनापति करीने आगल चलाव्यो ते पण जइ भरतनी सेनाने मल्यो तिहां बेहु सैन्य एकठा मलवाथी धरती धूजवा लागी, समुद्र चलायमान थयो, पर्वतना टूक पडी गया, भरतनी सेनामां शोल लाख रणतूर वाजते तेम बाहुबलनी सेनामां पण लाखो गमे रणतूर वाजते बंदीजनो बिरुदावली बोलते बेहु तरफना सैन्यनुं मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं. तिहां हाथीयें हाथी, घोडे घोडा, रथें रथ, विद्याधरे विद्याधर, पाले पाला एम न्याययुद्ध थवा लाग्युं एटलामां सुखेणनामे सेनापतियें पोतानी सन्मुख सिंहरथने आवतो दीठो ते

त्यारें सुषेणें कह्युं तुंतो जरतनो चाकर तुं अने तुं तो बाहुबलनो पुत्र तो तेथी तुं मह्यरो स्वामी तोमाटे तुं पहेलां मह्यरा उपर शस्त्र चलाव ते सांजली सिंहरथे तेना उपर शस्त्र चलाव्युं तेवारें सुषेण सेनानीयें खड्ग चलाव्युं मारगमां सिंहरथना जाइ सिंहकेतुयें ते खड्गने पाडी नाख्युं तेथी सुषेणने घणो क्रोध चड्यो तेवारें ते सुषेण बाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासें गयो एवामां अनिलवेग विद्याधर आवी बाहुबलने नमस्कार करीने सुषेणनी सन्मुख लडवा आव्यो ते बेहु जण मल्लनी पेठे नीच्या अरस्परस मूठीउनुं युद्ध कर्युं, लाठीयो मारवानुं युद्ध कर्युं ते वखत सुषेण खड्ग लइने सिंहरथने मारवा जाय ने एवामां तो सूर्य अस्त थयो तो एमना संग्राममां एवी मर्यादा ने जे कोइ पण श्रीऋषभदेवजीनी आण आपे तो लडवुं नही, बीजी सूर्य अस्त थयो पठी लडवुं नही, त्रीजी मेघ वरसतो होय तेवारें ल डवुं नही, तेमाटे जे सांज पह्यानी अगाउ मरीगया तेनो तो कोइ उपाय नही परंतु जे घवाइ मरेला होय तेमने कांगणीरत्नना जलेकरी जरत पोतानी सेन्याना माणसोने साजा करे अने बाहुबली तो सोमयशना हृदयना आजरणोना जलथी साजा करे एवी मर्यादा करी ने. हवे फरी बीजा दिवसनी प्रजाते युद्ध थवा मांड्युं. तेवारें सुषेण सेनानी अनिलवेगने दे खीने अग्निनी पेरे बलवा लाग्यो अने अनिलवेगने मारवा आव्यो. एटलामां सिंहरथ वचमां आवी आडो पड्यो अने सुषेणने साहामो लडवा मंडी रह्यो तेवारें अनिलवेग जरत राजानी सर्व सेन्याने उल्लंघन करी जिहां हाथीउना त्रण कोट बनावीने जरतराजा सुतो ने तिहां आवीने हाथीउने कांकरानी पेठें उगाडी महाविकराल रूप करीने सेन्यनुं मथन करतो करतो जरतनी पासें आव्यो जरते जाण्युं जे आ कइक विद्याधर ने ते मह्यरी सन्मु


चित्र ७४
भरत महाराज
इंद्र महाराज
बाहुबलि

चूकावी आपशो माटे ए न होय तो सारुं एम चिंतवी तेना उपर चक्र मूक्युं ते चक्रने देखी अनिलवेग नाठो परंतु ज्यां जाय त्यां चक्र पाछळनुं पाछळ चाल्युं अने तेवारें अनिलवेग वज्रपिंजर करीने छ महिना सुधी लवण समुद्रमां पेसी रह्यो पण चक्र माथे भमतुं रह्युं छ महीना पछी समुद्रमांथी गाबडी बाहेर काढाडी तेवारें चक्रे ते गाबडीने कापी नाखी हवे सूर्ययश बाहुबलीनुं कटक उल्लंघीने बाहुबल पासें आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने आज्ञा आपो तेवारें बाहुबली हसीने बोल्यो अरे तुं इक्ष्वाकुवंशमां नवो शूर वीर छो पण हुं जो तुजने एक मुठी मात्र मारीश तोपण तुं चूर्ण थइ जइश माटे जा दूर जतो रहे. पछी तेने तेवारें कह्युं के अरे मूर्ख बाहुबली साथे तुं शुं लडवा आव्यो तो नाहकनो मार्यो जइश माटे अमे तने वर्जीयें छैयें के तुं पाछो जा तेवारें ते जतो रह्यो एवीरीते बारवर्ष पर्यंत युद्ध चाल्युं, क्रोडो गमे माणसो मरी गया, लोहीनी नदीउ वहेवा लागी पण कोइ हार्यो नही तेवारें घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेंद्र अने चमरेंद्र ए बे इंद्र भरतनी पासे आवी कहेवा लाग्या के भगवान तो लोकोनुं पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करावो छो ए शुं? भरत कहेवा लाग्यो जे बाहुबली मारी आज्ञा मानतो नथी त्यां सुधी चक्र आयुधशाळामां आवतुं नथी तो हवे कहो हुं शुं करुं? ते सांभळी इंद्र बोल्या तमे बे भाइउ पोतपोतामां युद्ध करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो ए वात भरते कबुल करी पछी ते बेहु इंद्र बाहुबली पासें आव्या अने कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमां लोकोनो नाश थइ जाय छे ते करावो नही अने तमे बे भाइउ पोते पोतामां युद्ध करो बाहुबलीयें पण ते वात मान्य करी पछी इंद्रे मळीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाग्युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध,


चित्र ७४
इंद्र महाराज
भरत महाराज
बाहुबलि

चूलानी आणो माटे ए न होय तो सारुं एम चिंतवी तेना उपर चक्र मूक्युं ते चक्रने देखी
अनिलवेग नाठो परंतु ज्यां जाय त्यां चक्र पाछळनुं पाछळ चाल्युं आवे तेवारें अनिलवेग
वज्रपिंजर करीने छ महिना सुधी लवण समुद्रमां पेसी रह्यो पण चक्र मार्गे जमतुं रह्युं छ
महीना पछी समुद्रमांथी गाबडी बाहेर काढाडी तेवारें चक्रे ते गाबडीने कापी नाखी हवे
सूर्ययश बाहुबलीनुं कटक वर्जीने बाहुबल पासें आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने अस्त्र
मागे तेवारें बाहुबली हसीने बोल्यो अरे तुं इक्ष्वाकुवंशमां जन्यो शूर वीर तो पण हुं जो तु
जने एक मुठी मात्र मारीश तो पण तुं चूर्ण थइ जइश माटे जा दूर जतो रहे. पछी तेने देव
तायें कह्युं के अरे मूर्ख बाहुबली साथे तुं शुं लडवा आव्यो हो नाहकनो मार्यो जइश माटे
अमे तने वर्जीये छैये के तुं पाछो जा तेवारें ते जतो रह्यो एवीरीते बारवर्ष पर्यंत युद्ध चाल्युं,
क्रोडो गमे माणसो मरी गया, लोहीनी नदीओ वहेवा लागी पण कोइ हार्यो नही तेवारें
घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेंद्र अने चमरेंद्र ए बे इंद्र भरतनी पासे आवी कहेवा लाग्या
के भगवान तो लोकोनुं पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करावो छो ए शुं?
भरत कहेवा लाग्यो जे बाहुबली मारी आज्ञा मानतो नथी तिहां सुधी चक्र आयुधशालामां
आवतुं नथी तो हवे कहो हुं शुं करुं? ते सांभळी इंद्र बोल्या तमे बे भाइओ पोतपोतामां युद्ध
करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो ए वात भरते कबुल करी पछी ते बेहु इंद्र बाहु
बली पासें आव्या अने कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमां लोकोनो नाश थइ जाय
छे ते करावो नही अने तमे बे भाइओज पोत पोतामां युद्ध करो बाहुबलीयें पण ते वात
मान्य करी पछी इंद्रे कहीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाक्युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध,

अने पांचमुं दंमयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठेराव कस्यो अने वेहु इंद्रे वन्ने लस्करोने श्रीआ
दिनायजीनी डुवा आपीने दूर कस्या पठी पाणी ठटकावी, फूल विठावी, जूमि शुद्ध करीने
मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी करी वेहु नाइ सामासामा लडवाने आव्या ते युद्धने देवता आ
काशमां साक्षीधर रह्या थका देखे ठे हवे प्रथम जरत अने वाहुवली वे नाइ आंखो काहा
डीने एक वीजानी सन्मुख दोड्या, आंख मिटावे नही, मांहोमांहे एक वीजाने देखताज
रहे, महासूर वीर ठे तो पण क्षणमात्र रह्या तेवारें जेम सूर्यनी सांमों देखवाथी आंखमां
पाणी आवी जाय तेम जरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं ते जोइ देवता फूलोनो
वरसाद वरसावीने वोल्या के वाहुवली जीत्यो अने जरत हास्यो ए प्रथम युद्ध ॥ पठी जरतें
सिंहनाद कस्यो तेथी पर्वत कंपायमान थया अने वाहुवलीयें हाक मारी तेवारें ब्रह्मांम फू
टवा जेवो शब्द थयो तेथी जरतें पोताना कान ढांकी लीधा ते जोइ देवता वोल्या के वाहुवल
जीत्यो अने जरत हास्यो ए वीजुं युद्ध ॥ तेवार पठी वाहुयुद्धमां प्रथम जरत राजायें हाथ
लांवो कस्यो तेने वाहुवलीयें कमलनालनी पेरे वाल्यो अने वाहुवलीयें पोतानो वाहु लांवो
कस्यो तेने जरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नही हिंमोलानी पेरे जरत लटकी
रह्यो ते देखी देवो वोल्या एमां पण वाहुवली जीत्यो अने जरत हास्यो ए त्रीजुं युद्ध ॥ ते
पठी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या तेवारें प्रथम तो वन्ने नाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता
मल्या पठी जरते वाहुवलीने मुष्टी मारी तेथी वाहुवली थोडीशी वार आंखो मीची रह्यो
पठी जरतने दडानी पेरे उपाडीने आकाशमां नराली दीधो परंतु फरी अनुकंपा आणीने
पाठो पोताना हाथमां पकडी फरीने एक मुठी मारी तेथी जरत जमीनमां पेठी गयो ते

जोइ देवता बोल्या के एमां पण बाहुबली जीत्यो अने नरत हारी गयो ए चोथुं युद्ध ॥ पढी पांचमुं दंमयुद्ध करवा मांम्यो तिहां प्रथम तो नरत महाराजे लोहदंम लइने बाहुबलने मार्यो तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीनां घटनी पेरे चूरण थइ गयो अने बाहुबली गूमा सुधी जमीनमां पेसी गयो पढी जमीनमांथी बाहेर नीकलीने बाहुबलीयें लोहदंम मार्यो तेथी नरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने नरत महाराजनुं संपूर्ण सर्व शरीर धरतीमां पेसी गयुं ते जोइने देवता बोल्या जे आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो अने नरत हारी गयो ए पांचमुं युद्ध ॥ एम पांचे युद्ध नरत हारी गयो तेवारें चिंतातुर थयो थको विचार करवा लाग्यो जे महारुं राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्ति थयो ठे के शुं? एवुं चिंतवीने पढी चक्रने पोताना हाथमां लइ नमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो नंग करी बाहुबली उपर ते चक्र मूक्युं पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नही तेथी ते चक्र आवी बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाढो जइ नरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते नरतें जेवारें प्रतिज्ञानो नंग कर्यो तेवारें बाहुबलने अत्यंत क्रोध चडी गयो तेणे करी नरतनी उपर मुष्टी उपाडीने मारवा चाल्यो तेवारें देवता बोल्या विचार करो ते सांनली बाहुबलीयें जाण्युं जे धिक्कार ठे आ राजने के जेना लीधे महोटा नाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते नरतने मारवा माटे जे मुठी वाली हती ते महोटा पुरुषनी मुठी पाढी फरे नही माटे संवेग आव्यो तेवारें ते मुठीयें नरतने मारवुं मूकी दइने पोताना मस्तके लोच करी दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो तेवारें देवतायें फूलनो वर्षाद वरसाव्यो, नरतराजा विलाप करवा लाग्यो के महारा सर्व नाइ दीक्षा लइने जता रह्या पढी बाहुब

अने पांचमुं दंमयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठेराव कस्यो अने बेहु इंडे बन्ने लस्करोने श्रीआदिनाथजीनी डुवा आपीने दूर कस्या पठी पाणी ठटकावी, फूल विठावी, जूमि शुद्ध करीने मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी करी बेहु जाइ सामासामा लडवाने आव्या ते युद्धने देवता आकाशमां साक्षीधर रह्या थका देखे ठे हवे प्रथम जरत अने बाहुबली बे जाइ आंखो काहाडीने एक बीजानी सन्मुख जोड्या, आंख मिटावे नही, मांहोमांहे एक बीजाने देखताज रहे, महासूर वीर ठे तो पण क्षणमात्र रह्या तेवारें जेम सूर्यनी सामों देखवाथी आंखमां पाणी आवी जाय तेम जरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं ते जोइ देवता फूलोनो वरसाद वरसावीने बोल्या के बाहुबली जीत्यो अने जरत हास्यो ए प्रथम युद्ध ॥ पठी जरतें सिंहनाद कस्यो तेथी पर्वत कंपायमान थया अने बाहुबलीयें हाक मारी तेवारें ब्रह्मांम फुटया जेवो शब्द थयो तेथी जरतें पोताना कान ढांकी लीधा ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबल जीत्यो अने जरत हास्यो ए बीजुं युद्ध ॥ तेवार पठी बाहुयुद्धमां प्रथम जरत राजायें हाथ लांबो कस्यो तेने बाहुबलीयें कमलनालनी पेरे वाल्यो अने बाहुबलीयें पोतानो बाहु लांबो कस्यो तेने जरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नही हिंमोलानी पेरे जरत लटकी रह्यो ते देखी देवो बोल्या एमां पण बाहुबली जीत्यो अने जरत हास्यो ए त्रीजुं युद्ध ॥ ते पठी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या तेवारें प्रथम तो बन्ने जाइ मल्लोनी पेठे शुजास्फोट करता मल्या पठी जरते बाहुबलीने मुष्टी मारी तेथी बाहुबली थोडीशी वार आंखो मीची रह्यो पठी जरतने दडानी पेरे उपाडीने आकाशमां उठाली दीधो परंतु फरी अनुकंपा आणीने [illegible] पोताना हाथमां पकडी करीने एक मुठी मारी तेथी [illegible]

जोइ देवता बोल्या के एमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए चोथुं युद्ध ॥ पछी पांचमुं दंडयुद्ध करवा मांड्यो तिहां प्रथम तो भरत महाराजे लोहदंड लइने बाहुबलने मार्यो तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीनां घडनी पेरे चूरण थइ गयो अने बाहुबली घूंटण सुधी जमीनमां पेसी गयो पछी जमीनमांथी बाहेर नीकलीने बाहुबलीयें लोहदंड मार्यो तेथी भरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने भरत महाराजनुं संपूर्ण सर्व शरीर धरतीमां पेसी गयुं ते जोइने देवता बोल्या जे आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए पांचमुं युद्ध ॥ एम पांचे युद्ध भरत हारी गयो तेवारें चिंतातुर थयो थको विचार करवा लाग्यो जे महारुं राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्त्ति थयो छे के शुं? एवुं चिंतवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ भमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो भंग करी बाहुबली उपर ते चक्र मूक्युं पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नहीं तेथी ते चक्र आवी बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ भरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते भरतें जेवारें प्रतिज्ञानो भंग कर्यो तेवारें बाहुबलने अत्यंत क्रोध चढी गयो तेणे करी भरतनी उपर मुष्टी उपाडीने मारवा चाल्यो तेवारें देवता बोल्या विचार करो ते सांभली बाहुबलीयें जाण्युं जे धिक्कार छे आ राज्यने के जेना लीधे महोटा भाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते भरतने मारवा माटे जे मुठी वाली हती ते महोटा पुरुषनी मुठी पाछी फरे नहीं माटे संवेग आव्यो तेवारें ते मुठीयें भरतने मारवुं मूकी दइने पोताना मस्तके लोच करी दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो तेवारें देवतायें फूलनो वरसाद वरसाव्यो, भरतराजा विलाप करवा लाग्यो के महारा सर्व भाइओ दीक्षा लइने जता रह्या पछी बाहुब

अने पांचमुं दंमयुद्ध ए पांच युद्ध करवाना ठराव कर्या अने वेहु इंद्रे वन्ने लस्करोने श्रीआ
दिनाथजीनी डुवा आपीने दूर कर्या पछी पाणी छटकावी, फूल विछावी, जूमि शुद्ध करीने
मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी करी वेहु जाइ सामासामा लडवाने आव्या ते युद्धने देवता आ
काशमां साक्षीधर रह्या थका देखे छे हवे प्रथम जरत अने वाहुवली वे जाइ आंखो काहा
डीने एक वीजानी सन्मुख दोड्या, आंख मिटावे नही, मांहोमांहे एक वीजाने देखताज
रहे, महासूर वीर छे तो पण क्षणमात्र रह्या तेवारें जेम सूर्यनी सांमों देखवाथी आंखमां
पाणी आवी जाय तेम जरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं ते जोइ देवता फूलोनो
वरसाद वरसावीने वोल्या के वाहुवली जीत्यो अने जरत हार्यो ए प्रथम युद्ध ॥ पछी जरतें
सिंहनाद कर्यो तेथी पर्वत कंपायमान थया अने वाहुवलीयें हाक मारी तेवारें ब्रह्मांम फू
टवा जेवो शब्द थयो तेथी जरतें पोताना कान ढांकी लीधा ते जोइ देवता वोल्या के वाहुवल
जीत्यो अने जरत हार्यो ए वीजुं युद्ध ॥ तेवार पछी वाहुयुद्धमां प्रथम जरत राजायें हाथ
लांवो कर्यो तेने वाहुवलीयें कमलनालनी पेरे वाल्यो अने वाहुवलीयें पोतानो वाह लांवो
कर्यो तेने जरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नही हिंमोलानी पेरे जरत लटकी
रह्यो ते देखी देवो वोल्या एमां पण वाहुवली जीत्यो अने जरत हार्यो ए त्रीजुं युद्ध ॥ ते
मल्या पछी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या तेवारें प्रथम तो वन्ने जाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता
पछी जरते वाहुवलीने मुष्टी मारी तेथी वाहुवली थोडीशी वार आवी मोची रह्यो
पछी जरतने दडानी पेरे उपाडीने आकाशमां उछाली दीधो परंतु फरी अनुकंपा आणीने
पाछो पोताना हाथमां पकडी करीने एक मुष्टी मारी तेथी [illegible]

जोइ देवता बोल्या के एमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए चोथुं युद्ध ॥ पछी पांचमुं दंडयुद्ध करवा मांड्युं तिहां प्रथम तो भरत महाराजे लोहदंड लइने बाहुबलने मार्यो तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीनां घडानी पेरे चूरण थइ गयो अने बाहुबली गुढा सुधी जमीनमां पेसी गयो पछी जमीनमांथी बाहेर नीकलीने बाहुबलीयें लोहदंड मार्यो तेथी भरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने भरत महाराजनुं संपूर्ण सर्व शरीर धरतीमां पेसी गयुं ते जोइने देवता बोल्या जे आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए पांचमुं युद्ध ॥ एम पांचे युद्ध भरत हारी गयो तेवारें चिंतातुर थयो थको विचार करवा लाग्यो जे महारुं राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्ति थयो छे के शुं? एवुं चिंतवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ भमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो भंग करी बाहुबली उपर ते चक्र मूक्युं पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नहीं तेथी ते चक्र आवी बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ भरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते भरतें जेवारें प्रतिज्ञानो भंग कर्यो तेवारें बाहुबलने अत्यंत क्रोध चढी गयो तेणे करी भरतनी उपर मुठी उपाडीने मारवा चाल्यो तेवारें देवता बोल्या विचार करो ते सांभली बाहुबलीयें जाण्युं जे धिक्कार छे आ राज्यने के जेना लीधे महोटा भाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते भरतने मारवा माटे जे मुठी वाली हती ते महोटा पुरुषनी वाली पाछी फरे नहीं माटे संवेग आव्यो तेवारें ते मुठीयें भरतने मारवुं मूकी दइने पोताना [illegible] लोच करी दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो तेवारें देवतायें फूलनो वरसाद वरसाव्यो, भर[illegible] विचार करवा लाग्यो के महारा सर्व भाइओ दीक्षा लइने जता रह्या पछी बाहुब

जीना पुत्र सोमयशने तिक्ष्शिला नगरीनुं राज्य आपी नरत राजा अयोध्या नगरीमां आव्या हवे आगल जतां बाहुबली साधुयें विचार्युं जे महारा न्हाना अघाणु नाइर्उए प्रथम श्री रुषन देवजीनी पासेथी दीक्षा लीधेली ठे ते केवली थया ठे माटे हमणा हुं नगवानना समवसरणमां जईश तो न्हाना नाइर्उने वंदना करवी पडशे माटे हुं अहींआंज काउसग्गें रही केवलज्ञान प्राप्त करीने पठी प्रजुपासें जइश एवुं चिंतवी मनमां अनिमान धारण करीने तिहांज काउसग्गें रह्या थका एक वर्ष वीती गयुं मस्तक उपर वेलीउ वींटाइ गइ तेने प्रतिबोधवा माटे श्रीरुषनदेव स्वामीयें ब्राह्मी अने सुंदरी ए बे साध्वीउने मोकली ते तिहां आवीने बाहुबलीजीने कहेवा लागीउ के हे वीरा हे नाइ तमे गज उपरथी नीचे उतरो हस्ती उपर आरुढ थयाथी केवलज्ञान उपजे नही एटलुं तेमनुं बोलवुं सांनलतांज जाणी गयो के आ साध्वीयो केवारें जुतुं बोले नही माटे हाथीतो महारी पासे नथी परंतु अहंकार रूप हाथीनी उपर हुं चडेलो छुं एम विचारी माननो त्याग करी तिहांथी पग उपाड्युं के तरतज केवलज्ञान पण उपन्युं अने प्रजुना समवसरणमां जइ केवलीनी परपदामां विराज्यो ए नरत बाहुबलनो संबंध कह्यो ॥ ॥ हवे एक दिवसें नगवान अष्टापद पर्वत उपर समोसर्या तेवारें नरतमहाराजायें विचार्युं जे बीजुं तो महाराथी कांइ थतुं नथी पण आ सर्व साधुउने आहार वहोरावुं तो लान पामुं एवुं जाणी पांचसें गाम्मा सुखडीना नरी लाव्यो अने नगवानने कहेवा लाग्यो स्वामीजी आजना दिवसे आ सर्व साधुउने आहार कराववानुं हुकम महारे घेर थइ जाय तो घणोज रुडुं थाय तेवारें नगवानें कह्युं आधाकर्मिक राज्यपिंम साधु उने लेवुं कल्पे नही, वली सन्मुख आहार लइ आव्यो ते माटे साधुयें लीधो नही एवं जोई


(चित्र ७५)

जरत राजायें जाएयुं जे हुंतो सर्व प्रकारे जक्तिरहित थयो एम शोच करवा लाग्यो ते जोइ
इंद्रमहाराजे जगवानने पूछयुं के हे प्रनु! अवग्रह केटला प्रकारना ने? जगवान बोल्या पांच
अवग्रह ने तेमां एक इंद्रनो अवग्रह, बीजो राजेंद्रनो अवग्रह, त्रीजो गृहपतिनो अवग्रह,
चोथो सागारिकनो अवग्रह अने पांचमो साधर्मिकनो अवग्रह. ए पांच अवग्रह जाणवा. ते
सांजली इंद्र बोल्या हुं तो आपना सर्व साधुउने महारा सर्व क्षेत्रमां सुखें विचरवानी आज्ञा
आपुं हुं तेवारें जरत महाराज बोल्या के महारा ज खंम पृथ्वीमां हुं पण आपना सर्व साधु
उने विचरवानी आज्ञा आपुं हुं एम कहेवाथी जरतने घणो संतोष थयो वली जरतें इंद्रने
पूछयुं के आ आहारनुं हवे शुं करवुं तेवारें इंद्रे कह्युं ताहाराथी अधिक गुणवान होय तेने
ए आहार जमाडो पही जरतें पण ते आहार श्रावकोने जमाड्यो त्यांथी ब्रह्मजोजन चाल्युं
थयुं ॥ हवे जरतराजा सदा सर्वदा श्रावकोने जमाडे ने. केटला एक काल पही जेवारें घणा
जमनारा थया तेवारें परीक्षा करीने सर्वने सेनापतीनां कांगणी रत्नी जनोइ आपी तथा
देव, गुरु अने धर्म रूप त्रण तत्वसंबंधी त्रण रेखा प्रत्येक श्रावकने करी. त्यांथी जनोइ
आपवानी चाल पडी इहां श्रीऋषनदेवस्तुतिना चार वेद थया ॥ एकदा जरत राजायें इंद्रमहा
राजने पूछयुं के तमारुं खरेखरुं रूप केहेवुं ने? तेवारें इंद्रें एक अंगुली बतावी ते महाज्वाला
मालाकुल देखीने जरत चमत्कार पाम्यो. त्यांथी वर्षांवर्ष इंद्रमहोत्सव चालु थयो ॥ हवे
एक दिवसे जगवंत विहार करतां विनीतायें आव्या. जरत वांदवा आव्यो, प्रजुयें देशना
आपी संसारनुं अनित्यपणुं देखाडयुं, जीव कर्मने जारे करी तुंबडाने दृष्टांते संसारमां बूडे
ने, जेम तुंबडाने माटी चोपडी पाणीमां मूकीयें तो हेतुं बेसे, तेम आठ कर्म करी जीव

जारी थयो थको देखो थेसे ठे, एवी जगवाननी वाणी सांजली जरत मनमां वैराग्य पाम्यो, ज्ञान दशामां लय लीन थयो. एम अनुक्रमे एकदा जरतराजा आरीशा जवनमां वेठा थका अनित्य जावना जावतां केवल ज्ञान पामी, मोक्षे पहोता ठे. पठी तेमने पाटे आदित्ययशा राजा थया तेणे सोनानी जनोइउं करीने एमज श्रावक जमाड्या, तेने पाटे महायशा राजा थया तेणे रूपानी जनोइउं करीने श्रावक जमाड्या. एम आठ पाट लगें श्रावक जमाड्या ठे. तेमां केटलाएक राजायें सूत्रनी जनोइ करी जमाड्या ठे, पठी ते जनोइना पहेरनार सर्व ब्राह्मण कहेवाणा. जरतने पाटे आदित्ययशा, तेने पाटे महायशा, तेने पाटे अतिबल, तेने पाटे बलजड, तेने पाटे बलवीर्य, तेने पाटे कीर्तिवीर्य, तेने पाटे जलवीर्य, तेने पाटे दंडवीर्य, ए आठे राजायें जगवंतनो मुकुट पहेर्यो अने ए आठे राजा आरीशा जुवनमां केवली थइ मोक्षे गया ठे. जगवान श्रीऋषन देवजी एक लाख पूर्व पर्यंत विचरीने घणा जीवोने प्रतिबोध्या ॥ हवे श्रीऋषनदेव स्वामीना परिवारनुं वर्णन सूत्रकार करे ठे ॥ श्रीऋषननाथजीने ऋषनसेन आदे देइने चोराशी गणधर थया, चोराशी गञ्ज थया ॥ २१४ ॥ ॥ तथा ऋषनसेन प्रमुख चोराशी हजार साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१५ ॥ ॥ तथा ब्राह्मी अने सुंदरी आदे देइने त्रण लाख साधवीउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१६ ॥ ॥ तथा श्रेयांस आदे देइने त्रण लाखने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१७ ॥ ॥ तथा सुनद्रा आदे देइने पांच लाखने चोपन हजार श्राविकाउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २१८ ॥ तथा चार हजार सातशेने पचास चौद पूर्वधर ते केवली नही पण केवली सरखा साधुउंनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ [illegible]

॥ २२० ॥ ॥ तथा वीश
संपदा थइ तथा वीश हजार केवल ज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२१ ॥ ॥ तथा बार हजार
हजारने बशो वैक्रिय लब्धिवंत साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२१ ॥ ॥ तथा बार हजार
बशोने पचाश अढीद्वीपमां संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताजीवोना मनना परिणामने जाणे एवा विपुल
मति, मनःपर्यवज्ञानना धरनार साधुउनी उत्कृष्टी संपदा थइ ॥ २२२ ॥ ॥ तथा तेट
लाज वादी जाणवा. एटले बार हजार बशोने पचाश वादी साधुउनी संपदा थइ ॥ २२३ ॥
तथा वीश हजार साधु सिद्ध थया. चालीश हजार साध्वी सिद्ध थइ ॥ २२४ ॥ ॥ श्रीऋष
जनाथ अरिहंत कोशलिकने बावीश हजारने नवशो साधुउ अनुत्तर विमाने गया, एकाव
तारी थया ॥ २२५ ॥ ॥ श्रीऋषजदेव अरिहंतने बे प्रकारे अंतगड जूमि थइ तिहां यावत्
असंख्याता पाटलगे केवलज्ञान चाल्यो, मोक्षमार्ग वह्यो; ते युगांतकृत जूमि कहेवाय अने जग
वानने केवलज्ञान उपन्या पछी अंतर मुहूर्त काल वीते कोइ मोक्ष गयो एटले अंतर मुहूर्त
पछी मरुदेवी माता मोक्ष गया ते पर्यायांतकृत जूमि कहेवाय ॥२२६॥ ॥ ते कालनेविषे,
ते समयनेविषे, श्रीऋषजनाथ अरिहंत वीश लाख पूर्व सुधी कुमार पणे रह्या अने त्रेशठ
लाख पूर्व राज्यावस्थामां रह्या एवी रीतें त्र्यासी लाख पूर्व घरवासे रह्या, सीतेर लाख क्रोडवर्षनी
उपर वली बीजा छपन्न हजार क्रोड वर्ष वीते तेवारें एक पूर्व थाय. एवा त्र्यासी लाख पूर्व घर
वासें रहीने पछी एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा एक हजार वर्ष उणा एक लाख पूर्व के
वल पर्याय पालीने संपूर्ण एक लाख पूर्व साधुपणुं पालीने जवोपग्राही चार कर्मनो क्षय करी
आ अवसर्पिणीनो सुखमदुःखमा नामा त्रीजो आरो ते घणो वीती गयो बाकी त्रणवर्ष ने साडा
आठ महिना शेष रह्या तेवारें सीतकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं पखवाडियुं, माघवदि ॥

॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ए०० ॥ तेरसने दिवसें अष्टापद पर्वतनी उपर दशहजार साधुउंनी सायें चौद जक्त एटले ठ उपवास पाणी रहित कीधे थके, अजीचनक्षत्रें चंद्रमानो योग आवे थके, प्रथम पहोरनी पठी बपोरनी वखते, पालखी वालेला आसने बेठा थकां, कालगत थया यावत् सर्व दुःख थकी रहित थया ॥ २२७ ॥ ॥ ते अवसरमां शक्रेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं तेवारें आंखोमां आंशुं जराणा एवो थको इहां आव्यो, आवीने जगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपी, नमस्कार करी, योग्यस्थानके बेठो, बीजा पण सर्व इंद्रो आवीने बेठा पठी शक्रेंद्रें देवोने मोकली नंदनवनमांथी चंदन मगाव्युं तेनी त्रण चय बनावी तेमां एक जगवानना शरीरने माटे, बीजी गणधरोना शरीरने माटे अने त्रीजी सर्व साधुउंना शरीरने माटे बनावी. वली आजियोगिक देवोनी पासे खीरसमुद्रनुं पाणी मगावी शक्रेंद्रें जगवानना शरीरने स्नान कराव्युं, सर्व वस्त्र घरेणा प्रमुख पहेराव्यां. पठी त्रण पालखी करी. तिहां एक पालखीमां जगवाननुं शरीर, एकमां गणधरोनुं शरीर अने एकमां मुनिउंनां शरीरने मूकी शुद्ध जूमियें लइ जइने चितानी पासे पालखीउं राखी. तेमां शक्रेंद्रें जगवानना शरीरने पालखीमांथी लइने चितामां मूक्युं. तथा अन्य देवोये बीजा गणधरादिकना शरीरने पालखीमांथी उतारीनें चितामां मूक्या. तथा शक्रेंद्रना हुकमथी अग्निकुमार देवो मनमांहे उदास थया थका चितामां अग्नि सलगाववा लाग्या, तथा वायुकुमार देवोपण उदास थया थका वायु चलाववा लाग्या, वली बीजा देवो चितामां घृत प्रमुखने सींचवा लाग्या. पठी जेवारें मात्र हाडकाज शेष रहे अने बीजो शरीरनो जाग सर्व बलीने जस्म थइ जाय तेवारें मेघकुमार देवो वर्षाद वरसावीने चिताने बुजावी नाखे, पठी शक्रेंद्र जगवाननी उपरली जमणी बाजुनी दाढा


चित्र७६
अष्टापद पर्वत.

लीये अने ईशानेंद्र उपरली माथा बाजुनी डाढा लीये तथा चमरेंद्र नीचली जमणी बाजुनी डाढा लीये अने बलेंद्र नीचेनी डाबी बाजुनी डाढा लीये तथा बीजा देवता जे छे तेमांथी केटलाएकतो जिनभक्तिना वश थकी, केटलाएकतो आपणु आचार छे एवुं मानीने, केटलाएक तो धर्ममानीने परमेश्वरना अंगोपांगना सर्व हाडका लइ लीये. पछी शक्रेंद्र जे स्थानके डाग देवाणो होय ते स्थानके रत्नोनां त्रण पीठ बनावे एटलुं करीने सर्व देवो नंदीश्वरद्वीपने विषे जइ अठाइ महोत्सव करीने पोतपोताने स्थानकें जाय. तिहां जइने दाढा प्रमुख जे लइ आव्या होय ते पोतपोतानी सभानेविषे वज्रमयी माणवामां जइ राखे, तेने गंधमाला दिकथी पूजे, धूप दीये, ए प्रकारनो निर्वाण महोत्सव सर्व तीर्थंकरोनो जाणी लेवो ॥ इति श्रीऋषभनिर्वाणमहोत्सव ॥ ॥ श्रीऋषभदेव स्वामी मोक्ष गया पछी पचाश लाख कोड सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ मोक्ष गया, श्रीऋषभदेव अरिहंत मोक्ष गया पछी त्रण वर्षने साडा आठ महिना त्रीजो आरो शेष रह्यो हतो ते पण वीती गयो. पछी त्रणवर्ष ने साडाआठ महिना तथा उपर बेतालीश हजार वर्ष एटले वर्षे कणा एक कोडाकोडी सागरोपम गया नंतर श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया एटले ते वखतें त्रणवर्षने साडाआठ महिना तो चोथा आराना बाकी रह्या हता अने पांचमां आराना एकवीश हजार वर्ष तथा छठा आराना एकवीश हजार वर्ष एम बे आराना मली बेंतालीश हजार वर्ष ते एक कोडाकोडी सागरोपममां उंणा थयां तेमाटे बेतालीश हजारने त्रणवर्ष उपर साडाआठ महिने न्यून एवो एक कोडाकोडी सागरोपम काल चोथा आरानुं गये थके महावीर मोक्ष पोहोता अने ते पछी नवसेंने एंसी वर्ष गया तेवारें आ पुस्तक देवर्द्धीगणिक्षमाश्रमणे लख्यो अने नवसेंने त्र्याणु वर्षे संघमां वंचाणुं

एवुं क्यांएक लखे छे ॥२१७॥ ॥ इहां ॥ पुरिमचरिमाणकप्पो० ॥ ए गाथा मंगलिकने अर्थे कहेवी. इति श्रीकल्पसूत्रे बालसुबोधिन्यां अष्टमं व्याख्यानम् कृतं राजेंद्रसूरिणा ॥ ७ ॥ ॥ अथ श्रीस्थविरावली प्रारंभ ॥ ते कालमां ते समयमां भगवान श्रीमहावीरस्वामीना नवगछ अने अगीआर गणधर थया ॥ २४ ॥ ॥ इहां शिष्य प्रश्न करे छे के हे गुरु महाराज! मर्यादातो एवी छे के जेटला गणधर होय तेटलाज गछ पण होवा जोइयें परंतु आपतो नव गछ अने अगीआर गणधर फरमावो छो तेनुं कारण शुं एवो शिष्यनो प्रश्न सांभलीने ॥२५॥ गुरु कहे छे के श्रीमहावीरस्वामीना महोटा शिष्य इंद्रभूति नामा अणगार थया ते गौतमगोत्रीया हता अने पांचसें साधुउने वाचना आपता माटे तेनो एक गछ ॥ एटले जेनी वाचना एक होय तेने गछ कहीयें इहां कोइ शंका करे के वाचनामां फेर होय तो शुं केवलीना कहेवामां फेर फार छे? तेने उत्तर कहीये छैयें. जे केवलीना कहेवामां फेर नथी परंतु केवलीना वचन सांभलीने ते वचनोनां गणधरो सूत्रो बांधे छे गुंथे छे तेनी रचनाना शब्दोमां फेर छे पण वातोमां फेर नथी मात्र शब्द अनेक प्रकारना छे तेमां रचना करती वखते एक गणधर एक जातिना शब्दथी गुंथे छे तो वली बीजो गणधर बीजी जातना शब्दोथी गुंथे छे. तेने लीधे रचनाना शब्दोमां फेर फार होय छे. इति प्रथम गछ ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजो वचलो भाइ शिष्य अग्निभूति अणगार छे तेनुं गौतम गोत्र छे अने पांचसे साधुउने वाचना आपे छे ते बीजो गछ ॥२॥ ॥ त्रीजो न्हानो भाइ वायुभूति नामे शिष्य छे तेपण गौतम गोत्रनो छे ते पांचसे साधुउने वाचना आपे छे ए त्रीजो गछ ॥ ३ ॥ ॥ ए त्रणे गृहस्थपणामां सगा भाइउ छे. चोथा थविर आर्यव्यक्त नामा

आपे छे ए चोथो गछ ॥ ४ ॥ ॥ पांचमा थविर आर्यसुधर्म नामा अग्निवेसायन गोत्रीया छे ते पांचसे साधुउने वाचना आपे छे ए पांचमो गछ ॥ ५ ॥ ॥ छठा थविर मंडित पुत्र वासिष्ट गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउने वाचना आपे छे ए छठो गछ ॥६॥ ॥ सातमा थविर मोर्यपुत्र कास्यप गोत्रीया छे ते साडा त्रणसें साधुउने वाचना आपे छे ए सातमो गछ ॥ ७ ॥ ॥ आठमा थविर अकंपित गौतम गोत्रीया छे तथा नवमा थविर अचलभ्राता हारितायन गोत्रीया छे ए बेहु थविर त्रण त्रणसो शिष्योने वाचना आपे छे ए बेहु गणध रोनी वाचना एक छे तेमाटे एनो एक गछ गणीयें. ए बन्ने गणधर नाइउ छे परंतु तेनी माता एक छे अने पिता बे छे तेथी एमनां गोत्र जुदां जुदां कह्यां छे. आगल ब्राह्मणोमां बीजो भरतार करवानी चाल हती माटे बे भरतार कथा कह्या छे. ए आठमो गछ ॥ ८ ॥ दशमा थविर मेतार्य अने अगीआरमा थविर प्रभास. ए बन्ने कोंडिन्य गोत्रीया भाइ छे ते त्रण त्रणसे साधुउने वाचना आपे छे. ए बेहुनी वाचना एकज छे माटे एकज गछ कहेवाय ए नवमो गछ. ए रीते हे शिष्य! अमे श्रीमहावीरना अगीआर गणधरना नव गछ कहीयें छैयें ए अगीआरे गणधर द्वादशांगीना धरवावाला, चौद पूर्वधारी, संपूर्ण आचार्य रत्नकरं डीयाना धारक एटले द्वादश अंगरूप रत्नो करंडीयो तेना धरवावाला, ए अगीयारे गण धर राजग्रही नगरीमां एक मासी अनशन पाणी रहित करीने कालगत थया, मोक्ष पाम्या, सर्व दुःखथी रहित थया तेमां नव गणधर तो श्रीमहावीर स्वामी विद्यमान छतांज मोक्ष गया अने थविर इंद्रभूति तथा थविर आर्यसुधर्म ए बे गणधरोये तो श्रीमहावीर भगवान मोक्ष गया पछी काल कर्यो छे, मोक्षे गया छे तथा बीजा सर्व गणधरोना तो शिष्योपण

काल करी गया हता कोइ पण शेष रह्यो हतो नही माटे जे कांइ हमणा वर्तमान समये साधुउ विचरे ठे ते सर्व सुधर्म गछना ठे बाकी कोइ गछना नथी बीजा सर्व गणधरोना शिष्यो जे हता ते विछेद गया ठे. तेथी एक सुधर्म गछज रह्यो ॥ २६ ॥ ॥ हवे पट्टावली लखीयें ठैयें. श्रीमहावीर स्वामी काश्यप गोत्री हता तेमना पाटे श्रीसुधर्म स्वामी पांचमा गणधर थो तेमनुं अग्निवेश्यायन गोत्र हतुं तेनो संबंध आ प्रमाणे ठे कुल्लाग सन्निवेस नामा नगरमां धम्मिल नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी नदिला नामे जायांना पुत्र सुधर्म नामे थया ते चौद वियाना निधान, चार वेदना पारंगामी, पच्चाश वर्ष घरवासे रह्या पठी महावीरनी पासेथी दीक्षा लीधी, पांचमा गणधर थया, त्रीश वर्ष पर्यंत तो महावीरस्वामीना चरणकमल सेवता रह्या, अने श्रीमहावीर निर्वाण पाम्या पठी बार वर्ष पर्यंत ठद्मस्थपणे विचर्या तथा आठ वर्ष केवली पणे विचर्या. सर्व मली एकशो वर्षनुं आयुष्य पालीने मोक्ष गया ॥ १ ॥ ॥ तेवार पठी श्रीसुधर्म स्वामीना पाट उपर श्रीजंबुस्वामी थो तेमनुं काश्यपगोत्र हतुं तेनो संबंध आ रीते ठे. के एकदा श्रीमहावीरस्वामी राजगृही नगरीयें समोसर्या तिहां एक महोटो तेजवंत देवता पोतानी चार अग्रमहीषीयो सहित तथा बीजा पण घणा देव अने देवीयोना परिवारे परवर्यो थको जगवानने वांदवा आव्यो तेवारें श्रेणिक राजायें जगवानने पुठयुं जे हे स्वामी महाराज आ देवतानी बीजा घणा देवोथी अधिक कांति केम थयेली ठे तेवारें जगवाने कह्युं के आ देवतायें पूर्व जवने विषे दश वर्ष पर्यंत निरंतर तप कर्युं ठे तेना प्रजावथी ए पांचमा ब्रह्मदेव लोकनेविषे तिर्यक् जृंजकनी जातिमां महर्द्धिक देवता थयो ठे वली पण ए देवता [illegible]

ऋषभदत्त शेठनी धारणी नामे नारीनी कूखमां पुत्रपणे आवीने अवतरश पछी पुत्र जन्म महोत्सव करीने एनी माता स्वप्नमां जंबुवृक्ष देखशे तेथी एनुं जंबु एवुं नाम आपशे. अनुक्रमे युवान अवस्था पामशे तेवारें सुधर्म गणधरनी पासेथी धर्मदेशना सांभळीने वैराग्य पामशे. तेवारें कहेशे के हुं चारित्र लइश पण मह्मारा मातापिताने पूछी आवुं एम कही पाछो घर तरफ जाय छे एटले मार्गमां आवतां जंत्रथी नाखेलो पत्थर, पोतानी पासेथी निकळ्यो देखीने विचारवा लागशे के हमणा जो मने आ तोपनो गोळो लागी जात तो हुं अव्रतिपणामां म रण पामत, एवुं जाणी सुधर्मनी पासे पाछो आवीने एकवारतो समकेत मूळ जे बार व्रत ने ते बारे व्रत लेशे तेमां चोथा व्रतमां एटली मर्यादा राखशे के, कदापि मातापिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेने परणुं पण ते स्त्रीयोनी साथें जोग जोगवुं नही एवो त्याग करी फरी घरें आवी माता पिताने कहेशे के मने आज्ञा आपो हुं श्रीसुधर्म स्वामी पासेथी दीक्षा लेउं? माता पिता कहेशे के हे पुत्र! दीक्षा पाळवी घणी दुष्कर छे. एवी रीते घणो घणो समजावशे तोपण ए मानशे नही. तेवारें मातापिता कहेशे के हे पुत्र! आठ कुमारीयो साथे ताह्मारुं सगपण करेलुं छे माटे तेने परणीने पछी दीक्षा लेजे ते सांभळी जंबुकुमर मौनपणुं धारण करी रहेशे मातापिता आठ शेठीयाने कहेशे के अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो छे माटे तमारे दीकरीयो परणाववानी मरजी होय तो नही परणावो पण ते कन्याउनो त्याग करीने जो दीक्षा लेशे तो अमारो दोष कहाडशो नही ते सांभळी सर्व शेठीया कहेवा लागशे के अमे नही परणावीशुं. पण ते शेठियाउनी दीक रीयो कहेशे जे अमेतो जंबुकुमरनेंज परणीशुं बीजाने परणवानो त्याग छे. तेवारें शेठिया

पोतानी पुत्रीयोने कहेशे के एतो दीक्षा लेशे. तोपण दीकरीयो कहेशे के ए दीक्षा लीये तो भले त्यो पण अमेतो एनेज परणीशुं. पठी तें एक रात्रीमां आठे कन्या परणशे अने रात्रियें शय्या उपर बेसीने सर्व कन्याउने कहेशे के हुंतो दीक्षा लइश केमके आ संसार सर्व अनित्य ठे, कोइ कोइनें साथें आवनार नथी, तेवारें स्त्रीयो कहेशे के हे स्वामी! तमे हमणा दीक्षा लियो नही, हमणातो जे संसारनुं सुख मल्युं ठे ते सारी रीतें जोगवीने पठी दीक्षा लेजो, नहीतो करसणीना न्यायें पश्चात्ताप करशो. जेम कोइ मारवाड देशनो करसणी पोताने घेर गहुं वावीने पठी मेवाडमां पोतानें सासरे गयो तिहां तेनी सासुयें सारा रोटला करीने थालमां मूक्या. उपरथी काकब मूकी ते काकब करसणीने घणी सारी स्वादिष्ट लागी. पठी जेवारें शालाने पुठ्युं के आ काकब तमोने किहांथी आवी? तेवारें शालायें कह्युं के ए अमारा घरमां नीपजे ठे वनेवीयें पुठ्युं केवी रीते नीपजे ठे! तेवारें शालाये शेलडी वाववानो विधि देखाड्यो. पठी करसणीयें जाण्युं जे महारे घेर पण ए हुं वावीश एम निर्धार करी घेर आवीने प्रथम जे गहुंनुं खेत्र वाव्युं हतुं तेने उखेडी नाखवा लाग्यो. तेवारें लोकोये कह्युं के आ तुं शुं करे ठे? तेणे कह्युं के हुं एमां शेलडी वावीश. लोको कहेवा लाग्या के आ देशमां पाणी नथी तेमाटे शेलडी थशे नही, तेम ठतां जो तने शेलडीज वाववानी इछा होय तो एकवार आ गहुंनी करेली खेती ठे ते कपावी ले पठी शेलडी बनायजे. एवुं लोकोनुं वचन तेणे मान्युं नही अने शेलडी वावी. ते थोडी उगी एटलामां कूवानुं पाणी खुटी पड्युं तेथी जे उगेली शेलडी हती तेपण शुकाइ गइ. तेवारें पश्चात्ताप करवा लाग्यो तेम तमे पण ठतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी वांछना करो तो तो पठी पस्तावशो [illegible]

जंबू कुमर कहेछे के हुं पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप नही करीश परंतु जो नही समजशो तो त
मेज पसतावो करशो हुंतो ललितांगकुमरनी पेरे तमारा फंदमां नही पडुं. तेनी कथा कहुंछुं
ते सांभलो. एक नगरमां एक शेठनो पुत्र ललितांगकुमर एवे नामे महारूपवंत हतो तेने
एक दिवसें ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी ये तेणे दीठो. तेवारें एकांतें बोलावीने
तेनी साथे संसारसंबंधि भोग विलास करवा लागी एटलामां राजा पण तिहां आव्यो. तेवारें
भयभ्रांत थइने राणीयें ते ललितांगकुमरने खालमां नाखी दीधो अने विचार्युंजे पछी का
हाढी लइश हवे राणीतो राजानी साथे रमवा लागी गइ. अने ललितांग खालमां भूखे मरतो
कोइ अन्य आवीने एलवाडो नाखे ते खाय अने एवनुं पाणी पडे ते पीये पछी गीतें चार म
हिना पर्यंत ते खालमां पडी रह्यो अने ललितांगना मा बापे घणोये जोयो पण लाध्यो नही.
तेथी शोक करवा वेठां एटलामां वर्षाद आव्यो तेथी खालमां पाणी भराणुं ते पाणी काढा
ढवा सारुं खाल खोली ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण तणातो तणातो नगरनी म
होटी खालमां जइ पड्यो. तेने लोकोये देखीने तेना मातापिताने जइ कह्युं. मातापिता जइ खाल
मांथी काढाढी घेर लइ आव्या. तिहां मुर्छा खाइने पडी रह्यो, शरीर पीलुं पडी गयुं, हाडका
नीकली आव्या, माता पिताये घणा प्रकारना तेलादिक मसली जागतो कर्यो. तेवारें कांइक
सावचेत थयो पछी ओषधोपचार करतां करतां घणा दिवसे तेनुं शरीर सारुं थयुं. तेवारें
वली कपडा प्रमुख पहेरीने बजारमां फरवा निकल्यो तेने राणीयें देखीने बोलाव्यो. ते बोल्यो
हवे हुं तमारा फंदमां पडुं नही. इति ललितांग कथा ॥ एवी रीते आठे स्त्रीयो जुदी जुदी
आठ कथाउ संसारना सुखनो त्याग न करवो ते आश्रयी जंबु कुमरने कह्युं अने जंबु कुमर

पछी पोतानी अवस्था प्रमाणनारी जुदी जुदी आठ कथाओ आठे स्त्रीओने कहेशे. तेवारें स्त्रीओ प्रतिबोध पामशे एवामां एक प्रभवो चोर पांचशे चोरने साथे लइने जंबु कुमरना घरमां आवशे. ते सर्वेने विद्याना बलथी अवस्वापिनी निद्रा आवशे तेथी सर्वेने निद्रा आवी जशे परंतु जंबुकुमरने निद्रा आवशे नही. पछी तालो उघाडवानी विद्याथी तंमार खोलीने नवाणुं क्रोड सोनामोरोनी गांठडीओ बांधी तेने लइने चालवा मांडशे. एटलामां जंबु कुमरने यद्यपि द्रव्य उपर मूर्छा तो बिलकुल नथी तथापि एवो विचार आवशे के म्हारे तो प्रभाते दीक्षा लेवी छे अने आजे चोर लोको द्रव्य लइ जशे तो लोक कहेशे के जूठ जाइड! एनुं धन सर्वे चोर लोको लइ गया तेथी ए माथुं मुंडावे छे. एवी रीते धर्मनी निंदा थाशे. ते वात सारी नही. एवुं चिंतवीने नवकार गुणवा लागशे तेथी पांचशे चोरोना पग थंभाइ जाशे तेवारें प्रभवाने विचार थाशे के आ ते शुं थयुं! जो जोवा लागशे तो जंबुकुमरने जागतो दे खशे तेवारें प्रभवो जाणशे के एनी पासे कोइ महा जोरवर विद्या छे. एवुं जाणी जंबुकुमरने कहेशे के म्हारी विद्या तमे ल्यो अने तमारी विद्या मने आपो. जंबुकुमर कहेशे के म्हारी पासें कोइ पण विद्या नथी वली बीजी विद्या मने खपती पण नथी मने तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार छे. एवो धर्मोपदेश देशे तेवारें प्रभवो कहेशे के आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने तुं दीक्षा शा वास्ते लीये छे? संसारना सुख जोगवी पछी दीक्षा लेजे. तेने जंबु कहेशे के हे प्रभवा संसारमां सुख छेज क्हिां के जेने हुं जोगवुं. संसारनुं सुख तो मधुबिंदुआ समान छे तेनी लालचें जीव संसारमां रखडे छे. जेम कोइ एक पुरुष गुरुनी भजाटमां जइ

शाखामां जइ लटकी रह्यो. हवे ते शाखानी नीचे एक कूप छे तेमां चार सर्प पोतानुं महोडुं
फाडीने बेठेला छे; तथा वे अजगर पण महोटुं फाडी बेठा छे; तथा वडना वडने हाथी धू
णावी रह्यो छे, तथा जे शाखामां ते पुरुष लटके छे ते शाखाने एक कालो अने बीजो धोलो
एवा बे उंदरो कापी रह्या छे, वली तेनी उपर एक मधुमाखीनुं मधपुडुं छे तेनी मक्षिकाउ
उडी उडीने ते पुरुषना शरीरने चटका मारी रहेली छे, एटलामां ते मधुव्यालमांथी एक
मधनुं टीपुं टपक्युं ते पडेला पुरुषनी जीभने जइ लाग्युं, तेवारें ते पुरुषे ऊंचुं जोवा मांड्युं
तो तेणे दीठुं जे मधुव्याल मांहेथी ए मधुबिंदु पडे छे; एवुं जाणीने ते टीपानी नीचे म
होडुं उघाडुं राखीने लटक्यो अने टीपाना स्वादमां मग्न थयो थको पोतानी उपर पूर्वोक्त
अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्व भूली गयो. एटलामां एक विद्याधर आवीने कहेवा
लाग्यो के हे पुरुष! ताहारुं दुःख देखीने मने दया आवे छे माटे आव महारा विमानमां
बेशी जा, हुं तुजने दुःखमांथी काहाडवा वांछु छुं. तेवारें ते पुरुष बोल्यो हे विद्याधर!
आ एक टीपुं मधनुं महारा मुखमां आववा द्यो पछी हुं आपनी साथे विमानमां बेसी
चालुं. एम एक टीपुं आव्युं पछी वली पण कह्युं के आ बीजुं टीपुं आवे तो चालुं. ए
रीते एकेक टीपाना स्वादमां लोभाणो थको ते विकट स्थानने छोडे नही, तेवारें विद्याधरे
जाण्युं जे एतो एवोज सुखे छे लोभी छे ए कांइ दुःखमांथी निकलशे नही एवुं जाणी
तेने तिहांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो. तेम हे भव्य! आ जीव संसाररूप अट
वीमां आयुष्यरूप वृक्ष छे तिहां कुटुंबरूप मधुबिंदुने खातो खातो आयुष्य खूटावे छे मोहें
मात्यो थको रहे छे; तेने सद्गुरु आवीने चारित्ररूप विमानमां बेसवानुं कहे तेवारें सं

सारी जीव स्त्रीना जोग रूप मधुबिंदुमां लोभायो थको संसारमांथी निकलवा वांछे नही. माटे हे प्रभव आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमां पड्याने मनुष्य अवतार मलवो महादुर्लभ छे. एवां वचन सांभलीने प्रभवो चोर पण प्रतिबोध पाम्यो अने बोल्यो के हे जंबु! हुं पण ताहारी सार्थे दीक्षा लइश. पछी वली जंबुकुमर पोताना मातापिताने प्रतिबोध देशे तथा आठ कन्याउ वली पोतपोताना मातापिताने प्रतिबोध आपशे तथा प्रभवो पण पांचशें चोरोने प्रतिबोध आपशे. एम सर्व मली प्रभातें पांचशेने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबुकुमर दीक्षा लेशे. एवुं श्रेणिकराजाने श्रीमहावीरस्वामीयें कह्युं हतुं ते प्रमाणे नवाणु क्रोड सोनैया धर्मक्षेत्रोमां खरची नाखीने उत्तम उत्सवसहित पांचशेने सत्तावीश जनोनी सार्थे श्रीजंबुस्वामीयें सुधर्मस्वामी पासेथी दीक्षा लीधी. पछी द्वादशांगी भणी श्रीसुधर्मस्वामीनी पाटें बेठा; केवलज्ञान पाम्या; पोतानी पाटें प्रभवाजीने बेसाडीने पोतें मोक्ष गया. ए श्रीजंबुस्वामी छेल्ला केवली थया. इहां कवीश्वर कहे छे के जंबुजातना वाणिया घणा लोभी थाय छे एवुं लोक एटला माटे कहे छे के जंबुस्वामीना हाथमां केवलज्ञान रूप धन आव्युं ते बीजा कोइने आप्युं नही. छेल्लुं केवलज्ञान एज पाम्या छे, मोक्ष नगरनो दरवाजो बंध करी बेठा माटे लोभी कहेवाणा. ते उपरथी ए जातना वाणीयाने लोभी कहे छे तथा ए श्रीजंबुकुमर सरखो सोभागी कोइ थयो नही अने थाशे नही; शामाटे जे मोक्षरूपणी स्त्रीपण एने परण्या पछी बीजाने परणी नथी तथा एना जेवो कोइ कोटवाल पण नही थाय केमके एणे पांचसो चोरोने साधु बनावी दीधा ए कवीनी घटना कही. हवे श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विछेद थइ गइ तेना नाम कहे छे. एक मनःपर्यवज्ञान बीजो [illegible]



पांचसौं चोर सोना मोरोना पोटला बांधी माथ लई उभाछे.



चित्र ७८

क्षपक श्रेणि, छठी उपशम श्रेणि; सातमो जिनकल्प मार्ग, आठमुं परिहारविशुद्धि चारित्र तथा सूक्ष्मसंपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र ए त्रण चारित्र विछेद थया ते आठमो बोल तथा नवमुं केवलज्ञान अने दशमुं मोक्ष जवुं. ए दश वानां विछेद गयां. श्रीमहावीरस्वामीथी चोशठ वर्षे श्रीजंबुस्वामी मोक्ष गया. एमनुं सर्व मली एंसी वर्षनुं आयुष्य हतुं ॥ ए बीजो पाट ॥२॥

हवे त्रीजे पाटे श्रीप्रभवस्वामी कात्यायन गोत्री हता; तेमणे एक दिवस पोताना गछमां तथा श्रीसंघमां उपयोग दीधो जे हुं कोने आचार्य करुं! ते उपयोग देतां गछमां तथा संघमां कोइ पोतानी पाटे बेसवा योग्य पुरुष दीठामां न आव्यो तेवारें अन्य मतोमां उपयोग दीधो तेमां सयंभवभट्टने दीठो तेवारें श्रीप्रभवसूरियें बे साधुयोने सीखावीने सय्यंभवने घेर मोकल्या ते सयंभवने घरे जइने बोल्या "अहोकष्टमहोकष्टं तत्वं न ज्ञायते पुनः" जूठ आ कष्ट करे छे पण तत्वने जाणता नथी, एवुं सांभली तत्काल खड्ग लेइने सयंभव गुरुनी पासे आव्यो अने खड्ग काढीने बोल्यो के अरे मने देखाड; तत्त्व केवुं छे? तेवारें गुरुयें विचार्युं जे मार्यो थातां तत्त्व कहेवामां दोष नथी एम चिंतवी गुरु बोल्या, अरे तुं यज्ञ करे छे ते यज्ञकी लकनी नीचे श्रीशांतिनाथजीनी प्रतिमा छे ते शांतिकारी छे. तेनाथी शांति थाय छे परंतु यज्ञथी कांइ पण थतुं नथी ते सांभली तेणे प्रतिमा काढाडी प्रतिबोध पाम्यो अने पोतानी स्त्री गर्भवती हती तेने छोडीने दीक्षा लीधी. श्रीप्रभवस्वामी त्रीश वर्ष गृहस्थ पणे रह्या तथा पच्चावन्न वर्ष पर्यंत चारित्र पाल्युं सर्व मली पच्चासी वर्षनुं आयुष्य भोगवी श्रीसयंभवने पोतानी पाटे बेसाडीने देवलोक गया ए त्रीजो पाट ॥३॥ ॥ हवे चोथे पाटे श्रीसयंभवसूरि वछगोत्रीया गर्भवती स्त्री छोडीने आव्या हता तेने पाछलथी पुत्र थयो तेनुं नाम मनक दीधुं. ते बो

करो एक दिवस पाठशालायें गयो तिहां छोकराउनी सायें जण्यो तेवारें बीजे छोकरे मेणुं मार्युं के हे निःपितृक! घणो तने जाणीयें छैयें तहारो बापतो छेज नही. आ वात सांजलीने छोकरो दुःखी थयो थको पोतानी माता पासें आव्यो. माताने पुछ्युं हे माता! महारो पिता नथी? त्यारें मातायें कह्युं. हे पुत्र! ताहारो बाप नही ते वली होय! ताहारो बाप सय्यंजवजट्ट छे. छोकरायें पुछ्युं. ते किहां छे? तेवारें मातायें कह्युं हे पुत्र ताहारा बापने जैनना साधुउ जो लगीने लइ गया तेथी तेणे दीक्षा लीधी छे एवुं सांजली जे गाममां सय्यंजव सूरि हता ते गामनी बाहेर ते मनक पण आव्यो तेने साहामा ठंमिलें जाता गुरु मल्या तेमने मनके पुछ्युं के महाराज इहां सय्यंजवसूरि छे एवुं सांजलीयें छैयें ते कयी जगायें रहे छे? गुरु बोल्या ताहारे शुं काम छे तेवारें मनके पोतानी सर्व हकीगत कही अने कह्युं के हुं तेमनो पुत्र छुं. तेने गुरुयें पण कोइक उत्तर आपीने उपासरे मोकली आप्यो अने ठंमिलथी पाछा फरी आव्या तेवारें गुरुयें तेने प्रतिबोध दीधो मनके कह्युं के मने दीक्षा आपो ते सांजली गुरु बोल्या महारुं तथा ताहारुं पितापुत्रपणुं जे छे ते तुं बीजा साधुउने नही कहे तो हुं तुजने दीक्षा आपुं त्यारें मनक बोल्यो हे महाराज हुं न कहुं ते सांजली गुरुयें दीक्षा आपी पण मनकनुं आयुष्य स्वल्प जाणुं तेवारें गुरुयें सिद्धांतोमांथी सार लहीने दशवैकालिक सूत्र मनकने माटें बनाव्युं ते सूत्र छ महिनामां मनक जणी रह्यो सर्व आचार जणी गयो, छ महिना फाफेरा चारित्र पालीने देवलोक गयो पछी श्रावको मनकना शरीरने दाग आपी गुरुनी पासें आव्या ते वखत यशोजद्रप्रमुख बीजा घणा शिष्यो हता ते पण सर्व गुरुनी पासें बेठेला हता तिहां गुरुयें श्रावकोने धर्मोपदेश आप्यो पण गुरुनी [illegible]

यशोनद्रसहित संघना माणसो बोल्या के पूज्य आपना अनेक साधुओ परलोक जाय ले परंतु आपनी आंखमांथी आंसु पडतां क्यारें पण दीठां नथी अने आज आंसु केम पड्यां ? तेवारें गुरु बोल्या मोहथी आंसु पड्यां संघे पुछ्युं. कयो मोह हतो ! त्यारें गुरु बोल्या ए अमारे संसारी पणानो पुत्र हतो परंतु सल्प काल चारित्र पाल्युं तेथी मोह आवी गयो तेवारें साधुओ बोल्या महाराज तमे अमने क्यारें पण कह्युं नही जे ए अमारो पुत्र ले ! तेवारें गुरु बोल्या हुं जो तमने एवुं कहेत के ए महारो संसारीपणानो पुत्र ले तो पली तमे एनी पासे वेयावच्च करावत नही तेथी एने शो लाभ थात ? माटे एना अल्प आयखामां एटलो लाभ जाणीने तमोने में कह्युं नही ए तात्पर्यार्थ ले पली गुरु, दशवैकालिकने पालुं सिद्धांतोमां नाखवा लाग्या तेवारें संघे विनंति करी के हे स्वामी ए अल्प ग्रंथ ले ते आगल जतां अल्पबुद्धि अने अल्पायुषवाला लोकोने घणोज उपकारी थाशे माटे एमज रहेवा आपो. ते सांभली दशवैकालिक एमज राख्यो पली सय्यंभवसूरि पोताना पाटे श्रीयशोभद्र सूरिने बेशाडीने श्रीमहावीर स्वामीथी अठाणुमे वर्षे स्वर्गे गया. ए चोथो पाट ॥ ४ ॥ हवे पांचमे पाटे श्रीयशोभद्रसूरि तुंगीयायणगोत्रीया बेठा तेना पाटे बे शिष्य बेठा तेमां एकतो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य श्रीभद्रबाहुस्वामी पाईण गोत्रीया तेमांथी भद्रबाहुजीनो संबंध आवीरीतें ले के प्रतिष्ठान पु रना रेहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा भद्रबाहु ए बे नामे बे ब्राह्मण भाइओ हता तेमणे श्रीयशोभद्रसूरिनी पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व भण्या पली गुरुये विनीत पणानो गुण जोइने भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं अने वराहमिहिरने अविनीतपणाने लीधे आचार्यपद आप्युं नही कारणके जे आचार्यपद गणधरोये धारण कर्युं ते आचार्यपद जो

अविनीत अयोग्यने आपे तो ते गुरु जे आचार्य पदनो आपनार होय ते पण अनंत सं सारी थाय. हवे नइबाहुने आचार्य पद मल्युं जोइने वराहमिहिर कोपानल थयो थको ग छथी बाहेर नीकलीने गुरुनी उपर द्वेष धरवा लाग्यो चौदे पूर्व नणेलो हतो तेथी नवीन ज्योतिषना वाराहीसहिंता प्रमुख ग्रंथो बनावी साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी लोकोनी आगल निमित्त कहीने तेनाथी आजीविका चलाववा लाग्यो तेने लोक पूछे के एटलुं तमे क्यांथी नण्या, तेवारें लोकोनी आगल एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी बारणे लग्न कुंमली मांमी ते कुंमलीने नांग्याविना एमज पाछो चाली निकल्यो पछी जेवारें याद आव्यो तेवारें नूसाडी नाखवा गयो अने तिहां जइने जोउं तो कुंमलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह ते पूछडुं वधारीने उपर उनो छे पछी में लग्ननी नक्तिने लीधे महारी छाती क ठण करीने सिंहनी नीचे घुसीने लग्न नुसाडी नाख्युं महारी नक्ति जोइने सिंहनो अधिपति जे सूर्य ते आव्यो अने महारा उपर तुष्टमान थइने बोल्यो के माग माग तेवारें में कह्युं मने नक्त्रादिकनो चार खरेखरो जेवो छे तेवो बतावो पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंमल चारमां मुजने लइ गयो तिहां मने सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं ते ज्योतिषना बलथी हुं त्रण कालनी वात जाणुं हुं एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या एवा अवसरमां श्रीनद्रबाहु स्वामी पण ते नगरमां आव्या तेमने श्रावकोयें महोटा महो त्सवसहित गाममां प्रवेश कराव्यो पण वराहमिहिरथी ते सहन थयुं नही तेवारें विचार्युं जे एनुं मान खंमित करुं तो सारी वात थाय, एवं सिंहनी ...

राजाने कहेवा लाग्यो के आजथी पांचमे दिवसे पूर्व दिशाथी वर्षाद आवशे ते त्रीजे पहोरें वरसशे आ हुं कुंडालुं करुं छुं तेना वचमां बावन पलनो मालुं पडशे एवुं निमित्त कयुं ते वात श्रावकोये आवीने भद्रबाहु स्वामी आगल कही के हे स्वामी आ वराहमिहिरे क हेली वात सत्य छे किंवा असत्य छे तेवारें भद्रबाहु बोल्या कांइक सत्य छे अने कांइक अ सत्य छे केमके पूर्व दिशाथी नही पण इशान कोणेथी आवशे ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे तेवारें पडशे पण त्रीजो पहोर कह्यो ते जूठो कह्यो छे वली बावन पलनो नही परंतु वायु थी सुकाइ जासे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे तथा कुंडालानां मध्यभागमां नही पडे पण कुंडालानी कोर उपर एक बाजुयें पडशे माटे ते वराहमिहिर मिथ्यात्वना योगथी आटलुं जुठुं बोले छे ए वात पण श्रावकोये राजाने कही राजा बोल्यो साच जूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां जणाइ आवशे एटलामां पांचमो दिवस आव्यो तेवारें वर्षाद वरस्यो अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणे सर्व वात सत्य थइ तेवारें राजा प्रमुख सर्व लो कोये श्रीभद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं अने वराहमिहिरनी कांइ साची कांइ जुठी वात पडी गइ तेथी तेनी मानता कमती थवा लागी. वली एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वराहमिहिरे जन्मपत्रिका बनावीने एकशो वर्षनुं आयुष्य वर्त्ति काहाड्युं. त्यारें सर्व लोक भक्त लइने राजाने वधाववा आव्या. अन्यदर्शनी योगी संन्यासी प्रमुख सर्व आशीर्वाद आपवाने आव्या, परंतु एक श्रीभद्रबाहु गया नही तेवारें वराहमिहिर रा जाने कहेवा लाग्यो के हे राजन्! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो ते भद्रबाहुने रुच्यो नही तेथी आंही आशीर्वाद आपवा आव्यो नही ए वात पण श्रावकोये जइ श्रीभद्रबाहु स्वामीने कही

तेवारें नइवाहु बोल्या वारंवार केम जवाय एकवार जइशुं श्रावक बोल्या केम जाशो गुरु बोल्या श्रावमे दिवसे रात्रीनें वखते बिल्लाडीना योगथी पुत्र मरण पामशे तेवारें देखाडी श्रावशुं ए वात श्रावकोये जइ राजाने कही, राजायें सर्व बिल्लाडीयोने श्राखा गाममांथी बा हेर काहाडी मूकावी तथा बिल्लाडी कोइना घरमां अथवा गाममां न श्रावी शके तेना शो कडो गमें जावता कखा परंतु श्रावमे दिवसे दैवयोगें दासीना हाथथी कमाडनी गंसणी बा लकना माथा उपर श्रावी पडी तेथी बालक मरण पाम्यो तेवारें वराहमिहिर बोल्यो बिल्लाडीथी तो मरण पाम्यो नही ? पठी गुरुयें गंसणीनी उपर बिल्लाडीना मुखनो श्राकार लाकडामां करेलो हतो ते देखाड्यो तेथी वराहमिहिर लज्जा पाम्यो माटे तिहांथी निकली अन्यत्र स्था नके जइ अज्ञानकष्टथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो तेणे श्रावी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपड्व कखो तेथी घणा लोक मरवा लाग्या तेवारें श्रावकोनो उपड्व टालवाने माटें महा महिमावंत एवुं " उवसग्गहर " नामे स्तोत्र गुरुयें बनाव्युं तेनो घरघरने विषे गण णो सरु थयो तेथी सर्व उपड्व दूर थइ गयो. पठी सर्व श्रावकोना घेरमां जो थोडुं शो काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ करे के ते काम पार पडी जाय, एम करतां करतां ठेवट लोकोमां एवी चाल पडी गइ के जो गाय दूध न श्रापे तो पण उवसग्गहर स्तोत्र गुणे तेवारें गाय पण दूध श्रापती थाय एमज वली कोइक ठाणा वीणवा गइ ते एकली हती तेनी ठाणानी पोटली उपाडी श्रापवाने कोइ बीजो माणस ते वखत तिहां हाजर हतो नही तेवारें तेणे पण उवसग्गहरनो पाठ कखो तेवारें नागें पोते श्रावीने भारी उपाडी तेना माथा उपर राखी दीधी एमज एक स्त्री रोदना करवा...

तेणे जाण्युं जे रोटलो वली जाशे त्यारे उवसग्गहरनो पाठ कर्यो के तरत नागराजा आवीने कहेवा लाग्यो के शुं काम ले ? त्योरे कह्युं ठोकरो रडे ले तेने राखो तेवारें ते ठोकराने शौच करावी रोलो रखाव्यो एवुं प्रायें सांजलीये लेयें एवीरीतें नीच कामो लोको कराववा लाग्या तेवारें नागराज खीजीयो अने गुरुपासें आवी विनंति करी के हे महाराज संघथी हुं एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी लोकोतो पूर्वोक्त हलका हलका काम ते पण माहरी पासें करावे ले तेवारें गुरुयें जाण्युं जे ए निर्लज्ज लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे माटे आ स्तोत्र जंडारी मूकवुं युक्त ले तेमने नागेंद्र कह्युं हे स्वामी नाथ आप लठी गाथा जंडारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं महारे स्थानके रह्यो थको सर्व उपद्रव टालीश एवुं सांजलीने गुरुयें लठी गाथा जंडारी मूकी. वली श्रीजद्रबाहु स्वामीना करेला आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ हालमां विद्यमान ले ए श्रीजद्रबाहुस्वामी श्रीमहावीर स्वामीथी एकसो सितेर वर्षें देवलोक गया तथा बीजा श्रीसंनूतिविजयजी जाणवा ए लठो पाट ॥ ६ ॥ हवे श्रीसंनूतिविजयजी माढरगोत्रीया हता तेमना पाटे आर्य थूलिनद्रजी गोतम गोत्रीया थया तेमनो संबंध आवीरीतें ले के पाडलीपुर नगरमां नवमो नंदराजा राज्य करे ले तेनो शकडाल नामे प्रधान ले तेनी लालदे नामा जार्याना बे पुत्र थया एक थूलिनद्र अने बीजो सिरियो. एक दिवस वररुची नामा ब्राह्मण राजा पासे आव्यो तेणे एकशोने आठ काव्य नवा बनावीने संजलाव्या एम ते ब्राह्मण नित्य आवीने एकशोने आठ काव्य नवा नवा बनावीने राजा आगल कहे पण जेवारें प्रधान तेनी प्रशंसा करे तेवारें राजा दान आपे नहींकां दान आपे नही अने प्रधान तो वररुचीने मिथ्यात्वी जाणी तेनी प्रशंसा करे नही तेवारें

वररुचीनइ प्रधाननी स्त्री जाळजेने कह्युं स्त्रीयें प्रधानने कह्युं के ते विचारा नटने कांइक श्र पावजो तेवारें प्रधानना मनमांतो श्रपाववानो विचार न हतो पण स्त्रीना कहेवा उपरथी राज सत्तामां कह्युं के ए काव्य सारा ठे त्यारे राजायें संतुष्ट थइने नित्य तेने एकशोने आठ सोनैया श्रापवा मांमया एम पणादिवस देतां थया तेवारें प्रधाने जाएयुं के आवी रीतें तो सर्व धन नाश थइ जाशे एवुं चिंतवीने पोतानी सात पुत्रीयो ठे ते एवी बुद्धिमान् ठे के पहेली पुत्रीतो एक वार कांइ काव्यप्रमुख सांजळे तो ते काव्य तेने मुखपाठ थइ जाय अने फरी तेनो पाठ कही आपे एमज बीजी पुत्री बे वार सांजळे तो तेने मुखपाठ थइ जाय, त्रीजी त्रणवार, चोथी चारवार, एम यावत् सातमी सातवखत सांजळीने पाठो कही संजळावे. एम साते पुत्रीयो महा चतुर ठे तेने सीखावी मूक्युं के तमे राजसजामां एवुं कहेजो जे ए काव्य जुना ठे अमोने आवडे ठे एम कही मुखपाठे संजळावजो. प्रजातें वररुची पण नवा एकशो आठ काव्य ब नावीने सजामां आवी कहेवा लाग्यो ते वखत प्रधान बोल्यो हे महाराज, आगळना आपणा वडेरा नंदराजानी पासे कहेला काव्य ठे ते नित्य आवी कहे ठे ए काव्य तो सर्व महारी पुत्रीयोने पण आवे ठे तेवारें राजायें पुत्रीयोने बोलावी सर्व काव्य कहेवराव्या ते साते ज णीयें अनुक्रमे एक बीजानी पाठज मुख पाठें कही देखाड्या तेवारें राजायें नटने निर्जंठना करी काहाडी मूक्यो पठी ते वररुचीयें वळी गंगानदीमां एक यंत्र नाखीने तेनी उपर ठानो पांचशो सोनामोरोनो दडो नित्य मूकी आवे अने प्रजाते लोक जेळा करी तिहां जइ गंगानी स्तुतिना काव्य कही कळ खटकावे के पांचशो सोनामोरोनो दडो हाथमां आवी पडे ते को

गंगादेवीज द्रव्य आपे ने ए वात राजायें सांजली त्यारें प्रधानने कह्युं के आपण पण जाव।
चालीये, प्रधाने कह्युं आवती काले चालीशुं. पछी प्रधाने तिहां छाना रूपा माणसो मे
ल्ह्या ते जेवारें सांजनी वखते नट सोनामोरोनी पोटली यंत्रमां राखी आव्यो तेवारें ते
छाना बेठेला माणसोयें पोटली काढाडी लइने प्रधानने आवी सोंपी दीधी. प्रजाते तो राजा
प्रमुख सर्व लोको जोवा गया तेवारें ते वररुची पण गंगादेवीनी स्तुति करी घणा जोरथी
फल वावे ने तो पण हाथमां कांइ आवे नही तेवारें राजा बोल्यो आम केम थयुं ते वखत
प्रधाने सर्व प्रपंच प्रगट करी आप्यो ने पोटली पण बतावी आपीने पाछी नटने सोंपी दीधी
तेथी लोकोमां नटनी घणी निंदा थइ. हवे नट मंत्री उपर द्वेष करवा लाग्यो एवा अवसरमां
प्रधानना छोकरा सिरियानो विवाह मंमाणो ने तेवारें प्रधानना घरमां शस्त्रप्रमुख अनेक
तरेनी तयारीयो देखीने नटें एक दुहो बनावी पोतानी पासे जणवा आवनार छोकराने
शिखाव्यो ते दोहो कहे ने ॥ नंदराय जाणे नही, जे सिकमाल करेसि ॥ नंदराय मारी करी,
सिरियो रज्ज ठवेसि ॥ १ ॥ ॥ ए दुहो छोकरा राजाना महेल पासे आवीने कहेता थका
निकल्या, राजायें नटने पूछ्युं आ वात केम छे नटे कह्युं तमे चोकशी करावो सर्व जातिना
शस्त्र तयार थाय ने. राजायें चोकसी करावी युद्धसामग्री जाणीने कोपानल थयो अने निर
[illegible] कर्यो जे सकमालना सर्व कुटुंबने मरावी नाखुं आ वात सकमाले जाणी तेवारें राजा
[illegible] आव्यो. राजायें सकमालने जोइ महोडुं फेरवी नाख्युं तेवारें प्रधान घरे आवीने सि
[illegible] लाग्यो के महारी वात सांजल जेवारें हुं जइ राजाने नमस्कार करुं ते
[illegible] तरवारथी कापी नाखजे ए वात घणीज महेनतथी सिरिये मान्य

कल्प० ॥२१२॥

करी पछी सकमाले राजाने प्रणाम कर्यो राजायें मढोडुं फेरवी नाख्युं प्रधाने पोताना मुखमां तालपुट विष नाखी लीधो हतो तिहां सिरियो बोल्यो के जे कोइ राजानो द्वेषी होय तेने तो मारवुंज जोइयें एवुं कहीने तरवार मारी तेथी मस्तक कपाइ गयुं राजा घणो खेद करीने पछी संतुष्ट थइ सिरियाने कहेवा लाग्यो के ताहारा पितानो अधिकार तुं ले, सिरियो बोल्यो महारो महोटो भाइ थुलिभद्र छे तेने अधिकार आपवो जोइयें, राजायें पूछ्युं ते किहां छे त्यारे सिरियें कह्युं ए महारो भाइ न्हानपणमां पोथी वांचवा उपर कालनिर्गम करतो हतो ते परण्यो हतो पण पोतानी स्त्रीपासें जतो नही तेवारें माहारा मातपितायें जाण्युं ए संसारनी कला शीखशे नही एवुं विचारीने कोश्या वेश्याने कला शीखाववा माटे सोंप्यो छे तेने बार वर्ष थया वेश्याने तिहांहीज लोभाइ गयो छे बार क्रोड सोनैया खाइ गयो छे माटे तेने बोलावीने अधिकारी करो. राजायें थूलिभद्रने तेडवा माटे छडीदार मोकल्यो, तेवारें वेश्या बोली राजा पासें म जाउ केम के जासो तो फरी राजा तमोने महारी पासें आववा देशे नही अने महारे पण तमारा विना केवी रीते रहुं जाशे ते विचार करो जे एक क्षणवार पण तमारा वगर मने चेन पडतुं नथी ते तमे जाणोज छो माटे तमारे जावुं नही तेवारें थूलिभद्र बोल्यो एकतो महारा पितानुं मरण थयुं छे अने बीजो वली राजानो हुकम आव्यो छे ते फरी शके नही तो पण एकवार तने मलवा माटे तो जरुर आवीश एवुं कहीने पोताने घेर आव्यो तिहां सर्व घटना प्रपंचनी वात तथा पिताना मरणनी वात सांभलीने पछी राजापासें आव्यो राजायें तेने कह्युं के तुं प्रधानपद ग्रहण कर

वाला०




चित्र ७८
थूलिभद्रजी साधु.
कोश्या वेश्या नाटक करेछे.

वाडीमां जइने विचार कर्यो के जुओ आ संसारनो मतलबी छे, महारा पितानी एवी अवस्था थइ माटे राज्यना कामभां, आ लोकनुं पण सुख नथी अने परलोकमां तो नरकनी प्राप्ति थाय एवो संसार असार जाणी रत्नकंबलनो ओघो बनावी, लोच करी, साधु थइने राजाने जइ धर्मलाभ आप्यो अने तिहांथी निकल्यो राजायें जाण्युं जे आ व्यसनी छे माटे वेश्याने घेर जशे एवुं विचारीने जोवा लाग्यो तेवारें ते तो कोइ महादुर्गंधित गलीमांथी थइने गाम बाहेर निकली गयो पण दुर्गंधथी नाक ढांक्युं नही तेथी राजायें जाण्युं जे ए खरेखरो वैराग्यवान् छे पछी थुलिभद्रें जइने श्रीसंभूति विजयजीनी पासे दीक्षा लीधी अने राजायें सिरियाने मंत्रीपद आप्युं, महोर सोंपी. हवे चोमासुं आवे श्रीथुलिभद्रजी गुरुना आदेशथी वेश्याने घेर चोमासुं रह्या अने एक साधु सिंहनी गुफायें चोमासुं रह्या तथा त्रीजो शिष्य सर्पबिले चोमासुं रह्या, चोथो साधु कूआना वचला काष्ठ उपरे चोमासुं रह्या ए चारेमांथी थुलिभद्रजी वेश्याने घेर चोमासुं रह्या छे तिहां चोमासुं काहाढवुं घणुं कठण छे कारण के एकतो वर्षाऋतु छे ते कामनी जगाववा वाली छे केम के जे कालमां मेघ गर्जारव करे, वी जली चमके, मोर बोले, बपइया पिउ पिउ करे, एवा कालमां भोगनी वांछा घणी थाय वली रहेवाने चित्रामणवाली जगा, अने खावाने षड्रस भोजन नित्य मले, ए सर्व भो गना अंग मले अने जो स्त्री रागवाली न मले तो सर्व निष्फल थाय परंतु अहीं थुलिभद्र जीने तो कोश्या वेश्या सरखी सर्वमां अग्रेसर रागवाली मली छे तेणे महोटा उमेदथी चित्र शालिमां उताख्या, अनेक प्रकारना भोजन कराव्या, अनेक तरेना हाव भाव कर्या, फूल उ पर नाटक कीधुं, भोग विलासना वचन बोली, तथापि ए महापुरुषनुं एक रोम पण

नही सेवट वेश्या बोली जे हुं आटला विलाप करुं छुं तेनुं कांइ प्रत्युत्तर तो आपो तेवारें मुनियें उपदेश दीधो के हे नोली धर्मविना सर्व अवतार निष्फल छे इत्यादिक उपदेश सांजलीने कोश्या श्राविका थइ, एक राजाना हुकुमदार पुरुष विना बीजा कोइ पण पुरुषने घरमां पेसवा देवो नही एवी श्राविका करी चोमासुं पूरण थये मुनि गुरु पासे आव्या अने बीजा त्रण साधु पण आव्या तेमने तो गुरुयें किंचित् उठीने कह्युं के नले आव्या हे डुक्करकारक ! अने थुलिनद्रने तो आवतो देखतांज तत्काल गुरु उठी उना थइने बोल्या नले आव्या अहो डुक्करडुक्करकारक एवुं सांजली सिंहगुफावासी साधुयें अमर्षे आणीने विचार्युं के जुउ आ गुरु पण धनवंतना गरजु देखाय छे केमके जे खुब माल खाइने मातो थइ आव्यो तेने तो अहो डुक्करडुक्करकारक एवुं कह्युं अने में एवुं कठण तप कर्युं तेने तो डुक्करकारक एट लुंज कह्युं एवुं जाणीने आवते चोमासे सिंहगुफावासी साधुयें गुरुने कह्युं के हुं वेश्याने घेर चोमासुं करवा जइश तेने गुरुयें कह्युं हे वत्स, कामदेवनी राजधानी सरखा घरमां जइ चो मासुं करवानुं काम अत्यंत कठण छे तुं त्रष्ट थइ जइश माटे ताहारे जावुं नही. तो पण तेणे मान्यु नही अने कोश्याने घेर चोमासुं रहेवा गयो तिहां एक सामान्य जगा वेश्यायें तेने रहेवा माटे आपी अने तेनी पासे सामान्य वेष करीने बेठी तो पण तेनुं रूप देखीने मुनि मगी गयो अने नोग करवानुं कह्युं तेवारें वेश्या बोली धनविना अमारे कामना नथी, साधुयें कह्युं के धन किहांथी लइ आवुं? वेश्या बोली नेपाल देशनो राजा रत्नकंबल आपे छे ते लइ आवो. साधु नोग करवानो मतलबी थयो माटे चोमासाना दिवसोमां कीचड खूंदतो खूंदतो नेपाल देशे गयो तिहांना राजा पासेथी रत्नकंबल लइने पाछो चाल्यो तेवारें रस्तामां चोरोनो खडो

बोल्यो " लक्षं याति " चोरोयें सूडानी वाणी सांजळीने साधुनी पासेथी रत्नकंबळ खोंची लीधो फरी पाछो राजा पासें जइ कहेवा लाग्यो के कंबळ चोरोयें छुंटी लीधो तेवारें राजायें वांसनी लाकडीमां कंबळ नाखीने दीधो पाछो फरतां वळी पण रस्तामां सूडो बोल्यो " लक्षं याति " ते चोरोयें सांजळ्युं परंतु कंबळ दीठामां न आव्यो तो पण चोरोयें जाण्युं जे अ मारो सूडो जुठुं बोले नही तेथी मुनिने कह्युं हवे तमारो कंबळ अमे लइशुं नही पण सत्य कहो जे तमारी पासें कंबळ छे के नथी मुनियें सत्य कह्युं, चोरोयें छोडी दीधो, मुनियें रत्नकंबळ लावीने वेश्याने दीधो, वेश्यायें स्नान करी कांबळथी शरीर लुछीने खाळमां पटकी दीधो ते जोइ साधु बोल्यो हे जोळी एवा अमूल्य रत्नकंबळने खाळमां केम नाखी दीये छे? त्यारें वेश्या बोली अरे मूर्ख तुं पण शुं करे छे! जे आ महाउज्ज्वल इहलोकमां अने परलोकमां सुखकारी रत्नकंबळथी पण अत्यंत अधिक मूल्यवान् एवुं चारित्र रूप रत्न छे तेने मळमूत्रे करी जरेलुं एवुं जे महारुं शरीर रूप दुर्गंधित खाळ तेमां केम नाखी आपे छे? माटे तुं महाराथी अधिक मूर्ख देखाय छे एवुं सांजळी प्रतिबोध पामी पाछो गुरुनी पासे आवीने साधुयें फरीथी चारित्र लीधुं ॥ हवे एक दिवस राजाना रथकारें कोश्या वेश्याने घणीज स्वरूपवाळी सांजळी तेथी तेनी पासे जवानी इच्छा थइ पण राजाना हुकम विना बीजाने वेश्या राखे नही एवो तेनो नियम जाणीने रथकारे राजाने कोइ पोतानी कळा बतावीने राजी कर्यो तेवारें राजा प्रसन्न थइने बोल्यो के माग जे तुं मागे ते हुं आपुं. रथकारें कोश्यानी मागणी करी राजायें हुकम आप्यो अने कोश्याने रथकार सोंप्यो. हवे कोश्या नित्य प्रत्ये रथकारनी पासे श्रीथुलिभद्रजीना गुणगान करे ते जोइ रथकारें जाण्युं जे हुं एने कोइ कळा ब

तावुं तो ए मह्मारा गुण जाणशे ने मह्मारी स्तुति पण करशे एवुं चिंतवीने गोखमां बेशी एक बाणथी सात केरीनो जुमखो बींध्यो तथा तेनी पछवाडे वली बीजुं बाण साध्युं एम एकेकनी पछवाडे बाणो साधीने गोखमां बेठा थकांज आंबानी लुंब तोडीने वेश्याने आपी दीधी अने कहेवा लाग्यो के जो आ मह्मारी कला केहेवी छे! तेवारें कोश्यायें एक राइना दाणानो ढिगलो करी तेना उपर फूल राख्युं तेमां एक दोरो शीववानी सूइ उन्नी राखीने तेनी उपर नाटक कर्युं ते नृत्य जोइने रथकार अत्यंत खुशी थइ गयो अने कहेवा लाग्यो जे माग माग हुं ताहारी उपर संतुष्ट थयो छुं कोश्यायें कह्युं तें कहेवोक तमासो जोयो के जे थकी खुशी थइने मह्मारा उपर प्रसन्न थयो ? आ में जे सूइनी अणी उपर नृत्य करी बताव्युं एवी कलाउं जो शीखवा बेसीयें तो हजारो शीखी शकाय छे तेमज तें जे आम्रनी लुंब तोडी आपी ए पण शीखवुं सहेज छे. एमां कांइ कठण नथी अभ्यास करवाथी बधी कला शीखी शकाय तेवी छे. परंतु मह्मारा जेवी स्वरूपवाली स्त्री पासेनी पासे उन्नी रहेली हती, अने वली चोमासाना दिवस हता तेमज कामने जागृत करनारी एवी आ चित्रशाला हती तथा शरीरने पुष्टीना करनारा मन्मथने उत्तेजन आपनारा एवा घणा श्रेयमां श्रेय जोजन मलता हता ते आरोगी ने वली रात्रदिवस मह्मारी पासे रहेता तेम हुं पण तेमना उपर अत्यंत मोहित थई थकी सराग दृष्टीयें बहुप्रीतिपूर्वक विषयसेवन करवानी याचना करी रही हती आटलुं छता एक क्षणमात्र पण जेनुं मन चलायमान थयुं नही एवी कला श्रीथुलिभद्रजीनी पासें हती ते शीखवी घणीज कठण छे. मह्मा ज्ञान छे. जेनी आगल में घणा प्रकारना चाला कर्या तथापि ते महापुरुष किंचिन्मात्र



थूलिभद्रजीयें सिंहनुं रूप कर्युं छे.

मग्यो नही धन्य ने एमनां मातपिताने के जेनो पुत्र ... जइ दीक्षा लीधी ॥ हवे का
आपी रथकारनुं मन फेरवीने श्रीथुलिनइजी पासें मोकल्यो तेणे जइ दीक्षा लीधी ॥ हवे का
इक समये बारवर्ष पर्यंत काल पड्यो तेवारें त्यां सर्व मुनिराजो अग्यार अंगना जाणनारा
रह्या पण द्वादशांगीना जाणनारा कोइ न हता तेवारें सर्व संघे बे मनुष्य मूकीने श्रीजइ
बाहु स्वामीने बोलाव्यो, जइबाहु स्वामीयें कह्युं में प्राणायाम ध्यान चालुं कर्युं ने तेमाटे म
हाराथी आवी शकाशे नही. तेमने श्रीसंघे फरीथी कहेवराव्युं के हे महाराज जे श्रीसंघनी
आज्ञा न माने तेने केवा प्रकारनो दंम करवो? श्रीजइबाहुजी बोल्या तेने गच्छ बाहेर करवो
एवी चाल ने पण मने ध्यानना अंतराय थाय ने माटे श्रीसंघने एम करवुं योग्य ने के ज
णवावाला साधुउने इहां महारी पासें मोकली आपवा जोइयें तो तेमने जणवावुं बनी श
के तेवारें श्रीसंघे मली श्रीथुलिनइ प्रमुख पांचशो साधुउने श्रीजइबाहुस्वामी पासें मो
कल्या तिहां गुरुयें सर्व साधुउने सात वाचना दीधी तेमां बीजा सर्व साधुउतो जणवाथी
हारी गया परंतु एक श्रीथुलिनइजी बे वस्तुयें उणा दश पूर्व जणी गया एवामां श्रीथुलि
नइजीनी सात बहेनो यक्षा, यक्षदिन्ना, नूता, नूतदिन्ना, सेणा, बेणा अने रेणा ए साते
साध्वीउ श्रीसंनूतिविजयजीनी शिष्यणीउ थयेली ने ते श्रीथुलिनइजीने वांदवा सारु आवी
तेणे प्रथम श्रीजइबाहु स्वामीने वांदीने पुछ्युं के थुलिनइजी किहां ने? गुरु बोल्या पर्वतनी
गुफामांहे जणेला पूर्वनुं गुणणु करे ने तेवारें साते जणी तिहां गइ तेमने आवती जोइ ज्ञा
नना बलेकरी चमत्कार देखाडवामाटे श्रीथुलिनइ सिंहनुं रूप करी बेठो तिहां सिंहने देखी
साध्वीउ जय पामी थकी फरी गुरु पासें आवीने केहेवा लागी के महाराज तिहां तो सिंह

छे तेवारें गुरुयें जाण्युं एणे विद्या प्रगट करी जणाय छे एम विचारीने वली कह्युं के हवे तमे जाउ भुजिनइजी तिहांज छे तेवारें ते फरी तिहां गइ जाइने देखी हर्षसहित वंदना करी वली गुरु पासें आवीने पूछवा लागी के महाराज अमारी सार्थे सिरिये दीक्षा लीधी तेने अमारामांथी यक्षणीयें उपवास कराव्यो ते देवलोक गयो पछी यक्षणीने प्रायश्चित्त लेवा माटे श्रीसंघने कह्युं तेवारें श्रीसंघे काउसग्ग करीने शासन देवीने सीमंधरस्वामी पासें मोकली सीमंधरस्वामीना मुखथी बे चूलिका लइने शासनदेवी इहां आवी. एवुं कही गुरुने वांदीने पोताने स्थानके गइ. हवे एक दिवस श्रीभुजिनइजी पोतानो एक ब्राह्मण मित्र हतो तेने घेर गया तिहां ते ब्राह्मणनी स्त्रीने पुछ्युं महारो मित्र किहां छे? स्त्रीयें कह्युं अमने दारिद्रीपणुं प्राप्त थयुं छे माटे भीख मागवा गयो छे तेवारें श्रीभुजिनइें ज्ञानबलथी जोयुं तो एना घरमां वडिलोपार्जित घणुं धन जरेलुं दीठुं पण ब्राह्मणने तेनी खबर नथी माटे भीख मागे छे पछी श्रीभुजिनइजीयें पोतानी दृष्टीथी दाटेला धननुं ठेकाणुं तेनी स्त्रीने बताव्युं अने पोतें पाछा गया ब्राह्मणे आवीने पोतानी स्त्रीना कहेवा उपरथी दाटेला धननुं स्थानक जाण्युं अने विचार्युं जे पक्का मुद्दा विना मुनिराज दृष्टी आपे नही. माटे तेणे धरती खोदी जोइ तो तेमांथी घणुं धन निकल्युं तेना योगें ब्राह्मण सुखी थयो. एवी रीते एक सिंहनी विकुर्वणा करी अने बीजुं ब्राह्मणने धन देखाड्युं ए बे वातो अयोग्य करीने वली श्रीभुजिनइजी गुरुनी पासे वाचना लेवा आव्या तेवारें गुरुयें कह्युं के पूर्वोक्त बे काम करवा थकी तमे वाचना लेवाने अयोग्य थया छो, फूटेला भाजनमां दूध नाखीयें तो ठेरे नही, तेम तमोने पण वाचना हवे देवाय नही. एवुं सांभली श्रीभुजिनइजी उदास थया थका श्रीसंघने

विनंति करी जे मह्रारामां चूक पडी माटे गुरु वाचना आपता ...
हवे वाचना आपवा माटे श्रीगुरुने अरजी करी ते उपरथी गुरुयें चार पूर्व मूल पाठे वं
चाव्या पण अर्थ शीखव्यो नही वली एवुं पण कयुं के ए चार पूर्व तमारे बीजा कोइने हवे
जणाववा नही तिहांथी पाछला चार पूर्वनो ज्ञान विछेद थयो अने दश पूर्वनुं ज्ञान रह्युं ए
श्रीथुलिभद्र आचार्य श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाण पछी बशेने पन्नर वर्षे देवलोक गया ए
सातमो पाट कह्यो ॥ ७ ॥ ॥ आंही सुधी एक श्रीजंबुस्वामी केवली थया अने बीजा पांच
सर्वश्रुत केवली थया. हवे श्रीथुलिभद्रना पाटे बे शिष्य थया एक तो श्रीआर्य महागिरि ए
लापत्य गोत्री अने बीजा श्रीआर्य सुहस्ति वाशिष्ट गोत्री ए बे आचार्य भेगा तेमां आर्य सु
हस्तिसूरिनो संबंध कहे छे. ते वखत जिनकल्प विछेद गयो हतो तो पण श्रीआर्य महागिरि
जीयें जिनकल्पनी तुलना करी एटले जिनकल्पनी पेठे चालता. एक दिवस श्रीआर्य सुहस्ति
सूरि कोइ शेठने घेर उपदेश आपे छे एटलामां श्रीआर्य महागिरिजी गोचरीयें आव्या तेमने
देखीने श्रीआर्य सुहस्ति तरत उठीने ऊभा थया तेवारें शेठे पुछयुं के ए महात्मा कोण छे?
त्यारें आर्यसुहस्ति सूरियें शेठनी आगल आर्य महागिरिजीनी स्तवना करी सर्व वृत्तांत कयुं ॥
एक समये दुकाल पड्यो धान खावाने मलवुं मुसकिल थयुं तेथी लोक सर्व दुःखी थया छे, जे
राजा जेवा हता ते पण रांक जेवा थइ गया छे तो पण श्रावक लोको साधुउने दान आपे
छे. साधुउने घणी भिक्षा मलती देखीने एक भिखारी साधुनी पछवाडे चालवा लाग्यो अने
बोल्यो के मने खावाने आपो तमारे घणुं खावानुं मले छे साधुयें कयुं के अमारा गुरुने पुछी
तेनी आज्ञा लइ आव. तेवारें भीखारी गुरुनी पासें आव्यो गुरुये कयुं के जे अमारा जेवो

होय तेने अमे आपीयें. जिखारीयें कह्युं के जो तमारा जेवो मने पण करी ल्यो. ते सांजली गुरुयें पण लाज जाणी तेने दीक्षा आपीने तेनी इछा मुजब जोजन कराव्युं अने सुहस्ति सूरियें कह्युं के शुद्ध जाव राखजो एटलामां तेने उलटी थइ तेवारें सर्व साधु तेनो वैयावच्च करवा लाग्या तेथी जिक्षुयें चारित्रनी अनुमोदना कीधी अने मरण पाम्यो तिहांथी मरीने उज्जयणी नगरीमां श्रेणिक राजाने पाटे कोणिक राजा, तेना पाटे उदायिन राजा, तेना पाटे नंद नामे नव राजानां नव पाट थया अहींसुधी श्रेणिकथी मांमी बार पाट थया तेरमे पाटे चंद्रगुप्त, चौदमे पाटे बिंदुसार, पन्नरमे पाटे अशोकश्री अने शोलमे पाटे अशोकश्रीनो पुत्र कुणाल थयो ते कुणालनो पुत्र संप्रतिनामे राजा थयो, जनमतांज तेना दादायें तेने राज्य आप्युं ते अनुक्रमे त्रण खंम पृथ्वीनुं राज्य जोगवनारो थयो. हवे एक दिवस ते संप्रतिराजा गोखमां बेठो छे तेणे रथयात्रामां आर्य सुहस्तिसूरि जाय छे तेने दीठा तेना योगें जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेथी पूर्वे जिक्षुना जवमां पोते साधु थयो हतो ते सर्व दीठामां आव्युं तेवारें गोखथी नीचे उतरी गुरुने पगे लागीने पुछ्युं के हे स्वामी अव्यक्त सामायिकनुं शुं फल? गुरुयें कह्युं राज्यादिप्राप्ति थाय ते सांजली संप्रति राजा वली विशेष दृढ थइने गुरुने पूछवा लाग्यो के हे स्वामी मने आप उलखो छो? तेवारें गुरु उपयोग आपीने बोल्या के तुं जिक्षुना जवमां अमारो शिष्य हतो तो हवे तने राज्य मल्युं माटे धर्मवृद्धि कर एवुं गुरुनुं वचन सांजलीने राजायें श्रावकपणुं लीधुं अने सवालाख जिनमंदिर नवा कराव्या सवाक्रोड़ी जिनबिंब प्रतिष्ठाव्या, तेर हजार जीर्णो[illegible]

मालम पडती नथी वली गुरुयें कह्युं
थाकसो तो नित्य करीयें जयें पण पनी मालम पडती नथी वली गुरुयें कह्युं
ते चोकसी करो पछी शिष्यो ए गोचरी करतां छोकराउने पुछ्युं अरे तमने नित्य
कि. ापी आपे छे? तेवारें छोकरा बोल्या महाराज सर्व आपणो प्रताप छे अमे
लाडु प्रमुख खाद्यं छेयें अने आपने पण वहोरावीयें छेयें राजानो जं
ए सूट ए ते सांजली शिष्यो ए आवीने आर्यमहागिरिजीने कह्युं आर्यमहागिरियें
एणुं आ राजद्रव्य छे पछी आर्यसुहस्तिने कह्युं के देवाणुप्रिया तमे आहारनी चोकसी करो
नथी करता? आपणने राजद्रव्य आवे छे ते केम? तेवारें आर्यसुहस्ति विना उपयोगथी
राजद्रव्य तो सर्वत्र छे, कहो राजद्रव्य क्यां नथी? आर्यमहागिरिजी बोल्या आवी
गानी वात तमे केम करो छो? आजे तमे पोतेंज एवुं बोलो छो तेवारें तो प्रसिद्धपणे
लोप लागवानुं थाशे माटे हवे तमारे ने अमारे सांभोगिकपणुं नथी एवुं कहीने अन्यत्र
स्थानके विहार करी गया इहां सुधी तो एकज समाचारी हती अने एकज गच्छ हतो तथा

छोडाव्या, साधुउंना वेश पहेरावीने पोताना सुभटोने अनार्य जेवा देशोमां मोकली तिहांना लोकोने समजावीने साधुउने अनार्य देशोमां विचराव्या तथा बीजा घृत, गोळ, वस्त्र प्रमु खना सर्व व्यापारीउंने तेमज कंदोइ लोकोने कहेवरावी मूक्युं के तमे शुद्ध आहारादिक मु निउंने वहोरावजो तेना पैसा जे थाय ते राजाली पासेथी लइ जाजो पण ए वातनी साधु उंने खबर पडवा देशो नहीं लोको पण तेमज साधुउंने देवा लाग्या, साधुउ पण अशुद्ध न जाणता थका आहारादि लेवा लाग्या, जाणे शुद्धज ने एम समजवा लाग्या, एटलामां आ र्यमहागिरिजी बोल्या हे शिष्यो आ एवो स्निग्ध आहार नित्य केम लइ आवो नो? तेवारें शिष्यो बोल्या अमे चोकसी तो नित्य करीयें लेयें पण एनी मालम पडती नथी वली गुरुयें कह्युं हवे सारी रीते चोकसी करो पछी शिष्यो ए गोचरी करतां वोकराउंने पुछ्युं अरे तमने नित्य लाडु प्रमुख किहांथी आवे ने? तेवारें नोकरा बोल्या महाराज सर्व आपणो प्रताप ने अमे पण तमारे प्रतापे लाडु प्रमुख खाइयें लेयें अने आपने पण वहोरावीयें लेयें राजानो भं डार अखूट ने ते सांभली शिष्यो ए आवीने आर्यमहागिरिजीने कह्युं आर्यमहागिरियें जाण्युं आ राजद्रव्य ने पछी आर्यसुहस्तिने कह्युं हे देवाणुप्रिया तमे आहारनी चोकसी करो नो के नथी करता? आपणने राजद्रव्य आवे ने ते केम? तेवारें आर्यसुहस्ति विना उपयोगथी बोल्या के राजद्रव्य तो सर्वत्र ने, कहो राजद्रव्य क्यां नथी? आर्यमहागिरिजी बोल्या आवी शिथिलपणानी वात तमे केम करो नो? आजे तमे पोतेंज एवुं बोलो नो तेवारें तो प्रसिद्धपणे दोष लागवानुं थाशे माटे हवे तमारे ने अमारे सांभोगिकपणुं नथी एवुं कहीने अन्यत्र स्थानके विहार करी गया इहां सुधी तो एकज समाचारी हती अने एकज गछ हतो तथा

एक सांजोगिपणो आचार्योनो चाल्यो. परंतु आंही श्रीआर्य सुहस्ति सूरिथी सांजोग जिन्न थयो आर्यसुहस्ति चारित्र पाली देवलोक गया ए आठमो पाट जाणवो ॥ ८ ॥ ॥ हवे श्री आर्यसुहस्तिना वे शिष्य थया तेमां एकतो सुस्थित अने बीजो सुप्रतिबद्धक एमणे कोटी वार सूरिमंत्र जप्यो काकंदी नगरीमां जन्म्या तेमनो व्याघ्रापत्य गोत्र हतुं ए नवमो पाट ॥ ॥ ९ ॥ ॥ एमने पाटे श्रीआर्य इंद्रदिन्नसूरि कौशिक गोत्रीया थया ए दशमो पाट ॥ १० ॥ श्रीआर्य इंद्रदिन्न सूरिने पाटे श्रीआर्य दिन्नसूरि गौतम गोत्रीया थया ए अगीआरमो पाट ॥ ॥ ११ ॥ ॥ श्रीआर्यदिन्नने पाटे श्रीआर्य सिंहगिरि कौशिक गोत्रीया थया जे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या हता ए बारमो पाट ॥ १२ ॥ ॥ आर्य सिंहगिरिने पाटे आर्यवज्रसूरि गौतम गोत्रीया थया ए तेरमो पाट ॥ १३ ॥ ॥ आर्यवज्र सूरिने पाटे आर्यवज्रसेन सूरि उत्कौशिक गोत्री थया ए चौदमो पाट ॥ १४ ॥ ॥ एमना चार शिष्य थया एक नाइल, बीजो पोमिल, त्रीजो जयंत अने चोथो तापस ए चारने नामे एमनी चार शाखा निकली ए पन्नरमो पाट ॥ १५ ॥ ॥ हवे तेरमा आर्यसिंहगिरिथी मांमीने त्रण पाटनुं वर्णन कही देखाडीयें ठेयें ते आवी रीते ठे के श्रीसिंहगिरिनी पासेथी सुनंदानो नाइ आर्यसमित तथा बीजो सुनंदानो जरतार धनगिरि ए वे जणे दीक्षा लीधी अने सुनंदा पोते गर्जवती हती तेने तुंबवन गाममां मूकी दीधी पठी सुनंदाने पुत्र थयो ते वखतमां बीजी पडोसीनी स्त्री बोली के बाइ जो आज एना बाप धनगिरियें दीक्षा न लीधी हती तो आ पुत्रना जन्मनो महोटो महोत्सव थात पण हमणा तो पिता विना बीजो कोण आवीने महोत्सव करे. एवी वात सांजलीने ते बालकने जातिस्मरण ...





सुनंदा पोताना भरतार धनगिरिजीने छोकरो वहोरावेछे. झोलीमां नाखी साधु लई जायछे.

ताने राजी राखीश तो ए म्हारी माता मुजने ठोडशे नही माटे कोइ रीते एने कंटाळो उ
पजे तेवो उपाय करुं तो ए मने त्यागी देशे, तेवारें हुं दीक्षा लइश एवुं जाणी माताने उद्वेग
करावधाने माटे नित्य रुदन करवानुं चालुं कर्युं केमके एने तो चारित्र लेवानो जाव वर्त्ते ठे
तेवारें बालकना रुदनथी माता घणी उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं जे हुं आ पुत्रने शुं
करुं! कोइने आपी देउं तो ठीक एवा अवसरमां सिंहगिरि आचार्य तिहां पधार्या तेवारें धन
गिरि गोचरीयें जवा लाग्या तेने गुरुयें ज्ञान दृष्टीयें विचारीने कर्युं के आज तमोने गोच
रीमां सचित्त अचित्त वस्तु जे मळे ते लइ लेवी, हवे धनगिरि गोचरी फरतां फरतां सुनंदाने
घरे गया सुनंदा बोली आ तमारा पुत्रें तो मने उलटो संताप करी दीधो ठे माटे एने लइ
जाउ. साधुयें कर्युं हमणा तो तुं आपे ठे पण पाठळथी दुःख करीश, सुनंदा बोली हुं दुःख
नही करुं तमे सुखे लइ जाउ. तेवारें धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी
करी पुत्रने लइ झोळीमां नाखी उपासरे आव्या गुरुयें झोळी उपाडी तेमां जार घणो जाणी
तेवारें बोल्या के आ शुं वज्र ठे के? एवुं कहीने झोळी उघाडी तो मांहे बालकने दीठो
तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं हवे उपासरामां आव्या पठी बालकें रुदन करवुं बंध कर्युं गुरुयें
सय्यातरनी देवाचाळी श्राविकाने ते बालक सोंप्यो. तेणे पारणामां राख्युं ते जेवारें ठ
महीनानो थयो तेवारें तिहां शालामां साध्वीउ जणवा करे ठे तेमना वचन सांजळी पार
णामां सुतां सुतां अगीआर अंग जणी गयो. अनुक्रमें जेवारें त्रण वर्षनो थयो तेवारें सुनंदा
बोली जे हुं म्हारो पुत्र पाठो लइश. तेने संघे कर्युं के ए गुरुनो माल ठे ते गुरु जाणे पण
अमाराथी अपाय नही पठी राज दरबारमां गइ तिहां संघनी विनंतिथी गुरु पण दरबारमां



सुनंदा पोताना भरतार धनगिरिजीने छोकरो वहोरावेछे. झोळीमां नाखी साधु लई जायछे.

ताने राजी राखीश तो ए महारी माता मुजने छांडशे नहीं माटे कोइ रीते एने कंटाळो उ
पजे तेवो उपाय करूं तो ए मने त्यागी देशे, तेवारें हुं दीक्षा लइश एवुं जाणी माताने उद्वेग
करावयाने माटे नित्य रुदन करवानुं चालु कर्युं केमके एने तो चारित्र लेवानो भाव हतो ते
तेवारें बाळकना रुदनथी माता घणी उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं जे हुं आ पुत्रने शुं
करूं! कोइने आपी देउं तो ठीक एवा अवसरमां सिंहगिरि आचार्य तिहां पधार्या तेवारें धन
गिरि गोचरीयें जवा लाग्या तेने गुरुयें ज्ञान दृष्टीयें विचारीने कह्युं के आज तमोने गोच
रीमां सचित्त अचित्त वस्तु जे मळे ते लइ लेवी, हवे धनगिरि गोचरी करतां करतां सुनंदाने
घरे गया सुनंदा बोली आ तमारा पुत्रें तो मने उचाटो संताप करी दीधो छे माटे एने लइ
जाउ. साधुयें कह्युं क्षमणा तो हुं आपुं ने पण पाछळथी दुःख करीश, सुनंदा बोली हुं दुःख
नहीं करूं तमे सुखे लइ जाउ. तेवारें धनगिरिजी पणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी
करी पुत्रने लइ झोळीमां नाखी उपासरे आव्या गुरुयें झोळी उपाडी तेमां भार घणो जाण्यो
तेवारें बोल्या के आ शुं वज्र छे के? एवुं कहीने झोळी उघाडी तो मांहे बाळकने दीठो
तेनुं वज्र एवुं नाम दीधुं हवे उपासरामां आव्या पछी बाळकें रुदन करवुं बंध कर्युं गुरुयें
सध्यातरनी देयावाळी श्राविकाने ते बाळक सोंप्यो. तेणे पारणामां राख्युं ते जेवारें त्र
महीनानो थयो तेवारें तिहां शाळामां साध्वीउ जण्या करे छे तेमना वचन सांभळी पार
णामां सुतां सुतां अगीआर अंग भणी गयो. अनुक्रमें जेवारें त्रण वर्षनो थयो तेवारें सुनंदा
बोली जे हुं महारो पुत्र पाछो लइश. तेने संघे कह्युं के ए गुरुनो माल छे ते गुरु जाणे पण
आपणाथी अपाय नहीं पछी राज दरबारमां गइ तिहां संघनी विनंतिथी गुरु पण दरबारमां

आव्या राजायें एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीये तेनो ए पुत्र जाणवो. तेवारें मातायें लाडु तथा घुंघरा प्रमुख बालकने देखाड्या परंतु बालकें तेनी सा हामुं पण जोयुं नही पछी गुरुयें बालकने कह्युं के आ ओघो ताहारे लेवो होय तो लइ ले तेवारें बालकें ओघो ग्रहण कस्यो अने नाचवा कूदवा लाग्यो राजायें कह्युं न्याय थइ चुक्यो. एम कही बालक गुरुने आपी दीधो ते जेवारें आठ वर्षनो थयो तेवारें दीक्षा लीधी ते वखत सुनंदायें कह्युं के महारो पुत्र पण तमे लइ लीधो तो हवे मने पण दीक्षा आपो, गुरुयें सुनं दाने पण दीक्षा दीधी ॥ एक दिवस उज्जयणीना मार्गमां वज्र रूषीना पूर्वभवनो मित्र कोइ देव हतो ते मनुष्यनुं रूप करीने वज्र रूषीनी परीक्षा करवाने अर्थें कोलानी भीक्षा देवा लाग्यो वज्र रूषीयें जाण्युं जे कोलानी रुतु तो हमणा नथी तो आ वखतमां ए कोला क्यांथी लाव्यो, ए तो कोइ देवतायें वल कस्यो होय एम जणाय छे माटे देवपिंम न लेवो एवुं जाणी भिक्षा लीधी नही तेवारें देवें संतुष्ट थइने वैक्रिय लब्धि आपी फरी वली उ नालाना दिवसोमां गेवरनी परीक्षामां देव चलाववा आव्यो तेमां पण वज्रमुनि चलायमान थया नही तेवारें देवतायें आकाश गामिनी विद्या आपी हवे एक दिवस गुरु वंमिल भूमियें गया अने केटलाएक साधुउ गोचरीयें गया तेवारें वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुउना संथारा दिक चारे बाजु मूकी पोते वचमां बेशीने जेवी रीते गुरु वाचना आपे तेवी रीते जूदी जूदी अगीआरे अंगनी वाचना देवा लाग्यो गुरुयें पण बारणे गना उना रहीने सर्व वाचना सांजली पछी बालकने कांइ पण शंका पडे नही तेवी रीते महोटा स्वरथी निसिहि कहीने गुरु उपास रामां आव्या तेवारें ...



[illegible] सुनंदाएं राजसभामां फरीयाद करी परंतु राजायें न्याय करी ते छोकरो अपाव्युं नही.

वीने पूर्वभवनो मित्र तिर्यक जृंभक जातिना [illegible]
[illegible] ने तेना सहित [illegible]
[illegible], नृत्य, वाजित्र प्रमुख महोत्सव करतां थको त्यां ने तेना सहित [illegible]
[illegible] आव्या अने जैनना चैत्यनो महिमा वधार्यो, श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो, [illegible]
नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो ॥ तथा वळी एक दिवस दक्षिण मार्गमां [illegible]
श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं तेवारें साधुजनी पासेथी गोचरीमां सुंठ म
[illegible] लइ आव्या तेने पोते कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाइशुं पण चू
न रही गइ, एटलामां वळी ते पडिकमणो करती वखते पडिलेहणा करतां नीचे पडी
गइ तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दश पूर्वधर छुं तेने आवी चुक ते वळी केम पडी? एथी जाणुं
जे हवे मारुं आयुष्य घणुं थोडुं जणाय छे माटे अनशन करवानो विचार कर्यो अने
पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार दुकाळी पडशे तेवारें तुं सोपारपुर पाटण जाजे, कोइ
अने पूछे के सुभिक्ष क्यारे थशे तेवारें ताहारे एम ध्यानमां राखवुं के जे दिवसे लाख मो
ल्यनी एक हांडी चडे ते दिवसथी बीजे दिवसे सुकाळ थाशे एवुं चतो तेलीने जवाब आपजे
त्यारे तो हवे अनशन करीशुं एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विहार कर्यो,
पोतानी पासे रहेला साधुओने जेवारें निद्रा नही मळे तेवारें निश्चिंत करीने केटला एकने
जणाव्या, पछी पांचसो साधुओने लइने अनशन करवाने माटे चाल्या तेमां एक न्हानो चेलो
हतो तेने जोडाव्यो के तुं हमां रहेज हुं आवुं छुं पण ते चेलाएं मोकली कर्युं जे हुं तो तमारी
पराणे आवीश तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो तेवारें चेलाएं जाण्युं जे गुरु महाराजने
प्रतीति न थाय तेम करुं तो ठीक एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना मूळमां आवी तपेली शिला

ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या, धनशेठ पण पोतानी महारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री अने एक क्रोड सोनामोरो लइ गुरुनी पासे आवी नेट करवा लाग्यो गुरुयें कन्याने प्रति बोध आपी धर्म पमाडीने पोतानी शिष्यणी करी ॥ हवे एकदा वज्रस्वामीयें पदानुसारिणी लब्धियें करीने श्रीआचारांग सूत्रना महापरिज्ञा नामा अध्ययनमांथी मानुष्योत्तर पर्वत पर्यंत जइ शकाय एवी आकाशगामिनी विद्या काहाडी वली एक समय उत्तर दिशामां डुकाल पडतो जाणी श्रीसंघने पट कपडा उपर बेशाडीने अन्यस्थानके लइ जवा तयार थया एवामां तिहां सय्यात्तर बोल्यो महाराज हुं पण एमनो साधर्मि छुं तेवारें तेने पण पट उपर बेशाडीने आकाशमां रह्या थकाज स्थानके स्थानके श्रीजिनचैत्य वंदावता थका महानिशि नामा नगरीयें गया. तिहां यद्यपि सुगाल तो छे तथापि राजा बौधमतवालो छे माटे तेणे बौधदर्शनीना जक्त लोकोना कहेवा उपरथी पंजोसणना दिवसोमां जैनमंदिरमां फूल लइ जवा देवा नही एवो बंदोवस्त कर्यो ते जोइने संघे श्रीवज्रस्वामीने विनंति करी महाराज फूलनो अटकाव थाय छे? वज्रस्वामीयें कह्युं तमे चिंता करशो नही हुं एनो उपाय करुं छुं एम कही आकाशमां उडीने माहेश्वरी पुरीमां हुताशन नामा देव तेना वनमां पोताना पितानो मित्र वनमाली हतो तेने जइ कह्युं के तमे फूल तयार राखजो एवुं कहीने पछी हिमवंत पर्वत उपर गया तिहां पद्मद्रहना कमलनिवासिनी लक्ष्मीदेवीयें श्रीवज्रस्वामीने वांद्या अने कहेवा लागी हे स्वामी! आपनी दासीने कांइ हुकुम फरमावो. तेवारें आचार्यें कह्युं पूजाने अर्थे फूल जोइयें छेयें तिहां लक्ष्मीदेवी देव पूजाने अर्थें लक्षदल कमल लइ आवी हती ते हाजर कर्या तेने लइने फरी पाछा वलतां

विमानमां बेशीने पूर्वजवनो मित्र तिर्यक् जृंभक जातना देव [illegible]
गीत, नृत्य, वाजित्र प्रमुख महोत्सव करतो थको रह्यो ने तेना सहित आवीने पुष्पो आप
कोने आप्या अने जैनना चैत्यनो महिमा वधायो, श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो, ते
नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो ॥ तथा वली एक दिवस दक्षिण मार्गमां
जाता थका श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ आव्युं तेवारें साधुउनी पासेथी गोचरीमां सुंठ म
गावी ते साधुउ लइ आव्या तेने पोते कानमां धरी राखीने विचार्युं जे पछी खाइशुं पण नू
लमां एमज रही गइ, खवाणी नही ते पडिक्कमणो करती वखते पडिलेहणां करतां नीचे पडी
गइ तेवारें गुरुयें विचार्युं जे हुं दश पूर्वधर हुं तेने आवी चूक ते वली केम पडी? एथी जाणुं
जे हवे महारुं आयुष्य स्वल्प रहेलुं जणाय ने माटे अनशन करवानो विचार कर्यो अने
पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार डुकाली पडशे तेवारें तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ
तने पूछे के सुनिक्ष क्यारे थशे तेवारें ताहारे एम ध्यानमां राखवुं के जे दिवसे लाख मो
ल्यनी एक हांमी चडे ते दिवसथी बीजे दिवसे सुगाल थाशे एवुं थतो देखीने जवाब आपजे
अमे तो हवे अनशन करीशुं एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विदाय कर्यो,
पोतानी पासे रहेला साधुउने जेवारें भिक्षा नही मले तेवारें विद्यापिंड करीने केटला एकने
जमाड्या, पछी पांचशे साधुउने लइने अनशन करवाने माटे चाल्या तेमां एक न्हानो चेलो
हतो तेने नोलव्यो के तुं इहां बेश हुं आवुं हुं पण ते चेलायें मोहथी कह्युं जे हुं तो तमारी
पछवाडे आवीश तो पण गुरुयें समजावीने राख्यो तेवारें चेलायें जाण्युं जे गुरु महाराजने
अप्रीति न थाय तेम करुं तो ठीक एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमां आवी तपेली शिला

गार ते मेलायें अनशन करी दीधो, ते बालक हतो माटे सुकुमार पणायी तत्काल शुन ध्याने मरण पामी देवलोक गयो, देवतायें मेला थइने तेनो महिमा कस्यो, तेवारें बीजा साधुयें पण विशेष दृढ थइने अनशन कस्यां परंतु मिथ्यात्वी देवो आवीने साधुने अ शनमां मोदकनी निमंत्रणा करवा लाग्या अने बोल्या के हे महाराज आ शुद्ध निर्दोष आ हार छे ते ल्यो तेवारें साधुयें जाएयुं जे एने अप्रीति छे एवुं जाणी नजीकना बीजा पर्वत उपर जइने अनशन कस्युं शुन ध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी प्रमुख देवलोक गया, तेवारें इंड महाराजे रथ उपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा देइ सर्व साधुने वांद्या तिहां ते इंड महाराजना र थनी रेखा मंडाणी तेथी ते पर्वतनुं रथावर्त एवुं नाम थयुं तथा तिहांना वृक्ष पण साधुने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमो पूर्व तथा चोथो अर्द्धनाराच संघयण विछेद गया तेवार पछी वज्रसेनाचार्य सोपारा नगरमां जिनदत्त श्रावक तथा तेनी जार्या ईश्वरी नामे छे ए बेहुने प्रथम श्री वज्रस्वामीनो प्रतिबोध थयो हतो तेमने घेर गोचरी गया तिहां देखे तो धान मले नही तेवारें शेठ अने शेठा णीयें पोताना चार पुत्रो सहित लाख मूल्य धान्यनी हांमी चडावीने विचार कस्यो के सर्व आपणे छ जणायें आ रांधेला अनाजमां जहेर मेलवी खाइने पछी अनशन करी लेवुं एवुं चिंतवी हांमीमां जहेर नाखवाने तयार थया छे एटलामां वज्रसेन आव्या तेमणे ते कृत्य देखीने पुछ्युं के, शुं? मरवानो उपाय करो छो!! तेवारें शेठाणी बोली धन तो अमारा पासे घणुं छे परंतु धान्य मलतुं नथी तेवारें वज्रसेन बोल्या. गुरुयें कह्युं छे के लाख द्रव्यनी हांमी च डशे तेने बीजे दिवसे सुगाल थाशे ते सांजली शेठाणीने पण [illegible]

माटे बोली के जो सुगाल थइ जशे तो आ मद्दारा चारे पुत्र हुं आपने आपीश ने तमे चा
रेने दीक्षा आपजो एवी प्रतिज्ञा करी ढांमीमां जहेर नाखवुं बंध कर्युं तेवार पन्नी चार प
होर गया केडे केटलाक वाहाणो चनढ वायराना योगयी नेटे निकली गया हता ते सारो
वायरो वाहायी पातां आव्या तेमां जुवार नरेली हती ते लोकोयें लीधी, सुगाल थयो, ते
धान्यथी जुगन्धार थयो तेथी जुगंधरी एवुं नाम धानतुं थयुं एने लोक नापामां जुवार कहे
ने पन्नी शेठ अने शेठाणीयें एक नागेंड, बीजो चंड, त्रीजो निर्वृत्ति अने चोथो विद्याधर ए
चारे पुत्रोने दीक्षा अपावी अने पोते पण दीक्षा लीधी. ते चारे साधुउ बहुश्रुत आचार्य
थया तेनी चार शाखा निकली. हवे विस्तार वाचनामां केटलाएक कुल, केटलाएक गण,
केटलिएक शाखाउ कहेली ने ते सूत्रथ। सुगम ने माटे लखता नथी सूत्र उपरथीज जाणी
लेवुं अने अर्थ पण सूत्र बोले ते प्रमाणे करी देवो ॥ पुणोथ्थ्र्जजसज्जहाउपुरउ ॥ वली आर्य
[illegible] आगल थविरावली आ प्रमाणे जोवी ते कहे ने ॥ थेरस्सणंथ्रज्जजसज्ञदस्सतुंगिया
[illegible] ॥ थविर आर्य जसजड तुंगीयायण गोत्रीयाना ए वे शिष्य एवो अर्थ सूत्रनो
[illegible] अमे तो मात्र कोइक शाखानो संबंध लखिवुं ॥ थविर रोहगुत्त
[illegible] ॥ [illegible] त्रैराशिक मत निकल्युं तेनी कथा कहीयें ठयें श्रीमहावीरथी पांचशो
[illegible] श्रीगोहगुप्ताचार्यनो गुप्त नामा शिष्य हतो ते अंतरंजिका नामे नग
[illegible] पोट्टशाला नामे तापस ने ते पण ते नगरीमां आव्यो
[illegible], [illegible], हरिण, सूअर, काग, अने पंखी ए सात चीजो
[illegible] ने तेना मदथी ते, सर्व लोकोने एम कहेके

महारो पेट फाटीने कदाच विद्या बाहेर चाली जाय तेना भयथी में महारा पेट उपर पाटा बांधी राख्या छे एवा अभिमाननी वातो करे वली एक जांबूनी डाली हाथमां राखे अने लोको आगल एवुं कहे के आ जंबूद्वीपमां महारी साथे जीतवावालो कोइ नथी एवी रीते ते तापसे आवीने नगरीना राजाने पण कह्युं वली कह्युं के तमारा नगरमां कोइ वाद करवा वालो होय तो सुखेथी तेने तेडावीने महारी साथे वाद करावो नहीकां मने जीतपताका आपो. तेवारें राजायें पडह वजडाव्यो के जे वाद करवाने इछा राखतो होय ते आ पडह रोकी राखे एटलामां ते गुप्तनामा रोहगुप्ताचार्यनो शिष्य गाममां गोचरीयें आव्यो छे ते पडह सांभलीने बोल्यो हुं वाद करीश एवुं कही गुरुनी पासे आवी पडहनी हकीगत कही गुरु बोल्या ए वात तें ठीक करी नही केमके ते योगी क्रोधी छे माटे तहारा उपर विद्या च लावशे तेवारें शिष्यें कह्युं आप जैनी वेगा थका ते जितपताका लइ जाय तो पछी आपणी शी विशेषता कहेवाय! एवो शिष्यनो निश्चय जाणीने गुरुयें तेने सात विद्याउ आपी वली पण कह्युं जो कदापि तने कोइ अधिक उपद्रव थाय तो आ उघो मंत्री आपुं हुं तेने तुं फेर वजे तेथी सर्व उपद्रव निवर्त थइ जाशे एवी रीते गुरु पासेथी आज्ञा लइने बलश्रीनामा राजानी सभामां आवी योगीने कहेवा लाग्यो जे तहारो वाद शुं छे ते सांभलाव योगी छल करीने बोल्यो अमारा मतमां एक जीवराशि बीजो अजीवराशि ए बे राशि कही छे एवुं यो गीनुं बोलवुं सांभलीने शिष्यें विचार्युं जे आ वातनो जो हुं हाकारो करीश तो ए कहेशे के में महारी वात एने मंजुर करावी, महारुं मत एणे मान्युं, तेथी लोको जाणशे के शिष्य हारीगयो

अजीव अने त्रीजो नोजीव एवी त्रण राशि छे. तेवारें योगी बोल्यो तुं नोजीव राशि केवी रीते कहे छे? शिष्यें तरत एक दोरो वाटीने जूमि उपर नाख्यो ते हालवा लाग्यो त्यारें कह्युं के जो आ नो जीव छे, एवी घणी युक्तियो लगाडीने संसारमां सर्व मली जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण वातो स्थापन करी आपी तेथी योगी हारी गयो पछी योगीयें विद्याई चलाववा मांडी तिहां प्रथमतो महोटा मंकने मारवावाला एवा वींछीउ बनाव्या तेवारें चेलायें गुरुयें बतावेली वि द्याना बलथी मोर बनाव्या ते आवीने सर्व वींछीयोने खाइ गया, तेवारें योगीयें सर्प बनाव्या तिहां चेलाये नोलीयां बनाव्यां, योगीयें उंदर बनाव्या तेवारें चेलाये बिलाडी बनावी, यो गीयें तीखा सींगडावाला हरिण बनाव्या तेवारें चेलायें चितरा बनाव्या तेणे आवीने सर्व हरिणोने मारी नाख्या, योगीयें सूअर बनाव्या तेवारें चेलायें सिंह बनाव्या, योगीयें काक बनाव्या, चेलायें घूड बनाव्या, योगीयें पंखी बनाव्या, चेलायें बाज बनाव्या, एमां पण योगी हार खाइ बेठो तेवारें गर्दनी विद्या चलावी तेवखत चेलाये हाथ फेरव्यो तेथी तेनी विद्या नाश गइ, एरीतें योगी हारीगयो अने चेलो जीत करीने घणा लोकोनी सायें परिवर्यो थको गुरुनी पासें आव्यो गुरुयें पुछ्युं केवीरीतें जीती आव्यो तेवारें त्रण राशि थापी तेथी जीत्यो एवुं कह्युं त्यारें गुरु बोल्या हे वत्स तें आ सारी वात नही करी, जगवानना मतथी तुं विपरीत बोल्यो, माटे राजसजामां जइने मिछामि डुक्कडं दइ आव अने वादीने जीतवाने माटे जे कु युक्ति लगाडी तेनो संघमां मिछामि डुक्कडं दइ आव, जो मिछामि डुक्कडं नही देइश तो जैनम तनो उत्थापक थइश ते सांजली शिष्य बोल्यो हवे महारा मुखथी हुं केम जुठो पडुं, महाराथी तो मिछामि डुक्कडं देवाय नही, में खोटुं बोलुंज थापन कर्युं छे! राशितो त्रणज छे, गुरुयें

कह्युं के तुं मह्यारी सार्थे पण जो वाद करवा इछतो होय तो चाल राजसभामां जइ आपणे बे वाद करीयें एम कही गुरु पोताना शिष्यने लेइने राजानी पासें आव्या अने कहेवा लाग्या के हे राजन् आ मह्यारा शिष्यें वादीने जीतवा माटे जे त्रण राशि थापन करी ते वात जूठी छे, ए अमारुं कह्युं मानतो नथी ने मह्यारी साथे वाद करशे तेनी वचमां आप साक्षी धर रहो तो अमे वाद करीयें. राजायें कह्युं सुखे वाद करो पछी ते बेहु गुरु शिष्य वाद करवा लाग्या तिहां छ महीना सुधी वाद कस्यो १४४४ प्रश्न कुतर्कना शिष्ये थापन करी पूछ्या ते सर्व प्रश्न गुरुयें त्रोडी नाख्या तो पण समज्यो नही राजाने घणो वखत खोवो पड्यो ते वारें राजायें जाण्युं जे हुं केटला दिवस एउंना ऊगडामां खोटी थाउं! एम विचारी गुरुने कह्युं हे स्वामी आपनुं बोलवुं सर्व साचुं छे पण मह्यारा राज्यसंबंधि कामकाजमां बिगाड थाय छे माटे हवे मने साक्षीथी मुक्त करो. गुरुयें कह्युं आवती काले सर्व रगडो मटाडी आपीश एम कही बीजे दिवसें वाद ठहेरावीने कुत्रिकापणमां जे वस्तु त्रण लोकमां होय ते मले छे माटे जो तुं साचो होइश तो नोजीव ए चीज पण मलशे; ते लइ आवीश? ते वात चेलायें पण मान्य करी अने राजा लोकोये पण कह्युं के ठीक छे पछी चेलायें कुत्रिकापण जइने जीव, अजीव अने नोजीव माग्या तेवारें देवें जीवने बदले तो उंदर लावीने आप्यो तथा अजीव माग्युं तेवारें पछर लावीने आप्यो पछी चेलायें जेवारें कह्युं के नोजीव लाव तेवारें वे त्रण वार तेहिज पूर्वली चीज लावीने आपे पण नोजीव आपे नही एवामां आकाश वाणी थइ के जगतमां जीवने अजीव ए बेज राशि छे पण त्रीजी कोइ राशि नथी तेवारें सर्व लोक बोल्या गुरु साचा ते गुरुयें शिष्यने कह्युं

मिच्छामि डुक्कडं आप ते सांभली शिष्य बोल्यो एम कांइ हुं मानुं नही तेवारें गुरुने रीश चडी तेथी नस्मनुं कुंभो तेना माथा उपर नाखीने गच्छथी बाहेर काहाडी मूक्यो तेणे जइ वैशे षिक मत थापन कर्युं तेमां नव द्रव्य, सत्तर गुण, पांच कर्म, त्रण सामान्य, एक विशेष, एक समवाय, ए छ पदार्थ प्ररूप्या एना प्ररूपवाथी चोदशें चुमालीश नेद थया तिहां षट्गोत्रथी उलूका षडुत्थासोवउलूकश्चषडुलूकः ॥ एवा नाम अने गोत्रना मिलापथी नाम स्थापन थयुं, ॥ इति रोहगुप्त कथा संपूर्ण ॥ ॥ हवे थविर प्रियग्रंथथी मध्यमशाखा त्यांथी त्रैराशिक शाखा थइ श्रीहर्षपुरनामा नगर जेने हमणा अजमेर कहे ने ते कहे ने तेनो अधिकार आ प्रमाणे निकली तेमां त्रणशें जैनमंदिर अने चारशें अन्यदर्शनीउना देरा हता तथा आठ हजार घर ब्राह्मणोना अने छत्रीश हजार घर वाणीयाउना हता वली नवसें बाग, सातसें वावडी, सा तसें दानशाला हती तिहां सुजटपाल नामे राजा राज्य करतो हतो एक दिवसें ब्राह्मणोये ... तिहां प्रियग्रंथसूरि पधार्या तेणे वासक्षेप मंत्रीने श्रावकोना हाथमां ... तिहां ब्राह्मणो होम करवाने सारु बकरो लाव्या हता ते

हवे आपणा धर्मना ...

... कोयें नक्तिना मिसे करीने पावडा ...

... तेगीना मनमातो महोटुं डुःख थयुं पण शरमनो मार्यो शुं करे! ना ...

... कांइ नोजन कर्युं कांइ नहीं कर्युं अने तरत तापस तिहांथी उठ्यो तेने श्रावको आदर ...

... तेना स्थानक उपर पोहोचाडवाने सायें चाल्या, मनमांतो एवुं समजता हता जे जो

हारी वात सांजलो जे तमे विचारा आवा कोमला कोमला पशुठने हणो हो, ते पशुठने हणवानुं पाप साजल्युं हे? जो नही सांजल्युं होय तो हुं तमोने कही संजलावुं हुं ते सांजलो. जे पशुने मारीयें ते पशुना जेटला रोम होय तेटला हजार वर्ष पर्यंत ते पशुनो मारनारो प्राणी नरकमां पडी डुःख जोगवे हे. वली जे कोइ सोनानो मेरुपर्वत वनावीने दानमां आपी दीये अथवा पृथ्वीनुं दान आपे तेटला दानथी पण अधिक फल जे एक प्राणी मरतो होय तेने वचावे ते जीवने मले हे माटे मरता प्राणीने वचाववा जेटलुं फल सोनाना दानथी तथा पृथ्वीना दानथी होय नही केमके वीजा सर्व प्रकारना दान जे हे तेनुं फल तो कालांतरमां खूटी जाय हे, जोगवाइ जाय हे, परंतु अजयदाननुं फल केवारें पण खूटे नही, सर्वथी श्रेष्ठ फल ते अजयदाननुंज हे. एवा तेना वचन सांजली यज्ञ करनारा निर्दयी ब्राह्मण लोको वोल्या तुं कोण हो? वकरो वोल्यो हुं अग्नि देव हुं, वकरो महारो वाहन हे, तमे पशुठने मारो हो तेना योगे महाडुःख तमने वेठवा पडशे, माटे तमारा उपर मने दया आवी तेथी उपदेश करवा आव्यो हुं. ब्राह्मणो वोल्या अमे धर्म थवाने माटे मारीये हैयें, वकरो वोल्यो अरे डुष्टो पशुवध करवाथी वली धर्म ते क्यांथी थवानो हे? एतो महोटुं जवरजस्त पापनुं स्थानक हे जो एनो मुद्दो तमारे पूछवो होय तो, जैनाचार्य श्रीप्रियग्रंथसूरिने पूछो, ते महाकृपापात्र हे माटे तमोने समजावी तमारो निस्तार करशे. तेवारें ब्राह्मणो सर्व प्रियग्रंथसूरि पासें पूछवा आव्या, तेमणे दया रूप शुद्ध धर्म वताव्यो ते वखत ब्राह्मणप्रमुख घणा लोको जैनी थया, एवा श्रीप्रियग्रंथसूरि हता एमनाथी मध्यमशाखा निकली ॥ तथा थविर आर्य समित गौतम गोत्रीथयी [illegible]

संबंध आ प्रमाणे छे ते कहे छे. आभीर देशमां, अचलपुर नगरना ...
बेन्ना ए बे नदीयो हती, तेनी वचमां ब्रह्म नामा द्वीप हतो तिहां पांचशें तापस वसता
हता तेमां एक तापस पोताना पगमां लेप लगाडी पावडीयो पहेरी कृष्णमेल बेन्ना नदीना
पाणीमांथी उतरतो हतो पण पाणीमां बूडे नही जेवी रीते थल उपर सुका मार्गमां चाल्या
जइये तेवी रीते पाणीमांथी चालीने गाममां पारणुं करवा आवे तेवारें लोक तेनी प्रशंसा
करतां थका बोले जे आ तापसनी जुओ केवी अथाग तपनी शक्ति छे, एवा जैनमां घणा
लोको मिथ्यात्वी थइ गया अने तापसनी भक्ति करवा लाग्या वली श्रावकोने कहे के जुओ
अमारा गुरुनो केवो प्रभाव छे? एवा प्रभावमां कांइ न्यूनता नथी. एवा उपदेशथी घणा
लोको मिथ्यात्वी थता देखीने श्रावकोयें श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितसूरिने बो
लाव्या, सूरि आव्या, तेवारें श्रावकोयें पुछ्युं स्वामीजी आ तापसनी केवा प्रकारनी तपशक्ति
छे? आचार्यें कह्युं के तपशक्ति कांइ पण नथी परंतु पादलेपशक्ति छे तेवारें श्रावक लोक
सर्व समजी गया, पछी तापसनुं छिद्र उघाडुं पाडवा माटे ते तापसने श्रावकोयें पोताने घेर
भोजनने अर्थे निमंत्रणा करी तेवारें मिथ्यात्वी लोक घणा खुशी थया अने जाणवा लाग्या
जे श्रावको पण हवे आपणा धर्ममां आवी जाशे एवुं जाणीने श्रावकोने घेर योगीने लइ
गया तिहां श्रावकोयें भक्तिना मिषे करीने पावडी उपर तापसना पग धोइ नखाव्या तेवारें
योगीना मनमांतो मह्लोटुं दुःख थयुं पण शरमनो मार्यो शुं करे! नाकारो कहेवाय नही पछी
कांइ भोजन कर्युं कांइ नहीं कर्युं अने तरत तापस तिहांथी उठयो तेने श्रावको आदर देइने
राजा तेना स्थानक उपर पोहोंचाडवाने साथें चाल्या, मनमांतो एवुं समजता हता जे जो

इर्ये तेनी सजा थाय ने पण थाहारथी तेने स्थानकें पोहोंचाडवानुं मोन्न थालीने तेनी साथे चलावा गया सर्व नदीकिनारे श्रावी ऊना तेवारें तापसें विचार्युं जे थोडोसो लेप हशे तो पण नदी उतरी जइश एम विचारी नदीमां पग दीधो के तरत बुडवा लाग्यो तेवारें लोकोमां निंदा थइ पछी दया लावीने श्रावकोये नदीमांथी खेंची पाछो बाहेर काहाड्यो, नदीकां तणाइ जतो हतो, एटलामां लोकोने प्रतिबोध श्रापवाने माटे श्रीश्रार्यसमित सूरि पण तिहां श्राव्या श्रने चिपटी वगाडी बोल्या के हे बेन्नाह नदी! म्हारे पहेले पार जावुं ने माटे मार्ग श्राप ए टलुं श्राचार्यना मुखमांथी वचन निकलतांज नदीना बेहु कांठ भेला मली गया तेवारें लोक विस्मय पाम्या. पछी श्राचार्य तथा बीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्वीप गया तिहां तापसोने धर्मोपदेश श्रापी प्रतिबोध पमाड्यो तेवारें पांचसें तापसोये दीक्षा लीधी श्रने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी उपरथी चालतो हतो परंतु तपस्यानो प्रन्नाव न हतो एवी वात सर्व लोकोमां प्रसिद्ध थइ, जैनधर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो पछी संघसहित गुरु पोताने स्थानकें श्राव्या, तिहां तापस साधुउथी ब्रह्मद्वीपिका नामे शाखा थइ॥ ॥ हवे थविर श्रार्यस्थंमिलनी पछी चौद गाथाउनो श्रर्थ कहीये छैये॥ गौतमगोत्रीया फल्गु मित्रने वांडुं छुं, बीजा वशिष्टगोत्रीया धनगिरिने वांडुं छुं, कोइक शिवभूति कौशिक गोत्रीया उक्रांत श्रने कृष्णने वांडुं ॥ १ ॥ ॥ एमने मस्तकें करी वांदीने वली जइ, नक्षत्र श्रने रक्षित ए त्रणे काश्यप गोत्रीयाने वांडुं॥ २ ॥ ॥ तथा एक श्रार्य नाग गौतमगोत्रीया, बीजा श्रार्य जेहिल वासिष्ठगोत्रीया, त्रीजा श्रार्य विष्णु माढरगोत्रीया श्रने चोथा श्रार्य कालक गौतमगोत्रीया ए चारने वांडुं॥ ३ ॥ ॥ गौतमगोत्रीया कुमारांतिलक तथा जइक तथा स्थविर श्रार्यवृद्धि गौतमगोत्रीयाने हुं वांडुं छुं॥ ४ ॥ ॥ ते

मने मस्तकें करी वांदीने वळी चारित्र ज्ञान सहित एवा स्थविर [illegible]
वांडुं छुं ॥ ५ ॥ ॥ वळी आर्य हस्ति काश्यपगोत्रीया, क्षमावंत समुद्र सरखा धैर्यवंत; जे च
नालाना पहेला महीनामां एटले चैत्रमहिनाना शुक्लपक्षमां कालगत थया तेमने वांडुं ॥ ६॥
वळी नला व्रत शील लब्धिसहित जेमना दीक्षामहोत्सवमां देवतायें आवीने मस्तक उपर
छत्र राख्युं एवा स्थविर आर्यधर्म ते प्रत्यें वांडुं ॥ ७ ॥ ॥ तथा एक हस्ति, बीजा धर्म अने
त्रीजा सिंह ए त्रण काश्यपगोत्रीया मोक्षमार्गना साधक तेमने वांडुं ॥ ८ ॥ ॥ तेमने म
स्तकें करी वांदीने पछी स्थिर छे चारित्र अने ज्ञान जेमना एवा थविर आर्य जंबु गौतमगोत्री
याने वांडुं ॥ ९ ॥ ॥ तथा जे कोमल हृदयवाला अने मानरहित तेमज थयुंज छंचुं उ
त्तम छे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र जेमनुं एवा नंदिक पिता काश्यपगोत्रीयाने वांडुं ॥ १० ॥
तथा स्थिर छे चारित्र जेमनुं वळी उत्तम सम्यक्त्व अने सत्व तेणे करी सहित एवा देसि गणि
क्षमाश्रमण माढरगोत्रीयाने वांडुं ॥ ११॥ ॥ तेवार पछी वळी जे अनुयोगना धारक, सागर
जेवा धैर्यवान् गंजीर, महा सत्ववंत एवा थविर उत्तम क्षमाश्रमण वच्छगोत्रीयाने वांडुं
॥ १२ ॥ ॥ पछी वळी जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप तेमां थिर थयेला, महागुणवान्
एवा थविर कुमार धर्मगणी गुणवानने वांडुं ॥१३॥ ॥ वळी सूत्र अने अर्थ रूप रत्नेकरी
भरेला अने क्षमामार्दवादिगुणसंपन्न; जेणे सर्व सूत्र पुस्तकारूढ कर्या एवा देवर्द्धिगणिक्ष
माश्रमण काश्यपगोत्रीयाने वांडुं ॥ १४ ॥ ॥ इति स्थविरावली सूत्रार्थः ॥ ॥ हवे यद्यपि
इहां आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुखना नाम कह्या नथी तथापि ए पण स्थविर
सरखाज थया छे तेमनो संबंध लखीयें छैयें. ॥ ॥ दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित

तेनी रुद्रा नामे नार्या तेमना पुत्र आर्यरक्षितजी परदेश गया; तिहांथी चौदे विद्या जणीने आव्या तेमने राजायें हाथी उपर बेसाडी, महोत्सवसहित नगरमां प्रवेश कराव्यो. इहां सर्व सज्जन कुटुंब मित्रादिक आवीने मल्या परंतु एमनी माता मली नही माताने पगें ला ग्या तो पण माता खुसी थइ नही तेवारें आर्यरक्षितजीयें पूछ्युं माताजी तमे आमणा डुमणा देखाउ छो पण कांइ हर्ष आनंद दर्शावता नथी तेनुं कारण म्हारा उपर कृपा करीने प्रकाश करो! ते सांभली माताजी बोल्या हे पुत्र तुं जे विद्या शीखी आव्यो छो ते सर्व नरकपतननी विद्याउ छे. कारण के तुं घणा होमादिक लौकिक कृत्य करवानां शास्त्र जणी आव्यो छो. ते हुं जैनी छुं माटे ए दुर्गतिना देवावालाने केवी रीते रुडा करी मानुं! हुंतो जेथकी ताहारा आत्मानुं कल्याण थाय एवां शास्त्र तु जण्यो होय तो सुबुद्धिमान् करी मानुं. ते सांभलीने पुत्र बोल्यो हे माताजी आत्माने तारनार कयां शास्त्र छे? ते मने कहो तो हुं तेनो पण अभ्यास करुं. मातायें कह्युं के दृष्टिवाद जणो. तेवारें आर्यरक्षितजीयें जाण्युं जे सर्व मतनां शास्त्र जणवा योग्य छे माटे म्हारे ए शास्त्र पण जणवुं पछी रात्रीयें माता जीने पूछ्युं. हुं दृष्टिवाद क्यां जणवा जाउं मातायें कह्युं. तोसली पुत्राचार्यनी पासे जइ ए शास्त्र जणो. हवे आर्य रक्षितजीयें म्होटे परोढीयें उठीने जणवा माटे प्रयाण कर्युं केट लुंक दूर गयो के पोताना पितानो मित्र एक ब्राह्मण शेलडीना सांठा हाथमां लइने आवतो हतो ते साहामो मल्यो. तेणे पूछ्युं तुं कोण छो? एणे कह्युं हुं आर्यरक्षित छुं. तेवारें तेणे कह्युं के हुंतो तने परदेशथी आव्यो सांभलीने मलवा सारु आव्यो छुं. अने आ शेलडीना सांठा पण ताहारे वास्ते लाव्यो छुं ते सांभली आर्यरक्षितें सेलडीना सांठा गणी जोया तो

साडा नव गंथ्यायें थया तेवारें विचार्युं जे हुं दृष्टिवादना साडा नव भाग जाणीश एवुं चिं
तवी ते ब्राह्मणनें कह्युं के तमे मह्यारी माता पासें जाउं छुं आवुं छुं वली तमे माताजीने
कहेजो के आर्यरक्षित मने मल्या हता. एवुं कहीने आगल चाल्यो अने पहेला ब्राह्मणे पण
एमनी माता पासें जइ शेलडी आपीने कह्युं के तमारो पुत्र आर्यरक्षित मने रस्तामां मल्यो.
ते सांभली मातायें जाण्युं जे मह्यारा पुत्रने शुकन तो सारा थया. ए साडा नव पूर्व जाणशे.
एवुं मनमां जाणी लीधुं. हवे आर्यरक्षित जिहां शिष्य पाठ करे छे तिहां गया अने विचारवा
लाग्या जे एमने केवी रीते वंदना करुं एवुं चिंतवीने उपासरानी बाहेर बेठा एटलामां ढढर
नामे कोइ श्रावकें निःसिहि कही उपासरामां जइने ऊंचे स्वरे वांदणा देवानी जे इरियावहि प्रमुख
क्रिया छे ते करी वंदना करी ते विधि सर्व आर्यरक्षित सीखी गया. पछी गुरु पासें आवी तेवाज
विधियी गुरुने वांदीने विनयपूर्वक आगल बेठा. गुरुयें जाण्युं जे आ कोइ नवो श्रावक छे
पण वांदवानो विधि तो बरावर जाणे छे पछी ढढर श्रावकने गुरुयें पुछ्युं तेवारें ढढरें उ
त्तर आप्यो जे आ गुरुनो भाणेज छे. पछी गुरुने कह्युं आ तो आर्यरक्षित आपनो भाणेज छे.
तेने गुरुयें धर्मोपदेश आप्यो तेवारें आर्यरक्षितें कह्युं मने दीक्षा आपो. मह्यारी मातायें
तो दृष्टिवाद भणवानी आज्ञा आपी छे. तेवारें गुरुयें लोकोना भयथी अन्यस्थानके जइने
दीक्षा दीधी. पछी पोतानी पासे जेटली विद्या हती ते तो सर्व गुरुयें भणावी. वली अ
धिक पूर्व भणाववाने माटे श्रीवज्रस्वामीनी पासे मोकल्यो. तिहां जातां रस्तामां उज्जयणी
नगरी आवी तिहां भद्रगुप्तसूरि मल्या ते सुखी थया. अने बोल्या के तें सारु काम कर्युं
पण हवे मने काल अनशन करवुं छे माटे तुं अनशनने सहाय आपीने पछी जाजे. एवां

गुरुनां वचन सांजली तिहां अनशनमां सहायी थयो, जद्रगुप्त सूरियें कह्युं के तुं वज्रस्वामीनी पासें जणजे पण तेमनी संघाते रात्रें जेलो रहीश नही. जुदा उपासरामां रात्रें रहेजे, केमके जे श्रीवज्रस्वामीनी साथे एक रात्रीज रहे ते जो सोपक्रमी आउखावालो होय तो पण वज्रस्वामीनी साथेज मरण पामे. ए वात सांजलीने तहत्ति करी संथारो करावीने श्रीवज्रस्वामीना पासे आव्यो. रात्रें नगरने बाहेर रह्यो. अने तेज रात्रीयें. श्रीवज्रस्वामीने सुपनुं आव्युं जे महारी पासें पात्रमां दूध जरेलुं हतुं ते कोइ प्राहुणो आवीने पी गयो स्वल्पमात्र शेप रह्युं एवामां प्रजातना श्रीआर्यरक्षितजी पण तेमनी पासे आव्या. तेमने वज्रस्वामीयें पुछ्युं. तुं किहांथी आव्यो? तेवारें सर्व हकीगत कहीने कह्युं के हुं बीजा उपासरामां रहीने आपनी पासें जणीश. वज्रस्वामीयें पूछ्युं महारी पासे जणवुं ने बीजा उपासरामां रहेवुं एम तने शामाटे करवुं पडे छे? तेवारें जद्रगुप्ताचार्यें कहेलुं वृत्तांत तेमने संजलाव्युं ते सांजली वज्रस्वामीयें उपयोग आपीने जाण्युं जे आ वात सत्य छे; महापुरुषनां वचन प्रमाण छे. हवे श्रीआर्यरक्षितजीयें नवपूर्व शास्त्र तो संपूर्ण मुख पाठे करी लीधो अने दशमो पूर्व जणे छे, एटलामां माता पिताउने घणा दिवस पर्यंत श्रीआर्यरक्षितनुं कोइ पण समाचार न मलवायी मातापितायें आर्यरक्षितनो न्हानो जाइ फल्गुरक्षित छे तेने बोलावीने आर्यरक्षितनी पासें मोकल्यो. तेणे आवी कह्युं के तमे माता पितानी पासे चालो. आर्यरक्षितें कह्युं के चालीने शुं करुं? तेणे कह्युं धर्मोपदेश आपो, केमके तेमने दीक्षा लेवानी इछा थइ छे. तेने आर्यरक्षितें कह्युं. तुंतो दीक्षा लइ ले. फल्गुरक्षितें कह्युं हुं दीक्षा लेइ लेउं हुं अने तमे तिहां चालो. तेवारें फल्गुने दीक्षा आपीने गुरुने पूछ्युं हवे दशमो पूर्व केटलो शेप महारे जण

वानो रह्यो छे? गुरुयें कयुं हजी घणो छे तुं उद्यम कर. तेवारें तिहांज रही जणवानो उद्यम कर्यो. वळी केटलाएक दिवस पछी मातापितानी पासें जवानुं मनमां घणुं उमंग थयो तेवारें फरीथी गुरुने पुछयुं. महाराज दशमो पूर्व हजी केटलो शेष रह्यो छे! गुरुयें कयुं दशमा पूर्वनुं बिंदुमात्र तो तुं शीख्यो अने समुद्र जेटलुं शेष जणवो रह्यो छे पण उद्यम कर तेवारें वळी पण जणवानो उद्यम करवा मांड्यो पण चित्त बराबर लागे नही, तेवारें कयुं हवे तो हुं जइश त्यारें वज्रस्वामीयें जाण्युं जे एटलो पूर्वज्ञो पूर्वनो नाश हवे शेष रहेशे; बाकी विछेद थइ जाशे; कारणके हमणा बीजो कोइ एटला पूर्वनो जाणनार छे नही, एवो मनमां विचार करीने श्री आर्यरक्षितने मावित्रो पासें जवानी रजा आपी तेवारें तेहु चाल्या दशपुर नगरें आव्या; तेमने राजायें महोटा महोत्सवसहित गाममां प्रवेश कराव्यो पछी मातापिता प्रमुख सर्व कुटुंबने धर्मोपदेश देइ सर्वने दीक्षा आपी, एक पितायें दीक्षा लीधी नही. ते कुटुंबना मोहने लीधे तेमनी पासेंज रहे पण दीक्षा लीए नही तेवारें आर्यरक्षितजीयें कयुं तमें दीक्षा शामाटे लेता नथी? पितायें कयुं के मने एकतो म होटुं धोतीयुं, बीजी जनोइ, त्रीजुं छत्र, चोथा पगरखा अने पांचमुं कमंडल ए पांच वस्तु विना चाले नही जो ए पांच वाना विना चालुं तो मने लज्जा थाय तेवारें गुरुयें पांच वाना राखवानी छूट आपीने पण दीक्षा दीधी. पछी गुरुयें जाण्युं जे आ वृद्धने तो जरुर तारवो ज जोइयें एवो निश्चय करी छोकराउने शीखामण मुक्युं जे, अमे जेवारें चैत्यना दर्शन करवा जइयें तेवारें तमे सर्व साधुउने वंदना करजो, पण एक ए वृद्ध साधुनें वांदशो नही, जेवारें तमोने कहे के अमने कां वांदता नथी? तेवारें तमे कहेजो के तमे साधु केम कहेवाउ?

तमे तो छत्र राखो छो पछी छोकराउए तेमज कर्युं तेवारें वृद्धे कह्युं के हे वत्सो ! साधु छत्र नही राखे तो महारे पण नही राखवुं एम कही छत्र नाखी दीधुं एमज जनोइ, पावडी अने कमंडल सर्वनो त्याग करी दीधो पण कह्युं के धोतीयुं तो महाराथी मूकाशे नही। तेवारें आर्यरक्षितजी बोल्या एमज रहेवा आपो अने धोत्युं पहेरवुं ने एटलामां एकदिवस एक साधुयें अनशन करीने काल कर्यो तेवारें आर्यरक्षितजीयें बीजा साधुउने शीखावी मुक्युं के तमे मांहोमांहे विवाद करजो पण साधुने परठवा माटे उपाडशो नही. एवुं शीखवीने पछी बोल्या के आ साधुना शरीरने जे परठवी आवे तेने महालाभ थाय तेवारें साधुउ मांहोमांहे बोलवा लाग्या तेमां एकें कह्युं हुं लइजाउं, बीजाये कह्युं हुं लइजाउं. तेमने देखीने सोमदेव वृद्धसाधु बोल्या जे शुं ए कार्य करवामां घणी निर्जरा थाय छे ? गुरु बोल्या हा घणी निर्जरा थाय छे तेवारें वृद्ध साधु बोल्या के ए काम हुंज करीश गुरुयें कह्युं इहां उपसर्ग घणा छे माटे उपसर्ग सहन करवानी शक्ति होय तो ए काम करवुं नहींकां अरिष्ट थइ जाय तेवारें वृद्ध साधु बोल्या हा, हुं सर्व उपसर्ग सहन करीश, एम कही ते अनशनी साधुना शरीरने उपाडीने लइ चाल्यो, तिहां आचार्यें श्रावकोना छोकराउने शीखवी मुक्युं; तेथी छोकरायें हाको करी पाछल पडीने वृद्धनुं धोतीयुं खोंसी लीधुं तेवारें वृद्धें जाण्युं जे उपसर्ग तो छे. पछी आचार्य सर्व परिवार लइने वृद्धनी पाछल गया, तेने देखीने वृद्ध लज्जा पाम्यो गुरु बोल्या महोटो उपसर्ग थयो, हवे बीजो चोलपट्टो लावो तिहां साधुउ बोल्या; महोटो चोलपट्ट तो लइने लइ आवो तो थाय; वृद्धें कह्युं चोलपट्टोज आपो. लाजतो गइ हवे शुं छे !! एम करी चोलपट्टो पहेराव्यो. हवे ते वृद्ध गोचरी करवा जाय नही तेवारें गुरुयें साधुउने

कह्युं के तमे गोचरी लावी आपशो नही; ए वृद्ध पात [illegible]
गुरु अन्य गामे चाल्या गया. पाछलथी साधुउए पोतपोतानो आहार लइ आवीने जमी
लीधो अने वृद्ध तो नूख्यो वेठो रह्यो. बीजे दिवसें गुरु आव्या तेमणे साधुउने कह्युं. केम
रे वृद्ध साधुने आहार शा वास्ते नही लइ आप्युं? एवीरीतें कृत्रिम कोप कर्यो. तेवारें सा
धुउ बोल्या. ए वृद्ध पोतें गोचरी केम जाता नथी! पछी गुरु पोतें गोचरी जवा लाग्या.
वृद्धे जाण्युं जे आतो गुरुनो अविनय थाय छे. एवुं चिंतवीने वृद्ध पोतेंज गोचरी गयो तिहां
एक शेठने घेर खरा दरवाजाने तो जाण्युं नही अने पाछला बारणाथी तेना घेरमां पेसवा
लाग्यो, तेवारें घरना माणसो बोल्यां, साहामा बारणामांथी आवो. एवुं सांनली वृद्ध साधु
बोल्या अरे लक्ष्मी छे ते तो मरजीमां आवे ते तरफथी आवे.जे तरफथी आवे ते तरफथी सारी
जाणवी, एनो कांइ विचार राखवो नही. तेवारें शेठें खुशी थइने बत्रीश लाडु वहोराव्या. ते
लइने वृद्ध साधुयें आवी गुरुने देखाड्या. ते जोइ गुरुयें विचार कर्यो जे बत्रीश शिष्य महारा
थाशे, वृद्ध बोल्यो पहेलो लाभ थयो ते सर्व साधुउने देवो जोइयें, एम विचारी सर्व मोदक सा
धुउने आपी दीधा. फरी गोचरीयें जइने खीरनुं भोजन लइ आवी पोते पारणुं कर्युं. एम ए
वृद्धसाधु निक्षामां लब्धिवंत थयो, ज्यां जाय त्यां जो ते दातार महाभोजी होय तोपण उ
त्तम भोजन एने वहोरावे एम अनुक्रमे ते वृद्धसाधु गछनो आधारभूत थयो ए श्री आर्यरक्षित
जीना गछमां त्रण साधु लब्धिवंत थया तेना नाम कहे छे. एक दुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो
घृतपुष्प मित्र अने त्रीजो वस्त्रपुष्पमित्र तथा चार साधुउ महापंडित थया तेना नाम कहे
छे. एक दुर्बलिका पुष्पमित्र, बीजो वृद्ध, त्रीजो फल्गुरक्षित अने चोथो गोष्ठामाहिल ए चार

जाणवा हवे एक दिवसें इंद्रमहाराजें सीमंधरस्वामीने निगोद विचार पूछयो जगवाने वर्णन करी संजलाव्युं तेवारें इंद्रें पूछ्युं. जरतक्षेत्रमां कोइ एवो विचार कहेवावालो हालमां छे? जगवाने कह्युं आर्यरक्षित सूरि छे पछी इंद्रमहाराज वृद्धरूप करी आर्यरक्षितजी पासें आवीने पूछवा लाग्यो के हे महाराज? महारुं आयुष्य हजी केटलुं छे? तेवारें गुरुयें श्रुतउपयोगथी कह्युं के तुं पहेला देवलोकनो इंद्र छो पछी निगोदना सूक्ष्म विचार पूछया गुरुयें ते सर्व खुलासापूर्वक कह्या तेवारें इंद्रमहाराज गुरुनी स्तवना करी उपासरानुं द्वार फेरवीने चाल्या गया, शिष्यने खबर पडी जे इंद्र आव्यो हतो. हवे वली आर्यरक्षित सूरियें बुद्धिनी हानी थती देखीनें सूत्रोना जूदा जूदा चार अनुयोगद्वार, कर्या एवा ए आर्यरक्षित स्थविर थया॥ हवे ए प्रमाणे विद्याधरगच्छीय वृद्धवादीना शिष्य सिद्धसेन दिवाकर थया तेनो संबंध आ प्रमाणे छे के एक साधु वृद्धपणामां महोटा स्वरथी जणतो हतो तेने देखीने राजायें कह्युं के तुं शुं मूसलो फुलावीश? जे एटलो उतावलो गोखे छे! तेवारें तेणे सरस्वतीने बोलावी विद्या पामीने चोवटा मांहे मूसलो उनो करी राजासहित सर्वलोकोनें देखतां फुल्लवित काव्य कह्युं तेथी मूसलो फूल्यो ते जोइ सर्व राजा प्रमुख चमत्कार पाम्या एवो वृद्धवादि थयो. तेमणे सिद्धसेन ब्राह्मणने प्रतिबोध्यो अने ते सिद्धसेने वली विक्रमादित्यराजाने प्रतिबोध आप्यो, श्रीशत्रुंजयनो संघ चलाव्यो, तेना संघमां एकशोने सीतेर शोनाना देवल चालता वली शत्रुंजानो उद्धार कराव्यो तथा श्रीसिद्धसेन सूरिना सहायथी विक्रमादित्य राजायें संवत् चलाव्यो,आगल श्रीवीरजगवाननो संवत् हतो,ए वृद्धवादी अने सिद्धसेन ए पण बेहु थविर थया॥ ॥तथा वली त्रण कालिकाचार्य थया छे तेमां एकतो श्रीवीरजगवानथी त्रणशोने बहोंतेर वर्षे थया.तेमणे श्रीपन्नवणा सूत्र क

जेणे सौधर्मेंद्रने निगोदनो विचार कह्यो, कोइक आचार्य कहे ने के गाथा [illegible]
चार्य वीर संवत्थी अणशेंने वीश वर्षे थया ने, कोइ कहे ने त्रणशें पचीश वर्षे थया ने, कोइ कहे
ने के चोथनी संवत्सरी थापनाराना पण एज कालिकाचार्य ने. एमां खरुं खोटुं केवली नगवान्
जाणे. ग्रंथोमां तो संवत्नो फेर ने. वली बीजा कालिकाचार्य तो पूर्वे कालिकाचार्य कह्या तेमना
मामा थाय अने त्रीजा कालिकाचार्य तो श्रीवीरजगवान् मोक्ष गया पठी ९९३ में वर्षे अने
विक्रमादित्यना संवत् ५२३ में वर्षे जेणे चोथनी संवत्सरी करी ते ने तेमां वली कोइकोइ चूर्णि
कार; एवीरीतें जणे ने के केटलाएक कालिकाचार्यना शिष्योयें चोथनी संवत्सरी मान्य करी,
अने केटलाएक श्रीसुधर्मस्वामीना शिष्योए पांचमनी संवत्सरी मानी. तत्त्व केवली जाणे. ए
विवादमां अंत नथी खबर विना जोर लगाववुं मुनासेब नथी इति रहस्यं ॥ ॥ वली हरिनद्र सूरि
पण त्रण थया ने. तेमां एकतो हरिनद्र नामा ब्राह्मण हतो ते व्याकरणादि जणी पठी प्रतिज्ञा
करीके जेनो अर्थ हुं समजी शकुं नही ते पदनो अर्थ जे कही आपे तेनो हुं शिष्य थाउं.
पठी एक दिवस साध्वीउं गाथा जणे ने ते आवीरीतें ॥ चक्किडुग हरि पणगं, पणगं चक्कीण
केसवो चक्की ॥ इत्यादि ए गाथानो अर्थ ए ब्राह्मणथी थइ शक्यो नही. तेवारें जाण्युं जे हुं
हार्यो पठी साध्वीने अर्थ पुठ्यो तेवारें साध्वीयें कह्युं गुरुने पुठो. गुरु पासेथी गाथानो
अर्थ सांजली प्रतिज्ञा पालवा सारु दीक्षा लीधी, आचार्यपद पाम्यो ते आचार्य विक्रमसंव
त्ना ५८५ में वर्षे आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रंथोनी टीकाउ करी तथा एमना एक हंस अने
बीजा परमहंस एवा नामे बे शिष्य बौधलोकोनुं मत जाणवा माटे बौधोनी पासें जणवा गया
हता तिहां बौधोयें जाण्युं के ए बे जैनी जेवा देखाय ने. तेवारें परीक्षा करवा माटे दादराना पग

बाधाउ उपर जनप्रतिमा मूकी दीधी, तेनी उपर पग आपीने बौधनां शिष्यो तो सर्वे उतरी गया परंतु हंस अने परमहंस जैनप्रतिमा देखीने प्रतिमाना हृदयमां खडीनी जनोइ करी उतस्था. तेवारें बौधोयें जाण्युं जे आ निश्चयें जैनीउ छे अने शिष्योने पण खबर पडी के ए आपणने जाणी गया छे. तेवारें मरणना जयथी ते बे जण पोतपोतानी जणवानी पोथीयो हाथमां लइने पोताने देश चालता थया. बौधोयें राजाना सीपाइयो ते बे शिष्योने मारवा माटे मो कल्या. तेणे जइ प्रथम तो हंसने मारी नाख्यो अने परमहंस नागी गयो परंतु चितोड गढना कोट पासें तेने पण मारी नाख्यो. पछी राजाना सुजटो राजापासे गया हरिजद्रसूरि ए वात सांजलीने महा कोपायमान थया थका. मंत्रना बलेकरी एक तेलनी कढाइ उका लीने पछी मंत्र जपता जाय अने एकेक कांकरी कढाइमां नाखता जाय. जे वखत कांकरी नाखे ते वखत मंत्रना प्रजावथी बौधनो एक तपस्वी ते कढाइमां पडी जस्म थइ जाय. एम करी १४४४ बौधोने हण्या. तेवारें एक श्रावक गाथा बोल्यो ॥ जइजलइजलउलोए ॥ एटलुं सांजलतांज क्रोध उतरी गयो. वली केटलाएक ग्रंथोमां एम लख्युं छे के याकनी महत्तरा साध्वीयें एक श्राविकाने लावीने गुरुने कह्युं के एणे पंचेंडी जीवनो वध कस्यो छे. तेनो दंड शुं आपो छो? तेवारें गुरु बोल्या पंच कल्याणानो दंड आपीयें छैये ते वखत साध्वी बोली. महाराज! एक पंचेंडीना वधनो एटलो महोटो दंड आपाय छे? एवुं आप जाणो छो तो आ बौधोने केम मारो छो? तेवारें गुरुनो क्रोध उतरी गयो पछी प्रायश्चित्त शोधवाने माटें चौदसें ने चुमालीश पंचाशक प्रमुख प्रकरण बनाव्यां. ए प्रथम हरिजद्र सूरिनी संक्षेप कथा कही ॥ ॥ १ ॥ ॥ वली बीजा हरिजद्रसूरि विक्रमसंवत्ना ७६२ मां वर्षमां थया. तेमना शिष्य

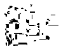
सिद्धर्षिगणी हता ते बौधोनी पासे एकवीश वार गया अने आव्या. तेमणे बौधोने प्रतिबोधवा
माटे ललितविस्तरा शक्रस्तवनी वृत्ति बनावी. ए बीजा हरिन्द्र सूरिनी सामान्य कथा कही ॥
हवे त्रीजा हरिभद्रसूरि विक्रम संवत्ना बारसेना सैकामां थया तेमणे बनावेला मुनिव्रत
चरित्र आदिक ग्रंथो आजे प्रसिद्ध छे ए त्रीजा हरिभद्रसूरि थया. तथा वली श्रीजिनभद्र
गणिक्षमाश्रमणप्रमुख घणा आचार्यो स्थविर थइ गया छे, तेमणे विशेषावश्यकनुं भाष्य
बनाव्युं छे. तेमज बीजा वली श्रीशीलंगाचार्य, अभय देवसूरि अने मलयगिरिप्रमुख टीका
ढंना करवावाला थया छे. ए सर्व स्थविरो जाणवा. इति स्थविरावली शेषसंबंध संपूर्ण ॥
हवे अठावीश प्रकारनी साधु समाचारी लखीयें छैयें ॥ ते कालने विषे, ते समयने विषे,
श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी आषाढ शुदि पूर्णिमाथी लइने एक महीनो अने वीश
दिवस वरसादना गये थके पंजोसण करे एवो नियम छे. इहां शिष्य पुछे छे के चोमासाना
पचास दिवस गया पछी पंजोसण केम करे ॥ १ ॥ तेने गुरु कहे छे हे शिष्य! गृहस्थ श्रावको
पोताना घरने खडी प्रमुखथी धोइ उपर छाया करी, घगारे, मगारे, धूप आपे, परनाल प्रमुख
पाणीना मार्ग काढाडे. इत्यादिक सर्व काम गृहस्थें पोताने माटे कर्या होय. अने पोते वापरी
फासु करी मूक्या होय, ते कारण माटे हे शिष्य! वर्षादना पचाश दिवस गया थकां पंजो
सण करे. अने कदाचित् जो साधु पहेलाथीज कहे के हुं चोमासुं रहीश, तो ते गृहस्थ
साधुनुं निमित्त करीने घर प्रमुखनो आरंभ करे. ते माटे पचाश दिन गया पछी साधु कहे
के अमे चोमासुं अहीं करीशुं. एम कहे ॥ २ ॥ ॥ एवी रीतें जो भगवान् पोते पचाश
दिन गये थके पंजोसण करे तो तेमना गणधर पण पचाश दिन गये थके पंजोसण करे ॥

॥ ३ ॥ ॥ अने जो गणधर पण पचाश दिन गया केडे पंजोसण करे तो गणधरोना शिष्यो पण वर्षादना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे ॥ ४ ॥ ॥ जो गणधरोना शिष्यो पचाश दिन गये पंजोसण करे तो थविर पण वर्षादना पचाश दिवस गये पंजोसण करे ॥ ॥५॥ ॥ जो थविरो, वर्षादना पचाश दिवस गये पंजोसण करे तो जे आजना समयमां श्रमण निर्ग्रंथ विचरे ते पण पचाश दिन गये पंजोसण करे ॥ ६ ॥ ॥ जो आज वर्त्तमान श्रमण निर्ग्रंथ वर्षादना पचाश दिवस गये थके पंजोसण करे तो अमारा आचार्य उपाध्याय पण पचाश दिवस गये पंजोसण करे ॥ ७ ॥ ॥ जो अमारा आचार्य उपाध्याय पचाश दिवस गये पंजोसण करे तो अमे पण वर्षादना पचाश दिवस गये पंजोसण करीयें डैयें. इहां अपवाद कहे छे के नादरवा शुदि पांचमना एक दिवस आगल अर्थात् नादरवा शुदि चोथने दिवसे पंजोसण करवुं कल्पे परंतु नादरवा शुदि पांचमीने उलंघवी कल्पे नही एटले एकावनमे दिवसे संवछरी करवी कल्पे नही परंतु उगण पचाशमे दिवसे कारणे करवी कल्पे माटे कारणे चोथनी संवत्सरी करवी कल्पे पण छठनी संवत्सरी तो अपवादे पण करवी न कल्पे ॥ ७ ॥ ए आठ आलावे करी पंजोसण करवा आश्रयी प्रथम समाचारी जाणवी ॥ ॥ १ ॥ ॥ हवे वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु अने साध्वी तेमने पांच कोशनो चोफेरे अवग्रह राखवो पण अवग्रहथी बारणे हाथ मूके तिहां सुधी पण उत्तुं रहेवुं नही ॥ ए ॥ साधु साध्वीने वर्षादे चोमासामां गोचरीने माटे पांच कोश जावुं आववुं कल्पे ॥ १० ॥ ए जावा आववानी बीजी समाचारी जाणवी ॥२॥ जिहां विचाले नित्य नदी वहेती रहेती होय तिहां नदी उतरीने पांचकोश लगण पण जावुं आववुं कल्पे नही ॥ ११ ॥ अने कुणाला नग

रीनी पासें ऐरावती नदी ने ते नित्य वहेती रहे ने पण तेनो पाट घणो पहोलो ने,पाणी स्वल्प ने, माटे एक पग जलमां अने एक पग उंचो आकाशें अधमां राखतो उतरे तो चोफेर पांच कोश जावुं आववुं कल्पे ॥ १२ ॥ एवी नदी न होय तो न कल्पे ॥ १३ ॥ ए नदी उतरवानी त्रीजी समाचारी जाणवी॥३॥ ॥ हवे वर्षाद्मां रहेला साधु अने साध्वीने गुरुयें कह्युं होय के जो साधुउ तमे गिलाणने आहार आणी आपजो. तो तेने माटे आहार लावी देवो कल्पे. परंतु पोतानी मतियें गिलानने माटे आहार लावी देवुं कल्पे नही ॥ १४ ॥ ॥ अने जो गुरुयें कह्युं होय के तुं तहारे माटेज लइ आव, तो पोताने माटेज लइ आववुं कल्पे पण बीजाने आपवुं न कल्पे ॥ १५ ॥ ॥ वली गुरुयें कह्युं होय के तुं गिलाणने आहार लावी आपजे अने तुं पण खाजे, तो लाववुं अने देवुं बेहु कल्पे ॥ १६ ॥ ॥ ए साधुउने परस्पर देवा लेवानी चोथी समाचारी जाणवी ॥ ४ ॥ ॥ हवे चोमासे पंजोसण करी रहेला साधु साध्वीने नव विगय लेवी कल्पे नही तेना नाम कहे ने. १ दूध, २ दहि, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोल, ७ सहत, ८ मदिरा अने ९ मांस ए नव विगय ने तेमां मदिरा, मांस, माखण अने सहत ए चार विगय तो सर्व साधुउने प्रथमथीज सर्वप्रकारे वर्जेली होय ने. माटे ते मूकीने बाकीनी पांच विगय जे ने ते बलवान् रोगरहित शरीरवालाने, लेवी कल्पे नही अने कारणे लेवी पडे तो लेवाय पण पंजोसणमां लेवी नही ॥ १७ ॥ ए विगय निषेध नामे पांचमी समाचारी जाणवी॥ ५ ॥ ॥ चोमासुं रहेला साधु साध्वी जे होय तेने कोइ गिलाण कहे के माहारा माटे अमुक चीज गृहस्थना घरथी लइ आवजो तेवारें ते लाववावालो साधु गुरुने पुने हे स्वामी गिलाण साधु अमुक चीज मगावे ने ते

लइ आवुं? गुरु कहे केटलीक मगावे ले? तेवारें गिलाणने पुले अने गिलाण कहे के आटली चीज जोइयें उयें. पली वली गुरुने कहे स्वामी! अमुक चीज आटली गिलान मगावे ले. त्यारें गुरु कहे एटली चीज एटला प्रमाणनी लावजे. पली ते साधु जेवारें गोचरी जाय तेवारें गिलाणने खपती चीजथी वधारें श्रावक देवा लागे, तेने साधु कहे के एटलीज गिलाणने खपे ले. तेम बतां वली श्रावक कहेके वधारे लइ जाउ आपपण खाजो, पीजो, वापरजो, महारा घरमां घणी ले माटे सुखे ल्यो. तो लेवी. पण गिलाणना नामथी पोते लइने वापरवी नही॥ ॥१८॥ ॥ए गिलाणने खपती वस्तु लावी आपवा संबंधि बठी समाचारी जाणवी ॥ ॥६॥ ॥हवे वर्षादमां रहेला थविर कल्पी साधुउने श्रावकोना घरमां जे नवा श्रावक थयेला होय तेमने घेर हरकोइ न्हाना अथवा महोटा साधु जाय अने ते जे कांइ मागे ते आपे, पण नाकारो करे नही, न्हाना महोटा साधु साहामुं जुए नही पण चोरासी गह्नना साधुउने दान देवानीज इछा राखे ते अने ज्यां साधुउने पण एवो विश्वास होय के जे चीज क्यांय पण नही मलशे ते एमना घरमां तो जरुर मलशे. एवा श्रावको जे होय तेमना घरमां साधुउयें विना देखती चीज मागवी नही कारण के ते श्रावक तो हरेक चीजनुं दान आपवुं एवी वांछा वालो ले तेथी ते श्रावक एवुं जाणे जे ए चीज एमने क्यांय पण नही मली हशे माटे मागवा आव्या ले. तेथी ते बजारमांथी वेचाती लइने अथवा अणसमजु नवो थयेलो श्रावक होय तो ते बाहेरथी चोरी लावीने पण साधुने आपे ते माटे एवा घरोमां अणदीठी वस्तु साधुयें मागवी नही ॥१९॥ ॥ए अदृष्टयाचनावर्जनसंबंधि मातमी समाचारी जाणवी ॥७॥ ॥हवे वर्षादमां चोमासुं रहेला साधुउयें नित्य एकवार जमवुं अने ग

गृहस्थोने घेर गोचरीयें जावुं ते पण एकवारज कल्पे पण आचार्य,उपाध्याय, तपसी,गिलान, न्हानी वयना शिष्य अने शिष्यणीउ एटले जेने दाढी मूछ आव्या न होय एवा लघु वयना शिष्य तथा जेने स्तन न होय एवी लघुवयनी शिष्यणीउ प्रमुख जे होय तेमनी वेयावृत्त्य कर वाने माटे जो एक दिवसमां वे त्रण वखत गृहस्थने घेर जवुं पडे तो पण तेनी मनाइ नथी परंतु पोताने माटे तो एक वारज जवुं कल्पे उपरांत जवुं कल्पे नही ॥ २० ॥ ॥ तथा एक उपवास करवावालाने, जो एकवार गोचरी गया थका खाइ पीने तृप्त थइ रह्या, पातरां प्रमुख पुंजी गण्या, तो फरी वीजी वखत गोचरी न जावुं अने जो नही धाया होय तो वीजी वार गोचरीयें जावुं ॥ २१ ॥ ॥ तथा वेलानी तपस्यावालाने एटले छठ्ठनुं तप जेणे करेलुं होय तेने तो वे वखत गोचरी जावुं कल्पे ॥ २२ ॥ ॥ अने तेलानी तपस्यावालाने एटले अ ठ्ठम तप करनारने त्रण वार गोचरीयें जावुं कल्पे ॥ २३ ॥ ॥ वली त्रण उपवासथी उप रांत तपस्याना करनारा जे होय तेमने तो मरजीमां आवे तेटला वखत गोचरीयें जावुं कल्पे ॥ २४ ॥ए गोचरीयें जवानी आठमी समाचारी जाणवी ॥ ८ ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वी जे नित्य जमवावाला होय तेमने श्रीआचारांगे कहेला सर्व एकवीशे प्रकारना पाणी लेवा कल्पे ॥ २५ ॥ तथा एक उपवासवाला साधुने एक आटानुं धोवण, वीजुं पाननुं धोवण अने त्रीजुं चावलनुं धोवण ए त्रण प्रकारनुं पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा छठ्ठना तपवाला साधुने तुसनुं तूकसानुं धोवण,जवनुं धोवण,अने तिलनुं धोवण,ए त्रण जातनुं पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा अठ्ठम तपवाला साधुने एक उसामण, वीजुं कांजी, अने त्रीजुं वर्ण पाकटेलुं चन्धु पाणी ए त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे ॥ तथा त्रण उपवासथी उपरांत प



अणगाण जे साधुयें करेलुं होय तेमने गाणेलुं उष्ण पाणी लेवुं कल्पे ॥ तथा अनशनवाला साधुने एक उष्ण पाणीज कल्पे तेपण वली गाणेलुं होय ने कल्पे ते पण थाडुं थोडुं पीवुं परंतु घणुं पीवुं नही, परिमाणसहित पीवुं. ए पाणी पीवा संबंधि नवमी समाचारी जाणवी ॥ ९ ॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु जे होय तेणे मर्याद करी छे के पांच दात पाणीनी अने पांच दात जोजननी लेवी पण जो पाणीनी चार दात मली अने जोजननी पांच दात मली पण ते पांच दातमां जोजन स्वल्प आव्युं छे तेनाथी पूरण पेट जराय नही तेवारें विचार करे जे पाणीनी चार दात मली छे पण पांच मली नथी तो हवे एक दात जो जनमां भेलवी आपुं एम करवुं कल्पे नही जे जेटलुं मल्युं ते तेटलुंज खाइने संतोष करवो पण दात आगी पाछी अदल बदल करवी नही तेम वली बीजी वखत गोचरीयें पण जावुं नही. हवे दात केने कहेछे जे वोहोरती वेलायें पात्रामां जो मात्र एकज चावलनो दाणो आवी पड्यो तो ते एक दात जाणवी तेमज सर्व अन्न सार्थेज पात्रामां पडी जाय तो पण ते एकज दात जाणी लेवी. एमज पाणीनुं पण वहोरती वखतें जो एकज टीपुं आवी पात्रामां पडे तो ते एकज दात जाणवी अने पाणीनी धारा संधाइ न होय, अस्खलित धार वहेतां संपूर्ण पात्र जराइ जाय तोपण एक दात समजवी परंतु धार संधाया पछी वली बीजी धारायें जे पाणी पात्रामां पडे ते बीजी दात कहेवाय ॥ २६ ॥ ॥ ए दात आश्रयी दसमी समाचारी जाणवी ॥ १० ॥ ॥ तथा वर्षाकालें जे उपासरामां साधु चोमासुं रह्या होय ते उपाश्रयथी मांडीने सात घर पर्यंत गोचरीयें जवुं नही. गाममां जमण होय तो केटला एक आचार्य कहे छे के उपाश्रय सहित सात घर अने केटला एक आचार्य कहे छे के उपा

सरा सहित आठ घर लगण वोहोरवुं नही ॥ २७ ॥ ॥ ए सांखडी संबंधि अगीआरमी समाचारी जाणवी ॥ ११ ॥ ॥ वर्षाकालमां जिनकल्पी साधुने तो फुसार एटले धुंअरी मात्र पाणी वर्षे तो गोचरीयें जावुं नही ॥ २८ ॥ तथा अढाथो घर एटले अणढांकेलुं घर होय तिहां वहोरवा जावुं नही केमके जो वहोरतां वहोरतां तत्काल अकस्मात् वर्षाद आवी जाय तो प्रथम लीधेलो आहार जे कांइक खवाणो होय कांइक रहेलो होय ते बन्ने हाथमां ढांकीने छाती नीचे लइने जिहां ढांकेली जगा होय तिहां अथवा झाडनी नीचें लइ जावो. पडे तिहां जो आहारमां पाणी नही लाग्युं होय तो आरोगी जावुं अने जो पाणी लाग्युं होय तो खावुं नही ॥ ३० ॥ ए जिनकल्पी साधुउनी गोचरी आश्रयी बारमी समाचारी जाणवी ॥ १२ ॥ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला पात्रानां धारवावाला साधु अर्थात् स्थविरकल्पी साधुउने तो, जेनी धारा रोकाय नही एवो अखंड धारायें मेघ वर्षे तो गोचरीयें जावुं नही ॥ ३१ ॥ जो कदाच कोइक साधु गिलान होय अथवा अशक्त होय एक बे दिवसनो भुख्यो होय अने अधिक भूख खमवानी तेमां शक्ति न होय तो ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ ११०० ॥ ॥ एक सूतरनो कपडो तेनी उपर कननुं वस्त्र उढीने थोडा छांटा पडता होय तो गोचरीयें जावुं कल्पे ए अपवाद सूत्र छे. तथा गृहस्थने घरें गोचरी गया केडे रहीरहीने थोडो थोडो वर्षाद वरसे तो आराममां, उपा सरामां, मंडपनी नीचें तथा रूखनी नीचें आववुं कल्पे ॥ ३२ ॥ तथा गृहस्थने घरें गोचरी गयेला साधुने वर्षाद आव्यो तो तेना घरें जे वखत साधु आव्यो ते वखतथी पहेला जो भात उतर्या होय अने पछी दाल उतरी होय तो साधुयें भात वहोरवा अने दाल वहोरवी नही ॥ ३३ ॥ अने जो दाल पहेली उतरी होय अने चावल पछी उतर्या होय तो दाल वहो

रवी अने चावल वहोरवा नही ॥३४॥ अने जो चावल तथा दाल वेहु पहेलां उतरया होय तो वेहु लेवा कल्पे अने जो वेहु पछी उतरया तो वेहु चीज लेवी कल्पे नही ॥ ३५ ॥ तथा गोचरी गयेला साधुने आहार मल्यो छे अने वर्षाद रहीरहीने वर्षतो होयतो वागमां, उपासरामां, ढांकेली जगामां, जाडनी नीचें एटली जगायें आवीने आहार खाइ जवुं पण आहारने घणो वखत राखी मूकवो नही तरत आरोगी पातरा पुंछी एकठा वांधीने वर्षाद पडतो होय तोपण दिवस छतेंज उपासरामां आववुं पण रात्रियें वाहेर रहेतां घणा दोष उपजे छे माटे रात्रें तो उपासराथी अलगुं रहेवुंज नही ॥३६ ॥ एम वर्षादमां रह्या साधु गृहस्थने घेर गोचरी गया थकांने रहीरही वर्षाद वर्षवा लाग्यो तो वागादिकमां अथवा उपासरे आववुं कल्पे ॥ ३७ ॥ परंतु वागादिकस्थानके एक साधु अने एक साध्वीने एक स्थानके रहेवुं तथा एक साधु अने वे साध्वी तथा वे साधु अने एक साध्वी तथा वे साध्वी अने वे साधुउ ए चारे नांगायें एकठुं रहेवुं नही कल्पे तथा पांचमें नांगे वे साधु अने वे साध्वी होय तेमां एक वृद्ध साधु साध्वी होय तथा एक लघु साधु साध्वी होय अने जगा घणी मोकली होय जिहां सर्वलोक देखता होय एवी जगामां रहेवुं कल्पे. एवाज चार नांगा साधुने श्राविकानी साथें कहेवा तेमज वली एवाज चार नांगा साध्वीने श्रावकनी साथें कहेवा ॥ ३८ ॥ अने पूर्वोक्त पांचमें नांगें एकठा रहेवुं कल्पे ॥३९॥ आ थविरकल्पी साधु साध्वीउने गोचरी तथा साधु साध्वीउने एकत्र रहेवा संबंधिनी तेरमी समाचारी जाणवी ॥ १३ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु अथवा साध्वीयें कोइ साधुना कह्या विना तेमना माटे अशनादिक चार आहार लाववा नही ॥ ४० ॥ ते शामाटे के तेनी इछा होय तो ते आहार खाय अने इछा न होय तो न खाय ते माटे कह्या विना

आहार लावनो नही ॥ ४१ ॥ ए पूछ्या विना बीजा साधुउने माटे आहार नही लाववो त
संबंधी चोदमी समाचारी जाणवी ॥१४॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने जिहां सुधी श
रीर जीजेलुं होय तिहां सुधी अशनादिक चार आहार करवा नही ॥ ४२ ॥ एम शावास्ते
कह्युं ने, के घणु करी सात ठेकाणा जीजेला रहे ने, तेमां एक हाथ, बीजी हाथनी रेखा,
त्रीजा नख, चोथी नखनी अणीउ, पांचमां भुंहारा, छठा नीचला होठ अने नीचली दाढीनो
जगा, सातमा उपरला होठ अने उपरनी मूछो, ए सात स्थानक आला रहे ने तिहां सुधी
अशनादि चार आहार न करवा अने जेवारें जाणवामां आवे के ए साते ठेकाणा आला
रह्या नथी तद्दन सुकी गया ने तेवारें चार आहार करवा ॥ ४३ ॥ आ शरीर आलुं होय तेवारें
आहार नही करवा संबंधी पन्नरमी समाचारी जाणवी ॥ १५ ॥ ॥ वर्षाद वरश्या थका;
साधु साध्वीयोने सूक्ष्म आठ वस्तुउने वारंवार सूत्र ज्ञानेकरी जाणवी अने चक्षुयें करी
देखवी, पडिलेहण करवी जोइयें; तेना नाम कहे ने. एक प्राण सूक्ष्म, बीजुं पणक सूक्ष्म, त्रीजुं
बीज सूक्ष्म, चोथुं हरितसूक्ष्म, पांचमुं फूलसूक्ष्म, छठुं कीडी प्रमुखना अंडसूक्ष्म, सातमुं कोली
आवडा प्रमुखना घर सूक्ष्म अने आठमुं स्नेह सूक्ष्म, ए आठनां नाम कह्यां. हवे एने उल
खवा माटे विशेष खोलासो गुरु शिष्यना प्रश्नोत्तररूपें लखीयें लेयें. तिहां प्रथम प्राण एटले
सूक्ष्म जीणा जीणा जंतुउ काला, नीला, राता, पीला अने धोला एवा पांच प्रकारना रंग
वाला कुंथुआ जीव थाय ने, अणुद्धरी एवुं एवुं नाम ने ए जीव एकस्थानके अणचालता रहे,
ज्ञानरहित छद्मस्थ साधु साध्वीउने नजरथी देखाय नही माटे ते जीवोने साधु साध्वीयें
वारंवार सूत्र सांजलये करी जाणतां रहेवुं, चक्षुयें करी देखतां रहेवुं. ए प्राण सूक्ष्म कह्या

॥ ४४ ॥ हवे शिष्य पूछे छे, हे भगवन् पणग एटले फूलण सूक्ष्म ते कोने कहीयें? गुरु कहे छे. काली, लीली, राती, पीली अने धोली एवा पांच प्रकारनी फूलण थाय छे; ते जीवो जे वस्तुमां पडे ते वस्तुनां रंग जेवा दीठामां आवी जाय. छद्मस्थने नजरे नही आवे माटे तेने पण वारंवार देखतां तपासतां रहेवुं, ए बीजी नील फूल सूक्ष्म कही ॥ २ ॥ हवे त्रीजा बीज सूक्ष्म कोने कहीयें? गुरु कहे छे ते पण काला, नीला, धोला, पीला अने राता एरीतें पांच प्रकारना छे. शाल प्रमुखना जेवा वर्णवाला थाय छे, तेपण छद्मस्थने जाणवामां नही आवे माटे तेनी पण वारंवार पडिलेहणा करवी ए बीज सूक्ष्म कह्या ॥ ३ ॥ हवे चोथा हरित सूक्ष्म कोने कहीयें? गुरु कहे छे के हरित एटले नीलोत्री सूक्ष्म थाय छे! ते पण पूर्वोक्त पांच रंगवाली थाय छे ते पृथ्वीना रंग सदृश होय अने घणी झीणी बारीक होय; तेने पण साधु साध्वीये घणीज रूडीरीतें दृष्टी वडे जोइने पडिलेहण करवी; ए हरित सूक्ष्म कही ॥ ॥ ४ ॥ पांचमां फूल सूक्ष्म कोने कहीयें? गुरु कहे छे ए पण झीणा फूल ते पूर्वोक्त कालाथी मांडीने यावत् धोला पर्यंत पांच प्रकारना थाय छे ते रूखना जेवा एटले रूखनो जेवो रंग थाय तेवा रंगवाला थाय छे ते पण जाणवामां नही आवे, तेनी पण पडिलेहण करवी. ए फूल सूक्ष्म कह्या ॥ ५ ॥ हवे छठा अंड सूक्ष्म ते कोने कहीयें? गुरु कहे छे तिहां प्रथम मधुमाखीनां इंडां, बीजां कुलातरानां इंडां, त्रीजां कीडीनां इंडां, चोथां गिरोलीनां इंडां अने पांचमां काकिडानां इंडां ए सर्व जीवोनां इंडां पण सूक्ष्म थाय छे; माटे एने वारं वार जोवा अने पडिलेहण करवी ए अंड सूक्ष्म कह्या ॥ ६ ॥ हवे सातमां घर सूक्ष्म पण पांच प्रकारना छे; ते शिष्यना पूछवाथी गुरु कहे छे के एकतो जमीनमां गइया स

रत्या घर करेला होय ते, बीजा पाणी सुकाइ गया पछी पापडी भूमि उपर पडे ते, त्रीजा भिंत घर,चोथा ताड प्रमुख वृक्षोना मूलमां न्हाना न्हाना घर थाय छे ते घर,अने पांचमां भमरानां घर ए पांचे प्रकारनां घरोनी पडिलेहणा करवी. ए घर सूक्ष्म कह्या ॥ ७ ॥ ॥ हवे आठमो स्नेहसूक्ष्म ते कोने कहीये ? गुरु कहे छे ए पाणी सूक्ष्म पण पांच प्रकारनो छे; एकतो उसनुं पाणी, बीजुं हेमागरनुं पाणी, त्रीजुं धुंअरि थाय छे ते, चोथुं करानुं पाणी अने पांचमुं घास प्रमुखनी अणी उपर जे पाणीनां बिंदु रहे छे ते, ए पांच प्रकारनुं पाणी छे तेने पण छद्मस्थे जाणीने पडिलेहवुं जोइयें. ए स्नेह सूक्ष्म कह्यो ॥ ८ ॥ ॥ ४५ ॥ ए आठ सूक्ष्म चीज आश्री जोइमी समाचारी जाणवी ॥ १५ ॥ ॥ हवे वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने ज्यारें गृहस्थोने घेर गोचरी करवा आहार प्रमुख लेवाने माटे जावुं होय त्यारें आचार्य, उपाध्याय, थविर, प्रवर्तक, गणि, गणधर, गणावच्छेदक, तथा जेनी आज्ञामां चालता होइये तेमने पूछीने पछी भात पाणी प्रमुख लेवाने माटे जावुं तेमने एम कहेवुं के हे भगवन् आपनी आज्ञा होय तो गृहस्थोने घेर भात पाणी लेवाने वास्ते जावं त्यारें ते पूर्वोक्त आचार्यादिको जो जवानी आज्ञा आपे तो जवुं नहींतो जावुं कल्पे नहीं. हवे शिष्य पूछे छे के शा वास्ते ? गुरु कहे छे के आचार्यादिक जे छे ते उपद्रव टालवानां उपाय जाणे छे जे ते साधु अमुक दिशा गया तेने घणो वखत केम लाग्यो ! एटला माटे॥४६॥ एवीज रीतें जो श्रीजिनचैत्यें दर्शन करवा जवुं होय तथा वंडील भूमियें जवुं होय अथवा बीजा कोइ पण कामने माटे जवुं होय,गामोगाम विचरवुं होय तोपण पूछ्या विना जवुं नही ॥ ४७ ॥ ॥ तथा चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने जो विगयनो आहार करवानी इच्छा होय

तो आचार्यादिकोने पूछ्या विना विगय लेवी कल्पे नही माटे आचार्यादिकोने पूछवुं के हे महाराज आपनी आज्ञा होय तो हुं दूध प्रमुख विगय गृहस्थना घरेथी लइ आवीने आहार करुं? तेवारें आचार्यादिक कहे के अमुक प्रमाणवाली विगय लावीने आहार करजे इहां शिष्य आशंका करे ले के एमां आज्ञा लेवानुं शुं प्रयोजन ले! तेवारें गुरु उत्तर आपे ले के विगयादिक खावा के नही खावा, तेथी थता गुण तथा अवगुण ए सर्व आचार्यादिक जाणे ले माटे पूछवुं जोइयें ॥ ४८ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु पोतानी आरोग्यता माटे औषध करवानी चाहना राखता होय तो पण आचार्यादिकनें पूछीने औषध करवुं ॥ ४९ ॥ ॥ तथा चोमासामां कोइ साधु; सारुं, कल्याणकारि, उपद्रवरहित, धन्यकारि मंगलिकनुं करनार, सोजावंत तथा महाप्रजाविक एवुं तप करवानी चाहना राखतो होय, तेणे पण आचार्यादिकने पूछीने पछी ते तप करवुं ॥ ५० ॥ ॥ तथा कोइ साधु अनशन करवानी चाहना राखतो होय, आत्माने जूपे जात पाणीनो त्याग करी पादोपगमन संथारो प्रमुख करे, कालने वांछे नही,तेणे पण आचार्यादिकने पूछ्या विना करवुं नही. एमज आहार करवो, वन्ने जावुं, मात्री परछववी, सझाय ध्यान करवुं, धर्मजागरणा करवी, काउस्सग्ग प्रमुख करवुं ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवुं परंतु आचार्यादिकने पूछ्या विना पूर्वोक्त कोइ पण काम करवुं कल्पे नही. ॥ ५१ ॥ ॥ ए वोहोरवा प्रमुख जे कार्य करवां ते सर्व आचार्यादिकने पूछीने करवा, ते संबंधिनी सत्तरमी समाचारी जाणवी ॥ १७ ॥ ॥ वर्षाकालमां पंजोसण करीने रहेला साधुउने कोइ उपधी तपाववी होय, तावडामां नाखवी होय तो पोते तिहां खबर राखवी, पासें वेसवुं, परंतु उपधिने तावडे नाखीने गोचरीयें

जावुं नहीं, आहार करवो नहीं, चैत्यें जावुं नहीं, ठल्ले जावुं नहीं, सज्झाय करवी नहीं, काउस्सग्ग करवो नहीं, जो एटला काम करतां होय तो बीजा कोइ साधुने कहेवुं के हे आर्य ! मने गोचरीप्रमुख अमुक कार्य करवुं छे, माटे तमे अमारी उपधीनी निगा राखो तो हुं गोचरी प्रमुखनुं काम करुं तेवारें ते साधु कहे के हुं निगा राखीश तो गोचरीप्रमुख कार्य करवुं कल्पे पण कदापि ते कहे के महारे बीजां काम छे तेथी वेली नहीं शकुं तो पूर्वोक्त गोचरीप्रमुख करवी कल्पे नहीं ॥ ५२ ॥ ए उपधि तावडे तपाववा संबंधि अढारमी समाचारी जाणवी ॥ १८ ॥ ॥ चोमासामां रहेला साधु साध्वीउने, एक हाथ ऊंची अने बोले नहीं एटले शब्द नकरे एवी वली हगे नहीं, फरती काठी बांधेली एवा शय्या विना रहेवुं कल्पे नहीं जो एवा शय्यासन विना रहे तो कर्मबंधनुं कारण थाय. वली ते शय्यासनने वारंवार पडिलेहण करवुं, तावडे नाखवो, पूंजवो प्रमुख जो नकरे तो तेने चारित्र पालवुं कठिन थाय ॥ ५३ ॥ अने ते शय्यासनने जे साधु तावडो प्रमुख आपे, पूंजे ते साधु चारित्र सुखें पालशे ॥ ५ ॥ ॥ ए शय्या प्रमुख ग्रहण करवानी उगणीशमी समाचारी जाणवी ॥ १९ ॥ ॥ चोमासामां रहेला साधु साध्वीउने ठल्ला मात्रानी त्रण जगाउ राखवी अने ते जगाउने पडिलेहवी परंतु सीयाला अने उनालानी पेठे चोमासामां न रहेवुं जोइयें. इहां शिष्य पूछे छे के शीयाला अने उनालाना दिवसोनी पेठे चोमासामां शा वास्ते न करवुं? गुरु उत्तर कहे छे के प्रायः चोमासामां नीली वनस्पतिप्रमुख जीवो घणा उत्पन्न थयेला होय ते माटे ते नाथी चोमासानो जुदो प्रकार कह्यो ॥ ५५ ॥ ए ठल्ला अने मात्रानी जगा पडिलेहण करवा संबंधि वीशमी समाचारी जाणवी ॥ २० ॥ ॥ चोमासामां साधु साध्वीउने त्रण

मात्रा राखवा कल्पे. तेमां एक तो ठल्लानुं, बीजो मात्रानो, त्रीजो खेल प्रमुखनो एवं त्रण जाणवा ॥ ५६ ॥ ए त्रण मात्रा राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २१ ॥ पंजोसण करीने रहेला एवा साधु साध्वीउने, गायना केस जेवडा सूक्ष्म केस पण पोताना मस्तके राखवा नही. केमके पांचमिनी रात्रे जो मस्तके केस रही जाय तो दंम आवे. ते माटे जो कोइ अशक्त गिलान टाटियो होय तो तेणे ठरीथी मुंमी नाखवा, कतरणीथी कतरवा अने उत्सर्गमां तो लोच करवो तथा जो कतरवा होय तो पाठा पंदर पंदर दिवसें कतरवा, गुरु मासी दंम आपवो, महीने महीने खुर मुंम करवो, लघु मासी प्रायश्चित्त देवो, युवान साधुने चार मासे लोच करवो, स्थविरने अने जर्जर थयेला साधुने चक्षुनो तेज राखवा माटे ठ महीने लोच करवो, अथवा थविर वर्षे वर्षे लोच अवश्य करे ॥ ५७ ॥ ए लोच करवा आश्री बावीशमी समाचारी जाणवी ॥ २२ ॥ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने संवत्सरी थया पठी पहेला थयेलो कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नही, जे कोइ निर्ग्रंथ अने निर्ग्रंथणी पंजोसण वीत्या पठी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी ठे एम जाणवुं. तेमने बीजा साधुउए कहेवुं के हे आर्य? तमे अयोग्य काम करो ठो एवुं कहेवाथी नही समजे अने पंजोसण वीत्या पठी कषाय खमावे नही तो जेम तंबोली सडी गयेला पानने बाहेर काहाडी फेंकी आपे ठे तेनी पेरें ते क्रोधी साधु साध्वीने पण संघमांहेथी बाहेर काहाडी मूकवो ॥ ५८ ॥ ए अधिकरणने नही उदिरवा संबंधि त्रेवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २३ ॥ ॥ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीउने, जो पंजोसणना दिवसोमां कलह थयो होय, कटुक बोलवुं पडनुं होय, उद्वेग कर्यो होय तेवारें शिष्यें जइ रत्नाधिक

आचार्ये प्रमुखने खमाववुं अने आचार्ये प्रमुखे शिष्यने खमाववुं ॥ ...
ए रीते पोते खमवुं, बीजाने खमाववुं, पोते उपशम करवो, बीजाने उपशम कराववो, घणा प्रकारे करी रागद्वेषरहित थावुं, जे क्रोधादिकने उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो आराधक थशे अने जे क्रोधादिकने नहीं उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो विराधक थशे, एवुं जाणीने निश्चयें पोते उपशम करवो, भगवान् ए उपशमनेज सार पदार्थ कहे छे माटे हे शिष्य उपशम अवश्य अंगीकार करवो ॥ ५९ ॥ ॥ ए परस्पर खमत खामणा करवा संबंधिनी चोवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २४ ॥ ॥ इहां पांच समिति, त्रण गुप्ति अने चार कषायोना दृष्टांत कहेवा ॥ साधु साध्वीयें चोमासामां वली विशेषें करीने पांच समिति आदिक पालवी. तिहां प्रथम इरिया समिति पालवा आश्री वरदत्त मुनिनो दृष्टांत कहे छे. एक दिवस इंद्र महाराजे पोतानी सभामां कह्युं के आज भरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरिया समितिनो पालवावालो नथी. एवी इंद्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा थयेली सांभलीने कोइक देव परीक्षा करवा सारु आव्यो तेणे हाथीनुं रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आकाशमां उछाल्यो अने देवमायाथी जमीन उपर न्हानी न्हानी घणी मेडकीउ विकुर्वी. तेवारें मुनि आकाशथी नीचे पडतां विचार करवा लाग्या के मने तो मरवानुं भय नथी पण आ जीणी जीणी मेडकीउ महारा शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना थाशे, एवुं जाणीने आकाशथी पडतां थकां पण उघाथी जमीन पूंजवा लाग्या ते देखी देवताए जाण्युं के धन्य छे एने जे एवी रीते जीव विराधनाथी बीये छे. पछी ते देवता प्रगट थइने साधुनी साथे अपराध खमावी नमस्कार करीने पोताने स्थानके गयो. इति इरिया समितौ

मात्रा राखवा कल्पे. तेमां एक तो ठलानुं, बीजो मात्रानो, त्रीजो खेल प्रमुखनो एवं त्रण जाणवा ॥ ५६ ॥ ए त्रण मात्रा राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २१ ॥ पंजोसण करीने रहेला एवा साधु साध्वीउने, गायना केस जेवडा सूक्ष्म केस पण पोताना मस्तके राखवा नही. केमके पांचमिनी रात्रे जो मस्तके केस रही जाय तो दंम आवे. ते माटे जो कोइ अशक्त गिलान टाटियो होय तो तेणे ठरीथी मुंमी नाखवा, कतरणीथी कतरवा अने उत्सर्गमां तो लोच करवो तथा जो कतरवा होय तो पाठा पंदर पंदर दिवसें कतरवा, गुरु मासी दंम आपवो, महीने महीने खुर मुंम करवो, लघु मासी प्रायश्चित्त देवो, युवान साधुने चार मासे लोच करवो, स्थविरने अने जर्जर थयेला साधुने चक्षुनो तेज राखवा माटे ठ महीने लोच करवो, अथवा थविर वर्षे वर्षे लोच अवश्य करे ॥ ५७ ॥ ए लोच करवा आश्री बावीशमी समाचारी जाणवी ॥ २२ ॥ ॥ वर्षादमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने संवत्सरी थया पठी पहेला थयेलो कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नही, जे कोइ निर्ग्रंथ अने निर्ग्रंथणी पंजोसण वीत्या पठी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी ठे एम जाणवुं. तेमने बीजा साधुउए कहेवुं के हे आर्य? तमे अयोग्य काम करो गे एवुं कहेवाथी नही समजे अने पंजोसण वीत्या पठी कषाय खमावे नही तो जेम तंबोली सडी गयेला पानने बाहेर काहाडी फेंकी आपे ठे तेनी पेरें ते क्रोधी साधु साध्वीने पण संघमांहेथी बाहेर काहाडी मूकवो ॥ ५८ ॥ ए अधिकरणने नही उदिरवा संबंधि त्रेवीशमी समाचारी जाणवी ॥ २३ ॥ ॥ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीउने, जो पंजोसणना दिवसोमां कलह थयो होय, कटुक बोलवुं पड्युं होय, कलेग कर्यो होय तेवारें शिष्यें जइ रत्नाधिक

आचार्य प्रमुखने खमाववुं अने आचार्य प्रमुखें शिष्यने खमाववुं ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२०० ॥
ए रीते पोते खमवुं, बीजाने खमाववुं, पोते उपशम करवो, बीजाने उपशम कराववो, घणा
प्रकारे करी रागद्वेषरहित थावुं, जे क्रोधादिकने उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो आराधक थशे
अने जे क्रोधादिकने नही उपशमावशे ते ज्ञानादिकनो विराधक थशे, एवुं जाणीने निश्चयें
पोते उपशम करवो, भगवान् ए उपशमनेज सार पदार्थ कहे छे माटे हे शिष्य उपशम अ
ने अंगीकार करवो ॥ ५८ ॥ ॥ ए परस्पर खमत खामणा करवा संबंधिनी चोवीशमी
समाचारी जाणवी ॥ २४ ॥ ॥ इहां पांच समिति, त्रण गुप्ति अने चार कषायोना दृष्टांत
कहेवा ॥ साधु साध्वीयें चोमासामां वली विशेषें करीने पांच समिति आदिक पालवी.
तिहां प्रथम इरिया समिति पालवा आश्री वरदत्त मुनिनो दृष्टांत कहे छे. एक दिवस इंद्रम
हाराजे पोतानी सभामां कह्युं के आज भरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरिया समि
तिने पालनारो नथी. एवी इंद्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा थयेली सांभलीने
कोइक देव परीक्षा करवा माटे आव्यो तेणे हाथीनुं रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आका
[illegible] पणी मेडकीओ विकुर्वी.
[illegible] जमीन उपर न्हानी न्हानी घणी मेडकीओ विकुर्वी.
[illegible] नीचे पडतां विचार करवा लाग्या के मने तो मरवानुं भय नथी
[illegible] शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना
[illegible] पण उघाथी जमीन पूंजवा लाग्या ते देखी देवताए
[illegible] विराधनाथी बीये छे. पछी ते देवता प्रगट थइने
[illegible] पोताने स्थानके गयो. इति इरिया समितो

वरदत्तदृष्टांतः ॥ १ ॥ ॥ हवे जाषासमिति उपर संगत साधुनो दृष्टांत कहे ते. जे नगरमां संगत साधु हता ते नगरनी बाहेर कोइ वैरीराजायें सेन्या लइ आवीने नगरने वींटी लीधो, तेवारें संगत साधु नगरमांथी निकलीने बाहेर आव्या, तेने शत्रुनी फोजवालायें पुढ्युं के हे साधु नगरनी मांहेली कोरे केटलिक फोज ते? तेवारें साधु बोल्या के घणो सांजल्यो काने, घणो जोयो आंख्योथी (चक्षुथी), नही देख्यो सर्व सांजल्यो, नही सुण्यो सर्व दीठो, एवी रीते बोल्यो वली पण ज्यारें ज्यारें ते पूछे त्यारें वारंवार एमज बोलवा लाग्यो, तेवारें सेन्याना लोकें जाण्युं जे आ जणी जणीने घहेलो थइ गयो ते,एम विचारी मूकी दीधो. ए बीजी जाषा समिति उपर दृष्टांत कह्यो ॥ २ ॥ ॥ हवे त्रीजी एषणासमितिमां नंदीषेणनो दृष्टांत कहे ते. वसुदेवजीनो जीव पूर्वला जवमां नंदीषेण हतो, तेणे ग्लानीनी वैयावच्च करवानो अजिग्रह कस्यो हतो. पोते ठठ ठठ पारणुं करे तेनी इंद्रें प्रशंसा करी, तेवारें कोइक देवे आवी अतिसारना रोगवालो साधु बनावीने नंदीषेण पासे मोकल्यो. नंदीषेण तेना सारु पाणी लेवा गयो ते देवतायें अशुद्ध करी आप्युं, नंदीषेणे लीधुं नही, एवी रीते एषणा सोधी ते. ग्लानने खांधे बेसाडयुं, ग्लाने तेने अशुचीये खरडयुं, देवे स्तुति करी ए कथा आगल श्रीनेमिसर जगवानना चरित्रमां लखाइ गइ ते. इति एषणा समिति दृष्टांत ॥ ३ ॥ हवे आदानादि पडिलेहण करवानी चोथी समितिमां सोमिल साधुनो दृष्टांत कहेते. एक दिवस साधु विहार करीने कोइ गामें आव्या तिहां दिवस केटलो ते एवी बराबर खबर न पडवाथी वहेली पडिलेहण करी लीधी. एटलामां पाछलथी वखतनी खबर पडी तेवारें गुरुयें कह्युं पडिलेहण करवानो वखत तो हमणा ते; माटे पडिलेहण करो. ते सांजली सर्व साधु

ग्रंग पडिलेहण करी; गुरुयें सोमिलसाधुने कयुं के ! तुं पण पडिलेहण कर. सोमिल बोल्या हजी हमणांतो पडिलेहण करी छे तो हवे एटलामां शुं कांइ सर्प पेसीगयो छे ? एवुं उलंठ वचन बोल्यो पछी जेवारें प्रजातें पडिलेहण करी तेवारें गुच्छामांहे पातरा बांधेला हता तेमांथी कोइ दैवयोगथी सर्प निकल्यो दीठो. तेथी बीक पामीने गुरुपासें आवी कहेवा लाग्यो महाराज सर्प निकल्यो; तेवारें गुरु बोल्या तुं उलंठ वचन शामाटे बोल्यो ? हे वत्स एवां वचन ताहारे आज पछी बोलवा नही. पडिलेहण करवामां तो घणीज निर्जरा छे. पछी ते साधुयें एवो अभिग्रह लीधो जे आजथी सर्व साधुउना उपध हुं पडिलेहीश, सर्वने हुं हाथ आ पीश; एवो अभिग्रह पालतां ते साधुयें घणा कर्म क्षय कस्या. इति आदानभंडनिक्षेपणासमिति दृष्टांत ॥ ४ ॥ ॥ हवे उच्चार प्रश्रवण समितिमां सुव्रताचार्यनो दृष्टांत कहे छे. सुव्रताचार्यनो एक लघु शिष्य हतो तेने गुरुयें कयुं; अरे मांडला कर; तोपण तेणे मांडला कीधा नही अने कहेवा लाग्यो शुं वाह्यारे उंटडा वेचाले के ? पछी रात्रियें बाहेर मात्रुं परठवचा गयो. तेने तिहां कोइक देवे आवी उंटनुं रूप करीने बीवराव्यो अने बोल्यो; अरे आ गच्छमां एक साधु पण मांडला कस्या विना मात्रा प्रमुख करे नही. पछी वली एक दिवस मांडला दीठो नही अने रात्रें मात्रानी घणी बाधा थइ पण परठे नही. तेवारें देवतायें उद्योत कस्यो. पछी ते शिष्यें जगा जोइने मात्रा परठवी. तेमाटे जे कोइ मांडला देखी परठवणा करशे तेने देवता स हाय आपशे. एवो निश्चयकरी क्षुल्लक पण पारिठावणिया समितिमां सावधान थयो. ए पारिठा वणिया समितिनो दृष्टांत कह्यो ॥ ५ ॥ ए पांच समिति साधुयें चोमासामां विशेष पालवी ॥ हवे मनगुप्ति उपर कोंकण साधुने काउस्सग्गमां घणी देर लागी तेने गुरुयें पुछयुं. घणो वखत

केम लाग्यो ? साधु बोल्यो; जीवदया ध्यायी; गुरु बोल्या केवी जीवदया ध्यायी ? साधु बोल्यो मह्रारा घरमां गेकरा आलशुं ठे ते खूड निदानादिक करशे नही तो धान थोडो नीपजशे; तेथी डुःखी थशे,गुरुयें कह्युं तमे सावद्य चिंतव्युं माटे मिछामि डुक्कडं द्यो. साधु पण मिछामि डुक्कडं देतो हवो ॥ इति मनगुप्ति दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे वचनगुप्ति उपर गुणदत्त साधुनो दृष्टांत कहे ठे. गुणदत्त साधु; एक दिवस पोतानी संसारसंबंधि धनवती नामे माताने वंदा यवा जातो हतो; रस्तामां चोर मल्या; तेणे साधुने पकड्यो अने कहेवा लाग्या अरे साधु ! आ रस्ताथी जान आवशे तेनी आगल तुं अमारुं नाम लइश नही जे आ ठेकाणें चोरो रहे ठे. साधुयें कह्युं हुंतो बोलीश नही. तेवारें चोरोये तेने ठोडी मूक्यो; ते पोताने स्थानके जइ पोताना कुटुंबने वंदावीने फरी तेबोज जाननी साथे तेहज मार्गे आव्यो. तेवारें चोरोये जान लूंटी लीधी अने वली बोलवा लाग्या के जूठ आ साधु कहेवो सत्यवादी ठे के पोताना घरना माणसो आगल पण चोर रस्तामां बेठा ठे एवुं कह्युं नही.ते वचन साधुनी मातायें सांजल्युं; तेवारें महाडुःख करती थकी साधुने कहेवा लागी के अरे डुष्ट! तें ताहारे हाथे चोरोने माल लुंटावी दीधो;तुं केम प्रथमथी बोल्यो नही !! पठी साधुने घणो कष्ट थतो देखीने चोरोयें लुंटेलुं धन सर्व पाढुं आपी दीधुं; तेवारें जानवाला सर्व खुशी थया पण साधु बोल्यो नही; ए वचन गुप्ति उपर कथा कही ॥२॥ त्रीजी कायगुप्ति उपर अर्हन्नक साधुनी कथा कहे ठे.अर्हन्नक साधु, विहार करतां कोइ स्थानके पालो वहेतो देखीने विचारवा लाग्यो के जो हुं आ खालमां पग देइश तो जीवविराधना थाशे माटे फलको मारीने आंहीथी निकली जाउं. एवुं चिंतवी बलांग मारीने पेली तरफ गयो एथी आज्ञा जंग करी माटे कोइक देवे ते साधुना पग ठेदी नाख्या.तेथी

दुःखी थयो तेवारें देवतायें आवी कह्युं के आगल हवे तमारे एम कोइवारें पण करवुं नही, जो कदापि जीव मरे तो पण ए केवलीनी आज्ञा ते माटे उतरीने जावुं पण कूदको मारीने जावुं नही. इति कायगुप्तिदृष्टांत ॥ ३ ॥ ॥ हवे वली आ पंजोसण आव्या थकां सर्वनी साथे ख मत खामणा करवा, कारणके खमतखामणा करवा विना पडिक्कमणादिक क्रिया करवी सूजे नही माटे जो कोइनी साथें महोटो वेर होय तो पण उदाइराजानी पेरे खमाववुं. जेम चंपान गरीमां कुमारनंदी नामा एक सोनार रहे हे ते जन्मथी स्त्रीनो लोलुपी हे, धन आपीने महा सरूपवाली पांचशे स्त्रीउं परण्यो हे. एक दिवस ते, हासा अने प्रहासा ए बे देवीयोने देखी तेनुं सरूप जोइ मोहित थयो, तेथी देवीयोने कह्युं के तमे महारीसाथें जोग करो. देवीयो बोली तुं पंचशेल पर्वत द्वीपे आवजे तो अमारे जोगयोग्य होइश एवुं कहीने देवीयो पोताने स्था नके गइ सोनारे गाममां आवी पडह् वजडाव्यो के जे कोइ मुजने पंचशेलद्वीपे लइ जाय तेने हुं क्रोड सोनामोरो आपुं. ते सांजली एक वृद्ध खलासी (नावनो खेडनार) इव्यनो लोजी हे तेणे जाण्युं घरना माणसो इव्यतो खाशे एवुं विचारी बोल्यो के हुं लइ जइश पही बेहु ज हाजमां बेठा जहाज चाल्युं आगल जतां एक वडवृक्ष आव्यो तेवारें नावव्यो बोल्यो आ वडनी उपर तुं चडी जाजे अने हुंतो आंहीआं जहाज पाणीना चक्रमां बूडशे तेनी साथे बू डीने मरीश पण तुं वड उपर बेशी रहेजे, रात्रना जारंम पंखी आवशे तेना पगोमां तहारा शरीरने बांधी मूकजे, ते पंचशेल द्वीपमां चूगवा जाशे तिहां तने मूकी देशे पही तुं तिहां बंधनमुक्त थइ हासा प्रहासा देवीउंनी पासे जाजे एवुं कह्युं एटलामां ते वाहण वडनी पासें आव्युं, सोनार वड उपर चड्यो अने जहाज जांगी पडयुं,नावव्यो मरण पाम्यो, सोनार ति

त्यांथी नारंम पंखीना पगमां बंधाइने हासा प्रहासानी पासें गयो, तेनी आगल जोग जोगववा माटे याचना करी, देवीर्ज बोली आ तहारी अशुद्ध देह ले ते देहथी अमे जोग करीयें नही. तेवारें ते देवीयोयें फरी तेने चंपानगरीमां मूक्यो अने कह्युं के जे हमणा अमारो देवपति ले ते चवसे तिहां तुं मरण पामीने ते देवनी शय्यामां उपजजे तो तहारुं काम थशे तेवारें सोनार पण काष्ठ बालीने अज्ञानकष्ट करी मरवा लाग्यो ते अवसरमां ते सोनारनो मित्र नागिलनामा श्रावक हतो ते बोल्यो, अरे तुं आवीरीते मरवानुं मकर आ प्रकारें देवीर्जने माटे मरवुं योग्य नथी तो पण तेणे मान्युं नही काष्ठमां बली मरण पामीने हासा प्रहासाना ध्यानथी तेम नो पति देव थयो. अने तेर्जनी सायें जोग जोगवतो रहे ले एकदिवस इंद्रमहाराज, सर्व देव देवी सहित नंदीश्वरद्वीपें देवयात्रायें जवाने माटे तयार थया, तेवारें हासा प्रहासानो पति जे देव ले तेनी उपर एवो हुकुम आव्यो के तुं सर्व देवोनी आगल मृदंग वजावतो चालजे ते वारें, हासा प्रहासायें ते देवना गलामां मृदंग नाख्यो, देवें ते मृदंग पोताना गलामांथी काढी डीने फेंकी दीधो अने कह्युं के हुं मृदंग वजावीश नही. एटलामां तो फरी ते मृदंग तेना ग लामां आवी वाजी गयुं, फरी देवें फेंकी दीधो, एम बे त्रणवार कर्युं त्यारें हासा प्रहासा बोली अमारा जरतारनी एज मर्यादा ले के मृदंग वजाव्या विना ते तूटेज नही "हासा प्रहा सानो मृदंग गलामां पड्यो ते वजावे तूटको" एवी लोकमां पण कहेवत ले. हवे ए विद्यु न्माली देव हासाप्रहासासहित मृदंग वजावतो आगल चाले ले तिहां महर्द्धिक देवोने देखीने पोताना जवनी निंदा करे ले. एटलामां नागिल श्रावकनो जीव बारमां देवलोकमां उपन्यो ले, ते पण तिहां आव्यो अने विद्युन्मालीने कहेवा लाग्यो के अरे तुं मने उलखे ले के नथी उल

युष्य शेष ७ महीनानुं रह्युं छे ते माटे राजाने जइ कह्युं के मने आज्ञा आपो तो हुं दीक्षा लेउं राजा बोल्यो तुं देवलोक जाय तेवारें अने म्हारे कष्टनी वेला आवे तेवारें आवी सांनिध्य करवानुं कबुल करे तो आज्ञा आपुं. ते वात प्रभावतीयें मानी पछी राजायें आज्ञा आपी. प्रभावतीयें दीक्षा लीधी,संयम पाली आयुष्य पूरण करी देवलोक गइ. तिहांथी आवी योगीनुं रूप करीने राजाने अमृतफल देखाडी जंगलमां लइगइ तिहां घणा योगीयो भेगा हता ते राजाने मारवा उठ्या राजायें बीक पामीने देवताने याद कर्यो तेवारें देवे आवी राजाने तिहांथी उपाडी साधुउ पासे मूक्यो,राजायें जाण्युं जगतमां खरा आधारभूतंतो एज छे.पछी तेमनी पासेथी श्रावकना व्रत लइ श्रावक थयो. हवे पूर्वली श्रीवर्द्धमान स्वामीनी प्रतिमाने प्रभावती राणी दीक्षा लेती वखते देवदत्ता दासीने पुजवानुं कही गइ हती. ते प्रमाणे ते दासी नित्य प्रत्यें पूजा करे छे. एक दिवसें कोइ गंधार नामे श्रावक सर्व गामोना देरासर वांदवाने निकल्यो छे ते वीतभय पाटण आव्यो, तेणे ते प्रतिमाने पुजी, तिहां ते गंधार श्रावक अजारी थयो तेनी देवदत्ता दासीयें चाकरी करी तेथी श्रावकने रोग मटी गयो अने निरोगी थयो तेणे उपकार करवावाली देवदत्ता दासीने बे गोलीउ आपीने कह्युं के आ बे गोलीमांथी एक गोली खावाथी महासरूपवाली थइश अने बीजी गोली खावाथी जे मनमां चाहीश ते पुरुष वश थइ जाशे, एवुं कहीने गंधार श्रावक जतो रह्यो पछी देवदत्तायें पहेली गोली खाधी तेथी दिव्य रूप थयुं तेणे करी सुवर्णगुलिका एवुं नाम दासीनुं पडी गयुं.वली बीजी गोली खाधी अने चंडप्रद्योतन राजा स्त्रीयोनो लोलुपी छे तेने मनमां चाहीने धार्यो जे मारो चंडप्रद्योतन राजा भरतार होजो तेवारें गुटिकाना अधिष्ठायिक देवे उज्जयणीमां आवी चंडप्रद्योतन राजाने

एक बलद लेवा साह गामना धुर्त लोक बोल्या. जूर्ज आ एक बलदनी गाडी चाले छे. एवुं बीजा लोकोये पण सांजल्युं अने गाडावाले जाण्युं जे आ छुष्ट लोको मह्वारो एक बलद खोसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे केमके मह्वारा तो वे बलद छे तेने जुग दीने ए लोको एक बलद कहे छे; माटे कपटी छे. एमचिंतवीते कुंनार पोताना गामडा वेचवामां एकचित्ते तत्पर थइ गयो तेवारें बलदीयाने धुर्ते लइ गया पछी कुंनार जेवारें गामडा वेची तयार थयो तेवारें जोवा मांड्युं तो एक बलद दीठो नही पछी घणी ज्ञांको मारी के अरे मह्वारो बलद कोण लइ गयो ! ! तेने लोको कहेवा लाग्या के अमेतो एकज बलदनी गाडी सांजली हती. ते सांजली कुंनार घणुं छुःख करवा लाग्यो छेवट निराश थइने पोताने स्थानके जतो रह्यो पण क्रोध करीने सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्यां, एकदा कोइ पर्वनी यात्रामां गामना लोको एकठा थया छे; ते वखत गामना लोकोये पडह् वजाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र बाले छे ते प्रगट थाउ. ते सांजली कुंनार पोतानो वेष बदलावीने बोल्यो के जेनी एक बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारो धान बाले छे. तेवारें लोकोयें जाण्युं जे एनी गाडीनो बलदीउ आपणा लोकोयें लीधेलो छे ते वेष बदलावीने बोले छे; माटे हवे एनो बलदीउ आपी द्यो नही तो फरी धान बालशे; पछी कुंनारने बलदीयो आपीने सर्व लोकोयें अपराध खमाव्यो तेमाटे प्रथम बनता सुधी अपराधतो करवोज नही. एवीज टेव राखवी परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागी लेवी; के जेथी कोइ अनर्थ थाय नही. ए क्रोध उपर कुंनारनो दृष्टांत. ॥ १ ॥ ॥ हवे जे पंजुसणमां क्रोधनो त्याग नही करे तेने जेम सडेला पानने बाहेर कहाडीने फेंकी आपीयें छेयें तेनी पेठें

द्योतन छे एवीरीतनो मांन तेनी ललाटमां देइने उदायीराजा प्रतिमा लेवा लाग्यो तो प्रतिमा तिहांथी उठे नही. एटलामां आकाशवाणी थइ जे, प्रतिमा लइ जासो नही, कारणके वीत जय नगरमां धूलनो कोट पडवावालो छे. तेवारें प्रतिमाने तिहांज राखी पोतें चंद्रप्रद्योतनने बांधी लइने चालतो थयो. मार्गमां पंजुसण पर्व आव्या. उदायीराजायें तिहां पडाव कर्यो, पंजुसण कर्या, अठाइ महोत्सव कर्या, पोते उपवास कर्यो रसोइ करनाराउने कह्युं के चंद्रप्र द्योतनने जे रुचे ते रसोइ करी जमाडजो. एवुं कहीने उदायिराजा पोतानी जिनपूजादिक करणीमां प्रवर्त्ते थइ गयो; रसोइ करनारें चंद्रप्रद्योतनने पूछ्युं के आपना सारु केवी रसोइ बनावुं ? चंद्रप्रद्योतन बोल्यो जे उदायि कहे ते बनावो, रसोइयें कह्युं तेमणे तो आज पंजु सण पर्व छे माटे उपवास कर्यो छे तें सांनली चंद्रप्रद्योतने विचार्युं जे आज एणे मने जहेर आपवानो विचार राख्यो छे तेमाटे जूदी जूदी रसोइ करावे छे. एवा नयथी बोल्यो जे हुं पण आज उपवास करीश; उदायी राजा अमारो साधर्मी नाइ छे, अमेपण एज धर्म पालीये छैयें. एवुं रसोइ करनारे जइ उदायी राजाने कह्युं तेवारें उदायीयें जाएयुं जे ए धूर्त्ततायी बोल्यो छे खरो तो पण महारोतो साधर्मी थयो. माटे एने खमाव्या विना पडिक्कमणुं करवुं सूजे नही. एवुं जाणी चंद्रप्रद्योतनने बंदीखानामांथी कहाडावी पोतानी पासें बोलावी तेना ललाटे सोनानो पट्ट बंधावी खमतखामणा करी सत्कार आपीने पाछो अवंती नगरीयें मोकली दीधो. एवी रीतें बीजा नव्यजीवोयें पण उदायी राजानी पेरें खमाववुं; क्रोधनो त्याग करवो के जे थकी आराधकपणुं थाय ॥ वली जो अपराध करीने खमावे नही तो अनर्थनी वृद्धि थाय. तेनी उपर दृष्टांत कहे छे. एक गाममां कोइक कुंनार नांमानुं गाडुं नरीने वेचवा आव्यो तेवारें तेनो

एक बलद लेवा सारु गामना धूत लोकं बोल्या. जूठ आ एक बलदनी गाडी चाले छे. परंतु
बीजा लोकोये पण सांजल्युं अने गाडावाले जाण्युं जे आ डुष्ट लोको मह्रारो एक बलद
खोंसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे केमके मह्रारा तो बे बलद छे तेने छुपा
वीने ए लोको एक बलद कहे छे; माटे कपटी छे. एमचिंतवीते कुंजार पोताना गमडा वेचवामां
एकचित्ते तत्पर थइ गयो तेवारें बलदीयाने धूर्त लइ गया पछी कुंजार जेवारें वासण वेची
तयार थयो तेवारें जोवा मांड्युं तो एक बलद दीठो नही पछी घणी हांको मारी के अरे मह्रारो
बलद कोण लइ गयो !! तेने लोको कहेवा लाग्या के अमेतो एकज बलदनी गाडी सांजली
हती. ते सांजली कुंजार घणुं दुःख करवा लाग्यो छेवट निराश थइने पोताने स्थानके जतो
रह्यो पण क्रोध करीने सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्यां, एकदा कोइ यज्ञनी यात्रामां गामना
लोको एकठा थया छे; ते वखत गामना लोकोये पडह वजाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र
बाले छे ते प्रगट थाओ. ते सांजली कुंजार पोतानो वेष बदलावीने बोल्यो के जेनी एक
बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारो धान बाले छे. तेवारें लोकोयें जाण्युं जे एनी गा
डीनो बलदीओ आपणा लोकोये लीधेलो छे ते वेष बदलावीने बोले छे; माटे हवे एनो बल
दीओ आपी द्यो नही तो फरी धान बालशे; पछी कुंजारने बलदीयो आपीने सर्व लोकोयें
अपराध खमाव्यो तेमाटे प्रथम बनता सुधी अपराधतो करवोज नही. एवीज टेव राखवी
परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागी लेवी; के जेथी
कोइ अनर्थ थाय नही. ए क्रोध उपर कुंजारनो दृष्टांत. ॥ १ ॥ ॥ हवे जे पंजुसणमां क्रो
धनो त्याग नही करे तेने जेम सडेला पानने बाहेर कहाडीने फेंकी आपीयें छेयें तेनी पेठें

संघथी बाहेर कहाडी मूकवो, तेना उपर दृष्टांत कहे छे. एक खेडा गामनो रहेनारो कोइ ब्राह्मण हतो; ते खेतीनो धंधो करे; तेनो हल खेडवामां बलद हांकतां हांकतां गळीयो थइ बेशी गयो, तेने उठाडवानो घणा प्रयत्न कर्या पराणानी मार आपी, पाडुयें मार्यो तो पण उठीने चाले नही; तेवारें ब्राह्मण रीसें धमधमतो ते बलदनी उपर खेत्रना ढेफा नाखवा लाग्यो ते ढेफा नाखतां नाखतां बलद आखो ढंकाइ गयो, कदर्थनाथी ते बलदनुं श्वास रुं धाणुं तेथी मरण पाम्यो ब्राह्मणने गोहत्यानुं पाप लाग्युं, ब्राह्मणे महापुरुषोनी पासेथी प्राय श्चित लेवा माग्युं कह्युं के गोहत्यानो दंड आपो, महापुरुषोयें कह्युं ताहारो क्रोध उतर्यो के नथी उतर्यो ? ब्राह्मण बोल्यो हमणा बलदने देखुं तो मारी नाखुं. तेवारें महापुरुषोए कह्युं के आ पापीने शो दंड आपीयें के जेथी ए शुद्ध थाय. एतो अशुद्ध छे. एवुं कही न्यात बाहार कहाडी मूक्यो. एवीरीतें साधुपण जे क्रोधने त्यागे नही तो तेने संघ बाहार करी मूकवो ॥

हवे पोताथी अपराध थयो होय तो मृगावतीनी पेरें खमाववो. पोतानुं मन शुद्ध करीने मिछामिछ्कडं देवो. ते कथा कहे छे. एक दिवस श्रीमहावीरस्वामी कोसंबी नगरी समो सर्या, तिहां चंद्र ने सूर्य बे मूल विमाने वांदवा आव्या, चंदनबाला, मृगावती प्रमुख तिहां बेठी हती; तेमां चंदनबाला तो सूर्य अस्त थतो जाणी तिहांथी उठी पोताने उपासरे आवी अने मृगावती तो जगवाननी देशनामां मोहित थइ थकी तिहांज बेशी रही, पछी सूर्य ने चंद्र जेवारें पोताने स्थानकें गया तेवारें अंधकार थइ रह्यो तिहां मृगावतीयें चंदनाने दीठी नही तेथी एकलीज जय पामती उपासरे आवी. तिहां इरियावहि पडिक्कमि चंदनबा

इहां आवी एवी हुं अपराधणी थइ माटे आप मक्षारो ए अपराध खमजो, तेने चंदनायें कह्युं के नहें? तूं उत्तम कुलनी उपनी जो माटे तारे एम न करवुं. मृगावतीयें कह्युं. हवे हुं एम केवारें पण करुं नही. एवुं कहेती वारंवार चंदनबालाने पगे लागती शुद्ध मनथी खमावती थकी तत्पर रहेलीने केवलज्ञान उपजी गयुं अने चंदनाने तो चंपी करावतां निद्रा आवी गइ. एवामां अंधकारने विषे सर्प आवतो जाणीने मृगावतीयें चंदनानो हाथ उपाडीने संथारा उपर मूक्यो; तेवारें चंदना जाग्रत थइने पूछवा लागी के मक्षारो हाथ कोणे उपाड्यो; तेने मृगावतीयें कह्युं सर्पनो संघटो थवाने लीधे में तमारो हाथ उंचो राख्यो; चंदनायें पूछ्युं. एवा अंधकारमां सर्प आवतो तमारा जाणवामां केवीरीतें आव्यो? मृगावतीयें कह्युं आपना प्रतापथी! चंदनायें कह्युं, शुं! तमोने केवलज्ञान उपन्युं के? मृगावती बोली आपनी कृपाथी. तेवारें चंदनायें जाण्युं जे, अरे में केवलीनी आशातना करी. एवुं चिंतवीने वारंवार खमावती खमावती मिछामिछुक्कडं देती देती; ते पण केवलज्ञान पामी ॥ एवीरीतें भव्यजीवोये मिछामिछुक्कडं देवो. परंतु कुंभार अने चेलानी पेरे नही करवुं. ते कथा कहे छे. जेम एक लघु शिष्य हतो ते कुंभारनां नांमा तावडे मूके तेने कांकरा मारे; ते जोइ कुंभारें कह्युं नांमा म फोडो; तेवारें शिष्य बोल्यो "मिछामिछुक्कडं" ते सांभली कुंभारें जाण्युं जे हवे नांमा फोडशे नही. पण शिष्य तो फरीने तेवीज रीतें कांकराथी कुंभारनां नांमा फोडवा लाग्यो अने कुंभार नाकारो करे तेने शिष्य वारंवार मिछामिछुक्कडं देवा लाग्यो; ते जोइ कुंभारें पण एक कांकरो लइ शिष्यना कानमां नाखीने कान मसल्यो, तेवारें शिष्य बोल्यो. अरे कान दुखे छे ते सांभली कुंभार बोल्यो. मिछामिछुक्कडं एवीरीतें वारंवार चेलो कहे; अने कुंभार मिछामि

डुक्कडं आपे माटे ए प्रकारें मिछामिडुक्कडं देवायी कार्यसिद्धि न याय, वारंवार पाप करवा. अने वारंवार मिछामिडुक्कडं देवो ते काममां न आवे. तो शुं करवुं? तोके सासु जमाइनी पेरें सर्व अलिया गलिया करवा; ते कया कहे छे. एक वृद्ध स्त्री हती तेनी पासें घणुं द्रव्य हतुं परंतु पुत्र न हतो अने पोतें विधवा घणो लोभी अने कंजुस हती. धननो संग्रह करे पण पेटमां खाय नही तेने एक दीकरी हती ते कोइ कुलवान् छोकराने परणावी पण पोतें लोभी हती माटे जमाइने दायजो प्रमुख कांइ दीधुं नही. तेयी जमाइ कचवाणो,नाखुश ययो. होली दीवाली प्रमुख कोइ पर्व जमवा आव्यो नही; तेवारें लोको वृद्ध स्त्रीने कहेवा लाग्यां के अरे पापणी! आ तहारो एकज जमाइ छे तेने पण जमाडती नयी! छोकरोतो ताहारे छे नही. तो तहारुं आ धन ते कोण खाशे! अने कोने काम आवशे! तेवारें लौकिक रीती साचववा माटे जमाइने घणी मनवार करीने बोलाव्यो, अने कहेवराव्युं के हे जमाईजी आज तमे एकलाज पधारजो. ते सांभली जमाइना मित्रो कहेवा लाग्या के आज तुजने सासु वधुं द्रव्य आपीदेशे. पछी जमाइ सासुने घेर एकलो जमवा गयो, तेने सासुयें खीर पीरसी वली वाटकीमां रुनो पुंजडो नाखीने घृत पीरसवा आवी, वाटकी मांहेयी घृतनुं टीपुं टीपुं था लीमां पडे पण वधारे पडे नही. तेयी घणी देर लागी. सासुयें विचार्युं जे जमाइ हमणा नाकारो करशे; अने जमाइयें जाण्युं जे आ तो मने छगवा आवी छे. तेयी सासुनो हाय प कडी वाटकीनुं महोडुं यालीमां ऊंधुं करी लीधुं अने सासुने कहेवा लाग्यो के जीजी घणुं ययुं हवे म नाखो, सासुयें जाण्युं जे, अरे वाटकीतो खाली यइ गइ, घीतो वधुं जमाइजी खाइ जाशे एतो ठीक ययुं नही माटे कांइ युक्ति करवी एम विचारीने जमाइने कहेवा लागी

छे. माटे आपणो ए नेला बेसी
के हे जमाइजी आजे तमारे अमारे कंसणुं छे ते सर्व नांगो. माटे आपणो ए नेला बेसी
जमीयें. एम कही जमाइनी बेठी सायें जमवा बेठी पण जमाइनी तरफ थालीनुं नीचाण
वालु आवेलुं हतुं तेथी घी सर्व जमाइ तरफ थइ गयुं हतुं. एवुं जाणीने सासु जननानुं मिस
करीने आंगुली सुधी पोतानी तरफ खेंचती जाय ने जमाइजीने कहेती जाय के तलावमां
एटला वांक छे के प्रथमतो हुं होली उपर नही आव्यो, बीजो दीवाली उपर नही आव्यो, त्रीजो
अखयत्रीज उपर नही आव्यो, एवुं बोलती बोलती सर्व घृत पोतानी तरफ खेंची लीधुं तेवारें
जमाइयें जाण्युं जे सासूतो घणी समजणवाली देखाय छे. घीतो सर्व पोतानी तरफ खेंची
लीधुं एवुं जाणी थालीमां हाथ फेरवीने बोल्यो, सासुजी ! जे थवानुं हतुं ते थयुं पण हवे
तमारुं अने महारुं बेहुनुं मन एक करी ल्यो. अलिया गलिया आज पछी सर्व अपराध ॥ एवुं
कही थाली उपाडीने घी खांम सहित सर्व खीर जमाइ पीगयो अने बोल्यो हवे आपणुं राग
हसणुं मटी गयुं माटे तमें खुशीमां रहेजो ॥ ॥ एवी रीतें धर्मार्थि जीवनें पण कोइ राग
द्वेष उपज्यो होय ते सर्व खमाववो पण पंजुसणमां राग द्वेष राखवो नही मिछामिछाडं रे
वो ॥ १ ॥ ॥ वली आ पंजुसण पर्वमां क्रोध, मान, माया अने लोभ करवो नही एनी
उपर अनेक दृष्टांत छे पण पंजुसण पर्वने विषे गोचरीमां क्रोध, मान, माया अने लोभ ए
चार वाना सर्वथा न करवा तेनी उपर दृष्टांत कहेतो थको प्रथम क्रोधथी आहारादिक लेवा
आश्रयी दृष्टांत कहे छे. हस्तिकल्पनामा नगरमां एक साधु मासितपने पारणे गोचरी क
रवा माटे ब्राह्मणोमां कोइ मरण पामेलानुं जमण थयुं छे तिहां गयो, तिहां ब्राह्मणो बेवर
खाय छे साधु घणो वखत उभो रह्यो पण कोइयें साधुने दीधुं नही. तेवारें साधु क्रोध करीने

वोल्यो जे आ आजना जमणमां नही आपो तो फरी जमण थाशे तेवारें आपजो. एवुं कही चालतो थयो, साधुनुं वोलवुं जुठुं थाय नही. एटलामां वीजा महीनाने पारणे फरी पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो. तेना जमणमां वली साधु पण पारणुं करवा माटे गोचरीयें आव्यो. परंतु कोइयें वहोराव्युं नही, तेवारें वली क्रोधथी वोल्यो, त्रीजाना जमणमां वहोरावजो, एवुं कही जतो रह्यो. एम वली पण त्रीजा महीनामां कोइ मरण पाम्यो तेना जमणमां पण वहोराव्युं नही. तेवारें साधु क्रोधथी चोथाना जमणमां वहोरववानुं वोल्यो. ते शब्द कोइ झोकरो पाल उपर वेगे हतो तेना काने पड्यो. तेवारें झोशायें घरना धणीने कह्युं के आ साधुने घेवर आपीने खुसी करो नही तो वली पण कोइ मरशे. एवुं समजी साधुने वोलावी घेवर वहोराव्यो जेम ए साधुयें क्रोधथी घेवर वहोर्यो तेवीरीतें कोइ पण साधुयें वहोरवुं नही ॥ ए क्रोधपिंम उपर गेवरीया साधुनो दृष्टांत ॥ १ ॥ ॥ हवे मानपिंम उपर सेवैया साधुनो दृष्टांत कहे छे. कोशलदेशमां गिरिपुष्पनामा नगरने विषे एक सेवोनुं पर्व आव्युं तेवारें युवान साधु एकवा मिल्या तेमां एक साधु वोल्यो आजतो सेवैया पर्व छे माटे सेवो लावीशुं तेमां शुं थयाइ छे! परंतु काले प्रजातें खांम घी सहित जे सेवुं लावीने सर्व साधुउने जमाडे ते लब्धिवान् जाणवो. तेवारें वली एक शिष्य अभिमान करीने वोल्यो जे हुं काले सेवो लइ आवीने सर्व साधुउने जमाडुं. तो महारुं नाम फलाणुं ते खरे खरुं करी जाणजो एवो अभिमान करी वीजे दिवसें महोटा महोटा पात्रा जोलीमां नाखीने गोचरी गयो. तिहां एक शेठने घेर सेवो देखीने मागवा लाग्यो. के शेठाणीजी अमने सेवो वहोराव. पण ते शेठाणी लोजणी हती माटे वोली, अरे जा जा, दूर जा, तुने सेवो नही मले, ए प्रमाणे ललकारीने कर

सेवो जइ जाउं

गाडी मूक्यो. तेवारें चेलो बोल्यो तुं जोतो खरी के हुं जरुर ताहारी पासेंथीज सेवो लइ जाउं तो मह्मारुं नाम साधु जाणजे. कोइ पण रीतें अवश्य लइ जइश. तेवारें शेठाणी बोली. जो तुं सेवो लइ जाय तो मह्मारुं नाक गयुं एम जाणजे परंतु मह्मारुं नाक होयतो तुने सेवो लइ जवा देश्न नही, ते सांजली साधु तिहांथी निकली आगल जइ कोइने पूछ्युं के आ घर कोनुं छे? एना घरनो मालक किहां छे? तेवारें कोइए कह्युं, ए देवदत्तनुं घर छे, ते हमणा पंचाय तीमां बेठो छे, तेवारें ते साधु तिहां गयो अने कहेवा लाग्यो अरे पंचातीयो तमारामां देव दत्त कोण छे? ते बोल्या शुं काम छे? साधुयें कह्युं तेनी पासेथी कांइ मागवुं छे, पंचातीयो बोल्या अरे ए कृपण पासेथी शुं मागवा चाहे छे? ताहारे मागवुं होयतो अमारी पासेथी माग के जेथी ताहारुं कार्य सरे. तेवारें देवदत्त बोल्यो हे साधुजी जे तमे मागशो ते हुं आपीश. तेने चेलायें कह्युं. हे देवदत्त जेवीरीतें छ जणा स्त्रीयोने वश हता, तेवीरीतें जो तुं स्त्रीने वश न होय तो हुं कहुं हुं के तह्मारी पासेथी कांइ मागुं. ते सांजली पंच बोल्या; ते छ जणा कोण हता? जे स्त्रीयोने वश थया हता तेनी कथा कहो. तेवारें चेलो बोल्यो. एक कुलपुत्र हतो ते परणीने पछी स्त्रीने वश थयो, प्रजाते भूख लागी स्त्रीनी पासेथी खावा माग्युं, स्त्री ढोलीया उपर बेठी थकीज कहेवा लागी के जो तुं भुख्यो होय तो चूला मांथी राख काहाडी बाहेर नाख, इंधण लाव, चूलामां अग्नी बाल, माथे हांडी चडाव, तेमां पाणी नाख, कोठामांथी चावल लावी तेने सोधी साफ करीने हांडीमां नांखी पचावीने त पार कर; तयार थया पछी मने हांक मारजे तो हुं उठीने पीरसी आपीश. ए वात सांजली कुलपुत्र बोल्यो तुं कहे छे ते सत्य छे. एम कही तह्त्ति करीने पूर्वोक्त सर्व काम करवा ला

ग्यो. एम नित्य करतो जाय. प्रजातना नित्य चूलानी राख काहाडवी पडे तेने लीधे आंगु
लीउं धोळी पडी गइ; लोकोये तेनुं श्वेतांगुली एवुं नाम आप्युं. तेम हे देवदत्त तुं पण स्त्रीने
वश न होय तो हुं याचना करुं.तेवारें देवदत्त बोल्यो हुं स्त्रीने वश नथी ॥ वळी बीजा युवान
पुरुषें पूछ्युं. आ तो तें बमांथी एक वार्त्ता कही पण बीजी पांच वार्त्ता संजलाव. साधु बो
ल्यो एक कुलपुत्र हतो ते स्त्रीने वश थयो तेने स्त्री ढोलीया उपर बेठी बेठी कहेवा लागी के हुं
पाणी नही लावीश माटे तुं जइ तलाव उपरथी पाणी भरी लाव तो रोटला हुं बनावी आ
पीश. तेपण स्त्रीने वश थयो थको लोकोनी लाजथी, जेवारें पाछली एक पहोर रात्री रहे तेवारें
नित्य माथे घडो लइ पाणी भरी लइ आववा लाग्यो. रात्रीना बगला प्रमुख जनावर बीक
पामीने तलाव उपरथी उडवा लागे तेनो गडबडाट थाय तेथी लोकोये जाण्युं; आ शुं नित्य
उपद्रव थाय छे! बगला केम उडे छे! पछी शोध कराव्यो तेवारें जाणवामां आव्युं जे कुल
पुत्र पाणी भरवा जाय छे तेथी बगलाप्रमुख उडे छे. पछी लोकोए बगोड्डो एवुं नाम पाडी
दीधुं माटे साधुये कह्युं जो तुं पण एवो न होय तो हुं जाचूं. देवदत्तें कह्युं हुं एवो नथी ॥ ते
वारें वळी बीजा युवाने पूछ्युं त्रीजानी कथा कहे. साधु बोल्यो एक कुलपुत्र स्त्री परणीने तेने
वश थयो; पछी नित्य प्रभातें उठी हाथ जोडी स्त्रीने कहे के हे स्त्री हुं शुं काम करुं? स्त्री
बोली सर्व रसोइ कर; तेवारें तेणे रसोइ तयार करी वळी स्त्रीने कहेवा लाग्यो; हवे शुं करुं?
स्त्री बोली गादी बिछावीने पाटलो मूक; ते पण कर्युं; वळी पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्री बोली म
हारी बाहु पकडीने मने गादी उपर बेसाड, तेणे बाहु पकडीने गादी उपर बेसाडी वळी
पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्रीयें कह्युं रसोइ पीरस; रसोइ पीरसीने वळी पूछयुं हवे शुं करुं? वळी

बोली माखीयो उमाड, माखीयो उडाडीने वली पूछ्युं हवे शुं करुं? स्त्री बोली मलमूत्र परठी आव, ते परठी आवीने फरी बोल्यो हवे शुं करुं? स्त्री बोली हुं सुइ रहुं छुं तुं म्हारा पग माव चंपी कर, तेवारें पग मावचवा लाग्यो ते जोइ लोक बोल्या; ए स्त्रीकिंकर छे. तेम हे देवदत्त? तुं पण तेना जेवो होय तो हुं याचना करुं नही देवदत्तें कह्युं हुं एवो नथी ॥ फरी चोथी कथा पूछवाथी साधु कहेवा लाग्यो. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थइने तेना वस्त्रप्रमुख धोवानुं कार्य नित्य करे तेनुं लोकोये तीर्थस्नाता एवुं नाम दीधुं एमज पांचमानुं नाम गड्डापरखी जाणवुं ॥ हवे छठानी कथा कहे छे. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थयो, तेने पुत्र थयो. स्त्री कहे छोकराने हंगावी लाव ते नित्य छोकराने हंगावे, स्नान करावे, ते देखी लोकोये हदनीयो एवुं नाम आप्युं. माटे एनी पेरें तुं जो स्त्रीने वश न होय तो त्हारी पासें याचना करुं. देवदत्त बोल्यो हुं तेवो नथी तमे सुखे मागो ॥ तेवारें बीजा सर्व पंचायती लोक बोल्या. हे चेलाजी, स्त्रीने वश थयेलाना सर्व दोष एमां छे. एवुं हास्यपूर्वक बोल्यां. तेवारें देवदत्त बोल्यो हे भगवान्! एतो म्हारी हांसी करे छे. आपने जे चाहना होय ते सुखे मागो. तेवारें चेलो बोल्यो घृत अने खांड सहित सेवो वहोरावो. देवदत्तें कह्युं चालो हुं आपने वहोरावुं. एवुं कही तिहांथी चाल्यो. अने साधुने साथें लइ घेर आव्यो. तेने रस्तामां साधुयें कह्युं के त्हारी स्त्रीतो म्हारी साथें लडी छे. तेने देवदत्तें कह्युं तमे घरनी बाहेर उभा रहेजो हुं बोलावुं तेवारें आवजो. पछी साधु बाहेर उभो रह्यो; देवदत्त घरमां जइने स्त्रीने कहेवा लाग्यो; आज ब्राह्मणोने जमवानुं कह्युं छे, ते जमवा आवशे कांइ घरमां रांधेलुं अन्न छे? ते बोली सेवों तयार छे. देवदत्तें जाण्युं ए स्त्री छतां तो देवाय नही. एवुं चिंतवीने स्त्रीने कह्युं के नीसरणी चडीने उपरथी घृत गोल लइ

आवो. ते स्त्री घृत गोळ लेवा सारु नीसरणी उपर चडी ते वेळायें साधुने बोलाव्यो. साधु बोल्यो देवदत्त आ नीसरणी जरा अलगी लइ ल्यो तो सारीरीतें वहोरीश, देवदत्ते नीसरणी दूर करी साधुयें रुडी रीतथी सेवों अने घृत गोळना पात्रा जरी लीधां; स्त्री उपर उनी उनी हांको करवा लागी, के अरे एने कां वहोरावे छे; आ मुंमो छे एवीरीतें बकवाद करवा लागी पण जोर चाल्युं नही साधु पण पात्रा जरीने निकळतो थको नाक उपर आंगुली फेरवीने स्त्रीने जणाव्युं के तहारुं नाक कपाइ गयुं. एवी संज्ञा करी उपासरे आवीने सर्व साधुयोने जमा ड्या एम जे रीतें ए साधुयें अनिमान करीने आहार लीधो ते रीतें बीजा साधुयें आहार लेवो नही. ए कथाउ जो विस्तारें जोवी होयतो पिंमनिर्युक्तिनी टीकाथी जोइ लेवी आहीं संक्षेप मात्र लखेली छे. ए मानपिंम उपर दृष्टांत कह्यो ॥ हवे मायापिंम उपर आषाढभूतिनो दृष्टांत कहे छे; जेणे राजगृही नगरीमां नटवाना घेरथी रूपपरावर्त्तन करीने पांच लाडु वहोरया छे ए कथा प्रसिद्ध छे माटे लखी नथी तेवीरीतें पण साधुयें नही वोहोरवुं. ए मायापिंम उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ३ ॥ ॥ हवे लोजपिंम उपर सिंहकेसरीया साधुनो दृष्टांत कहे छे. चंपानगरीमां उत्सवना दिवसें एक साधुयें मासखमणने पारणे अनिग्रह लीधो के महारे आज सिंहकेसरीया मोदक वहोरवा. पछी घरघर जम्यो पण लाडवा कोइ आपे नही. अने बीजुं अन्न तो साधु पण ले नही. पछी लाडु नही मळवाथी मुनिनुं मन संक्लिष्ट थइ गयुं. ते अर्द्ध रात्री लगण घरघर धर्मलाज देतो फर्यो. लोजना वशथी रात्रनी खबर पण रही नही. रात्रीयें कोइएक श्रावकने घेर जइ धर्मलाज दीधो. ते श्रावक महागंजीर छे. मातापितासमान छे तेणे रात्रनो धर्मलाज सांजळीने विचार्युं जे कोइ कर्मना वशथी साधुनुं मन भ्रमभ्रम थइ गयुं छे.

एवुं जाणीने तिहांथी उठ्यो जइने मुनिने वंदना करी जोयुं. तो साधु महातपस्वी देखाय छे. तेने श्रावकें पूछ्युं महाराज आपने शुं जोइयें छैयें? मुनियें कह्युं सिंहकेसरीया मोदक खपे छे! श्रावकें कह्युं सुखे ल्यो, अमारे घेर घणा छे निर्दोष छे. एवुं कहीने सिंहकेसरीया मोदकनो थाल भरी लाव्यो. अने मुनिने वहोराव्या. तेवारें मुनिनुं मन ठेकाणे आव्युं श्रावक बोल्यो स्वामी पुरिमार्द्धना पच्चक्खाणनो वखत आव्यो के नहीं? मुनियें उपदेश आपी आकाशमां जोयुं तो निर्मल तारा, नक्षत्रनी श्रेणिसहित चंद्रमाने जोइ चित्त ठेकाणे आवी गयुं तेवारें विचार्युं जे धिक्कार छे! में आ शुं कर्युं! जे हुं रात्रीनो गोचरी करवा निकल्यो! महारो साधुनो आचार किहां गयो! एम पश्चात्ताप करतो थको नगरनी बाहेर आवीने सूत्रोक्तविधिसहित मोदक परठवतो थको विचारे छे के अरे कर्मने जीतवुं घणुं मुसकील छे! अरे में आ खोटुं काम कर्युं धर्मनी निंदा करावी, एवीरीतें पश्चात्ताप करतो करतो शुक्लध्यान ध्यावतो थको क्षपकश्रेणी चढीने केवलज्ञान पाम्यो. इहां परमार्थ ए छे के जेम एणे लोलुपता वशथी सिंहकेसरीया मोदक वहोर्या तेम बीजा साधुयें लेवा नहीं. एवां इहां घणा दृष्टांतो छे पण अमे केटला ल खीयें. ए लोलुपिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ४ ॥ ए पर्वमां सर्व प्रकारें क्रोधादिक नहीं करवा ॥ हवे वर्षादमां पजुसण करीने रहेला साधु साध्वीओयें जीवादिकनी उत्पत्तिने लीधे त्रण उपा सरा राखवा तेमां जे उपासरामां पोतें रहे ते उपासरानें तो प्रतिदिवस त्रणवार पडिलेहण क रवुं पूंजवो अने बीजा बे उपासराने एकवार पूंजवा पडिलेहण करवां ए पूंजवा पडिलेहवानी पच्चीसमी समाचारी जाणवी ॥२५॥ ॥ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीओने पोतानी मरजीमां आवे तिहां जवुं होयतो गुरुने पूछीने जावुं. दिशि बतावीने जावुं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते

पूछवानुं प्रयोजन कयुं छे? गुरु कहे छे, साधु जे छे ते चोमासा विना शेषकालमां तो सामान्य प्रकारना तप करे छे परंतु चोमासाना कालमां घणा प्रकारना विशेष तप करे छे माटे कोइ तपस्वी दुर्बल होय अने किहां मुर्छा खाइ पडीजाय तो; जे दिशायें गयो होय ते दिशायें आचार्य याद राखीने निगाह करावे, खबर काढावे, शोध करावे जे एटलो वखत केम लाग्यो तेमाटे खबर करावे ते सारु आचार्यने पूछीनें बाहार जवुं जोइयें ॥ ६१ ॥ ए प्रतिजागरण करवानी छवीसमी समाचारी जाणवी ॥ २६ ॥ ॥ वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु साध्वीउने औषध प्रमुख कामने लीधे वैद्यनी पासें जवुं पडे तो चार योजन तथा पांच योजनपर्यंत पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवुं एटले सोल तथा वीस कोश दूर जइने ते गाममांथी औषध लइ पाछो फरी आवीने जो पोते रहेला गामनी मांहे उपासरामां दिवस छतां आवी न शकाय तो तेज गामनी बाहेर आवी रहेवुं पण जे गाममां औषधादिक लेवा गया ते गाममां रात्रे रहेवुं नही. अथवा दिवस छतां गामनी बाहेर न पोहोची शकाय तो मार्गमां रहेवुं ॥ ६२ ॥ ए औषधादिक लेवा माटे चारथी पांच योजन लगें जवानी सत्तावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥ ॥ इत्यादिक संवत्सरीनो थविरकल्प जेवीरीतें कल्पसूत्रमां कह्यो छे तेवी विधिथी करे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेरीतें जगवाने कह्यो छे तेम करे, जला प्रकारथी मन, वचन अने कायायें करी फरशे, अतिचाररहित पाले, विधिसहित शोजा करी दीपावे; जाव जीव सुधी आराधे, कांठे पहोचाडे, लोकोमां कीर्त्ति करे, आराधीने आज्ञासहित पालीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तिहिज जवमां सीजे, तत्त्वने जाणी, कर्मोथी रहित थइ, सर्वसंतापरहित थइने सर्व दुःखथी छूटे, मोक्ष जाय, केटलाएक त्रीजे

नहीं तेमज केटलाएक सातमे
नरें गीने. यावत् मोक्ष जाय परंतु सात आठ जवतो उलंघे नहीं तेमज केटलाएक सातमे
तथा आठमे नवें तो अवश्य मोक्ष जाय ॥ ६२ ॥ ए चोमासानी मर्यादा पाले ते साधुने जे
फल थाय तेनी अवनीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥ ॥ ते कालने विषे, ते समयने
विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामी राजगृही नगरीयें गुणशील नामे चैत्यने विषे इहां जे
गामसां यद्दन्न वेकर्म दोष ने यागने चैत्य कहीयें ते चैत्यने विषे घणा साधुउंमां, घणी साध्वी
उंमां, घणा श्रावकोमां, घणी श्राविकाउंमां, घणा देवोमां, घणी देवीउंमां बेठा थका अर्थात्
भगवान् ए पर्षदामां बेठा थका एवो वचन करीने कहे ए कल्पने पालवानुं फल बताने
एवो भगवे, ए पजुसणाकल्पनामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधनो आठमो अध्ययन, ते अर्थस
हित, हेतुसहित, कारणसहित, सूत्रसहित, अर्थसहित, सूत्रार्थसहित, दृष्टांतसहित, वारंवार
उपदेश करीने देखाडे एवो ने. जंबू (मे के०) हुं आ सूत्र जइवाहु स्वामीयें रच्युं ने दशाश्रु
तस्कंधमां आठमो अध्ययन करीने रच्यो ने पण वाचना सर्व सुधर्मसामी अने जंबुस्वामीनी
जाणवी ॥ ९ ॥ ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२१६ ॥ इति नवमं व्याख्यानम् ॥९॥ ॥ इति श्रीकल्पसूत्रस्य
बालावबोधिनी जाषा समाप्ता ॥ ए कल्पसूत्र दशाश्रुतस्कंधसूत्रनो आठमो अध्ययन ने, तिहां
पण एनुं शब्दिनाण ने ॥ सर्वेषु सूत्रेषु गरप्रशस्ति, यस्यास्ति सर्वोन्नतिमुख्यता च ॥ तत्कल्पसूत्रं
मम कल्पवृक्षं, चारित्रकार्यं शुभशुक्लसारम् ॥ १ ॥ सौधर्मपट्टे सुपरंपरायां, सूरीश्वरा ये च वरा
बभूवुः ॥ वंदे सदा तान् वरसूत्रशान्त्या, श्रीरत्नसूरीन्सुमुनीन्सदापि ॥ २ ॥ श्रीमदक्षमादिगुणवान्
प्रतापात्समीशो, जातः क्षमागणधरः क्षमरत्नकर्ता ॥ नित्रा लता चरणसेवनतत्पराभूत् तस्या
नि तां हरि गुरुः स च नो बभार ॥ ३ ॥ देवेंद्रविजयो यंथः, तच्छिष्यो पद्मकीर्तिनाह ॥ कल्याणवि

जयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदयुक् ॥ ४ ॥ सौधर्मस्वामिनो गछे, संति राजेंद्रसूरयः ॥ तेनेयं कल्प सूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥ कृता सूत्रपदैर्युक्ता, सर्वसारांशसंयुता ॥ सायोगोघट्टनं येन, न कृतं तस्य हेतवे ॥६॥ अब्दे खवेदनंदैके, (१९४०) माधवे च सितेतरे ॥ पक्षे दिने द्वितीयायां, मंगले लिखिता त्वियम् ॥७॥ इति श्रीराजेंद्रसूरिविरचितायां प्राकृतभाषायां बालाव बोधिनी टीका कल्पसूत्रस्य समाप्ता ॥ श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ संवत् १९४० ना वैशाखवदि बीजना दिवसें बालावबोधिनी टीका संपूर्ण थई ॥ जांबुवा नगरे ॥

॥ भट्टारक श्रीराजेंद्रसूरिकृता श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबोधिनी वार्त्ता समाप्ता ॥

आगळथी आश्रय आपनार साहेबोनां स्मरण करवा योग्य नामो नीचे लखीयें छैयें.

गामश्री वागरानां श्रावकोनां नाम

लेनारनुं नाम. प्रत. संख्या.

शा. मोतीजी गजाजी ओसवाळ एमनी दुकान कोंकणदेसना गामश्री पेनमां शा. गजाजी केसवजीना नामथी चाले छे. १२१

शा. जुताजी, केशाजी, कुशनाजी, पेराजजी, धूमाजी, ए पांचे भाइ शेठ खुशालजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान करणाटक देसमां गामश्री निढगुंदीमां छे. १११

शा. वनाजी कस्तूरचंद ते शेठ चिमनाजी हुकुमाजीना सुपुत्र छे एमनी कोल्हापुरमां दुकान छे. १००

शा. खुमाजी, देवराजजी, कुशनाजी, नथाजी, नरसिंघजी, ए पांचे भाइ शेठ मनरूपजीना सुपुत्र छे एमनी गामश्री त्रिसाडीमां दुकान छे. १००

शा. दानाजी, खुमाजी, हुकमाजी, वनाजी, ए चारे भाइ शेठ रताजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान गामश्री वाळाजीना देवल गाममां छे. १००

शा. मनाजी, जेठाजी, सदाजी, ए त्रणे भाइ शेठ मोटाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान तालिकोटमां छे. ८५

शा. राजाजी, मोतीजी, कुशनाजी, भवाजी, लखमाजी, ए पांचे भाइ शेठ रूगाजीना सुपुत्र एमनी दुकान तालिकोटमां छे. ५१

शा. नरसिंहजी ते शेठ मोटाजीना सुपुत्र छे ५१

शा. चुनीलालजी ते शेठ वेनराजजीना सुपुत्र छे जे गामश्री शोरोंशालाने नामे ओळखाय छे एमनी दुकान पेनगांवमां छे. ५१

कस्तुरजी, गेनाजी, चिमनाजी, लखमाजी ए चारे भाइ ते शेठ चेलाजीना सुपुत्र छे एमनी दुकान गामश्री तालिकोटमां छे. २५

शा. गजाजी, प्रतापजी, सरूपजी, ए त्र

जयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदयुक् ॥ ४ ॥ सौधर्मस्वामिनो गच्छे, संति राजेंद्रसूरयः ॥ तेनेयं कल्प सूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥ कृता सूत्रपदैर्युक्ता, सर्वसारांशसंयुता ॥ सायोगोघट्टनं येन, न कृतं तस्य हेतवे ॥६॥ अब्दे खवेदनंदेके, (१९४०) माधवे च सितेतरे ॥ पक्षे दिने द्वितीयायां, मंगले लिखिता त्वियम् ॥७॥ इति श्रीराजेंद्रसूरिविरचितायां प्राकृतभाषायां बालावबोधिनी टीका कल्पसूत्रस्य समाप्ता ॥ श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ संवत् १९४० ना वैशाखवदि बीजना दिवसें बालावबोधिनी टीका संपूर्ण थई ॥ जांबुवा नगरे ॥

॥ भट्टारक श्रीराजेंद्रसूरिकृता
श्रीकल्पसूत्रस्य बालावबो
धिनी वार्त्ता समाप्ता ॥

शा. खुमाजी, जेताजी. ४
शा. दीपाजी, खुमाजी. २
संघवी, नरसिंगजी, लालाजी. ४
शा. मोतीजी, बूलाजी. २
शा. कुंयाजी, धनराजजी. १
शा. रासा, मन्नाजी. १
शा. ताराजी, वालाजी. १
शा. पन्नाजी, केशाजी. १
शा. कृशनाजी, सवाजी. १
शा. मोतीजी, गजाजी. १
शा. गुलया, सूराजी. १
संघवी. सूरतिंगजी. दोलाजी. १
शा. मोती, नगाजी. १
शा. कृशा, रूपाजी. १
शा. खुमा, सवाजी. १
शा. नीहाजी, मनाजी, ए वे जाइ शेठ दे
गाजीना सुपुत्र छे जे गाम श्रीकानदर
गामाने नामे ओळखाय छे ते. १५

शा. लखमाजी, नवाजी १०
शा. पन्नाजी, सुरतिंगजी. ८
शा. फताजी, लखमाजी. ५
शा. नथाजीनी, धरमाजी. २
शा. जगताजी, सवाजी. २
शा. नथाजी, खुशालजी. २
शा. राजाजी, मनाजी. २
शा. पदमाजी, मालजी. १
शा. कपूरजी, अदाजी. १
शा. मनाजी, वकाजी. १
मुतां. कृशा, नथाजी. १
शा. दीपाजी, जुहाजी. १
शा. रूकमा, खुशालजी. १
शा. अचा, गोमाजी. १
शा. अमरिंग, रूपाजी. १
मुंता. नरदा, गोमाजी. १
शा. नूता, पदमाजी. १
शा. फोजु, लखमाजी. १

गामश्री आलोरना श्रावको तरफथी.

शा. गनेचंद, केशरमल, ए बे जाइ ते शेठ नूताजीना सुपुत्र हुकान श्री मुंबइमां छे. २५

मुंता. कस्तूरचंद, नालाजी, ए बे जाइ ते शेठ धमाजीना सुपुत्र छे, एमनी हुकान गामश्री कल्याणीमां छे. १५

संघवी. लखमाजी, थानाजी, ते शेठ रूपाजीना सुपुत्र छे. ५

शेठ. गोडीदासजी, वागमलजी. ५

शा. पन्नाजी, जुवारमल्लजी, ते शेठ फुसाजीना सुपुत्र. ५

नंमारी. नूताजी, हेमाजी, जीमाजी, ए त्रणे जाइ ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र छे. ५

शा. हंसराज ते शेठ नाथाजीना सुपुत्र एमनी हुकान गंटूलमां छे. ५

मुंता जवानजी, केशरमल्ल, ए बे जाइ ते शेठ अचलाजीना सुपुत्र. ५

मुंता सूरजमलजी, चंदनमलजी, ए बे ते शेठ हुकमचंदजीना सुपुत्र. ५

शा. प्रेमचंदजी, मनजी, मोतीजी, ए त्रणे जाइ शेठ मकनाजीना सुपुत्र एमनी हुकान गामश्री पिंजरतमां छे. ५

शेठ प्रतापजी, लालचंदजी, पुनमचंदजी, ते शेठ जेठमल्लजीना सुपुत्र. ५

शा. राइचंद, शोनाजी. १

शा. गुलाबचंद ते गेनाजीना बेटा. २

शा. धन्ना, पनाजी. १

शा. मेरा, रूपाजी. १

गामश्री जालोरना श्रावको तरफथी.

मुंता. धनराजजी, जसवंतराजजी, मुनिलालजी, ए त्रणे जाइ ते मुंता लालचंदजी फाफां वालाना ठोकरा. २५

मुंता. सुलतानमल्लजी, ते मुंता उत्तमचंदजीना सुपुत्र. ५

जट्टारक नेरचंदजी दयालचंदजीनां चेला ५

नार. सीतारामजी जवानमल्लजी एम

नी दुकान आबुरोड खराडीमां. ५

गामश्री निंब्रमाळना श्रावको तरफथी.

शा. हीराजी, लखमाजी, नागाजी,
फाफावाळा. ५

शा. केराजी, कानाजी. ५

शा. जुवारमल, शिरदारमलजी. २

शा. गुलाबचंद, रूपचंद. २

शा. लखमाजी, कस्तूरचंद. २

मुंता. केवळचंदजी, नगवानचंद ए बे
नाइ ते मुंता तोळाजीना सुपुत्र. २

गामश्री थरादना श्रावको तरफथी.

नोरा. जीवा, वालु. ५

दोसी. लक्षा, लालजी. २

नोरा. मोतीचंद, चंदाणा. ५

दोसी. हीरा, नीखा. २

गामश्री धानेराना श्रावकोनी मदत.

मेता. तलकचंद, नोजराज. ५

शा. मूलजी, वानसिंघ. १

गामश्री शिवगंजनी तरफथी.

शा. मोतीजी, कुनणाजी, पन्नाजी, पो
माजी, हीराचंदजी अने रामाजी ए ठ
नाइर्ज शेठ मेगाजीना सुपुत्र दुकान मुं
बइमां मेगा मोतीजीना नामनी छे. २५

शा. लुंबाजी, जेवाजी. २

शा. रतनाजी, दूल्हाजी. १

शा. पन्नाजी, कल्लाजी. गामकोसीलाव. २

गाम जेंसावडाना श्रावकोना तरफथी.

शा. नथाजी, मनरूपजी पोरवाड. १००

शा. जीफाजी, जोधाजी. २

शा. महोनदासजी. १

शा. सूराजी, वदाजी. २

शा. वन्ना, कल्याजी. २

गामश्री दूरजीना श्रावको तरफथी.

शा. सूरसिंगजी, मनाजी. ५

शा. नवला, चंमाजी. २

शा. चेला, गजाजी. २

शा. पत्ता, खुशालजी. २
गामश्री खीमेलना पंचोनी तरफथी. ५
गामश्री. कोसीलावनां पंच समस्त. ५
गामश्री. गुडो घालोतरानो तेना पंच
समस्तनी तरफथी. ५
शा. जीवाजी, कुशनाजी पाडीवना. ५
वोसी. रूपाजी, वनेचंदजी गामश्री
कछ सुंदरांवंदरना रेवासी. ५
शा. गोकलनाइ, लहेरा गोधावी. १
शा. जेठाजी, जवेरचंदजी. अलीराजपुर. ४
शा. हीराचंद, कुंवरजी. अलीराजपुर. १
शा. जीवानाइ, रतनजी. घोगा २
शा. केशवजी, लेहेरा नाइ. गाम श्रीक
राचीबंदर वाला. १
शा. मोटाजी, वछाजी. कालीआवाडी. २
शा. नगाजी, कुशनाजी. रेवतरा वाला. ५
शा. लछाजी, कुपाजी. धानपुर वाला. २
शा. रूपाजी, प्रेमाजी. २

शा. लक्षा, हीरजी. अमदानगर वाला. २
गामश्री. अमदावादमां अमदावादनी
पांजरापोल वाली जैनसनानी तरफथी. ५
शा. पुनमचंद, ताराचंद. १
शा. पन्नाजी, थनाजी. १
शा. वालानाइ, कक्कल. १
शा. लखमीचंद, जेठा. १
शा. मयारामजी ते शेठजी धूमाजीना
सुपुत्र गामश्री मांमवडा. १
मुंता. उमेद मल्लजी, चंदरनाणजी. गा
मश्री एनेरानें गुडे. ५
शा. रिखनाजी ते शेठ खुमाजी लखा
जीना वेटा गामश्री नूतिना. २
शा. मोतीजी, नगाजी. गामश्री कवला. १
शा. नगवान, लवजी कोलीआकवाला. १
गामश्री मुंबइना श्रावको तरफथी.
वाइ प्रेमावाइ ते शा. नागसी शिवजी
नेणसीनी घरवाली.

शेठ. घेलाभाइ, पदमसी.	५	शा. नथांजी, नोपाजी.	१
शा. कस्तूरचंद, नानचंद ग्रांबा कांटे.	१	शा. नीमा, मोताजी.	१
शा. ग्रोथवजी देवजी जामनगर वाला.	१०	शा. जेशाजी, गोमाजी.	१
शेठ. गणेसमल्ल, सोनागमल्ल.	१	शा. पन्नाजी, नाथाजी.	१
जैनविद्याशाला तरफथी ह्रा. शा. वृद्धि		शा. वन्नाजी, शेनाजी.	१
चंद पुनमचंद.	५	शा. केवदाजी, खुशालजी.	१
शा. कशतुर, वालाजी.	२	शा. मोतीजी, गुलाबचंदजी.	१
शा. कशतुरचंद, तलकचंद वशनाली पेठ.	१	शा. खुमाजी, हंसराजजी.	१
शा. जीवाजी, खीमाजी.	१	शा. दुक्रमाजी, सांकलचंद.	१
शा. गुलाबचंद, केशवजी.	१	शा. हंसाजी, जेराजी.	१
शा. फुताजी, नगाजी.	१	शा. गुलाबचंद, खुमाजी.	१
मुंता. नथा, रुपाजी.	१	शा. पानाचंद, जगन्नाथजी.	१
गाम नीमडीना पंचो तरफथी.	२	शा. जेताजी, कस्तूरचंदजी.	१
शा. हिंदु, जेगजी.	१	शा. मटाजी, त्रिजिंगजी.	१
शा. केशा, जोदाजी. वूडतराना.	१	शा. लालचंद, गुमनाजी.	१
मुंता. शवाजी, लखमाजी. वूडतराना.	१	शा. जवानमल्ल, नथाजी.	१
शा. चूताजी, फताजी.	१	शा. माणकजी, खुमाजी.	१
शा. उंमाजी, खाशाजी, राजाजीना पुत्र.	१	शा. सूराजी, जेताजी.	१

रुप० ।५२।।

नाम	रु.
शा. दोलाजी, नेराजी.	१
शा. मनाजी, अनेचंद.	१
शा. मनाजी, वनेचंद.	१
शा. लालचंद, कपूरचंद हालासंमी.	१
शा. न्यालचंद, आलमचंदजी गाम सादरी.	१
शा. दीपाजी, केशाजी.	१
शा. गेना, ओखाजी.	१
शा. गेनाजी, तेजाजी.	१
शा. जेताजी, लखाजी.	२
शा. हुताजी, तेजीजी.	१
शा. वरसिंघ, देवसी.	१
शा. खुमाजी, हिंदुजी.	१
शा. हिंदुजी, अमरिंगजी.	१
शा. नाना, ओखाजी.	१
शा. मोती, पुरुषाजी.	१
शा. इदाजी, सुजाजी.	१
शा. जेगा, गरनारजी.	१

नाम	रु.
शा. मनाजी, मासिंघजी.	१
शा. चेनाजी, गजाजी.	१
शा. धुरा, मासाजी.	१
शा. जुवारमल्ल, चेनाजी.	१
शा. मोटाजी, वीराजी.	१
शा. जेरूप, सज्जाजी.	१
शा. जिवाजी, आणंदाजी.	५
शा. जमनादास, लालजी.	५
शा. डुंगरसी, धरमसी.	५
शा. उंपाजी, कपुरचंद कुक्षी.	१५
शा. आशाजी, राइचंद कुक्षी.	५
शा. गोमाजी, जवेरचंद कुक्षी.	५
शा. दोलतराम, चुनीलाल. राजगढ.	५
शा. जसुजी, चतुरभुज राजगढ.	१०
श्री. जावडाना संघ समस्त.	१०
श्री. जांबुआना संघ समस्त.	१०
श्री. वडनगरना संघ समस्त	[illegible]

वाला०